सरते और अंग्रेज़ सेनापतिको आज्ञाओंका पालन करते इन नयी नयी अफवाहोंसे वे विचलित हो उठे। सेनापति र अंग्रेज़ जातिपरसे उनका विश्वास हट गया। कम्पनी ौर सरकारके विरोधके लक्षण स्पष्ट दीखने लगे।

सेनापति हीलर अफसरोंके मुखसे सिपाहियोंकी चंचलता-का हाल सुनकर उद्विग्न हुए। पहले उन्होंने सोचा था कि कुछ दिनोंमें यह चंचलता अपने आप दूर हो जायगी पर मेरठ और दिल्लीके समाचारोंसे सिपाहियोंका जोश और भी अधिक बढ़ा। कानपुरके गोरे और अंग्रेज़ सब डर गये। दिल्लीका जेलखाना टूट गया था। कैदी आसपासके देशोंमें लूट मार करते फिरते थे। कानपुरसे दिल्ली और आगरा जानेका जो रास्ता था उसके दोनों ओरके गांवोंमें गूजरोंकी बस्ती थी। गूजर उस जमानेके प्रसिद्ध चोर और डाकू थे। इधर कानपुरके सिपाहियोंका जोश बढ़ रहा था। इस कारण कानपुरके सब अंग्रेज़ प्रतिपल विपत्ति-के आनेकी आशंका कर रहे थे। वे एक दिन सुनते थे कि गूजर लोग जमा होकर शहरपर आक्रमण करने आ रहे हैं। दूसरे दिन आदमियोंको इधर उधर जाते देखकर सोचते कि सिपाही उनके विरुद्ध आ रहे हैं; अपने नौकरोंसे जरासी बात सुनकर ही उनकी आशंका बढ़ जाती। इस प्रकार दिनमें वे भयसे पागल हो जाते, रातको उन्हें चैनसे नींद न आती। एक दिन रातके समय गोलंदाज़ सेना तोपोंके साथ कानपुर आ रही थी। यूरोपियनोंने इनके घोड़ोंकी टापोंकी आवाजें सुनीं, वैसे ही अपनी २ खाटसे उठ

बाहर ही किया गया और न उनके साथ एक पंक्तिमें बै
भोजन करनेमें ही किसीको आपत्ति थी। ५३ नं० सेन
मानखां नामक सिपाही कुछ कारतूस अपने साथ भी ला
था। उन्हें दिखाकर उसने सिपाहियोंसे कहा कि इनमें किस
तरहकी चर्बी नहीं मिली है। * सिपाहियोंको विश्वास दिलानेके
लिये ही मानखां नये कारतूस लाया था। पर उसकी बातपर
किसीने विश्वास न किया। नये कारतूससे जैसी बदबू निक-
लती थी वह सबको ही बुरी लगती थी। † सिपाही संदिग्ध
दशामें रहे। बाज़ारोंमें नये कारतूसोंके सम्बन्धमें अफवाह उड़
ही रही थी कि वे चर्बीसे बने हैं। सिपाही इससे दिन पर दिन
अस्थिर होने लगे। यह अस्थिरता बादमें क्रोधमें बदल गई।
अंग्रेज़ोंको सब विश्वासघातक और धर्मनाशक कहने लगे।
जब किसी प्रकारके सन्देहकी दशा होती है तब लोग कल्पनाओं-
से अधिक काम लेते हैं। इस समयपर भी लोगोंके मस्तिष्कोंसे
नयी नयी बातें उत्पन्न हो रही थीं। जब सिपाही अधीर थे
उस समय अफवाह उड़ी कि परेडके मैदानके नीचे बारूद बिछाई
गई है, सब सिपाहियोंको मैदानमें इकट्ठा करके उड़ा देंगे। ‡
इस तरहकी नाना प्रकारकी भयानक बातोंसे सिपाही डरने
लगे। अबतक वे विश्वासके साथ कम्पनी सरकारकी ओरसे

---

* Mowbray Thomson's Story of Cawnpore, P. 25.
† Ibid P. 25.
‡ Trevelyan's Cawnpore, P. 79.

कि

तमें

ए

ग
ा

न
े

हिन्दुस्तानी सिपाही थे। यहां साठ गोरे गोलंदाज़ और थे। बनारसके गोरे सिपाही थे। इनके अतिरिक्त पदल और ग सिपाहियोंकी संख्या ६७ थी। उस समय सब मिलाकर कानपुरमें ३०० अंग्रेज़ थे। *

सेनापति सर ह्यू ह्वीलर सब सेनाके सेनापति थे। चौवन बरस सिपाहियोंमें काम करके सेनापतिको हिन्दुस्तानी सिपाहियोंकी रीति नीति और चरित्रका पूरा ज्ञान हो गया था। उन्होंने सेनापति लार्ड लेककी देख रेखमें फरासीसियोंके विरुद्ध सेनाका संचालन किया था, अफगानिस्तानके पहाड़ी इलाकेमें अफगानोंको जा घेरा था, वीरभूमि पंजाबमें सिक्खोंके विरुद्ध उन्होंने अपनी सेनायें बढ़ाई थीं। इस प्रकार आधी सदीसे भी अधिक उन्होंने भिन्न भिन्न रणक्षेत्रोंमें अपने पराक्रम दिखाये थे, सिपाही सदा उन्हें प्रेमकी दृष्टिसे देखते और उनकी आज्ञा मानते थे। इसी देशकी एक यूरेशियन स्त्रीसे उन्होंने विवाह किया था। तिहत्तर वर्षकी अवस्था होनेपर भी उनका शरीर निर्बल न था। जब मेरठ और दिल्लीके समाचार पहुंचे तब उन्होंने समझ लिया कि कानपुरमें ऐसी बातका होना कुछ भी कठिन नहीं है। कानपुरमें गोरी सेना कुछ भी न थी। सरकारने अपना राज्य तो बढ़ाया पर राज्यकी रक्षाका कुछ भी प्रबन्ध न किया, अब उसका फल भी सामने आ गया। जो गोरी सेना कानपुरकी रक्षाके लिये रह सकती थी वह नये जीते हुए प्रदेश

* Kaye's S. .y war Vol. II, P. 289, note.

धर्में थी। मई मासमें जब स्थान स्थानपर सिपाहियोंकी उत्ते-
[illegible]ा प्रगट होने लगी, हर शहरके यूरोपियन लोग जब प्राणोंके
भयसे भागने लगे, हर स्थानसे जब विद्रोहके तार आने लगे तब
सेनापति ह्वीलर गोरी सेनाकी न्यूनता देखकर चिन्तित हुए।
कानपुरमें बहुतसे यूरोपियन और अंग्रेज़ अपनी स्त्री और पुत्रोंके
सहित रहते थे। अंग्रेज़ोंके परिवार नगरके हर स्थानमें थे। अस्प-
तालमें सेनाके ३२ गोरे बीमार थे। इस समय इन सब अस-
हाय जीवोंकी रक्षाका भार सेनापति ह्वीलरपर पड़ा। बुढ़ापेके
अन्तमें उनके सामने ऐसा कठोर काम आया जैसा उनकी पच-
पन बरसकी नौकरीमें कभी न आया था।

सिपाहियोंमें जातिनाश और धर्मनाशके अनेक प्रकारके
आन्दोलन हो रहे थे। मई मासके बीचमें कई एक आटेकी
भरी नावें कानपुर पहुंचीं। बाजारमें यह आटा कुछ सस्ते
भावपर बिका। यह आटा पुराने और खराब गेहूंका था। रोटी
बनानेपर उसमेंसे कुछ बदबू आया करती थी। अफवाह उड़ी
कि सर्वसाधारणका धर्मनाश करनेके लिये अंग्रेज़ोंने आटेमें गाय
और सूअरकी हड्डियाँ मिला दी हैं। बिजलीके समान वेगसे यह
अफवाह सिपाहियोंके पास जा पहुँची। सब सिपाही अपने धर्म
और जातिके लिये बड़े चिन्तित हुए। इसके बाद चर्बी मिले
कारतूसोंका आन्दोलन होने लगा। कुछ सिपाही नये कारतूसोंके
प्रयोगकी शिक्षा प्राप्त करनेके लिये अम्बालाके सैनिक विद्यालयमें
गये थे। उनके सीखकर वापिस आनेपर [illegible]नों उन्हें जातिसे

† Ibid P. 25.
‡ Trevelyan's Cawnpore, P. 79.

कर सब आत्मरक्षाके लिये तैयार होने लगे। वे सोचने लगे कि सवार उनके नाशके लिये दलबद्ध होकर चले आ रहे हैं। अन्तमें जब उन्हें सच्ची बात मालूम हुई तब ईश्वरको धन्यवाद देते हुए वे अपने २ घरमें गये। उनका डर किसी समय भी दूर न होता था। रात दिन वे अपने सामने कराल संहारमूर्त्तिको खड़ा देखते थे। किसीको किसी स्थानपर शंकित या भागता हुआ देखते, तोभी वे अपने सर्वनाशकी आशंका करते थे। सिपाही इस समयतक उनके विरुद्ध खड़े न हुए थे, पर अंग्रेज़ प्रतिपल अपने आपको कराल कालके अधीन समझते थे। किसी किसीने अपने हिन्दुस्तानी नौकरकी मददसे हिन्दुस्तानी कपड़े बना लिये थे, विपत्ति आनेपर स्त्री-पुत्र और कन्याओंको यह कपड़े पहनाकर निरापद स्थानपर भेजनेकी सोचते थे।* वे लोग इतने डर गये थे कि यदि उन्हींके घरका आदमी ज़ोरसे बोलता या उनके नौकर आपसमें कानमें मुंह देकरके बातें करते तोभी वे सबके सब विपत्तिकी आशंका करके बाहर आ जाते। कारण मालूम करनेतककी उनमें धीरता न थी। कोई किसीकी बातका पूरा जवाब न दे सकता था। कोई किसी बातका परिणाम देखने तक न ठहरता। सब भ्रान्त, संशयग्रस्त और बुद्धिहीनसे हो गये थे। जिसे जो चीज मिल जाता वही हाथमें लेकर गाड़ीमें बैठते और कांपते हुए हृदयसे छावनीको जाते। जिसे गाड़ी न मिलती वह पैदल ही जल्दी जल्दी पसीनेमें लथपथ होकर पहुंचता।

* Shepherd's Cawnpore, P. 13.

वृद्ध सेनापति अंग्रेज़ोंकी यह भय व्याकुलता देखकर उनके उद्धारका उपाय सोचने लगे। उन्होंने सोचा कि जबतक बाहरसे मदद न आवे तबतक बालबच्चों और स्त्रियोंको एक रक्षित स्थानमें रखा जाय। यह काम भी सहज न था। क्योंकि समय बहुत बीत चुका था इसलिये इसमें उन्होंने देर न की। तोपखाना ही वहां सबसे अधिक पक्की इमारत समझी जाती थी। यह गंगाके किनारे चारों ओरसे पक्की और ऊंची दीवारोंसे घिरा था। इसमें लड़ाईके सभी हथियार, बारूद, गोले और तोपें इकट्ठी थीं। भीतर चौकमें रहने योग्य अनेक बड़े २ घर थे। यह खजाने और जेलखानेके निकट था। यह तोपखाना छावनीसे छः मील दूर था। पर सेनापतिने अपनी रक्षाके लिये इस स्थानको पसंद न किया। छावनीके पास ही दो अस्पताल थे। इनमेंसे एक पक्का और दूसरा पक्की दीवारसे घिरा तथा कैलूसे छाया हुआ था। कुछ आवश्यक घर थे। पास ही गङ्गा बहती थी। सेनापति ह्वीलरने इसी स्थानको अंग्रेज़ोंकी रक्षाके योग्य समझा। झट इन दोनों स्थानोंके चारों ओर दीवार बनवाई जाने लगी— बड़ी कठिनाईसे चार फुटसे कुछ अधिक ऊंची मिट्टीकी दीवार खड़ी हुई। गर्मीके कारण मिट्टी सूखकर ऐसी कड़ी हो गई थी कि उसे खोदकर दीवार बनाना कठिन था। साथ ही देरका भी काम न था। झटपट जो कुछ खुदी उसीसे दीवार तैयार हो गई; पर यह कुछ भी मजबूत न थी, गोलीसे वह टूट जाती थी। खैर, दीवार तैयार होनेपर सेनापति वहां आवश्यक भोजन

सामग्री एकत्र करने लगे। पर वह प्रबन्ध भी काफी न था। जिनपर सामग्री लानेका भार दिया गया था वे उसे पर्याप्त मात्रामें न ला सके। सेनापतिने पचीस दिनके योग्य भोजन संग्रह किया था। चाहे जिसका दोष हो, पर खाने पीनेका सामान कम एकत्र हुआ था। *

सेनापतिने अंग्रेज़ोंकी रक्षाके लिये जो स्थान चुना था वह बहुतोंकी दृष्टिमें रक्षाके योग्य न था। इनकी रायमें यदि सेनापति सबको मेगजीनमें एकत्र करते तो वे अवश्य सफल होते, क्योंकि वह स्थान हथियारोंसे पूर्ण और मजबूत दीवारोंसे घिरा था। यदि इस स्थानपर वे आकर रहते तो बालक और स्त्रियां सहसा मौतके मुंहमें न जातीं, बीमार अंग्रेज़ोंकी भी रक्षा होती। और तो क्या, तोपखानेके पास ही खजाना और जेलखाना भी था। उनकी भी रक्षा हो सकती थी। जिन्होंने कानपुरके गदरका हाल लिखा है, उनमेंसे अधिकका कहना यही है कि यदि सेनापति अंग्रेज़ोंको तोपखानेमें रक्षाके लिये रखते तो वे बच जाते। † रणकुशल और अनुभवी सैनिकोंकी भी यही सम्मति है। वह स्थान छोड़कर सेनापति ह्वीलरने छावनीके पास, समतल भूमिपर, मिट्टीकी दीवारोंसे घिरे हुए स्थानमें अंग्रेज़ोंको लाकर रखा। इस कारण वृद्ध सेनापतिकी दूरद-

* Thomson's Story of Cawnpore, P. 31.

† Trevelyan's Cawnpore, P. 82. Kaye's. Sepoy War, Vol. II. P. 294.

शिंतापर आक्षेप किया गया है।* रणकुशल सैनिकोंने जो बात कही, वह अनुभवी और कार्यकुशल वृद्ध सेनापतिके ध्यानमें न आई होगी, यह समझमें नहीं आता। तोपखाना छावनीसे छः मीलके फासलेपर था। इतनी दूर चले जानेपर सेनापति सेनापर नजर न रख सकते, सिपाहियोंमें क्या हो रहा है यह भी वे न समझ सकते। भीतरसे सिपाही उत्तेजित थे पर बाहर वैसे ही शान्त थे। इस कारण सेनापति सिपाहियोंसे भिन्न नहीं हो सकते थे। वे तोपखानेमें जाते तो रक्षाके लिये कुछ सिपाहियोंको भी रखते। इससे और भी अधिक विपत्तिकी संभावना थी। यदि सब अंग्रेज़ तोपखानेमें जाते, गोरे गोलंदाज भी वहीं जाकर रहते तो उन्हें जाते देखकर ही सिपाही उत्तेजित हो उठते वे खयाल करते कि अंग्रेज़ उनके विरुद्ध हो गये और अब वे शीघ्र ही तोपखानेके हथियारोंसे उन्हें उड़ावेंगे। इसी विचारसे वे अंग्रेज़ोंपर भी आ टूटते। वृद्ध सेनापतिने इन सब विपत्तियोंका विचार करके अपनी रक्षाका स्थान दूर नियत किया।† जो स्थान उन्होंने रक्षाके लिये बनाया था वह उन्हें अयोग्य और विपत्तिपूर्ण मालूम होता था। पर घटनाओंके कारण बाध्य होकर उन्हें उसी स्थानपर ही रहना पड़ा। बाहरसे मदद आने तक वे इस स्थानमें रहकर प्राणरक्षा करना चाहते थे। उनके पास जो समाचार आरहे थे, उनसे वे अनुमान लगाते थे कि

---

* Kaye's Sepoy War. Vol. II. P. 295 note.

† Ibid. Vol. II. P. 294.

सिपाही सरकारके विरुद्ध होकर दिल्ली जायंगे। इसी अवसरपर कलकत्तेसे सेना आ सकती है, वृद्ध सेनापतिने जो आशा की थी वह पूर्ण न हुई। सेनापतिने चाहे अपने बच्चोंको मौतके हाथ नहीं सौंपा, जान बूझकर अपना अमूल्य जीवन उन्होंने कालके हाथमें नहीं दिया। उन्होंने जो कुछ सोचा था वह नहीं हुआ पर उनका विश्वास भी निर्मूल न था, यह बादकी घटनाओंसे मालूम होगा।

अपने बचनेका स्थान नियत करके, बल बढ़ानेमें उन्होंने कसर न रखी। लखनऊमें सर हेनरी लारैंसको उन्होंने सेना भेजनेके लिये लिखा। इस समय अयोध्यामें हर स्थान-पर उत्तेजना फैल रही थी, उस इलाकेकी रक्षाके लिये ही सेना पर्याप्त न थी फिर कभी सर हेनरी लारैंस कानपुरके वृद्ध सेनापतिकी सहायतासे विरत न रहे। उन्होंने शीघ्र ही ३२ नं० गोरी सेनाके ८४ गोरे सैनिक घोड़ोंकी गाड़ीमें कानपुर रवाना किये। इसके अतिरिक्त गोलंदाज सेनाके लेफ्टिनेंट आसेकी अधीनतामें दो तोपें अवध भेजीं। कान-पुरकी वास्तविक दशा जाननेके लिये सर लारैंसने अपने सेक्रे-टरीको भेजा। यह छोटा दल, मिट्टीकी दीवारसे घिरे, सेना-पति हीलरके निर्दिष्ट स्थानपर पहुंचा। सर लारैंसके सेक्रेटरीने आने वाली विपत्तिके निवारण करनेके उपाय किये।

कानपुरके अंग्रेज़ अधिकारियोंने जिस समय अपनी रक्षाके लिये लखनऊमें सर हेनरी लारैंसको लिखा, उसी समय

पने आपको और भी अधिक निरापद करनेके लिये उन्होंने ानपुरके पास बिठूरके एक शक्तिशाली पुरुषको भी लिखा। इ शक्तिशाली व्यक्ति बहुत दिनसे सरकारका मित्र, अनुगृ-ीत और आश्रित था। बहुत दिनोंसे अंग्रेज़ोंको बहुमूल्य द्रार्थ देकर इसने उन्हें प्रसन्न किया था। इस विपत्तिके अवसरपर कानपुरके अंग्रेज़ोंने उनसे सहायता मांगी।

महाराष्ट्रके अन्तिम पेशवा बाजीरावके उत्तराधिकारी धुंधूपन्थ नानासाहबका इतिहास इस ग्रन्थके पहले भागमें ा चुका है। विजयी बाजीराव किस प्रकार पूनाके सिंहासनसे हटाये गये, किस प्रकार कानपुरके पास बिठूर नामक स्थानमें आकर रहे, उनका गोद लिया हुआ पुत्र अपनी पैत्रिक पेंशनसे किस प्रकार वंचित हुआ, अन्तमें इस दत्तकने विलायतमें एक मुसलमान दूत भेजकर कम्पनीके डाइरेकृरोंसे सुविचारकी प्रार्थना की, पर वह भी न मिला, उससे वह हताश हुआ, यह सब इस ग्रन्थके पहले भागमें आचुका है। पेंशन न मिलनेपर भी नाना-साहबने अंग्रेज़ोंसे भला व्यवहार बनाये रखा। बाजीरावके ८००० नौकर थे। जब पेशवा स्वर्ग सिधार गये और उनके पुत्र नानासाहब सम्पत्तिके स्वामी हुए तब भी इन्होंने किसी प्रकारकी उच्छृंखलताका परिचय न दिया। अंग्रेज़ प्रायः नानासाहबके महलमें आया जाया करते थे। उनके व्यवहार और अतिथिसत्कारसे प्रसन्न होकर अंग्रेज़ उनका गुणगान करते थे। बिठूर आकर नानासाहबको पेंशन रोकनेके अन्याय-

की बात भी वे सुनते। शायद नानासाहब यह सोचते थे कि अपने देश जाकर यह हमारे विषयमें कुछ सिफारिश करेंगे।* पर अंग्रेज़ उनकी सहायता करें या न करें, उनका राजमहल अतिथिशून्य न रहता था। उनके अतिथियोंका रजिस्टर खोलनेसे सैकड़ों अंग्रेज़ोंके नाम मिलते थे। कई कई दिन नानासाहबके महलमें रह रहकर यह लोग नाना प्रकारके स्वादिष्ट भोजनोंसे तृप्त होते थे। एक अंग्रेज़ एक बार गाड़ीमें बैठकर, उनके पास कानपुरसे बिठूर गया। उसने उस गाड़ीकी बहुत प्रशंसा की। नानासाहबने उत्तरमें कहा कि "मेरे पास इससे भी अच्छी घोड़ागाड़ी थी, पर मैंने गाड़ी जलवा दी और घोड़ोंको मरवा दिया।" उस अंग्रेज़ने इसका कारण पूछा। नानासाहबने कहा कि "कानपुरके एक साहब और मेम अपने बीमार बच्चेको लेकर हवा बदलनेके लिये बिठूर आरहे थे। मैंने वह गाड़ी भेज दी थी। रास्तेमें आते २ उसी गाड़ीमें उनका बच्चा मर गया। फिर मैंने उस गाड़ी और घोड़ोंका कभी व्यवहार नहीं किया।" अंग्रेज़ने कहा कि "आपने यह घोड़ागाड़ी अपने किसी ईसाई या मुसलमान मित्रको क्यों नहीं दे दी?" नानासाहबने उत्तरमें कहा कि "नहीं, यदि मैं ऐसा करता और साहबको मालूम होता तो वे चित्तमें दुःखी होते।" अंग्रेज़ने इस घटनाका उल्लेख करके लिखा है कि, इस प्रकृतिके महाराज नानासाहब

* Martin's Indian Empire. Vol. II. P. 249.

दूरमें थे। वे हमारे सामने क्षमताशाली भी न थे और अज्ञानी भी मालूम न होते थे। *

उस समय नानासाहबकी अवस्था ३६ वर्षकी थी। उनकी कार्यपटुता और आलस्यहीनता उनमें पूर्णरूपसे थी। वे दूरदर्शी और अनुभवी भी थे पर दूसरोंके आरम्भ किये कार्योंका परिणाम वे निश्चित न कर सकते थे। वे अविश्वासी थे और इसी कारण दूसरोंपर झट विश्वास कर लेते थे। वे जो कुछ काम करते सब दूसरेके अवलम्बसे, सब दूसरोंकी सलाहसे करते थे। अजीमुल्ला खां नामक एक सुन्दर और शौकीन मुसलमान उनका मंत्री था, जो कुछ काम होता सब उसीकी सलाहसे। अजीमुल्ला खांके विषयमें पहले ही कहा जा चुका है। शुरूमें वह अंग्रेजोंका खानसामा, फिर स्कूलका विद्यार्थी, बादमें विद्यालयका शिक्षक, फिर एक अंग्रेज़का मुंशी, अन्तमें नानासाहबका कृपापात्र बना। वह अंग्रेज़ी भाषामें धाराप्रवाह बोल सकता था। उसे जर्मन और फ्रेंचमें भी बोलनेका अभ्यास था। पर योग्यता न थी। भाषाज्ञानके कारण नानासाहबने उसे योग्य समझकर अपना पक्षसमर्थन करनेके लिये लण्डन भेजा। लण्डनमें यह युवक कृतकार्य न हुआ पर अपने शरीरसौन्दर्यसे वह यूरोप-के विलाससागरमें गोते खाने लगा। इङ्गलैण्डसे वह तुर्क राजधानीमें पहुंचा। उस समय क्रीमिया संग्रामसे सम्पूर्ण

* Martin's Indian Empire. Vol. II. P. 249.

यूरोप आन्दोलित हो रहा था। कौतूहलवश यह युवक युद्ध-भूमिके पास गया। वहां इसने अंग्रेज़ोंके साथ फरासीसियोंके उज्ज्वल मुख देखे। रूसकी तोपोंकी मारसे अंग्रेज़ोंको अस्त-व्यस्त होते देखकर मन ही मन यह सन्तुष्ट हुआ। इन्हीं अंग्रेज़ों-से वह नानासाहबकी पेंशन बनाये रखनेकी प्रार्थना करने आया था, पर वह अस्वीकार हुई। अब उन्हें युद्धमें गड़बड़ाते देखकर वह सन्तुष्ट हुआ।* उसे यह विश्वास हो गया कि वापिस अपने देश जाकर, अंग्रेज़ी सत्ताको वह अस्त व्यस्त कर सकेगा। अपने देशमें लौट आनेपर भी अजीमुल्ला खांका वह विश्वास न गया। नानासाहबको उसने अपने अनुभवकी बाते कहीं। पेंशन बन्द होनेके कारण वे बहुत चिन्तित थे। उनका दूत जब निराश होकर लौटा तब उन्हें और भी अधिक चिन्ता हुई। वे अंग्रेज़ोंपर असन्तुष्ट हुए। लार्ड डलहौजी-के कामोंका फल अब सामने आया। इधर अजीमुल्लाने अपने यूरोप-भ्रमणकी बातोंसे उन्हें और भी विचलित कर दिया। नानासाहब सदा दूसरेकी सलाहसे काम करते थे। अजीमुल्लाकी बातोंको बिना विचार किये उन्होंने सत्य माना।

नानासाहबके राजप्रासादमें और भी भाईबन्धु थे। उनके भाई बालाराव और बाबाभट्ट वहीं रहते थे। भतीजा रावसाहब और कुछ बचपनके मित्र भी वहीं थे। अजीमुल्ला-की तरह तांतिया तोपी भी उनका एक सलाहकार था। इस

* Russell's diary in India Vol. I. P. 115.

प्रकार एक मुसलमान और एक मरहटेकी सलाहसे बिठूरके महाराजका काम चलता था। कानपुरके गदरके समय नाना-साहबके यही मंत्री थे।

जब कानपुरके अंग्रेज़ विप्लवकी आशंकासे भयभीत हो गये, स्त्रियों और बच्चोंकी रक्षाके लिये आलस्यहीन होकर वे चेष्टा करने लगे, तब खजानेकी रक्षाकी ओर उनकी नजर गई। खजानेमें उस समय दश बारह लाख रुपये थे। मजिस्ट्रेट और कलेक्टर हिलर्सडनने नानासाहबकी मददसे इस खजानेकी रक्षाका उपाय सोचा। नानासाहबके व्यवहारसे कलेक्टर उनसे प्रसन्न थे। उन्हें विश्वास था कि यदि विपत्ति आ गई तो नानासाहबकी मददसे वे अपने परिवार और सम्पत्तिकी रक्षा कर सकेंगे। इस सम्बन्धमें हिलर्सडनकी स्त्रीने निम्न लिखित पत्र लिखा था—"इस स्थानपर विपत्तिकी संभावना है। यदि यहां विद्रोह हुआ तो हम कानपुरसे छः मील दूर बिठूर नामक स्थान-पर जायंगी। वहां पेशवाके उत्तराधिकारी हैं, वे साहबके मित्र हैं और बड़े सम्पत्तिशाली हैं, उन्होंने दृढ़ताके साथ कहा है कि बिठूरमें आप सब निश्चिन्त रहेंगे। मैं अन्यान्य अंग्रेज़ महिलाओंके साथ छावनीमें रहना ही पसन्द करती हूं पर साहबने मुझे बिठूर रहनेकी सलाह दी है।"*

नानासाहबपर कानपुरके कलेक्टरका ऐसा दृढ़ विश्वास था। इसी विश्वासके कारण वे खजानेकी रक्षाका भार

* Martin's Indian Empire. Vol, II. P. 251.

नानासाहबको देनेके लिये तैयार थे। कहा जाता है कि यात्रा करते हुए जब नानासाहब लखनऊ पहुंचे तब वहांके राजकर्मचारियोंने उनपर हर तरहसे विश्वास-स्थापन किया। पर जब नानासाहब वहांसे एकाएक चले आये तब सर जान लारैंसके चित्तमें सन्देह हुआ। इसी कारण उन्होंने कानपुरके प्रधान सेनापतिको भी सावधान होनेके लिये लिखा। हेनरी लारैंसकी विलक्षण बुद्धिकी जितनी प्रशंसा की जाय वह कम है। * जो कुछ हो, कानपुरके कलेक्टर नानासाहबके गुणोंके विश्वासी थे। बाजीरावके स्वर्गवासी होनेके बाद-से नानासाहबने किसी प्रकारके अविश्वासका परिचय नहीं दिया था। लार्ड डलहौजीकी संकीर्ण नीतिसे उन्हें मार्मिक दुःख हुआ था, पर उनका खयाल यही था कि समय पाकर अंग्रेज़ोंकी यह नीति बदल जायगी। वे समझते थे कि जिन्हें वे खुश करनेकी कोशिश कर रहे हैं वे एक दिन खुश होंगे और एक न एक दिन उनकी पेंशन फिर जारी होगी। यही सोचकर वे निश्चिन्त और सन्तुष्ट थे। यदि अजीमुल्लाकी कौतूहलभरी यूरोपकी बातोंसे मुग्ध न होते या अपने बचपनके मित्रोंकी मंत्रणामें न आते तो संभव था कि वे अपने गौरव-से भ्रष्ट न होते। कानपुर भी अंग्रेज़ोंके खूनसे न रंगा जाता। कानपुरकी गंगा भी असहाय स्त्रियों और निरपराध बालकोंके खूनसे कलुषित न होती।

* Gubbin's Mutinies in Oudh, P. 32.

नानासाहब बड़ी सभ्यताके साथ अंग्रेज़ोंकी सहायताके लिये तैयार हुए। अंग्रेज़ोंने नानासाहबसे किस प्रकारकी सहायताकी आशा की थी, यह यहां लिखना आवश्यक है। दीवानी और फौजी अंग्रेज़ इस समय खजानेकी रक्षाके लिये चिन्तित थे। जिस स्थानको अंग्रेज़ोंने अपनी रक्षाके योग्य समझा था, वहां से खजाना नहीं ले जा सकते थे। वह स्थान छावनीके निकट था, खजानेके लोभसे सिपाही उसी समय खड़े हो जाते। इस समय जो सिपाही खजानेकी रक्षापर तैनात थे उन्होंने अपनी राजभक्तिका उल्लेख करके कहा कि "हम अपनी शक्तिभर खजानेकी रक्षा करेंगे। यदि खजाना हटाया गया तो हमारी राजभक्ति कलंकित होगी; हमारे विश्वासपर धब्बा लगेगा। हमारे रहते २ कोई खजानेको हाथ न लगा सकेगा।" अधिकारियोंने खजानेके रक्षकोंकी इस बातका प्रतिवाद न किया। यदि उनकी बातका प्रतिवाद करते या अविश्वास दिखाते तो शायद वे प्रगटमें विद्रोह करते। यह बात सोचकर वृद्ध सेनापतिने उनके विरुद्ध कुछ न कहा। रुपया खजानेमें ही रहा। पर विपत्तिके अवसरपर सिपाहियोंपर विश्वास करना अनुचित समझ कर अधिकारियोंने कुछ शस्त्रधारी सैनिक वहां तैनात करनेका निश्चय किया। नानासाहब कलेक्टर हिलर्सडनके मित्र थे, इस कारण इस कामके लिये उन्होंने उनकी सहायता चाही। शीघ्र ही नानासाहबके दो सौ आदमी शस्त्र, दो तोपों सहित, खजाने और तोपखानेके पास, नवाबगंज नामक स्थानपर आ गये। इस

प्रकार अधिकारियोंने खजानेकी रक्षा की। इस सहायताके विषयमें नानाके मित्र तांतिया तोपीने कहा था—"१८५७ के मई मासमें कानपुरके कलेक्टरने, बिठूर नानासहबको इस आशयका पत्र लिखा कि, "यदि आप कृपा करके, मेरी स्त्री और बच्चोंको विलायत भेज दें तो बहुत अच्छा हो।" इस प्रस्तावपर नानासाहब सहमत हो गये। चार दिनके बाद फिर कलेक्टरने नानासाहबको तीन सौ आदमियों तथा तोपोंके साथ आनेको लिखा। तीन सौ आदमी और दो तोपें लेकर वे कानपुर चले। इस समय कलेक्टर साहब अपने घरपर न थे, वे एक घिरे हुए अस्पतालमें थे। हमें उन्होंने अपने घरमें रहनेको कहला भेजा। वह रात हमने उनके घरमें बिताई। दूसरे दिन कलेक्टर साहब आकर मिले, उन्होंने नानासाहबको अपने मकानपर ही रहनेको कहा। उनका मकान शहरमें था। हम मकानमें ही रहने लगे। इस प्रकार चार दिन हो गये। कलेक्टर साहबने कहा था कि, सिपाही इस समय उनका हुक्म नहीं मानते, यह सौभाग्यका विषय है जो इस समय नानासाहब जैसे मित्र उनके सहायक हैं। नानासाहबने अपने नौकरोंके खर्चके विषयमें कहा। कलेक्टर और सेनापति दोनोंने यह बात ले० गवर्नरको आगरा लिखी। वहांसे उत्तर आया कि नानासाहबके नौकरोंके खर्चका इन्तजाम होगा। इस प्रकार २२ मईको नानासाहबने सरकारके खजानेकी रक्षाका भार लिया। *

---

* Kaye's Sepoy War, Vol, II P. 300, note.

जिस दिन नानासाहबके हाथमें खजानेकी रक्षाका भार दिया गया उसके दूसरे दिन, लखनऊसे सर लारेंसकी भेजी सहायक गोरी सेनाका एक दस्ता पहुँचा। सेनापतिकी आज्ञासे सब अंग्रेज़ औरतें, मर्द, बच्चे उस दीवारसे घिरे स्थानमें एकत्र हो गये। इस समय छावनीमें बड़ी गड़बड़ मची। शहरके सब अंग्रेज़, बच्चे और स्त्रियां आईं। गाड़ियोंकी गड़गड़ाहट और आदमियोंकी भाग दौड़ तथा चीख पुकारसे छावनीमें गड़बड़ हुई। इस समय सब घबराये हुए, सब व्याकुल, सब चंचल थे। छोटे बड़े सब एक ही जैसी दशामें थे। २२ तारीखको बजारकी तमाम दूकानें चार पांच बार बंद हुईं। इस दिन सेनापतिके पास लगातार भयंकर समाचार आते रहे। एक आदमी अभी जो समाचार लाया उसे दस मिनट बाद दूसरा ग़लत बता गया, इसी प्रकार सारा दिन बीता। इसके दूसरे दिन भी इसी प्रकार भयानक अफवाहें उड़ती रहीं। वृद्ध सेनापति शान्तिके साथ अपना काम कर रहे थे। सेनापतिके मकानके दरवाजे और खिड़कियां रातभर खुली रहतीं। स्वयं सेनापति भी दूसरी जगह न गये और अपने परिवारको भी उन्होंने न भेजा। सेनापतिके अतिरिक्त और थोड़ेसे अंग्रेज़ कर्मचारी थे जो अपने घरोंपर ही रातको सोते थे।

जिस समय अंग्रेज़ आत्मरक्षाका आयोजन कर रहे थे, हास्पतालोंके चारों ओर मिट्टीकी दीवारें बनवाकर जगह जगह तोपें रख रहे थे, उस समय सिपाही भिन्न भिन्न स्थानोंके बड़ा

बढ़ाकर फैलाये गये समाचारों और अफवाहोंसे और भी अधिक उत्तेजित हो रहे थे। सेनामें २ नं० रिसाला ही सबसे पहले विद्रोही बनने लगा। सिपाही अपने बालबच्चों और सम्पत्तिको दूसरे स्थानोंपर भेजने लगे। पुरबियोंका चिरसहचर और चिरप्रिय लोटा ही उनके पास रहा। सेनामें मुसलमान भी थे, वे भी उत्तेजित हो उठे। हिन्दुओंकी तरह इन्हें भी अपने ईमान बिगड़नेके डरसे नींद न आती थी। मस्जिदमें इकट्ठे हो-कर सलाह करते। २४ मईको इनका त्योहार ईद आई। अंग्रेज़ोंने सोचा था कि इस दिन सब लोग विद्रोहके लिये खड़े होंगे। पर यह दिन शान्तिसे बीत गया। सब काम उन्होंने शान्तिसे किया, सेनापतिको सब नम्रतासे सलाम कर गये। सेनापतिने भी प्रसन्नता प्रगट की।

पर सेनापति और सिपाहियोंमें इससे भी सद्भाव न हुआ। सिपाही आशंकारहित न हुए। अंग्रेज़ोंके प्रति उनका संदेह बढ़ने लगा। उन्होंने देखा कि अंग्रेज़ सदैव उन्हें संदेहकी दृष्टिसे देखते हैं। उन्होंने अपने बचावके लिये दीवार चुनकर तोपें लगा लीं। गोरे सैनिक सदा हथियारोंसे तैयार रहते हैं। यह सब कुछ देखकर वे और अधिक शान्त न रहे। वे सोचने लगे कि शायद इन भरी हुई तोपोंसे एक बार ही उन्हें उड़ा देंगे। चर्बीमिले कारतूस और हड्डीमिला आटा उनके हृदयमें चुभने लगा। वे सोचने लगे कि अंग्रेज़ोंके राजमें उनका धर्म नाश हुआ, जाति नाश हुई और अन्तमें प्राण भी लिये जायंगे।

जिस दिन लखनऊकी सहायक गोरी सेना कानपुर पहुंची, उस दिन रिसालेवाले ऐसे जोशमें थे कि लड़ाईके लिये उन्होंने अपने तमंचोंमें गोलियां भर ली थीं। यह तोपें उनकी छावनीमें क्यों आ रही हैं, यह उन्हें मालूम न था। तोपोंके साथ गोरे सिपाही देखकर उन्होंने समझ लिया कि अब हमें उड़ावेंगे। इसी चिन्ताके मारे उनका सुख भाग गया, झटपट अपने अपने घरसे निकल कर उन्होंने घोड़े तैयार किये। गोलंदाज सेना तोपें लिये हुए उनके मकानोंके सामनेसे चली गई। पर इससे भी वे शान्त न हुए। जब तोपें चली गईं तब कारण मालूम करनेके लिये प्रजाके बहुतसे आदमी सिपाहियोंके पास पहुंचे। बहुत सी भीड़ हो गई। यह भीड़ देख कर एक रसद-विभागका अंग्रेज़ कर्मचारी वहां खड़ा हो गया। उनकी बातोंसे गोरेने समझा कि तोपोंके चले जानेसे उनकी आशंका दूर हो गई। अबतक उन्हें अपने नाश होनेकी चिन्ता थी, यह समझकर गोरेने सिपाहियोंसे कहा—"अवधसे जो रिसालेके सिपाही इन तोपोंके साथ आ रहे थे, उन्होंने कभी किसी तरहकी गड़बड़ न की थी। कभी उन्होंने राजभक्तिका भी निरादर न किया था। उन्हें अच्छा समझकर ही अधिकारियोंने फतेहगढ़ भेजा था। पर उन्होंने अपने सेनापतियोंको मारकर राजभक्तिको क्यों कलंकित किया?" गोरेकी इस बातसे जोशमें आकर सिपाही तरह तरहकी बातें कहने लगे। उनमेंसे एकने कहा—"अफसरोंने ही विश्वासघात किया था, इसमें

सन्देह नहीं। इन अफसरोंने उनके हथियार और घोड़े छीनने चाहे थे, पर यह न कर सकनेके कारण उन्होंने सिपाहियोंको तनखाह लेनेके लिये यहां आनेको कहा।" यहां रुक कर उसने सिर हिला कर कहा —"पर सिपाही सहज माननेवाले नहीं हैं, वे आसानीसे यहां न आवेंगे।" एक दूसरे सिपाहीने कहा "जो अफसर विश्वासघाती न हों तो वे अपनी हिफाजतके लिये दीवार क्यों चुनें? वे जो पहलेकी तरह हमारे साथ भला वर्ताव करें तो हम भी उनका नुकसान न करेंगे। पर वे भले वर्ताव-की जगह तरह तरहकी तरकीबोंसे हमारी जात बिगाड़ने पर उतारू हैं।" इसके बाद उसने अपने साथियोंकी ओर मुंह करके कहा —"देखा, हमारे लिये कैसा जाल रचा है। वे जानते हैं कि हम चर्बीवाला कारतूस कभी न छुएंगे, इसलिये गाय और सुअरकी हड्डियां पीसकर आटेमें मिला दीं।" तीसरेने कहा—"हम सब जानते हैं। अफसरोंका अब हमपर भरोसा नहीं है। वे खजाने और तोपखानेसे सिपाहियोंको हटाकर उनकी जगह गोरोंको देते हैं। अब तक सिपाहियोंपर विश्वास था, अब विश्वास जाता रहा।" जिस समय सिपाही ऐसी बातें कह रहे थे उस समय वे रसद-विभागके गोरे कर्मचारीके चारों ओर खड़े थे। गोरेने उन्हें हर तरहसे शान्त करनेकी कोशिश की पर सब कुछ व्यर्थ था। वह उन्हें जितना ही अधिक सर-कारका उद्देश्य समझाने लगा, उतनी ही वे आशंका प्रगट करने लगे। मेरठकी घटनाका नाम लेकर उन्होंने साफ कहा—

"वहांके सिपाहियोंको दस सालकी कड़ी जेल दी गई है, बेड़ियां पहने पहने वे सड़क कूटते थे। उनका अपराध यह था कि कारतूसोंको उन्होंने दांतसे नहीं काटा था। जब कानपुरमें गोरे सिपाही आवेंगे तब हमारी भी वही हालत होगी। पर हम तबतक राह ही न देखेंगे, हमारी दुर्गति बहुत हो चुकी। यहीं उस दिन एक गोरेने सन्तरीपर गोली छोड़ी थी।* पर उस गोरेको शराबके नशेमें कह कर कुछ भी सजा नहीं दी, जो हम किसी गोरेकी तरफ गोली छोड़ते तो फांसी होती।" सिपाहियोंको ऐसा उत्तेजित और अधीर देखकर उस कर्मचारीने कहा—"तुम अपने ही नाशका दरवाजा खोल रहे हो। अंग्रेज़ोंके अतिरिक्त और किसके यहां तुम्हें ऐसी नौकरी मिलेगी?" इसी क्षण एक सिपाहीने कहा—"हम मुसलमान हैं, मुसलमान बादशाहकी नौकरी करेंगे। वे मुसलमानकी इज्जत करना जानते हैं।" एक और सिपाहीने अपनी लंबी दाढ़ी हिलाकर कहा—"जो तुम लोग इन कामोंके लिये पक्का इरादा ही कर चुके हो तो बिचारे बनिये, तेली, तम्बोली तकका धर्म क्यों नाश कर रहे हो?" पहले सिपाहीने इसके जवाबमें कहा-"ओह तुम सब एक हो, तुम्हारी जाति ही एक है, सब काले सांपके बच्चे हो, तुममेंसे कोई भी न बचेगा।" इसी समय एक हवलदारने अंग्रेज़ कर्मचारीके सामने आकर कहा-"आप इन नादानोंकी

---

* बात सच थी। एक गोरेने अपने बंगलेसे डरके कारण या शराब पीकर शामको पहरेवालेपर गोली दागी थी। Trevelyan's Cawnpore p. 52.

बातोंपर ध्यान न दें, अपने कामपर जायं, हमारे बीचमें न आवें।" जिस समय हवलदार यह बात कह रहा था, तब और कितनोंने भी अंग्रेज़ सैनिकको अपने बीचमेंसे चले जानेको कहा। चारों ओरके सिपाहियोंको जोशमें देखकर अंग्रेज़ शंकित हो उठा था, इसलिये वह उस समय वहांसे चला गया। जब वह पीठ फेर कर जाने लगा तब एक सिपाहीने व्यंगसे कहा—"तू मत डर। कोई डर नहीं, जल्दीसे कलमा पढ़, पगड़ी बांध और मूछोंमें ताव देता हुआ, अलहमदुलिल्लाह बोल। बस कोई कुछ न कहेगा।" इस बातसे सब सिपाही हंस पड़े। गोरेने इसपर कुछ ध्यान न दिया, वह अपने घरकी ओर चला गया।*

इस प्रकार सिपाहियोंका क्रोध जागा। अंग्रेज़ जितना ही अपनी रक्षाका आयोजन करने लगे, उतना ही सिपाही शंकित हुए। यह पहले ही कहा जा चुका है कि वृद्ध सेनापतिको अस्पतालोंके चारों ओर दीवार खींचते देखकर ही वे अस्थिर हो गये थे। इसके बाद जब उन्होंने गोरी सेना और उसके साथ तोपें आती देखीं, सेनापतिको लड़ाईके लिये तैयार होते पाया, जब उन्होंने देखा कि शहरके सब अंग्रेज़ इकट्ठे होकर एक स्थानपर आ गये, तब उन्हें अधिकारियोंपर बिलकुल ही भरोसा न रहा। सिपाहियोंने अंग्रेज़ोंकी अधीरता और डर साफ देखा। वे अबतक जिन्हें दृढ़, तेजस्वी और वीर समझते थे उनकी यह दशा आंखोंके सामने देखकर समझ

* Shepherd's Cawnpore Massacre, p 217-19.

गये कि अंग्रेज़ भी और आदमियोंकी तरह साधारण आदमी हैं। ऐसे आदमियोंको जीतना क्या कठिन बात है। इसी विचारसे सिपाही अंग्रेज़ोंको तुच्छ दृष्टिसे देखने लगे। इस प्रकार दोनों ओरके भाव बदल गये।

मई मासका अन्तिम सप्ताह अफवाहोंसे गर्म रहा, आशंका बढ़ती रही पर शान्ति भङ्ग न हुई। महारानीके जन्मके दिन सेनापतिने सिपाहियोंकी आशंकाके कारण तोपोंकी आवाज न की। परेटके मैदानमें सेनायें भी एकत्र न हुई, किसी तरहका सैनिक उत्सव न हुआ। सब कुछ शान्त रहा, चुपचाप वर्षगांठका दिन बीत गया। एक मेम बाजारमें कुछ जरूरी चीजें लाने गयी थी। जब वह दूकानदारसे चीजें खरीद रही थी तब एक विना वर्दीवाले सिपाहीने उससे कहा—"तुम अब बार बार यहां मत आया करो, तुम्हारी जिन्दगी एक सप्ताहकी भी नहीं है।" वापिस जाकर मेमने यह बात सबसे कही। पर उस वक्त किसीने इस बातपर विश्वास न किया। इससे पहले दिन एक गोरे अफसरका घर आगसे जल गया था। इसे विप्लवकी पूर्वसूचना समझकर अधिकारियोंने वहां तोपें लगा दी थीं। सिपाहियोंको आग बुझानेकी आज्ञा दी गई, शीघ्र ही आज्ञाका पालन हुआ, सिपाहियोंने आग बुझाई। इस प्रकार विपत्ति एक २ पैर बढ़ाती चली आ रही थी। इस समय अजीमुल्ला अपना काम बराबर कर रहा था! वह अंग्रेज़ों-की हंसी उड़ाता था। एक नौजवान अफसर (लेफ्टिनेण्ट

डानियल) से उसने पूछा कि आप जो समतल जमीनपर चारों ओर दीवार बना रहे हैं, उसका नाम क्या है ?" डानियलने कहा—"मुझे मालूम नहीं।" अजीमुल्लाने कहा—"इसका नाम निराशाका किला रखना चाहिए।" वैसे ही अफसरने कहा—"नहीं, नहीं, हम इसे विजयदुर्ग कहेंगे।" अजीमुल्ला केवल अहा, अहा, कह कर अपना विद्रूप प्रगट करने लगा। लेफ्टिनेण्ट डानियल नानासाहबके प्रिय मित्रोंमेंसे थे। एक बार अपने हाथकी हीरेकी अंगूठी उतार कर नानासाहबने उन्हें दी थी।*

इस समय कानपुरमें एक नानकचन्द नामक वकील थे। बाजीरावके भाईका बेटा अपने ताऊकी सम्पत्तिके लिये नानासाहबसे मुकद्मा लड़ रहा था। नानकचन्द नानासाहबके विरुद्ध पैरवी कर रहे थे। यह वकील नानाके विरुद्ध और सरकारके पक्षपाती थे। इन्होंने १५ मईसे अपनी डायरी लिखनी शुरू की। नानकचन्दकी डायरीमें लिखा है कि, जिन सिपाहियोंपर खज़ानेकी रक्षाका भार दिया गया वे भी सरकारकी राजनीतिको दोष दे रहे थे।† जो कुछ हो, मई मासमें तरह तरहकी अफवाहें उड़ीं, भयानक आन्दोलन हुआ, पर इस मासके अन्तिम दिन तक कोई खुले तौरपर सरकारका मुखालिफ

---

* Thomson's Story of Cawnpore, P. 57. Trevelyan's Cawnpore, P. 83.

† Trevelyan's Cawnpore, P. 78—79.

न बना। सेनापति ह्वीलर सोच रहे थे कि, विपत्तिका अवसान हुआ। वे सर हेनरी लारेंसकी सहायताके लिये लखनऊ सेना भेज सकेंगे। इसी विचारसे १ जूनको वृद्ध सेनापतिने लिखा—"इलाहाबादसे गोरी सेना लानेके लिये आज मैंने ८० बैलगाड़ियां भेजीं। मेरा विश्वास है कि शीघ्रही कानपुर निरापद होगा। बल्कि उस दशामें मैं लखनऊ भी सेना भेज सकूंगा। मैं अब अपना घर छोड़कर दीवारसे घिरे तम्बूमें निवास कर रहा हूं। गर्मी भयानक रूपसे पड़ रही है। बुखार अधिक नहीं है। पर उत्तेजना और अविश्वास इतना अधिक बढ़ गया है कि चाहे जितनी सावधानीसे कोई काम किया जाय, झट लोग उसका दूसरा अर्थ निकालने लगते हैं। × × इस समय जो कहीं अविचारका एक भी काम हो जाय तो यह आग फौरन दहक उठे। मेरा सौभाग्य है कि मेरी सेना मुझे अच्छी तरह जानती है। × × मैं ५२ बरससे उनका काम करता—उनके स्वत्वोंकी रक्षा करता चला आ रहा हूं। मेरी आत्मप्रशंसाको क्षमा करें। आशा है कानपुर जैसे स्थानमें मैं शान्ति रख सकूंगा। लोग कहते हैं कि मेरे कारण वे अन्य स्थानोंके सिपाहियोंका अनुकरण करनेसे विरत हैं।"* अपने इस विश्वास और धारणाके कारण वृद्ध सेनापति लखनऊके गोरे सिपाहियोंको वापिस भेजने लगे। ८४ नं० गोरी सेनाके कुछ सैनिक मई मासमें कानपुर पहुंचे थे। इन्हें

* Kaye's Sepoy War. Vol. II. P. 304.

इसी मासके अन्तिम सप्ताहमें सेनापतिने वापिस लखनऊ भेज दिया। इस सम्बन्धमें गवर्नर जनरलको सेनापतिने पत्र लिखा था—"सर हेनरी लारेंसका उद्वेगजनक पत्र पाकर मैंने अभी एक छोटासा दल, ८४ नं० गोरी सेनाके ५० सिपाही और दो अफसर, डाक गाड़ीद्वारा लखनऊ भेजे हैं। अधिक गाड़ियां न मिलीं। यह सेना भेजनेसे मेरी शक्ति कम हो गई है,पर विश्वास है कि दूसरे स्थानोंसे गोरी सेनाके पहुंचने तक मैं आत्मरक्षा कर सकूंगा।" उक्त छोटीसी सेनाने कानपुरसे यात्रा की। वे जब गङ्गाका पुल पार करके लखनऊकी ओर अग्रसर हुए तब सिपाहियोंने अंग्रेज़ोंकी शक्ति कम समझ कर प्रसन्नता प्रगट की। वे प्रतिपल किसी सुयोगकी आशा करने लगे। अंग्रेज़ोंके हाथसे मुक्त होकर वे दिल्लीके बादशाहकी अधीनता और लुप्त सम्पत्तिका स्वप्न देखने लगे।

जून मासका प्रारम्भ होते ही सिपाही अधिक निश्चेष्ट न रहे। अपने विचार कार्यमें परिणत करनेके लिये वे उद्यत हुए। सवार ही सबसे अधिक भड़के हुए थे, इन्होंने पैदल सेनाओंको भी भड़काकर अपने साथ किया। बाज़ार और छावनीमें नाना प्रकारके षड्यन्त्र होने लगे। नवाबगंजमें नानासाहब अपने नौकरोंके साथ थे। कहा जाता है कि षड्यन्त्रकारी इनसे भी आकर मिले। इसी स्थानपर खज़ाना, जेलखाना और तोपखाना था। सब कुछ अपने सामने देखकर विद्रोहियोंके आनन्दकी सीमा न रही। उनके उत्साह बढ़नेके अनेक

कारण थे। जोबाला भवनमें नानासाहबका एक अनुजीवी निवास करता था। अद्‌दअली नामक एक मुसलमान पहले नानासाहबका नौकर था। इस समय वह घोड़ेकी सौदागरी कर रहा था। उसने सिपाहियोंका पक्ष लिया। २ नं० रिसालाका सूबेदार टीकासिंह अपनी क्षमता और सरकारके विद्वेषके कारण सेनाका लीडर हो गया था। सूबेदारके साथ जोबाला भवनका परामर्श होने लगा। अजीमुल्ला भी निश्चेष्ट न था। यह नानासाहबको समझा बुझाकर अपनी ओर करने लगा। इन लोगोंने किस समय मिलकर क्या और कैसा विचार किया था, यह मालम होना कठिन है। इस विषयमें अनेक लोगोंने अनेक प्रकारकी बातें कही हैं, उन सबमें सा-मंजस्य नहीं है।* शिवचरणदास नामक एक आदमीका कहना था, रिसालेके उठनेके तीन चार दिन बाद सूबेदार टीकासिंहने नानासाहबसे मिलकर कहा था कि, आप अंग्रेज़ोंका खजाना और तोपखाना बचानेके लिये यहां आये हैं। हम हिन्दू और मुसलमान अपने धर्मकी रक्षाके लिये मिलकर एक हो गये हैं। बङ्गालके सब सिपाही इस एक ही उद्देश्यकी सिद्धि-के लिये खड़े हो गये हैं, अब आप क्या कहते हैं? नानासाहबने कहा कि "मैं भी सैनिकोंके हाथमें हूं।"† एक और आदमीने

---

* Kaye's Sepoy War. vol II. P. 106 note.

† Ibid vol II. P. 306, note. Comp. Trevelyan's Cawnpore P. 89.

कहा है कि "जून मासके शुरूमें महाराज नानासाहब अपने भाई बलराव और मन्त्री अजीमुल्लाके साथ शामके वक्त गङ्गाके किनारे गये। यहीं उनके गुप्त दूतोंने टीकासिंह और दूसरे षड्यन्त्रकारियोंको उपस्थित किया। सब नावमें बैठकर दो घण्टे तक सलाह करते रहे।* इस प्रकारके परस्पर विरोधी वर्णनसे भी बात सत्य प्रगट हो सकती है। चाहे टीकासिंहने जाकर कहा हो या नावमें बैठकर सलाह हुई हो या और किसी तरह गुप्त परामर्श हुआ हो, पर यह सत्य है कि चौथी जून तक गुप्त सलाहें होती रहीं और उनमें नानासाहबको भी मिला लिया गया। नानासाहबके नौकर पहलेसे ही मिल गये थे। सम्भव है नौकरोंसे ही सिपाहियोंने सुना हो कि नानासाहब भी उनका पक्ष समर्थन करनेको तैयार हैं। इसी कारण वे स्वाधीनताके लिये उन्मत्त हो उठे हों।

बंगालमें अधिक समय सिपाहियोंमें रहनेके कारण सेनापति हीलरको उनकी भाषाका अच्छा अभ्यास था। वे जब हिन्दुस्तानी भाषा बोलते थे तब उनके शब्दोंके उच्चारण, वाक्य रचना और भाव हिन्दुस्तानी ही होते थे। छावनीमें जाकर वृद्ध सेनापति उनकी भाषामें उन्हें स्नेहसे समझाते, शान्त रहनेका उपदेश देते, जोशमें भरे हुए सिपाही शान्त भावसे उनकी बातें सुनते। पर सेनापतिके शब्दोंका कोई असर न हुआ। जोशके मारे वे अंग्रेज़ोंके खिलाफ उठ ही खड़े हुए। बहुतोंको

* Trevelyan's Cawnpore P. 89.

तो बहुत ही अधिक जल्दी थी, दूसरे सिपाहियोंने उन्हें यह कह कर रोका कि ठहरनेसे काममें सिद्धि होगी। उनकी समझमें यह बात न आई थी कि सबसे पहले विद्रोहके लिये कौन खड़ा होगा, इसी बात और कार्यप्रणालीको लेकर कई दिन तर्क वितर्क हुआ। एक हिन्दुस्तानी अफसरने एक दिन सेनाको हथियारोंसे तैयार होनेकी आज्ञा देनी चाही, सूचना करनेके लिये उसने बिगुल बजाना चाहा, पर दूसरेने उसके हाथसे बिगुल छीन लिया।* इस प्रकार विद्रोहके लिये खड़े होनेमें पहले सिपाही पशोपेश और सोच विचारमें पड़े रहे। रिसाला ३ जूनकी रातको विद्रोहका झंडा खड़ा करके उठनेको तैयार हुआ पर उसके सूबेदार भवानीसिंहकी कोशिशसे उस दिन न उठ सका। उस दिन सिपाही शान्त रहे, उसके दूसरे दिन भी किसी प्रकारकी गड़बड़ न मची। पर आधीरातके बाद उनका इरादा मजबूत हुआ। शराब पिये हुए गोरेको गोली चलाने पर भी फौजी अदालतसे छूटता देखकर उन्होंने कहा था कि "एक दिन उनकी पिस्तौलसे भी गोली चलेगी।"† अब वह कार्यरूपमें परिणत हो गई। उन्होंने अपने बूढ़े सूबेदारका कहना न माना, वृद्ध सेनापतिकी ओर न देखा। ४ जूनको आधीरातके बाद रिसाला गवर्मेंटके खिलाफ विद्रोही हो गया।‡ बूढ़े सूबेदारने उन्हें

* Kaye's Sepoy War, Vol II. p. 305 note.

† Shepherd's Cawnpore Massacre, P. 22.

‡ Story of Cawnpore. P. 38. Kaye's Sepoy War. II. P. 386.

बहुत समझाया, पर सब व्यर्थ था। उन्होंने सूबेदारको अपने साथ चलने या मौतके लिये तैयार होनेको कहा। इस हिन्दुस्तानी बूढ़ेने उनकी बातका प्रतिवाद करके अपने सिपाहियों सहित सरकारी खजाना बचानेके लिये जाना चाहा। पर उसका प्रयास सफल न हुआ। जोशमें आये हुए सिपाहियोंने उसे बुरी तरहसे तलवारसे घायल किया। वह गिर पड़ा। उसी दशामें छोड़कर वे चले गये। उनके पीछे पैदल सेना भी तैयार होकर रवाना हुई। यह समाचार मिलते ही वृद्ध सेनापति वहां आकर हिन्दुस्तानी भाषामें कहने लगा—"बाबा लोगो! बाबा लोगो! तुम्हारा यह काम अच्छा नहीं है, तुम ऐसा काम न करना।" पर इसका फल भी कुछ न हुआ। पैदलोंने भी सवारोंका अनुसरण किया। सब नवाबगंजकी ओर चले। वहीं जेलखाना, तोपखाना और खजाना था। दिल्ली जानेका रास्ता भी वहींसे था। इसलिये जोशीले सिपाहियोंने फिर किसी ओर नजर न की, रास्तेके घरोंको लूटते जलाते वे आगे बढ़े। जिस रास्तेसे वे गुजरे वह रास्ता ही उनके जानेकी बात कहने लगा पर ईसाई और अंग्रेज़ अफसर शान्तिसे रहे। अंग्रेज़ोंके खिलाफ होनेपर भी सबसे पहले वे खजानेकी ओर गये।

दो दल सिपाही जब नवाबगंजके पास पहुंचे तब नानासाहबके नौकरोंने उनका स्वागत किया, उनके कामकी प्रशंसा की। ३५ नं० सेनाके कुछ सिपाही इस समय खजानेकी रक्षा

पर थे। यह लोग अपनी राजभक्तिसे विचलित न हुए। यह लोग विद्रोही सिपाहियोंके विरुद्ध खड़े हुए। अंग्रेज़ोंने दूरसे इनकी बंदूकोंकी आवाजें सुनीं। पर सेनापतिने इनकी सहायताके लिये किसीको न भेजा।* इन खजानेके रक्षक सिपाहियोंकी संख्या बहुत कम थी। उन्होंने पहला हमला रोका, पर बादमें न रुक सके। खजाना लुटा, जेलखाना टूटा, कैदी भी मुक्त हुए। कचहरी और दफ्तर जला दिये गये। सारा रुपया सिपाहियोंने हाथी और बैलगाड़ियोंमें लादा और जल्दी जल्दी दिल्लीकी ओर चल पड़े।

सेनापति नीलने कहा था कि कानपुरके तोपखानेमें क्या क्या सामान था यह सेनापति ह्वीलर न जानते थे। इस अज्ञताके कारण अन्तमें बड़ा अनर्थ हुआ। नीलने लिखा है कि, सेनापतिका यह भ्रान्त विश्वास था कि नानासाहब उनकी सहायता करेंगे। विद्रोही सिपाही सब कुछ लूट खसोटकर दिल्ली चल दिये थे, पर नानासाहब उन्हें जाकर वापिस लाये। अब सेनापतिने अपने आपको चारों ओरसे विपत्तिसे घिरा पाया। उनकी तोपें उनके चारों ओर गोले बरसाने लगीं। कुछ देर पहले गोरे अफसर सामानकी फिहरिस्तके लिये तोपखानेमें गये थे, पर वे तम्बू और छोलदारियोंके झगड़ेमें ही पड़े रहे, तोपोंकी ओर नजर भी न की और हथियारोंके स्थानपर यह लोग गये तक नहीं। वापिस आकर उन्होंने सेनापतिसे

* Thomson's of Story Cawnpore P. 40.

कहा कि, वहां कुछ भी नहीं है। पर इतिहासलेखक के साहब-ने लिखा है कि, सेनापतिको तोपखानेकी चीजोंका पता था और थोड़ी देर पहले वे इरादा कर रहे थे कि दिल्लीकी तरह मेगजीन उड़ा दिया जाय। इसका प्रबन्ध भी किया गया था, पर समयपर वह कार्यरूपमें परिणत न हो सका। पश्चिमोत्तर प्रदेशके पुलिस कमिश्नर विलियमका कहना था कि एक रिले नामक गोरा तोपखाना उड़ानेके लिये भेजा गया था, पर रक्षक सिपाहियोंने उसे ऐसा न करने दिया। *

दो नम्बर रिसाला और पहली पैदल सेनाके विद्रोही होजाने पर भी, बाकी दो दल सहसा खड़े न हुए। अगली विद्रोही सेनाने जब नवाबगंज पहुंच कर भा बाकी दो सेनाओंको अपने साथ न देखा तब उनके चित्तमें सन्देह हुआ। सवेरा हो चुका था, पर ये दोनों दल विद्रोहके लिये न उठे थे। अफसर लोग रातभर इनके साथ रहे। रातके दो बजेसे सवेरे तक यह सेनायें परेटके मैदानमें तैयार रहीं। 'हरएक अफसर अपने सिपाहियोंके सामने खड़ा रहा। ६५ नं० सेनाके कप्तानने अपनी सेना २ नं० रिसालेकी छावनीकी ओर बढ़ाई। सवार लोग जो घोड़े और हथियार छोड़ गये थे वे एकत्र किये गये। फिर अफसरोंने दोनों सेनाओंको अपनी अपनी छावनीमें जानेकी आज्ञा देकर, वे खुद दीवारोंसे घिरे अस्पतालोंमें गये। वर्दी उतार कर सिपाही अपने खानेपीनेकी फिकरमें लगे। इसी समय

* Kaye's Sepoy War. Vol II. P. 308 note.

दो नम्बर रिसालेके आदमी आकर उन्हें नवाबगंज चलनेको कहने लगे। इन दूतोंने ३५ नं० सेनासे कहा कि तुम्हारी सेनाके जो आदमी खज़ानेकी रक्षा कर रहे हैं वे कहते हैं कि जब तक हमारी सेनावाले आकर अपने हिस्सेका रुपया न लेंगे तब तक हम किसीको खजाना न तोड़ने देंगे। इस सेनाके सूबेदार और जमादार अंग्रेज़ोंके अनुरक्त थे। वे अपनी मालिक सरकारकी सम्पत्ति लूटने या उन्हें मारनेके बिलकुल विरुद्ध थे। जो कहीं इस मौकेपर छावनीमें गोरे अफसर होते तो वे सेनाओंको अपने वशमें रखते। पर उनके न होनेके कारण दोनों दल सेना विद्रोही सिपाहियोंके दूतोंके बहकावेमें आ गई। बहुतसे खज़ानेकी ओर चले और बहुतसे हथियारोंकी चिन्तामें लगे। सेनाका सूबेदार निर्भयताके साथ सेनाको रोकनेके लिये सामने डटा। पर सेनाको रोकना एककी ताकतसे बाहरकी बात थी। इस सेनाके बहुतसे सिपाही सरकारका पक्ष समर्थन करनेको तैयार हुए थे, इनके हृदय सरकारके विरोधी न थे। अफसरोंकी आज्ञासे यह लोग रातको दो बजे तैयार हुए थे। उस समय यदि वृद्ध सेनापति वहां मौजूद होते तो यह सेना राजभक्त ही बनी रहती। जब यह लोग अपने अपने चूल्हे जला कर रोटी बनानेकी चिन्तामें थे उस समय इनके पीछे तोपोंके गोले गिरे। तीन सेनायें विद्रोही होकर चली जा चुकी थीं, सेनापतिको किसीका विश्वास न रहा था। जैसे और सेनायें थीं वैसे ही उन्होंने ३५ नं० सेनाको भी समझा। इसी कारण यह

राजभक्त सेना भी विद्रोही बनी। यदि सेनापति इस सेनाको बलात् छावनीसे न निकालते तो समयपर यह सहायता करती। पर बिना विचारे उन्होंने अपनी शक्ति कम की। उनकी आज्ञासे इन राजभक्त सिपाहियोंपर तोपोंके गोले फेंके जाने लगे। सिपाही निश्चिन्त होकर खाने पकानेमें लगे थे। एकाएक गोलोंकी मारसे वे व्याकुल हो उठे। पहले पहल वे यह विश्वास भी न कर सके कि उनके बूढ़े सेनापति दया करुणा भूलकर जंगली जानवरोंकी तरह उन्हें मार रहे हैं। जब बराबर गोले आने लगे तब उनका विश्वास भी जाता रहा। खानापीना छोड़कर शोर करते हुए वे भाग निकले। उनमेंसे कुछ नवाबगंजमें जाकर सिपाहियोंसे मिले और बाकी इधर उधर चले गये, इस दशामें भी उन्होंने राजभक्तिसे मुंह न मोड़ा। जब तक तोपें बंद न हुई तब तक वे किसी स्थानपर जा छिपे और अन्तमें मिट्टीसे घिरी दीवारोंवाले अंग्रेज़ोंके आत्मरक्षाके स्थानपर वृद्ध सेनापतिके पास पहुंचे। इनकी राजभक्तिसे सेनापति चौंक उठे। अन्त तक इन सिपाहियोंने विश्वासका परिचय दिया। जो कहीं सेनापति बुद्धिसे काम लेते तो ३५ नं० सेना उनके लिये कड़ी २ कट जाती और किसी अंग्रेज़की जान न जाने देती, पर ऐसा न हुआ, सेनापतिके दोषसे विश्वस्त सिपाही गोलोंकी मारसे भाग गये, उनमेंसे थोड़े वापिस लौटकर सेनानायकसे मिले।

नवाबगंजका खजाना लूट कर सिपाही दिल्लीकी ओर चल पड़े थे। उन्होंने सुना था कि दिल्लीसे सब अंग्रेज़ निकाल

छिये गये, बूढ़े बादशाह फिर सिंहासनपर बैठ गये। पहले बादशाही ज़मानेमें शाही सेना जैसी सौभाग्यशाली होती थी, वैसेही दिल्लीके सिपाही बड़े भाग्यशाली हैं। यह समझकर वैसा ही भाग्यवान होनेके लिये कानपुरके सिपाही भी दिल्लीके लिये रवाना हुए थे। खजानेका सारा रुपया उनके हाथ लगा था, तोपखानेके सब हथियार और गोले बारूदपर उन्होंने कब्ज़ा कर लिया था। यह सब करके उन्होंने दिल्लीकी राह ली। नानासाहब इस समय वहीं थे। कहा जाता है कि सिपाहियों-मेंसे किसी २ ने उनके पास जाकर कहा था—"महाराज, जो आप हमारी ओर हों तो कानपुरका राज आपका ही है और जो अंग्रेज़ोंकी ओर हों तो मौत निश्चित है।" यह सुनकर नानासा-हबने कहा—"अंग्रेज़ोंकी ओर रहकर मैं क्या करूंगा? मैं हर तरहसे तुम्हारी ओर हूं।" इसके बाद सिपाहियोंने उनसे अपने साथ दिल्ली चलनेका अनुरोध किया। महाराजने सिपाहियोंके इन प्रतिनिधियोंके सिरोंपर हाथ रखकर जातीय गौरवकी वृद्धि करनेकी प्रतिज्ञा की। फिर हाथीपर झंडा खड़ा करके नावोंका पुल तोड़ा गया। जेलखाना तोड़ा गया। आसपास अंग्रेज़ोंके जो घर थे वे जला डाले गये। यह सब करनेके बाद जब सिपाही दिल्लीकी ओर चले तब नानासाहबके मंत्री उपस्थित हुए, नानासाहबकी भी बुद्धि फिरी, सिपाहियोंको उन्होंने वापिस बुलाया।*

* Trevelyan's Cawnpore. P. 104-105.

अजीमुल्ला समझाने लगा कि यदि वे दिल्ली गये तो बादशाहके दर्बारमें उनकी कुछ भी इज्जत न होगी। वहां बादशाहके अधीन होकर रहना होगा। दर्बारके ईर्षालु मुसलमानोंके हाथ पड़कर वे अपनी रहीसही शक्ति भी खो बैठेंगे। ऐसी हालतमें सिपाही भी उनसे अलग हो सकते हैं, बादशाह भी उनका अपमान कर सकते हैं। पर कानपुरमें इस तरहकी किसी बातके होनेकी सम्भवना नहीं है। यहां रहनेसे कानपुर और इस इलाकेके पासकी सारी जमीन उनके कब्जेमें होगी। अंग्रेजोंकी शक्ति नष्ट हो ही गई, रहीसही और हो जायगी। धीरे २ वे उत्तर भारतके सबसे बड़े सम्राट हो जायंगे। वे बहुत बड़े देशके स्वामी और बड़ी सेनाके अधिपति होकर सुखसे राज्य कर सकेंगे। जिन ईसाई कुत्तोंने विजयी महाराष्ट्रोंकी क्षमताका नाश किया, उन सबको समुचित दण्ड दे सकेंगे। अजीमुल्लाकी ऐसी मनोमोहक कल्पना और ओजस्वी वर्णनसे नानासाहबका हृदय उत्साहित हो गया। लखनऊमें अंग्रेजोंपर विपत्ति आ गई यह वे पहले ही सुन चुके थे, इसी कारण वे जानते थे कि लखनऊसे कानपुरकी सहायताके लिये कोई नहीं आ सकता। गंगा और यमुनाके किनारेवाले शहर बनारस, इलाहाबाद और आगरेसे सहायता आनेकी कोई आशा नहीं। सेनापति ह्वीलर अपनी शक्ति किसी प्रकार बढ़ा नहीं सकते। इधर चार सेनायें और बिठूरके उनके नौकर उनके साथ हैं। इस हालतमें वे कामयाब हो सकते हैं, पेशवाके

मृत गौरवका वे फिर उद्धार कर सकते हैं। अजीमुल्लाने पहले ही कहा था कि यूरोपमें अंग्रेज़ोंकी शक्ति कम हो रही है, अब उन्होंने देखा कि भारतमें भी अंग्रेज़ शक्तिहीन होते जा रहे हैं। जहां २ सिपाही खड़े होते हैं वहीं गोरे सिपाहियोंकी कमी मालूम होती है, सिपाहियोंके डरसे वे चारों ओर भागते फिरते हैं। इससे नानासाहबकी आशा पक्की हुई। लार्ड डलहौज़ीकी संकुचित नीतिके कारण जिस न्याय्यअधिकारसे वे वंचित किये गये थे उसका दर्द हरवक्त होता रहता था। अंग्रेज़ोंके प्रति सज्जनताका व्यवहार करनेपर भी वे उनपर विश्वास न करते थे। उनकी राजनीतिके कारण ही उनके स्वत्वोंका नाश हुआ था इस कारण वे अंग्रेज़ोंको न्यायपरायण न मानते थे। बिठूरके आदमी और बागी सिपाहियोंने जो विवरण तैयार किया था वह अंग्रेज़ इतिहासलेखकोंके इतिहासोंमें मिलता है। पर नानासाहबके मित्र तांतिया तोपीने और ही तरहका विवरण प्रकाशित किया। उसके मतानुसार सिपाहियोंने नानासाहबको कैद करके अपने मतानुसार उन्हें राजी किया। उसने कहा है—"दो दिन बाद तीन पैदल सेना और एक रिसालेने खजानेके पास आकर नानासाहब और मुझको घेर लिया। इसी अवसरपर उन्होंने खज़ाना और तोपखाना लूटा। दो लाख ग्यारह हजार रुपया नानासाहबको देकर सिपाहियोंने उसकी रक्षाके लिये सन्तरी नियुक्त किये। हमारे बिठूरके आदमी सिपाहियोंसे मिल गये।

इसके बाद सिपाही मुझे, नानासाहबको और हमारे सब आद-मियोंको लिये हुए दिल्लीकी ओर चले। कानपुरसे तीन मील चले जानेपर नानासाहबने उनसे कहा—"आज शाम हो गई, यहीं ठहरकर कल आगे कूच करना ठीक होगा।" इसपर राजी होकर सिपाही ठहर गये। दूसरे दिन सवेरे ही सिपा-हियोंने नानासाहबको दिल्ली चलनेको कहा। नानासाहब राजी न हुए। तब सिपाहियोंने कहा कि, जो आप दिल्ली नहीं चलते तो वापिस कानपुर चलकर हमारे साथ अंग्रेज़ोंसे लड़ें। इसपर भी नानासाहब राजी न हुए। पर सिपाही उन्हें जबर्दस्ती युद्ध करनेके लिये कानपुर ले आये।"* तांतिया-तोपीकी इस बातसे सिद्ध होता है कि नानासाहब अंग्रेज़ोंसे लड़नेको भी तैयार न थे, पर सिपाही उन्हें जबर्दस्ती लाये। ऊपरके दोनों वर्णनोंसे यह परिणाम निकलता है कि मजबूर होकर वे सिपाहियोंके पोषक बने थे। अजीमुल्ला यदि उन्हें लुभा वना सब्ज बाग न दिखाता तो सम्भव था, कानपुरके सिपाही दिल्ली चले जाते, कानपुरके अंग्रेज़ोंकी रक्षा होती। तांतिया-तोपीके विवरणसे मालूम होता है कि जो सिपाही उन्हें कैद न करते तो सिपाहियोंके पक्षमें न खड़े होते। दोनों ओरसे वे सरकारके विरुद्ध जबर्दस्ती लाये गये थे। घटनाचक्रमें गिरकर उन्हें अंग्रेज़ोंका शत्रु बनना पड़ा।

अजीमुल्लाकी मंत्रणा और सिपाहियोंकी उत्तेजनाके कारण

* Kaye's Sepoy War Vol II. 310 note.

नानासाहब अपने भाई बालराव और बाबा भट्टके साथ, गदर-नायक बने। सिपाहियोंने उन्हें अपना राजा कहकर सम्मानित किया। इसी राजाके नामपर सब काम होने लगे। राजाके नामपर पृथक् २ दलोंके सेनापति बनाये गये और उनकी अधीनतामें राजाके नामपर सब काम होने लगे। सूबेदार टीकासिंह रिसालेके सेनापति बनाये गये। जमादार दोलरंजनसिंह ३५ नं० सेनाके और सूबेदार गंगादीन ६५ नं० के सेनानायक बने। सब कामोंमें हिन्दुओंको देखकर किसी इतिहासलेखकने लिखा है कि अंग्रेज़ोंके विरुद्ध जितने हिन्दू थे उतने मुसलमान न थे। * पर यह बात सत्य नहीं है। उस समय हिन्दू मुसलमान दोनों समान जोशमें थे। हरएक काम हिन्दू-मुसलमानके सम्मिलित नामपर किया जाता था। कारतूसोंकी चर्बी और आटेमें गाय और सुअर दोनोंका नाम आता था। कानपुरका २ नं० रिसाला अधिकतर मुसलमान सिपाहियोंसे भरा था, ये ही सबसे पहले उठे। खैर जो कुछ हो, महाराष्ट्र ब्राह्मण महाराजा नानासाहबके नामपर सब सेनाओंके सरदार चुने गये, शायद महाराजके कारण हिन्दू सरदार चुने गये हों।

६ जून शनिवारको प्रातःकाल नानासाहबकी ओरसे सेनापति ह्वीलरके पास पत्र आया। उसमें लिखा था कि नाना

† Trevelyan's Cawnpore P. 107. Kaye's Sepoy War Vol II. P.315 note.

साहब शीघ्र ही अंग्रेज़ोंपर हमला करेंगे। जब सिपाही खजाना और तोपखाना लूटकर दिल्लीकी ओर जा रहे थे तब सेनापति और अंग्रेज़ोंने सोचा था कि वे अब इलाहाबाद जानेका मौका पा सकेंगे। पर उनकी वह आशा टूट गयी, सिपाही वापिस कानपुर आने लगे। उनके नये सेनापति उन्हें अंग्रेज़ोंके विरुद्ध भड़काने लगे। इस प्रकार हिन्दू और मुसलमान जोशमें भरे हुए, अंग्रेज़ोंके उस मिट्टीकी दीवारसे घिरे अस्पतालकी ओर बढ़े। इस प्रबल विपत्तिसे वृद्ध सेनापति थक गये। वे रातभर छावनीकी संभालमें थे, सारे अफसर खड़े रहे थे, सवेरे वे जाकर लेटे थे, उसी समय विपत्तिका समाचार मिला। देर करनेका समय न था। सेनापतिकी आज्ञासे उसी समय फिर सब तैयार हुए। यह पहले ही कहा जा चुका है कि यह स्थान कुछ भी मजबूत न था। नीचेकी जमीन समतल थी, मिट्टीकी दीवार कुछ भी मजबूत न थी। नानकचंदने अपनी डायरीमें लिखा है—"अंग्रेज़ोंने अनजान आदमियोंकी तरह काम किया था। उन्होंने यह नहीं सोचा था कि यदि सिपाही चारों ओरसे तैयार हों तो वे सहजमें ही घिर सकते हैं। सिपाहियोंके पास रुपया और तोपखानेके हथियार, दोनों ताकतें थीं। फिर भी अंग्रेज़ोंने इस अयोग्य स्थानकी रक्षाके लिये यथोचित प्रबन्ध किया। हरएक आदमीका काम निश्चित कर दिया गया। हरएक अपने कर्तव्यको पूर्णरूपसे करनेके लिये तैयार हुआ।*

* Trevelyan's Cawnpore P. 106.

अंग्रेज़ जब अपनी रक्षाका प्रबन्ध कर रहे थे तब दलके दल सिपाही उनकी ओर बढ़ने लगे। रास्तेमें उन्हें जो ईसाई मिले उन्हें मारते काटते वे अंग्रेज़ोंके स्थानपर पहुंचे। जिस समय नानासाहबका पत्र सेनापतिके पास पहुंचा था तबसे अंग्रेज़ प्रतिपल आक्रमणकी प्रतीक्षामें थे। दोपहरतक कोई आक्रमण न हुआ। सूर्य ढलनेके साथ साथ तोपकी आवाज आई। अंग्रेज़ोंने समझ लिया कि अब विपक्षियोंने अपना काम शुरू किया। शीघ्र ही सेनापतिने सीटी बजाई। सब अपने अपने स्थानपर खड़े हो गये। इधर क्षण क्षणमें सिपाहियोंकी तोपोंके गोले अंग्रेज़ोंके निवासस्थानमें गिरने लगे। विपत्तिमें ग्रस्त अंग्रेज़ स्त्रियां और बच्चे डरकर रोने लगे। इनकी रक्षाके लिये अंग्रेज़ोंने प्राणपणसे कोशिश की। उनकी संख्या बहुत ही कम थी तो भी अपने स्थानपर डटकर वे युद्ध करने लगे।

महाराज नानासाहबके नामपर उत्तेजित सिपाहियोंने ६ जूनसे २६ जूनतक लगातार अंग्रेज़ोंके निवासस्थानपर गोले बरसाये। इस हमलेसे अंग्रेज़ोंकी दुर्दशाका ठिकाना न रहा। अंग्रेज़ोंने इस अवसरपर जैसे कष्ट भोगे वैसे इतिहास-प्रसिद्ध किसी संग्राममें किसी जातिने न भोगे होंगे। गर्म हवाके झोंके उन्हें प्रतिपल भट्टीकी लौकी तरह जला रहे थे। लगातार गोले बरसाते बरसाते तोपें और बंदूकें इतनी गर्म हो गई थीं कि हाथ नहीं लगाया जाता था। गर्मियोंमें वैसे ही अंग्रेज़ सुस्त हो जाते हैं, उनसे अधिक काम नहीं होता, हिमालयकी सर्दीमें

वे यह समय बिताते हैं—पर सन् ५७ में उन्हें कानपुरके उस साधारण स्थानमें घिरकर दुस्साध्य कार्यके लिये प्राण देने पड़े थे। उनकी स्त्रियों और बच्चोंके कष्टोंकी सीमा न थी। स्त्रियां सदा दो बार स्नान करतीं, कपड़े बदलतीं और नौकर पंखा करता रहता था, पर इस समय यह कुछ भी न था। वे एक कपड़ेमें बिना नहाये पड़ी रहने लगीं। बच्चे बिना जल और भोजनके बेहोश हो होकर गिरने लगे। इधर सिपाहियोंकी तोपोंसे गोलेके बाद गोले आकर गिरने लगे। थोड़ी संख्या होनेपर भी अंग्रेज़ घायल होते जाते थे, घायलोंके आर्त्तस्वरसे अस्पताल फटा जाता था। वे रोज मरते और घायल होते थे। रोज उनकी हताशा बढ़ती जा रही थी। अपने बालबच्चोंकी शोचनीय दशाका चित्र उनकी आँखोंके सामने घूमता था। वे नंगे, भूखे, प्यासे आगके गोलोंसे झुलस झुलसकर तोपें और बंदूकें चला रहे थे। बंदूकें थामे हुए उनके हाथ जले जा रहे थे।

मिट्टीकी दीवारपर, स्थान स्थानपर तोपें लगाई गई थीं, प्रति पन्द्रह कदमपर एक एक योद्धा खड़ा था। जो सैनिक न था वह भी बंदूक लेकर खड़ा था। सेनापति ह्वीलरकी आज्ञासे सम्पूर्ण समर्थ आदमी आत्मरक्षाके लिये खड़े हुए थे। हरएक सैनिकके पास गोलीभरी तीन तीन बंदूकें थीं। जो गोरे सीखे हुए थे उन्होंने भी सात सात आठ आठ बंदूकें ली थीं। तोपें दीवारोंपर मैदानमें लगी थीं। इसलिये गोलंदाज हर समय विद्रोही सिपाहियोंकी बंदूकके निशानेमें थे। इधर भीतरकी

ओर स्त्रियां बालक और घायल थे। इनकी शुश्रूषाका कोई उपाय न था। इस प्रकार तरह तरहकी असुविधाओंमें पड़कर वृद्ध सेनापति आत्मरक्षा कर रहे थे। जिस स्थानपर उन्होंने जिसको खड़ा कर दिया था, उस स्थानसे बिना उनकी आज्ञाके वह हट नहीं सकता था। कानपुरकी इस भयानक घटनाके लेखक टामसन साहब उस समय वहीं खड़े थे। इन्होंने ब्रिगेडियर जैकसे चाय पानेके लिये एक मिनिटकी छुट्टी मांगी। पर सेनापतिकी आज्ञाके बिना ब्रिगेडियरने एक मिनिटकी भी छुट्टी न दी। इस प्रकार अपने स्थानपर जमे हुए अंग्रेज़ रात दिन गोलोंसे अपनी रक्षा करने लगे। पहले दिन अंग्रेज़ स्त्रियां और बच्चे रोने लगे थे पर जब रोज वही भयानक शब्द होने लगा, हर समय भंग पीकर मस्तहुए हुए सिपाहियोंका शोर सुनाई देने लगा तब वे भी इसके आदी हुए, पर उनका कष्ट किसी प्रकार कम न हुआ। दिनके बाद दिन बीतने लगे, रोज उनके सामने नयी विपत्ति और नया कष्ट आने लगा।

इधर सिपाहियोंके सेनापति अपने उद्योगसे विरत न थे। टीकासिंह तोपखानेकी सब तोपें निकाल कर शनिवारके दिन भर भेजते रहे। इस प्रकार अंग्रेज़ोंके उस कच्ची दीवारसे घिरे रक्षास्थानके सामने तोपें लगा दी गईं। रविवारको हिन्दी और उर्दू भाषामें एक घोषणापत्र छाप कर बांटा गया। इसमें हिन्दू मुसलमानोंको अपने अपने धर्मकी रक्षा करनेके लिये उत्साहित किया। शहरके दूरदर्शी आदमियोंके विचलित न

होनेपर भी उत्तेजित साधारण प्रजा, अंग्रेज़ोंके मालसे अपने आपको मालदार करनेके लिये, सिपाहियोंके साथ हो गई। साधारण प्रजाके अतिरिक्त जो जमींदार अपनी जमीनोंके स्वत्वसे वंचित हो गये थे, वे भी शामिल हुए, इस प्रकार गदरका आकार और स्वरूप भयानक और विस्तृत होगया। यदि केवल सिपाही ही होते तब भी हानि न थी क्योंकि बहुतसे सिपाही इस समय भी अपनी राजभक्तिसे च्युत न हुए थे। पर सिपाहियोंके साथ जमींदार और प्रजाके मिल जानेसे उनका वशमें लाना असाध्य हो गया। हर जगह ईसाइयोंके प्राण लिये जाने लगे, हर जगह लूट मार हो गई, हर स्थानके आदमी अंग्रेज़ोंसे युद्ध करनेके लिये चल पड़े, इन सबको दबाना असम्भव था। *

घोषणापत्रके प्रगट होते ही उत्तेजित मुसलमान अंग्रेज़ोंका खून लेनेपर आमादा हो गये। दूसरे दिन, अर्थात् सोमवार ८ जून को, गंगाकी नहरके दक्षिणमें हरी मुसलमानी पताका उड़ने लगी। इसके नीचे खड़े होकर सम्मानित मौलवी विधर्मियोंके अवगुणोंका बखान करके उनके नाशका विधान दिखाने लगे। कहा जाता है कि २ नं० रिसालेकी प्रणयपात्री, एक अजीजान नामक वेश्या, घोड़ेपर बैठकर तलवार लिये हुए इस स्थानपर आई।† जोश यहां तक बढ़ गया था कि अंग्रेज़ोंका खून करना लोग पुण्य मानने लगे थे।

* Red Pamphlet. Kaye's Sepoy War. Vol II. P. 290 note. Indian Empire. Vol II. P, 243.

† Trevelyan's Cawnpore P. 137.

यह ऊपर कहा जा चुका है कि अंग्रेज़ सैनिक बहुत कम थे। जो अंग्रेज़ दीवानीका काम करते थे वे भी इस मौकेपर सैनिक बना लिये गये थे। पर इनकी तादाद भी अधिक न थी। * दूसरी ओर सिपाहियोंके अतिरिक्त अन्य उत्तेजित प्रजा तथा ज़मींदारोंकी भी बहुत संख्या थी। सिपाहियोंका एक दस्ता आराम करता, दूसरा गोली बरसाता, पर अंग्रेज़ोंको आराम करनेका समय न मिलता था। जब गोरे सैनिक सिपाहियोंके गोले या गोलियोंसे एक एक करके अपने प्राण खोने लगे

---

* उस कच्ची मिट्टीसे घिरे स्थानके भीतर अंग्रेज़ इस प्रकार थे :—

गोरे फौजी सिपाही	२१०
हिन्दुस्तानी सेनाके हिन्दुस्तानी बाजेवाले	४४
गोरे अफसर	१००
सिविलियन अंग्रेज़	१०१
अंग्रेज़ स्त्रियां और बच्चे	५४६
	१००१

इनके अतिरिक्त २५—३० हिन्दुस्तानी नौकर थे। दूसरी ओर सिपाहियोंकी तादादका ठीक ठीक पता नहीं चलता पर कानपुरकी तीन पैदल सेना और एक रिसालेके अतिरिक्त नानासाहबके ३०० योद्धा थे। इसमें सन्देह नहीं कि सब सिपाही युद्धमें न होंगे, संभव है बहुतसे चले गये हों पर फिर भी अंग्रेज़ सैनिकोंके मुकाबिलेमें इनकी संख्या अधिक थी। उस समय कानपुरमें कुल हिन्दुस्तानी सैनिक ३०००थे। इनमेंसे बहुतसे राजभक्त थे और इसी कारण वे युद्धसे विरत रहे। Trevelyan's Cawnpore P. 118, Holme's Indian Mutiny, P. 236. note.

तब स्वयंसेवक आकर उनके स्थानोंपर खड़े रहे। अपने सम्मान और स्त्री बच्चोंकी रक्षाके लिये ये लोग विपक्षियोंके सामने होनेसे न डरे। इस समय अंग्रेज़ोंने जिस वीरता और साहसका परिचय दिया, अपने जीवनको तुच्छ समझ कर स्त्रियों और बच्चोंकी रक्षाके लिये उन्होंने जो दुस्साध्य कार्य किया, अपने सेनापतिकी आज्ञाका जिस प्रकार पालन किया, वह इतिहासमें अमर रहेगा। सिपाही रोज़ नये उत्साहके साथ गोले बरसाने लगे। रोज़ २ अंग्रेज़ोंकी मुसीबतें बढ़ने लगीं। सुबहसे शाम तक बराबर गोले बरसते थे। इससे किसी ओरकी दीवार टूट जाती, कहीं आग लग जाती, कहीं कोई मर जाता। रातको सिपाही अन्धेरेमें छिप २ कर पास आते और लगातार गोलियोंकी झड़ी लगा देते। इसलिये अंग्रेज़ोंको रात दिन तैयार रह कर युद्ध करना पड़ता था। एक बार बारूद-की गाड़ीकी छतपर गोला गिरा जिससे गाड़ीकी छत उड़ गई और बारूदके पास ही आग लग गई। यह देखते ही एक डिला-फोसा नामक युवक सैनिक फौरन लपका। पास पानी न था, इसलिये रेत डालकर उसने आग बुझाई ; जो वह ज़रा भी देर करता तो बारूदकी गाड़ी उड़ जाती।

केवल शिक्षित सिपाहियोंमें ही इस प्रकारकी वीरता न देखी गई बल्कि जिन सिविलियन कर्मचारियोंने कभी संग्रामभूमि देखी भी न थी, जो रणविद्या कुछ भी न जानते थे, जिन्होंने बाक़ायदा युद्ध करना कभी सीखा ही न था, वे भी इस समय

डटकर वीरता और साहसका परिचय दे रहे थे। जो अंग्रेज़ व्यापारी थे, रेलवेके एंजिनियर थे वे भी बंदूक लिये दृढ़तासे अपना कर्तव्य पालन कर रहे थे। एक एंजिनियरके मुंहपर गोली लगी, दुःखके मारे वह मुंह ऊंचा नहीं कर सकता था। अन्तमें इसी दुःखसे वह मर गया। पादरी साहब भी चुप न थे। बंदूक लेकर वे दुश्मनोंपर गोली बरसानेके काममें न लगे, पर घायलोंकी सेवा, मरहम पट्टीके काममें लग गये। स्त्रियों और बच्चोंको धैर्य देने और थके सैनिकोंको आराम पहुंचानेमें उन्होंने बहुत सहायता की। वे सबको शान्त करते हुए दृढ़ताके साथ काम करनेके लिये उत्तेजित करने लगे।

जब विपत्ति घोरसे घोर हो जाती है, जीवन और सम्पत्ति प्रतिपल नाशोन्मुख होती है, स्वाधीनता और आधिपत्य जब हाथसे निकलनेकी चेष्टा करता है तब जो जातियां वीर होती हैं उनमें एकाग्रता, दृढ़ प्रतिज्ञता, कर्तव्यनिष्ठा और स्वार्थत्याग जाग उठता है। जब रोमन लोगोंने कार्थेजको घेर लिया था और इसी प्रकार घोर संग्राम हो रहा था, कमानोंको बांधनेके लिये डोरियोंकी कमी पड़ गई तब वहांकी स्त्रियोंने अपने लंबे २ बाल तक काट कर डोरियां बनानेके लिये दे दिये थे। भारतकी वीर नारियोंने भी शत्रुओंसे अपने देशकी रक्षाके लिये पंजाबके महाराज अनंगपालको अपने २ गहने उतार कर दे दिये थे (महमूदका चौथा हमला)। कानपुरके घिरे हुए अंग्रेज़ोंकी स्त्रियां भी चुप न थीं। वे पहले घबराईं, रोईं, पर जब रोज उनके सामने

गोले बजने लगे तब उनका हृदय भी दृढ़ हो गया। तोपें फटने लगीं, घावोंके लिये पट्टियोंकी जरूरत हुई, वे अपने मोजे उतार उतार कर देने लगीं। इस समय भीतर थोड़ेसे सिपाही कैद भी थे। एक वीर स्त्री नंगी तलवार लिये उनपर पहरा दे रही थी। जब तक यह स्त्री पहरेपर थी तबतक सिपाही न भाग सके, पर जब दूसरेने पहरेका भार लिया तब मौका पाकर सिपाही भाग गये। इतनेपर भी स्त्रियोंके कष्टोंकी सीमा न थी। उनमेंसे कितनी गर्भिणी थीं। कई सौरीगृहमें थीं। इस समय उनकी सेवाके लिये कोई न था। वे कष्टसे जैसी स्वयं व्याकुल थीं, नये पैदा हुए बच्चेके जीवनके लिये उससे भी अधिक व्याकुल हो उठीं। सिवा एकमात्र परमात्माके उनका और कोई रक्षक न था। कातर दृष्टिसे वे दयामय ईश्वरको स्मरण करने लगीं। बहुत सी अपने बच्चोंकी दुर्दशा देखकर मुरझाती जारही थीं। उन्होंने बड़े स्नेहसे उनका लालन पालन किया था, पर अब उनकी आँखोंके सामने उनके हृदयकी सम्पत्तिका नाश हो रहा था। एक सैनिककी स्त्री अपने पति और पुत्रके साथ खड़ी २ बातें कर रही थी, इसी समय गोली लगी, उसका पति मर गया। इस प्रकारके करुण और बीभत्स दृश्य पल पलमें घट रहे थे। गोलियोंकी बौछार स्त्रियों तक आजाती थी, कितनोंके हाथों और बाजुओंमें गोली लगी थी। बहुतसे अभागे छोटे बच्चे थे जिनके सामने माता पिता दोनोंकी लाशें पड़ी थीं। इस प्रकार रोज अंग्रेज़ोंका नाश होने लगा। जो छोटे छोटे बच्चे एक स्थानसे

दूसरे स्थानपर जा सकते थे वे मना करने पर भी भाग कर दूसरी ओर जाते, रास्तेमें भारी गोलेसे उनका निशान तक न बचता। इस प्रकार भोले बच्चोंके आनन्दमय जीवनका नाश हो रहा था।

सेनापति ह्वीलर प्रतिपल सहायकसेनाका मार्ग देख रहे थे। उन्हें आशा थी कि पंजाबसे सर जान लारैंस सेना भेजेंगे, इलाहाबादसे सेनापति नील उनकी सहायताके लिये आवेंगे, लखनऊसे सर हेनरी लारैंस उनकी मदद करेंगे। पर दुर्भाग्यसे किसी ओरसे भी सेना न आई। पंजाबसे सर जान लारैंसका पत्र आया—"पंजाबकी रक्षाके लिये ही सेना नहीं है, इस-लिये इस समय वे किसीको न भेज सकेंगे।" सेनापतिको आशा थी कि १४ जूनको नील इलाहाबादसे आजायंगे, पर धीरे धीरे १४ जून बीत गई। शामको जज गोविन्सको उन्होंने लखनऊ पत्र लिखा—"हम अंग्रेज़ एक मजबूत दीवारसे घिरे हुए स्थान-में सुरक्षित हैं। बड़े आश्चर्य और महत्वकी बात है कि हमारी रक्षा हो रही है। हम मदद—मदद—मदद—के भिखारी हैं। जो हमें दो सौ आदमी इस समय मिल जायं तो विपक्षियोंको हटा दें।" पर यह दो सौ आदमी भी लखनऊसे न आये। वृद्ध सेनापतिने धैर्यके साथ भाग्यके सामने सिर झुकाया। सबने धैर्यके साथ अपने परिवर्त्तनको समझा। उन्होंने अपने पराक्रम, धैर्य और आत्मत्यागपर भरोसा किया। उनका उद्यम और उत्साह कम न था। धैर्यसे वे आत्मरक्षा करते हुए प्राण देने लगे।

एक सप्ताह बीत गया। दुश्मनके सामने अंग्रेज़ोंने लगातार गोले फेंके। एक सप्ताह बाद उनपर नयी विपत्ति आई। पहले कहा जा चुका है कि अस्पतालके एक घरपर कैलूकी छत थी। यह घर वृद्ध रोगी, बालक और स्त्रियोंसे पूर्ण था। एक दिन गोलेसे सहसा उसमें आग लग गई। असहाय घायल और रोगी बड़ी विपत्तिमें पड़ गये। इधर आग लगती देख सिपाही और भी जोरके साथ उसी ओर गोले फेंकने लगे। बराबर आग जलती रही। रात हो गई, आगके उजालेमें इनपर बंदूकोंकी बौछारें होने लगीं। रोगी, स्त्रियों और बालकोंका घर सूना हुआ, बीमारोंकी दवा और जो कुछ सामान था वह भी भस्म हो गया। जो घायल होने लगे उनकी गोलियां निकालनेके लिये औजार भी न रहे। जो बीमार थे उनके लिये दवा न रही। इस प्रकार असहनीय दुःखसे रोज मृत्यु होने लगी। पीड़ाके मारे घायल लोग मौतको अच्छा समझने लगे।

जो घर जला उसमें कुछ हिन्दुस्तानी सिपाही भी थे। यह पहले कहा जा चुका है कि रिसालाके सूबेदार भवानीसिंहने रिसालाको विद्रोही बननेसे रोका था, इसी कारण सिपाहियोंने उसे घायल कर दिया था। उसी दशामें अंग्रेज़ उसे उठा लाये थे। उस विपत्तिके समय घायल होकर भी भवानीसिंह सरकारके पक्षमें था। अन्तमें एक गोलेकी चोटसे वह मरा। ३५ नं० सेनाके कुछ राजभक्त सिपाही भी वहां थे। इनके लिये घर जल जानेके कारण कोई स्थान न था, खाने पीनेकी चीज़ें भी खतम हो गई

थीं। सेनापतिने इन्हें दूसरे स्थानपर जानेकी आज्ञा दी। एक भोलाखां नामक सिपाहीने कहा था—"हमने ५ से लगाकर १० जून तक अपने घरकी रक्षा की। जब विपक्षियोंके गोलोंसे घर जल गया तब हमें वह स्थान छोड़ देना पड़ा। मेरा खयाल है कि गोलेके साथ कोई जलानेवाली चीज थी जिससे आग लगी *।" खैर, लगभग ८० या १०० सिपाही थे। § हिन्दुस्तानियोंको जानेकी आज्ञा दी गई। मेजर हिलर्सडनने इन लोगोंको थोड़े २ रुपये और एक २ चिट्ठी लिखकर दी। यह लेकर सिपाही अपने घर गये। कुछ रास्तेमें मारे भी गये। इनमेंसे कोई प्रभुभक्तिसे विचलित न हुआ। विदेशी स्वामीकी रक्षाके लिये ये लोग अपनी जातिके विरुद्ध होकर लड़े थे। बहुतसे रास्तेमें मर गये थे। पर किसीने अपने आपको "नमकहराम" कहलानेका अवसर न दिया। सेनापति यदि इन्हें अपने पास रखते तो इनके द्वारा उनका बड़ा उपकार होता। यह लोग स्वार्थ त्यागकर कष्ट सहनेको तैयार थे। ऐसे मौकेपर भी वे अपने भाइयोंसे लड़नेको तैयार थे। पर सेनापतिने इन्हें विदा कर दिया।

दिनके बाद दिन बीतने लगे। प्रतिदिन अंग्रेज़ोंकी ताक़त कम होने लगी, प्रतिदिन सिपाहियोंकी तोप उत्साहसे गोले बरसाने लगी। इन लोगोंपर उस समय कैसी विपत्ति थी, बच्चों और स्त्रियों का क्या हाल था, इसका बड़ा विस्तृत वर्णन, उनमेंसे बचा

* Kaye' s Sepoy War. Vol II. p. 325 note.

† Ibid 242.

हुआ एक अंग्रेज़ लिख गया है *। कुछ सप्ताह पूर्व जिलेके जिन अफसरोंके सामने सब सिर झुकाते थे, जिस सेनापतिके इशारे-पर हजारों सैनिक चलते थे, जिस अंग्रेज़ स्वामीकी आज्ञासे नौकर लोग संत्रस्त रहते थे, सिपाहियोंके गोलोंसे अब उनमेंसे किसीके हाथ टूट गये थे, किसीके पैर उड़ गये थे, किसीका मुंह टेढ़ा हो गया था। इस प्रकार एक २ करके वे शक्तिहीन हो रहे थे। एक एक करके मर: रहे थे। नौकर इस प्रकार अपने अंग्रेज़ स्वामियोंको नाश होते देखकर आपसमें इस विषयकी चर्चा करने लगे। दूसरे ही क्षण एक और बड़े अंग्रेज़को मरा देखकर वे चुप हुए, तीसरे क्षण उन्होंने फिर तीसरेको घायल होते देखा। हर समय इस प्रकारकी घटनायें होने लगीं। मौत मानों परिचित मित्रकी तरह एकके बाद एकको गले लगाकर दुःखोंकी शान्ति करने लगी। कलेक्टर हिलर्सडन साहब बरामदे-में खड़े होकर नानासाहबसे सुलह—स्थापन करना चाहते थे, उनकी स्त्री उनके पास खड़ी थी। इसी समय वे गोलेके आघात-से मर कर स्त्रीके पैरोंके पास गिर पड़े। कुछ दिन बाद गोलेकी चोटसे दीवारका एक हिस्सा टूटकर हिलर्सडन साहबकी स्त्रीपर पड़ा, वह भी मर गई। सेनापति ह्वीलरका पुत्र लेफ्टिनेंट ह्वीलर घायल होकर खाटपर पड़ा था, उसके पास उसके माता पिता और बहनें बैठी थीं। एक बहन पैरोंके पास बैठकर पंखेसे हवा कर रही थी। उसी समय तोपका गोला भी वहीं आकर गिरा,

* Thomson. 's Story of Cawnpore P.

सेनापतिके घायल पुत्रका सिर उड़ गया। वृद्ध पिता माता और स्नेहमय बहनोंने अपनी आंखोंके सामने यह दृश्य देखा। लिंडसे नामक एक सैनिकका मुँह गोलेसे टूट गया, दोनों आंखें फूट गईं। अभागा सैनिक अन्धा होकर थोड़ी देर जीता रहा, बादमें मौतने उसके दुःखोंका अन्त किया। एक और सैनिक इसी तरह मरा, उसकी विधवा स्त्री भी कुछ दिन बाद गोलेसे मर गई, उसकी एक कन्या भी घायल हुई। कप्तान हालिडे नामक एक सैनिक अपनी भूखी स्त्रीके लिये एक प्यालेमें घोड़ेके मांसका झोल ले जा रहा था, सहसा गोलीकी चोटसे उसकी मौत हुई। एक घंटेमें बचे हुए अंग्रेज़ कितने तंग हो गये थे इसका विवरण कप्तान टामसनने दिया है—"एक सैनिक एक घायल सैनिकको देखने गया था, जब यह उससे बातें कर रहा था तब जांघोंमें गोली लगनेसे वह भी गिर पड़ा। मैंने उसके कंधेपर हाथ रख कर उठाया, जब मैं उसे उठाकर दूसरी ओर ले जारहा था तब मेरे भी कन्धेमें गोली लगी, हम दोनों गिर पड़े और दो सैनिक आकर हमें भीतर ले गये। मैं जब घायल हुआ पड़ा था, तब मेरी सेवाके लिये एक और सैनिक आया, उसके भी कन्धेमें गोली लगी। उसी गोलीसे उसके प्राण निकल गये। एक और सैनिक उधरसे जा रहा था वह भी घायल होकर मर गया। एक स्थानपर तीन अफसर बैठे थे, एक गोला वहाँ गिरा जिससे तीनोंके सिर उड़ गये। वृद्ध सेनापतिके साथी इस प्रकार एकके बाद एक मरने लगे। इस प्रकार अपनी शक्तिका नाश होते देख-

कर वे चिन्तित हुए। कोई स्थानकी रक्षा करते हुए मरा, कोई रोगियोंकी सेवा करते हुआ मरा, कोई भूख प्याससे मरा। दीवारसे बाहर एक कुंआ था। इसी कुंएमें मुर्दे डाले जाने लगे। हरएक रातको आक्रमणके डरसे इस प्रकार वीरोंकी समाधि होने लगी। जो मरे नहीं थे उनके दुःखोंका अन्त न था। दिनभर तपे लोहेके समान लाल जलता हुआ सूर्य उन्हें जलाता था, रातको तोपोंके गोले और बंदूकोंकी गोलियां उनका अवसान करती थीं। उनकी स्त्रियों और बच्चोंकी लाशें रोज रातको एक कुंएमें डाली जाती थीं। ऐसे शोचनीय परिणामसे वे दिन पर दिन उदास होने लगे।

इधर अंग्रेज़ोंकी तोपोंके गोलोंसे आक्रमण करनेवाले भी मरते थे, पर उनकी शक्ति कम न होती थी। दूसरे स्थानोंके आदमी आकर उनका स्थान ग्रहण कर लेते थे। आज़मगढ़की १७ नं० पैदल सेना उनके पास आगई थी। कानपुरके पास चौबेपुर नामक स्थानमें लखनऊके पैदल और सवार थे। ये लोग भी कानपुरके सिपाहियोंसे आ मिले थे। मीर नवाब नामक एक ताल्लुकदार दो सेनाओंके साथ नानासाहबसे आ मिला था। लार्ड डलहौज़ी जिस समय पराये राज्योंको छीन रहे थे उसी समय मीरने सेना खड़ी की थी पर उस समय वह शान्त था। अब मौका समझकर उसने डलहौज़ीके कामोंका बदला चुकाना शुरू किया। इस प्रकार अनेक स्थानोंकी मदद आजानेसे विद्रोही बलवान हो गये थे।

सिपाहियोंने भी बड़े कौशलसे अपना व्यूह बनाया था। मिट्टीकी दीवारोंसे उत्तरकी ओर अंग्रेज़ोंके खेलनेके मैदानमें उन्होंने अपनी तोपें जमाई थीं। एक नन्नी नवाब नामक धनी मुसलमानने इस स्थानकी अध्यक्षता ग्रहण की थी। हिन्दू सिपाहियोंने पहले इसका और बाकरअलीका घर लूटा था, दोनों कैद हुए थे। पर इससे मुसलमान सिपाही नाराज हुए इसलिये दोनों कैदसे मुक्त किये गये और नानासाहबकी तरह उन्हें सेनाध्यक्षका सम्मान दिया गया। उसी समयसे उन्होंने अंग्रेज़ोंके विरुद्ध संग्राममें भाग लिया। कहा जाता है कि अज़ीजन वेश्या घोड़ेपर बैठकर रिसालावालोंको उत्साहित करती रहती थी। पूर्वकी ओर बाकरअली तोपोंकी सँभालपर थे। दक्षिण-पश्चिमकी ओर एक बड़ा मकान था। सब लोग उसे सवेदा कोठी कहते थे। इसमें नानासाहब अपने नौकरोंके साथ टिके थे। सेनापति टीकासिंहका खेमा भी यहींपर था। सेनापति यहांकी तोपोंकी सँभाल कर रहे थे, तांतिया तोपी आदि यहींपर अंग्रेज़ों-के नाशका उपाय सोच रहे थे। इस प्रकार हिन्दू और मुसलमान दोनोंने मिलकर अंग्रेज़ोंके रक्षास्थानको घेरा था। इन्हींके भयसे नानासाहब बरायनाम इनके कर्त्ता बने थे।

नानासाहबके नामपर शान्तिरक्षक और न्याय-विभागके कर्मचारी चुने गये थे। एक हुलाससिंह नामक व्यक्ति प्रधान शान्तिरक्षक बना था। बाबाभट्ट प्रधान जज बनाये गये थे। अजीमुल्ला और ज्वालाप्रसाद अन्यदेशोंके मंत्री बने। पर यह लोग

उद्धत सिपाही और उत्तेजित प्रजाको अपने वशमें न कर सके। यह लोग नानासाहबके नामपर यथेच्छाचार करते थे।

एक सौ बरस पहले लार्ड क्लाइवने पलासीकी लड़ाईमें जैसे बंगालकी सेनाओंको अपने पैरोंपर झुकाया था उसी तरह सिपाहियोंने अंग्रेज़ोंको इस समय झुकाना चाहा। पैदल और सवारोंने चारों ओरसे हमला किया। अपने सामने रूईके बड़े २ बोरे लगाकर वे आगे बढ़ने लगे। एक ओर अंग्रेज़ोंका गिरजा था, दूसरी ओर अधूरा बना हुआ सैनिक विद्यालय, इन दोनों इमारतोंके कारण उन्हें हमलेमें बहुत सहूलियत हुई। पर इतना होने पर भी उन्हें सफलता न हुई। उन्होंने बड़े पराक्रमसे संग्राम किया था इसमें सन्देह नहीं, पर वे रणकुशल न थे। वे न तो वर्दी पहने थे, न हथियारोंसे पूरे तौरपर तैयार ही थे, इसके अतिरिक्त वे युद्धकुशल भी न थे। तोपोंकी मारके सामने वे न टिक सके, वे पीछे हटे, उनके साथ ही सिपाही भी हट गये। अंग्रेज़ोंने २३ जूनको अपने स्थानकी रक्षा की, पर उनकी एक विपत्ति और बढ़ गई।

अंग्रेज़ोंने दो तीन बार बाहर खबर भेजी; पर बाहरसे कोई सहायता उन्हें न मिली। २४ जूनको एक गोरा वेष बदल कर इलाहाबाद सहायक सेनाके लिये जाने लगा। पर जा न सका इसलिये वापिस आ गया। इसी दिन रसद-विभागके सेफार्ड साहब वेष बदल कर बदलू नाम रखकर रवाना हुए। सिपाहियोंने उन्हें कैद कर लिया। अभागे बदलूको तीन सालकी कैदकी

सजा दी गई। इस प्रकार अंग्रेज़ अपनी हरएक चेष्टामें नाकामयाब होने लगे। विपत्तिके कारण बार बार हताश होनेपर भी मनुष्यकी आशा नहीं मरती। मरुभूमिके प्यासे यात्रीको दूर सुन्दर स्वच्छ जलका भरा सरोवर दिखाई देता रहता है। यात्री उसकी आशासे आगे बढ़ता रहता है पर वह सरोवर कहीं भी नहीं होता। वह यात्री जैसे जैसे आगे बढ़ता है, वैसेही वैसे उसके छलनेके लिये वह सरोवर भी सरकता जाता है। उस अभागेको पानी नहीं मिलता। इस समय घिरे हुए अंग्रेज़ोंकी हालत भी मरुभूमिके यात्रीके समान थी। वे इलाहाबादकी ओर नजर करके सहायताकी आशा कर रहे थे, पर वहांसे कोई भी न आया। हताश होकर भी अभागे फिर आशासे इलाहाबादकी ओर देखने लगे। इधर उनके खाने पीनेका सामान भी कम हो गया था। हिन्दुस्तानियोंने उन्हें खाने पीनेकी चीजें देनेका यत्न किया था, पर उसका यत्न सफल न हुआ। एक रोटीवाला छकड़ेमें रोटी लेकर उनकी ओर जा रहा था, उसे सिपाहियोंने पहचानकर पकड़ लिया। जौहरी नामक आबकारी महकमेका एक कर्मचारी मौका मिलते ही रोटी, मक्खन और अंडे भेज देता था। १४ जूनको सामान लेकर भीतर जाते हुए पन्द्रह आदमी पकड़े गये। इनमेंसे दो स्त्रियां भी थीं। इन सबको सिपाहियोंने तोपोंके सामने बांधकर उड़ा दिया, वे मर गये, पर उन्होंने जौहरीका नाम न बताया।* विश्वासी भारतवासियोंने इस प्रकार दूसरों-

* Trevelyan's Cawnpore P. 173.

के लिये अपने प्राण दिये थे ? अपने घरवालोंकी उपेक्षा करके अंग्रेज़ोंके नौकर इस समय अपने मालिकोंके साथ थे। इनके प्राण बराबर नष्ट हो रहे थे। एक दिनमें एक गोलेसे तीन जानें गईं। एक आया एक बच्चेको गोदमें लिये खिला रही थी, एकाएक गोलेसे उसके दोनों पैर उड़ गये। ऐसे अवसरपर भी नौकरोंने अपने मालिकोंका साथ न छोड़ा। घिरे हुए अंग्रेज़ोंको जब भारतीयोंकी सहायतासे भी भोजन न मिल सका तब भूखके मारे वे बिलबिला उठे। इस समय उनके सामने जो जीव भी पड़ गया उसे मारकर खा गये। एकबार रिसालेका एक बूढ़ा घोड़ा उनकी ओर आया, एक बार एक सांड उनकी ओर आया। गोलीसे उन्होंने उसे मार दिया। दीवारके भीतर खींच लेनेके लिये आठ दसने रस्सियां फेकीं। कोई कोई गोलियोंसे मर भी गया, पर उन्होंने सांडको खींच ही लिया। इस प्रकार घिरे हुए लोग जिसे भी अपने निकट पाते, उसे ही मारकर अपनी भूख बुझानेकी कोशिश करते। अन्तमें कोई जानवर भी उनकी ओर न आता। उन्हें प्रतिदिन जितना भोजन मिलता था, जून मासके अन्तिम सप्ताहसे उससे भी आधा मिलने लगा।* इस दीवारसे घिरे स्थानमें केवल एक कुंआ था उसमें पानी ६०, फीटकी गहराईपर था। तोपोंके गोलोंसे कुंएके सामनेकी दीवार टूट गई थी। इसलिये जो पानी भरने जाता वह सिपाहियोंको बंदूकका निशाना होता। इस प्रकार भिश्ती लोगोंके

* Story of Cawnpore P. 134.

प्राण जाने लगे। एक ओर गर्मीकी अधिकता, दूसरी ओर पानीकी कमीसे घिरे हुए लोगोंके कष्टोंकी सीमा न थी। जो मजबूत थे वे चुपचाप कष्ट सहने लगे, पर स्त्रियां, बच्चे और घायल विकल हो गये। उनकी कातर आहोंसे सबके कलेजे फटते थे। बहुतसे मार्मिक दुःखसे पागल हो गये। एक मेम अपने दोनों बच्चोंको गोदमें लेकर गोलियोंके सामने खड़ी हो गई। असीम कष्टोंके कारण वह अभागिनी बच्चोंके साथ आत्म-घात करनेको तैयार हुई थी, पर एक सैनिकने उसे ऐसा न करने दिया *। रातको भी कुंएसे पानी भरनेकी सुविधा न थी। पानी निकालनेकी आवाज़ सुनते ही विरोधी उसी ओर गोले बरसाते। जब भिश्ती मारे गये तब जान मैकफिलन नामक एक सिविल कर्मचारीको पानी भरनेका काम दिया गया। एक सप्ताहके पहले ही यह भी परलोक सिधारा। वे एक प्यासी स्त्रीके लिये पानी लाने गया था, गोली लगी, पानी पानी कहते कहते अभागेके प्राण उड़ गये। इस प्रकार खाने और पानीकी कमीसे घिरे हुए अंग्रेज़ोंके कष्ट दिनपर दिन बढ़ने लगे। बच्चे गीला केन-विस चूसने लगे। दस दस बूंद पानी ओठोंपर डालकर अभागे कंठ गीला करने लगे। ऐसे शोचनीय परिणामसे उनके सतेज मुख उदास हो गये। भूखे, प्यासे, बिना नींद और विश्रामके वे बंदूक लिये हुए अपने स्थानपर खड़े हुए आत्मरक्षा करने लगे। पर अबला स्त्रियों और प्राणप्यारे बच्चोंकी दुर्दशा आंखोंके

* Martin's Indian Empire. Vol. II. P. 257.

सामने देखकर उनकी छाती फटने लगी। उन्होंने अपने कपड़े और मोजेतक उतारकर तोपोंमें भरनेके लिये दे दिये थे, अपने ओढ़नेके कपड़े फाड़ फाड़कर घायलोंको पट्टियां बांधीं। नंगे शरीर होकर वे गर्मीकी लू सह रहे थे। पानी पीनेके लिये हो न था, नहानेको तो मिलता ही कहांसे? खाने पीनेकी कमीसे वे निस्तेज थे, बिना नहाये और बिना कपड़े बदले वे और भी अधिक गन्दे हो गये। उनकी सुन्दरता नष्ट हो गई। जब सिपाहियोंको उनकी तंगी और दुर्दशाका पता लगा तब और भी अधिक उत्साहसे वे गोले बरसाने लगे। वे अपने उद्देश्यको सफल होता समझकर प्रसन्न हुए।

तीन सप्ताह बीत गये। इन दिनोंमें अंग्रेज़ोंने अढ़ाई सौ आदमियोंको पासवाले कुंएमें समाधि दी।* इतने अर्सेमें भी किसी ओरसे सहायता न आई। उनके आदमी मर गये। रात दिन गोले बरसनेके कारण तोपें फट गईं, बारूद गोला भी खतम होनेपर आ गया। खानेका सामान चुक गया था। भूखे प्यासे आत्मरक्षा कब तक करें। स्त्रियों बच्चों, और बीमारोंको लेकर वे विपक्षियोंको चीरते हुए बाहर जा नहीं सकते थे। इसलिये वे हर तरहसे हताश हो गये थे। जब वे इस प्रकार अवलम्बहीन हो रहे थे उस समय एक ईसाइन स्त्री उनकी दीवारके पास

* सिपाहियोंके कितने आदमी मारे गये इसका ठीक ठीक पता नहीं पर टामसन साहबने गंगाके घाटपर एक सिपाहीसे उसी समय पूछा था, उसने कहा कि ८०० से लगाकर १००० तक आदमी मरे। Story of Cawnpore, P. 104.

आई, वैसे ही एक गोरेने उसपर बंदूक तानी, टामसन साहब-ने उसे रोका। यह स्त्री नानासाहबका एक पत्र लेकर आई थी। पत्रमें लिखा था-"महारानी विक्टोरियाकी प्रजाके वे लोगजिनका सम्बन्ध लार्ड डलहौज़ीकी नीतिसे नहीं है, हथियार डाल रखदेने पर इलाहाबाद जाने दिये जायंगे।" यह पत्र अजीमुल्लाके हाथका लिखा था। पत्रपर किसीके दस्तखत न थे। सेनापति आत्म-समर्पणके लिये तैयार न हुए। उनका विश्वास नानासाहब या अजीमुल्लापर न था। सब अंग्रेज़ अन्तिम समयतक संग्राम करनेका प्रस्ताव करने लगे। सेनापतिने कप्तान मूर और ह्वीटिंग नामक दो साथियोंसे इस विषयमें सलाह की। इन दोनोंने कहा कि यदि हमारे साथ स्त्रियां, बच्चे और रोगी न होते तो अन्तिम समयतक ही हम संग्राम करते। पर जब इनकी रक्षाका कोई उपाय नहीं है, तब आत्मसमर्पणके अतिरिक्त और क्या मार्ग है? इसलिये नानासाहबके नामसे अजीमुल्लाने जो प्रस्ताव किया था वह माना गया। पत्र लानेवाली स्त्रीने नानासाहबसे जाकर कहा कि सेनापति ह्वीलर और दूसरे सैनिक सलाह करके उत्तर देंगे। इसलिये २५ जूनको सिपाहियोंने अंग्रेज़ोंपर गोले न फेंके। दूसरे दिन २६ जूनको सवेरे नानासाहबका रिसाला और ज्वालाप्रसाद अंग्रेज़ोंकी रक्षाके स्थानके पास जाने लगे। कप्तान मूर, ह्वीटिंग और डाकखानेके साहब रोडे नानासाहबके आदमियोंसे बातचीत करनेके लिये गये। दोनों ओरसे तय हुआ कि अंग्रेज़ अपना स्थान, तोपें बन्दूकें, रुपया,

पैसा सब छोड़ देंगे। वे केवल एक एक बंदूक और साठ साठ कारतूस ले सकेंगे। नानासाहब उनको निरापद गंगाके किनारेतक ले जायंगे, वहां नावें तैयार होंगी, खानेके लिये आटा दिया जायगा। इस समय अज़ीमुल्ला और ज्वालाप्रसादने कहा कि हम बकरे और भेड़ें भी देंगे। इस प्रकार प्रस्ताव लिखकर अज़ीमुल्ला और ज्वालाप्रसादके हाथमें दिया गया। तीसरे पहर एक सवा-रने अंग्रेज़ोंके पास आकर कहा कि नानासाहब प्रस्तावपर राज़ी हो गये हैं, आज रातको इन्हें यह स्थान खाली करना होगा।

वृद्ध सेनापतिने फिर आपत्ति की। उन्होंने कहा हम रातको यात्रा नहीं कर सकते। सवार चला गया। फिर थोड़ी देर बाद वापिस आकर बोला—"अंग्रेज़ोंकी दशाको महाराज नानासाहब धुंधूपन्थ अच्छी तरह जानते हैं, जो वे फिर तोपोंसे गोले बर-सानेकी आज्ञा देंगे तो सबको मरना होगा।" पर अंग्रेज़ इस डरसे न डरे। उन्होंने कहा—"हम दृढ़ताके साथ मरेंगे, पर रातमें अपना स्थान नहीं छोड़ेंगे।" सवार चला गया। थोड़ी देर बाद वापिस आकर बोला—"महाराज नानासाहब अंग्रेज़ोंकी बातपर सहमत हैं, दूसरे दिन सवेरे इलाहाबाद जानेको सब तैयार रहें।" विपक्षियोंमेंसे तीन आदमी रातको आकर अंग्रे-ज़ोंके निवासमें रहे, इनमें ज्वालाप्रसाद भी थे। इन्होंने ऊपरसे वृद्ध सेनापतिके प्रति सम्मान प्रगट किया। बहुत समयतक सिपाहियोंपर प्रभुत्व करनेके बाद अन्तमें इन्हीं सिपाहियोंसे अपमानित होना पड़ा, इस कारण उसने सेनापतिसे समवेदना भी

प्रगट की। सूर्य डूबनेके थोड़ी देर बाद अंग्रेजोंने अपनी सब तोपें विपक्षियोंके अधीन कर दीं। सिपाहियोंके गोलंदाज रात भर तोपोंपर खड़े रहे। नाव तैयार है या नहीं यह देखनेके लिये तीन अंग्रेज़ हाथीपर चढ़कर गंगाके घाटपर गये, उनके साथ बहुतसे सवार गये। घाटपर जाकर उन्होंने लगभग चालीस नावें देखीं, किसीपर छाया थी और किसीपर छाया की जा रही थी। खाने पीनेकी चीजें भी आ रही थीं। यह सब देखकर उनके मनमें किसी प्रकारका सन्देह न रहा। जो सिपाही उन्हें घाटपर ले गये थे उन्होंने भी किसी तरहका अनुचित व्यवहार न किया। वे अक्षत शरीर अपने रक्षित स्थानपर वापिस पहुंचे। टाड नामक एक अंग्रेज़ नानासाहबको अंग्रेज़ी पढ़ाया करता था, यह सन्धिपत्र लेकर उनसे दस्तखत कराने सवेदा कोठीमें गया। नानासाहबने अपने गुरुकी अभ्यर्थनामें कोई त्रुटि न होने दी। कागजपर दस्तखत करके उन्होंने दे दिया। टाडसाहब नानाकी भक्तिसे प्रसन्न होकर अपने स्थानपर वापिस आये।

२७ जूनको प्रातःकाल अंग्रेज़ इलाहाबाद जानेके लिये तैयार होने लगे। शीघ्र ही अपनी मुक्ति समझ कर वे आवश्यक चीज़ें बांधने लगे। किसी २ ने बहुमूल्य गहनोंका बक्स गुप्त स्थानसे निकाला, किसीने शान्तिदायक धर्मग्रन्थ अपने साथ लिया। कोई अपने चिरसंगिनी पिस्तौल और बंदूक लेकर बाहर आये। इनके मलिन मुखोंपर फिर प्रसन्नताकी आभा फूटी। धीरे धीरे सबने अपने रक्षास्थानसे बिदा ली। इस स्थानपर

सबने असीम कष्ट भोगे थे। इन्हें घाटपर ले जानेके लिये पालकियाँ और हाथी तैयार थे। समर्थ अंग्रेज़ कमरमें पिस्तौलें और कन्धेपर बंदूकें रख कर आगे बढ़े। बीमार और स्त्रियाँ पालकियोंमें चलीं। सब मिलाकर ४५० अंग्रेज़ गंगाके किनारे-की ओर चले। इन्हें जाते हुए देखनेके लिये झुंडके झुंड नगरवासी आने लगे। इनके मलिन मुख और फटे कपड़े देख कर बहुतोंको दुःख हुआ। बहुतोंको आश्चर्य हुआ और बहुतसे अंग्रेज़ोंको देखकर पहलेसे भी अधिक क्रोध प्रगट करने लगे। वृद्ध सेनापति अपनी स्त्री और कन्याओंके साथ पैदल गंगाके किनारेकी ओर चले।

गंगाके सतीचौर नामक घाटपर नावें तैयार थीं। यह स्थान अंग्रेज़ोंके रक्षास्थानसे एक मीलके फासलेपर था। घाटके पास हरदेवका एक मन्दिर था। पास ही सतीचौर गांव था, इस कारण उस घाटका नाम भी सतीचौर था। घाटपर जानेके लिये लकड़ीका एक सफेद पुल था। इस पुलपर होकर अंग्रेज़ घाटकी ओर बढ़ने लगे। सिपाही उनके पास आकर बहुत सी बातें पूछने लगे। अपने अफसरोंकी मृत्युपर उन्होंने दुःख भी प्रगट किया। कहा जाता है कि एक घायल अफसर पाल-कीमें बैठा हुआ घाटकी ओर जा रहा था, वह अपने साथियोंसे पीछे रह गया था, उसके साथ साथ उसकी स्त्री भी पैदल चल रही थी। उत्तेजित सिपाहियोंने कहारोंसे पालकी रखने-को कहा। कहारोंने पालकी रख दी। सिपाहियोंने तलवारसे

उसके दो टुकड़े कर दिये और उसकी लोथों भी मार डाला।

उस समय गंगा उतर गई थी। पानी न बरसनेके कारण स्थान २ पर टापू बन गये थे। नावोंपर चढ़नेके लिये किसी तरहकी सीढ़ी न थी, किनारेपर बहुत ही कम पानी होनेके कारण वहाँ नावें आ नहीं सकती थीं। अंग्रेज़ घुटने घुटने तक पानीमें खड़े होकर स्त्रियों, बच्चों और बीमारोंको नावोंपर चढ़ाने लगे। नौ बजेके करीब सब नावोंपर बैठ गये। तांतिया तोपी और टीकासिंह तथा अज़ीमुल्ला किनारेके मन्दिरके पास थे। रिसाले वाले घोड़ोंपर बैठ हुए किनारेपर खड़े थे। पैदल सिपाही और गोलंदाज़ भी वहीं मौजूद थे। अधिक समय तक ये लोग शान्त न रहे। एकाएक बिगुल बजा। गंगाके बीचमें ही भयानक नरसंहारका कार्य होने लगा।

नावोंपर बैठे हुए अंग्रेज़ बिगुलकी आवाज़से चौंके। देखते २ उनपर गोलियोंकी बौछार होने लगी। बिगुलकी आवाज सुनते ही नावोंके मल्लाह कूद कूद कर किनारेपर चले गये। पहलेसे सोचे हुए संकेतके अनुसार नावोंके छप्परोंमें वे आगके अंगारे छिपा गये थे। इधरसे गोलियाँ चलीं उधर नावोंके छप्पर जले। कहा जाता है कि तांतिया तोपीके हुक्मसे कुछ तोपें किनारेपर लगाई गई थीं। इस समय इन तोपोंसे नावोंपर गोले फेंके जाने लगे। रोगी, घायल और बच्चे बहुतसे आगसे जलकर मर गये। औरतें अपने बच्चोंको लेकर पानीमें कूद पड़ीं, पर

कोई न बचीं। रिसालेवालोंने अपने घोड़े गंगामें डालकर उन्हें मारा। गंगाका पवित्र जल असहाय, निर्दोष और निरीहोंके खूनसे लाल हो गया। जो किसी तरह भागकर किनारेपर पहुँचे वे पैदल सिपाहियोंकी संगीनोंसे मारे गये। सिपाहियोंके हृदयोंमें इस समय दया न थी। अस्सी बरससे भी अधिक उम्रके सेनापतिको उन्होंने मार डाला, उन्होंने असहाय अबलाओंकी गर्दनें काटीं, निरपराध बच्चोंपर भी उन्हें दया न आई। घोर विश्वासघातकतासे गंगाके जलपर सिपाहियोंने यह सर्वसंहार किया। एक दरिद्र हिन्दू स्त्रीकी गोदमें अंग्रेज़ बच्चा था, बच्चेके मातापिता घेरेमें मारे गये थे, यह दरिद्र स्त्री ही बच्चेका पोषण करती थी। इसने छुटपनसे बच्चेका पालन किया था इसलिये उसका बच्चेसे माताके समान ही स्नेह हो गया था। इस बच्चेको गोदमें लेकर वह अपने पन्द्रह सालके बेटेके साथ नावमें बैठी थी। जब नावका विध्वंस होने लगा तब बच्चेको छातीसे चिपटाकर वह अपने पन्द्रह सालके लड़केके साथ नावसे उतर कर किनारेकी ओर भागी पर बचाव न हुआ। किनारेपर नंगी तलवारें लिये सिपाही खड़े थे। दाहिने हाथकी तलवार ऊंची करके सिपाहीने बांया हाथ बच्चेको लेनेके लिये आगे बढ़ाया। बच्चा आयाकी गोदसे चिपट गया। सिपाहीने कहा—"अंग्रेज़ बच्चेको देकर आरामसे चली जा।"

आयाने कहा—"मैं अपने बच्चेको नहीं दूंगी। ईश्वरकी दयाको याद करके तू हम दोनोंपर दया कर।"

"बच्चेको दे तो तुझपर दया होगी।" सिपाहीने बच्चेको छीनना चाहा, पर वह मजबूतीसे पकड़े हुए थी इसलिये न छूटा।

पास ही आयाका पन्द्रह सालका लड़का भी खड़ा था। उसने दीनतासे कहा—"मां! बच्चेको देकर अपनी जान बचा ले।"

बेटेके कहनेपर भी माता अटल रही। उसने कहा—"नहीं, मैं नहीं दे सकती।"

इस बातके कहते ही तेज़ तलवार उसकी गर्दनपर पड़ी। सिर कटकर गिर पड़ा। मरी हुई आयाकी गोदसे अंग्रेज़ बच्चेको उठाकर सिपाहीने तलवारसे मारा! आयाका बेटा बच गया।

कहा जाता है कि बहुतसे आदमी अंग्रेजोंके रक्षित स्थानमें धन मिलनेकी आशासे गये थे, पर उन्हें वहाँ कुछ भी न मिला। एक ऊंट वाला वहाँ सबसे पहले गया। उसने वहाँ ग्यारह घायल अंग्रेजोंको पाया। उस समय तक भी उनमें प्राण थे। पर किसीके बचनेकी आशा न थी इसलिये सेनापतिने किसीको साथ न लिया था।

जिस समय गंगाके किनारे यह हत्याकांड हो रहा था उस समय नानासाहब अपने खेमेमें थे। तोपोंकी आवाज सुनकर शायद वे समझे थे कि उनके आदमियोंने फिर भयानक कांड शुरू किया। चिन्तासे उनके ललाटपर रेखा पड़ गई, वे अस्थिर होकर

टहलने लगे। इसी समय एक सवारने आकर सतीचौरकी घटनाका समाचार दिया, सुनकर नानासाहबने लंबी सांस ली। स्त्रियों और बच्चोंकी हत्यासे वे उदास हो गये, उनकी हार्दिक चिन्ताका भाव मुखसे प्रगट हुआ। उसी समय उन्होंने आज्ञा भेजी कि जो बच गये हों उनकी जान न ली जाय, उन्हें कैद कर लिया जाय। आज्ञाका पालन हुआ। १२५ आदमी कैद किये गये, जिस रास्तेसे वे आये थे उसी रास्तेसे वे वापिस शहरमें लाये गये। इनमेंसे बहुतसे घायल हो गये थे, बहुतसे पानीमें डूबनेके कारण भीग गये थे। बहुतसे कीचड़से लथपथ हो रहे थे। वे लोग जब कानपुरकी जेलमें जा रहे थे तब उनके भावोंसे ऐसा मालूम होता था मानों अपने साथियोंके साथ न मरनेके कारण वे अपने आपको धिक्कार रहे हैं।

तांतिया तोपीने अंग्रेज़ोंके आत्मसमर्पणका उल्लेख किया है—"एक स्त्री नानासाहबकी बन्दिनी हुई थी। इसके हाथ नानासाहबने सेनापति होलरके पास इस आशयका पत्र लिख कर भेजा था कि सिपाही उनकी आज्ञाका पालन नहीं करते। यदि सेनापति चाहें तो वे उन्हें कैदमें पड़े सब अंग्रेज़ोंके साथ नावोंपर बैठाकर इलाहाबाद भेज सकते हैं। सेनापति इससे सहमत हुए और उसी दिन तीसरे पहर उन्होंने नानाके पास रखनेके लिये एक लाख रुपया भेजा। दूसरे दिन मैंने चालीस नावें एकत्र कीं और अंग्रेज़ोंको उनपर बैठाकर इलाहाबाद रवाना कर दिया। इस समय सब पैदल सेना मय रिसाला और गोलंदा-

जोंके किनारेपर आई, वे सब पानीमें कूदकर अंग्रेज़ोंका वध करने लगे। आग लगाकर उन्होंने उनतालीस नावें भस्म कर दीं। केवल एक बचकर कालाकांकर तक गई। बादमें वह भी वापिस कानपुर लाई गई। इसके आरोही भी मारे गये। इसके चार दिन बाद नानासाहब अपनी माताके श्राद्धके लिये बिठूर गये।" तांतियाके इस विवरणकी जांचके लिये बादमें बहुतसी गवाहियाँ ली गई थीं। एक आदमीने कहा था कि—"मेरे सामने तांतियाने सेनापति टीकासिंहको सबको मारनेका हुक्म दिया।" एक दूसरेने कहा—"मैं तांतियाके पास छिपा था। मेरे सामने तांतियाने अंग्रेज़ोंको मारनेके लिये एक सवारसे कहलाया था।" तीसरे आदमीने कहा था—"नानासाहबके हुक्मसे तांतियाने हत्या करवाई थी।" इन सब बातोंसे गदरके इतिहासकारोंने तांतियाको ही दोषी ठहराया है।* तांतिया तोपी और टीकासिंह तथा अजीमुल्ला दोषी हो सकते हैं। ये लोग सब काम नानासाहबके नामपर करते थे। पर नानासाहब उस समय सिपहियोंसे दबे हुए थे, यह बात हरएक घटनासे मालूम होती है।

सौभाग्यसे एक नावमें आग न लगी थी, यह नाव भी अधिक भारी न थी। इस कारण अंग्रेज़ोंने पूरा जोर लगाकर नाव धारकी ओर ढकेल दी। इसमें कप्तान टामसन, मूर, डिलाफोसी आदि वीर थे। इन्होंने अपने स्थानकी रक्षामें यथेष्ट साहस और वीरताका परिचय दिया था, इस अवसरपर अपनी नावकी रक्षाके

* Kaye's Sepoy War. Vol. II. P. 340 note.

लिये भी इन्होंने कम हिम्मत न की। सिपाही किनारेपरसे लगातार गोलियाँ बरसा रहे थे। कप्तान मूर और उनके साथी गोलियोंसे मर गये। इस दशामें भी इन्होंने नावको चलाया। मुर्दोंको इन्होंने गंगामें डाल दिया। नावमें किसी तरहकी खानेकी चीज़ न थी। नावमें चलानेका डांड भी न था। इस प्रकार नाव धारमें पड़कर बह चली। कहीं कहीं कम पानीमें जाकर रुक जाती, उस समय यात्री उसे ढकेल कर फिर गहरे पानीमें कर देते थे। आदमी सदा घटनाका दास है, वह जिस अवस्थामें होता है उसीमें अपने मंगलकी कामना करता है। जिस समय यूरोपियन लोग उस स्थानमें घिरे हुए थे उस समय कड़ी धूपसे तपनेपर भी पानी बरसनेकी प्रार्थना न करते थे, क्योंकि यदि पानी बरसता तो उनकी मिट्टीकी दीवार बैठ जाती, विरोधी सहजमें उनका सर्वनाश कर डालते, पर नावमें बैठकर वे रोज़ वर्षाकी प्रार्थना करने लगे। पानी कम होनेसे उनकी नाव जगह जगह रुक जाती थी, जो वर्षाका पानी होता तो वे सुगम-तासे आगे चले जाते। पर पहला दिन योंही बीत गया। दोनों किनारोंके उत्तेजित आदमी उन्हें और भी अधिक विपत्तिमें डालनेकी चेष्टा कर रहे थे। दूसरे दिन अर्थात् २८ जूनको उनकी नाव कानपुरके पास नजफगढ़में फिर रुक गई। फिर नावपर गोलियां बरसने लगीं, एक तोप किनारेपर रखी गई। पर इस समय ऐसे जोरसे पानी बरसने लगा कि विपक्षी गोलियाँ अधिक न बरसा सके। शामके वक्त कानपुरसे ५०—६० सिपाही नावों-

पर बैठकर गोरोंपर हमला करने आये। इससे रहे सहे अंग्रेज़ भी मारे गये। बहुत कम अंग्रेज जीते बचे, पर वीरताके साथ उन्होंने भी सिपाहियोंका प्राण नाश किया। अन्तमें उनकी नावपर कब्जा कर लिया। इन्हें सिपाहियोंकी नावमें बारूद और कारतूस काफी मिल गये, पर खानेकी कोई चीज़ न मिली। कड़ी भूखसे इनकी आंतें कुलबुला रही थीं।

धीरे २ रात आई। भूखे अंग्रेज़ सो गये, रातको आँधी आई और उससे नाव फिर बह चली। चारों ओर गाढ़ अन्धेरा था। सबेरे उन्होंने देखा कि उनकी नाव फिर एक किनारेपर लगी है। किनारेपर जोशमें भरे आदमी थे। सिपाहियोंको अंग्रेज़ों-का खून करते देखकर वे भी खून करनेके लिये पागल हो उठे थे। लोग समझ रहे थे कि अंग्रेज़ोंका राज समाप्त हो गया इसलिये वर्तमान राजाकी ओरसे अंग्रेज़ोंका नाश करना उनका कर्त्तव्य है। इधर पीछेसे सिपाही भी नावपर आये। इस प्रकार भूखे अंग्रेज़ फिर आत्मरक्षाके लिये तैयार हुए। उनके कष्टोंका ठिकाना न था। भूखके मारे वे मुरझा रहे थे, लगातार घायल होते २ वे कमजोर हो गये थे, फिर भी उन्होंने बंदूकें उठाईं। अंग्रेज़ोंके दो दल हो गये। चौदह आदमियोंने बंदूकें लेकर किनारेवालों-पर हमला किया और बाकीने पीछेसे आनेवालोंपर धावा किया।

कप्तान टामसन चौदह आदमियोंके साथ उतरकर जब किनारेवालोंपर हमला कर रहे थे उस समय लहरोंसे उनकी नाव धारमें पड़कर फिर चल पड़ी थी। लगातार गोलियां बर-

खानेसे जब सिपाही हटकर पीछे चले गये तब टामसनने साथियों सहित किनारेपर आकर देखा तो नाव न थी, अभागे यात्रियोंकी न मालूम क्या दशा हुई। इधर जिस जगह वे उतरे थे उसके जमींदार बाबू रामबख्श उनके विरुद्ध थे। बाबू रामबख्शकी आज्ञासे हथियारबंद आदमी उनपर हमला करने लगे, आहत होकर आगे दौड़ते हुए वे आत्मरक्षा करने लगे। इस प्रकार तीन मील भागनेपर सामने एक मन्दिर नजर आया। उपाय न देखकर गोरोंने मन्दिरमें शरण ली। मन्दिरमें ठंढा पानी था उन्होंने उसीसे अपनी प्यास बुझाई। जमींदारके आदमियोंने मन्दिरको चारों ओरसे घेरकर हमला किया। चार गोरे दरवाजेपर खड़े होकर आनेवालोंको संगीनोंसे घायल करने लगे। दूसरोंकी गोलियोंसे आदमी मरने लगे। लोगोंने दरवाजेकी ओर सूखी लकड़ियां लगाकर आग दे दी। उन्होंने सोचा था कि धुएंसे गोरोंका दम घुट जायगा। पर हवाने सहायता की, हवाके जोरके झोकोंसे तमाम धुआं उड़कर दूसरी ओर जाने लगा। यह देखकर लोग बारूदकी थैली मन्दिरकी ओर फेंकने लगे। अब गोरोंसे मन्दिरमें न रहा गया। असीम साहससे वे आगको लांघते और जमींदारके आदमियोंका व्यूह भेदते हुए गंगाके किनारेकी ओर भागे। चौदहमेंसे सात आदमी गंगाके किनारे तक पहुंचे, बाकी बीचमें ही मारे गये। सातमेंसे भी तीन किनारेपर मारे गये। बाकी चार अपने हथियार फेंक कर गंगामें कूद पड़े, ये लोग तैरना जानते थे। जब ये लोग

तैरते हुए जा रहे थे तब किनारेसे कुछ आदमी पुकारने लगे—"साहब साहब! तुम क्यों तैर रहे हो, हम तुम्हारे मित्र बन कर आये हैं।" पर इनका किसीको विश्वास न हुआ। जब ये लोग विश्वास दिलानेके लिये अपने हथियार पानीमें फेंकनेको तैयार हुए तब वे चारों पानीसे निकल कर किनारेपर आये। किनारे-के आदमी अवधके अन्तर्गत मोरारमों नामक स्थानके ताल्लुकदार दिग्विजयसिंहकी प्रजा थे। इन्होंने इन विपत्तिके मारे हुओंकी रक्षा की। इन चार अंग्रेज़ोंमेंसे एक कप्तान टामसन थे जिन्होंने पीछेसे कानपुरकी इस घटनाका विवरण लिखा।

राजा दिग्विजयसिंह अंग्रेज़ोंके मित्र थे। इन लोगोंको लानेके लिये उन्होंने हाथी भेजा था। जब यह लोग वृद्ध राजाके पास पहुंचे तब उन्होंने इनका बड़ा आदर सत्कार किया, इनकी सारी कथा सुन कर बड़ी प्रशंसा की। उनकी आज्ञासे इन्हें बड़े आराम से रखा गया। दर्ज़ीने इनको नयी पोशाक सी दी, वैद्यने इलाज किया। कप्तान टामसन आदि तीन सप्ताह राजा दिग्विजयसिंहके आश्रयमें रहे। इस समय इन्हें किसी प्रकारका कष्ट न हुआ। तीन बार इनके लिये सुस्वादु भोजन आता था। राजा रानी रोज़ उनकी कुशल पूछते। जितने दिन ये लोग यहाँ रहे उतने दिन राजाने इन्हें बाहर न जाने दिया। चारों ओर अंग्रेज़ोंके खूनके प्यासे लोग घूम रहे थे। सिपाही भी पासके गावोंमें पड़े थे। राजाके हथियार बंद सैनिक सदा रक्षाके लिये तैयार रहते थे। कानपुरके विपक्षियोंने इन्हें

उनके हाथ सौंपनेको लिखा था, पर राजाने अपने शरणागतको देनेसे साफ इनकार कर दिया। वृद्धकी तेजस्विता और शरणागतवत्सलताके कारण उस समय इन लोगोंकी जानें बचीं।

इन लोगोंको अपने हाथमें ले लेनेके लिये सिपाही राजा दिग्विजयसिंहके पास आते, उनमेंसे बहुतसे कप्तान टामसन-की सेनाके ही थे। वे कहते कि, बस अब अंग्रेज़ोंका राज समाप्त हो गया। कप्तान कहते कि यह कभी नहीं हो सकता, एक लाख गोरी सेना बहुत जल्द आवेगी और तुममेंसे एकको भी न छोड़ेगी। सिपाही कहते कि नानासाहबने मददके लिये रूसमें सवार भेजे हैं, वे सवार ऊंटपर चढ़ कर गये हैं। नानासाहब सब अंग्रेज़ोंको कलकत्ते भेज देंगे, समग्र भारतपर वे राज्य करेंगे। इस प्रकारकी बातोंसे कप्तान टामसनको हंसी आती थी। सिपाहियोंका विश्वास था कि रूसके बादशाह हिन्दू मुसलमा-नोंकी मदद करेंगे और अंग्रेज़ोंको यहांसे निकाल देंगे क्योंकि अंग्रेज़ोंने सबका धर्मनाश करनेके लिये आटेमें हड्डियोंका चूरा मिलाया है। सिपाही हर बातमें कहते थे कि अवधका राज लेनेसे अंग्रेज़ोंका नाश हुआ। यह सब बातें अज़ीमुल्लाकी थीं, क्रीमियासंग्राममें रूसवालोंकी वीरता देखकर वह उनका पक्ष-पाती हो गया था और लार्ड डलहौज़ीने जिस नीतिसे अवध लिया था उसका वह सदा घृणाके साथ वर्णन किया करता था। इसी कारण अंग्रेज़ोंके प्रति यह विष फैल गया।

थोड़े दिन अच्छी तरह रख कर राजा दिग्विजयसिंहने इन्हें

अपने पड़ोसी एक जमींदारके आश्रयमें भेज दिया। उसने भी इन्हें बड़े आदरसे रखा। वहांसे यह चारों सैनिक सेनापति हावेलकी सेनासे मिले। इस समय बहुतसे हिन्दुस्तानियोंने अपनी दयाका परिचय दिया। मयूर तिवारी नामक एक सिपाहीने डनकन साहबकी रक्षा की। कुछ आदमियोंने दो अंग्रेज़ स्त्रियोंकी रक्षा की। गदरके इतिहासमें दोनों तरहकी घटनायें हैं। एक ओर जैसे भयानक और वीभत्स दृश्य हैं वैसे ही दूसरी ओर दया, करुणा और आत्मत्यागके उत्तम हृदयग्राही दृश्योंकी भी कमी नहीं है। एक ओर मनुष्यका खून लेनेवाले नरपिशाचोंकी लीला है, दूसरी ओर अपने प्राण देकर विपत्तिग्रस्तोंकी रक्षा करनेवालोंके उदार चरित्र हैं, जो भारतवासी उस समय भी अंग्रेज़ोंकी सहायता न करते तो उनका विपत्तिसे उद्धार होना भी कठिन था।

नावसे उतर कर चार साहसी वीर किस प्रकार बचे उसका ऊपर वर्णन किया जा चुका है। पर उस नावके अन्य यात्रियोंको यह सौभाग्य प्राप्त न हो सका। उनकी नाव बहुत जल्द पकड़ी गई। उसमें ८० अंग्रेज़ स्त्री-पुरुष थे। सिपाही लोग सबको कैद करके वापिस कानपुर लाये। ३० जूनको उन्होंने पुरुषोंको स्त्रियोंसे अलग कर दिया। पुरुषोंको प्राणदंडकी सज़ा देनेका इरादा किया गया। पर बहुतोंने इसमें सम्मति न दी। कहा जाता है कि अवधके सिपाही इनको जेलमें रखनेपर भी राजी न हुए। इन सबको गोलीसे मारा गया। एक स्त्रीने अपने पतिको किसी प्रकार न छोड़ा। वह साथ ही रही।

दोनों एकही गोलीसे मरे। बाकी स्त्रियाँ और बच्चे क़ैदमें रहे। गंगाके घाटपर जो बालक और स्त्रियां पकड़ी गई थीं वे भी इनके ही साथ रहीं।

इधर धुंधूपन्थ नानासाहब १ जुलाईको बिठूर जाकर पेशवाके सम्मानित सिंहासनपर बैठे। इस उपलक्ष्यमें तरह २ की क्रियायें की गईं। तोपोंकी आवाज़ोंसे दशो दिशायें काँपने लगीं। पुरोहितोंके मंत्रोंसे अभिषिक्त होकर नानासाहबने राजतिलक धारण किया। रातको कानपुरमें दिवाली हुई, पर इस उत्सवमें भी पेशवाके चित्तमें शान्ति न थी। बिठूरमें जिसके लिये तोपोंकी आवाज़ की गई, पुरोहितोंने जिसको पवित्र करके राजतिलक किया, नौकरोंने जिसको पेशवाकी गद्दीपर बैठाया, सिपाहियोंने जिसका नाम लेकर, कम्पनीके राज्यका अन्त हुआ समझा, वह दूसरोंके हाथका खिलौना था। अजीमुल्ला उन्हें जो रास्ता दिखाता उसीपर वे चलते थे। जो कुछ वह करता उन सबपर नानासाहब विश्वास करते, उनके नामपर दुराचारी मंत्री घोरसे घोर निन्दनीय काम करते थे। कहा जाता है कि ८ जूनको नानासाहब कानपुरके परेडके मैदानमें गये। विजयकी प्रसन्नतासे फूले हुए सिपाही खुशीमें तोपें छोड़कर उनका स्वागत करने लगे। उन्होंने सिपाहियोंको एक लाख रुपया देनेका वादा किया। प्रसन्न होकर वे और अधिक तोपें छोड़ने लगे। पर इसमें भी उनका हाथ न था। सिपाहियोंको राजी रखनेको ही उनकी इच्छा थी। जो वे ऐसा न करते,

जो अपने नौकरोंकी इच्छाके अनुसार काम न करते, तो उनकी सम्पत्ति और प्राण कुछ भी न बचता। जब वे बिठूरमें पेशवाईका उत्सव देख रहे थे तब कानपुरमें मुसलमानोंकी प्रधानता हो रही थी। नन्ही नवाब कानपुरके शासक बन गये। मुसलमान सब इनका पक्ष समर्थन करने लगे।

इस प्रकार मुसलमानोंकी भी वासना पूर्ण हुई। उनका व्यक्ति एक खास पदपर प्रतिष्ठित हुआ। इस समय जो हिन्दू मुसलमान आपसमें विवाद करते तो दोनोंकी एकता जाती रहती। नानासाहबके नामपर यह सारा हत्याकांड हुआ। वे पेशवा भी बनाये गये, पर मुसलमानोंकी प्रधानताके सामने वे दबते थे। अजीमुल्लाकी बातका वे कभी प्रतिवाद न करते थे। वे अपने आप ही दबे हुए थे। अब भी सब काम नानासाहबके नामपर हो रहा था। इलाहाबादसे गोरी सेनाके आनेकी बात चारों ओर फैल गई थी। लोग सुनकर अपने २ स्थानसे इधर उधर भागने लगे थे। जून मासमें लोगोंको धैर्य बंधानेके लिये जैसा दिल्लीसे घोषणापत्र निकला था वैसा ही जुलाईके शुरूमें पेशवाके नामपर कानपुरमें भी निकला। उपयुक्त इनाम न मिलनेके कारण सिपाही असन्तुष्ट थे। इन्हें प्रसन्न करनेके लिये नये पेशवाने इनामका इन्तजाम किया।

कानपुरमें एक धनी मुसलमानका बनाया होटल था नानासाहब इसी विशाल भवनमें आकर रहे। दरवाज़ेपर तोपें रखी गईं और नंगी तलवारोंके पहरे घूमने लगे। घटना

वश नानासाहबने अंग्रेज़ोंका विरोध किया था। अब वे आत्म-रक्षाके लिये सेनापतियोंके साथ युद्धके आयोजनमें लगे। अंग्रेज़ी सेनाके आक्रमणसे किस प्रकार रक्षा होगी अब यही एक चिन्ता थी।

जिस भवनमें वे आकर रहे थे, उसके पास ही गंगाकी नहरके उत्तर ओर एक छोटा सा घर था। एक अंग्रेज़ने अपनी प्रेमिकाके लिये वह घर बनवाया था। इसी कारण उसका नाम बीबीघर था। कुछ दिन बाद उसमें एक अंग्रेज़ रहने लगा था। इस मकानमें २० फुट लम्बे और १० फुट चौड़े दो कमरे थे। आंगनकी लम्बाई एक ओर १५ हाथसे अधिक न थी। जो यूरोपियन कैद किये गये थे वे जुलाईके प्रारम्भमें ही इस घरमें लाये गये। इस छोटे मकानमें रह कर ये लोग असीम कष्ट भोगने लगे। शीघ्र ही कैदियोंकी तादाद और अधिक हो गई। जिस समय कानपुरके अंग्रेज़ घिर कर कष्ट पा रहे थे उस समय एक और स्थानपर भी घिरे हुए अंग्रेज़ दुःख भोग रहे थे इस स्थानका नाम फतेहगढ़ है। कानपुरसे ८० मील दूर गंगाके दक्षिण किनारेपर यह शहर है। फतेहगढ़का पूरा विवरण आगे चलकर मिलेगा, इस स्थानपर यही समझ रखना चाहिये कि वहाँके अंग्रेज़ोंकी भी अवस्था कानपुरवालोंके ही समान थी। पर उन्हें यह मालूम न था कि कानपुरकी क्या अवस्था है। इसलिये भाग कर वे नावों द्वारा कानपुर आये। वे समझ रहे थे कि कानपुर चल कर हम निश्चिन्त होंगे, क्यों-

कि वहाँ अंग्रेज़ोंकी संख्या अधिक है। नवाबगंजके निकट सिपाहियोंने उनकी नाव पकड़ ली। सब नानासाहबके सामने पेश हुए। स्त्रियों और बच्चोंको छोड़ कर और बाकी सब मारे गये। स्त्री बच्चोंको बीबीघरमें कैद कर दिया गया। *

अभागे कैदी उस छोटेसे घरमें असीम कष्ट भोगने लगे। कैदियोंको दाल, रोटी और दूध दिया जाता था, पर उससे उनकी भूख न बुझती थी। एक अंग्रेज़की लड़की यहाँपर कैद थी। उसका विश्वासी हिन्दुस्तानी नौकर उसे देखनेके लिये बीबीघरमें गया। यह भोजन देनेका समय था। भोजनकी सामग्री अच्छी न थी इससे नौकरने सिपाहीका तिरस्कार करके अच्छी चीजें देनेको कहा। यह सिपाही भी उसके मालिकके पास रहा था। तिरस्कृत होकर सिपाहीने नौकरको आठ आने पैसे मिठाई खरीदनेके लिये दिये। बाजारसे मिठाई खरीद कर इस विश्वासी आदमीने कई अंग्रेज़ोंको दी, पर इसे वहाँ अधिक समय न टिकने दिया।

---

* फतेहगढ़से १९ अंग्रेज, २३ मेमें और २६ बच्चे गये थे। Trevelyan's Cawnpur P. 283. ट्रटर साहबने लिखा है कि नावमें सब मिलकर १३० थे, Trotter's British Empire in India Vol II. P. 143. जो कुछ हो नानासाहबने उन्हें मुक्त करना चाहा था, पर उनके भाईने न माना। नानासाहब भाईके कारण चुप हो रहे। Trevelyan's Cawnpore P. 285. के साहबने लिखा है कि नानाके सामने अंग्रेज मारे गये थे Kaye's Sepoy War. Vol. II. P. 353. जब वहां एक आया थी उसने आंखों देखा था कि नाना वहां न थे. Trevelyan's Cawnpore. P. 285.

इस घटनासे नौकरकी जैसी प्रभुभक्ति प्रगट होती है वैसा ही सिपाहीका अनुताप भी मालूम होता है।* यदि उनके सामने महान उद्देश्य होता, यदि ये धैर्यपूर्वक चलाये गये होते तो इन भ्रान्त जीवोंसे ऐसे कुकर्म न हुए होते। कहा जाता है कि हुसेनी खानम नामक एक दासी कैदियोंकी देख भालपर नियत थी। इसे सब बेगम कहा करते थे। कहा जाता है कि यह गोरी मेमोंसे जब फटकवाकर साफ करवाया करती थी। ऐसे निकृष्ट कार्यमें नियुक्त होनेके कारण उनके कष्टोंकी सीमा न थी। निकृष्ट भोजन और गंदे मकानमें रहनेके कारण बहुतोंको दस्त लग गये। इसी बीमारीमें कई मर गये।

जब नानासाहब कानपुरके विशाल भवनमें नौकरों सहित थे तब पास ही अंग्रेज़ स्त्रियाँ और बच्चे असीम कष्टमें थे। अपने मंत्रियोंके कारण या सिपाहियोंके कारण वे उन्हें कष्टमुक्त न कर सकते थे। उनकी सहायताके लिये एक वीर अपने स्थानसे चल चुका था।

* Trevelyan's Cawnpore. P.299.

दूसरा अध्याय

सेनापति हावेलकी कानपुर यात्रा—सेनापति रेनडेकी सेना—फतेहपुरका युद्ध—फतेहपुरवालोंका जोश—अंग्रेज़ोंकी प्रतिहिंसा—बीबीघरमें हत्याकांड—कानपुरका युद्ध—नानासाहबका भागना—अंग्रेज़ोंके अत्याचार—बिठूरका विध्वंस—सेनापति नीलका आक्रमण—कानपुरकी रक्षाका प्रबन्ध—हावेलकी लखनऊ यात्रा।

कानपुरके पतन और वहाँके अंग्रेज़ोंके मारे जानेका समाचार पाते ही सेनापति हावेलने, थोड़ीसी सेनाके साथ आगे बढ़ते हुए सेनापति रेनडेको, कानपुरके रास्तेमें ही रोक दिया था। रेनडेने लोहंग नामक स्थानपर अपना मुकाम कर दिया। पीछेसे हावेलने रेनडेसे मिलनेके लिये शीघ्र यात्रा करना चाहा। उन्होंने कलकत्तेके प्रधान सेनापतिको तार दिया—"कानपुर हमारे हाथसे जाता रहा, इसी स्थानसे लखनऊकी रक्षा हो सकती है। इसलिये मैं इस स्थानको अपने काबूमें करनेकी चेष्टा करता हूं। १४०० गोरे पैदल और ६ तोपें मिलनेपर मैं बड़े रास्तेसे आगे बढ़ सकता हूं। एक सेनाके और आते ही कर्नल नील मेरी मददको पीछेसे आवेंगे। इलाहाबादका किला योग्य आदमीके हाथमें है।" यह समाचार भेजकर हावेल

कानपुरकी यात्राका प्रबन्ध करने लगे। उन्होंने ४ जुलाईको रवाना होना सोचा था, पर आवश्यक पदार्थ पर्याप्तरूपसे न मिल सकनेके कारण इस दिन यात्रा न हो सकी। जो कारण रेनडेकी यात्राके समय थे वे ही अब भी थे। खाद्य सामग्रीके लिये भी कुछ दिन ठहरना पड़ा। ७ जुलाईको तीसरे पहर यात्राका बिगुल बजा। सेनापति हावेलके साथ १००० पैदल गोरे सिपाही, १३० सिक्ख, कुछ स्वयंसेवक अंग्रेज़ सवार और ६ तोपें थीं। इलाहाबादके जिन अफसरोंकी सेनायें बागी हो गई थीं वे सब इसमें थीं, कचहरियाँ बंद होनेके कारण सिविलियन अंग्रेज़ खाली थे, वे भी इसी सेनामें थे, वे सब स्वयंसेवक बन गये थे। कानपुर और लखनऊके उद्धारके लिये हावेलने यात्रा की।

उस समय आकाश मेघोंसे घिरा था। शीघ्र ही पानी बरसना शुरू हो गया। इस कारण उस दिन और उसके बाद एक दिन और यह सेना अधिक न जा सकी। बहुतसे पीछे रह गये। हावेल चिन्तित हुए। पर प्राकृतिक बाधाओंके कारण इस समय चढ़ाई नहीं रोकी जा सकती थी। सब विघ्न बाधाओंकी उपेक्षा करके हावेलने कानपुरकी ओर यात्रा की। १० जुलाईको उन्हें समाचार मिला कि विपक्षियोंकी बड़ी भारी सेना उनकी ओर आ रही है। अब उन्हें अच्छी तरह विश्वास होगया कि निस्सन्देह कानपुरका पतन हो गया।

इधर नानासाहब अंग्रेज़ सेनाको रोकनेके लिये अपने सैनि-

थोंके साथ सलाह कर रहे थे। सेनापति टीकासिंह सिपाही सेनाकी तैयारीमें लगे थे। बाबाभट्ट खाद्य पदार्थ और उसको लेजानेवाली गाड़ियोंके प्रबन्धमें थे। बनियोंको तम्बू और छोलदारियोंके संग्रहकी आज्ञा दी गई थी। इस प्रकार सब पदार्थोंके एकत्र होनेपर ६ जुलाईको टीकासिंह, ज्वालाप्रसाद, बाबाभट्ट आदि सेनापतियोंने १५०० पैदल और गोलंदाज सिपाही, ५०० सवार और १५०० अन्यान्य हथियारबन्द आदमियोंके साथ इलाहाबादकी ओर यात्रा की। इनके साथ १२ तोपें थीं। अंग्रेज़ोंके कानपुरकी ओर आनेका समाचार सुनते ही ज्वालाप्रसादने फतेहपुरमें अपनी सेनाका किला तैयार किया।

सेनापति नीलको यह विश्वास न था कि कानपुर हमारे हाथसे निकल गया। इसलिये उन्होंने प्रधान सेनापतिको तारद्वारा सेनापति रेनडेको आगे बढ़ जानेके लिये कहा। समाचार पाकर रेनडे कानपुरकी ओर बढ़े। इधर हावेल जी-जानसे कोशिश कर रहे थे कि वे किसी तरह रेनडेसे मिलें। वे समझ रहे थे कि रेनडे यदि आगे बढ़े तो विपक्षियोंकी सेना उन्हें खतम कर देगी। इसी कारण उन्होंने ज़रा भी देर न की, वे बराबर आगे बढ़ने लगे। ११ जुलाईकी रातको हावेलसे रेनडेका दल मिला। इस समय आकाश साफ था, चन्द्रमा निकल रहा था। सवेरा होते २ दोनों दल एकत्र हो गये। फौजी रणवाद्यके साथ यह सम्मिलित सेना आगे बढ़ी। १२ जुलाईको सवेरे ७ बजे यह सेना फतेहपुरसे ४ मील दूर बेलिन्दा

नामक स्थानपर पहुँची। जो सेनापति हावेल जल्दीसे आगे न बढ़ते तो रेनडेकी सेना नानासाहबको सेनाके सामने न टिकती। रेनड़ेने हावेलके आनेसे पहले ही फतेहपुरपर कब्जा करनेका इरादा किया था। उन्हें समाचार मिला था कि फतेहपुरमें थोडेसे बंदूकधारी हैं। पर इसके बाद ही पेशवाकी बड़ी भारी सेना वहाँ जा पहुँची थी। यदि धोखेमें रेनडे आगे बढ़ जाते तो वे कभी न बच सकते थे। सेनापति हावेलको सूक्ष्मदर्शितासे ही यहाँ काम बना। रेनडे और हावेलको सेना मिलकर १४०० गोरे सिपाही, ६०० हिन्दुस्तानी सहायक सेना और ८ तोपें हो गई थीं। इस सेनाको थका हुआ देखकर हावेलने भोजन और विश्राम करनेकी आज्ञा दी। सेनापतिकी आज्ञासे सिपाही हथियार एक जगह रखकर खाने पीनेमें लगे। इधर दूतोंने आकर समाचार दिया कि नानासाहबकी सेना फतेहपुरमें आ गई। इसलिये खाना पीना छोड़कर हावेलको लड़ाईकी तैयारीका हुक्म देना पड़ा। इस प्रकार १२ जुलाईको हावेल ज्वालाप्रसाद-के सामने आये। ज्वालाप्रसादको मालूम था कि केवल रेनडेकी छोटीसी सेना उनके सामने आ रही है। इससे उनका विश्वास हो गया था कि इस युद्धमें उनकी जय होगी। इसी आशासे वे उत्साहके साथ आगे बढ़े, पर जब उन्होंने रेनडेके साथ हावेलकी सेनाको देखा तब चिन्तित हुए। पर देरका समय न था। शीघ्र ही सेनापति ज्वालाप्रसादने तोपोंको बढ़वाकर नियत स्थानोंपर लगवा दिया। उसी समय ब्रिटिश सेनापर गोले गिरने

लगे। इस संग्राममें तलवार संगीन और पिस्तौलोंकी जरूरत न पड़ी। शुरूसे आखिरतक तोप और बंदूकोंसे ही यह संग्राम हुआ। अंग्रेज़ोंकी नये कारतूसोंवाली राइफल बंदूकें ३०० गज-तक निशाना मार सकती थीं पर सिपाहियोंकी बंदूकें वे ही पुरानी ओछी मारकी थीं। इसी कारण ब्रिटिश तोपों और बंदूकोंकी मारके सामने ज्वालाप्रसादकी सेना न टिक सकी। उनकी तोपें बरा-बर गोले बरसा रही थीं, पर अंग्रेज़ोंकी तोपें जो गोले फेंक रही थीं वे ठीक इनकी सेनापर आकर गिरते थे। जब संग्रामभूमि इस प्रकार अनीपर तुल रही थी, उस समय ज्वालाप्रसादके वीर रिसालाने ब्रिटिश सेनापर धावा किया। इस संग्राममें यह रिसाला ही सबसे अधिक वीर और साहसी निकला। रिसाले-को आगे बढ़ता देखकर हावेलने अपने रिसालाको आगे बढ़ाया। सेनानायक पालिसर हुक्म देकर अपने घोड़के साथ आगे बढ़े उनके पीछे तीन स्वयंसेवक अंग्रेज़ सवार और १२ हिन्दुस्तानी सवार आगे गये, पर बाकी सवारोंकी चाल धीमी रही। अंग्रेज़ सेनापति हावेलने अपने हिन्दुस्तानी रिसालाकी धीमी चाल देख-कर समझा कि यह विपक्षियोंसे मिलेगा। आगे बढ़ते हुए सेना नायक पालिसर घोड़ेसे गिरनेको हुए। इसी समय ज्वाला-प्रसादके सवार आगे आगये। अपने सेनानायकको गिरता देखकर पन्द्रह सवार उनके चारों ओर होकर विपक्षियोंसे युद्ध करने लगे। इस युद्धमें ब्रिटिश सेनाका रिसालदार नजीब खां छः अफसरोंके साथ मारा गया, पर फिर ज्वालाप्रसादके सवार

बाज़ी न ले सके। कहा जाता है कि इस सेनामें मौलवी लियाकत अली भी मौजूद थे और वे मुसलमान सिपाहियोंको जोश दिला रहे थे। पर अधिक समय तक ज्वालाप्रसादकी सेना संग्रामभूमिमें न टिकी। ब्रिटिश सेनाकी लंबी मारवाली बंदूकोंसे घबराकर वे अपनी तोपें छोड़कर युद्धभूमिसे भागे। इस युद्धमें उनके १५० आदमी मरे और घायल हुए थे। फतेहपुरके संग्राममें सेनापति हावेलकी फतह हुई। संग्रामके बादही सेनापतिने हिन्दुस्तानी सिपाहियोंपर शक होनेके कारण उनके हथियार और घोड़े ले लिये।

कुछ सप्ताह पहले फतेहपुर भी अंग्रेज़ोंके अधिकारसे निकल गया था। फ़तेहपुर कानपुरसे ४० मील उत्तरपश्चिम, कानपुर और इलाहाबादके बीचमें है। अंग्रेज़ोंने सन् १८०१ में यह प्रदेश अवधके नवाबसे लिया था। इसमें १६।१७ हज़ार आदमियोंकी बस्ती थी। इनमें अधिकतर मुसलमान थे। सवार होकर वे रिसालेमें काम कर रहे थे। अंग्रेज़ोंकी तादाद अधिक न थी। यहाँका डिप्टी मजिस्ट्रेट हिकमतुल्ला बड़ा धार्मिक आदमी था। शहरमें ईसाई प्रचारक बहुतोंको ईसाई बना रहे थे। हिकमतुल्ला इसके विरोधी थे। जैसे हिकमतुल्ला अपने धर्मके पक्षपाती थे वैसे ही अंग्रेज़ जज भी अपने धर्मके थे। उन्होंने फतेहपुरके दरवाज़ेके सामने चार खम्भे खड़े किये थे, दोमें हिन्दी और दोमें उर्दू फारसीमें ईसाई धर्मके नियम खुदे थे। पर धार्मिक श्रद्धा होनेपर भी जज साहब किसीको जबर्दस्ती ईसाई न बनाते थे। वे उदार और

दयाशील थे। वे रोगी, दुःखी और आपत्तिमें पड़े हुएकी सहायता करते थे। इसी कारण लोगोंकी उनपर श्रद्धा थी।

इलाहाबादकी पैदल सेनाके प्रायः ७० आदमी फतेहपुरके खजानेकी रक्षा कर रहे थे। मई मासके अन्तमें ६५ न० सेनाके पैदल और २ न० रिसालाके कुछ सवार इलाहाबादकी लूटका रुपया लेकर फतेहपुर पहुँचे। इन सिपाहियोंके साथ फतेहपुरके ६ न० सेनाके सिपाहियोंकी गुप्त मन्त्रणा हुई थी या नहीं सो नहीं कहा जा सकता। खैर जो कुछ हो, फतेहपुरके खजानेका रुपया लेकर ये लोग वापिस गये। इस समय फतेहपुरकी जनतामें धर्मनाशके कारण बड़ी उत्तेजना थी। उनमें अफवाह फैली कि ईसाइयोंने सबका धर्मनाश करनेके लिये गाड़ियाँ भर भर कर गाय और सुअरकी हड्डियाँ कुओंमें डाली हैं। कुछ राजकर्मचारियोंने यह बात मजिस्ट्रेटसे कही। मजिस्ट्रेटने हँस कर कहा कि किसीको जबर्दस्ती ईसाई नहीं बनाया जाता। पर इस बातसे उत्तेजना शान्त न हुई। मेरठके समाचारसे फतेहपुरमें बहुत अधिक उत्तेजना फैली, अंग्रेज़ शंकित हुए। उन्होंने अपने बाल बच्चोंको इलाहाबाद भेज दिया। देशी ईसाइयोंको भी अपने स्त्री-पुत्रोंको किसी रक्षित स्थानमें भेजनेके लिये कहा गया। फतेहपुरके अंग्रेज़ ५ जूनको कानपुरकी ओरसे तोपोंकी आवाज़ सुन कर डरे। सबके सब मजिस्ट्रेटके मकानपर आये। उन्होंने सुना था कि ६५ न० सेना और २ न० रिसालाके सिपाही कानपुर आरहे हैं। फतेहपुर आकर ये अंग्रेज़ोंपर हमला करेंगे। इन सिपाहियोंने आकर

खजाना लूटनेकी कोशिश की पर ६ न० सेनाके खजानेके रक्षक सिपाही, अब तक राजभक्त थे। उन्होंने इन्हें मार भगाया। ७ जूनको इलाहाबादका समाचार फतेहपुर पहुँचा। जब उन्होंने सुना कि उनकी सेनाके आदमी सरकारके विरुद्ध हो गये तब वे अच्छी तरह सज कर कानपुरकी ओर चले। इस समय अंग्रेज़ोंको मारनेकी उनकी इच्छा न थी। वे किसीको हानि पहुँचाये बिना खजाना छोड़कर चले गये।

८ जूनको भयानक तूफ़ान उठा। एक ओर इलाहाबाद और दूसरी ओर कानपुर, दोनों ओरके तूफ़ानोंका प्रतिघात फतेहपुर-पर पहुँचा। फतेहपुरके उत्तेजित हिन्दू मुसलमान सिपाहियोंसे जा मिले। मुसलमान ईसाइयोंके धर्मप्रचारसे बहुत अधिक नाराज थे। इसलिये इनके विध्वंसके लिये चारों ओरसे वे एकत्र होने लगे। सिपाहियोंने जेलखाना तोड़ दिया। कैदी चारों ओर लूटने खसोटने लगे। खजाना लूटा गया। कचहरी जला दी गई। जब अंग्रेज़ोंने देखा कि प्रजा बिलकुल विद्रोही हो गई, अब वह भयानक काम करनेपर तुली है तब अपनी रक्षाके लिये वे दूसरे स्थानकी ओर जानेका विचार करने लगे। फतेहपुरमें १० अंग्रेज़ थे इनमेंसे नौ आदमी ९ जूनको घोड़ोंपर बैठकर दूसरे स्थानकी ओर चल दिये। इनके साथ चार विश्वासी सवार थे। ये लोग बांदा, कालिंजर होते हुए २२ दिनमें इलाहाबाद पहुंचे।

केवल एक अंग्रेज़ फतेहपुरमें अटल भावसे रहा। जज राबर्ट टूकरने प्राणपनसे फतहपुरकी रक्षा करनेका प्रयत्न किया।

घोड़ेपर बैठकर उन्होंने पुलिससेना साथ ली, जोशीले आदमियोंको वे शान्त करने लगे। उनका साहस, उद्योग और सबसे अधिक उनकी कर्त्तव्यबुद्धि स्थिर रही। सैनिक विभागके आदमी न होनेपर भी वे वीरवेषसे सेनापतिके पदपर अधिष्ठित हुए। उनके पराक्रमसे बहुतसे विपक्षी घायल हुए, वे खुद भी घायल हुए। उनके साथी जब फतेहपुरसे गये तब वे कचहरीमें थे इसी स्थानपर रहकर वे बलवाइयोंको गतिका अवरोध और सरकारके पक्षका समर्थन करने लगे।

पर वीर अंग्रेज़का उद्देश्य सिद्ध न हुआ। सरकारकी प्रधानताकी रक्षा करते २ उनके प्राण गये। वे किस तरह मारे गये, इस विषयमें भिन्न २ इतिहासलेखकोंने भिन्न २ बातें लिखी हैं। फतेहपुरके मजिस्ट्रेटका कहना था कि डिप्टी मजिस्ट्रेट हिकमतुल्लाके हुक्मसे उनको गोली मारी गई। किसी किसीका कहना है कि टुकर साहबने हिकमतुल्लाको अपने पास आनेकी आज्ञा दी थी। हिकमतुल्ला हरा झंडा लिये पुलिस सेनाके साथ कचहरीमें आया। मुसलमानोंने जजको अपना धर्म ग्रहण करनेको कहा। जजने उन्हें फटकारा। इस कारण मुसलमानोंने उनपर हमला किया। किसी २ का कहना है कि १० जूनको खजाना लूटा गया और ६ बजे लोगोंने जजपर हमला किया। टुकर साहबने कचहरीकी छतपर थोड़ी देर तक आत्मरक्षा की पर बलवाइयोंने कचहरीमें आग लगा दी। इसी अवसरपर छतपर चढ़कर उन्होंने जजको मार डाला। चाहे जो हो,

टुकर साहब साहसपूर्वक कचहरीमें मारे गये। वे अकेले बंदूक भर २ कर विपक्षियोंपर गोली फेंकते थे। पर उत्तेजित मुसलमानोंने उनपर इकट्ठा हमला किया। इस समय दो हिन्दू टुकर साहबकी नजर पड़े। हिन्दुओंको उनकी न्यायशीलता और दया-पर अधिक श्रद्धा थी। उन्होंने मुसलमानोंको फटकारा। इससे और भी अधिक उत्तेजित होकर मुसलमानोंने उन दोनों हिन्दुओं-को भी मार डाला।*

पांच सप्ताह तक फतहपुर विपक्षियोंके हाथमें रहा। लोगों-ने नानासाहबको अपना स्वामी स्वीकार किया, पर फिर भी वे यथेच्छाचारी थे। जिसके जीमें जो आता था वह वही करता था। जब हावेल सेनासहित फतेहपुर पहुंचे तब सब अपनी २ जान लेकर भाग गये। इस समय अंग्रेज़ अपने देशवा-सियोंके खूनका बदला लेनेसे न हटे। ऊपर कहा जा चुका है कि फतेहपुरके मजिस्ट्रेट इलाहाबाद पहुंच गये थे। वे हावेलके साथ थे। इस समय मजिस्ट्रेट सेरार साहबने जो कुछ देखा उसीका विशद वर्णन किया। उन्होंने लिखा है—"हमारे रास्तेके अधिकांश गांव जला दिये गये। कहीं एक आदमी भी दिखाई न देता था। मकानों और घरोंकी जगह राखके ढेर दीखते थे। आदमीका कहीं नामोनिशान न मालूम होता था। दिनमें मेढकों और झिल्लियोंकी आवाज़ें सुनाई देती थीं। हवा चलने-से मुर्दोंके जलनेकी बू आती थी। मेरे विचारसे ऐसे दृश्यको

* Kaye's Sepoy War. Vol. II. P. 367.

वे कभी न भूलेंगे।" अंग्रेज़ोंने बदला लेनेके लिये गांवों और बस्तियोंकी क्या दशा की थी, उसके लिये यह वर्णन ही काफी है।* इस समय फतेहपुर शहर मनुष्यहीन हो गया था। कुछ सप्ताहतक जो स्थान उत्तेजित लोगोंके शोरसे गूंजता था वह श्मशानकी तरह वीरान पड़ा था। सिपाहियोंने मकानोंको तोड़कर सामान लूटा। बादमें तोपोंसे बड़े २ मकान तोड़ दिये गये और अन्तमें आग लगाकर सब भस्म कर दिया गया।†

अंग्रेज़ोंने जिस विद्वेषबुद्धिका परिचय दिया, जिस प्रकार इन्होंने संहार किया उसी प्रकार भारतवासियोंने भी अंग्रेज़ जाति और अंग्रेज़ी सभ्यताका नाश किया था। अंग्रेज़ी मकान, कोठी, बंगला, कचहरी सबको उन्होंने जलाकर राख कर दिया था। सेनापति हावेलकके दलवालोंमेंसे एकने लिखा था—"हिन्दुस्तानियोंने हमारे बँगले और कोठियां जला दीं, गिर्जोंको तोड़ फोड़ डाला। जिन चीज़ोंके साथ अंग्रेज़ों और इंगलैंडका किसी तरहका संसर्ग था वे सब नाश कर दी गयीं। टेलीग्राफके तमाम तार काटकर खंभे उखाड़ डाले गये। यहाँतक कि सड़कोंपर जो मीलोंके नम्बरवाले पत्थर लगे थे वे तक तोड़ डाले गये, यद्यपि वे विद्रोहियोंके भी कामके थे।"‡ इस लेखकने विप्लववादियोंके कामोंका वर्णन किया है और फतेहपुरके मजिस्ट्रेटने अंग्रेज़ोंके लिये विध्वंसका चित्र खींचा है। दोनों ओर किसी

* Kaye's Sepoy War. Vol II P. 368.

† Martin's Indian Empire. Vol II P. 376.

‡ Calcutta Review. Vol. XXXII P. 27.

बातकी कमी न थी। जब हिन्दुस्तानी जोशमें खड़े हुए, तब उन्होंने अंग्रेज़, अंग्रेज़ी धर्म, अंग्रेज़ी सभ्यता और जिस किसी चीजके साथ भी अंग्रेज़ोंका सम्बन्ध था उस सबका समूल नाश किया, वे अंग्रेज़ोंका बीज नाश करनेपर तुले थे। जब अंग्रेज़ अपने ख़ूनका बदला लेनेपर तुले तब उन्होंने सर्वसाधारणके सब आरामके साधनोंका नाश किया। शहरों और गांवोंका दोनोंने नाश किया, दोनोंने देशको महाश्मशान बना डाला।

फतेहपुरके संग्रामका समाचार कानपुर पहुँचा। बालराव अंग्रेज़ सेनापतिकी गति रोकनेके लिये भेजे गये। उन्होंने कानपुरसे २२ मील दक्षिण अवंग नामक गांवमें सेनाका व्यूह रचा। फतेहपुरकी लड़ाईमें हावेलकने विपक्षियोंसे १२ तोपें छीनी थीं। इस समय यह तोपें बालरावकी सेनाके खिलाफ़ चलीं। १४ जुलाईको तीसरे पहर समाचार आया कि छ मीलपर बालरावकी सेना तैयार है। १५ जुलाईको सवेरे ६ बजे दोनों सेनाओंका संग्राम शुरू हुआ। इस समय अंग्रेज़ी तोपें पहलेसे अधिक काम कर रही थीं। अंग्रेज़ी राइफल बंदूकें भी बड़ा काम कर रही थीं। बालराव रिसालाके साथ बड़े वेगसे आगे बढ़े। पर राइफल बंदूकोंकी बरसती हुई गोलियोंसे वे रुके। चक्कर काटकर उन्होंने अंग्रेज़ी सेनापर पीछेसे हमला किया। धावा बड़े जोरका था। दो घंटेतक लगातार बंदूकें चलती रहीं, अन्तमें वीरताके साथ बालरावकी हार हुई।*

* The Mutiny of Bengal Army P. 150.

अकंग गांवसे कुछ मीलके फासलेपर पांडू नामक नदी है। यह नदी वैसे छोटी ही है पर उस समय बरसातके पानीके कारण गहरी हो गई थी। इसपर एक पुल था—पुलके अतिरिक्त और कोई रास्ता उतरनेका न था। अपनी सेना सहित पुल पार करके बालराव उसे तोपसे उड़ा रहे थे। समाचार मिलते ही सेनापति हावेल पुलकी ओर बढ़े। धूप कड़ी हो गई थी, पसीनोंसे तर होकर दो घंटेमें अंग्रेज़ पुलके पास पहुंचे। बालरावने पुलके पास दो बड़ी तोपें लगाई थीं। अंग्रेज़ोंके दीखतेही इन दोनों तोपोंसे गोले बरसने लगे। अंग्रेज़ोंके पास बड़ी तोपें न थीं इसलिये वे दूरसे गोले न फेंक सकते थे। बड़ी जल्दी अंग्रेज़ अपनी तोपोंको मारके भीतर ले गये और वहांसे गोले फेंके। इसी समय बालरावकी तोपें बंद हो गईं। अंग्रेज़ोंके गोलोंसे सिपाहियोंका तोप भरनेका खुंबा (गोला ठोकनेकी नापकी बनी लकड़ी) टूट गया था। उसके अभावमें सिपाही तोपें न भर सके। तोप बंद होते ही हावेलने रेनडके गोरे पैदल दलको आगे बढ़ानेका हुकम दिया। रेनड अपनी सेनाके साथ तीरकी तरह आगे बढ़ा। बालरावका रिसाला आगे आया, पर हावेलने उधर तोपें लगा दीं। इस प्रकार पुलपर अंग्रेज़ोंका अधिकार हो गया। बालरावके कन्धेमें गोली लगी थी। वे पांच तोपें छोड़कर चल दिये। इस संग्राममें अंग्रेज़ोंकी बहुत हानि हुई थी। सेना नायक रेनडे जब आगे बढ़ा तब उसकी जांघमें गोली लगी। इसी कारण दो दिन बाद उसके प्राण निकले

नदीके किनारे पैदल सेनाके निकट होकर सिपाहियोंने बड़ी वीरतासे युद्ध किया था। यदि उनका चलानेवाला कोई योग्य सेनापति होता तो वे इसमें न हारते। * गदरमें हर जगह संचालकोंका अभाव था, कोई योग्य संचालक न था।

घायल होकर बालराव कानपुर गये। १५ जुलाईको तीसरे पहर पेशवाके दरबारमें फिर हारकी खबर पहुंची। इस समाचारसे आमोद प्रमोदकी गति रुक गई। मन्त्री लोग चिन्तित हुए। चिन्ताकी रेखा सबके ललाटोंपर दीखने लगी। यदि बालरावमें योग्यता और फुर्ती होती तो वह अंग्रेज़ सेनापतिके पहुंचनेसे पहले ही पुल उड़ा देता। पर योग्यता न होनेपर भी उसके घावके कारण पेशवाके लोगोंने उसे रणकुशलकी पदवी दी। मंत्रीलोग बैठकर विचार करने लगे कि हावेलकी सेना नदी उतरकर अब कानपुर आ रही है, इस समय क्या करना चाहिए। पर किसी विषयपर सबकी एक राय न हुई, कोई विठूर चल कर आत्मरक्षा करनेको कहने लगा, कोई फतेहगढ़के सिपाहियोंसे मिलनेको कहने लगा, किसीने रास्तेमें ही अंग्रेज़ोंको रोकनेकी सलाह दी। बहुत बहस मुबाहसेके बाद तय हुआ कि कानपुरके रास्तेमें ही तैयारी की जाय। इसीके अनुसार युद्धकी तैयारी होने लगी। इस समय कुमंत्रियोंने फिर अपना खोटापन प्रगट किया। अंग्रेज़ोंके द्वेषसे उनका हृदय कलंकित हो उठा था। दया स्नेह आदि भाव उनके हृदयसे

* Martin's Indian Empire, Vol. II. P. 396.

जाते रहे थे। वे प्रलयकारी कालके समान केवल संहार चाहते थे। अन्तिम बार उन्होंने अपनी अमानुषिकता प्रगट की।

क्रूर प्रकृति अजीमुल्ला बीबीघरके अभागे कैदियोंकी ओरसे उदास न था। उसने नानासाहबसे कहा कि अंग्रेज़ सेनापति अपनी स्त्रियों और बच्चोंको छुड़ानेके लिये जल्दी २ कानपुर आ रहे हैं। इस समय उन सबकी हत्या की जाय तो सेनापतिका सब प्रयास व्यर्थ होगा, वे खाली हाथ वापिस चले जायँगे। नानासाहब नाम मात्रके लिये पेशवा और सबके स्वामी थे, सब काम अजीमुल्ला करता था। इसलिये उसके विचारको कार्यरूपमें परिणत करते हुए कोई बाधा न हुई। कहा जाता है कि बार २ अंग्रेज़ स्त्रियों और बच्चोंकी हत्याके समाचारोंसे पेशवाकी माता हृदयसे दुःखी हो रही थीं। उन्होंने यह कहकर डर भी दिखाया था कि जो इस तरह फिर अनाथोंकी हत्या हुई तो हम बच्चोंके साथ महलके ऊपरसे गिर कर प्राण दे देंगी। पर उनकी इस कातरतासे भी अजीमुल्लाका काम न रुका। बीबीघरकी असहाय अंग्रेज़, स्त्रियों और बच्चोंका भाग्य भी अधिक नीचा हुआ।

इनमें चार पांच अंग्रेज़ भी कैदी थे। वे १५ जुलाईकी शामको बाहर लाकर मारे गये। बहुत यत्न करनेपर भी पहले अजीमुल्लाको कोई ऐसा जल्लाद न मिला जो अंग्रेज़ औरतों और बच्चोंको कत्ल करे।* रिसालाके सिपाहियोंने खून करनेसे इनकार कर

† Martin's Indian Empire Vol II p. 381

दिया। पैदल भी इनकार कर गये। अन्तमें जेलखानेके रक्षक ६ नं० सेनाके सिपाही इस घोर कामके लिये तैयार हुए। वे बंद मकानके चौगिर्दवाली जालियोंसे इन बेकसोंपर गोलियां चलाने लगे। पर आखिर उनका भी कलेजा कांप उठा। उन्हें तोपसे उड़ानेका भय दिखाया गया पर वे फिर इस नीचतर कामके लिये अग्रसर न हुए।* अन्तमें जेलकी रक्षक दासी बेगम कुछ कसाइयों और जल्लादोंको ले आई, ये पांच जल्लाद थे। इन्होंने तलवारोंसे सबका सफाया किया। कोई उसी समय मर गया, कोई तड़पता रहा। ऐसे घोर पैशाचिक कृत्यसे इतिहासके पृष्ठ कलुषित हुए। १६ जुलाईको सवेरे इनके कटे हुए शरीर पासके कुंएमें डाले गये। कहा जाता है कि इस समय कुछ स्त्रियोंको होश थी, वे कह रही थीं कि हमारे दुखोंका अन्त करो। कुछ छोटे २ बच्चे जीते बच गये थे, पर सब कुंएमें डाल दिये गये।† अजीमुल्लाकी मंत्रणा और प्रयत्नसे यह राक्षसीकृत्य हुआ। अंग्रेज़ स्त्रियाँ जानसे मारी गईं पर किसी परपुरुषके स्पर्शसे कलंकित नहीं हुईं, गौरव भ्रष्ट होकर किसीने प्राण नहीं दिये। विद्रोहियोंने वीरताको कलंक लगानेवाला यह दूसरा हत्याकांड किया। भारतवासी सदासे उदार और स्निग्ध प्रकृतिवाले हैं। उन्होंने भी एक दिन उत्तेजित होकर ऐसा हत्याकांड

---

* Martin's Indian Empire vol. II p. 382.

† २१० स्त्रियां और बच्चे मारे गये थे। Kaye's Sepoy War Vol. II p. 356 Note.

कर डाला था। संसारके जिन २ देशोंमें विप्लवका पूर्ण विकास हुआ है, उन सबमें इस प्रकारके काम हुए हैं। भारतके सीधे सादे और निरीह लोगोंमें भी विप्लवके समय पशुभाव आ ही गया।

नानासाहब १६ जुलाईको पैदल, सवार और गोलंदाज मिलाकर करीब पांच हजार सेनाके साथ अंग्रेज़ सेनापतिका मार्ग रोकनेके लिये आगे बढ़े। वे कानपुरसे करीब चार मील दक्षिण अहरवा नामक स्थानपर जमे। इस स्थानसे दो रास्ते गये थे। एक कानपुर छावनीको और दूसरा दिल्लीको। बायीं ओर गंगा बहती थी और दाहिनी ओर एक गांव और आमोंका बाग़ था। बाईं ओर गंगाके करारोंमें बड़ी बड़ी तोपें लगाई गईं। दक्षिण ओर आमोंके बाग और गांवकी ओर भी तोपें जमाई गईं। रास्ते-के मिलनेकी जगह पैदल सेना और पैदलोंसे पीछे सवार अर्द्ध चन्द्राकार व्यूह बना कर खड़े किये गये। उनका अनुमान था कि ब्रिटिश सेना दिल्ली जायगी। पर ब्रिटिश सेनापतिको १५ जुलाईको ही खबर मिल गई थी कि नानासाहब लड़ाईके लिये तैयार हो रहे हैं। अंग्रेज़ सेना कानपुरसे २२ मील दूर थी। उस रात और दिनको चल कर सेनाने १४ मील रास्ता तय किया। वहाँ खा पीकर दो घड़ी दिन रहते फिर कूच किया। दो मील रास्ता चलनेपर विपक्षी सेना उन्हें दीखाई दी। सेनापति हावेल नानासाहबकी विशाल सेना और व्यूह देखकर विस्मित हुए। वे रणविद्याके धुरन्धर आचार्य थे, पैदा होनेके

बादसे युद्धोंकी आलोचनामें ही उनका समय बीता था। इसः व्यूह और विशाल सेनाको देखकर उनका हृदय चिन्तातुर हुआ। अनुभवी सेनापतिने एकाएक नाना साहबकी सेना-पर धावा न कर और ही तरहकी चतुराई की। उनके पास १००० गोरे और ३०० सिक्ख थे। जो वे एकाएक हमला करते तो संभव था सब मारे जाते। इसलिये उनकी आज्ञासे सबसे पहले स्वयंसेवक सवार आगे बढ़ने लगे। इनके पीछे पीछे तोपें चलीं और तोपोंके बराबर पीछे पैदल सेना चली। सिरपर प्रचंड सूर्य तप रहा था, गर्मीसे घबराकर बहुतसे गोरे बेहोश होकर गिर गिर पड़े पर ऐसी बातोंसे ब्रिटिश वाहिनी न रुकी। नानासाह-बकी सेनाने जब आमके पेड़ोंके नीचेसे सवारोंको निकलते देखा तभीसे तोपोंसे गोले बरसाना शुरू किया। आध मील आगे बढ़नेपर नानासाहबकी सेना, सबसे पहले जिस ओर गोले फेंक रही थी उससे दूसरी ओर फेंकने लगी। हावेलने अबतक गोला न चलाया था। वे समयकी प्रतीक्षामें थे। उनकी सेना जुते हुए खेतोंमेंसे होकर कष्टसे आगे बढ़ रही थी। तोपें भी बहुत जोर लगानेपर आगे जाती थीं। इस समय नानासाहबकी सेना गोले फेंक रही थी। उनके गोले इस जोरसे बरस रहे थे कि ब्रिटिश सेनाकी गति रुकी। जबतक विपक्षियोंकी तोपोंकी शक्ति व्यर्थ न हो तबतक सेना बढ़नेसे रुक गई।

पर सिपाहियोंकी तोपोंका मुंह बंद करना अंग्रेजोंके लिये असाध्य था। उनकी तोपोंके मुकाबिलेपर अपनी तोपें लगानेकी

हिम्मत वे न कर सके। इधरसे उनकी तोपें बराबर गोले फेंक रही थीं। मारू बाजे बजा २ कर बाजेवाले सिपाहियोंका उत्साह बढ़ा रहे थे। इन बाजेवालोंने अंग्रेज़ोंसे जो शिक्षा प्राप्त की थी वही अब उनके खिलाफ काममें आने लगी। सेनापति हावेलने इस समय संगीनोंके जोरसे तोपोंपर कब्जा करनेके लिये गोरे सिपाहियोंको हुक्म दिया। स्काटलैंडवासी पैदल सेना लगातार गोली बरसाती हुई आगे बढ़ी। तोपोंके गोलोंसे वे न रुके, जब वे नानासाहबकी सेनासे सौ गजके फासलेपर रह गये तब सेनापतिने धावेका हुक्म दिया। उन्मत्त गोरे संगीनोंके जोरसे सिपाहियोंका व्यूह भेदनेके लिये लपके। फिर उन्होंने एक भी बंदूक न चलाई। केवल संगीनोंसे वार करने लगे। बराबरमें सेनापति हावेल उन्हें उत्साहित करते जाते थे। तोपोंपर गोरोंने कब्जा कर लिया। सिपाही बराबरके गांवसे हट गये। बाईं ओर हटनेके कारण उनके सवार आगे आये। उन्होंने अर्ध चन्द्रके आकारमें अंग्रेज़ोंको घेरा। जो इस समय कोई चतुर सेनापति उन्हें चलाता तो अंग्रेजोंका बचना कठिन था।* पर बिना योग्य रणविशारदके वे अपने दलसे पृथक हो गये, वे एकके बाद एक पीछे हटते थे पर उनकी भूलोंको सुधारनेवाला कोई न था। इधर अंग्रेज़ सेनापतिकी नजर सारे मैदानपर थी, उनके नीचेके सब अफसर योग्य थे,

* Martin's Indian Empire. Vol II P. 377.

एककी गलतीको लपककर दूसरा सुधारता था।* पर सिपाहियोंमें एक भी योग्य आदमी न था। उनमें आपसमें गड़बड़ हो जाती थी। गोरोंके साथ वीर सिक्ख भी सेनापतिके इशारेपर बढ़ते आ रहे थे। विना योग्य अफसरके सिपाही दक्षिण ओर व्यूहसे भी जुदा होने लगे। तोपोंके बाद तोपें उनके हाथसे निकल गईं। नानासाहबने कानपुर छावनीके रास्तेमें एक बड़ी तोप लगाई थी। अन्तमें सिपाही इस तोपसे गोले फेंकने लगे। पर हावेलने संगीनोंके जोरसे इस तोप और बराबरके गांवपर कब्जा कर लिया। अपना सारा उद्योग व्यर्थ देख कर नानासाहब युद्ध भूमिसे भाग पड़े। सेनापति हावेल इस युद्ध में भी विजयी हुए। इस लड़ाईमें अंग्रेज़ोंकी ओरके १०८ आदमी और सिपाहियोंकी ओरके २५० आदमी मरे और घायल हुए। इस संग्राममें सिपाहियोंने अपनी वीरताका यथेष्ट परिचय दिया था। वे संगीनोंकी लड़ाईमें हाथों हाथ लड़े थे, तोपोंपर आख़ीर तक डटे थे। सेनापति हावेलके सवार कमज़ोर थे, उनकी तोपोंकी भी ज़रूरत न पड़ी। केवल पैदलोंकी संगीनोंसे उन्होंने युद्ध जीता। उनके पैदल सिपाही बहुत जगहसे छिन्नभिन्न हो गये थे। जो सिपाहियोंकी ओर कोई चतुर संचालक होता और वह उन्हें बाक़ायदा आगे बढ़ाता तो गोरी सेना निर्मूल हो जाती।† पर हारने पर भी सच्चे इतिहास लेखक उनकी वीरताकी प्रशंसा

* Mutiny of Bengal Army P. 153.

† Calcutta Review. vol XXXII P. 30.

करेंगे। यह कानपुरका संग्राम साधारण युद्ध न था। सिपाहियोंने जिनसे रणशिक्षा प्राप्त की थी उन्हींसे इस समय उनका मुक़ाबिला था, यह गुरु और चेलेकी लड़ाई थी। विद्रोही होनेके कारण उनकी स्वामिभक्तिपर कलंक लग सकता है, पर उनके साहस, पराक्रम और वीरताकी सदा प्रशंसा ही होगी।*

हावेलकी सेना भूख और प्याससे मुरझा गई थी। रात आ चुकी थी। वे कानपुर छावनीसे दो मीलके फासलेपर सुस्ताने लगे। १७ जुलाईको प्रातःकाल सेनापतिने कानपुर पर अधिकार करनेके लिये कूच किया। रास्तेमें उन्हें कानपुरकी शोचनीय घटनाका शोचनीय समाचार मिला। दूतोंने आकर कहा कि जिनके उद्धारके लिये वे जा रहे हैं उनका उद्धार अब मनुष्यकी शक्तिसे बाहर है। बीबीघरकी स्त्रियां और बच्चे घातकोंके हाथसे मारे गये। यह समाचार सारी सेनाने सुना। दुःखी हृदयसे सब आगे बढ़े। जब वे छावनीमें पहुंचे तब उन्हें बहुत बड़ा धुआं उठता मालूम हुआ, इसके साथ साथ बड़े ज़ोरका धड़ाका हुआ, सारी ज़मीन हिल उठी। अंग्रेज़ोंने समझ लिया कि विपक्षी तोपख़ाना उड़ाकर भाग गये। जिस तोपखानेके कारण सिपाहियोंका बल बढ़ा था, वह इस प्रकार नष्ट हुआ।

१७ जुलाईको फिर कानपुरपर ब्रिटिश झंडा लहराने लगा। कानपुरपर अधिकार करके हावेलने ओजस्वी शब्दोंमें अपने वीर सिपाहियोंकी प्रशंसा की। उनकी सेनाके बहुतसे सिपाही

---

* Calcutta Review vol. XXXII P. 30

मारे गये थे, बहुतोंने दस्तकी बीमारीने प्राण खोये, बहुतसे बीमार पड़ गये। इसी समय समाचार मिला कि नानासाहब बिठूरमें सेना एकत्र कर रहे हैं, पर अन्तमें यह बात झूठ सिद्ध हुई। विपक्षी सब छिप गये थे।

नानासाहब कुछ सवारोंके साथ संग्राम भूमिसे बिठूर गये। उनके नौकर अब उनका साथ छोड़ने लगे। उनका मंत्री अजीमुल्ला भाग गया। अब वे अपने महलमें न रह सके। स्त्रियों और खास आदमियोंको लेकर वे गंगापार होकर अपने बचावकी सूरत देखने लगे। लोगोंमें अफवाह उड़ी कि नानासाहब गंगामें डूब गये। बात यह थी कि नानासाहबने किनारेपर आदमियोंसे कहा था कि नावका जलता चिराग जब बुझे तब नाव डुबो देना। बीच गंगामें चिराग़ बुझा दिया गया, किनारे वालोंने समझा कि नानासाहब डूब गये। पर अन्धेरा करके वे दूसरी पार:अपनी रक्षाके लिये चले गये थे। अब अंग्रेज़ोंकी भीषण प्रतिहिंसाको पूरा करनेका मौका आया।

अंग्रेज़ सैनिक वीरता और साहसके लिये संसारमें प्रसिद्ध हैं, पर सहनशक्ति और धैर्य्य उनमें नहीं है। जब शराब उनके पेटमें पहुंच जाती है तब उन्मत्त दानवकी तरह वे इधर उधर घूमने लगते हैं। पथिक उन्हें देखकर डरते और घरवाले घरके किवाड़ बंदकर लेते हैं। गरीब बनिये सदा डरते रहते हैं। वे बराबरकी लड़ाईमें भी अपने दानवी स्वभावका परिचय दिये विना नहीं रहते। अगर कोई अपने धर्म, अपने घर और अपनी

स्वाधीनताकी रक्षाके लिये भी उनके खिलाफ हुआ हो तब भी अन्तमें वे अपने राक्षसी स्वभावका परिचय जरूर देंगे। उन्हें इस अवसरपर ज़रा भी दया, ज़रा भी संकोच नहीं होता। स्त्री, पुरुष, युवा, बूढ़ा कोई त्याज्य नहीं। कानपुर अब उन्हीं गोरोंका क्रीड़ाभवन बना। उनके भाइयोंका वह मिट्टीकी दीवारसे घिरा रक्षास्थान खड़ा था, गंगाके घाटपर अभी लहूके धब्बे लगे थे, बीबीघरमें अभी तक स्त्रियों और बच्चोंके खूनसे कीचड़ हो रहा था। जगह २ स्त्रियोंके बाल, बच्चोंके खिलौने, मेमोंके जूते और टोपियां पड़ी थीं। एक ओर धर्मग्रन्थ भी था। यह सब देख कर वे पछतावेसे अधीर हो उठे। शराब पीकर अब वे कानपुरके आदमियोंका नाश करनेपर तुले।

गोरे उन्मत्त सिपाहियोंने जैसा कानपुरका विध्वंस किया, वैसा विध्वंसका नमूना इतिहासमें दूसरा मिलना कठिन है। इस समय छावनी और शहरमें उनका कोई दुश्मन न था। नानासाहबकी सेना इधर उधर भाग गई थी। पर गोरोंने सब आदमियोंको अपना शत्रु समझ लिया था। वे जिसे देखते उसके ही गोली मारते। स्त्री, पुरुष, बालक बालिका, युवती वृद्ध, किसीकी परवा न थी। जो नजरके सामने दीखता उसीको गोली मारना उनका काम था। उस समयके भिन्न २ अखबारोंमें प्रकाशित हुआ था कि, कानपुर और उसके आस पासके स्थानोंके दस हजार आदमियोंको अंग्रेज़ोंने इस तरह मार डाला था। * एक इतिहासलेखकने लिखा है कि इतनी

* Kaye's Sepoy War. vol 11 p. 311 note.

संख्या नहीं थी। सम्भव है दस हजारसे कम हो पर हावेल-के सैनिकोंने नादिरशाही कत्ल किया था, इसमें सन्देह नहीं। इस समय बहुत कम आदमी ऐसे थे जो भोजन सामग्री लेकर अंग्रेजोंके शिविरमें आते थे। अधिकांश प्रजा गोरोंके डरसे शहर और बस्तियोंको छोड़कर दूर गांवोंमें या गंगा उतरकर अवध प्रदेशमें चली गई थी। एक व्यक्तिके अपराधका दण्ड दूसरे हजारोंको देना न्याय नहीं, मनुष्यत्व भी नहीं। पशु-प्रकृतिका उत्तर पशु प्रकृतिसे देनेसे मनुष्यत्वकी रक्षा नहीं होती। इसमें सन्देह नहीं कि गोरोंकी उत्तेजनाके बहुत कारण थे, उनकी स्त्रियां और बच्चे मारे गये थे, जिनकी रक्षाके लिये वे इतना कष्ट भोग कर आये वे जीवित न बचे। पर जिस सेनापतिके हाथमें उनके संचालनका भार था उसे साधारण आदमीकी तरह साधारण हृदयका परिचय देते देखकर सन्ताप होता है। यदि वे अपने सैनिकोंको डांट देते तो जो हजारों निर्दोष भारतवासी मारे गये वे बच जाते। अन्तमें हावेलने सिपाहियोंको ऐसा करनेसे रोक दिया, पर जो शुरूमें होना चाहिये था वह अन्तमें हुआ। गोरे निरन्तर शराब पीकर मतवाले रहने और प्रजाके जान मालकी हानि करने लगे। वे जो चीज देखते वही लूट लेते, जिसे देखते उसे ही मार डालते। शराब रोकनेके लिये हावेलने सब शराब रसद विभागके लिये खरीदनेका हुक्म दिया। गोरोंकी उन्मत्तता निवारणके लिये फौजी अदालत कायम की। मजि-स्ट्रेटको हुक्म मिला कि जो सिपाही किसीका माल लूटे उसे

फांसी दी जाय ? हर एक दलके अफसर भी अपनी अपनी सेनाके दोष दूर करने लगे।

इसके बाद हावेलने छावनीके पश्चिमोत्तर, नवाबगंजके पाससे जो रास्ता दिल्ली जाता था, उसकी रक्षाके लिये एक कम्पनी नियत की। उन्होंने सोचा था कि विद्रोही इस रास्तेसे उनपर हमला करने आवेंगे पर विपक्षियोंमें कोई न था। जिस समय सेनापति हावेल अपनी सेनाकी शृङ्खलामें दत्तचित्त थे उस समय सेरार साहबने कानपुरके मजिस्ट्रेटका पद ग्रहण करके प्रजामें शांतिरक्षा की। १८ जुलाईको मजिस्ट्रेटने अंग्रेज़ी राज्य और अंग्रेज़ी कानूनकी पुनः स्थापनाकी घोषणा की। बहुतसे कोतवालीमें आकर फिर उनके आज्ञानुसार कार्य करने लगे।

दूसरे दिन हावेलने बिठूर एक सेना भेजी। नानासाहब भाग गये थे और उनके नौकर छिप गये थे। वहां केवल रामचन्द्र राव मिले। इनसे नानासाहब नाराज थे, इस कारण इन्हें वे महलमें कैद कर गये थे। जब ब्रिटिश सेना वहां पहुंची तब इन्होंने उनकी बहुत सहायता की। ब्रिटिश सिपाहियोंने बिठूरकी बहुमूल्य सम्पत्ति लूटी। महलके नजदीकवाले कुंएमें नानासाहबके चांदी सोनेके बर्तन मिले। सिक्खोंने पेशवाकी हीरे मोतियोंसे जड़ी तीन लाख रुपयेकी तलवार ले ली। महलका नाश हो गया। इस प्रकार पेशवाका नाश हुआ, पेशवाईकी आशा भी समाप्त हुई। अंग्रेज़ोंका फिर कानपुरपर राज्य हुआ।

कानपुरवासी बेदर्दीसे मारे गये। इस समय एक और भी अधिक कठोर पुरुष कानपुरमें आया।

हावेलकी कानपुरयात्राके बाद सेनापति नील इलाहाबादके प्रबन्ध और आगेकी यात्राके लिये सेना संग्रहके काममें लगे। उन्हें बनारससे कोई सेना न मिली। वहांके अधिकारियोंने किसीको भेजना उचित न समझा। नीलने इलाहाबादकी रक्षाकी सारी व्यवस्था तैयार की, सब कुछ लिखकर उन्होंने कप्तान हेको सौंपा। १५ जुलाईको प्रधान सेनापतिने नीलको इस आशयका तार दिया—"सेनापति हावेलका शरीर अस्वस्थ है, यदि वे अस्वस्थ हों तो आप उनका कार्यभार लें। आपको उनके स्थानपर नियुक्त किया जाता है इसलिये इलाहाबादकी रक्षाका भार अपने सहायकको देकर आप शीघ्र हावेलसे मिलें।" प्रधान सेनापतिकी आज्ञा मिलते ही नीलने उसी दिन तीसरे पहर कानपुरकी यात्रा की। वे २० जुलाईको सवेरे कानपुर पहुंचे।

सेनापति हावेल नीलसे अधिकारमें बड़े थे। इस समय लखनऊ उत्तेजित सिपाहियोंका आवास बन रहा था। दिल्लीमें सिपाहियोंका राज्य अटल भावसे था। आगरा भी घिरा हुआ था। नीलने आकर कानपुरका भार ग्रहण किया, हावेलने लखनऊकी यात्रा की।

नीलका सबसे प्रधान काम कानपुरके अपराधियोंका पता लगाना और उन्हें सजा देना था। इलाहाबादमें उन्होंने केवल फांसी देकर ही बस किया था, पर कानपुरमें फांसीके अतिरिक्त

एक और सज़ा जोड़ी गई। बीबीघरके पास जिस कुंएमें अंग्रेज़ स्त्रियां और बच्चे काटकर भरे गये थे उसे सिपाहियोंने मिट्टीसे भरकर कबर सा बना दिया था। पर बीबीघरमें, जहांपर खून हुआ था, उसे नीलने साफ न कराया। जो सिपाही या नाना-साहबका नौकर पकड़ा जाता उससे पहले इस बीबीघरका खून साफ़ कराया जाता, बादमें वह फांसी पर लटकाया जाता। अंग्रेज़ोंका खून साफ करनेमें हिन्दू और मुसलमान दोनोंको आपत्ति थी, पर ज़रा रुकते ही वे बेतसे पीटे जाते। ६ न० सेनाका एक सूबेदार पकड़ा गया। उसके हाथमें झाड़ू देकर बीबीघर साफ करनेको कहा गया। वह उच्च जातिका ब्राह्मण था इसलिये वह अंग्रेज़ोंका खून साफ करनेको तैयार न हुआ। तब बेतोंसे पीटा गया। दुःखसे चीखते हुए सूबेदारने खून साफ़ किया, फिर उसे फांसी दी गई। उसकी लाश खुले रास्ते पर डाल दी गई। इसी तरह कुछ मुसलमानोंसे उस जगहका खून जीभसे चटवाया गया और बादमें उन्हें फांसी दी गई।

कठोरहृदय सेनापति नीलने इस तरहके अमानुषी कार्योंसे अपनी कठोरताका परिचय दिया। इस विषयमें उन्होंने लिखा है—"दो सौ से अधिक अंग्रेज़ महिला और बच्चे यहाँ (बीबी-घरमें) लाये गये थे। बहुतसे नावोंमें मर गये थे; बहुतसे कैदके समय मर गये। जो बुखार, दर्द और दस्तसे बचे वे यहां मारे गये। × × उन्हें बहुत बुरा भोजन दिया जाता था और भोजनसे भी अधिक बुरा व्यवहार किया जाता था। उनके कामके लिये

नौकर भी तैनात न थे। अन्तमें शामको उन्हें खानेको दिया गया था और उसके बाद राक्षसोंने उनके अंग काटे। जो पहले बीमारीके कारण मर गये थे उनके शरीर इसके पासवाले कुंएमें डाले गये थे। दुराचारियोंने जिन्हें तलवारसे मारा उनके शरीर भी इसीमें डाले गये। आते ही मैंने वह घर देखा। उसमें स्थान २ पर स्त्रियों और बच्चोंके खूनसे रंगे कपड़े और जूते पड़े थे। वहीं सिरके बालोंकी लटें भी पड़ी थीं। जिस घरमें लाकर इनका खून किया गया था उसमें अब भी कीचड़ हो रहा है। यह देखकर कोई भी अपने हृदयके आवेगको नहीं रोक सकता। जिन्होंने ऐसा काम किया, उनपर कौन दया कर सकता है? जिस सजा और जिस कामसे भारतवासियोंको अधिकसे अधिक कष्ट और वेदना हो, मै वही करना चाहता हूं। यह सज़ा हिन्दूधर्मके खिलाफ होनेपर भी इस मौकेके लिये ठीक है।"*

नील जिस समय कानपुर आये तब गोरे और सिक्ख बेरोक टोक लूट कर रहे थे। नीलकी कठोर आज्ञासे अन्तमें लूट बन्द हुई। इस विषयमें उन्होंने लिखा है—"इस स्थानपर जिस दिनसे आया हूं उसी दिनसे शान्ति और नियमके लिये मुझे बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ रहा है। जिस समय मैं आया तब सब लूट रहे थे, मैंने शान्तिरक्षक नियत करके उसका निवारण किया। फौजी नौकरोंने बड़ी निर्लज्जताका व्यवहार किया, वे इस षड्यन्त्रमें थे। अपने मालिकोंको छोड़कर वे लूटमें शरीक हुए।

* Kaye's Sepoy War. Vol II. P. 398 note.

जब कोई विद्रोही पकड़ा गया तभी उसका फैसला हुआ। अपने बचावके लिये कोई प्रमाण न दे सकते ही उसे फांसीपर लट-काया गया। जिस स्थानपर अंग्रेज़ महिला और बच्चे मारे गये वहाँका खून अभीतक दो इंच गहरा है। इस स्थानका एक एक हिस्सा मैंने खास विद्रोहियोंसे साफ करवाया है। ऊंची जातिके हिन्दुओंमें मुर्देका रक्त छूना बड़ा नीच काम समझा जाता है। उनके धार्मिक मतके अनुसार इस कामसे आत्मा अनन्तकाल तक नरक भोगती है। उनके जीमें चाहे जो हो, पर विद्रोहियोंको इस तरहकी सजा देकर आतंक बैठाना ही मेरा उद्देश्य है।"

सेनापति नीलने हिन्दुस्तानी नौकरोंके विषयमें जो कुछ लिखा उसका प्रमाण न मालूम उनके पास क्या था। जो नौकर कच्ची दीवारके घेरेके समय अपने गोरे मालिकोंके साथ थे उन्होंने प्राण दे दिये पर वहांसे हटे नहीं। बच्चोंको पालनेवाली आया अपने मालिकोंकी स्त्रियोंके बराबर बैठी बैठी गोली खाकर मरीं। बहुतसी हिन्दुस्तानी नौकरानियाँ बीबीघरमें भी थीं—वे जिन बच्चोंका पालन कर रही थीं उन्हें जब उन्होंने न छोड़ा तब घातकोंने उन्हें भी काट डाला, बहुतोंका विश्वास है कि वे भी उसी कुंएमें डाली गईं *। बिना समझे नीलने नौकरोंको अविश्वासी लिखा है। जो थोड़ीसी तनख्वाहके लिये अपने मालिकके साथ जान दे सकता है उसके बराबर विश्वासी और कौन होगा। भारतवासी नौकरोंने इस समय ऐसे ही विश्वास-

* Martin's Indian Empire, Vol, II P. 385.

का परिचय दिया था। पर अंग्रेज़ सैनिक इस समय जोशमें पागल थे और वे भारतवासियोंका हृदय जैसे भी दुखा सकते थे वैसे ही दुखा रहे थे। अपने हाथसे विधर्मीका रक्त साफ करना और जीभसे चाटना, बड़ा ही भीषण काम है। सभ्य देश-के सभ्य सेनापतिने इस कामसे देश और धर्मका अपमान किया था। केवल फांसी देकर ही उनका हृदय शान्त न हुआ। नीच-से नीच काम भी करवाकर उन्होंने अपनी हिंसाका परिचय दिया। उस समय लोग जातिनाश और धर्मनाशकी आशंकासे ही विचलित हुए थे, सेनापतिने इस आशंकाको और मजबूत किया। विना विचार और तर्कके वे भारतीयोंका नाश करनेपर तुले हुए थे, अपने हृदयकी हिंसाको उन्होंने चरितार्थ किया।

नीलके आनेसे पहले ही छावनीके पास सेनाकी रक्षाका एक स्थान बन रहा था। घाटके पास करीब २०० गज लंबा और १०० गज ऊंचा जमीनका टुकड़ा एक मिट्टीकी दीवारसे घेरा जा रहा था। नीलने पहुंचकर देखा कि बहुतसे मज़दूर दीवार बनानेके काममें लग रहे हैं। स्त्री, पुरुष, बालक मिट्टी डाल रहे हैं। हावेलने जिन रिसालावालोंके हथियार ले लिये थे वे भी इसमें लगे हैं। नीलने आत्मरक्षाके इस स्थानको योग्य समझा। दीवार बनने लगी। एक महीनेमें इन्होंने सात फुट ऊंची, अठारह फुट चौड़ी और एक मील लम्बी दीवार बना दी। इस दीवार-पर तोपें रखी गईं। हावेलके पास अधिक सेना न थी इसलिये

पहले तो वे कुछ भी सैनिक देनेको तैयार न हुए, पर कानपुरको अरक्षित समझकर वहां तीन सौ गोरे छोड़ गये।

इस प्रकार अंग्रेज़ोंने अपने खूनका बदला लेने और कानपुरको रक्षा करनेकी व्यवस्था की। अंग्रेज़ कानपुरके नामको कभी नहीं भूल सकते। अनभिज्ञ अंग्रेज़ समझते होंगे कि कानपुरके समान हत्याकाण्ड और कहीं नहीं हुआ, पर इतिहासके सामने यह बात सच नहीं है। सन् १६४१ में आयलैंण्डमें प्रोटेस्टैंट लोग कैथलिकोंके हाथसे इसी प्रकार मारे गये हैं। फ्रांसमें सेंट बार्थलमेयो हूयूग नाट लोगोंके हाथसे इसी प्रकार उत्सन्न हुए हैं। सिसलीकी राजधानीमें सायंकालकी उपासनाके समय हजारों फ़रासीसी बालक और स्त्रियाँ निर्दयतासे मारी गई हैं। यूरोपके मध्ययुगके इतिहासमें ऐसी अनेक घटनायें हुई हैं, इस जमानेके इतिहासमें भी उनका अभाव नहीं है। अंग्रेज़ोंने जिनपर राज्य किया उनका ही सर्वनाश किया। उन्होंने काले आदमियोंको आदमी न समझकर निर्दयतासे बदला लिया। हर स्थानपर भारतवासी अपमानित हुए। इसी अपमानका बदला लेनेके लिये, इसी अन्यायके शोधके लिये, हजारों तलवारें उठीं और उनमें कानपुरके समान घटनायें घटीं। कानपुरकी घटनाके कारण अंग्रेज़ हिन्दुस्तानियोंको नीच कहते हैं। पर उन्हें यह याद नहीं कि इन्हीं नीच आदमियोंके बलपर उन्होंने भारतपर राज्य स्थापित किया। अगर ये काले, गँवार, नीच और असभ्य हिन्दुस्तानी मदद न करते, अपना खून अंग्रेज़ोंके लिये न बहाते,

तो हिन्दुस्तानपर अंग्रेज़ी झंडा लहराता हुआ भी न दीखता। जिन आदमियोंने इतनी सहायता की, जिन्होंने इतना त्याग किया, जिन्होंने अपने धर्म और अपने देशवालोंके विरुद्ध लड़कर विधर्मी विदेशियोंका राज्य स्थापित किया, उनके धर्म और जातिका सम्मान यदि अंग्रेज़ करते, यदि उनके धर्म और जातिको खिलौने- के समान तुच्छ न समझते तो कानपुरका हत्याकाण्ड होता ही नहीं, भारतमें ग़दरका नाम ही न होता।

और नानासाहब? अंग्रेज़ शायद सदैव नानासाहबको मनुष्यरूपमें राक्षस समझेंगे। पर इस राक्षसने ही उनके देश- वासियोंको समय २ पर सन्तुष्ट किया था। यदि अजीमुल्ला सदृश विरोधी न होते तो अंग्रेज़ निश्चिन्त होकर इलाहाबाद चले जाते। विरोधी सिपाही जिस समय खजाना लूटकर दिल्लीकी ओर चल पड़े थे उस समय अजीमुल्लाकी सलाहसे ही वे वापिस आये। अजीमुल्लाने ही सतीचौर घाटपर हत्याका आयो- जन किया था। इस विषयमें नानासाहबकी सम्मति न थी।* नानासाहबकी बात किसीने सुनी ही नहीं, उनके हार्दिक विचारोंपर किसीने ध्यान ही न दिया। अजीमुल्ला कानपुरके सब कामोंका विधाता था। उसीके विधानसे पवित्र गंगाका हृदय खूनसे सींचा गया, उसीके आग्रहसे बीबीघरमें अंग्रेज़

*Trevelyan's Cawnpore. P.226, Shepherd's Cawnpore Massacre P. 107. Story of Cawnpore. P. 213. Kaye's Sepoy War Vol. II. P. 391.

महिलाओं और निर्दोष बच्चोंकी हत्या हुई। नानासाहब दो जबर्दस्त दलोंके बीचमें थे। एक ओर सिपाही, दूसरी ओर उनके मंत्री और नौकर। वे किसीपर जरा भी दया करना चाहते तो कोई न कोई आकार बाधक बन जाता था। इसी कारण कानपुरने भी रक्तसे स्नान किया। वे किसी हत्याकाण्डमें उपस्थित न थे, वे एक प्रकारसे सहायहीन हो गये थे। उन्होंने अपने मंत्रियोंकी सलाहके अनुसार फिरसे पेशवाईके उद्धारकी कोशिश की थी। अंग्रेजोंकी दृष्टिमें यह बड़ा भारी दोष हो सकता है। इसी कारण उन्हें बड़ा भारी कठोर दण्ड मिला। राज्यभ्रष्ट सम्पत्तिभ्रष्ट, पदभ्रष्ट होकर उन्होंने न मालूम कहाँ, किस दशा-में, कब प्राण त्यागे। उनके जीवनकी शोचनीय दशापर अब टीका टिप्पणीकी आवश्यकता नहीं। अब इतिहासलेखकोंको कठोर लेखनीसे उनकी निष्कृति होनी चाहिए।

तीसरा अध्याय

पंजाबमें गदर—पंजाबकी साधारण स्थिति—अफगानिस्तानके साथ सम्बन्ध—मियांमीरकी घटना—सिपाहियोंसे हथियार छीन लेना-गोविन्दगढ़, फीरोजपुर, फिल्लौर, पेशावर—नई सेनाओंका संगठन--हथियार छीन लेना--जालन्धर ।

जिस समय बंगाल और पश्चिमोत्तर प्रदेशमें सिपाहियोंकी उत्तेजना बहुत अधिक बढ़ गई, हर जगह खून और लड़ाई होने लगी, उस समय पंजाबके समाचारोंसे लार्ड कैनिंगकी चिन्ता और भी अधिक बढ़ी। महाराज रणजीतसिंहके राज्यको ब्रिटिश कम्पनीमें शामिल किये केवल आठ बरस हुए थे। घाव बिलकुल ताजा था, सब आदमी आजादीका जमाना देखे हुए थे, जो वीर सिक्ख पंजाब केसरीकी सेनामें अपनी बहादुरीके हाथ दिखा चुके थे उनके हथियार अब छीने जा चुके थे। पंजाबमें भारतीय सेनाकी तादाद भी खासी थी।* जो हिन्दुस्तानी सेनाओंके साथ सिक्ख सेनायें भी खड़ी होतीं तो विपत्ति अनिवार्य हो जाती। प्रसिद्ध अंग्रेज़

---

* दूसरे सिक्ख युद्धके बाद पंजाबमें २९ हजार सेना थी। इनमें १० हजार सिक्ख, ७ हजार पंजाबी मुसलमान, ४ हजार पहाड़ी राजपूत, ४ हजार हिन्दुस्तानी और एक हजार गोर्खे

दार्शनिक बेकनने लिखा है—"फसीलोंसे घिरे शहर, हथियारोंसे पूर्ण शस्त्रागार, जल्दी चलनेवाले घोड़े हाथी, तोपें आदि सब सामानसे सुसज्जित रहना भी शेरकी खालसे ढके गधेके समान रहना है। लोगोंमें रणकुशलता और दृढ़ता न हो तो इन चीजोंसे कुछ काम नहीं होता।" वीर सिक्खोंमें यह गुण था। वे दृढ़ और रणकुशल भी थे। लार्ड हार्डिंज (पहले) और लार्ड गफने सिक्खोंके साथ सम्मुख संग्राममें मुँहकी खाई थी। चिलि-यांवालाके संग्राममें जिन्होंने अंग्रेज़ोंका मुँह फेर दिया वे दुर्बल नहीं कहे जा सकते। यद्यपि उनके देशपर अंग्रेज़ोंका राज्य हो गया था, उनके किलोंपर ब्रिटिश झंडा फहरा रहा था, उनके हथियार ले लिये गये थे, पर उनकी वीरता और साहस उन्हींके पास था। पहलेकी गौरवकी कथा, पुरानी स्वाधीनताका भाव उनके हृदयसे अभी न गया था। पराधीन होनेपर भी वे स्वाधीनताके उपासक थे। नौशेरा और चिलियांवाला उनके सामने थे।

ऐसे मौकेपर दृढ़ साहसी वीर फिर अपनी स्वतन्त्रताके लिये तलवार उठा सकते थे। पंजाब अंग्रेज़ोंके हाथ जानेसे वहाँके सरदारोंकी बहुत हानि हुई थी। उनका न वह गौरव था और न अधिकार। वे यद्यपि शान्तिसे अपना समय बिता रहे थे पर उनकी स्वदेशभक्ति अस्त न हुई थी। यह आशंका केवल पंजाबसे ही न थी, बल्कि पंजाबके उत्तर ओर एक युद्धप्रिय जाति और थी। इनपर विदेशियोंका कुछ भी दबाव न था,

कभी अंग्रेज़ोंने इन्हें रुपया देकर और कभी डर दिखाकर शान्त कर रखा था। जो अफगान सिक्खोंके साथ हो जाते तो बड़ी विपत्तिकी संभावना थी। पर काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मद ब्रिटिश सरकारसे सन्धिकी शर्तमें बँधे थे। उन्हें हर साल सरकार एक बड़ी रकम देती थी। रकम छोड़ना उन्हें पसंद न था। पंजाबमें एक जातिका निवास भी न था। हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख तीन जातियाँ थीं। सिक्खोंके साथ दिल्लीके बादशाहका कोई सम्बन्ध न था। इसलिये दिल्लीके बादशाहके फिर तख्तपर बैठनेसे सिक्खोंको कुछ भी प्रसन्नता न हुई। उस समय लाहौरकी आबादी ६० हजार थी। इनमें सिक्ख और मुसलमान ही प्रधान थे। सिक्खों-और मुसलमानोंमें आपसमें मेल नहीं था। दूसरी ओर सिक्खों-के हथियार ले लिये गये थे। बहुतसे हथियार चलानेकी जगह हल चलाते थे। मुसलमान उनसे न्यारे ही थे। येही बातें सरकारके अनुकूल थीं।

उस समय एक गोरी और एक हिन्दुस्तानी सेना लाहौरके किलेकी रक्षामें नियत थी। लाहौरसे छः मील दूर मियाँमीर नामक स्थानपर फौजी छावनी थी। इस छावनीमें तीन पैदल सेना, एक रिसाला, एक गोरी पैदल सेना और कुछ गोलंदाज थे। गोरोंकी संख्या अधिक न थी। मोटे हिसाबसे चार हिन्दुस्तानी सिपाहियोंके पीछे एक गोरा पड़ता था। पंजाबके प्रधान कमिश्नर सर जान लारेंस इस समय रावलपिण्डीमें थे।

राज्य-विभागके कमिश्नर राबर्ट मांटगोमरी ही उनका काम करते थे।

११ मईको मेरठके विद्रोहका समाचार लाहौर पहुँचा। मांटगोमरी अभी अपना कर्त्तव्य स्थिर भी न कर पाये थे कि दूसरे दिन दिल्लीके पतनकी खबर उन्हें मिली। मेरठके गोरे और अंग्रेज़ बुरी तरहसे घायल हुए, दिल्लीके अंग्रेज़ मारे गये, बूढ़े मुग़ल बादशाह फिर सिंहासनपर बैठ गये, यह सब खबरें उन्हें मिलीं सही, पर एकाएक अपने कर्त्तव्यका कोई निश्चय वे न कर सके। पंजाबमें भी सिपाहियोंकी संख्या खासी थी। पंजाबी मुसलमान और सिक्ख तो जन्मसे ही लड़ाके थे, पास ही अफगान मौजूद थे। अब बिना देरके मांटगोमरीने अपना कर्तव्य निश्चय किया। अन्यान्य राजनीतिज्ञोंके साथ वे सलाहें करने लगे। अनारकलीमें सिविल स्टेशन था, इसी जगह सब एकत्र होकर सोचने लगे। उन्होंने निश्चय किया कि सिपाहियोंसे बंदूक, कारतूस, और टोपी ले ली जायँ और लाहौरके किलेमें और अधिक गोरी सेना रखी जाय। सबने इसका अनुमोदन किया। राबर्ट मांटगोमरी एक सैनिक अफसरके साथ उसी समय मियांमीर गये। कहते हैं कि इसी समय उन्हें एक षड्यन्त्रका पता लगा।

लाहौरका किला फसीलके भीतर था। एक गोरी सेना, एक गोलंदाज सेना और मियाँमीरकी २६ नं० पैदल सेनाके कुछ सिपाही इसमें रहते थे। शहरमें शान्ति रखना और खजानेकी रक्षा करना इनका काम था। २६ नं० सेनाके जो सिपाही

किलेमें पहरा देते थे उनके पहरेकी अवधि १५ मईको समाप्त होनेके कारण ४९ नं० सेनाके सैनिकोंने किलेकी रक्षाका भार लिया। कहा जाता है कि, षड्यन्त्रकारियोंने निश्चय किया था कि जब ४९ नं० सेना २६ नं० सेनाका काम लेनेके लिये किलेमें आवेगी उस समय इन दोनों सेनाओंके सम्मिलित सिपाहियोंकी तादाद ११०० होगी। ये लोग फौरन अफसरोंपर हमला करके किलेपर कब्जा कर लेंगे। किलेमें गोरोंकी तादाद बहुत कम (१५०) होनेके कारण वे सहजमें हार जायँगे। खजाना और तोपखाना दोनों कब्जेमें आजायँगे। इसके बाद पासवाले अस्पतालमें आग लगा दी जायगी। यह आग देखकर मियाँमीरके सिपाही समझ जायंगे कि सिपाही अंग्रेज़ोंके खिलाफ उठ खड़े हुए। इसलिये वे भी हथियारोंसे तैयार होकर आजायँगे। जेलके दो हजार कैदी छोड़ दिये जायँगे। अंग्रेज़ोंको समूल नष्ट किया जायगा। कहा जाता है कि मई मासके शुरूसे ही सिपाही इस षड्यन्त्रमें लिप्त थे। लाहोरके अतिरिक्त फीरोजपुर, फिल्लौर, जालन्धर और अमृतसरकी छावनियोंमें भी यह अफवाह फैल गई थी। सबसे पहले दो अंग्रेज़ोंने इस भयानक षड्यन्त्रको प्रगट किया। पर अफसरोंने किसी प्रकारका भला या बुरा मत न दिया। कहा जाता है कि कप्तान लारेंस नामक पुलिस विभागके कर्मचारीने अपने मुंशीको सब बातोंका पता लगानेका हुक्म दिया। यह मुंशी अवधका एक कुलीन ब्राह्मण था। खोज करनेपर इसे मालूम

* Martin's Indian Empire. Vol II, p. 197.

हुआ कि सिपाहियोंमें गहरा जोश है। इसने रिचार्ड लारैंससे कहा—"मियांमीरके सिपाही सरकारके विरोधी हो गये। सब राजद्रोहसे पूर्ण हैं। सब मौका ताक रहे हैं।" * मुंशीने सब बातें ऐसे संक्षेपसे कहीं कि उससे मालूम होता था कि उसने दो चार आदमियोंका भाव जान कर ही सब सेनाको विद्रोही समझ लिया है।

इस विषयमें प्रधान कमिश्नर सर जान लारैंसकी सम्मति लेनी आवश्यक थी, पर लाहौर और पिंडीमें टेलीफोन न था। इस कारण ठीक समयपर उन्हें इत्तिला न मिली। इस कठोर कार्यके सम्पादनका भार मांटगोमरीपर रहा। वे भी इस काममें जल्दीसे लग गये।

मांटगोमरी एक फौजी अफसरके साथ मियाँमीरके ब्रिगेडियर कार्बेटसे मिले। जब कार्बेटने मेरठ और दिल्लीके समाचार सुने और अपने यहांकी विपत्तिके निवारणके उपायपर विचार किया तब वे अस्थिर हो गये। ब्रिगेडियरने मांटगोमरीको सलाहके अनुसार सिपाहियोंके हथियार न लेकर उन्हें गोली, बारूद और टोपी न देना ही अधिक उपयुक्त समझा। इस समय सन्ध्या हो चुकी थी। सूर्य पश्चिमकी ओर ढलता जा रहा था। ब्रिग्रेडियर इसपर फिर विचार करने लगे। शंका और सन्देह उनके हृदयमें लहरें मारने लगा। वे सोचने लगे कि केवल बारूद और गोली न देनेसे ही विपत्ति नहीं टल सकती,

* Kaye's Sepoy War. Vol II. p. 427.

अन्तमें उन्होंने सोचा कि हथियार ले लेना ही सबसे अधिक उपयुक्त है। मांटगोमरीने इसका अनुमोदन किया। अधिकारी सिपाहियोंके सब हथियार आदि लेनेपर वे उद्यत हुए।

यह काम कठिन और आपत्तिपूर्ण था। जिन सिपाहियोंके हथियार लेनेका निश्चय किया गया था, वे वीर, साहसी और विजयी थे। इनमें १६ नं० पैदल सेना अपनी असीम वीरताके लिये प्रसिद्ध थी। कंधार और गजनीमें इनकी पराक्रमशीलता देखकर सेनापति नटने आग्रहके साथ नकी प्रशंसा की थी। मुदकी, सुबरांव और फीरोजशहरमें ये अंग्रेज़ोंके आधिपत्यके लिये सिक्खोंसे लड़े थे, श्रीरंगपत्तनमें स्वदेशी राजाको नाश करके इन्होंने अंग्रेज़ी अमलदारी स्थापित की थी। इनको वीरता, साहस और स्वामिभक्ति प्रशंसाके योग्य थी। इसके लिये उन्हें समय २ पर इनाम भी मिले थे। सफेद चांदीके मेडल इनकी छातियोंपर लगे थे। ऐसे रणनिपुण सिपाहियोंके हथियार ले लेना सहज काम न था। जो इसमें देर होती या यह बात सिपाहियोंको मालूम हो जाती तो विपत्तिकी संभावना थी। पर मांटगोमरी और कार्बेट इन शंकाओंसे न रुके। वे थोड़ेसे गोरों-की मददसे सब सिपाहियोंके हथियार लेनेको तैयार हुए। दूसरे दिन १३ मईको सवेरे ही सब सिपाहियोंको परेडके मैदानमें एकत्र होनेकी आज्ञा दी गई। मांटगोमरी और कार्बेटने बड़ी चतुरतासे हथियार लेनेकी खबर किसीको न लगने दी। वे जरा भी चिन्तित न हुए, किसी अंग्रेज़ तकको वे इस बातका पता

देना न चाहते थे। १२ मईकी रातको छावनीमें अंग्रेज़ोंका नाच होना था, उसमें सब अंग्रेज़ और अफसर सम्मिलित हुए। अंग्रेज़ महिलायें तरह २ की पोशाकें पहन २ कर अपने नृत्य-कौशल दिखाने लगीं। किसीके मुखसे किसी प्रकारकी चिन्ता प्रगट न होती थी।

१२ मईकी रात आनन्दमें बीती। सिपाही भी निश्चिन्त थे। सवेरे ही ब्रिगेडियरकी आज्ञासे सब अंग्रेज़ सैनिक और सिपाही परेटके मैदानमें एकत्र हुए। मांटगोमरी आदि अफसर अनारकलीसे घोड़ोंपर चढ़कर उपस्थित हो गये। सब सिपाही एक लाइनमें खड़े किये गये। उनके आगे तोपें सजाई गईं। ८१ नं० सेनाके करीब अढ़ाई सौ गोरे तैयार होकर खड़े हो गये। दूसरी ओर सिक्ख रिसाला खड़ा किया गया। बीचमें सिपाही रहे। हर एक सिपाहीके सामने बारकपुरकी ३४ नं० सेनाके हथियार ले लेनेका आज्ञापत्र पढ़ा गया। इसके बाद जिस उद्देश्यके लिये सिपाहियोंको एकत्र किया गया था वह बड़े कौशलसे पूरा किया जाने लगा। केवल गोलंदाज अपनी तोपों सहित सिपाहियों-के पीछे रहे। यहींसे उन्होंने तोपें भरीं। पीठ पीछे होनेके कारण सिपाही देख न सके। इसके बाद ब्रिगेडियरके हुक्मसे एक लेफ्टिनेंट सिपाहियोंके सामने खड़ा होकर हिन्दुस्तानीमें कहने लगा—"इस वक्त दूसरी सेनाओंका विद्रोह देखा जाता है। इससे बहुत अच्छे सैनिक आदमियोंका नाश होगा। मियाँमीर-की सेनाओंने सरकारका काम बड़ी अच्छी तरह पूरा किया है।

इन सेनाओंको विद्रोहसे बचानेके लिये इनके हथियार लिये जानेका निश्चय हुआ है। इसलिये सब सिपाहियोंको आज्ञा दी जाती है, कि वे अपने सब हथियार रख दें।"

जिस समय लेफ्टिनेंट मोकट्टो यह भाषण कर रहे थे उस समय गोरी सेना दो भागोंमें बँटकर तोपोंके दोनों ओर चली गई थी। जब उन्हें हथियार रखनेकी आज्ञा दी गई उस समय सामने भरी तोपें दिखाई दीं। गोलंदाज जलती बत्ती लिये हुक्मका इन्तजार कर रहे थे। इधर ८१ नं० गोरी सेनाको बंदूक भरनेकी आज्ञा दी गई। सिपाहियोंने अफसरोंके हुक्मका पालन किया। १६ नं० सेनाके सिपाहियोंका चित्त पहले तो हिला पर अन्तमें उन्होंने भी किसी प्रकारका विरोध न किया। सबने हथियार उतार उतार कर एक स्थानपर रख दिये। सवारोंने उनके कमरबंदोंसे तलवारें खोल लीं। इस प्रकार बिना किसी गड़बड़के छः सौ गोरोंके सामने २५०० सिपाहियोंने हथियार रख दिये। जिन्होंने वीरता-के साथ अनेक संग्राम विजय किये थे, जिन्होंने अंग्रेज़ी राज्यके स्थापित करनेमें सहायता दी थी, वे वीरवेषसे वञ्चित हुए। गोरी सेनाने सब हथियार उठा कर गाड़ियोंमें भरकर भेज दिये। शस्त्रहीन सिपाही वापिस छावनीमें लौट आये।

मियाँमीरके मैदानमें हथियार लेनेका कार्य बड़ी शान्तिसे हुआ। पर अभी २६ नं० पैदल सिपाही सेना किलेमें थी। १५ मई तक इनके पहरेकी अवधि थी। पर १४ मईको सवेरे ही ८१ नं० गोरी सेनाके सैनिक किलेमें पहुँचे। इनके सेनापति कर्नल

स्मिथने इनके हथियार लेनेका प्रबन्ध किया। शीघ्रही उन्हें भी हथियार रखनेका हुक्म दिया गया। सिपाही एकाएक अपने सामने हथियारबन्द गोरोंको देखकर घबराये, पर उन्होंने किसी प्रकारका विरोध न किया। उन्हें इस हुक्मसे दुःख हुआ, पर हथियार रख दिये। हथियार रखकर यह सेना भी वापिस मियाँ-मीर आई। हथियार लेनेके बाद अंग्रेज़ स्त्रियों और बच्चोंका इन्तजाम किया गया। हिन्दुस्तानियोंकी जगह पुलिसमें पंजाबी पहरा देने लगे। डाकखानेमें जितने सिपाहियोंके पत्र आते थे, वे मांटगोमरीके हुक्मसे खोलकर पढ़े जाने लगे। दूसरे स्थानोंके यूरोपियन लोग सिपाहियोंके विद्रोहकी बात सुनकर अपनी अपनी रक्षाका प्रबन्ध करने लगे। सेनापति वेलजली जब १८०६ में दक्षिणकी ओरसे भारतपर कब्जा करते और एक राजाके बाद दूसरे राजाका नाश करते आगे बढ़ रहे थे, तब उन्होंने उपदेश दिया था—"किसी बातमें आशंका और उत्तेजना प्रगट न होने दें। सब कर्मचारी सदैव अपना कर्त्तव्य पूरा करनेमें लगे रहें और चाहे जिस उपायसे हो समाचार संग्रह करें।" इसी उपदेशके अनुसार मांटगोमरीने भिन्न २ स्थानोंके अंग्रेज़ अफ़-सरोंको स्थिर रूपसे काम करनेकी सलाह दी। न उन्होंने अपनी घबराहट प्रगट की और न काममें किसी तरहकी शिथिलता होने दी। सैनिक विभागसे सलाह करके वे पंजाबमें शान्ति-स्थापनके काममें लगे।

केवल लाहौरकी रक्षाका ही प्रबन्ध करके मांटगोमरी चुप न

हुए, बल्कि वे अन्यान्य स्थानोंकी रक्षाके लिये सचेष्ट हुए। मेरठमें बड़ी गोरी सेना, रिसाला और गोलंदाज थे, पर किसी स्थानको रक्षाके लिये सैनिक न भेजे गये। वे केवल मेरठकी रक्षामें ही लगे थे। पर मियाँमीरमें बहुत हो कम गोरी सेना थी। इसी सेनाके द्वारा सिपाहियोंके हथियार लिये गये। इसका एक हिस्सा किलेमें भेज दिया गया और बाकी दूसरे स्थानकी रक्षाके लिये।

लाहौरसे करीब ३० मीलके फासिलेपर अमृतसर शहरमें गोविन्दगढ़का एक किला है। यह स्थान सिक्खोंका तीर्थ है। पवित्र सुवर्ण मन्दिरमें सिक्ख लोग धर्मचर्चा करते रहते हैं। गुरु गोविन्दसिंहकी वीरताकी कथा निरन्तर गाई जानेके कारण सबके हृदयोंमें तेज और बलका संचार करती है। सारे पञ्जाबमें अमृतसरके समान सिक्खोंका कोई पवित्र स्थान नहीं, कोई प्राचीन गौरवका स्थान नहीं। गुरु तेगबहादुरने अपने धर्मको जगानेके लिये जिस प्रकार औरङ्गजेबके दरबारमें सिर दिया, वीर गोविन्दसिंहने युवावस्थाके भोग विलासोंको जलांजलि देकर जिस प्रकार सिक्खोंको सिंहजाति बनाया, पञ्जाब केसरी रणजीतसिंहने जिस प्रकार एक ओर रणदुर्मद अफगानों और दूसरी ओर राजनीतिकुशल अंग्रेज़ोंको छकाकर पञ्जाबसाम्राज्य स्थापित किया, वह सब अमृतसरमें दीखता है। इस स्थानपर आकर सिक्खोंको जैसा धार्मिक उपदेश मिलता है वैसा ही अपने पूर्व गौरवका भी ज्ञान होता है, इस स्थानका

किला अन्तिम गुरु गोविन्दसिंहके नामपर बना है। संसार-प्रसिद्ध कोहनूर हीरा इसी किलेमें था। मांटगोमरीको इस स्थानका महत्व मालूम था। और स्थानोंकी अपेक्षा इस स्थानके सिक्ख सबसे पहले सरकारके खिलाफ उठ सकते हैं—यह बात उनके ध्यानमें थी। इसलिये सबसे पहले वे गोविन्दगढ़-की रक्षाके लिये तैयार हुए। १२ मईके सवेरे अमृतसरके डिप्टी कमिश्नर कूपर साहबको उन्होंने लिखा—"जैसी हालत है, उससे अभीसे सावधान हो जाना चाहिए। सिपाहि-योंको डराने या तङ्ग करनेकी जरूरत नहीं। जिन सिपा-हियोंपर गोविन्दगढ़की रक्षाका भार है, उन सबपर तीखी नजर रखनेकी जरूरत है, जालन्धरमें क्या हो रहा है, यह मालूम करनेकी जरूरत है।" मांटगोमरीने लार्ड वेलजलीकी नीतिका अनुसरण किया था। उनके इस उपदेशसे अमृतसर डिप्टी कमिश्नरने किसी प्रकारकी चंचलता प्रगट न की।

गोविन्दगढ़में सिपाही अधिक थे। थोड़ेसे गोरे गोलंदाज थे। एकाएक अफवाह उड़ी कि लाहौरके हथियार छीने हुए सिपाही गोविन्दगढ़ किलेपर कब्जा करने आ रहे हैं। इस अफवाहके कारण कूपर साहब कुछ सिक्ख सवारोंके साथ किलेके दूसरे दरवाजेपर रहने लगे। इधर उनके सहायक कमिश्नर मेकनाटनने कुछ गांववालोंको एकत्र करके लाहौरके रास्तेपर नियत किया। इस समय पंजाबमें अनाज खूब पैदा हुआ था। इस कारण किसान प्रसन्न थे। वे नहीं चाहते थे कि

किसी तरहकी गड़बड़के कारण उनकी खेतीको हानि पहुंचे। किसानोंमें प्रधान जाट ही थे, इनकी सिपाहियोंसे किसी प्रकारकी सहानुभूति न थी। इसलिये गांवोंकी रक्षाके नामपर जब कमिश्नरने इन्हें बुलाया तब ये दलके दल आ गये। न इनके हाथमें बन्दूकें थीं और न सिपाहियाना वर्दी से ये लोग लैस थे। यह लोग अपने खेतीके कामके हथियार लेकर गांवोंकी रक्षाके नामपर चले आये थे। इन लोगोंकी सहायतासे कमिश्नरने लाहौरसे अमृतसर आनेवाली सड़ककी रक्षा की। रातको शोर मचा कि लाहौरके सिपाही आ रहे हैं। मेकनाटन साहबने रास्तेमें बहुतसी बैलगाड़ियां खड़ी करवाकर रास्ता रोक दिया। इस अजीब दीवारके पीछे खुर्पे और कुदालके हथियार लिये जाट थे। अमृतसरके कमिश्नरने इसी उपायका अवलम्बन किया। बहुत देर बीत गई, जाट खड़े खड़े सिपाहियोंका इन्तजार करने लगे। पर सिपाही न आये। लाहौरकी ८१ नं० गोरी पैदल सेनाका एक दस्ता गोविन्दगढ़की रक्षाके लिये आया था। इनके आनेसे अंग्रेज़ प्रसन्न हुए। इस प्रकार गोविन्द-गढ़ और अमृतसरमें शान्ति बनी रही।

लाहौर और अमृतसरकी रक्षा हुई पर पंजाबमें और भी अनेक फौजी छावनियां थीं। फीरोजपुर और फिल्लौरमें बारूद और गोले गोली बननेके कारखाने थे। इन दोनों मुकामोंपर गोरोंसे अधिक सिपाही थे। अधिकारियोंका सन्देह दोनों स्थानोंके सिपाहियोंपर था। दोनों स्थानोंके अंग्रेज़ गदरके डरसे

त्रस्त थे। उस समय फीरोजपुरमें ५१ नं० गोरी पैदल सेना और १० नं० हिन्दुस्तानी रिसाला तथा ५७ नं० हिन्दुस्तानी पैदल सेना थी। इनके अलावा कुछ तोपें और गोलंदाज थे। ब्रिगेडियर इनेस छावनीके अधिकारी थे। ये ११ मईको मुलतानसे फीरोजपुर नियत हुए थे। स्वास्थ्य खराब होनेके कारण डिप्टी कमिश्नर मार्सडन विलायत जा रहे थे, उनके स्थानपर कोर्टलैण्ड नामक एक फौजी नियत हुआ था। इस तरह फीरोजपुरके जब सब अफसर बदल गये थे उस समय गड़बड़का सूत्रपात हुआ।

१२ मईकी रातको कासिदने ब्रिगेडियर इनेसको लाहौरका पत्र दिया। उसमें मेरठ और दिल्लीका समाचार था, साथ ही लाहौरकी सेनाके हथियार ले लेनेका भी समाचार था। १३ मईके प्रातःकाल ब्रिगेडियरकी आज्ञासे सारी सेना कवायदके मैदानमें खड़ी हुई, ब्रिगेडियरने सिपाहियोंका रुख देखा। इसी दिन बारह बजे मेरठका तार मिला। अब वे स्थिर न रह सके। वे अपने फौजी अफसरोंके साथ सलाह करने लगे। सिपाहियोंपर उनका अधिक विश्वास न था। इसलिये शीघ्र हथियार लेनेका प्रस्ताव किया। पर सिपाहियोंके गोरे अफसर इससे खुश न हुए। वे इसका विरोध करने लगे। ब्रिगेडियर इनेस नये आदमी थे, वे अफसरोंकी बात काट न सके। अन्तमें निश्चय हुआ कि सिपाहियोंकी दोनों सेनाओंको पृथक् पृथक् रखा जाय।

फीरोजपुरके तोपखानेमें गोले बारूदका सामान बहुत था। ५७ नं० सेनाके सिपाही इसकी रक्षापर नियत थे। अब ५१ नं० गोरी सेना तोपखानेके सामने रक्खी गई। विपत्तिके समय इस दीवारसे घिरे स्थान तथा गोरी सेनामें आनेके लिये अंग्रेज स्त्रियों तथा पुरुषोंको गुप्तरूपसे समाचार दिया गया। यह प्रबन्ध करके अधिकारियोंने दूसरे दिन पृथक् पृथक् जगहोंमें दोनों सेनाओंके हथियार लेनेका प्रबन्ध किया था। पांच बजे शामको कवायदके लिये दोनों हिन्दुस्तानी सेनायें परेटके मैदानमें आईं। ५७ नं० सेना कप्तानकी आज्ञासे मैदानमें खड़ी हुई। ४५ नं० सेना सदर बाजार होकर रवाना हुई। बाजारमें उनके विचारोंमें परिवर्त्तन आ गया। उस समय जरासी बातसे ही विचार बदल जाते थे। बाजारसे जाते जाते सिपाहियोंने तोपखानेके पास गोरी सेना और तोपोंको देखा। उनमेंसे बहुतसे पुकार उठे कि अब हमारे साथ विश्वासघात होगा। इस आवाजके साथ ही वे बंदूकें भरकर तोपखानेकी ओर लपके। पर सारी फौज न गई। थोड़ेसे गये, बाकी अफसरोंके हुक्मसे निश्चित स्थानपर गये।

तोपखानेका बाहरी हिस्सा अधिक मजबूत न था। सिपाही खाईमें उतरे, फिर दीवारपर चढ़े और तोपखानेके भीतर जा पहुंचे। पर जिस घरमें हथियार थे वह छः फुट ऊंची दीवारसे घिरा था। ६१ नं० गोरी सेनाके सैनिक दरवाजेकी रक्षापर थे। उत्तेजित सिपाहियोंने गोरोंपर आक्रमण किया। पर

अन्तमें उन्हें हारना पड़ा। ५७ नं० सेनाके जो सिपाही तोप-खानेमें थे उनके हथियार ले लिये गये। फीरोजपुरका तोपखाना इस प्रकार बच गया।

तोपखाना तो बचा पर छावनीमें शान्ति न हुई। थोड़ीसी गोरी सेनासे दोनों ओर शान्ति होना कठिन था। इसलिये बाजार और छावनीमें गड़बड़ शुरू हुई। लोग बाजारमें लूट मार करने लगे। अंग्रेज़ोंके बंगले, घर, गिर्जा आदि लूटे और जलाये जाने लगे। रातको जोशीले आदमियोंका शोर सुनाई देता रहा। चारों ओर घरोंके जलनेसे धुआं निकलता रहा। इस समय अंग्रेज़ स्त्रियां और बच्चे गोरी सेनामें थे। सिपाही या उत्तेजित लोग उनका कुछ न बिगाड़ सके।

इस समयतक ५७ नं० सेनाके आदमी शान्त थे। इनका कोई आदमी ४५ नं० सेनाके आदमीसे न मिला। जब सवेरा हुआ तब देखा गया कि उनके बहुत कम आदमी बाहर गये हैं। ब्रिगेडियर इनेसने इनसे कहा कि यदि वे शान्तिपूर्वक गोरी सेनाके सामने हथियार रख दें तो वे इस सेनाको राजभक्त कहनेको तैयार हैं। ब्रिगेडियरकी इस बातसे सेनाका एक दस्ता हथियार रखने निश्चित स्थानपर चला गया, दूसरा जानेकी तैयारी करने लगा। ६१ नं० गोरी सेनाने सिपाहियोंको अपनी ओर आता जानकर उन्हें दुश्मन समझ लिया और उनपर बंदूकोंके फायर किये। फायरके सामने न टिक सकनेके कारण सिपाही इधर उधर भागे। अफसरोंने फिर सबको एकत्र

किया। ५७ नं० सेना फिर एकत्र हुई और गोरी सेनाके सामने उसने हथियार रख दिये। पर ४५ नं० सेना वशमें न आई। वे पहलेके समान इधर उधर घूमने लगे। ब्रिगेडियरने उनके हथियारोंका खजाना नष्ट करनेका हुक्म दिया। तुरन्त काम हुआ। ४५ नं० सेनाका तोपखाना उड़ा दिया गया।

जब ५७ नं० सेनाने हथियार रख दिये, उनका गोले, गोलियों और हथियारोंका खजाना भी भस्म हो गया, १० नं० रिसाला राजभक्त बना रहा, तब ४५ नं० सेनाके सिपाही हताश हुए। अब वे अपने हथियार और वर्दी लेकर दिल्लीकी ओर चले। पर ६० नं० गोरी सेनाने तोपें लेकर उनका पीछा किया। १० नं० रिसाला भी गोरी सेनाकी मदद करने लगा। यह सब सेना फीरोजपुरसे १२ मीलतक गई। इस तरह पीछेसे खदेड़े जानेके कारण सिपाही कहीं गांवोंमें और कहीं जंगलोंमें जा छिपे। बहुतसे मारे गये, बहुतसे पकड़े गये, बहुतोंको गांववालोंने पकड़कर सेनाके हवाले किया और बहुतसे बच बचाकर दिल्लीके सिपाहियोंसे जा मिले।

इस प्रकार फीरोजपुरमें फिर शान्ति स्थापित हुई। वहांका प्रसिद्ध तोपखाना रक्षित रहा। पर लाहौरकी घटनाके मुकाबिले-में फीरोजपुरकी घटना अंग्रेज़ोंके लिये उतनी लाभदायक न थी। ४५ नं० सेनाका तोपखाना उड़ गया था। ग़दरके थोड़ेसे निशान फीरोजपुरके हृदयपर अंकित हो गये थे। पर सारा तोपखाना बच जानेसे सरकारका बहुत फायदा हुआ था। जो यह

तोपखाना सिपाहियोंके हाथ लग जाता तो दिल्लीपर फिर कब्जा करना कठिन था।

फीरोज़पुरकी तरह फिल्लौरमें भी छावनी थी। फिल्लौरका किला जालन्धर और लुधियानाके बीचमें और दिल्ली जानेवाली सड़कके पास था। किलेके तोपखानेमें हथियार और गोले बारूदका खासा संग्रह था। किलेके पास ही ३ नं० पैदल सेना थी। २४ मील दूर जालन्धरमें ८ नं० गोरी सेना थी। एक हिन्दुस्तानी रिसाला और ३६ नं० तथा ६१ नं० सेनाके सिपाही थे। ३६ और ६१ नं० सेनाओंके सिपाहियोंपर अधिकारियोंको सन्देह हो गया था। पर उस वक्त किसीने सन्देहकी चर्चा न की। ११ मईको दिल्ली और मेरठका समाचार जालन्धर होता हुआ लाहौर गया। समाचार साफ न था, इसलिये उसी दिन उसपर विचार न हुआ। दूसरे दिन सन्देह दूर हुआ। सैनिक अफसर मिलकर विचार करने लगे। यह निश्चय हुआ कि फिल्लौर किलेमें तो अंग्रेज़ ही रखे जायं। रातको, सिपाहियोंको बिना पता दिये, एक गोरी सेना फिल्लौरके लिये रवाना हुई। दूसरी बातोंमें भी सावधानी की गई। गोरी स्त्रियों और बच्चोंको आपत्तिहीन स्थानमें रक्खा गया। तोपें अपने अपने स्थानोंपर तैयार कर खड़ी कर दी गईं। हरएक अफसर आक्रमण रोकनेके लिये तैयार हो गया। जो कोई इधरसे उधर जाने लगा या जरा शोर हुआ तो ये लोग समझने लगे कि बस अब सिपाही उठे। तोपोंके पास पत्थर इकट्ठे किये गये

थे। जो सवार आगे बढ़कर तोपोंपर कब्जा करना चाहें तो इन पत्थरोंसे उनपर वार किया जाय। पर जालन्धरमें किसी तरहकी गड़बड़ न हुई। सिपाही शान्त रहे, अफसरोंकी चिन्ता भी हलकी हुई।

इधर फिल्लौरमें अंग्रेज़ सेनापतिने अपनी रक्षाका पूरा आयोजन किया। सारे किलेमें टेलीग्राफ लग गया। टेलीग्राफसे जालन्धरके समाचार लिये जाने लगे। किलेमें जो गोरे थे उन्हें रात भर तैयार रहना पड़ा। सारी रात वे किलेकी दीवारोंपर टहलते रहे। पर सिपाही शान्त थे। कहीं गदरके लक्षण न दीखे। निश्चिन्ततासे रात बीती। सवेरे ही जालन्धरकी गोरी सेना आ पहुँची। किलेमें घुसकर डेढ़ सौ गोरोंने उसकी रक्षाका भार लिया। फिल्लौरका किला गोरोंके हाथमें रहा। अधिकारियोंने सिपाहियोंके हथियार लेनेका प्रस्ताव न किया। जालन्धरके आस पास और सिपाहियोंकी छावनियां थीं। यदि वहां हथियार लिये जाते तो होशियारपुर, कांगड़ा, नूरपुर और फिल्लौरके सिपाही उनकी मदद करते। इसी खयालसे अधिकारियोंने हथियार लेना उचित न समझा। खैर, एक सिक्ख राजाने जालन्धरके निकट अंग्रेज़ोंकी विशेष सहायता की। कपूरथलाके राजा रणधीरसिंह मदद न देते तो अंग्रेज़ोंको कठिनाई होती। १८४६ में जब अंग्रेज़ोंने जालन्धर दोआबपर कब्जा किया तब कपूरथलाकी भी जमीन उसमें आ गई थी। १८५३ में रणधीरसिंह कपूरथलाके राजा हुए। उस समय उनकी अवस्था २६ वर्षकी

थी। इस छोटी अवस्थामें ही उनमें असीम कर्त्तव्य-बुद्धि और साहस था। जिस समय अंग्रेज़ोंने सहायताके लिये कपूरथला दूत भेजा उस समय महाराज रणधीरसिंह तीर्थ करने हरद्वार गये थे। तीर्थसे लौटते हुए वे ११ मईको फिल्लौर पहुँचे। इस समय उनके मंत्रीने अंग्रेज़ोंकी सहायता मांगनेकी बात कही। वे शीघ्र जालन्धर आये। उनके सब नौकर अंग्रेज़ोंके काममें लग गये। इसके अलावा राजाने अपने पांच सौ सिपाही और दो तोपें जालन्धरके डिप्टी कमिश्नरको दीं। यह सब जेलखानेकी रक्षापर लगाये गये। भारतके भिन्न भिन्न स्थानोंके राजा महाराजाओंने इसी प्रकार अंग्रेज़ोंकी सहायता की थी।

पर विस्तृत पंजाबका एक स्थान और था जहाँ सिपाहियोंकी संख्या भी खासी थी। यहाँ भी मजबूत किला और हर तरहके लड़ाईके सामानसे भरा हुआ तोपखाना था। यह स्थान पहले अफगानोंके कब्जेमें था। नौशेराके निकट खेराई नामक स्थानपर पंजाबकेसरी रणजीतसिंहके अपूर्व कौशल और सर्दार फूलासिंहके पराक्रमसे अफगान हारकर यह स्थान छोड़ गये थे। तबसे इसपर रणजीतसिंहका कब्जा था। जब सिक्खोंका पतन हुआ तब यह स्थान अंग्रेज़ोंके अधिकारमें आया। अंग्रेज़ोंने वहाँ फौजी छावनी डाली थी। रणजीतसिंहके जमानेमें एक बार फिर कब्जा करनेके लिये अफगान आये थे, पर सर्दार फूलासिंहने असीम वीरता दिखा कर इसे कब्जेमें रक्खा। पर अफगान इसे भूले न थे। इस स्थानका नाम है पेशावर।

पेशावर सिन्ध नदीसे चालीस मील और खैबरसे दस मीलके फासलेपर है। रणजीतसिंहसे पहले इसपर अफगानोंका कब्जा था। यह शहर हर तरहसे अफगान ही है। बेदाना, अंगूर और किशमिश आदि सब अफगानी मेवे इसमें पैदा होते हैं। अफगान स्त्रियोंके समान यहाँ भी पर्दा है, यहाँके निवासियोंकी शकल सूरत और शरीर अफगानोंके समान ही है। मतलब, नगरका बाहरी दृश्य और निवासियोंके आचार व्यवहार सब अफगानोंके समान ही हैं। शहर होनेके कारण अंग्रेज़ोंने पेशावरमें छावनी डाली थी। वहाँ परेटके मैदानमें छः हजार सैनिक एकत्र होते थे। अंग्रेज़ोंके लिये लाल रंगकी बारगें बनी थीं और हिन्दुस्तानियोंके लिये पीले रंगकी मिट्टीकी। शहरमें अधिकतर धर्मोन्मत्त मुसलमानोंकी बस्ती थी। बाजार उद्धत प्रकृतिवालोंसे भरा था। पेशावर इलाकामें २५०० गोरे सैनिक और १०,००० सिपाही शान्तिरक्षापर नियुक्त थे।

दूसरे स्थानोंकी तरह रक्षित होनेपर भी पेशावर अधिक विपत्तिपूर्ण था। जो सब पुरबिये सिपाही उत्तेजित होते तो थोड़ेसे गोरे उनका मार्ग नहीं रोक सकते थे। पास ही अफगान थे। जो विप्लवकी दोनों भयानक लहरें अंग्रेज़ोंकी ओर बढ़तीं तो ईश्वर ही मालिक था। पहाड़ी कौमोंके आक्रमणोंके अतिरिक्त सरकारको एक और डर था। खैबरसे पार काबुल और कंधारमें अफगानोंका वास था। यद्यपि रुपयेके कारण, अमीर दोस्त मुहम्मद अंग्रेज़ोंके मित्र थे पर यह उन्हें अच्छी तरह

याद था कि पेशावरपर एक दिन हमारा कब्जा था। नौशेराके पास भयानक लड़ाईमें सिक्खोंने उन्हें हराकर पेशावर ले लिया था। पर इस बातको दोस्त मुहम्मद भूले न थे। जो सिपाही विरोधी होते और अफगान चढ़ाई कर देते तो सब पहाड़ी कौमें उतर आतीं। इस दशामें पेशावरका बचाना अंग्रेज़ोंकी शक्तिसे बाहर हो जाता।

जून मासके मध्यमें अमृतसर यह खबर पहुंची कि सेनापति विलसन सिन्धके किनारे दो लड़ाइयोंमें जीतकर अम्बालाकी सेनासे मिले हैं। इस मिली हुई सेनाकी शक्तिसे सिपाही दबाये जायंगे। इसी समय राजा साहबदयाल नामक सिक्ख अमृतसरके अधिकारियोंसे शिष्टाचारके नातेसे मिले। अधिकारियोंने इन्हें अपनी विजयका समाचार सुनाया। पर राजा साहबने इसपर अधिक ध्यान न दिया। सर्दारने अधिकारियोंसे आग्रहके साथ पूछा कि, पेशावरकी खबर क्या है? अधिकारीने कहा कि, 'खबर अच्छी है, वहां पूर्ण शान्ति है।' सर्दारने कहा कि, 'आपकी जबानी जो कुछ सुना वही सबसे अच्छी खबर है।' इस बातसे अंग्रेज़ कर्मचारीको कुछ सन्देह हुआ, उन्होंने पूछा—"खबर क्या है?" सर्दार थोड़ी देरतक चुप रहे, फिर बोले—"जो पेशावर आपके कब्जेसे निकल गया तो पंजाब भरमें एक साथ विप्लव मचेगा।" सर्दारकी यह बात सच थी। यदि पेशावरके सिपाही अंग्रेज़ोंके विरुद्ध होते और वहां किसी तरहकी गड़बड़ होती तो पंजाब भरमें अशान्ति फैल जाती। उस समय

पेशावर विभागमें २५०० गोरे सैनिक थे। दूसरी ओर २१ नं०, २४ नं०, ४१ नं० और ५४ नं० सिपाही सेनायें थीं, सब मिलाकर ७६०० सिपाही थे। कर्नल निकलसन और मेजर एडवर्डस वहांके शासक थे। ब्रिगेडियर सिडनी काटन छावनीमें थे।

१२ मईको दिल्लीकी खबर पेशावर पहुंची। मेरठमें अंग्रेज़ मारे गये, दिल्ली सिपाहियोंके कब्जेमें चला गया। मुगल बादशाह फिर तख्तपर बैठ गये। सिपाही उनके पक्षमें हैं, मुसलमान फिर अपना राज्य जमानेके यत्नमें हैं। इस समाचारसे निकलसन और एडवर्ड्स अस्थिर हुए। सेनापति रीड और ब्रिगेडियर काटन इससे चिन्तित हुए पास ही चेम्बरलेन नामक वीर सैनिकका निवास था। ब्रिगेडियरसे सलाह करनेके लिये चेम्बर-लेनको बुलाया। वे ब्रिगेडियरके बुलानेसे फौरन पेशावर आये।

१३ मईको चेम्बरलेनके आनेके दो घंटे बाद सेनापति रीडके मकानपर बैठकर सब सलाह करने लगे। शासनविभाग और सेनाविभागके कर्मचारी मिलकर मसला हल करने लगे। यह स्थिर हुआ कि इस गड़बड़के समय शासन और सेनाविभाग-के अधिकारी एक स्थानपर रहें। सेनापति रीड सब सेनाके मालिक रहेंगे। उन्हें रावलपिंडी या और किसी स्थानपर प्रधान कमिश्नरके पास रहना होगा। लेफ्टिनेंट गवर्नर और प्रधान सेनापति एक स्थानपर रहकर एक मत और एक सलाहसे काम करेंगे। सेनाविभागके अधिकारियोंके अधिकार बढ़ा दिये गये। इस सभाकी सर्वसम्मतिके अनुसार नया अस्थायी

सैनिक दल तैयार किया गया। इसमें पूरे विश्वासी सैनिकोंके लेनेका प्रबन्ध हुआ। इस सेनाके विषयमें तय हुआ कि जहांके सिपाही जोशमें आकर अंग्रेज़ोंपर हमला करें वहीं यह स्थायी सेना जाकर उन्हें दबावे। अटकके किलेके सिपाहियोंपर सन्देह था। इस कारण उन्हें दूसरे स्थानपर भेजना निश्चित हुआ। एक विश्वासी पठान सर्दारकी अधीनतामें नदीपर पहरा देना स्थिर हुआ। और निश्चित हुआ कि जोशके समय सिपाहियोंको एक दूसरेसे न मिलने दिया जाय। इसके अतिरिक्त यह भी निश्चय हुआ कि सब रावलपिंडी चलकर सर जान लारेंससे सलाह करें। सर जान लारेंसने सब प्रस्ताव स्वीकार किये। प्रधान सेनापति एनसनके मतानुसार ब्रिगेडियर चेम्बरलेनने स्थायी सेना एकत्र की। इसके सेनापति चेम्बरलेन बने।

१६ मईको सेनापति रीड और ब्रिगेडियर चेम्बरलेन प्रधान कमिश्नरके पास रावलपिंडी गये, इसी दिन एडवर्ड्स भी वहां गये। सर जान लारेंस दूरदर्शी साथ ही सूक्ष्मबुद्धि भी थे। मोटी बुद्धिके आदमी विपत्तिके समय घबराकर अपना भी बचाव नहीं कर सकते। पर सूक्ष्मबुद्धिवाले न तो घबराते हैं और न केवल अपनी चिन्तासे अधीर होते हैं। उनकी दृष्टि सदा भविष्यपर रहती है। वे चारों ओर देखते हैं। मेरठके सेनापति ह्यूट समझ रहे थे कि जब वे मेरठमें हैं तब मेरठकी रक्षा करना ही उनका सबसे बड़ा काम है। इसीलिये पास होनेपर भी दिल्लीकी ओर उन्होंने नज़र न की। पर सर जान लारेंस पंजाबमें बैठे २ भारत

असरकी बातें सोचने लगे। धीरता, ज्ञान और बुद्धिकी प्रखरताके कारण उन्होंने सब बातोंको सोचा। वे इस विचारमें ही न रहे कि मेरा दायित्व पंजाबपर है, इसलिये पंजाबकी रक्षाकी ही बातें मुझे सोचनी चाहिये। इसी दूरदर्शिताके कारण अन्तमें वे साम्राज्यके सर्वोच्च आसनपर बैठे।

सर जान लारेंसने पहले सिक्खों और अफगानोंकी सेना तैयार की। उनके इस कामसे बहुतोंको आश्चर्य हुआ था, पर वे जरा भी न झिझके। उनका यह विश्वास हो गया था कि पुरबिये सिपाहियोंके साथ सिक्ख न मिलेंगे। अफगान और सिक्ख पहले शत्रु रह चुके हैं इसलिये सिक्ख और अफगान भी न मिलेंगे। सिक्खोंको मुगल बादशाहोंने बहुत दबाया था, न्याय अन्यायसे उन्होंने सिक्खोंके नाशके उपाय किये थे, इसलिये दिल्लीपर मुगल बादशाहका आधिपत्य सिक्खोंको अच्छा नहीं लग सकता, इसे वे समझ चुके थे। दूसरे मुगलों और अफगानोंमें भी ऐसा मेल न था। एक समय मुगलोंने काबुलपर भी अधिकार कर लिया था। उस समय अफगानोंने मुग-लोंका खून बहाया था। इसलिये अफगानोंको भी मुगल राजधानीसे सिपाहियोंको निकालनेमें आपत्ति नहीं हो सकती। इन सब बातोंको अपनी तीक्ष्ण बुद्धिसे सोच समझकर सर जान लारेंसने अफगानों और सिक्खों द्वारा अपना बल बढ़ाना चाहा। गवर्नर जनरलने भी इसका अनुमोदन किया। पहले उन्होंने थोड़े आदमियोंको सेनामें भर्ती करनेकी

आज्ञा दी। बादमें सैनिक दल बढ़ा। इस प्रकार सर लारेंसने नई सेनायें खड़ी कीं।

नई सेना तैयार करनेके साथ साथ और बातोंके भी घाट बांधे गये। पुलिसकी शक्ति बढ़ाई गई। वे पहलेसे अधिक मुस्तैदीसे काम करने लगे। पंजाबके हरएक घाट और नदीके रास्तोंपर पहरे नियत किये गये। जो आदमी साधु संन्यासी बनकर सिपाहियोंको बहकाते थे उनके पकड़नेके योग्य उपाय काममें लाये गये। खजानोंकी रक्षाका पूरा प्रबन्ध किया गया। सब प्रजाके जीवन अपने हाथ लेनेकी कोशिश की गई। दीवानी कर्म-चारियोंको अधिकार दिया गया कि जिसपर सरकारका विरोधी होनेका शक हो उसे फांसी दे दी जाय। जिनके विरुद्ध सिपाही उठे थे, जिनके स्त्री पुरुषों और बच्चोंको सिपाहियोंने मारा था वे ही जजके आसनपर बैठे। इस प्रकार इलाहाबादकी तरह सारे पंजाबमें अधिकारी तैयार हो गये और उनके हाथमें प्रजाके जीवन मरणकी सत्ता आ गई।

कहा जाता है कि दूरके विद्रोही मुसलमानोंने सिपाहियोंको सरकारके विरुद्ध खड़ा होनेके लिये चिट्ठियाँ लिखी थीं। पर सिपाहियोंकी सब चिट्ठियां खोलकर पढ़ ली जाती थीं। इन चिट्ठियोंमें लिखा था कि सरकार हिन्दू मुसलमानोंके धर्मनाश करनेपर तुली हुई है—इसी कारण गौ और सुअरकी चर्बीसे मिले कारतूस चलाये गये हैं। धार्मिक मुसलमान अपने धर्मकी रक्षाके लिये तैयार हैं। ऐसे कई पत्र आनेके कारण

अधिकारियोंको विश्वास हो गया कि विप्लव संक्रामक होता जा रहा है। जातिनाश और धर्मनाशकी आशंका बढ़ गई थी। सरकारकी असावधानी अथवा लोगोंकी अदूरदर्शितासे यह भाव गया नहीं। जिन्हें सरकारके कारण हानि पहुंची थी, जो राज्य और गौरवसे भ्रष्ट हुए थे वे और भी अधिक प्रजाको उभारने लगे। घूमनेवाले मुसाफिरोंके वेषमें, साधु सन्यासी और फकीरोंके वेषमें जगह २ उनके चर घूमने लगे। इन लोगोंके द्वारा पत्र भी भेजे गये। जिन लोगोंने यह सब पत्र लिखे थे, जिन्होंने गदरकी बढ़ती आगको और अधिक भड़काया था, वे अदूरदर्शी थे, किसी परिणामको सोचकर उन्होंने ऐसा नहीं किया था। वे मोटी बुद्धिवाले अनजान थे। उनमें जोश और सरकारके प्रति क्रोध था, उन्होंने केवल अपना क्रोध प्रगट किया था। उन्होंने उद्योग भी किया पर उसके साथ विवेक न था। वे संपूर्ण भारतको एक न कर सके, सब सिपाहियोंको सरकारके विरुद्ध भी खड़ा न कर सके और यह सब काम एक समयमें भी न कर सके। इस प्रकार उनका सब प्रयास विफल हुआ।

निकलसनने सरहदके पहाड़ी सर्दारोंसे अंग्रेज़ोंकी रक्षाके लिये सहायता मांगी। पहले सर्दारोंने सहायता देनी स्वीकार न की। सन् १८४० में अंग्रेज़ काबुलसे हार गये थे, उस समय पहाड़ी इलाकोंमें इनका बुरा हाल हुआ था, सर्दारोंको यह याद था, सर्दारोंने सोचा कि विपक्षियोंके हमलोंसे शायद कहीं

अंग्रेज़ फिर वैसे ही हार जायं, इसी विचारसे उन्होंने सहायता देना स्वीकार न किया। उन्होंने साफ लिखा कि—"पहले आप इस बातका प्रमाण दें कि आप विपक्षियोंसे अधिक शक्तिशाली हैं फिर हम आपकी मदद करेंगे।" पर निकलसन इससे घबराये नहीं। उन्होंने अपनी बुद्धि और योग्यतासे विप्लवका सामना किया।

२१ मईको कर्नल एडवर्ड्स वापिस पेशावर आये। इस दिन आकाश मेघोंसे घिरा था। काटन और निकलसनने उनका स्वागत किया। ऊपरके आकाशकी तरह उनके हृदयोंमें भी मेघ छाये हुये थे। उन मेघोंकी गहराई धीरे २ बढ़ती जाती थी। उन्हें प्रतिपल उत्तेजित सिपाहियोंके उठ खड़े होनेकी आशंका थी। इन पुरबिये सिपाहियोंको आपसमें न मिलने देनेके विचारसे ब्रिगेडियरने इन्हें भिन्न २ स्थानोंमें बांट दिया था। उनके पास गोरे सिपाही अपनी तोपोंके साथ तैनात थे। इधर सिपाही अफसरोंका ऐसा विचलित भाव देखकर शंकित हो रहे थे। मेरठ और दिल्लीके समाचार वे सुनही चुके थे। पहाड़ी महसूद, महमूद कौमें उनके कामोंको देख रही थीं। काबुलकी हारको याद करके उन्हें अंग्रेज़ोंकी शक्तिपर अधिक विश्वास न था। वे उदासीन भावसे अंग्रेज़ और सिपाही दोनोंको देख रहे थे। जो इन लोगोंको अंग्रेज़ोंसे अधिक सिपाहियोंकी ताकत दिखाई देती तो ये लोग खुद गदरमें शामिल हो जाते। इस समय वे उदासीन होनेपर भी निश्चेष्ट न थे। किसी औरकी शक्ति मालूम होनेपर काम करनेको वे तैयार थे।

२१ मईकी रातको एडवर्ड्स और निकल्सन एकही मकानमें सोये। पर सोकर भी वे निश्चिन्त न हुए। जिस समय चारों ओर शान्ति हो गई थी, सब चराचर जीव आराम कर रहे थे, उस समय इन दोनों अग्रेज़ कर्मचारियोंको गदर होनेकी चिन्ताके कारण नींद न आई थी। उनका यह विश्वास हो गया था कि भोर होनेके पहलेही गदर शुरू हो जायगा। जिस समय वे पड़े पड़े यह सोच रहे थे उसी समय हरकारेने आकर समाचार दिया कि पेशावरसे २४ मील दूर नौशेरामें, ५५ नं० सिपाही सेना सरकारके विरुद्ध हो गई। समाचार मिलते ही एडवर्ड्स और निकल्सन ब्रिगेडियरके घर पहुंचे। ब्रिगेडियरने आँखें खोलकर देखा कि दो साथी उसके सिरहाने खड़े हैं। दोनोंने ब्रिगेडियरसे कहा कि नौशेरामें ५५ नं० सेना बागी हो गई। वहां जो १० नं० रिसाला है, वह भी उनमें मिल सकता है। ऐसी दशामें सिपाहियोंके हथियार लेकर पहाड़ी कौमोंको फौजमें भर्ती करना उचित है। इस कामका पूरा होना सहज बात न थी। निकल्सन और एडवर्ड्स इसके लिये दृढ़ थे। पेशावरकी पांच सिपाही सेनाओंमेंसे चारके हथियार लेनेका निश्चय हुआ। ब्रिगेडियरने सम्मति दी। सवेरे चार सेनाओंसे हथियार लिये जाना निश्चित हुआ। बाकी एक सेना अधिक पुरानी थी इसलिये उसे रखनेका ही निश्चय किया।

देर करनेका समय न था। जिन चार सेनाओंका हथियार लेना था उनके अफसरोंको ब्रिगेडियरने बुलवाया। ब्रिगेडियरकी

आज्ञासे अफसर लोग सूर्यास्त होनेके पहले ही आ पहुंचे। एडवर्ड्स और निकल्सनके सामने ब्रिगेडियरने उनसे सेनाओंके हथियार लेनेको कहा। सुनकर अफसर लोग शान्त न रहे। उन्हें अपनी सेनाओंपर विश्वास था। उनकी सेनाएं संग्राम-भूमियोंमें अपनी वीरता दिखा चुकी थीं। वे ब्रिगेडियरके प्रस्तावका विरोध करने लगे। उनमेंसे एकने दृढ़तासे कहा कि उसके अधीन सिपाही इस अपमानको कभी चुपचाप न सहेंगे। वे निश्चय परेटके मैदानमें अपने हथियार लेनेवालोंपर हमला करेंगे और इस प्रकार गदरका सूत्रपात होगा। पेशावरके सिपाहियों-पर अफसरोंका ऐसाही विश्वास था। अफसर उनकी वीरता और स्वामिभक्तिसे प्रसन्न थे। कठिन विपत्तिके समयमें भी अपनी सेनाओंपर अविश्वास न कर सकते थे। पर एडवर्ड्स, निकल्सन और ब्रिगेडियर काटन सिपाहियोंके हथियार लेनेके पक्षमें थे। अफसरोंके आपत्ति करनेपर भी वे अपने इरादेसे न टले। जब अफसरोंने बहुत विरोध किया तब एडवर्ड्सने कहा—"इस समय सब बातोंका अधिकार ब्रिगेडियरको है।" काटननेभी यही कहा—"मैं अपने अधिकारियोंसे यह बात कहता हूं कि सिपाहि-योंके हथियार लिये जायँगे।" अफसर लोग चुप हो रहे। आज्ञाके अनुसार काम करनेके लिये चुपचाप अपने अपने स्थानको चले गये।

यह ऊपर कहा जा चुका है कि सिपाहियोंको उत्तेजनाके समय आपसमें मिलने न देनेके लिये उन्हें पृथक् पृथक् रक्खा गया था। अब निश्चय हुआ कि ब्रिगेडियर और एडवर्ड्स एक ओरसे

जायँगे और निकल्सन एक और अफसरको साथ लेकर दूसरी ओर से। दोनोंके साथ गोरी सेना होगी। इस समय सेनापति और उनके सहायकोंको चिन्ता बहुत अधिक थी। वे तरह तरहकी कल्पना करके भयानक चित्रोंका खयाल कर रहे थे। इधर सिपाहियोंके अफसरोंने अपनी अपनी सेनाको पृथक् पृथक् स्थानोंपर तैयार करके एक लाइनमें खड़ा कर दिया। सिपाहियों-ने किसी प्रकारकी उत्तेजना न दिखाकर चुपचाप अपने अफसरों-की आज्ञा मानी। जो सिपाही आज्ञा माननेमें किसी तरहकी आनाकानी करते तो गोरे सैनिक उनपर हमला कर देते। धीरे धीरे गोरी सेनाके सामने सिपाहियोंने हथियार रक्खे, किसी तरहकी उत्तेजना या अधीरताका उन्होंने परिचय न दिया। अपने अनुरक्त, विश्वासी, संग्रामभूमियोंमें जान हथेलीपर लेकर लड़ने वाले सिपाही जब चुपचाप अपने हथियार, अपना वीर वेश उतार कर रख रहे थे तब सेनाके अफसर चिन्ता और दुःखके साथ इस दृश्यको देख रहे थे। उन सेनाओंके किसी किसी अंग्रेज़ अफसरको इतना दुःख हुआ कि उसने अपनी वर्दी और अपना हथियार भी उतारकर फेंक दिया!

इस प्रकार सिपाही निरस्त्र किये गये। ब्रिगेडियर उनकी शान्ति और अफ़सरोंपर गाढ़ भक्ति देखकर प्रसन्न हुए। हथियार रखकर सिपाही बारगोंमें चले गये। बिना किसी तरहकी गड़बड़के यह बड़ा भारी काम हो गया। एडवर्ड्सने इस सम्ब-न्धमें लिखा है—"जब हम हथियार लेने गये, तब थोड़ेसे यहाँके

आदमी हमारे साथ थे। उनका चेहरा देखनेसे यह मालूम होता था मानों वे यह देखने जा रहे हैं कि देखें क्या होता है। जब हथियार लेकर हम वापिस हुए तब वे लोग बरसाती मक्खियोंकी तरह हमारे चारों ओर भिनभिनाने लगे। अब इन लोगोंको फौजोंमें भर्ती करना आसान था। पेशावरकी पहाड़ी कौमें इस प्रकार दोनोंके कामोंको देख रही थीं। जो इस समय वे अंग्रेज़ोंको किसी तरहसे कमज़ोर पातीं या उनके कामोंमें उन्हें किसी तरहका अनैक्य मालूम होता तो वे अंग्रेज़ोंपर ही हमला कर देतीं। सम्भव था कि अंग्रेज़ोंके खूनसे पेशावरकी जमीन भी तर हो जाती।

खैर, पेशावरके निरस्त्र सिपाही अपने अपने स्थानको वापिस गये पर हृदय उनका दुःखी हो गया था। जिनके लिये उन्होंने अपनी जानको जान न समझा, जिनका राज्य स्थापित करनेके लिये उन्होंने अपना खून बहाया, उन्होंने उनका ऐसा कठोर अपमान किया! सब तरहसे वे गौरवहीन हो गये थे। उनके दुःखसे जब अफसर भी दुःखी हुए और उन्होंने भी अपने हथियार डाल दिये तब सिपाहियोंको मार्मिक दुःख हुआ। शान्ति और सन्तोष उनसे बिदा हो चुका था। वे अपने भविष्यकी चिन्तासे और भी अधिक चिन्तित थे। उनकी चिन्ता थी कि शायद हथियार लेनेके बाद गोरे उनपर हमला करेंगे। इस कारण वे अस्त्रहीन पेशावरके जंगलोंमें जा छिपे, कोई कोई पड़ोसके गांवोंमें चले गये। इससे अधिकारियोंकी चिन्ता बढ़ी। पेशावरके चारों ओर पहाड़ी कौमें थीं और उन सबके पास हथियार थे। वे

हथियार अंग्रेज़ोंके समान न थे। फिर भी दूसरेकी जान लेनेके लिये काफी थे। मौकेपर इससे बड़ी विपत्तिकी सम्भवना हो सकती थी। इसलिये पेशावरके सेनापतिने सिपाहियोंकी गिरफ्तारीका हुक्म दिया। जो सिपाही पकड़े गये उनपर फौज़ी-अदालतमें मुकदमा चलाया गया। इस मुकदमेमें ५१ नं० सेनाके एक सूबेदारको फांसी दी गई। एक हवलदार और एक सिपाहीको कुछ बरसकी जेल दी गई। काटन और एडवर्ड्सको जेलकी सजा अच्छी न लगी, वे सिपाहियोंके विध्वंसको अच्छा समझते थे। यदि सम्पूर्ण पेशावर सिपाहीशून्य होता तो वे अधिक प्रसन्न होते। उस समय उन्होंने स्नेह और दयाको तो ताकपर रख दिया था। बहुत जल्द पेशावरमें इस कठोर भावका प्रादुर्भाव हुआ। जिस सूबेदार और सिपाहीको जेल दी गई थी उन्हें सबके सामने फांसी दी गई।

इस घटनाके बाद ५५ नं० सेनाके हथियार ले लेनेका प्रस्ताव हुआ। इस सेनाके सिपाही पहले नौशेरामें रहते थे। इस स्थानसे इन्हें मरदान नामक जगहपर भेजा गया। थोड़ेसे सिपाही नौशेरामें रह गये। कहा जाता है कि ५५ नं० सेनाके थोड़ेसे सिपाही अंग्रेज़ोंके खिलाफ युद्ध करनेको तैयार होकर, बाकीने अपनी मरदानकी सेनाको इत्तिला दी। इसी ५५ नं० सेनाके हथियार लेनेके लिये २३ मईकी रातको पेशावरसे एक अंग्रेज़ अफसर थोड़े गोरे सिपाहियोंके साथ मरदान भेजा गया। कर्नल हेनरी स्पोटिसवुड नामक अफसर इसके अध्यक्ष थे। यद्यपि

इन्होंने थोड़ेही दिनसे कार्यभार लिया था पर अपने अधीनोंके प्रति उनकी समवेदना थी। सरलता, सज्जनता और सदाचार-के कारण वे प्रत्येक सिपाहीके मित्र थे, अपने पुत्रकी आपत्तिके खयालसे पिताको जैसे चिन्ता होती है, वैसे ही अपने अधीन सि-पाहियोंके हथियार लिये जानेके खयालसे वे भी दुःखी थे। उनके मुखपर प्रसन्नताका भाव न था, उनका ललाट चिन्ताओंसे संकुचित था। अपनेसे बड़े अधिकारियोंको उन्होंने ऐसा न करनेके लिये लिखा। अपनी सेनाके विषयमें लिखा कि इनमेंसे कोई भी अविश्वासी नहीं है। पर फल कुछ न हुआ। पेशावरसे हथियार लेनेके लिये सेना आ गई। गोरे सिपाहियोंके आनेसे ५५ नं० सेनाके सिपाही शंकित हुए। वे २४ मईकी रातको कर्नलके पास जाकर गोरोंके आनेका कारण पूछने लगे। स्पेटिसवुडको सब कुछ मालूम था, पर उन्होंने कुछ न कहा। हिन्दुस्तानी अफ-सर असन्तोषके साथ चले गये। अब स्पेटिसवुडकी सब आशा निर्मूल हुई। अबतक वे जिनपर विश्वास करते आ रहे थे वे ही उनकी बातोंसे असन्तुष्ट हुए। दुःखके बाद दुःखसे उनका हृदय अधीर हो उठा। वे आगेका दृश्य देखनेके लिये तैयार न हुए। कर्नल स्पेटिसवुडने इसी चिन्तासे पिस्तौल भरकर आत्मघात कर लिया।

जब उनके विश्वस्त और स्नेही सेनापतिका इस प्रकार अव-सान हुआ तब ५५ नं० सेनाके सैनिक चुप न रहे। उनके प्रिय सेनापति सदाके लिये विदा हो चुके थे,उनकी आशायें भी सदाके

लिये अस्त होगई थीं। किलेकी ऊंची दीवारसे जब उन्होंने फौज-को आते देखा तब वे शान्त न रहे। गोला, बारूद, हथियार आदि जो कुछ सामने मिला वह सब लेकर वे कोहाटकी तरफ रवाना हुए। उस सेनाके केवल १२० आदमी वहाँ रहे। निकल्सन सवार पुलिसके साथ उनके पीछे भागे पर सिपाही छोटे २ दलोंमें विभक्त होकर पहाड़ी रास्ते और जंगलसे जा रहे थे। निकल्सन उनका पीछा करते रहे। इस तरह सारा दिन बीत गया। जिस गांवमें सिपाही ठहरे वहीं निकल्सन भी जा पहुंचे। बहुतसे गिरफ्तार हुए, बहुतसे मारे भी गये, बहुतसे घायल होकर जंगलमें पड़े रहे, बहुतसे कोहाट पहुंचे। उनके करीब १२० आदमी मारे गये थे, १२० पकड़े गये थे, तीन चार सौ घायल हुए थे। उन्होंने युद्ध किया था।* पर अन्तमें उन्हें भागना पड़ा। अपने साथियोंसे न्यारे होकर वे कोहाटकी ओर चले। वहाँका आरबुन्द नामक राजा बड़ा धार्मिक था। सिपाही लोगोंने राजासे धर्मके नामपर अपील की पर बूढ़े राजाने उन्हें आश्रय न दिया। यदि वे उन्हें आश्रय देते तो इतिहासकी धारा दूसरी ओर बहती। वे पहाड़ी क़ौमोंको खड़ा कर सकते थे। यदि ऐसा होता तो ब्रिटिशराज्यकी जड़ें हिल उठतीं। पर आरबुन्दने सिपाहियोंकी प्रार्थनापर ध्यान न दिया। उन्होंने सिपाहियोंको अपने राज्यमें न ठहरने देकर सिन्धतक रास्ता दिखानेके लिये पथदर्शक साथ कर दिया। इस प्रकार आश्रय न पाकर सिपाही काश्मीरकी ओर चले। काश्मीर जाने-

---

* Kaye's Sepoy War. Vol. II. P. 486 note.

के लिये हज़ारा था उसके इलाकोंमेंसे होकर जाना पड़ता है। इस ओर हज़ाराके डिप्टी कमिश्नर मेजर बिचरने तमाम रास्ते रोक दिये थे। बिचरकी आज्ञासे वहाँके जमींदार लोग हथियार लेकर रास्तोंकी हिफाजतपर खड़े हो गये थे। अभागे सिपाही अपना रास्ता इस प्रकार रुका देखकर कोहिस्तानकी ओर भागे। पर मेजर बिचरने चारों ओर इन्तजाम कर रक्खा था। वे जिस ओर जाने लगे उसी ओर उन्हें हथियारबंद आदमियोंका सामना हुआ। चारों ओर उच्च पर्वत और रास्ते सब रुके हुए थे। पहाड़ी कौमें उनकी ओर पत्थर फेंकने लगीं। बिना भोजनके पानीमें भीग २ कर उनकी बुरी दशा हुई। उनका जमादार उन्हें यह कह २ कर उत्तेजित करने लगा कि इस तरह कुत्तेकी मौत मरनेकी अपेक्षा युद्ध करके मरना अधिक अच्छा है। जब सिपाहियोंने उसकी बातपर ध्यान न दिया तब उसने दुःखी होकर आत्मघात कर लिया। फिर सब सिपाही आगे बढ़े। पर चारों ओरके रास्ते रुके हुए थे। जो थोड़ेसे आदमी बाकी बचे उन्होंने हथियार डालकर सिर झुकाया। उनमेंसे कइयोंको फांसी दी गई और कई तोपोंसे उड़ाये गये।

इस सेनाके १२० आदमी कैद हुए थे। इन्होंने आज्ञा न मानी थी पर किसीके हाथसे कोई निन्दनीय काम भी न हुआ था। यदि इन्हें भी तोपसे उड़ाया जाता तो निस्सन्देह घोर पापका काम होता। निकल्सनने इनके विषयमें लिखा था—"इस सेनाके सब अफसरोंने स्वीकार किया है कि सिक्ख लोग अन्तिम समय

तक उनकी आज्ञामें थे। इसलिये सिक्खों और जिनको नौकर हुए थोड़ा अर्सा हुआ उनको छोड़ा जाय। बाकी अपराधियोंको तोपोंसे उड़ा दिया जाय। पर कम उम्रवालोंके प्राण न लिये जायँ और जो दूसरोंके बहकावेमें आ गये थे उन्हें भी बचाया जाय।" सर जान लारेंसने इसे पसंद किया। जो सिपाही किलेमें रह गये थे उन्हें बिना तनख्वाह दिये छोड़ दिया गया। जो सिक्ख थे वे दूसरी सेनाओंमें भर्ती कर लिये गये।

इसके बाद कठोर दंड दिया जाने लगा। ५१ नं० सेनाके जिन १२ आदमियोंने सेना छोड़ी थी उन्हें ३ जूनको फांसी दी गई। १० जूनको ८७ नं० गोरी सेनाकी कवायदके समय उससे भी अधिक भयानक काम हुआ। मरदानसे १२० सिपाहियोंने अपना स्थान छोड़ा था। इनमेंसे ४० आदमी उस दिन मैदानमें तोपोंसे उड़ाये गये। इस दृश्यका सब सेनापर बड़ा प्रभाव पड़ा। पहाड़ी कौमोंको भी अंग्रेज़ोंकी शक्तिका पता लगा। दूसरी सिपाही सेनायें भी त्रस्त हुईं।

सोयाट नामक नदीके किनारे आबजाई स्थानपर ५४ नं० सेना थी। जब निकलसन ५५ नं० सेनाका पीछा कर रहे थे तब उन्हें मालूम हुआ कि एक आजनखां नामक प्रसिद्ध साहसी अफ़ग़ान ५४ नं० सेनासे मिलकर षड्यन्त्र कर रहा है। यह समाचार मिलते ही वे इस सेनाके हथियार लेनेको तैयार हुए। अवधके चले जानेसे मुसलमानोंके हृदयोंपर कड़ी चोट लगी थी। वे मुसलमान नवाबको अपना धर्मरक्षक समझते थे। उसके कैद

होनेसे वे अपने धर्मको रक्षकहीन समझने लगे थे। उनका विश्वास हो गया था कि जैसे अवधके नवाब गद्दीसे उतारे गये और कैद किये गये उसी तरह हैदराबादके नवाब भी उतारे जायँगे। कहा जाता है कि इस सम्बन्धमें भारतके मुसलमानोंने काबुलके अमीरको लिखा था *। इसपर अमीर दोस्त मुहम्मद ध्यान दें या न दें पर अफग़ानिस्थानमें यह आन्दोलन जरूर हो गया था। इसी उद्देश्यकी सिद्धिके लिये आजनखां ५४ नं० सेनासे मिला। पर ब्रिगेडियरकी दूरदर्शितासे उसकी चाल सफल न हुई। आजनखां चला गया। पीछेसे आवजाई किलेकी सेनाके हथियार ले लिये गये।

पंजाबके दूसरे मुकामोंके सिपाहियोंमें भी थोड़ा बहुत जोश आया था, पर फीरोजपुर और पेशावरके समान घटना कहीं नहीं घटी। यह पहले ही कहा जा चुका है कि जालन्धरकी सेना फिल्लौर भेज दी गई थी। इस समय ब्रिगेडियर जानस्टन जालन्धरकी सेनाके सेनापति थे। जून मासके शुरूमें अफसरोंको शक हुआ। इस समय उनमें कुछ अधिक जोश बढ़ गया था। मेरठ और दिल्लीकी खबरोंने उन्हें बेचैन कर दिया था। मेजर लेक जालन्धरके कमिश्नर थे। मेरठ और दिल्लीकी घटनाके समय वे वहां न थे। जब वे वापिस आये तब सिपाहियोंमें उन्होंने उत्तेजनाके लक्षण देखे। कमिश्नरने हथियार लेना उचित समझा। पर ब्रिगेडियरने इसमें तरह २ की आशंका प्रगट की।

* Kaye's Sepoy War. Vol II P. 496. note.

अफसरोंने भी विरोध किया। इधर सिपाहियोंका असन्तोष अधिक बढ़ चला। तमाम जालन्धर विप्लवकी लहरोंसे हिलने लगा। ७ जूनको गोरे अफसरके बंगलेमें आग लगी। इसी रातको देखते २ सारी सेना उन्मत्त हो उठी। चारों ओर भयानक शोरके साथ दलके दल लोग इधरसे उधर भागने लगे। अफसर लोग झटपट तैयार होकर परेडके मैदानमें पहुंचे। अंग्रेज़ स्त्रियाँ और बच्चे डरकर रक्षित स्थानकी ओर जाने लगे। बड़े भारी शोरसे रात्रिकी निस्तब्धता भंग हो गई थी। एक गोरी सेना और तोपोंके सामने सिपाही विद्रोह करने लगे। पर जोशमें होनेपर भी कोई निन्दनीय काम उनके हाथसे न हुआ, किसीका खून उन्होंने न किया। शायद वे जल्दीसे दिल्ली पहुंचकर अपने भाई बन्धुओंसे मिलना चाहते थे। न वे अफसरोंको मारना चाहते थे और न अंग्रेज़ स्त्री बच्चोंको। पंजाबसे अंग्रेज़ी राज्य नाश करनेकी भी उनकी प्रवृत्ति न मालूम होती थी। वे सोच रहे थे कि यहाँ रहनेसे एक न एक दिन अंग्रेज़ उनका धर्मनाश करेंगे, इसलिये यहांसे दिल्ली चले चलो। पर घटना कुछ और ही घटी। एक अंग्रेज़ सिपाहीको गोली लगी और वह वहीं मर गया। इस गड़बड़में और कई अफसर भी घायल हुए थे। किसी २ जगह बंगले भी जले और सम्पत्ति लूटी गई। यह विप्लवकी सूचना थी। हर स्थानके विप्लवका प्रारम्भ यहीं से होता है। फिर भी सिपाहियोंने अपने अफसरोंके बचानेकी कोशिश की थी। जहाँ उन्होंने अफसरोंको देखा वहीं उन्हें बचाने पहुंचे।

फिल्लौरमें ३ नं० सिपाही सेना थी। होशियारपुरमें ३३ नं० सेना थी। शायद जालन्धरके सिपाहियोंकी इच्छा इन दोनों सेनाओंको साथ लेकर दिल्ली जानेकी थी। एक सवार फिल्लौर समाचार देने गया। इन सिपाहियोंने रातको एक बजे जालन्धर-से प्रस्थान किया। ब्रिगेडियर जानस्टोनने उसी समय इनका पीछा न किया। रसदकी इन्तजारमें बहुत समय बीत गया। जब सवेरा हुआ तब ब्रिगेडियरकी आज्ञासे गोरी सेना चली। पर उस समय सिपाही बहुत दूर चले गये थे। गोरे पीछेसे गये और बहुत दूरतक जाकर वापिस आ गये। इस समय अफवाह उड़ी थी कि फिल्लौरमें शीघ्र ही विप्लव होगा। एक अंग्रेज़ अफसर दो तोपें और थोड़ी गोरी सेना लेकर रवाना हुआ, इसके साथ २ नं० पंजाबी रिसाला भी चला। फिल्लौर पहुंचकर इन्हें समाचार मिला कि अंग्रेज़ सब किलेमें हैं और विद्रोही सिपाही ४ मील दूर सतलज पार हो रहे हैं। अंग्रेज़ अफसर अपने कर्त्तव्यका निश्चय न कर सके। फिल्लौरसे सतलजका रास्ता उन्हें मालूम न था। फिल्लौरके अंग्रेज़ किलेमें छिपे थे। वे किसी रास्ता दिखानेवालेको न भेज सके। इसलिए गोरी सेना रातभर इधर उधर घूमती रही। ब्रिगेडियर जानस्टन यदि उसी समय सेना भेज देते तो कुछ काम भी होता। पर देरके कारण सब व्यर्थ गया। इधर जालन्धरके सिपाहियोंने भी सतलज पार करनेकी योजना की।

सेनाके ब्रिगेडियरने जब इस प्रकार अपने कर्त्तव्यमें शिथि-

लता दिखाई उस समय दो सिविल कर्मचारी फुर्तीके साथ इस विपत्तिके सामने हुए। जार्ज रिकसटन लुधियानाके डिप्टी कमिश्नर और थर्नटन कमिश्नर थे। थर्नटन फिल्लौरके सैनिकोंको तनख्वाह बांटने गये थे। जैसे ही इन्होंने सिपाहियोंके जानेका समाचार सुना वैसे ही घोड़ेपर वे सतलज पहुंचे और वहांका नावोंका पुल तुड़वा दिया। पुल टूट जानेके कारण सिपाही कुछ मील नदीके किनारे २ चलकर आगे उतरनेकी कोशिश करने लगे। थर्नटन जल्दीसे लुधियाना वापिस आये। आकर इन्होंने देखा कि डिप्टी कमिश्नर जालन्धरका समाचार पाकर लुधियानाका इन्तजाम कर रहे हैं। पंजाबसे जो रास्ता दिल्लीको गया है, उसीके किनारे लुधियाना है। डिप्टी कमिश्नर रिकसटनको भय था कि सिपाही दिल्ली जाते हुए लुधियानाको लूटेंगे। समय कम था। कामकी अधिकताके कारण यह और भी कम हो गया। जैसे ही डिप्टी कमिश्नरको समाचार मिला वैसे ही सिपाहियोंको भी पता लग गया। लुधियानामें जो सिपाही थे वे ६ नं० सेनाके ही थे। पहलेसे ही किले और खजानेपर इनकी नजर थी। लुधियानामें गोरी सेना न थी। इधर जालन्धर और फिल्लौरके सिपाहियोंके आनेकी पूरी आशंका थी। डिप्टी कमिश्नर ऐसा उपाय देखने लगे जिससे जालन्धरके सिपाही नदी पार न कर सकें। इस समय ४ नं० सिक्ख सेना दिल्ली जा रही थी, रास्तेमें इसने लुधियानामें डेरा किया था। लेफ्टिनेण्ट विलियम्स नामक एक अफसरने कुछ सिक्खोंको साथ लेकर सिपाहियोंकी गति रोकने-

का इरादा किया। इधर नाभाके राजाने अंग्रेज़ोंकी रक्षाके लिये दो तोपें और थोड़ेसे सवार तथा पैदल भेजे। भारतके राजाओंने हर समय और हर स्थानपर अंग्रेज़ोंकी मदद की। गंभीर क्रोधसे भारतवासियोंने जैसे एक ओर हथियार उठाया दूसरी ओर भारतीय राजाओंने वैसे ही रक्षाके लिये अपना हाथ फैलाया। यह सब सेना लेकर लुधियानाके डिप्टी कमिश्नरने सिपाहियोंके विरुद्ध यात्रा की।

नदी पार होकर डिप्टी कमिश्नर सिपाहियोंको देखनेके लिये कुछ दूर गये। वहां उन्होंने सुना कि कमिश्नर थर्नटनने पुल तोड़ दिया। इसलिये ४ मील आगे चलकर जहां नदीकी गति मन्द है वहां सिपाही पार करनेकी कोशिश कर रहे हैं। वे इस सेना और लेफ्टिनेंट विलियम्सकी मददसे सिपाहियोंकी गति रोकने आगे बढ़े। इस समय यदि ब्रिगेडियर जानस्टन अपनी गोरी सेना लेकर सिपाहियोंके पीछे जाते तो दोनों ओरके हमलोंसे वे घबरा जाते। बहुतसे किनारेपर और बहुतसे पानीमें मारे जाते, पर ब्रिगेडियरको इसका कुछ खयाल न था। इधर रातको १० बजे रिक्सटन और ले० विलियम्सको सिपाही दिखाई दिये। रास्ता बहुत ऊंचा नीचा और ऊबड़ खाबड़ था इस कारण सेनाके पहुँचनेमें देर लगी। उधर करीब १६० सिपाही नदी पार हो चुके थे। इनके साथ अंग्रेज़ी सेनाका युद्ध हुआ। अंग्रेज़ोंकी ओरसे सिक्ख सेना बहुत बहादुरी दिखाने लगी। इधर सिपाही अपने देशवासी सिक्खोंके सिर काटने लगे। इस

तरह दोनों ओर भारतवासियोंका संग्राम होने लगा। एक दिन अंग्रेज़ोंने भारतवासियोंकी सहायतासे राज्य स्थापित किया था और आज भारतवासियोंकी सहायतासे ही उसकी रक्षा की। दो घण्टेतक दोनों सेनाओंमें भयङ्कर संग्राम हुआ। अंग्रेज़ोंके साथ तोपें थीं, इन तोपोंसे वे गोले बरसाने लगे। सिपाहियोंके पास तोपें न थीं पर वे बन्दूकोंकी सहायतासे ही विपक्षियोंको निशाना बनाने लगे। जब धीरे २ चन्द्रमा उदय हुआ तब डिप्टी कमिश्नर रिक्सटन और लेफ्टिनेंट विलियम सिपाहियोंकी वीरतासे हताश हुए। नाभाकी सेना सिपाहियोंका हमला न सहकर भाग गई और सिक्ख भी थककर दम तोड़ने लगे। उनकी गोली बारूद भी समाप्त हुई। इधर सिपाही जोरसे गोलियां बरसाते हुए आगे बढ़ने लगे। कोई उपाय न देखकर डिप्टी कमिश्नर रिक्सटन और लेफ्टिनेंट विलियम्स अपनी सेनाके साथ भागे। भागकर वे अपनी छावनीमें आये।

जब अंग्रेज़ी सेना भाग खड़ी हुई तब सिपाही बड़े वेगसे लुधियानाकी ओर बढ़े। ६ जूनको दोपहरके समय वे शहरमें घुसे। किलेमें जो सिपाही सेना थी वह हमदर्दी दिखाने लगी। शहरमें जो चोर, बदमाश और डाकू थे वे सिपाहियोंके आते ही शहरवालोंको लूटने लगे। एक क्षणमें लुधियानामें ग़दर हो गया। जो काबुलसे निकाले गये थे उनमेंसे बहुतसे अंग्रेज़ कम्पनीके धनसे अपना पेट भरते थे, वे भी लुधियाना होमें थे। काश्मीरी शालोंके व्यापारी यहां आते थे। आस पासके डाकू

भी यहां जमा हुए थे, अब वे सब अंग्रेज़ोंके विरुद्ध खड़े हुए। काबुली लोग लूटनेके लिये दौड़े। काश्मीरी व्यापारियोंकी दूकानें, सरकारके गोदाम, ईसाइयोंके घर और सरकारके नौकरोंके घर लूटे जाने लगे। बहुतसे गूजर और मुसलमान एक मौलवीके कहनेसे और भी उन्मत्त हो गये। मौलवीने अंग्रेज़ोंका नाश करनेके लिये जिहाद किया। मुसलमान अंग्रेज़ोंके विरुद्ध हो गये। जेलखाना तोड़ दिया गया। जो कुछ सरकारकी चीज थी वह सब लूटी और जलाई गई। लुधियानासे सब तरहके नियम कायदे उठ गये। सब अपने अपने प्राण लेकर भागे। सिपाहियोंके पराक्रमसे लुधियानाका विध्वन्स हुआ।

जालन्धरके विद्रोही सिपाही लुधियाना आये। लुधियानाके लोग उनका स्वागत करने लगे। अंग्रेज़ प्रतिक्षण अपने जीवनका नाश समझकर ब्रिगेडियर जानस्टनकी सेनाका मार्ग देखने लगे। पर जानस्टनने समयपर सेना न भेजी। जिस रातको लुधियानाके पास सिक्खोंसे सिपाहियोंकी लड़ाई हुई थी उसी रातको गोरे सैनिक लुधियाना जानेका आग्रह कर रहे थे पर ब्रिगेडियरका कोई हुक्म न मिला। रिक्सटन पत्रपर पत्र लिखने लगे कि तोपें और फौजें भेजो। पर दिनभर सेना न आई। राततक सिपाही लुधियाना रहे, अन्तमें वे मुगल राजधानी दिल्लीकी ओर रवाना हो गये। जब गोरी सेना लुधियाना पहुंची तब वहां सिपाही न थे। उनका पीछा करना बेकार था।

ब्रिगेडियर जानस्टनकी सुस्तीसे हानि हुई थी पर सिपाहि-

योंके जल्दी दिल्लीकी ओर चल देनेसे अंग्रेज़ोंको नुकसान न पहुंचा। सिपाहियोंने कोई काम बाक़ायदा नहीं किया। जब वे जालन्धरसे लुधियाना पहुंचे तब वहां कोई गोरी सेना न थी। किलेके सिपाही उनसे हमदर्दी दिखाते थे और प्रजा स्वागत करती थी। खज़ाना उनके पैरोंके पास था, किलेने सिर झुका दिया था। वे यदि किलेपर अपनी तोपें रखकर सैनिक एकत्र करते, खज़ानेको लड़ाईके काममें लगाते तो वे लुधियानामें प्रधान हो सकते थे। अंग्रेज़ोंको उनके नाशके लिये बड़ी ताकत खर्च करनी पड़ती। पंजाबसे दिल्लीका रास्ता यदि इस प्रकार विपत्ति-पूर्ण हो जाता तो दिल्लीपर फिर अंग्रेज़ी राज्य स्थापित करना बड़ा कठिन होता। बिना दिल्लीके हाथ आये ग़दर शान्त नहीं हो सकता था। पर सौभाग्यसे सिपाहियोंमें ऐसा कोई बुद्धिमान और प्रभावशाली आदमी न था जो इन सब बातोंको सोचता। संचालकके अभावसे हो, या अदूरदर्शी होनेके कारण हो, सिपा-हियोंने भविष्यकी ओर कभी नज़र नहीं की। वे अपने देशवासि-योंसे मिलनेके लिये दिल्लीकी ओर चले। वे चारों ओरसे इकट्ठे होकर एक जगहपर आ रहे थे—इसी कारण उनकी ताकत कम हो रही थी, इससे दिल्लीके सिपाहियोंकी तादाद बढ़ी पर शक्ति न बढ़ सकी। अंग्रेज़ अपनी सुस्तीके कारण बहुत स्थानोंपर हानिमें पड़े थे। वैसे ही सिपाही संचालककी कमीसे कमज़ोर होकर अपने उद्देश्यमें निष्फल रहे।

सिपाहियोंके चले जानेपर लुधियानामें जालन्धरकी गोरी

सेना पहुंची। अब अंग्रेज़ सारा बदला लुधियानावालोंसे चुकाने लगे। दूसरे लोगोंके साथ २० काश्मीरी शाल बेचनेवालोंको फांसीपर लटका दिया गया। जिन्होंने किसी तरहसे लोगोंका जोश बढ़ाया था, वे भी फांसीपर लटकाये गये। एक दिनमें ही मुकद्दमा, फैसला और सज़ा सब कुछ समाप्त किया गया।

इसके बाद वे लुधियानाकी फौजके हथियार लेनेको तैयार हुए। जालन्धरकी गोरी सेनाके कारण डि० कमिश्नर रिकसटनने सहजमें सिपाहियोंके हथियार ले लिये। जो आसपासके गांवोंमें हथियारों सहित छिप गये थे उनको खोजा जाने लगा। सूचना द्वारा हथियार रखना जुर्म ठहराया गया। जिनके पास हथियार या लड़ाईकी कोई चीज मिली वे सजाके योग्य समझे जाने लगे। एक ओर जैसे हथियार रोके गये वैसे ही दूसरी ओर दिल्लीकी गोरी सेनाके लिये खाने पीनेका सामान भेजा जाने लगा। यमुना और सतलजके बीचके लोग जोशमें थे और सिपाहियोंके साथ उनकी हमदर्दी थी, पर नाभा, पटियाला, जींद आदिके राजा अंग्रेज़ोंके पक्षमें थे। इनकी मददसे सरकारकी चीजें दिल्लीतक पहुंचने लगीं। दिल्लीके बाहर पड़े हुए गोरे सैनिक जरूरी सामान पाकर चौगुने उत्साहित हुए।

यह पहले ही कहा जा चुका है कि मेरठ और दिल्लीकी घटनासे जब स्थान २ पर सिपाही उभरने लगे तब अधिकारियोंने निश्चय किया था कि इनके हथियार लेकर सरहदी कौमोंको फौजमें भर्ती करें। कप्तान डली नामक एक सैनिककी अधीनता-

में एक फौज बनी थी। १३ मईको यह नौशेरा पहुंची। यहांसे सेनापति काटनने इन्हें अटक जानेका हुक्म दिया। सवेरे कप्तान डेली नौशेरासे चलकर दो पहरको अटक पहुंचे। इस तरह कड़ी धूपमें चलकर इस सेनाने अटकके किलेकी हिफाजत की। १६ मईको यह अटकसे रवाना होकर १८ को रावलपिंडी पहुंची। इसी समय कप्तान डेलीको आज्ञा मिली कि इस सेनाको वे दिल्लीके उद्धारके लिये ले जायं। हुक्म मिलते ही डेली दिल्लीकी ओर चले। रास्तेमें वे लुधियाना पहुंचे। ४ जूनको सवेरे वे अम्बाला और ६ जूनको कर्नाल पहुंचे। दिल्लीसे जो अंग्रेज़ भागे थे उनमेंसे कोई कोई यहां अभी थे। उनसे डेलीकी मुलाकात हुई। इन अंग्रेज़ोंको विश्वास हो गया था कि पड़ोसके गांव अंग्रेज़ोंके दुश्मन हो गये हैं और वे मारना लूटना अच्छा समझते हैं। इन लोगोंका क्रोध इतना बढ़ गया था कि एक आदमीके जरासे अपराधपर गांव भरको उड़ा देना ये लोग अच्छा समझते थे। कप्तान डेलीका हुक्म पाकर यह सरहदी सेना गांवोंका नाश करने लगी। एकाएक हमला होनेसे बिचारे गांववाले चारों ओर भागने लगे। लूटके बाद उनके घर जलाये जाने लगे।

गांवोंका सर्वनाश करनेके कारण कप्तान डेलीको देर हुई, वे समयपर दिल्ली न पहुंच सके। अपने नाशसे हो या क्रोधसे हो, इस समय अंग्रेज़ भारतवासियोंको खूनकी प्यासी आंखोंसे देखने लगे थे। वे बदलेकी हद भी पार कर जाते थे। शायद,

हिन्दुस्तानमें कोई आदमी न रहता तो वे अपने आपको निराप-द समझते । हिन्दुस्तानियोंकी मौत उनकी दृष्टिमें कोई चीज ही न थी ।

डेलीकी पंजाबी सेना ९ जूनको दिल्ली पहुँची । पेशावरसे दिल्लीतक करीब ५२२ मीलका रास्ता २२ दिनमें तय किया गया । पर इसपर भी वे न थके । अब सिपाहियोंसे इन पंजाबियोंका मुकाबिला था ।

चौथा अध्याय

दिल्ली संग्राम—दिल्ली और उसके आस पासके स्थान—अंग्रेज़ी सेना—सेनापति बर्नार्ड—सिपाहियोंसे पुनः पुनः संग्राम—सेनापति बर्नार्डकी मृत्यु—सेनापति रीड—उनका इस्तीफा—भारतीयोंकी प्रभुभक्ति और अंग्रेज़ोंका व्यवहार—दिल्लीका राजभवन—वृद्ध बहादुर शाह।

अंग्रेज़ोंने जिस स्थानपर अपनी सेना एकत्र की थी उसका वर्णन दूसरे भागमें हो चुका है। पहली लड़ाईके बाद छोटी पहाड़ीके पास अंग्रेज़ोंने अपनी सेनाका मुकाम किया। इस स्थानके एक ओर पहाड़ी दूसरी ओर यमुना नदी थी। सामने मकानोंसे भरी दिल्ली नगरी थी। दिल्लीपर सिपाहियोंका कब्जा था। बूढ़े बादशाह बहादुरशाह शतरंजके मोहरेकी तरह बने हुए थे। वे अपने कुनबेका भविष्य सोच रहे थे। इधर अंग्रेज़ सेना मददके इन्तजारमें थी। चारों ओरसे सामान और फौजें आ रही थीं।

पुरानी छावनीसे एक रास्ता सीधा कर्नाल गया है, यह रास्ता दिल्लीके काबुली दरवाजेसे जाकर मिला है। दूसरे रास्ते दिल्लीके और दरवाजेसे जाकर मिले हैं। इन सब रास्तोंके कारण अंग्रेज़ सेनापतियोंको अपनी अपनी सेना चलानेमें बहुत

सुविधा थी। उन्हें झीलों और नहरोंसे भी मदद मिली। अंग्रेज़ सेनासे पीछेकी ओर नजफगढ़ झील नामक एक नहर थी। उससे पानीकी बहुत सहूलियत थी। यह नहर यमुनाकी नहरसे मिली थी और यमुनाकी नहर शहरके बीच होकर चांदनीचौकसे बहती थी। दिल्लीपर कब्जा करनेके लिये जो फौजें इकट्ठी हो रही थीं, उनमें अधिकतर पंजाबकी थीं। अधिकतर पंजाबपर ही भरोसा था। पंजाबके ले० गवर्नर दिल्लीकी लड़ाईका प्रबन्ध कर रहे थे। पंजाबसे दिल्लीका रास्ता सुरक्षित रक्खा गया था। छावनीसे कर्नाल और कर्नालसे पंजाबतकका रास्ता साफ था, कहीं किसी तरहका विघ्न न था। नजफगढ़की झीलसे पानी मिल रहा था। १८५६ में पानी बहुत बरसा था इस कारण झील सूखी न थी। इसके अलावा सामने एक छोटा पहाड़ था। यह क़रीब दो मील लम्बा होगा, इसकी ऊंचाई ५०—६० फीट थी। पहाड़के एक ओर एक बड़ा भारी मकान था, यह उसी समयका बना हुआ था और हिन्दूरावके बाड़ेके नामसे प्रसिद्ध था। इसमें ग्वालियरके दौलतराव सिंधियाकी स्त्री बैज़ाबाई सरकारकी पेंशनपर गुजर कर रही थी। इसके भाई श्रीजीराव घोटके भी पेंशनपर निर्वाह कर रहे थे। इन्हींके कारण मकानका नाम हिन्दूरावका बाड़ा था। श्रीजीराव अंग्रेज़ी ढंगसे रहते थे। ये बड़े बातूनी आदमी थे। कहा जाता है कि जब सन् १८३८ में लार्ड आकलैंड फीरोजपुरमें महाराज रणजीतसिंहसे मिले तब श्रीजीराव सबको पीछे ढकेलकर आप गवर्नर जनरलके सामने

हो गये। इन्हें देखकर एक सिक्खने पूछा—"आप सरकारके पेंशन खानेवाले हैं?" श्रीजीरावने कहा—"हाँ, और आप भी बहुत जल्द खाने लगेंगे।" ऐसे वाक्चतुर और विलायती वेषधारी महाराष्ट्र दिल्लीमें थे। सन् १८५७ में यह मकान खाली पड़ा था और इसे फौजके योग्य समझकर अंग्रेज़ सेनापतिने उसमें सेना रख दी थी।

हिन्दूरावके बाड़ेके पास गोलघर या फ्लैगस्टाफ था। मई मासमें दिल्लीके भागे अंग्रेज़ इसीमें टिके थे। पहाड़पर बना होनेके कारण यहाँसे सेनाकी गति अच्छी तरह देखी जाती थी। इस घर और हिन्दूरावके बाड़ेमें एक टूटीसी मसजिद थी। उसमें भी सेना जमा हो गई। इसके अलावा फौजसे दो सौ गजके फासिलेपर जयपुरके राजाका प्राचीन मान मन्दिर था, यहाँसे वे ग्रह नक्षत्रोंकी चालें देखा करते थे। बदलिकासरायकी लड़ाईके बाद सेनापति वर्नार्डने इन ऊपर कहे चारों मुकामोंपर फौजें एकत्र की थीं। हर एक सेनाके साथ तोपें थीं।

दिल्लीके चारों ओर गांव थे। जिन सड़कोंका वर्णन ऊपर किया गया है वे इन गांवोंमें होकर गई थीं। इन गांवोंमें कहीं टूटे खंडहर और कहीं रहने योग्य मकान थे। कहीं कहीं गांवोंके पास ही खेत थे। दिल्ली एक फसीलसे घिरी थी। इस फसीलकी लम्बाई करीब ७ मील और ऊंचाई २४ फीट थी। इसके अलावा २५ फीट चौड़ी और २० फीट गहरी खाई थी। खाई सूखी पड़ी थी। इस समय दिल्लीमें दिल्ली और मेरठकी पांच

फौजें थीं, एक रिसाला और एक तोपखाना था। इसके अतिरिक्त वहां फीरोजपुर, झांसी, हिसार और मथुराके सिपाही भी आ गये थे। तोपोंके लिये गोला बारूद काफी था। काश्मीरी दरवाजेकी तरफका एक मीलका हिस्सा अंग्रेजोंको तरफ था, इस हिस्सेके अतिरिक्त और हिस्सेमें सिपाही क्या कर रहे हैं सो अंग्रेजोंको मालूम न था। अंग्रेज़ी सेना कम थी इसलिये शहरके चारों ओरके दरवाजोंको वह काबूमें न कर सकती थी। दूसरे दरवाजोंसे सिपाही अच्छी तरह आ जा सकते थे। शिवाल्तोपके विजेताके सामने दिल्लीमें सिपाही चैनसे थे।

सेनापति बर्नार्डके पास तीन हजार गोरी सेना और बाईस तोपें थीं। इसके अतिरिक्त एक गोर्खा सेना और एक पंजाबसे आई हुई सेना उनके साथ थी। सिपाहियोंके मुकाबिलेपर अंग्रेज़ी सेनाकी ताकत कम थी। दिल्ली जैसे लम्बे चौड़े शहरपर यह सेना कब्जा नहीं कर सकती थो। अंग्रेज़ी सेना जैसे होशियारीके साथ अपनी फौजोंको जमाये थी वैसे ही शहरके भीतर सिपाही भी अपना व्यूह रचे हुए थे। सीजरने असभ्य गाल देशपर कब्जा करके वापिस रोम जाकर कहा था—"गया, देखा और कब्जा किया।" इस समय अंग्रेज़ोंमेंसे बहुतोंका यही ख्याल दिल्लीके विषयमें भी था। सब समझते थे कि सेनापति बर्नार्ड जायँगे, देखेंगे और कब्जा कर लेंगे। सेनापतिके पहुँचते ही मुगल राजधानीपर ब्रिटिश झण्डा लहराने लगेगा। और तो क्या, विचारशील लार्ड कैनिंग तकका यही ख्याल था। इसी

ख्यालके कारण आधा जून मास भी अभी न बीता था, अंग्रेज़ कहने लगे थे कि दिल्ली हमारे कब्जेमें आ गई, बूढ़े बादशाहको हमने क़ैद कर लिया, दिल्लीके सिपाहियोंको हमने मार डाला।

पर सेनापति बर्नार्डपर जिस कामका भार दिया गया था वह जैसा समझा जा रहा था वैसा साधारण न था। दूसरे जिसे सहज समझ रहे थे उसे ही बर्नार्ड महा कठिन समझता था। जब वह अपने खेमेसे दिल्लीकी ओर नजर करता तब दिल्लीका बड़ापन, उसकी मजबूत फसीलें, हथियारों और गोले बारूदका जखीरा, सबसे अधिक उसकी रक्षा करनेवाली बहु संख्यक वीर सिपाही सेनायें उन्हें दीखती थीं। उसी समय बहुतसे सैनिकोंने कहा था कि यदि बदलिकासरायसे हम सिपाहियोंका पीछा करते तो वे छिन्न भिन्न हो जाते। यों सहजमें मुगल राजधानीपर कब्जा हो जाता। पर जब सेनापतिने ऐसा नहीं किया तब कौन कह सकता है, फल क्या होता? सेनापतिने अपनी जवाबदेही समझकर सब काम किया था। वे सुस्तीमें दिल्लीके निकट नहीं पड़े रहे। दिल्लीकी मजबूतीके विचारसे वे विचलित भी न थे। वे दिल्लीपर कब्जा करने आये थे, चाहे जैसे हो दिल्ली उन्ह लेनी थी। उन्हें यह भी पता था कि थोड़ी सी सेना लेकर आगे बढ़नेसे फल बुरा भी हो सकता है। उस समय अदूरदर्शी कहकर उसकी सब निन्दा करेंगे। सेनाके कुछ युवकोंने एक प्रस्ताव भी रक्खा।

सेनामें एक नवयुवक अंग्रेज एंजिनियर था। उसने नकशा

बनाकर सुगमतासे दिल्लीपर कब्जा करनेकी एक स्कीम सेनापतिके सामने रक्खी। दो एक और सैनिक अफसरोंसे सलाह करनेके बाद सेनापतिने उसे और विशद करनेको कहा। उन्होंने निश्चय किया कि १२ जून को ३॥ बजे पहाड़के पासवाले लाहौरी और काबुली दोनों दरवाजोंको बारूदसे उड़ा दिया जाय। उसी समय दो सेना शहरमें घुसें। घुसते ही दोनों सेनायें दक्षिणकी फसीलोंपर रक्खी हुई सब तोपोंपर कब्जा करें। और बाकी सेना चांदनीचौक होती हुई राजभवनकी ओर जाय। यह फौज राजभवनको चारों ओरसे घेर ले। चार युवकोंने दिल्लीपर हमलेकी यह योजना निश्चित की। चारोंने अपनी स्कीमपर दस्तखत किये। सेनापतिने इसे पसंद किया, शीघ्र ही इसके अनुसार काम करनेकी आज्ञा दी गई। जिन सैनिकोंको यह काम दिया गया उन्हें अच्छी तरह समझा दिया गया। जिन दोनों दरवाजोंसे शहरमें घुसना था उनकी ओर सैनिक आधी रातको धीरे २ छिपकर आगे बढ़ने लगे। पर जैसा नकशा बनाया गया था उसके अनुसार काम न हुआ। ब्रिगेडियर ग्रेवृसकी अधीनतामें तीन सौ गोरोंके आनेका निश्चय था पर मौकेपर ग्रेवृसकी सेना न पहुंची। उनके न आनेसे दूसरे सैनिक हताश हुए। ग्रेवृसको सेनापतिने लिखित आज्ञा न दी थी, सब बातें जबानी थीं। रातको ११ बजे ग्रेवृस सेनापतिसे मिले तब सेनापतिने पूछा कि शहरपर कब्जा करनेमें आपकी क्या राय है। ब्रिगेडियरने कहा कि इस तरह कब्जा हो भी सकता है पर इस

छोटी सी सेनासे रक्षा करना कठिन होगा। ब्रिगेडियरकी बातसे सेनापति विचलित हुए। उन्होंने अपना हुक्म वापिस लिया। इस प्रकार यह योजना व्यर्थ गई। जिन युवकोंने नकशा तैयार किया था, वे बहुत नाराज हुए। सैनिक अफसरोंकी रायमें यह उचित ही किया गया। ब्रिगेडियरने भी दूरदर्शिताका परिचय दिया।

जिस गोरे एंजिनियरने पहलेकी योजना तैयारकी थी उसने दो दिन बाद फिर एक नया नकशा तैयार किया। सेनापति एन्सन-की मौतके बाद सेनापति रीड प्रधान सेनापति बनकर रावलपिंडीसे दिल्ली आये थे। १५ जूनको रीडने इस प्रस्तावपर विचार करनेके लिये सैनिकसभाको बुलाया। सेनापति रीडके खेमेमें सब बैठ-कर विचार करने लगे। करीब २ सबकी राय यह हुई कि जब तक कमसे कम एक हजार सहायक सैनिक और न आ जायं तबतक हमला करना अकलमंदी नहीं है। दिल्लीके चारों ओर मजबूत दीवार हैं और दीवारके भीतर सिपाही हैं। हर एक दर-वाजेपर तोपें लगी हैं। इधर अंग्रेज़ी फौज कम और लड़ाईका सामान उससे भी कम है। हमला करके कामयाब हों तो हर तरहसे अच्छा, पर जो सफलता न हो तो सर्वनाश है ही। हमला करके फतह कर लिया तब तो ठीक, पर जो न कर सके तो जीते बचना कठिन हो जायगा। इस एंजिनियर युवकने जो दुबारा हमलेकी योजना तैयार की थी, वह इस प्रकार थी। बारूदसे लाहौरी और काबुली दरवाज़े एक साथ उड़ाये जायँ।

काश्मीरी दरवाजेपर जो सिपाही सेना है उसपर हमारी सेना गोलियाँ बरसावे। बिगुलकी आवाजके साथ दोनों उड़े हुए दरवाजोंसे हमारी सेना जोरसे आगे बढ़े और विपक्षियोंपर हमला करे। हमला करते हुए कोई दल किसी जगहपर रुके तो उसकी मददके लिये पीछेसे तोपें आगे कर दी जायँ। सेनाके अफसर लोग इस प्रणालीसे शहरपर हमला करनेमें आशंका करने लगे। उनके मतानुसार जबतक सेना न आवे तबतक इस कामसे दूर रहना ही उचित मालूम हुआ पर सिविल कर्म-चारी इससे सहमत न थे। कमिश्नर ग्रिथेड साहब भी वहाँ थे, उनकी रायमें बिना देर किये दिल्लीपर हमला होना चाहिए था। वे कहने लगे कि जितनी ही देर की जायगी उतने ही वे उत्साहित होंगे। जबतक दिल्लीपर हमारा कब्जा नहीं होता तबतक और जगह विद्रोह शान्त नहीं हो सकता। इस तरह-की युक्तियाँ दिखाकर कमिश्नर साहब हमला करनेको सलाह देने लगे। इस दिन कोई निश्चय न हुआ। सैनिक अफसर चले गये।

दूसरे दिन फिर सैनिक सभा विचार करने बैठी। ब्रगेडि-यर विलसन और प्रधान सेनापति रीड धावा करने विरुद्ध हो गये। वे कहने लगे कि अगर शहरपर धावा किया तो जितने सैनिक हमारे पास हैं सबको कामपर लगाना होगा। इससे छावनियाँ पीछेसे वैसे ही पड़ी रहेंगी। अगर सैनिक हमला करते हुए नगरमें पहुँच भी जायँ तब भी इन्हें बड़ी भारी हानि

उठानी पड़ेगी। ऐसी हालतमें धावा न करके सहायक सेनाके आनेका इन्तज़ार किया जाय। दो प्रधान सेनापतियोंका इस दलीलसे हमलेका इरादा मुल्तवी रहा। जिस युवक अंग्रेज़ने नकशा बनाया था वह इससे भी न माना। दो तीन दिन बाद उसने कहा कि यदि दिल्लीपर जल्दीसे कब्जा न किया गया तो सिपाही अंग्रेज़ी ताकतको क्षीण समझेंगे। इस अर्सेमें वे अपनी रक्षाका उचित प्रबन्ध कर लेंगे फिर उनका जीतना और भी कठिन हो जायगा। पर उसकी इस बातका भी कुछ असर न हुआ। बिना सहायक सेनाके हमला करना उचित न समझा गया।

जो अधिकारी दिल्लीपर अधिकार करनेके पक्षमें थे वे कहने लगे कि अगर बद्लिकासरायकी लड़ाईके बाद ही हमला करते हुए शहरमें घुस जाते तो सहजमें दिल्लीपर अधिकार हो जाता। उस समय हमला करनेवाली गोरी सेनाके दूत-विभागमें हडसन नामक अफसर काम करते थे। उन्होंने कहा कि उस वक्त शहर-में ७००० सिपाही थे। दूसरी ओर हमारा साथ देनेवाली २००० सेना थी। बड़ी कोशिश और होशियारीसे काम किया जाता तो इस सेनासे विद्रोहियोंको हरा सकते थे पर यह भी मुमकिन था कि सिपाहियोंका हमला एक साथ होता। ऐसी हालतमें हमारी सेना फिर नहीं बच सकती थी।

इस प्रकार अंग्रेज़ सेनापति सहायक सेनाकी इन्तजारमें रहे। गर्मीकी अधिकताके कारण उनकी सेनामें बीमारी शुरू

हो गई। गोरी सेनामें हैजा शुरू हो गया, अस्पताल रोगियोंसे भर गया। इधर चारों ओरसे सिपाही इकट्ठे हो होकर दिल्ली आने लगे। रोहतककी ६० नं० पैदल सेना अंग्रेज़ोंके खिलाफ़ हो गई थी। यह १३ जूनको दिल्ली चली आई। जलालाबादके प्रसिद्ध संग्राममें जिन गोलंदाजोंने अफगानोंके मुँह फेर दिये थे वे अपनी तोपें लिये हुए अंग्रेज़ोंके विरुद्ध हो गये।

१९ जूनको नसीराबादके उक्त सिपाही सूर्य डूबनेसे कुछ पहले ही तोपें चढ़ाकर अग्रेज़ोंपर गोले बरसाने लगे। अंग्रेज़ इनके हमलेसे घबरा उठे। धीरे २ रात हो गई। अंग्रेज़ोंको यह खयाल न रहा कि हमारे आदमी किस ओर हैं और दुश्मन किस ओर। यह भूल करके अपने ही आदमियोंपर गोले फेंकने लगे। थोड़ी देर बाद तोपें बंद हुई। अंग्रेज़ोंकी ओरके २० मरे और ७७ घायल हुए। पंजाबी सेनाके कप्तान डेली भी घायल हो गये। ब्रिगेडियर ग्रान्टने इस मौकेपर सेनाका संचालन किया था। कुछ देशी सैनिक यदि उन्हें न बचाते तो वे भी घायल हो जाते।

१९ जूनको एकाएक हमला हो जानेसे अंग्रेज़ सेनापति बहुत चिन्तित हुए। पंजाबके ले० गवर्नर उनके प्रधान संचालक थे। इस समय गवर्नर जनरलसे उनका सरोकार न था। पंजाबसे दिल्लीका रास्ता साफ था। अंग्रेज़ प्रतिक्षण पंजाबसे सहायक सेनाके आनेकी बाट जोह रहे थे। वे दिल्ली घेरने आये थे पर एक तरहसे खुद ही घिर गये थे। दिल्लीके सिपाहियोंके कामोंमें

वे किसी तरहका विघ्न नहीं डाल सकते थे। दूसरे स्थानोंसे जो सिपाही दिल्ली आते थे उनका रास्ता भी वे न रोक सकते थे। वे तादादमें भी कम और लड़ाईके सामानमें भी कम थे। २२ जूनको ८५० सैनिक पांच तोपोंके साथ उनके पास पहुंचे। इससे उनकी कुछ ताकत बढ़ी पर सिपाहियोंकी शक्ति इससे भी अधिक बढ़ गई थी। क्योंकि जालन्धर और फिल्लौरसे ६ नं० रिसाला, ३ नं०, ३६ नं० और ६१ नं० पैदल सेनायें दिल्ली आकर सिपाहियोंसे मिल गईं।

२० और २१ जूनके दिन शान्तिसे बीते। इन दोनों दिनोंमें सिपाहियोंने अंग्रेज़ छावनियोंपर किसी तरहका हमला न किया। २१ जूनको रविवार था। अंग्रेज़ोंने ध्यान उपासनामें यह समय बिताया। पलासीके संग्रामका सौवां वार्षिक उत्सव आ रहा था। सन् १७५७ की २३ जूनको मीरमदन और मोहनलालके पतनके साथ अभागे सिराजुद्दौलाका भाग्य गिरा था। अंग्रेज़ोंने इस दिन अपने साम्राज्यकी नींव रक्खी थी। उसके ठीक सौ बरसके बाद भारतमें गदर हुआ जिसमें अंग्रेज़ोंकी दुर्दशा-का अन्त न रहा। दिल्लीके अंग्रेज़ोंने सोचा कि इस दिन उन्हें कठोर विपत्तिका सामना करना होगा। इसलिये पहले दिन प्रार्थनाके लिये एकत्र होकर उन्होंने अपने लिये मंगलकामना की। सिपाहियों और सर्वसाधारणको भड़काकर उत्तेजक बनाने-वालोंकी कमी न थी। मुल्ला, मौलवी, साधु, संन्यासी, ब्राह्मण पंडित सब श्रेणीके आदमी इसमें सहायक थे। यह अफवाह

पहले हीसे उड़ रही थी कि भविष्यवाणी हुई है कि अंग्रेज़ोंका राज्य सौ बरस रहेगा। २३ जूनको सौ बरस पूरे होंगे—इस दिन अंग्रेज़ नहीं रह सकते। हर एक सिपाही इस २३ जूनकी ओर देख रहा था। हिन्दू मुसलमान एक साथ थे। इनकी उद्दीपनापूर्ण वक्तृताओंसे भंग पी पीकर सिपाही अपने आपको बलि करनेके लिये तैयार थे।

२३ जूनका सूर्य निकला—चारों ओर धूप फैली, अंग्रेज़ोंकी जो आशंका थी वह सत्य हुई। इस दिन अंग्रेज़ी राज्यको जमे सौ बरस हुए थे। इसी दिन दूजका चन्द्रमा दीखा था। उत्साह-से उत्साहित होकर सिपाही लाहौरी दरवाजेसे अंग्रेजोंपर हमला करनेके लिये बड़े जोरसे आगे बढ़े। रास्ता रोकनेके लिये अंग्रेज़ सैनिक पहलेहीसे तैयार थे। नजफगढ़ झीलपर एक पुल था। सिपाहियोंने इस पुलपरसे तोपें ले जाकर अंग्रेज़ोंपर पीछेसे हमलेका इरादा किया था। पर अंग्रेज़ सैनिकोंने यह पुल पहले ही तोड़ दिया था। इसलिये सिपाही उस ओर न बढ़ सके। वे सब्ज़ीमंडी पहुँचकर अंग्रेज़ी सेनाके दांये बाजूपर हमला करने लगे। उनका उत्साह बढ़ गया था, शक्ति और साहस पूर्ण था। बड़े जोरके हमलेसे उन्होंने हिन्दूरावके बाड़ेपर धावा करके अंग्रेज़ोंको घबरा दिया। दोपहरको उनकी तोपें गोलेपर गोला फेंकने लगीं। पंजाबसे जो ८५० पंजाबी सैनिक आये थे वे लड़ाईके लिये तैयार हुए। ६० नं० गोरी सेना और गोर्खा सेना बड़ी मजबूतीसे लड़ रही थीं, पर प्रधान सेनापति रीडने तमाम

मैदान देखकर यह अच्छी तरह समझ लिया कि जबतक मदद-के लिये और सेना न होगी तबतक सिपाहियोंको जीतना असम्भव है। उसी समय दूसरी सहायक सेना भेजी गई। दिन भर जमकर गोला चला, बंदूकोंका घमासान युद्ध हुआ। शाम हुई, सिपाही अपनी २ तोपें लेकर वापिस दिल्ली चले आये। यह लड़ाई ११ घंटे हुई।* सिपाहियोंकी तोपोंने गजबके गोले बरसाये। इस दिन सूर्य भी बड़ी तेजीसे तपा था। सेनापति रीडने इस लड़ाईके विषयमें लिखा था—"सिपाहियोंने करीब १२ बजे मेरे रक्षित स्थानपर हमला किया। कोई सेना उनके साथ पराक्रम और साहससे न लड़ सकी। वे बार बार ६० नं० गोरी सेना, पंजाबी सेना और मेरी सेनापर धावा करने लगे। मेरा खयाल था कि इस लड़ाईमें हमें हारना पड़ेगा। शहरपर चढ़ी हुई लम्बी मारकी तोपों तथा सिपाहियोंकी लाई हुई तोपोंकी मार और बंदूकोंकी झड़ीसे हमारी सेनाओंमें नियम न था।"† बिना जीतके सिपाही अन्तमें चले गये थे पर वे जिस वीरता और साहससे लड़े थे वह सेनापतिके ऊपरके वर्णनसे मालूम होता है।

पलासीका सौवां वार्षिकोत्सव समाप्त हुआ। सिपाहियोंने सौ वर्ष बाद जो कुछ होना सोचा था, वह व्यर्थ हुआ। भविष्य-वादियोंकी वाणी सफल न हुई। सिपाहियोंको सफलता प्राप्त

* Cave Brown's Punjab and Delhi. Vol 1. P. 351.
† Kaye's Sepoy War. Vol 11. P. 555.

न हुई। २३ जूनके बाद फिर अंग्रेज़ी सेनामें शान्ति हो गई। भिन्न २ नदियां जैसे भिन्न २ स्थानोंसे आकर बड़ी नदीसे मिलती हैं उसी प्रकार भिन्न २ स्थानोंकी सेनायें भिन्न २ जगहोंसे आकर दिल्लीमें सिपाहियोंसे मिलने लगीं। जालन्धर आदिकी सेनायें पहले ही आ चुकी थीं अब बरेलीकी सेना दिल्लीके सिपाहियोंसे आ मिली।

दूसरी ओर सर जान लारैंस चुप न थे। वे बर्नार्डकी सहायताके लिये पंजाबसे सिक्ख और गोरी फौजें तथा तोपें भेजने लगे। इससे पहले ही एक गोरी फौज आ चुकी थी। २४ जूनको चेम्बरलेन एडजूटैंटका काम सम्भालने दिल्ली आये। उनके आनेसे दिल्लीकी अंग्रेज़ी सेनामें प्रसन्नता हुई। हडसनने लिखा है—"अब चेम्बरलेन आ गये, वे अकेले ही एक हजारके बराबर हैं।*" चेम्बरलेनके आनेसे ब्रिटिश सेनामें इसी प्रकारकी आशाका संचार हुआ था। धीरे २ और सेनापति भी बर्नार्डकी सहायताके लिये आ पहुंचे। रुड़की एंजिनियरिंग कालिजके प्रिंसिपल बर्ड्सवर्थ स्मिथ सब यन्त्रोंके साथ आये। उन्होंने एंजिनियरीका ही सारा काम किया। २३ जूनको कामयाब न होनेपर भी सिपाही हतोत्साह न थे। जब कर्नल स्मिथ आये तब फिर दिल्लीपर हमला करनेका प्रस्ताव होने लगा। सारे नक्शे बनाये गये, हमलेके लिये जिन सेनाओंको आगे रखना था वे तैयार रहीं।

* Hodson's Twelve years Soldier's life in India. P. 216.

हमलेका समाचार बहुत ही गुप्त रक्खा गया। सब कुछ ठीक-ठाक हो जानेपर सेनापति बर्नार्डको मालूम हुआ कि बरेलीसे आये हुए चार हजार सिपाही बखतखांके सेनापतित्वमें उनपर धावा करनेवाले हैं। सवेरे तीन बजे अन्धेरेमें गोरे सिपाही हमलाके लिये फसीलोंके पासतक चले गये थे, पर इस समाचारसे फिर हमलेका विचार छोड़ना पड़ा। इस समय कर्नालके रास्तेसे अंग्रेज़ोंके पास गाड़ियोंमें लदा रुपया आ रहा था। सिपाहियोंने इस रुपयेको लेनेके लिये कोशिश की पर वे कामयाब न हुए। बखतखां अपनी तोपोंके साथ वापिस दिल्ली चले गये। अब अंग्रेज़ोंने अपने रास्तेकी रक्षापर ध्यान दिया। उन्होंने यमुना और नजफगढ़की झीलका पुल तोड़ दिया जिससे कोई आ न सके। पर वे इसी नहरके एक दूसरे पुल तथा यमुनाके एक और पुलको न तोड़ सके। इसी पुलसे भिन्न २ स्थानोंके उत्तेजित सिपाही दिल्ली आते थे। इसलिये सिपाहियोंने इसकी हिफ़ाजत कर रक्खी थी।

पंजाबसे सेनापति बर्नार्डकी मददके लिये सेना आई थी, पर इसे वे काफ़ी न समझते थे। वे अपनी हालतको अच्छी तरह समझते थे। उनकी सेना कम थी और लड़ाईका सामान भी कम था। आक्रमण करनेकी तरह २ की तरकीबें थीं पर सेना और सामानकी कमीका कोई उपाय न था। इसी कारण वे युद्धके लिये आगे न बढ़ते थे। बहुतसे उनसे नाराज भी हो गये थे। जो नौजवान जोशमें आकर धावा करनेकी सलाह देते थे उनका

कहना अनुभवी सेनापति न मानते थे। अपने सेनापतियोंको कायरोंकी तरह पड़ा देखकर उनका विश्वास उठता जा रहा था। पर सेनापति उनकी तरह जल्दबाज न थे। वे हरएक काम विचार करके करते थे। वे जानते थे कि किसी विषयमें जो जरा सी भी गलती हो गई तो फिर ठिकाना लगना कठिन होगा। सेनापति बर्नार्ड सबके प्रति समदर्शी थे, तरह २ की गड़बड़ीमें भी वे शान्तिसे विचार कर सकते थे। वे सैनिकोंको लड़ाईके समय उत्साह देते, बीमारीके समय उनकी शुश्रूषा करते, घब-राहटके समय धैर्य देते थे। हडसन एक बार बीमार थे। रातमें आंख खुलनेपर उन्होंने देखा कि सेनापति बर्नार्ड उनकी शुश्रूषा कर रहे हैं। पर ऐसा सदय सेनापति अधिक समय न टिक सका। ५ जुलाईको दस बजे उन्हें हैजा हुआ और शामको ५ बजते २ मृत्यु हो गई। उत्साही और कर्मठ सेनापतिका अव-सान हो गया।

सेनापति मर गये। दिल्लीपर हमला न हुआ। सिपाही शह-रसे बाहर निकल २ कर अंग्रेज़ी सेनापर हमला कर करके उसकी तादाद घटाने लगे। इस आपत्तिके समयमें सेनापति रीडने सेना संचालनका भार लिया। फिर शहरपर धावा करनेका प्रस्ताव रक्खा गया, सेना न आनेके कारण फिर संकल्प त्याग दिया गया। प्रधान सेनापति रीड भी बीमार हो गये। अपने कामसे इस्तीफा देकर ये १७ जुलाईको अम्बाला चले गये। उनके बाद सेनापति विलसन प्रधान बने।

अंग्रेज़ जिस समय दिल्लीपर कब्ज़ा करनेमें असमर्थ थे, जिस समय वे सहायक सेनाका रास्ता देख रहे थे। तब इंग्लैंण्डमें अधिकारियोंके सामने तरह२के दृश्य उदय हो रहे थे। उनका खयाल था कि दिल्लीपर बहुत जल्द कब्ज़ा होगा। जो फौजी ताकतसे नहीं तो दुर्भिक्षके कारण दिल्ली तबाह हो जानी चाहिये। बोर्डके सभापतिने पार्लिमेंटमें यही बात कही थी। ग़दरके कारण अंग्रेज़ भारतमें कैसे तबाह हुए थे यह शायद कम्पनीके डाइरेक्टरोंको मालूम न था। अंग्रेज़ चारों ओरसे विपत्तिमें फंस गये थे तब भी इंग्लैण्ड वाले सोच रहे थे कि यह आपत्ति शीघ्र ही दूर हो जायगी। पर उनका कोई भी विचार पूरा न हुआ। एक महीनेसे अंग्रेज़ सेनापति दिल्लीके सामने पड़े थे पर वे कुछ भी न कर सके। इस अर्सेमें बहुतसे सैनिक बीमार हो २ कर अस्पतालमें जा पड़े थे। चारों ओर शोर हो गया कि मुग़ल बादशाहकी शक्ति अक्षय है, अंग्रेज़ उनका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। इससे एक तो हरएक स्थानकी प्रजाको अंग्रेज़ोंकी ताकतपर विश्वास न रहा, दूसरे हरएक स्थानके विद्रोही सिपाही दिल्लीमें आकर आश्रय लेने लगे।

जब झांसी, राजपूताना, पंजाब और पश्चिमोत्तर प्रदेशके सिपाही दिल्लीकी ओर आ रहे थे तब विलसन सेनापति बने। सेनापति रीडके इस्तीफासे तीन दिन पहले सिपाहियोंने हिन्दूरावके बाड़ेपर धावा किया था। इस लड़ाईमें अंग्रेज़ोंके २० मरे और २०० घायल हुए। एडजूटेंट जनरल चेम्बरलेनको ऐसी

चोट लगी कि उन्हें ६ हफ्तेतक खाटपर पड़े रहना पड़ा। जब सेनापति विलसन प्रधान बने तब सेनामें निराशा और अविश्वास फैल रहा था, सब उदास थे। दो सेनापति मर चुके थे। तीसरे बीमार होकर चले गये थे। एडजूटैंट जनरल और कार्टर मास्टर घायल पड़े थे। अंग्रेज़ी सेनामें एक तो हैजेसे आदमी बीमार हो गये थे, दूसरे सिपाहियोंके हमलोंसे और भी कम हो गये थे। बार २ शहरपर धावेका प्रस्ताव रक्खा जाता था, पर साथ ही पुराने अफसर विरोध करते थे। इधर सिपाही बार २ धावा करते थे। एक महीनेसे अधिक पड़े २ हो गया पर कुछ भी फल न हुआ। छः हफ्तोंमें सिपाहियोंने कोई बीससे अधिक बार धावे किये। गोरी सेना चौबीसों घंटे तैयार रहती थी। उन्हें न दिनको आराम था न रातको। वे जैसे दिनको कमर कसे रहते थे वैसे रातको भी बिगुलकी आवाज सुनते ही आगे बढ़ते हुए सिपाहियोंको रोकनेके लिये जाते थे। दिनके बाद रात और रातके बाद दिन होता था, पर शान्ति न थी। दिल्लीके सिपाहियोंका उत्साह और उद्यम बढ़ता जाता था, वे बार २ अंग्रेज़ी सेनाका व्यूह तोड़नेको आगे आते थे। लड़ाईमें वे साहस और वीरताका परिचय देते थे। गोरे सैनिक लड़ाईमें जिस वीरताका परिचय देते थे, उससे भी अधिक वीरतासे सिपाही आगे बढ़कर धावा करते और उन्हें चौंका देते थे। इस समय सिपाही गोलियोंपर गोलियां खाकर भी आगे बढ़कर जैसी बहादुरीसे हमला करते थे वह कवियों द्वारा वर्णन करने योग्य है।

बराबर निष्फल रहनेके कारण अंग्रेज़ सेनापतिकी चिन्ता बढ़ी। वे बराबर वीरताके साथ सामना करके भी जब सफल न हुए तब अधिक खिन्न हो गये। इधर कड़ी गर्मीके बाद बरसात शुरू हुई। पानीसे उनके तम्बू और कपड़े भीगने लगे। जुलाई मासके बीचमें सेनापति विलसनने सोचा कि इस हालतमें विपक्षियोंके सामने टिकना कठिन है। सिपाहियोंकी तादाद जैसी बढ़ती चली जा रही थी उससे सेनापति अपनी रक्षाके लिये चिन्तित हुए।

यह पहले कहा जा चुका है कि शहरपर हमला करनेका प्रस्ताव सेनापतियोंने पास न किया था। जबतक काफ़ी सेना और सामान न आवे तबतक शहर लेना मुल्तबी किया गया था। इसके बाद इस जगहसे हटनेका प्रस्ताव आया। सेनापति बर्नार्डकी मौतसे पहले ही यह प्रस्ताव आया था। कमिश्नरने इस समय देखा कि चारों ओरसे विद्रोही सिपाही मुग़ल राजधानीमें चले आ रहे हैं, इनके सामने हमारी थोड़ी सेना कभी न टिक सकेगी। अबतक दिल्लीसे बाहर पड़े रहे, पर दिल्लीपर धावा न कर सके। सिपाहियोंके हमले वे ज़रूर रोकते हैं पर इससे लाभ कुछ नहीं। इससे न सिपाहियोंका उत्साह ही कम होता है और न दिल्ली ही उनके हाथसे निकलती है। यदि वे इस स्थानसे हटकर धावेकी तैयारी करें तो और भी अच्छा हो सकता है। यह देखकर कमिश्नरने सेनाके हटानेका प्रस्ताव किया, इसी समय विलसन सेनापति बने। जब इस प्रस्तावपर बहस हो रही थी तब प्रधान एंजिनियर

स्मिथने कहा कि हम हर तरह पंजाबकी मददपर अवलम्बित हैं और पंजाबका रास्ता साफ है। जो हम यहांसे अपनी सेना उठावेंगे तो शायद पंजाबका रास्ता रुक जायगा और जो ऐसा हुआ तो फिर हम अपने आपको बचानेमें भी कमजोर होंगे। लोग यही समझेंगे कि सिपाहियोंने अंग्रेज़ोंको दिल्लीसे भगा दिया। दिल्लीपर मुगल बादशाहका कब्जा है, अंग्रेज़ उसे ले नहीं सकते। इधर हमारे सैनिक वैसे ही सबल हैं, खानेकी भी कमी नहीं है, ऐसी हालतमें यहांसे हटना उचित नहीं। यदि मृत्युका विकट दृश्य हमारे चारों ओर हो तब भी अपनी सम्मान रक्षाके लिये हमें जगह न छोड़नी चाहिये। दिल्लीपर कब्जा करनेके लिये उसके सामने रहना ही उचित है। सेनापति विलसनने यह बात मान ली और अंग्रेज़ी सेना वहीं पड़ी रही।

विलसनके सेनापति बननेके एक सप्ताहके भीतर सिपाहियोंने दांये और बांये भागपर हमला किया। २३ जुलाईको फिर वे काश्मीरी दरवाजेसे बाहर निकलकर अंग्रेज़ी सेनाको बन्दी करनेकी कोशिश करने लगे। पर अन्तमें कामयाब न होकर वे फसीलोंकी ओर चले गये। अंग्रेज़ी सेना उनके पीछे भागी। इस तरह पीछा करनेके कारण बहुत बार उन्हें हानि उठानी पड़ी थी, इस बार भी वही हुआ। बहुतसे योग्य सैनिक घायल हुए। बहुतसे मर गये। सिपाहियोंका ऐसा कुछ नुकसान न हुआ। वे सब तोपें लेकर शहरमें घुस गये। सारा जुलाई मास इसी प्रकार बीत गया। सिपाहियोंके बार

बार हमला करनेपर भी उन्होंने अपना स्थान न छोड़ा। ३० जुलाईको सेनापति विलसनने पश्चिमोत्तर प्रदेशके ले० गवर्नर कालविन साहबको पत्र लिखा—"सिपाहियोंके हमलोंको रोकनेकी दृढ़ प्रतिज्ञा है, चाहे जैसे हो अन्ततक अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनी ही होगी। उनकी तादाद बहुत अधिक है, वे हमारे व्यूहको तोड़कर हमें छिन्न भिन्न कर सकते हैं, पर हमारे सैनिक अपनी जगहपर रहकर ही शरीर त्यागेंगे। यह खुशीकी बात है कि दुश्मनोंमें कोई योग्य सेनापति नहीं है, उनमें कोई नियम भी नहीं और सुना है कि उनमें आपसकी फूट भी शुरू हो गई है। निकल .नकी देख भालमें पंजाबसे सेना आ रही है। जो हम उनके आनेतक टिके रहे तो कोई डरकी बात नहीं है।" यहाँ यह कहना अवश्यक है कि कालविन साहब भी दिल्लीसे सेना हटानेके विरोधी थे।

इस प्रकार बार २ हमला होनेपर भी अंग्रेज़ी सेनामें प्रसन्नता थी। प्रसन्नतासे सैनिक घोड़ोंपर चढ़कर इधर उधर सैर करते, क्रिकेट, और फुटबाल खेलते, और आपसमें बातें करके चित्त प्रसन्न करते। शामको मनोहर बाजा सुनकर चित्त प्रसन्न करते। जो घायल हो गये थे, उन्हें भी डोलियोंमें बैठाकर शामको मैदानमें लाया जाता। वे संगीतके साथ ताज़ी हवा खाकर प्रसन्न होते। गोर्खा सेना और सरहदी कौमोंकी फौजोंने इस समय बड़ी वीरता दिखाई थी। इसीलिये गोरोंमें और उनमें मित्रता हो गई थी। सब बराबर बैठकर सिगरेट पीते, एक

दूसरेकी भाषा अच्छी तरह न समझनेपर भी बातें करते। संग्राममें जो भारतवासी घायल हुए थे उनकी सहनशक्ति असीम थी। बहुतोंको बहुत कड़ी चोट आई थी, पर वे सारा कष्ट शांतिसे सह रहे थे। एककी हड्डियोंमें गोली घुस गयी थी फिर भी वह साथियोंके पास बैठकर हुक्का पी रहा था। साथियोंने घावके विषयमें पूछा तब उसने हंसकर कहा "कुछ भी नहीं, एक धक्का लगा है, कल फिर भी लडूंगा।" दूसरे दिन इसकी मौत हो गई। इस प्रकार वीरताको हंसी खुशीमें एक महीना बीत गया।

अंग्रेजोंकी सेना कम होनेपर भी साहस और वीरतामें बढ़कर थी। महाराज रणजीतसिंहने जिन सिक्खोंको फरासीसी सेनापति रखकर लड़ाईकी शिक्षा दिलाई थी, जो सुबरांव और चीलियांवालामें अपनी वीरतासे अंग्रेज़ोंके दाँत खट्टे कर चुके थे, वे सिक्ख भी दिल्लीके सामने पड़े थे। लार्ड लारेंसने इन सब रणनिपुण खालसोंको भेजा था। ये लोग एक दिन अपनी जन्मभूमिके लिये लड़े थे पर इस समय सब भूल गये थे। मंत्रमोहितकी तरह अब वे अंग्रेज़ोंके साथ थे। अंग्रेज़ी सेना शराबकी आदी है। सिक्ख भी इसके अभ्यासी हैं। जब परिश्रमके बाद शरीर और मन शिथिल होता है तब वे शराबके द्वारा अपनी शिथिलता दूर करते हैं। बरसातका मौका था। इस समय अंग्रेज़ी सेनाके कपड़े, खेमे और शरीर गीले हो जाते थे। इसलिये वे शराब पीते थे। सेनापतिने इसके रोकनेकी

चेष्टा न की, इसलिये सेनामें अन्धाधुन्ध शराब उड़ने लगी। जब लड़ाईसे जरा अवकाश मिलता तब सैनिक दूसरे स्थानोंके समाचार जाननेको व्यग्र होते थे। इस समय कानपुरके अंग्रेज़ घिरे हुए थे। लखनऊमें विद्रोही सिपाहियोंका मजमा था। मध्य भारतका राजपूताना और पश्चिमोत्तर प्रदेशके हरएक नगरमें अशान्ति थी। उन सब स्थानोंके समाचार जाननेको सैनिक उत्सुक थे। पर इतने दूरके स्थानोंके समाचार मिलने सहज न थे। रेलें न थीं, तार सब काट दिये गये थे। गवर्नर जनरल कलकत्तामें थे। कलकत्तासे दिल्लीका कोई सम्बन्ध न था। कलकत्तामें क्या हो रहा है यह दिल्लीवालोंको पता न था। यह पहले ही कहा जा चुका है कि केवल पंजाबपर ही भरोसा था। पंजाबी सिक्खों और सरहदियोंकी वीरतापर ही उनकी विजयकी आशा थी। पर साथ ही कानपुर और लखनऊके कारण वे चिन्तित थे। ह्वीलर और लारेंसकी विपत्ति ही इस समय विचारका विषय था। इसी समय उन्हें खबर दी गई कि ह्वीलरने कानपुरके सब सिपाहियोंको मार दिया। फिर उन्हें खबर मिली कि कानपुरके सेनापति दिल्लीपर चढ़ाई करने आ रहे हैं। इस समय कलकत्तासे सीधे समाचार न आते थे। कलकत्तासे बम्बई, बम्बईसे मुलतान लाहौर होते हुए दिल्ली पहुंचते थे। पर ये समाचार इतने घूम फिरकर भी असत्य होते थे। झूठी खबरें केवल सिपाहियोंमें ही नहीं, बल्कि अंग्रेज़ी सेनामें भी फैलती थीं। अंग्रेज़ी सेनामें इस समय खबर उड़ी

कि दिल्लीकी खबरसे लंडनके लोग बड़े जोशमें आये और उन्होंने ईस्ट इण्डिया कम्पनीके डाइरेक्टरोंसे कहा कि बहुत जल्द इन्तजाम करो। पर डाइरेकृर जल्द इन्तजाम न कर सके इसलिये लोगोंने उनका दफ्तर जला दिया।

इस तरह अनेक समाचार आने लगे पर वे सब न थे। कानपुरमें बड़ी फजीहतके बाद सब अंग्रेज़ और सेनापति मारे गये। लखनऊमें सर हेनरी लारेंस बुरी तरहसे घायल होकर मरे। यह सत्य खबरें जब दिल्लीको अंग्रेज़ सेनामें पहुचीं तब वे दुःखी हुए। पंजाबमें जैसे सर जान लारेंस थे वैसे ही संयुक्त प्रदेशमें सर हेनरी लारेंस थे। सब अंग्रेज़ इन दोनों भाइयोंको बड़ीश्रद्धाकी दृष्टिसे देखते थे। उनके मरने और कानपुरके हत्याकांडकी खबरोंसे सब दुखी हुए। जहाँ जहाँ अंग्रेज़ोंकी बस्तियाँ थीं जहाँ जहाँ गोरी फौजें थीं उन सब स्थानोंपर इस समाचारसे दुःख, शोक और विषाद छा गया। सम्पूर्ण अंग्रेज़ी अमलदारीमें अंग्रेज़ोंको शोक हुआ। सर हेनरी लारेंस बड़े ही योग्य और अंग्रेज़ोंके सच्चे मित्र थे। विदेशमें ऐसे सहायकको खोकर सब हताश हुए।

इसी कारण अंग्रेज़ सब भारतवासियोंको क्रोध और द्वेषकी दृष्टिसे देखने लगे थे। इसमें सन्देह नहीं कि सब भारतवासी या भारतकी सब कौमें अंग्रेज़ोंके खिलाफ न खड़ी हुई थीं। केवल संयुक्त प्रदेश आगरा और अवध इलाकाकी पुरबिया पल्टनें बिगड़ी थीं, उन्होंने ही यह कुहराम मचाया था, पर अंग्रेज़ सब भारतवासियोंको कोप-दृष्टिसे देखने लगे थे। सफेद आदमी

काले आदमियोंको इस समय समूल नाश करना चाहते थे। दिल्लीकी अंग्रेज़ी सेनामें भी यह द्वेष देखा गया। पांडेके नामसे अंग्रेज़ोंकी तेवरियाँ बदल जातीं, आँखें लाल हो जातीं और वे खून करनेपर आमादा हो जाते थे। पुरबिया पल्टनोंमें ब्राह्मण क्षत्रिय थे और उनमें पांडे तिवारी आदि होते थे। इसी कारण पांडेका नाम अंग्रेज़ोंको ऐसा हो गया था जैसे खूनी सांड़को लाल कपड़ा। चिढ़कर उन्होंने दिल्लीका नाम पांडेपुरी रक्खा था। पांडे और उनके भाइयोंने जरूर हथियार उठाये थे पर पांडेके देश-वासियोंने अंग्रेज़ोंका कुछ न बिगाड़ा था। बल्कि सारे इतिहास-की आलोचना करनेपर मालूम होगा कि सब भारतवासियोंने अंग्रेज़ोंकी मदद की पर लड़ाई करते अंग्रेज़ यही सोच रहे थे कि हम सब भारतवासियोंके खिलाफ संग्राम कर रहे हैं। वे सब हिन्दुस्तानियोंको बेईमान समझते और घृणाकी दृष्टिसे देखते थे। पर उन्हीं अंग्रेज़ोंके कंधेसे कंधा भिड़ाये भारतवासी विद्रोहियोंसे लड़ रहे थे, अंग्रेज़ोंसे अधिक कष्ट भोगकर अंग्रेज़ोंके राज्य जमानेमें मदद कर रहे थे, सैकड़ों नौकर उनके सभी कामोंमें लगे थे, हज़ारों हिन्दुस्तानी सैकड़ों मीलोंसे उनके लिये खुराक ला रहे थे, हिन्दुस्तानी राजा अपने हज़ारों आद-मियोंसे उनकी सहायता कर रहे थे ; फिर भी अंग्रेज़ोंमें हिन्दु-स्तानियोंके प्रति द्वेष था, वे सब भारतवासियोंको घृणाकी दृष्टि-से देखते थे। भारतवासियोंने कभी यह नहीं समझा कि हम अंग्रेज़ोंके विरुद्ध लड़ रहे हैं, भारतकी एक कौमको छोड़कर

बाक़ी और कोई उनके विरुद्ध न थीं। यदि दुर्भाग्यसे उस समय और कौमें विरुद्ध होतीं तो ठिकाना लगना ही कठिन था। अंग्रेज़ी सेनाने वीरता दिखाई इसमें सन्देह नहीं, पर यदि भारतीय सेनायें उनकी पीठपर न होतीं तो उनके सफल होनेकी आशा न थी। गदरके जमानेके इतिहास जिन लोगोंने लिखे हैं, उनमेंसे एक सहृदय अंग्रेज़ने लिखा है कि एक एक अंग्रेज़की देख भालके लिये दस दस हिन्दुस्तानी थे। गोलंदाजोंमें हिन्दुस्तानी चौगुने थे, सवारोंमें दूने। घोड़ोंको दाना देनेवाले, तोपोंको लाने ले जानेवाले, रोगियोंकी सेवा करनेवाले, खाना पकानेवाले, सब हिन्दुस्तानी थे। दिल्लीके लड़ाईके वर्णनमें एक लेखकने लिखा है—"एक बार मैं अपनी सब तोपें वापिस ला रहा था। गोले बरसाकर मैंने सिपाहियोंको आगे बढ़नेसे रोका था। जो घायल हो गये थे उन्हें गाड़ियोंमें बैठाकर वापिस अस्पताल भेज रहा था। मेरे एक भारतवासी तोप ले जानेवालेके पैरमें गोली लगी थी। गोलीसे घुटनेके नीचेकी हड्डी टूट गई थी। जो घोड़े तोप खींचते थे उनपर यह आदमी बैठा था। मैंने पास जाकर तोप रोकनेको कहा, उसे उतारना चाहा। उसने कहा—'कुछ परवा नहीं साहब।' मैंने जबर्दस्ती हाथ पकड़कर उसे घोड़ेसे उतारा और डोलीमें बैठाकर अस्पताल भेजा। जो मैं न उतारता तो वह घोड़ेपर ही रहता। हमारे साथी भारतवासी ऐसे मजबूत, तेजस्वी और वीर थे।*

* Kaye's Sepoy War, Vol II. P. 604 note.

थोड़ीसी तनख्वाहके बदलेमें इन्होंने इस प्रकार अपने प्राण दिये। इन्होंने किसी नृशंस भावका परिचय न दिया, वीरव्रतसे वे विचलित न हुए, अपने देश, धर्म और जातिवालोंके विरुद्ध लड़ कर उन्होंने फिरसे अंग्रेज़ी राज्य स्थापित किया। उन्होंने ग़दरको सारे भारतका ग़दर कभी नहीं समझा।

पर अंग्रेज़ इन प्रभुभक्त, विश्वासी और स्वार्थत्यागी भारतीयोंके साथ कैसा व्यवहार करते थे? मामूली, बहुत ही थोड़ी तनख्वाहके बदलेमें जो अपनी जानें खोकर भी अंग्रेज़ोंकी सेवा करते थे अंग्रेज़ उनके साथ कैसा बर्ताव करते थे इस विषयका ऐतिहासिक वर्णन बड़ा ही मर्मस्पर्शी और हृदयभेदी है। भारतवासियोंको अंग्रेज़ आदरकी दृष्टिसे कभी नहीं देखते थे, उनके साथ भला बर्ताव नहीं करते थे। भारतवासी विपत्तिसे न डरकर, दुःखोंसे न घबराकर, विपक्षियोंके डरसे कातर न होकर, जीवनकी ममता त्यागकर जिस प्रकार अंग्रेज़ोंका काम करते थे, अंग्रेज़ यदि उनसे मीठी तरहसे हँस बोलकर काम लेते तो भी मनुष्यत्वकी रक्षा होती। पर हँसना बोलना तो दूर रहा वे भारतवासियोंको कुत्ता समझते थे। वे चाहे जैसे हों, आदमीकी सूरतवाले कुत्तोंके नाशको ही अपना कल्याण समझते थे। कोई भारतवासी उनसे चाहे जैसी सज्जनताका व्यवहार करे पर वे उसे जंगली जानवरकी तरह मारनेके योग्य ही समझते थे। भारतवासी नौकर बदलेमें अंग्रेज़ोंसे सदा कड़ा और रूखा व्यवहार ही पाते थे। दिल्लीकी सेनाके भारतीय नौकरोंपर इसी

तरहका अत्याचार होता था। बावर्चीखानेके लड़कोंपर भोजन पहुंचानेका भार था। जब विपक्षियोंकी गोलियां बरसती होतीं तब भी उन्हें यह काम करना पड़ता था। पर अंग्रेज़ोंको उनके इस त्यागपर किसी तरहकी समवेदना न थी, वे उन्हें फटकारते, मारते और धिक्कारते थे। 'के' साहबने इसका वर्णन इस प्रकार किया है—"निरन्तर युद्ध और हत्याके कारण हमारे आदमी ऐसे निर्दय हो गये थे कि वे भारतवासियोंके जीवन कुत्ते बिल्ली-के बराबर भी न समझते थे। सेनापति और अफसर लोग न उन्हें उपदेश देते और न उनके दोष दूर करते। उनके काम आदमीको चौंकानेवाले होते थे। उस समय भारतवासियोंपर अंग्रेज़ जैसा क्रोध प्रगट करते थे उसे यूरोपियन शायद ही मानें। जो भारतवासी बड़े विश्वासके साथ काम कर रहे थे, उनपर भी कठोरता होती थी। हमारे आदमी उनको मारते और उनकी दुर्दशा करते थे। तोपोंपर तैनात गोरे लड़ाईके मौकेपर, पानी पिलानेके लिये भिश्तियोंको अपने पास पकड़कर रखते। गोलों-की मारसे बहुतसे भिश्ती मारे गये। इनपर सबसे अधिक दया होनी चाहिये थी। साईस, घसियारे, डोली उठानेवाले आदि हमारा काम करते हुए घायल होते थे। ये लोग महीनों गर्मी बरसातमें खुले मैदान हमारे साथ पड़े रहते थे। जो घायल थे उन्हें भी छाया नसीब न होती थी—डाक्टर उन्हें दो गज केनविस भी न देते थे। दिल्लीके अधिकांश निवासी हमारा भला चाहते थे। पर सबको मारनेकी घोषणा की गई थी। हमारे बच्चेतक

खूनके लिए प्यासे हो गये थे। वे कहते सुने जाते थे कि तमाम अर्दली और तमाम पुरुषोंको गोलीसे मारा जाय।"* जिनके सदय व्यवहार और सहानुभूतिसे अंग्रेज़ोंकी प्राणरक्षा हो रही थी, जिनकी सहायतासे संग्राममें उनकी विजय होना संभव था उन्हींके साथ अंग्रेज़ोंका यह व्यवहार था। शान्तिके समय उद्धत अंग्रेज़ अपना औद्धत्य दिखा सकते थे, पर वह समय चला गया था। चारों ओर अशान्ति, विप्लव और अराजकताकी धूम थी। हर स्थानपर अंग्रेज़ोंका जीवन सन्देहमें था। केवल भारतवासियों-के विश्वासपर ही उनका जीवन था। समय बदल गया था पर उनकी आदत न बदली थी। एक इतिहासलेखकने लिखा था—"वह शान्तिका समय न था, पर हम समयके साथ न बदले। हमारी प्रकृति लोहेके समान कठोर थी कि कड़ी आंच खाकर भी मुलायम न हुई। हम ऐसे उद्धत, असहिष्णु और अविवेकी थे कि हमने यह भी न देखा कि जिन्हें हम घृणा करते थे वे ही हमारी रक्षा कर रहे थे, जिस विपत्ति और संकटमें दूसरे निस्तेज हो जाते हैं उसीमें हमारी जाति कठोर और दृढ़तासम्पन्न थी। मनुष्यकी विचारशक्ति जितनी काम कर सकती है, उससे यही मालूम होता है कि कठोरता और असहिष्णुताके कारण हमारा नाश हो सकता था। पर इसी कारण हम नाश होनेसे बचे। इसी कारण हमारे विपक्षी झुके, उनको विश्वास हो गया था कि जबतक एक भी सफेद चमड़ीवाला जीता रहेगा तबतक वह भारतमें अपना

* Kaye's Sepoy War. Vol II. P. 605 note.

राज्य स्थिर करनेसे बाज न आवेगा। हमारी कमजोरीकी हालतमें भी इसी शक्तिने हमें खड़ा रक्खा।"*

सहृदय लेखकके ये शब्द अनुपयुक्त नहीं हैं। सब प्रकारकी दृढ़ता मनुष्यको सब प्रकारसे अजेय बना देती है। पर अंग्रेज़ अपने अधीनोंको छोड़कर औरोंपर अपने अजेय गुणका परिचय दे सकते थे। जब समयमें अपनी शक्ति नष्ट हो गई हो, जीवन सन्देहमें हो, क्षमता भी न रह गयी हो, तब केवल दृढ़ता ही मनुष्यको स्थिर रख सकती है। पर दृढ़ता और निर्दयतामें बड़ा अन्तर है। दुश्मनके हमलेके समय या घोर आपत्तिके समय धीरता और सहिष्णुताके साथ अपनी शक्ति प्रगट करनेका नाम दृढ़ता है। शक्तिशाली दुश्मन सहायता पाकर बार २ हमला करता है। हरएक हमलेमें उसका बल बढ़ता जाता है। अपनी ओरके बहुतसे मरते और घायल होते जाते हैं, ऐसे अवसरपर भी दुश्मनके सामने सिर न झुकाना, इसे ही दृढ़ता कह सकते हैं। पर जो सिवा अपनी जातिके और सबको द्वेषकी दृष्टिसे देखें, जो उनका उपकार करें उनसे सदय व्यवहार करना भी पाप समझें तथा उपकारीको पग पगपर दुःख दें, अपमान करें वे दृढ़ताके गुणसे भूषित नहीं हो सकते, वे वीर नहीं। उस समय अंग्रेज़ोंने दृढ़ताके स्थानपर निर्दयताका नीच परिचय दिया था। भारतवासियोंको वे नीच समझते थे।

उस समय बहुतसे अंग्रेज़ ऐसे खूनी खूंखार प्रकृतिके बन

* Kaye's Sepoy War. Vol 11. P. 605.

गये थे कि उनके विचारमें सारे भारतके आदमियोंको एक सिरे-से दूसरे सिरेतक मारकर, इस देशको खाली करा लेना ही अच्छा मालूम होता था। एक अफसरने मेरठसे लिखा था कि, गोरी सेना जब कानपुर होकर गई तब जिस किसीको उसने देखा उसीको मारा था।* एक अफसरने और भी लिखा था—"हमारी सेना जब दिल्लीमें घुसेगी, तब सब दिल्लीवाले मारे जायँगे। कोई अफसर इस हत्याको न रोकेगा।"† जो गोरी सेना दिल्लीपर कब्जा करने आई थी उसे पग २ पर कठिनाइयों-का सामना करना पड़ा था। बरसातके पानीमें भीगते २ कोई न कोई तोपके गोलेसे रोज मरता था। हैजेका जोर बढ़ गया था, रोज बीमार होते और मरते थे। इस प्रकार कष्ट, विपत्ति और बाधासे वे हिन्दुस्तानियोंपर दांत पीसते थे। सम्पूर्ण भारतको मनुष्यहीन करनेका उनका संकल्प दृढ़ होता जाता था। इसी कारण वे किसीके साथ मनुष्यत्वका व्यवहार नहीं करते थे। किसीको अनुग्रहकी दृष्टिसे नहीं देखते थे। वे सभी भारत-वासियोंके खूनके प्यासे बन गये थे। सर जान लारेंसने कहा था—"भारतवासियोंसे सहायता न पानेके कारण अर्थात् प्रबल गर्मीमें नौकरोंके अभावके कारण यूरोपियन रोज मर रहे हैं।" § सेवा करनेवाले भारतवासी नौकरोंको गोरे कभी संगीनोंसे

---

* Martin's Indian Empire. Vol II. P· 436.

† Ibid. Vol II P· 436.

§ Ibid Vol II. P· 436.

कभी गोलियोंसे मार डालते थे। सेनापति विलसनने आज्ञा प्रचारित की थी—"सेनाके बहुतसे नौकर गोरोंकी गोली और संगीनोंसे मारे गये। ऐसी बेरहमीसे सेनाके सारे नियम टूट जायंगे। नौकरोंमें भय फैलेगा, वे काम छोड़कर भाग जायँगे। बहुतसे भागनेका इरादा कर रहे हैं।"* क्रोध और उत्तेजनाके कारण यूरोपियनोंमें भले बुरेके सोचनेका ज्ञान ही न था। एक अधीन जातिको अपने विरुद्ध उठते देखकर वे ऐसे क्रोधित हुए थे कि अपनी सेवा करनेवाले नौकरोंकी ही जान ले लेते थे। पर अंग्रेजोंकी ऐसी उत्तेजना और ऐसे निर्दय व्यवहारके अवसरपर भी भारतवासी अपने कर्त्तव्यसे न हटे, इन्होंने अपने दयाधर्मका त्याग न किया। अंग्रेज़ खून बहाते थे भारतवासी उनकी सेवा करके, सहायता करके सन्तुष्ट करते थे। मनुष्यघातक कठोर प्रकृतिके पास सदय कोमल प्रकृतिका उदय हुआ था। अंग्रेज़ जिन भारतवासियोंको समूल नाश करना चाहते थे उन भारतीयोंकी दयाका पार न था। एक घटनाका यहां वर्णन किया जाता है। जब गुड़गांवेंके सिपाही उत्तेजित हो उठे तब वहां एक मेम अपने छोटे बच्चेके साथ बड़ी विपत्तिमें पड़ी। पर पासके गांववालोंने उसे छिपा लिया। इसको तीन महीनेतक उन्होंने अपने घरमें रक्खा, खाने पहननेको दिया। सिपाहियोंने बहुत तरहके भय दिखाये, अन्तमें वे मेम और उसके बच्चेको निकाल देनेवालेको सौ रुपये इनाम भी देनेको तैयार हुए।

* Martin's Indian Empire. Vol II. P.436.

पर रुपये लेकर कोई इस शरणागत स्त्रीको घातकोंके हाथ सौंपनेको राजी न हुआ। अन्तमें एक बूढ़ेने बच्चेको अपने कन्धेपर चढ़ाकर मेमको साथ ले उन्हें दिल्लीकी गोरी सेनामें छोड़ दिया। उस मेमने दयालु ग्रामीणोंकी अपार दयाका उल्लेख किया है।

इस समय एक ऐसी घटना घटी जिससे दिल्लीकी अंग्रेज़ी सेनामें और भी अधिक भयका संचार हुआ। पन्द्रहवीं सदीमें जब अंग्रेज़ोंने फ्रांसपर चढ़ाई की थी तब एक सत्रह सालकी लड़की सेना लेकर लड़ी थी। उसका नाम 'जोन आफ आर्क' था। जोनने अंग्रेज़ी सेनाके छक्के छुड़ा दिये थे। अन्तमें इसे पकड़कर अंग्रेज़ोंने आगमें जलाया। गदरके मौकेपर एक मुसलमान लड़कीने घोड़ेपर बैठकर, सेना लेकर अंग्रेज़ी छावनी-पर धावा किया। बड़ा विकट संग्राम हुआ। मुसलमान सेना इसके आगे बढ़कर जोश दिलानेसे बड़ी वीरतासे लड़ी। अंग्रेज़ों-की बड़ी हानि हुई। अन्तमें घेरेमें आकर यह पकड़ी गई। पहले तो सेनापति विलसनने इसे छोड़ना उचित समझा पर जब देखा कि इससे मुसलमान सिपाहियोंका जोश बेतरह बढ़ता है, तब उन्होंने उसे कैद करके अम्बाला भेज दिया।* इस प्रकार गदरके मौकेपर जोन आफ आर्कके उदयसे अंग्रेज़ घबरा गये थे।

इस मौकेपर दिल्लीके सिपाहियों और बादशाहकी हालतका वर्णन करना जरूरी है। वृद्ध बहादुरशाह भारत-सम्राट्के सम्मा-नसे सम्मानित किये गये थे। उनके नाम से बड़े बड़े फर्मान

* Hodson's Twelve years in India P. 250.

निकलते थे, तरह तरहके संभव असंभव प्रस्ताव दिल्लीकी प्रजामें फैलाये जाते थे, उनके नामसे दरबारमें सेनापति, उमराव लोग बैठकर लड़ाईकी स्कीमें बनाते थे। सब कुछ बादशाहके नामपर किया जाता था पर वास्तवमें उनमें किसी तरहकी ताकत न थी। एक तो उनकी आयु बहुत अधिक थी, वे अच्छी तरह चल फिर भी नहीं सकते थे, दूसरे, उत्तेजित सिपाहियोंको वे अपने काबूमें नहीं ला सके। सिपाहियोंके विपरीत काम करनेको उनमें शक्ति न थी, शहरके जोशीले मुसलमानोंको भी वे शान्त न कर सके। ज्योतिषी और मौलवी उनके सामने जाकर तारीखें बताते थे कि फलां दिन अंग्रेज़का नाश हो जायगा। बादशाह सुनते थे। उनके महल (किले) में एक समय एक आदमी भी नहीं जा सकता था, पर इस समय उनका महल सब सिपाहियोंका आरामगाह बना हुआ था। कहीं बारूद गोलेका खजाना बनाया गया था और कहीं सिपाहियोंके खेलने और चित्त बहलानेका मैदान निकाल लिया गया था। इस तरह बूढ़े बादशाह किलेके एक कोनेमें पड़े थे, सिपाहियोंने तमाम किलेपर कब्जा कर रक्खा था। अंग्रेज़ी सेना थोड़ी थी पर वह एक सेनापतिकी आज्ञाके अनुसार काम करती थी, यहाँ सिपाहियोंमें किसीकी सम्मति किसीसे न मिलती थी और सब अपनी अपनी सम्मतिके अनुसार काम चाहते थे। इनका सच्चा संचालक कोई न था। कोई इनका नेता बनकर काम न कर सकता था। सब बूढ़े बादशाहके नामपर काम करते

थे। पर आज उनकी ओरसे जो हुक्म निकलता था, शामको ही उसके विपरीत कार्य होता था, आज जो निश्चय किया जाता था, कलही उसके विपरीत होता था। मुसलमान और हिन्दुओंमें अन्ततक मित्रता न रही। मुसलमान गोहत्या करने लगे, इसी कारण हिन्दू जोशमें आगये। इस तरहकी गड़बड़ दिनमें कई कई बार होती थी। महाजनोंकी धन सम्पत्ति निरापद न थी। सिपाहियोंकी लूटनेकी आदत ऐसी बढ़ गई थी कि दूकानदार लोग अकसर दूकानें बंद रखते थे। वे बादशाहसे पुकार करते, पर बादशाह सिपाहियोंका कुछ न कर सकते थे। बादशाहका नाम था, पर सिपाही दिल्लीके मालिक थे। आगराकी जेलके सारे कैदी दिल्ली आ गये थे, इनके आनेसे और भी अधिक अशान्ति बढ़ गई। जो सिपाही घायल होते उनकी सेवा शुश्रूषा या दवाका कोई प्रबन्ध न था। घाव खुले रहते थे, जिनके भीतर गोलियाँ घुस जातीं उनके निकालनेके न औजार थे और न किसीको यह विद्या आती ही थी। मरहमपट्टीका भी प्रबन्ध न था। इस प्रकार बिना चिकित्साके, जो घायल होते वे अभागे चीखते और मौतका रास्ता देखते थे। बरेलीकी गोलंदाज सेनाके सूबेदार बखतखां सेनापति बने थे। इनकी अवस्था ६० बरसकी थी—लम्बाई छः फुट और मुटाई और भी अधिक थी। चालीस बरसतक इन्होंने सरकारकी नौकरी की थी। घोड़ेपर चढ़नेका अच्छा अभ्यास न होनेपर भी फौजी कामोंमें ये होशियार थे।* यह लम्बा

* Cooper's Crisis in the Punjab P. 201

चौड़ा और सबसे अधिक अवस्थावाला आदमी सिपाहियोंका सेनापति होनेपर भी सबपर अपना आतंक न बैठा सका। नीमचसे जो सब सिपाही दिल्ली आये थे उन्होंने बखतखांको सेनापति माननेसे ही इनकार कर दिया। इधर घाउसखां नामक एक और सेनाध्यक्ष बखतखांका विरोधी बना। सेनापति सर्दारसिंहकी सेना दो दिनतक पानीमें भीगती रही पर कोई प्रबन्ध न किया गया। इसलिये ये भी बखतखांके विरोधी हो गये। इस प्रकार किलेके भीतर बैठे बैठे सेनापतियोंमें आपसमें मतभेद होने लगे। यह पहलेही कहा जा चुका है कि अंग्रेज़ी सेनामें कप्तान हडसन जासूसी महकमाके अफसर थे। इनके दूत बराबर खबरें दे रहे थे, सिर्फ खबरें ही नहीं, उनमें आपसमें मतभेद भी पैदा कर रहे थे। एक रजबअली नामक जासूसने, मीर मुंशीके कौशलसे, हकीम एहसानुल्लाखां नामक शाही हकीमका सिपाहियोंसे विरोध करा दिया।

सिपाहियोंको खाने पीनेकी तंगी न थी, पर अंग्रेज़ी सेनाकी तरह यहाँ भी हैजा शुरू हो गया था। किसीको दवा न मिलती थी। रोज दंगे हंगामे और लूट मारके कारण दिल्लीनिवासी तंग थे, वे अंग्रेज़ोंकी अमलदारीको याद कर रहे थे। सिपाहियोंमें एका न था, कोई ऐसा आदमी न था जो सबको चलाता। सब एक आदमीकी आज्ञामें रहना ही न चाहते थे। दिल्ली बड़ी रक्षाकी जगह थी। चारों ओर संगीन दीवार थी। सब रास्ते टेढ़े थे। फिर सिपाही जिस किलेमें थे वह बड़ा मजबूत था।

इसके चारों ओर खाई पानीसे भरी थी, ऊंची दीवारें और दीवारों और बुर्जों पर तोपें चढ़ी थीं। हर तरहके हथियार, बारूद और गोलोंकी कमी न थी। इन सब साधनोंके साथ सिपाहियोंकी तादाद बहुत बड़ी थी, वे वीर और योद्धा भी थे पर इन सब बातोंके होते हुए भी वे कमजोर थे। उनमें ऐक्य न था। एकका कहना वे न मानते थे। बहुतोंने दिल्लीको शिवास्तोपलकी उपमा दी है। पर शिवास्तोपलके समान दिल्लीमें कोई चतुर अंग्रेज़ सेनापति न था। श्रीरंगपट्टम और भरतपुरसे भी दिल्लीका मुकाबिला नहीं कर सकते। दिल्लीमें टीपू सुलतानकी तरह कोई रणकुशल राजा भी न था। रंगपट्टम और भरतपुरके हमले इतिहासमें प्रसिद्ध हैं। जो इतिहासके जानकार हैं वे रंगपट्टम या भरतपुरसे दिल्लीका मुकाबिला नहीं कर सकते। वृद्ध बहादुर शाह जब बहुत दुःखी होते तब वे कविता लिखा करते थे। उन्होंने एक फारसीका शेर लिखा था, जिसका मतलब यह था—"मैं सिपाहियोंसे घिर गया, न मुझे शान्ति है न स्थिरता, जरासी ज़िंदगी बाकी है, इसे भी ये लोग लेने ही वाले हैं।" सिपाहियोंके कारण बूढ़े बादशाहको कैसा मार्मिक दुःख था, यह इसीसे प्रगट होता है।

बहुत बार बूढ़े बादशाह दर्बारमें बैठकर अमीर उमरावोंके सामने अपनी पगड़ी उतार लेते और बाल नोचते। वे सिपाहियोंके कारण दुःखी थे। उनके महलमें अंग्रेज़ छिपे थे, इस कारण सिपाहियोंने उनके परिवारवालोंका अपमान किया था। अंग्रेज़ों-

को छिपानेके कारण शाहजादा मिर्जा मुगलको सिपाहियोंकी कचहरीमें जाना पड़ा था। मिर्जा हाजी नामक एक और शाहजादाको इसी कारण सिपाहियोंसे लांछित होना पड़ा था, अंग्रेज़ोंकी रक्षा करनेके कारण बेगम जिन्नतमहलकी बड़ी निन्दा हुई थी।

बूढ़े बहादुरशाहकी इस प्रकार दुर्दशा हुई थी। उनके परिवारवाले इस तरह दुःख भोग रहे थे। इन सब बातोंसे तंग आकर बहादुरशाह अंग्रेज़ोंकी शरण जानेकी सोच रहे थे। एक दिन अंग्रेज़ी सेनामें यह खबर फैली कि भारत-सम्राट् बहादुरशाह सुलहके लिये प्रार्थना कर रहे हैं। उन्होंने यह प्रस्ताव किया था कि, सलीमगढ़के पासका दरवाजा अंग्रेज़ी सेनाके लिये खोल दिया जायगा। अंग्रेज़ोंको किला बादशाहके पासही रहने देना होगा और पहलेकी इज्जतके साथ वार्षिक पेंशन देनी होगी। बेगम जिन्नतमहल और शाहजादोंने प्रस्ताव किया था। यह बात सर जान लारेंस और बादमें गवर्नर जनरलके सामने भी रक्खी गई, पर कुछ न हुआ। अभागे बहादुरशाहकी दुर्दशा न टली।

पांचवां अध्याय

दिल्लीपर चढ़ाई—पेशावर त्यागका प्रस्ताव—झेलम और स्याल-
कोट—सेनापति निकल्सनका दिल्ली जाना—नजफगढ़का संग्राम ।

तरह तरहकी विपत्तियोंको सहती हुई भी अंग्रेज़ी सेना दिल्लीके सामने पड़ी रही। उन्हें पञ्जाबकी सहायतापर विश्वास था, सर जान लारेंससे उन्हें आशा थी। जान लारेंसकी नजर भी दिल्लीपर थी। चाहे जैसे हो, वे जल्दीसे जल्दी दिल्लीपर कब्जा करना चाहते थे। जिस समय वे दिल्लीकी चिन्तासे अस्थिर थे उस समय सरकार-का एक और प्रधान कर्मचारी पेशावरकी चिन्तासे चिन्तित था। अभी मई मास भी न बीते थे कि मेजर एड्वर्ड्सने सर जान लारेंसको लिखा—"भारतकी कार्यप्रणाली बहुत कुछ नियमित हो चली है, पञ्जाब भी निरापद है। अब पेशावर चिन्ताका विषय है। जो पेशावरमें हमारा राज्य रहा तो हम सब स्थानोंकी रक्षा कर सकेंगे। पर जो यह स्थान निकल गया तो सारा पंजाब हिल उठेगा।

पर लारेंसकी नजर दिल्लीपर थी। दिल्लीपरसे अंग्रेज़ी राज्य उठ गया था। हर स्थानके विद्रोही सिपाही वहां जमा

थे। मुगल बादशाहकी प्रधानता सुन २ कर दूसरी जगहोंके लोग उभड़ रहे थे। मुगल बादशाह भारत-सम्राट हो गये और अंग्रेज़ उनका कुछ नहीं कर सकते, यह खबर हरएक स्थानपर फैल गई थी। इसलिये सर जान लारेंस सोच रहे थे कि दिल्ली फिर हमारे कब्जेमें आवे तभी सरकारका राज्य हर स्थानपर जमा रह सकता है। इसलिये उन्होंने पंजाबकी सब सेनाएं एकत्र करके दिल्ली भेजनेका इरादा किया। ६ जूनको उन्होंने एडवर्ड्सको लिखा—"मददकी कमीके कारण दिल्लीकी अंग्रेज़ी सेना पिछड़ी तो मैंने पेशावरकी गोरी सेना सहायताके लिए भेजनेका इरादा किया है। इस समय काबुलके अमीर दोस्त मुहम्मदसे पेशावरकी रक्षाका बन्दोबस्त किया जा रहा है। जो वे हमारे साथ विश्वासके साथ काम करें तो पेशावर उन्हें हमेशाके लिये दे दिया जायगा।" इस पत्रके अन्तमें उन्होंने लिखा था—"पेशावरकी रक्षा करना मेरे हृदयकी बात है। पर यह निश्चय समझना कि जो दिल्लीमें हमारी सेना किसी तरह हार गई तो जो हिन्दुस्तानी फौजें हमारी तरफ हैं, वे हमें छोड़ जायंगी।"

ले० गवर्नरका यह प्रस्ताव पढ़कर एडवर्ड्स चमक उठे। सेनापति काटन और निकलसन भी विस्मयमें रह गये। पेशावरको वे सारे पंजाबकी नाक समझते थे। पेशावरके चले जानेपर पंजाबको कब्जेमें रखना महा कठिन है, यह समझते थे। उन्होंने पेशावरकी रक्षा करनेका पक्का इरादा

किया। एडवर्ड्स यह जानते थे कि दिल्लीपर कब्जा होना चाहिये पर वे दिल्लीसे अधिक जरूरी पेशावरको समझते थे। उन्होंने जान लारेंसको लिखा कि "पेशावर पंजाबका नाका है। जो यह नाका चला गया तो फिर पंजाबको बचाना हमारे लिये कठिन होगा। साथ ही अमीर दोस्त मुहम्मदका विश्वास भी विश्वासके लायक नहीं है, जो अमीर सच्चा विश्वासी हो तो मैं कह सकता हूं कि वह जमीनपर पैदा होनेवाला अफगान ही नहीं। भारतसे हमारा अन्न जल उठा देखकर यदि वह हमारे नाशका सूत्रपात न करे तो मैं उसे आदमी नहीं, स्वर्गका देवता कहूंगा। जो इस प्रस्तावके अनुसार काम हुआ तो फिर अंग्रेज़ वापिस न फिर सकेंगे।। काबुलकी घटनाओंको फिर एक वार रखकर सोचनेकी जरूरत है।"

जब एडवर्ड्सका पत्र ले० गवर्नरके पास पहुंचा तब उन्होंने शान्तिसे उसपर विचार किया। सम्मतिका अधिक दबाव देखकर भी वे उससे सहमत न हुए। उनकी नजरके सामने दिल्ली घूमने लगी। वे पेशावरको हटाकर दिल्लीकी बातोंको सोचने लगे। इसके कुछ दिन बाद समाचार आया कि बरेलीके विद्रोही सिपाही दिल्ली आगये। उसी समय उन्होंने एडवर्ड्सको तार दिया कि, जो दिल्लीपर चढ़ाई करनेवालोंपर अधिक आपत्ति दिखाई दी तो पेशावरके सम्बन्धमें मैं अपने पहले प्रस्तावके अनुसार कार्रवाई करूंगा। इस बार भी काटन और एडवर्ड्स राजी न हुए, वे हर तरहकी दलीलोंसे 'पेशावरका

रखना आवश्यक सिद्ध करने लगे। एडवर्ड्सने अपने पत्रमें साफ लिखा—"यदि सेनापति रीड ८००० सेनासे दिल्लीपर कब्जा नहीं कर सकते तो वे नौ या दस हजारसे भी नहीं कर सकते। जो आप पंजाब हमारे हाथसे खो देंगे तो समुद्रके किनारेसे दुबारा फिर लड़ाई करके हमें हिन्दुस्तान लेना पड़गा। मुल्कके बीचके हिस्सेमें चाहे जो कुछ होता रहे, पर समुद्रके किनारे और सरहद्के देशोंपर यदि हमारा पूरा अधिकार बना रहा तो हमें देश छोड़कर जानेकी जरूरत न पड़ेगी। पेशावरके कारण हममें आपसमें मतभेदका झगड़ा शुरू हो गया है, इसे घरू लड़ाई समझिये। इस समय ऐसी राजनीतिका अनुसरण करना चाहिये जिससे काम हो। आपने जितनी सेनाएं सेनापति रीडकी सहायताके लिये दिल्ली भेजी हैं ये यदि दिल्ली नहीं ले सकतीं तो ये वैसे ही पड़ी रहें।*

ले० गवर्नरने यह बात गवर्नर जनरलको लिखी। मतभेद होनेपर भी उन्होंने धैर्यसे काम लिया। उन्होंने धैर्यसे कमिश्नर एड्वर्ड्सकी बातोंको सोचा था। अब धैर्यके साथ उन्होंने गवर्नर जनरलकी आज्ञाकी प्रतीक्षा की। कलकत्ताका सीधा रास्ता बंद था। पत्रके आने जानेमें समय लगता था। उत्तर आनेमें अधिक देर होनेके कारण सर लारेंसने फिर लिखा। पर गवर्नर जनरलने पत्र पाते ही एडवर्ड्सकी रायका समर्थन करके उत्तर दिया था। इसलिये पेशावरकी रक्षाका भार दोस्त मुहम्मदको न

* Kaye's Sepoy War. Vol II P. 614.

दिया गया। वह पहलेके समान पंजाबमें ही रहा। दिल्लीके लिये पेशावर देनेका प्रस्ताव रद्द हुआ।

पेशावर रहा, पर सर जान लारेंसने जो कुछ सोचा था उसमें भी कमी न हुई। जून और जुलाई मासमें दिल्लीके लिये पड़ी हुई सेनाकी जैसी दुर्दशा हुई और उनके जो पत्र लारेंसके पास आये, उनसे उनका हृदय हिल उठा। वे यह समझ गये थे कि इस विपत्तिमें पड़ी हुई सेनाकी बलवृद्धि करना उन्हीं-पर आश्रित है। इस ओरसे ध्यान हटानेके कारण एक प्रधान कर्त्तव्यकी अवहेला होगी। वे यह जानते थे कि पेशावर छोड़नेसे हानि होगी ; पर जब वे मुकाबिलेपर सोचते थे कि पेशावर और दिल्ली दोनोंमेंसे किसके छोड़नेसे अधिक हानि होगी तब वे दिल्लीको बहुत अधिक महत्व देते थे। दिल्लीमें विद्रोही हिन्दू और मुसलमान सिपाही थे, मुगल बादशाह फिरसे सिंहासन-पर बैठे थे, अंग्रेज़ोंके विपक्षमें संग्राम हुआ था। जो सेना दिल्ली-पर कब्जा करने गई थी वह खुद कब्जेमें आ गई थी। भारतके भिन्न २ स्थानोंकी प्रजा और सेना अंग्रेज़ोंको कमजोर समझ रही थी। हफ्तेके बाद हफ्ते और महीनेके बाद महीने बीते पर दिल्ली वैसी ही रही। सबकी नजर सेनापर गई। सबको यह मालूम हो गया कि गोरी सेनायें नहीं हैं—अब अंग्रेज़ोंका अन्त आनेवाला ही है। सिपाहियोंके सामने अंग्रेज़ोंकी वीरता फीकी पड़ गई। मुगल झंडा लहरा रहा है। भारतवासियोंके हृदयकी बात समझ कर सर जान लारेंस अस्थिर हो उठे। वे पेशावर

छोड़कर दिल्ली फतह करनेको तैयार हुए। इस विषयमें इतिहास उनकी निन्दा नहीं करता। वे अदूरदर्शी न थे। उन्होंने पंजाब और पेशावरकी गोरी स्त्रियों और बच्चोंको सिन्धु नदीके इस पार लानेका प्रबन्ध किया।

नया लिया हुआ पंजाब देश वैसे शान्त था, फिर भी स्थान स्थानपर अशान्तिके चिह्न थे। सिपाहियोंकी तरह कोई २ पंजाबी सेना भी विपक्षी हो गई थी। इस उत्तेजनासे झेलम और स्यालकोटमें गदर हुआ।

झेलमके किनारे १४ नं० सिपाही सेना थी। जिस समय सर जान लारेंस दिल्लीके उद्धारकी बातें सोच रहे थे, यह फौज बिगड़ खड़ी हुई, इसके हथियार लेनेके लिये उन्होंने थोड़ी सी गोरी सेना और कुछ तोपें भेज दीं। कर्नल एलिस इस सेनाके अध्यक्ष थे। ले० गवर्नरने हथियार लेनेका जो तरीका कर दिया था, उसके अनुसार कर्नल एलिसने काम न किया। कर्नलने सोचा कि सिविल कर्मचारी, फौजी कर्मचारीसे, इस विषयमें, अधिक योग्यता रखता है। इसलिये उन्होंने अपने ही तरीकेसे काम लिया। झेलमके सिपाहियोंने जब नदीके दूसरे किनारे गोरे सैनिकोंको एक लाइनमें खड़े होते देखा तब वे समझ गये कि अब इससे आगे क्या होगा। उनका विश्वास, भक्ति और अधीनता भाग गई। उन्होंने अपने अफसरोंकी बातों-पर ध्यान न देकर बन्दूकें भरीं। अफसरोंने देखा कि सिपाही उनकी बातें नहीं सुनते। उन्हें विश्वास हो गया कि अब वे हमपर

वार करेंगे। इसलिये सब गोरे अफसर इकट्ठे होकर गोरी सेनामें चले गये। कोई कोई अपने बँगलोंमें जाकर गोरी सेनाका काम देखने लगे। इधर गोरी सेना एक बार ही सिपाहियोंके बीच जा पड़ी। अंग्रेज़ी पक्षके मुलतानी सवार इस समय अच्छी बहादुरी दिखाने लगे, पर सिपाहियोंकी गोलियोंके सामने वे भी न टिक सके। गोरी सेना तोपें लगाकर गोले बरसाने लगी, पर नज़दीक होनेके कारण बंदूक जैसा काम देने लगी वैसा तोपोंसे न हुआ। सिपाहीयोंकी गोलियोंसे गोरी सेना घबरा उठी। जिस समय सिपाहियोंने मुलतानी सिपाहियोंके छक्के छुड़ा दिये और गोलंदाजोंके गोले व्यर्थ कर दिये तब गोरी पैदल सेनाने हमला किया। इनका हमला व्यर्थ न गया। ईंटोंकी बनी बारगके सामनेकी दीवारपर गोरे सैनिकोंका कब्जा हो गया। सिपाही उसी दशामें बाईं ओरवाले गांवमें घुस गये।

इस समय दोपहरका प्रचंड सूर्य आग बरसा रहा था। गोरी सेना गर्मीके मारे शिथिल हो गई थी। उनका सेनापति घायल होनेके कारण संग्राम भूमिसे हटा दिया गया था। बहुतसे गोरे मैदानमें गिरकर मर गये थे, बहुतसे घायल हो गये थे ऐसी दशामें उन्हें थोड़ी देर आराम करनेका अवकाश दिया गया। थोड़ी देर बाद ये लोग फिर सिपाहियोंकी ओर बढ़े। पेड़ोंकी ओटसे सिपाही इनपर लगातार गोलियाँ बरसा रहे थे। अंग्रेज़ी सेनाके पास तोपें थीं, पर फासिला कम होनेके कारण तोपोंसे कुछ नहीं हो सकता था। अंग्रेजोंकी अधिक हानि होने लगी।

यह देखकर गोरी सेना पीछे हटी। इस हटनेमें एक तोप सिपाहियोंके हाथ चली गई। इस तोपसे सिपाही भागती गोरी सेनापर गोले बरसाने लगे। इस संग्राममें सिपाहियोंने बड़ी वीरताका परिचय दिया था। उनके पराक्रमसे गोरी सेनाको पीछे हटना पड़ा।

उस दिन फिर वह युद्धके लिये आगे न बढ़ी। दूसरे दिन सवेरे ही दोनों पक्ष फिर मैदानमें एकत्र होने लगे। पर सूर्यकी धूप फैलते फैलते सिपाही अपना स्थान छोड़ गये। इनमेंसे कोई मर गया था, कोई घायल हो गया था, कोई झेलमके पानीमें डूब गया था और कोई कोई आश्रयके लिये काश्मीर राज्यकी ओर जाकर पुलिसके हाथसे मारा गया था। इनमेंसे हरएकको पकड़ा देनेके लिये इनामकी डौंड़ी पीटी गई थी। जो गिरफ्तार हुए वे तोपोंसे उड़ाये गये। इस प्रकार झेलम संग्रामकी समाप्ति हुई। पर इसपर भी ले० गवर्नर प्रसन्न न हुए। वे सेनापतिकी कार्य-प्रणालीसे बहुत नाराज थे। झेलमकी घटनासे गोरी सेनाके पराक्रमकी धाकमें अन्तर आया था, गोरी सेनाको एक बार मुंहकी खानी पड़ी थी।

स्यालकोट झेलमसे ७० मीलपर है। पंजाबकी फौजी छावनियोंमें स्यालकोट एक प्रधान छावनी है। शान्तिके समय यहाँ बहुत गोरी सेना रहती थी। पक्की फौजी छावनी, मकानात और बागोंसे इसकी शोभा थी। एक गिर्जा भी बना था। मई मासके शुरूमें यहांके सिपाहियोंमें एक अफवाह उड़ी कि अंग्रे-

ज़ोंकी राजधानी लंडनसे हुक्म आया है कि सारे सिपाहियोंकी जातिका नाश कर दो। यह अफवाह जोरसे फैलनेपर भी किसीमें उत्तेजना या उच्छृंलता न थी, अंग्रेज़ोंके द्वेषका कोई निशान न था। स्यालकोटमें जो गोरी सेना थी, वह दिल्ली जानेके लिये निकल्सनके अधीन हुई। उसके अतिरिक्त ५२ और ५३ नं० पैदल देशी सेना और ६ नं० रिसाला भी उनके अधीन किया गया। इसलिये स्यालकोटमें केवल ६ नं० रिसालाके थोड़े सवार और ४६ नं० देशी पैदल सेना रही। ब्रिगेडियर ब्रिंड इस समय स्यालकोटकी सेनाके अध्यक्ष थे। सिक्ख युद्धमें इनकी सेनाने विशेष वीरता दिखाई थी। इसके लम्बे पूरे कद वीरताके लिये प्रसिद्ध थे। सेनापति ब्रिंड इस बातके विरोधी थे कि स्यालकोट जैसे एक बड़े मुक़ामपर थोड़ीसी भी गोरी सेना न रहे। अधिकारियोंसे २५० गोरे रखनेको कहा था, पर इनका कहना अन्त तक न चला। इनकी आशंका दूर करनेके लिये अधिकारियोंने इन्हें सिपाहियोंके हथियार लेनेकी आज्ञा दी थी, पर इन्होंने हथियार न लिये। इनका विश्वास था कि सिपाही सहसा उनके विरुद्ध न होंगे। हथियार लेनेसे वे और भी अधिक जोशमें आजायँगे। यह सोचकर ब्रिगेडियर हथियार बन्द सिपाहियोंके साथ यहीं रहे।

जुलाई मासके पहले हफ्तेमें स्यालकोटके अंग्रेज़ अफसरोंको झेलमकी घटना मालूम हुई। उस समयतक सिपाहियोंको कुछ मालूम न था। झेलम और स्यालकोटके समाचार आते जाते न

थे। सरकारने झेलम और स्यालकोटके बीचकी नदीके पुल तुड़वा दिये थे। पर थोड़े अर्सेके बाद ही सिपाहियोंको समाचार मिला। उस समय सिपाहियोंको बड़ी जल्दी समाचार मिला करते थे। चाहे रास्ते रुके हों और कोई यात्री न आता जाता हो पर एक छावनीके सिपाहियोंको दूसरी छावनीवालोंके समाचार मिलते थे। स्यालकोटके ६ नं० रिसालाके सवार अमृतसर गये थे, वे जब वापिस स्यालकोट गये तब झेलमके समाचार ले गये। इन्होंने सिपाहियोंको समाचार दिये।

इस समाचारसे स्यालकोटके सिपाहियोंमें बड़ी उत्तेजना फैली। दिल्ली जानेवाली गोरी सेना अमृतसर जा पहुँची थी, शायद वह वापिस आकर स्यालकोटकी सेनाके हथियार ले, इस आशंकासे स्यालकोटके सिपाही और भी अधिक डरे। इधर उन्हें यह भी मालूम हुआ कि दिल्लीके मुगल बादशाहका पत्र लेकर एक आदमी आया है। इस पत्रमें बूढ़े बादशाहने उन्हें दिल्ली बुलाया था। इस कारण वे स्थिर न रह सके। ८ जुलाई-की रातको उन्होंने अपनी कार्यप्रणाली निश्चित की, अंग्रेज किसी ओर भाग न जायँ इसका बन्दोबस्त किया। अब उनकी विश्वस्तता और प्रभुभक्ति दूर हो गई। वे अब अंग्रेजोंका खून बहानेके लिये दृढ़ प्रतिज्ञ हो उठे। स्यालकोटके अभागे अंग्रेजों-का भाग्य पलटा।

सवेरे तोपकी आवाज होनेसे पहले ही सिपाही तैयार होकर अपने निश्चित कर्त्तव्यपर लगे। इस समय उनकी "दीन दीन"

की आवाज़ चारों ओर गूंजने लगी। इस शोरसे जागकर अंग्रे-
ज़ोंने आँखें खोलीं। इस शोरका कारण मालूम करते उन्हें देर न
हुई। घोड़ोंपर चढ़कर वे झटपट चल पड़े। ६ नं० रिसालाके
बाकीके सवार इस समय युद्धवेषसे सज्जित होकर घोड़ोंपर
बैठ चुके थे। ४६ नं० सेना भयानक कामके लिये तैयार हो गई
थी। यूरोपियनोंके सामने सहसा विपत्तिका उदय हुआ। उनकी
रक्षाका कोई उचित प्रबन्ध न था, इधर गोरी स्त्रियों और बच्चोंकी
तादाद अधिक थी। वहाँ गोरे सिपाहियोंका नाम भी न था।
उत्तेजित सिपाहियोंके मार्गमें कोई रुकावट न थी। स्यालकोट-
में सिक्ख सर्दार तेजसिंहका एक मकान था। उसे पुराना
किला कहा करते थे। इस किलेमें छिपनेके अलावा अंग्रेजोंके
लिये अब और कोई उपाय न था। कोई बेदाग इस किलेमें
पहुँच गया और कोई कोई जाते जाते रास्तेमें ही सिपाहियोंके
हाथसे मारा गया। इस समय सिपाहियोंने जैसी हिंसाका परि-
चय दिया था, किसी किसी भारतवासीने अंग्रेजोंके प्राण
बचाकर वैसी ही दया और सुजनताका भी परिचय दिया था।
एक अंग्रेज़ने आकर ब्रिगेडियरसे पुराने किलेमें चलनेको कहा,
पर वृद्ध सेनापति पहले राजी न हुए। अन्तमें साथियोंके अनु-
रोधसे वे घोड़ेपर बैठकर किलेकी ओर रवाना हुए, पर वे बच
न सके। कुछ उत्तेजित सवार उनके पीछे दौड़े। एककी पिस्तौ-
लका गहरा घाव बूढ़े सेनापतिकी पीठपर लगा। उस हालतमें
भी उनके साथी उन्हें किलेमें ले गये। इसी सेनाका एक अफ-

सर गाड़ीमें बैठकर अपने बाल बच्चोंके साथ किलेमें जा रहा था। सिपाहियोंको अपनेपर हमला करते देखकर वह गाड़ीसे उछल पड़ा, पर जमीनपर कूदते कूदते उसके गोली लगी जिससे वह मर गया। सिपाहियोंने उसकी स्त्री और बच्चोंसे कुछ न कहा। वे निरापद किलेमें चले गये। डाक्टर भी इसी प्रकार मारा गया। वे जिस गाड़ीमें बैठकर किलेमें जा रहे थे, उसीमें उनकी स्त्री और एक और अंग्रेज़ स्त्री अपने बच्चों सहित बैठी थी। डाक्टरके मारे जानेपर दोनों स्त्रियोंने सिपाहियोंसे दयाकी भीख माँगी। सिपाहियोंने दया की। उन्होंने कहा, हम साहब लोगोंकी ही जान लेंगे, औरतों और बच्चोंकी नहीं। दोनों स्त्रियाँ सकुशल किलेमें पहुँच गईं।

एक डाकृरने अपनी बेटीके साथ छावनीसे किलेकी यात्रा की। पीछेसे एक सिपाहीने उसके सिरमें गोली मारी। डाकृर अपनी बेटीके कन्धेपर सिर रखकर इस संसारसे चल बसा। उसकी बेटी बिना बाधा रिसालाकी बारगमें गई, वहां एक कर्नल और उसकी मेम थीं। कुछ विश्वासी सवार इनकी रक्षा कर रहे थे। ये सवार ही इन सबकी रक्षा करते हुए किलेमें ले गये। ६ नं० रिसालाका एक कप्तान और एक डाकृर अपनी २ स्त्रियों, दो दासियों और बच्चों सहित एक छोटे घरमें जा छिपे। एक विश्वासी चौकीदार इनकी हिफाजतपर रहा। तेरह घंटे इनको इस सँकरी जगहमें भिंचकर रहना पड़ा। शामको अन्धेरा होने-पर यह चौकीदार इनको छिपाकर किलेमें ले गया। ४६ नं०

सेनाका एक कप्तान विद्रोहकी पहली रातको अपने कामपर मुस्तैद था, जब सवेरे वह अपने कामपरसे जाने लगा तब उसने देखा कि कुछ सवार सेनाकी ओर जा रहे हैं, सैनिक भी बहुत अशान्त हैं। कवायदके मैदानकी ओर न जाकर वे सवारोंकी ओर जा रहे हैं। यह देखते ही कप्तानने समझ लिया कि सेना विद्रोही हो गई। उसने अपने घोड़ेको जल्दीसे बंगलेकी ओर दौड़ाया। वहां जाकर अपनी स्त्रीको जगाया, उसे एक बग्घीमें बैठाकर महाराजा मिश्र नामक सिपाहीको कहा कि अपनी रक्षामें इसे किलेमें ले जाओ। स्त्री उसे बार २ बुलाती रही, पर उसकी एक न सुनकर वह फिर घोड़ा दौड़ाकर सेनाकी ओर चला। एक सिपाहीने उसे जबर्दस्ती पकड़कर पासवाले घरमें छिपा दिया और खुद रक्षापर खड़ा हो गया। इसके थोड़ी देर बाद एक कर्नल और एक कप्तान वहां आये। उन्हें पैदल सेनाने चारों ओरसे घेर लिया। उन्होंने दोनों अफसरोंसे कहा कि अब अंग्रेज़ी राज्य अस्त हो गया इसलिये कर्नल और कप्तानको वे २०००) और १०००) रुपये माहवार तनख्वाह देंगे, ये अफसर उन्हें दिल्ली ले चलें। सब सिपाही अपने अफसरोंके हर तरहके आरामका खयाल रक्खेंगे।' यह कहनेकी जरूरत नहीं कि दोनों अफसरोंने इसे अस्वीकार किया। पर सिपाहियोंने फिर उनका जीवननाश न किया। उन्होंने रक्षा की। एक ईसाई धर्म-प्रचारक अपने स्त्री बच्चों सहित किलेमें जा रहा था, एक सवारने उसके गोली मारी। उसकी स्त्री भी मारी गई। स्यालकोटमें

केवल यह एक स्त्री मरी। बाकी किसी अंग्रेज़ स्त्री और बच्चेको भी किसीने हाथ नहीं लगाया। इस स्त्रीकी हत्या मजिस्ट्रेटकी कचहरीके एक पठान चपरासीने की थी, मेजिस्ट्रेटने हत्यारेको गिरफ्तार करनेवालेको १०००) रु० इनाम देनेकी घोषणाकी पर वह गिरफ्तार न हुआ। कहा जाता है कि यह मेम एक कन्या पाठशाला खोल रही थी, इसी कारण मुसलमान उससे अधिक नाराज थे।

४६ नं०सेनाके अफसर लोग सेनामें ही थे। सेनासे किलेतकका रास्ता रुक गया था। कोई उपाय न देखकर अफसर लोग घोड़ोंपर बैठे हुए गुजरानवालाकी ओर भागे। दोपहरकी कड़ी धूपमें उन्हें करीब ४० मील रास्ता चलना पड़ा। धूपसे वे घबरा गये थे, रास्तेकी मेहनतसे थक गये थे। पर इधर उधरके गांववालोंने उन्हें खाने पीनेको दिया, और तो क्या थोड़े थोड़े रुपये भी मददके लिये दिये। उनके साथ एक अफसरकी स्त्री बग्घीमें बैठकर जाती थी। उसका शरीर अच्छा न था। रास्तेमें जाते २ बुधपुर नामक गांवमें उसकी तबियत अधिक खराब हो गई। गांववाले इसे चारपाईपर लिटाकर खुद उठाकर ले गये थे। अफसरोंमेंसे एक सत्रह सालका अंग्रेज़ अफसर सिपाहियोंको शान्त करनेके लिये घोड़ेपर बैठकर आगे गया था। इस समय सिपाही क्रोधित हो उठे थे, इसलिये थोड़ेसे सिपाही अपने अफसरोंको बचानेके लिये आगे बढ़कर आ गये। वे अफसरोंसे बार २ अनुरोधके साथ कहने लगे कि तुम और किसी स्थानपर

चले जाओ क्योंकि वे अफसरोंको बचा नहीं सकते थे। उनके कहनेसे दो बड़े अफसर भागे पर ६ सिपाहियोंने उनका पीछा किया। एक सवारने इस नौजवान अफसरपर गोली छोड़ी पर वह निशानेपर ठीक न लगकर उसकी तलवारपर लगी। फिर भी इसने अपनी प्राणरक्षा की। शामको ४॥ बजे स्यालकोटसे चलकर वह ३० मील रास्ता पार करके दूसरे दिन ११ बजे वजीराबाद पहुंचा। इस प्रकार बहुतोंकी प्राण रक्षा हुई। बहुतसे बागी सिपाहियोंके हाथसे मारे गये, सिपाही अंग्रेज़ोंके खिलाफ उठे थे पर वे खूनके प्यासे राक्षस नहीं बने। उनमेंसे बहुतोंने अपने अफसरोंकी जानें बचाईं। मर्दोंकी जान लेनेपर भी उन्होंने किसी स्त्री या बच्चेपर हाथ नहीं उठाया। बहुतोंने अपने आपको रक्षा करनेमें कमजोर पाकर उन्हें होशियार कर दिया। इस घबराहटके मौकेपर भी वे अपने आपको न भूले। कठोर हृदय होनेपर भी उन्होंने स्थान २ पर कोमलताका परिचय दिया था। इसी भावके कारण बहुतसे अंग्रेज़ और सारे स्त्री बच्चे जीते रहे।

जिस समय पुराने किलेमें छिपकर अंग्रेज़ अपनी रक्षाका प्रबन्ध कर रहे थे उस समय विद्रोही सिपाही तरह २ के उत्पातोंसे अपना क्रोध निकाल रहे थे। जो बातें गदरमें और स्थानोंपर हुई थीं वे ही यहां भी होने लगीं। सिपाहियोंने जेल तोड़कर कैदियोंको छोड़ दिया, खजाना लूट लिया, कचहरी और दफ्तरोंमें आग लगा दी। ईसाइयोंके घर बर्बाद कर दिये। अंग्रेज़ोंके

नौकर सब बातोंमें उनके सहायक बने। जो नौकर प्रभुभक्त थे उन्होंने ही इस समय विरोध किया। ब्रिगेडियरके विश्वासी बेयरेने, उनके सोते हुए, सिरहाने रक्खे पिस्तौलकी टोपी उतारकर फेंक दी। एक खानसामा और बेयरा अपने अंग्रेज़ मालिकसे लड़नेमें भी न चूका। वे समझते थे कि सिपाहियोंके विद्रोहके कारण अंग्रेज़ोंकी जान आपत्तिमें है। इसी कारण उन्होंने अपनी दुष्ट बुद्धिका परिचय दिया। इस प्रकार विद्रोही सिपाही, उत्तेजित नगर निवासी, जेलसे छूटे हुए कैदी, सबने मिलकर स्यालकोटमें नृशंस तांडव शुरू किया। सवेरेसे शामतक यही कांड होता रहा। जो सामान और चीजें जो ले जा सका वह ले गया। यहांतक कि जो तोप सवेरे और शामको समयकी सूचनाके लिये चला करती थी उसे भी सिपाही ले गये। केवल गिर्जा न छेड़ा गया।

रातके आते ही उत्तेजित सिपाही दिल्ली जानेके लिये नदीकी ओर भागे। पुराने किलेमें जो अंग्रेज़ स्त्री पुरुष छिपे थे उन्होंने अब अपने आपको निरापद समझा। बलवाई शहरसे चले गये थे इस कारण अधिक डरका कोई कारण न था। ब्रिगेडियर ब्रिंड गोलीके आघातसे मर गये। उन्होंने उस समय भी किलेकी रक्षाके लिये अंग्रेज़ोंको यथा योग्य आज्ञायें दीं।

स्यालकोटके सिपाही प्रसन्नताके साथ दिल्लीकी ओर रवाना हुए, पर उनकी यह प्रसन्नता अधिक समयतक न टिकी। यह ऊपर कहा जा चुका है कि सेनापति निकलसनकी अधीनतामें

गोरी और पंजाबी सेना दिल्ली जा रही थी। काबुल और पंजाबके युद्धोंमें निकल्सन अपनी वीरता दिखा चुके थे। जब पंजाब ब्रिटिश अमलदारीमें आया तब निकल्सनने शान्तिस्थापनमें ऐसी योग्यता दिखाई कि लार्ड डलहौज़ी उनसे बहुत अधिक प्रसन्न हो गये। सिक्ख लोगोंने निकल्सनकी फुर्ती, दृढ़ता और साहसके सामने सिर झुकाया। सिक्खोंपर निकल्सनका भी विश्वास था। पर बंगालके सिपाहियोंपर उनका कुछ विश्वास न था, उनके हथियार ले लिये जानेपर ही वे प्रसन्न होते पर सेनामें उन्होंने अपनी इच्छा प्रगट न की। जब स्थान २ पर सिपाहियोंका विद्रोह प्रगट हो रहा था तब पेशावरमें निकल्सनने गुप्तरूपसे इसका अनुसन्धान किया था। अटक जाकर उन्होंने डाक रोकी और सिपाहियोंकी सारी चिट्ठियां खोलकर उनका अनुवाद करा लिया। उन्होंने चिट्ठियां फिर बन्द करके जहाँकी तहाँ भेज दीं और अनुवाद अपने पास रक्खा। इन चिट्ठियोंसे बहुत सी गुप्त बातोंका पता लगा, गदरके मौकेपर क्या करना चाहिये, इस बातपर विचार करनेके लिये पेशावरमें फौजी और दीवानी अफसर एकत्र हुए। सबसे पहले यह विषय रक्खा गया कि देशी फौजोंपर विश्वास किया जाय या नहीं। फौजी अफसर फौजोंके विश्वासकी बातें कहने लगे। निकल्सनने कुछ बात न कह कर वे अनुवाद किये हुए पत्र सबके सामने रख कर कहा—"शायद इनसे आपका मनोरंजन होगा।" इन पत्रोंमें सरकारके विरुद्ध सिपाहियोंके अविश्वासकी बातें थीं। बात साधारण है,

पर इससे निकल्सनकी कार्य्यतत्परता प्रगट होती है। खैर, निकल्सनने सिपाहियोंके हथियार लेनेकी बात गुप्त रक्खी। ३३ नं० सिपाही सेना होशियारपुरमें थी। यह २५ जूनको ३५ नं० सिपाही सेनासे मिलने फिल्लौरकी ओर बढ़ी। निकल्सनने इस समय काम करनेका निश्चय किया। रास्तेमें तमाम तोपें लगा दीं। दोनों ओर ५२ नं० गोरी सेना लड़ाईके लिये तैयार होकर खड़ी हुई। फिल्लौरके पास सतलजका पुल था। निकल्सनने पुलिसको हुक्म दिया था कि सबसे पहली तोपकी आवाज़ सुनते ही वह पुल तोड़ दिया जाय। इसके बाद गोरी सेनासे उन्होंने कहा कि जो सिपाही हथियार डालनेमें ज़रा भी देर करे तो फौरन उनपर बंदूकें चलाना, क्योंकि पुल टूट जानेपर हमारे लिये भी फिर कोई रास्ता नहीं है। इस तरह तैयार होकर, तोपोंमें गोले भरकर, वे फिल्लौर किलेके पास गये। जब सिपाहियोंने देखा कि गोरी सेना हर तरहसे तैयार है तब उन्होंने अफसरकी पहली आज्ञा मिलतेही हथियार रख दिये।

इस तरह दो सिपाही सेनाओंके हथियार लेकर निकल्सन ५ जुलाईको अमृतसर पहुंचे। इसके दो दिन बाद उन्हें झेलमका समाचार मिला। अब वे दूसरी सिपाही सेनाओंके हथियार लेनेको तैयार हुये। ५९ नं० सिपाही सेना इसके लिये तैयार हुई। इनके हथियार लेनेसे पहले कुछ सिपाहियोंको तोपसे उड़ाया गया। इस प्रकार कठोर दंडसे सबको त्रस्त और विस्मित करके उन्होंने ५९ नं० सेनाको हथियार रखनेका हुक्म दिया। कुछ दिन

पहले उनको राजभक्तिकी प्रशंसा की गई थी; पर आज हथियार रखनेके हुक्मसे उनके आश्चर्यकी सीमा न रही। फिरभी उन्होंने धैर्य और शान्तिके साथ अपने अपने हथियार और वर्दी उतार दी। निकलसनके समान सिपाहीके शत्रु अफसरने भी स्वीकार किया है कि ये लोग अन्ततक शान्त थे। केवल अपने आपको निश्चिन्त करनेके लिये निकलसनने इनके हथियार लिये थे।

इस घटनाके बाद रावलपिंडीकी ८५ नं० सिपाही सेना और २४ नं० सेनाके हथियार लिये गये। इन सैनिकोंको रक्षकों-से घेरकर पेशावर ले गये। निकलसन जब इस प्रकार एकके बाद एक सेनाके हथियार लेकर दिल्लीकी ओर रवाना होनेका इरादा कर रहे थे, तब उन्हें स्यालकोटका समाचार मिला। यह पहले ही कहा जा चुका है कि ६ नं० रिसालाके कुछ सवार निकलसनके साथ थे सबसे पहले उन्होंने अपने साथवाले रिसालाके हथियार घोड़े और वर्दियां ले ली। इसके बाद स्यालकोटके सिपाहियोंके विरुद्ध यात्रा की। अमृतसरसे वे गुरदासपुरकी ओर बढ़े क्योंकि उनका विश्वास था कि विद्रोही सिपाही इसी ओर आवेंगे। अमृतसरसे गुरदासपुर ४१ मील है। निकलसन-की सेना २० घंटे में ४१ मील पहुंची, कड़ी गर्मीकी ओर उन्होंने नजर भी न की। वे विद्रोहियोंके विद्रोहसे और उनके द्वारा मारे गये अंग्रेज़ोंके दुःखसे अधिक दुःखी थे। गोरी सेनाके बहुतसे गर्मीके मारे मर गये, बहुतसे गिर पड़े, पर निकलसन अपनी सेनाको भगाये ले गये। गुरदासपुर पहुंचकर वे विपक्षियोंका

रास्ता देखने लगे। समाचार मिला कि त्रिमूघाटके पास सिपाही चन्द्रभागा नदी पार कर रहे हैं। बरसातके कारण नदीका पानी बढ़ गया था इस कारण अंग्रेज़ोंको और भी अधिक सुविधा हो गई थी। १२ जुलाईको दोपहरके समय निकल्सनने स्यालकोटके सिपाहियोंपर हमला किया। थोड़ी देर तक रुककर सिपाही अपनी अपनी चीजें छोड़कर भाग खडे हुए। उनके १२० आदमी मैदानमें मारे गये, बाकी भागकर नदीमें कूद पड़े। अंग्रेज़ थके हुए थे, दूसरे उनके पास सवार काफी न थे, इसलिए वे भागतोंका पीछा न कर सके। करीब ३०० सिपाही अपने हथियारोंके साथ नदीके एक द्वीपमें जा पहुंचे। इनका उद्देश्य अपनी रक्षा करना था। स्यालकोटसे जो तोप ये लोग लाये थे वही ये अपनी रक्षाके लिये द्वीपमें ले गये, पर उनमें तोप चलानेवाला कोई न था। ब्रिगेडियर ब्रिंडका वही खानसामा यह काम करने लगा, गोलंदाजोंमें अधिक दिन रहनेके कारण खानसामाको तोप चलाना आता था। इधर निकलसनने १६ जुलाईको नावें एकत्र करके चढ़ाई की। सिपाही गोरी सेनाके हमलेको न रोक सकी। बहुतोंने सच्चे वीरकी तरह तोपके सहारे अपनी जानें दीं और बहुतोंने पानीमें कूद कूदकर प्राण खोये। जो पकड़े गये वे भी मारे गये, जिन गावोंमें वे छिपे थे उनपर जुर्माने किये गये। इसके बाद एक हलेके समान हत्याकांड शुरू हुआ। करीब ६०० सिपाही काश्मीरसे पकड़े गये थे वे सब यहाँ लाये गये। एक दिनमें ७८ सिपाही गोलीसे मारे गये, जो नौकर पकड़े

गये उनमें १२५ के चालीस २ बेंत मारे गये, अफसरोंको सजाके लिये स्यालकोट भेजा गया। इस तरह स्यालकोटकी लड़ाई समाप्त होनेपर अंग्रेज़ोंके खूनका बदला लिया गया।

सेनापति निकल्सन इसके बाद वापिस अमृतसर गये और वहाँसे लाहौर पहुँचे। ले० गवर्नर भी रावलपिंडीसे लाहौर आये। सेनापति २१ जुलाईको लाहौर पहुँचे, दूसरे दिन ले० गवर्नरने दिल्ली जानेवाली सेनाका एक विशद विवरण लिखकर उन्हें दिया। बलोची, सिक्ख और गोरी सेनायें जो कुछ मिलीं सब एकत्र करके और हर तरहका सामान देकर सर लारेंसने नौजवान निकल्सनको उनका सेनापति बनाया। गोरी सेनाओंके बराबर विश्वस्त सिक्ख सेना एकत्र हुई और उनके पास लम्बे क़दवाले बलोची खड़े रहे। यह मजबूत सेना लेकर सेनापति निकल्सन दिल्ली जीतनेके लिये लाहौरसे चले। २५ जुलाईको वे सतलज पार हुए। यहाँसे वे जल्दी २ यमुनाकी ओर बढ़े। ३ अगस्तको सेनापति विलसनका एक पत्र उन्हें रास्तेमें मिला। पत्रमें लिखा था—"नजफगढ़की झीलका जो पुल हमने तोड़ दिया था उसे फिर बनवाकर विद्रोही सिपाही यहाँ ठहरे हुए हैं। वे अलीपुर नामक स्थान और हमारे बाजूकी ओर बढ़नेका इरादा कर रहे हैं। इसलिये आप जितनी जल्दी हो सके आकर हमारे बाजूकी रक्षा करें।" ६ अगस्तको निकल्सन अम्बाला पहुँचे और ७ को कर्नाल।

७ अगस्तकी शामको निकल्सन दिल्लीकी अंग्रेज़ी छावनीमें

आ गये। शहरका नक्शा, उसकी मजबूती और विपक्षियोंकी ताकतका अंदाज़ा लगाकर सेनापतिने अपना कर्त्तव्य निश्चित किया। निकल्सन फौजी आदमी न थे। उनमें वीरता थी, तेज था, स्वाभिमान था, जिस संग्राममें वे गये उसीमें इनकी दृढ़ता प्रगट हुई। पर अन्ततक वे अपने परिणामको न देख सके। अन्तिम कामके सम्पादनका भार उन्हें दूसरेको देना पड़ा। बहुत बार इनके काम बड़े ही कठोर होते थे, इतने कठोर कि जिनसे मनुष्यत्व भी काँप उठता था।

निकल्सनकी चढ़ाईका विवरण लिखनेसे पहले हमें फिर एक बार पंजाबकी घटनाका विवरण रखना है। ३० जुलाईको मियांमीरकी २६ नं० सिपाही सेना बड़ी अशान्त हो उठी। १३ मईको इस सेनाके हथियार लिये जा चुके थे, पर इसमें जो भय घुस गया था वह न निकला। ३० जुलाईको बड़े जोरकी आंधी आई थी, इस आंधी पानीके कारण और भी उत्तेजना बढ़ी। गोरी सेना और सिक्ख सेना इनकी देख भालपर थीं। सिक्ख सेनाने बिना सोचे समझे इनपर गोलियाँ चला दीं। इससे सब सिपाही भाग गये। इस समय २६ नं० सेनाका गोरा सेनापति मारा गया, इसके मारनेवालेका पता न लगा, पर उस समय तमाम सिपाही सेनापर यह अपराध लगाया गया। जब निहत्थे सिपाही रावीकी ओर भाग रहे थे तब ८०—९० सवारोंके साथ कूपर साहब अमृतसरसे उनके पीछे चले। नदीके किनारे पहुंच-कर सिपाहियोंने गांववालोंसे नदी पार होनेके लिये नाव मांगी,

पर गांववालोंने नाव न दी, बल्कि बातोंमें फंसा लिया। इसी समय पुलिसको इत्तिला दी। अजनालाका तहसीलदार पुलिस सेना लेकर घटनास्थलपर पहुंचा। इनकी बंदूकोंसे करीब १५० सिपाही मरे। इसके बाद डिप्टी कमिश्नर वहां पहुंचे। उन्होंने घटनाका वर्णन इस प्रकार किया है—"गांववालोंके हमलासे बहुतसे सिपाही नदीमें जा गिरे, इनमेंसे बहुतसे डूब गये और कुछ लकड़ियोंके सहारे तैरते हुए बीचके एक छोटेसे टापूमें जा पहुँचे। भूखके मारे ये लोग मुरझा गये थे और रास्ता चलनेसे थके हुए थे। इसपर एकाएक हमला हो जानेसे इन्होंने अपने जीवनकी आशा छोड़ दी थी। जंगली पक्षी जैसे अपने प्राण खोनेके लिये पानीमें तैरते हैं, उसी तरह ये लोग भी जान बचा-नेके लिये तैरने लगे। इन्हें पकड़नेके लिये शीघ्र दो नावें भेजी गईं। इस समय बड़े जोरकी धूप पड़ रही थी। सिपाही लगभग २० मिनिटमें इस द्वीपमें पहुँचे थे। घोर निराशासे अधीर होकर चालीस पैंतालीस फिर पानीमें कूद पड़े। इन्हें पकड़नेके लिये जो सवार गये थे वे इनके सिरको निशाना बनाकर गोलियाँ चलानेको तैयार हुए। पर उन्हें इस तरह गोली मारने-से मना किया गया, तब सिपाहियोंने सोचा कि डिप्टी कमिश्नर उनपर दया करेंगे। यह समझकर उन्होंने आत्मसमर्पण किया। जब उनके हथकड़ियाँ लगाई गईं तब किसीने कुछ न कहा। उन्होंने समझा था कि फौजी अदालतमें उनपर मुकदमा चलेगा और मुकदमेसे पहले उन्हें खाना पीना दिया जायगा। इसीलिये

इस तरहके मनुष्यघातकको जय-चिह्न दिया गया, इससे आश्चर्य होता है। लाहौरकी तीन फौजें और उनकी आंखोंमें खटक रही थीं; उनके लिये भी वे इसी तरहका एक जयचिह्न देनेका मौका देख रहे थे। कूपर साहबने कलकत्ताके कुंए और कानपुरके कुंएके साथ अजनालाके कुंएका मुकाबिला किया है। जो केवल नरहत्याको ही तौला जाय तो सिराजुद्दौला, नानासाहब और कूपर साहब, बराबर है। जबतक जेलखानेमें कैदियोंके रखने-की सहूलियत थी तबतक नानासाहबने कैदियोंको रक्खा। जब उनके आदमी कैदियोंको न रख सके तब उन्होंने मार दिया। इसकी सफाई यही है कि जब जिसका जीवन आपत्तिमें हुआ तब उसने अपने आपको बचानेके लिये इसीका अनुष्ठान किया है।

इस इतिहासके प्रारम्भमें लिखा जा चुका है कि सिराजुद्दौला द्वारा जिस कालकोठरीमें बहुतसे अंग्रेज़ोंका कैद किया जाना और रात भरमें प्यासके कारण बहुतोंका मर जाना बताया जाता है, वह गलत है। अंग्रेज़ लेखकोंने उस विषयमें जो कुछ लिखा है, उसके विपरीत प्रमाण मिलते हैं। फिर भी सिराजुद्दौला-पर चढ़ाई करके क्लाइवने बंगाल उससे छीना। सिराजुद्दौलापर यह दोष लगाया गया कि बाकी बचे अंग्रेज़ोंकी भी उसने कोई सँभाल न की। जिन अंग्रेज़ लेखकोंने बातका बतंगड़ बनाकर, कुछ अंग्रेज़ोंको एक कोठरीमें कैद करनेके कारण, सिराजुद्दौला-को नरपिशाच लिखा है और हो अजनालेके सिपाहियोंके

हत्यारेको विजयी लिखा, क्या वह कोई सच्चा लेखक है? जिस समय वे कुंएमें भरे गये उस समय बहुतसे सिपाही जिन्दा थे। क्या कोई पूछ सकता है कि नरपिशाच कौन था? उन सिपाहियोंमेंसे एकको गवाहीके लिये जीता रक्खा गया था। उसका कहना था कि निहत्थे सिपाही जिस समय छावनीसे भागे, उस समयसे ४८ घंटेके भीतर ५०० सिपाही बंदूकोंसे मार डाले गये। उनके हथियार महीने भर पहले ले लिये गये थे, वे डर गये थे, उन्हें अपनी जानका डर था। वे जान लेकर भागे, बड़ी मंजिल चलनेपर भी उन्हें खाने पीनेको न मिला; थके, भूखे, प्यासे तीन दिनके निराहार सिपाहियोंका खून इस निर्दयतासे किया गया! जो सिपाही गवाहीके लिये जिन्दा रक्खा गया था, वह और बादमें ४१ पकड़े हुए और सिपाही लाहौर भेजे गये। इन सबको लाहौरमें तोपसे उड़ाया गया। *

सिराजुद्दौलाकी जिस कालकोठरीमें बहुतसे अंग्रेज़ोंका कैद होना बताया जाता है वह अंग्रेज़ोंमेंसे एक हलवोयेलर नामक अंग्रेज़के दिमागसे गढ़ी हुई बात थी। पर यदि थोड़ी देरके लिये यह मान भी लिया जाय कि वह सच ही थी, तब भी बाकी बचे अंग्रेज़ोंके साथ सिराजुद्दौलाने कोई बदसलूकी नहीं की। अजनालाके सिपाहियोंके साथ जो बर्ताव किया गया उसमें कहीं धैर्य, न्याय या मनुष्यत्व नहीं दिखाई देता। मनुष्यकी निर्दयताका यदि अच्छी तरह विचार किया जाय तो हलवो-

* Martin's Indian Empire. Vol II P. 428.

येलरके वर्णनसे भी सिराजुद्दौला इतना नीच सिद्ध नहीं होता जितना अजनालाके हत्यारे अधिकारी।

२६ नं० सेनाके इस तरहके शोचनीय नाशसे लोगोंमें भय और क्रोधका संचार हुआ। रिसालाके जितने घोड़े थे वे सब सिपाहियोंके थे पर हथियार और वर्दीके साथ २ उनसे घोड़े भी ले लिये गये थे। घोड़े लेनेके कारण सिपाहियोंको क्रोध आया। इनको उत्तेजित होते देखकर मांटगोमरीने इन ३०० सिपाहियोंको भी अजनालाके सिपाहियोंकी तरह नाश करनेका इरादा किया।* अंग्रेज़ोंके मनमें सिपाहियोंके बीजनाश करनेकी समाई हुई थी, वे इस जमीनसे उनका नामोनिशान तक उठा देना चाहते थे। सिपाही उत्तेजित हुए थे, पर उनमेंसे बहुतोंने अंग्रेज़ोंकी जानें भी बचाई थीं। पर इसकी किसीको परवा न थी। वे सिपाहियोंको जंगली भेड़ियेकी तरह मार डालना चाहते थे। पर इतना खून बहाने पर भी पंजाबके आदमियोंका विश्वास सरकारपर न था, कोई यह न समझता था कि अब सरकारका राज्य बाकी रहेगा।† पेशावरकी एक घटनासे इसका प्रमाण मिलता है। जुलाई मासके मध्यमें कमिश्नर एडवर्ड्सने पेशावरके खास २ धनी आदमियोंसे रुपया उधार मांगा। धनी आदमियोंने खुले तौरपर अंग्रेज़ोंके राज्यमें सन्देह प्रगट नहीं किया पर रुपया देकर उत्साह भी नहीं दिखाया। एडवर्ड्सकी

* Martin's Indian Empire. Vol II. P: 429.

† Holme's Indian Mutiny P. 373

तत्परतासे अन्तमें रुपया मिला पर लोगोंको वापस मिलनेमें सन्देह ही था।

यह ऊपर आ चुका है कि ७ अगस्तको सेनापति निकल्सन दिल्ली पहुंचे। सेनापति विलसनसे सलाह करनेके लिये वे अपनी सेनासे पहले ही दिल्ली पहुंचे थे। पहुंचते ही उन्होंने अपना काम किया। निकल्सनका ऊंचा पूरा शरीर, तेजस्वी और कठोर चेहरा, चमकती हुई आंखोंकी ज्योति देखकर सबने इन्हें वास्तविक वीर समझा। वास्तवमें निकल्सनमें ये सब गुण थे, उनके पहुंचतेही दूसरोंको मानना पड़ता था। जब वे सबके साथ बैठकर खाने लगे तब पहले सैनिकोंको उनका चुप रहना बुरा लगा था। वे मौका देखने और सेनाके व्यूह रचनेके लिये जब नक़्शा देखते तब उनका रूखा भाव सबको बुरा लगता था। एक इतिहासलेखकने दिल्लीपर चढ़ाईके सम्बन्धमें लिखा है—"इस समय एक गठी हुई देहका उन्नत पुरुष हमारी छावनी-को देख रहा था। वह हरएक स्थानका सूक्ष्म विवरण, उसका इतिहास पूछता था। उसके लिबाससे उसकी पद मर्यादाका कुछ ज्ञान नहीं होता था। इस आपत्तिके समय जो जैसे चाहता वह वैसे कपड़े पहना करता था। बादमें मालूम हुआ कि नया आगन्तुक सेनापति निकल्सन है। इससे पहले सैनिकोंने उसकी शकल न देखी थी। अब लोगोंमें कानाफूसी होने लगी कि इसकी सामरिक प्रतिभा बड़े ऊंचे दर्जेकी है।" इस तरहका वीर दिल्लीके उद्धारके लिये आया था। सैनिक पहले उसके रूखे

स्वभावसे असन्तुष्ट थे पर बादमें गुणोंके परिचयसे वे उसे दिल्लीका उद्धारकर्त्ता मानने लगे।

शीघ्रही कार्य प्रारम्भ हुआ। निकल्सनकी सेना शीघ्रतासे दिल्लीकी ओर बढ़ती चली आ रही थी। उसे लेनेके लिये वे खुद गये। १४ अगस्तको वे अपनी सेना लिये हुए बड़ी प्रसन्नतासे छावनीमें आये। छावनीके सैनिक इनके आनेसे प्रसन्न हुए। तोपें भी पीछेसे चली आ रही थीं। दिल्ली और पंजाबके बीचका रास्ता साफ था। सिपाहियोंने इस रास्तेको रोकनेकी कोशिशकी थी। १४ अगस्तको वे इसी उद्देश्यसे शहरसे बाहर निकले थे। रास्तेकी रक्षाका भार जींदके राजापर था। सेनानायक हडसन अपने रिसालाको लेकर इन्हें देखनेके लिये निकले। सिपाहियोंके दो एक छोटे मोटे युद्ध हुए पर वे जीत न सके। बरसातके कारण इस समय स्थान २ पर पानी भर गया था। हडसन रास्ता देख भालकर २२ अगस्तको वापिस आये।

सिपाहियोंने सुना था कि निकल्सनका तोपखाना फीरोजपुरसे दिल्ली आ रहा है इसलिये बरेली और नीमचसे आई हुई सिपाही सेनायें १८ तोपें साथ लेकर, इन तोपोंपर कब्जा करनेके लिये, २४ अगस्तको दिल्लीसे निकलीं। दूसरे दिन सेनापति निकल्सन १००० गोरे और २००० भारतवासियोंकी सेना लेकर इन्हें रास्तेमें रोकनेके लिये बहादुरगढ़की ओर बढ़े। निकल्सनने सुना था कि सिपाही इसी ओर आ रहे हैं। इस समय पानी

ज़ोरसे बरस रहा था। सारा रास्ता कीचड़मय था। पैदल सेना बड़े कष्टसे आगे बढ़ने लगी। फिसलनेके डरसे वे होशियारीसे पैर रखने लगे। गोलंदाज सेना तोपोंके पहियोंको कीचड़से निकालनेके लिये बार २ जोर लगाने लगी। इस तरह बड़ी मुश्किलसे ६ घंटेमें ९ मील रास्ता पूरा हुआ। इस समय निकल्सनको मालूम हुआ कि सिपाही बहादुरगढ़ नहीं, नजफगढ़की ओर गये हैं। झट निकल्सन नजफगढ़की ओर बढ़े। शामके चार बजे नजफगढ़ नहरकी एक शाखा नहरके किनारे पहुंचकर निकल्सनने देखा कि सिपाही दूसरे किनारेपर लड़ाईके लिये तैयार हैं। नहरका पुल उनके बांये हाथ है, सामने एक सराय और बराबरमें दो गांव हैं। इन दोनों गांवोंपर सिपाहियोंका कब्जा था। उन्होंने दोनो गांवोंमें तीन, सरायपर चार और नहरपर तीन तोपें लगा रक्खी हैं। बाईं ओरके नजफगढ़ गांवपर भी कब्जा कर रक्खा है। पांच बजेके समय तमाम अंग्रेज़ी सेना नहर पार हुई। सिपाहियोंकी व्यूह रचना देखकर निकल्सनने सबसे पहले सरायपर हमला करनेका निश्चय किया। क्योंकि सिपाहियोंने जितने व्यूह बनाये थे उनमें सरायकीही प्रधान थी। निकल्सनने ६१ नं० गोरी सेनाको सम्बोधन करके कहा—"सर कोलिन काम्पबेलने तुमसे चिलियांवालाके संग्रामके समय जो कुछ कहा था, वह तुम्हें मालूम है और आल्मर (क्रीमियाकी छोटी नदी) के संग्राममें जो बात कही गई थी वह भी तुमने सुनी है। ये जो तोपें तुम्हारे सामने हैं उनकी तरफ आगे बढ़ते

हुए २०—३० गजके फासिलेतक गोलियां बरसाओ, इसके बाद संगीनें। बस हमारी फतह है।"*

अंग्रेज़ी तोपोंने सबसे पहले लड़ाई शुरू की। थोड़ेसे गोले बरसानेके बाद पैदल आगे बढ़े। सेनापति निकल्सन आगे २ और उनकी सेना पीछे २ गोलियां बरसाती हुई तोपोंसे २५ गजके फासिलेपर आ गये। यहाँसे सेनापतिने संगीनें चलानेका हुकम दिया। थोड़ी देरके घोर युद्धसे सिपाही तोपोंको छोड़कर पीछे हट गये, तोपोंपर गोरी सेनाका कब्जा हो गया। सिपाही बड़ी वीरतासे लड़े और पीछे हटे थे, पर हर जगह कीचड़ होनेके कारण वे अपनी तोपोंको न हटा सके। कीचड़के कारण गोरी सेना भी शीघ्रतासे उनपर हमला न कर सकी। जब गोरी सेना बाईं ओर मुड़कर, सराय और नहरके बीचमें तोपें जमाने लगी तब सिपाही सेना तोपें छोड़कर पुलपरसे भाग गई। १ नं० पंजाबी पैदल सेनाने नजफगढ़पर कब्जा कर लिया। पासके गांवमें थोड़े सिपाही थे, उनपर भी इसने हमला किया। पर उन्होंने इस वीरतासे आत्मरक्षा की कि अंग्रेज़ोंको और सेना भेजनी पड़ी।

विजयी होकर सेनापति निकल्सनने उस कीचड़में पड़ाव डाला। वे खाने पीनेकी रसद साथ न ला सके थे इसलिये भूखके मारे सेनाका बुरा हाल था। पानी कीचड़से परेशान और भूखसे व्याकुल सेना रात भर वहां पड़ी रही। दूसरे दिन नहरका पुल तोड़कर वे वापिस आये।

* Holme's Indian Mutiny. P. 378.

४ सितम्बरको शहरपर कब्जा करने योग्य तोपें आईं। सर जान लारेंस दिल्लीपर कब्जा करनेके लिये पंजाबका तमाम सामान भेज रहे थे। तोपोंके आ जानेसे सैनिकोंकी प्रसन्नता बढ़ी। करीब तीन महीनेतक दिल्लीपर सिपाहियोंका कब्जा रहा। इन तीन महीनोंमें बड़े २ रणशूर सेनापति दिल्लीके सामने पड़े रहे, किसीकी हिम्मत हमला करनेकी न हुई। पर अब उनकी हालत बदल गई। उनकी सहायताके लिये पंजाबका एक युद्धवीर सेनापति आ गया था। पंजाबकी बड़ी २ तोपें और गोरी सेनायें आ गई थीं। अब अंग्रेज़ सेनापतियोंको विश्वास हो गया कि दिल्लीपर कब्जा हो जायगा।

छठां अध्याय

कलकत्ता और बंगालमें गदर—यूरोपियनोंका डर और जोश—गवर्नर जनरलकी चिन्ता—सेनाओंका संगठन—स्वयंसेवक—बारकपुरके सिपाहियोंका हथियार ले लेना—अवधके नवाब—हथियारोंका कानून।
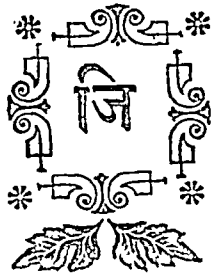
जिस समय उत्तरी भारतमें सुलगती हुई आग जल उठी थी, जब सेनापति हावेल और नील कानपुर और लखनऊकी ओर बढ़ रहे थे, जब सर जान लारेंस दिल्लीके उद्धारके लिये तोपें भेज रहे थे, उस समय करीब भारतके सभी भागोंमें यूरोपियन डर रहे थे, हर जगह उनकी जानका खतरा था। जब जीवन और सम्पत्ति इस तरह आपत्तिके बीचमें हो, उत्तेजित लोगोंके आक्रमणसे प्रतिपल नये और भयानक समाचार मिल रहे हों, हृदय निराशा और दुःखसे अवसन्न हो, उस समय सबकी नजर रक्षाकर्त्ता राजापर जाती है। उस समय यूरोपियनोंकी भी यही हालत थी। चारों ओर आपत्तियोंसे घिरकर, भयसे व्याकुल होकर, अंग्रेज़ गवर्नर जनरल लार्ड कैनिङ्गकी ओर देख रहे थे। गवर्नर जनरलका शान्त और निरुद्विग्न भाव बहुतोंके हृदयमें शान्ति पैदा करता था, बहुतसे

उनकी शान्तिको देखकर ऐसे विप्लवके लिये उन्हें अयोग्य समझते थे। कलकत्ताके अंग्रेज़ोंके हृदयोंमें यही भाव था। लार्ड कैनिङ्ग जिस समय चारों ओरसे विप्लवके समाचार। एकत्र करके उनपर विचार और उनके हटानेका उपाय सोच रहे थे, उस समय कलकत्ताके अंग्रेज़ डर रहे थे। पश्चिमोत्तर प्रदेशसे गदरके जो समाचार आये उनसे वे चिन्तित हुए पर इस चिन्तासे भी उनकी शान्ति दूर न हुई। जून मासमें उनकी चिन्ता अधिक बढ़ गई। इसी अवसरपर कलकत्ताके यूरोपियनोंने जैसी उत्तेजनाका परिचय दिया उससे उन्हें और भी अधिक आशंका हुई। पर इस तरहकी सब घटनायें मिलकर भी उनके दिमागपर काबू न कर सकीं।

उस समय भारतके भिन्न २ स्थानोंसे गवर्नर जनरलके पास जो समाचार आ रहे थे उन सबको सामने रखकर वे अपने कर्तव्यमें अग्रसर होते थे। पर उनके और सहायक पहले तो विपत्तिकी विकटताको ही न समझ सके। १६ मईको पश्चिमोत्तर प्रदेशके ले० गवर्नर कालविन साहबने गवर्नर जनरलको तार दिया कि, विपत्ति टल गई, आशा अच्छी है। इसके चार दिन बाद दिल्लीके कमिश्नर ग्रिथेड साहबकी बात उद्धृत करके उन्होंने फिर तार दिया कि 'और कुछ दिनोंमें विद्रोह बिलकुल दब जायगा।' पर इस तरहकी सब आशायें अन्तमें गलत साबित हुईं। दिनके बाद दिन बीतने लगे पर कहीं भी उत्तेजित सिपाहियोंको शान्त होते न देखा गया। पश्चिमोत्तर प्रदेशमें

गदरकी आग चारों ओर बढ़ गई। गवर्नर जनरल जिन समाचारोंपर विचार करते थे वे समाचार ही उन्हें सच्चे न मिलते थे। बहुतसे इस गदरको सिपाहियोंका बलवा समझते थे, पर स्थान स्थानपर सिपाहियोंके साथ उत्तेजित प्रजा भी दिखाई देती थी। यह देखकर अधिकारी आश्चर्यमें रह गये और अपने लुप्त राज्यके उद्धारकी कोशिश करने लगे।

अंग्रेज इतिहासलेखकोंमेंसे कइयोंने यह कहकर लार्ड कैनिंगपर आक्षेप किया है कि वे इस विपत्तिकी विकटताको न समझ सके थे। इस विपत्तिको रोकने योग्य उनमें शक्ति न थी। इस समय हेस्टिंग्स या मार्निंग्टनके समान गवर्नर जनरल-की आवश्यकता थी। जब अंग्रेज़ी राज्यका प्राधान्य नाश हो रहा था, जब तुच्छ व्यक्ति सरकारको हिला रहे थे, उस समय धैर्यकी सीमायें हिल उठी थीं। यह ऐतिहासिक शायद गवर्नर जनरलके धैर्यसे घबरा उठे थे। गवर्नर जनरलने उनके समान समग्र भारतको दोषी न समझा था। सारे आदमियोंका खून बहानेके लिये वे तैयार न हुए। भारतके अधिवासी अंग्रेज़ जब ज्ञानशून्य होकर चारों ओर भारतीयोंकी हत्याको शुभ समझ रहे थे उस समय लार्ड कैनिंगने सबके साथ मिलकर अपनी हिंसावृत्ति प्रगट नहीं की। इसी धैर्य और न्यायपरताके कारण अंग्रेज़ लेखकोंने उनकी निन्दा की है। इसीलिये अंग्रेज़ लेखकोंने उन्हें समयके अयोग्य गवर्नर जनरल कहा है।

पर गवर्नर जनरल इनके समान अयोग्य न थे। चारों ओरसे

समाचार एकत्र करके वे विचार और कर्त्तव्य निश्चय करते रहे। पश्चिमोत्तर प्रदेशसे उनके पास जो समाचार आये वे असम्पूर्ण और अपरिणामदर्शितासे भरे थे। जो समयपर उनके पास योग्य समाचार पहुंचते तो वे अनुकूल कार्य करनेमें बराबर अग्रसर रहते। पर इस तरहके समाचार मिलनेपर भी उन्होंने अपनी दूरदर्शितासे काम लिया। कलकत्तासे जो सेना भेजी गई उससे बनारस और इलाहाबादमें शान्ति हो गई। पर कानपुर और लखनऊकी आग न बुझी। सम्पूर्ण पश्चिमोत्तर प्रदेश शान्त न हुआ।

लार्ड केनिंग जैसे शान्त स्वभावके आदमी थे वैसे ही सहृदय भी थे। अपने देशवासियोंकी विपत्तिका खयाल करके वे सदा चिन्तित रहते थे। भिन्न २ स्थानोंके अंग्रेज़ जिस समय सहायताके लिये सेना मांग रहे थे, उस समय सबकी मांग पूरी करनेका उपाय ही न था। इस विषयमें गवर्नर जनरलने जून मासमें लिखा था—"राजधानीके अलावा अन्य भिन्न भिन्न स्थानोंके अंग्रेज़ सिपाहियोंके हाथोंसे नाश होकर तथा असभ्य लोगोंसे अपमानित होकर कातर भावसे जो सहायताकी प्रार्थना कर रहे हैं, उनकी प्रार्थना पूर्ण न करते हुए हृदयमें दुःख होता है। बड़े भारी देशमें थोड़ी सी सेना इधर उधर रखनेसे कोई मतलब नहीं।" दूसरे स्थानोंके यूरोपियनोंकी बातें सोच-कर लार्ड कैनिङ्गका हृदय इसी प्रकार चिन्तित हो रहा था। कानपुरके उद्धारके लिये वे निश्चेष्ट न थे। सेनापति हीलरकी

विपत्तिका उन्होंने अनुमान किया था। विपन्न सेनापतिका उद्धार उनके कर्त्तव्योंमें सबसे प्रथम था। उन्होंने दिल्लीके सेनापति बर्नार्डको कानपुरकी सहायताके लिये जानेको भी कहा था। पर गवर्नर जनरलका यह पत्र ठीक समयपर पहुंचा या नहीं इसका पता नहीं। यदि सेनापति बर्नार्डको गवर्नर जनरलका पत्र मिला होगा तो वे जरूर उससे विस्मित हुए होंगे। इलाहाबादकी सहायक सेनाका कानपुर पहुंचना और फिर वहांसे लखनऊकी रक्षा करना जैसा कठिन था उससे भी अधिक कठिन दिल्लीकी सेनाका कानपुर पहुंचना था। इस समय पश्चिमोत्तर प्रदेशकी घटनायें अधिकारियोंके सामने धुं-धली थीं। डाकका रास्ता रुका हुआ था। टेलीग्राफके तार कट गये थे। पंजाब और पश्चिमोत्तर प्रदेशमें क्या हो रहा है यह ठीक समयपर गवर्नर जनरलको मालूम न होता था। बहुत बार तो कलकत्तामें झूठे समाचार पहुंचते थे। एक बार उनके पास समाचार पहुंचता कि हम जीत गये, दूसरे ही क्षण तार आता कि हम संकटसे घिर गये। कई बार कलकत्तामें यह समाचार पहुंचा कि दिल्लीपर कब्जा हो गया। केवल कलकत्ता नहीं इलाहाबाद, आगरा, कानपुर और लखनऊतक यह समाचार पहुंचा। इसी समाचारसे कई स्थानोंके अधिकारियोंने तोपोंकी आवाजें करके अपनी प्रसन्नता भी प्रगट कर दी।

इस प्रकार समयपर समाचारोंके ठीक ठीक न मिलनेपर भी गवर्नर जनरलने जो पत्र लिखे हैं, उनसे मालूम होता है कि

वे अवस्थाको समझते थे और उन्हें हार्दिक दुःख था। भिन्न भिन्न स्थानोंसे जो पत्र उनके पास आते थे उनका वे उसी समय उत्तर देते थे। बहुत बार फौजी अधिकारी प्रबल हिंसाके वशीभूत होकर उन्हें पत्र लिखते थे। एक सेनापतिने सिपाहियोंके त्राससे व्याकुल होकर उन्हें कठोर दंड देनेका प्रस्ताव लिखकर भेजा। लार्ड कैनिंगने उसके उत्तरमें लिखा—"आप सिपाहियोंमें डर पैदा करना जरूरी समझते हैं, पर इस समयतक जो सैनिक अपने धर्म और जातिनाशकी आशंकासे, या अपने साथियोंके सामने अपमानित होनेके डरसे या दूसरे अपराधियोंके समान गोरी सेनाओं द्वारा नाशके भयसे नहीं डरे, उन सबको फिर शान्त रखना असम्भव हो जायगा। आपका भ्रमपूर्ण प्रस्ताव इस रोगकी दवा नहीं है। मैं आपको सावधान करता हूं कि सरकार-ने काम करनेका जो तरीका आपको समझा दिया है, उससे बाहर कोई काम न हो। उस तरीकेको सदा अपने सामने रखें। कठोर अत्याचारको शान्तिका उपाय न समझना।" लार्ड कैनिंग-के दूरदर्शी सहायकोंने भी इस मतका पोषण किया था। सर हेनरी लारेंसने जैसे लोगोंको जबानी अभयदान दिया, लोगोंके साथ सहानुभूति प्रगट की वैसे ही उन्होंने उसे कार्यरूपमें भी प्रगट किया। उन्होंने लिखा था कि—"हमारे कठोर दंडोंसे लोगोंमें शंका और उद्वेग अधिक दिनके लिये स्थायी हो जायगा। सर जेम्स आउट्रामने भी एक अफसरको अत्याचारके बदलेमें कठोर अत्याचार करते देखकर कहा था कि, व्यवस्थापक सभाके जो

सदस्य खून बहानेके अधिक पक्षपाती होते हैं वे ही मौकेपर वीरताशून्य कायर साबित होते हैं। जिस समय अंग्रेज़ोंकी हिंसावृत्ति इतनी जबर्दस्त हो गई थी उस समय बड़े बड़े अधिकारी शान्ति और न्यायका मार्ग दिखा रहे थे। यह गदर एक दिन या एक समयमें नहीं हुआ। भारतकी तमाम सिपाही सेना एक समयमें खड़ी नहीं हुई। अशिक्षित प्रजा भी मिलकर एकही समयमें सरकारके खिलाफ खड़ी नहीं हुई। गदरका बीज बहुत पहले बोया गया था, धीरे धीरे उसकी डालियाँ बढ़ी थीं और समय पाकर फल आया था। जब वह फल पका तब उसकी ज्वालासे अंग्रेज़ घबरा उठे, उनका धैर्य और सहिष्णुता सभी कुछ जाती रही। एक आदमीके हाथसे अपनी कौमका खून बहता देखकर वे सबको खूनका प्यासा समझने लगे। एकके अपराधकी सजा वे सबको देना अपना धर्म मानने लगे। उस समय यूरोपियनोंका यही विश्वास था। सफेद आदमी काले आदमियोंको समूल नाश करना चाहते थे।

यहां जातीय द्वेष देखकर लार्ड कैनिंगको हार्दिक दुःख हुआ था। इस तरहके विद्वेषभावसे परिणाम अच्छा कभी नहीं हो सकता। पश्चिमोत्तर प्रदेशसे जो समाचार उनके पास पहुंचे थे उनसे उन्होंने समझा था कि दोषियोंको सजा देते हुए घोर हिंसाके भावसे, उनसे बदला लिया गया था। इस तरहके हत्याकाण्डसे सम्पूर्ण प्रदेश कुछ समयके लिये श्रीहीन और दुःख दारिद्र्य युक्त हो जायगा। उन्हें यह भी ज्ञान था कि पश्चिमोत्तर-

प्रदेशके जिन सिविल कर्मचारियोंको नये कानूनके अनुसार सब प्रकारके अधिकार दिये गये हैं, उनका उन्होंने दुरुपयोग भी कम नहीं किया। यह समझ कर भी उन्होंने अधिकारियोंको अधिकार दिये। लाइन की लाइन खड़ी करके उन्हें फांसियां देना भी इस कानूनके अधिकारमें था। अपने देशवासियोंके उद्धारके लिये लार्ड कैनिंगने यह अधिकार भी दिया था। इससे मालूम होता है कि वे विपत्तिके महत्त्वको समझते थे। इसपर भी जिन लेखकोंने उन्हें समयके अयोग्य गवर्नर जनरल कहा है उनकी प्रकृति क्या चाहती थी सो समझा जा सकता है।

कलकत्ताके अंग्रेज़ोंके हृदय शान्त न थे। उन्होंने एक बार गवर्नर जनरलसे स्वयंसेवक बननेकी आज्ञा मांगी थी, पर वह न मिलनेके कारण वे उनपर जैसे विरक्त थे वैसे ही नाराज थे। प्रार्थियोंने फिर अपना निवेदन रक्खा, इस बार सरकारके एक प्रधान पुरुषने इसका समर्थन किया। इस बार लार्ड कैनिंग कोई आपत्ति न कर सके। उन्होंने कलकत्ताके अंग्रेज़ोंको स्वयंसेवक बनने और उनके योग्य सब बातोंकी आज्ञा दे दी। कर्नल कावेन उनके सेनानायक बने।

इससे अंग्रेज़ सन्तुष्ट हुए। इस सन्तोषके साथ उनकी एकाग्रता और उत्साह भी अधिक प्रगट हुआ। वकील, दलाल, व्यापारी, क्लर्क सब मिलकर युद्ध-विद्या सीखने लगे। गर्मीकी तीखी ज्वाला और वर्षाकी परवा न करके ये लोग रणकौशलमें निपुण होने लगे। इनमें एक हिस्सा पैदल और एक सवारोंका

बनाया गया। रणशिक्षा पाकर यह स्वयंसेवक सेना तैयार हुई। राजधानी कलकत्ताके गोरे सम्प्रदायका अभीष्ट सिद्ध हुआ। जो अशान्ति और अधैर्य उन्हें कस्ट दे रहा था उसकी कुछ शान्ति हुई। सरकारपर जो उनका क्रोध था वह जाता रहा। पर जून मासमें ही एक और सम्प्रदाय उनसे विरक्त हो गया। अखबारोंकी सत्ता सभ्य जातियोंपर सबसे अधिक होती है। सम्पादक लोग दूसरे देशके नेता और जनसाधारणकी रुचि बदलनेवाले समझे जाते हैं। ये लोग सरकारके कामोंका तीव्र विरोध करने लगे। भारतकी भाषाओंमें जो अखबार निकलते थे उनकी ग्राहकसंख्या भी कुछ न थी और जो कुछ थी वह भी कोई दूरदर्शी न थी। थोड़े पढ़े लिखे आदमियोंमें देशी भाषाके समाचारपत्रोंका प्रचार था। यदि ये थोड़ेसे आदमी या इनके पाठक उत्तेजित होते तो कोई हानि न थी। पर पाठकोंकी अपेक्षा श्रोताओंकी तादाद अधिक थी। जिस गदरके कारण अंग्रेज़ ज्ञानशून्य हो गये थे, जिसके कारण चारों ओर अशान्ति ही अशान्ति बढ़ती चली जा रही थी, उसकी खबरें जाननेके लिये पंडित मूर्ख और धनी दरिद्र सभी उत्सुक थे। इसलिये बाजार, घर और मुहल्लेमें जहाँ कोई अखबार दिखाई देता वहीं लोगोंकी भीड़ लग जाती थी। इस समय यदि वे अखबारकी कोई बात सुनते तो उसमें अपनी नई कल्पनाएं जोड़कर और भी जोशीला बना डालते। इस प्रकार अनिष्टकारी विषय एक क्षणमात्रमें गांवसे दूसरे गांव जा पहुंचता। अंग्रेज़ी

अखबारोंकी देखा-देखी देशी भाषाके समाचार पत्रोंकी उत्पत्ति हुई थी। गुणकी अपेक्षा अवगुणका अनुकरण सीधा होता है। समाचार-सम्पादकोंने इस गुणका और भी अधिक परिचय दिया। अंग्रेज़ी अखबारोंमें जो भड़कानेवाले समाचार होते उनका अनुवाद देशी भाषाके पत्रोंमें जोर शोरसे होने लगा। इनसे अशिक्षित प्रजाके भड़कनेकी बहुत सम्भावना थी। अंग्रेज़ी अखबारोंमें बहुत बार कल्पनासे काम लिया जाता था। सम्पादकोंका जोश भी कलमके रास्तेसे प्रगट होता था। मानों इस समय भारतवासियोंका खून ही उनका वांछनीय विषय था। इस द्वेषबुद्धि और हिंसावृत्तिसे प्रेरित होकर वे जो लेख लिखते थे वे शान्ति स्थापनके लिये बड़े अन्तराय सिद्ध होते थे। उन लेखोंका जब देशी भाषाके समाचारपत्रोंमें अनुवाद होकर सर्वसाधारण प्रजाके सामने आता तब वे अंग्रेज़ोंकी हिंसा-वृत्तिका परिचय पाकर उनकी ओरसे विरक्त और श्रद्धाहीन हो जाते थे। लार्ड केनिंगने इसको अच्छी तरह समझा था। १३ जूनको उन्होंने मंत्रिसभा एकत्र की। चालीस मिनिट सलाह होनेके बाद कानून बना कि एक सालतक सरकारसे लाइसेंस लिये बिना कोई छापाखाना न रख सकेगा। जरूरत मालूम होनेपर कलकत्ता गजटमें सूचना देकर सरकार किसी पत्र और पुस्तकका प्रचार रोक सकती है।

लार्ड केनिंग समदर्शी और उदार प्रकृतिके आदमी थे। उनके सामने अपराधके मौकेपर गोरे और काले समान थे।

छापेखानोंकी आजादी जैसी उन्होंने हिन्दुस्तानियोंकी छीनी वैसी ही यूरोपियनोंकी भी छीन ली। जो केवल हिन्दुस्तानी सम्पादकोंपर ही यह कैद होती तो बड़ा अन्याय होता। गोरे सम्पादक राजभक्त थे, वे भारतवासियोंपर अंग्रेज़ी राज्य हो जानेके पक्षपाती थे, उन्हें अंग्रेज़ोंके विरोधियोंसे कोई समवेदना न थी। इसी कारण अंग्रेज़ोंके सम्पादकत्वमें प्रगट होनेवाले पत्रोंका पक्षपात अंग्रेज़ कर सकते हैं। पर सच तो यह है कि अंग्रेज़ सम्पादक सबसे अधिक धैर्यहीन थे। उनकी विचार-बुद्धि और समदर्शिता तोपके गोलोंसे उड़ गई थी। भारतवासियोंके खिलाफ सरकार और गोरी प्रजाको भड़काना ही उनका एकमात्र उद्देश्य था। चाहे भ्रान्तिसे हो या अपरिणामदर्शितासे हो, वे अपने अखबारोंमें बहुतसी असंगत बातोंका भी प्रचार करते थे। चाहे जिस उपायसे हो हिंसाकी तृप्ति करना ही उनका उद्देश्य था। वे घटनाकी सत्यता या असत्यताका निर्णय न करते थे। सरकार और अधिकारियोंकी हिंसा जगानेके लिये जो कुछ उनसे लिखा जाता था वह लिख डालते थे। उदाहरणके तौरपर उस समयके 'हरकरा' नामक समाचारपत्रमें १९ जूनको एक समाचार निकला था—"मुर्शिदाबादके नवाबको गिरफ्तार करने बहरामपुरकी गोरी सेना गई है। सरकारने नवाबके जो कागज पत्र पकड़े उनसे मालूम हुआ है कि नवाब अपने प्रधान कर्मचारियों सहित विद्रोहमें शामिल है।" लार्ड कैनिंगने छापाखानाके कानूनके सम्बन्धमें लिखते हुए बोर्ड आफ कंट्रोलके

सभापतिको एक पत्रमें लिखा था,—"हरकराका यह समाचार सर्वथा निर्मूल है। नवाब हर तरहसे विश्वस्त और सरकारका भक्त है। अखवारमें ऐसी गलत बातें छप जानेपर भी नवाब पहलेकी तरह सरकारके विश्वासी रहेंगे, इसका पूरा भरोसा है। पर मुर्शिदाबादके धर्मान्ध मुसलमान इस समाचारसे स्थिर न रहेंगे। उन्होंने बहरामपुरके उत्तेजित सिपाहियोंके साथ मिलकर सरकारके खिलाफ खड़े होनेका आयोजन किया है। जो बहरामपुरमें इस अखबारका प्रचार न रोका गया तो वहांके मुसलमानोंका अंग्रेजोंके खिलाफ उठ खड़ा होना साधारण बात है। बहरामपुरको बचानेके लिये वहां गोरी सेना भेजी गई है। सिवा इस अखबारके लिखनेके वहां सेना भेजनेका और कोई कारण नहीं है। सेना जिस दिन वहां पहुंचेगी उससे दो दिन पहले यह अखबार जा पहुंचेगा।"* लार्ड कैनिंगने बहुत सोच विचारकर अपनी कार्यप्रणाली निश्चित की थी। उनका सीधापन इसीसे मालूम होता है।

चाहे नैसर्गिक विषय हो और चाहे मनुष्यकृत पर समयके साथ सब कुछ बदला करता है। अंग्रेज अपनी स्वाधीनताके लिये प्रेसको सबसे आगे रखते हैं। अखबारोंकी आजादी सबसे प्रबल मानी गई है। पर महान् घटनासे विचलित होकर इस स्वाधीनतापर भी सरकारको काबू करना पड़ा। इसके बाद जून मासका पहला और दूसरा सप्ताह आनन्दसे बीता। किसी

* Kaye's Sepoy War. Vol III. P. 21.

प्रकारकी गड़बड़ न हुई। पर इसी समय देखते २ कलकत्ताके गोरे निवासियोंमें फिर भयका संचार हुआ। जूनके दूसरे सप्ताहमें कलकत्ताके गोरे हथियारबन्द सिपाहियोंको अपना दुश्मन समझने लगे। इनके हथियार ले लेनेकी फिर उन्होंने पुकार मचाई। उनकी यह पुकार खाली न गई।

जिस समय दूसरे स्थानसे गोरी सेना कलकत्ता आई थी तब बारकपुरके सिपाही शान्त और राजभक्त थे। २५ मईको ७० नं० सिपाही सेना दिल्लीके सिपाहियोंसे युद्ध करनेके लिये जानेका आग्रह कर रही थी। सिपाहियोंकी इस राजभक्तिसे सब सन्तुष्ट थे। खुद लार्ड कैनिंगने बारकपुर आकर इन सिपाहियोंको उत्साहित किया। ७० नं० सेनाके समान ४३ नं० सेनाने भी दिल्लीके सिपाहियोंके विरुद्ध युद्ध करनेका प्रस्ताव रक्खा। ७० नं० सेनाके एक हिन्दुस्तानी अफसरने इस विषयमें साफ कहा था, "हमने अच्छी तरह विचार कर लिया, हम अब पश्चिमोत्तर प्रदेशकी ओर जाना चाहते हैं। जिस बन्दूक और कारतूसका इतने दिनसे आन्दोलन हो रहा है, वही राइफल, बन्दूक और कारतूस हमें दिये जायं। इस बन्दूकका व्यवहार करके हम सरकारके विश्वासी बन सकेंगे, जो हमसे मिलेंगे उन्हें समझा सकेंगे कि इस बंदूकके व्यवहारमें कुछ नहीं है, जो कुछ होता तो हम कैसे व्यवहार करते? क्या हमें अपनी जातिका खयाल नहीं है?"* इस बातसे सिपाहियोंकी विश्वस्तता और राजभक्तिका

* Kaye's Sepoy War. Vol III. P. 27 note.

परिचय जरूर मिलता है, पर बहुतोंको सन्देह होने लगा कि नई राइफल बंदूक लम्बी मारकी है, कहीं सिपाहियोंने नई बंदूक लेनेका यह जाल तो नहीं रचा है ? पर उस समय यदि सरकार बंदूक न देती तो सिपाहियोंका सन्देह बढ़ सकता था और नई बंदूकें लेकर सिपाही यदि बदल जाते तो भी सरकार संकटमें थी। पर सौभाग्यकी बात यही थी कि उस समय इतनी बंदूकें न थीं जो तीन सिपाही फौजोंको दी जा सकें। इसलिये सरकार सहजमें संकटसे बची।

पर एक सप्ताह भी बीतने न पाया था कि, नई बंदूकें देना तो दूर रहा ब्राँउनवस नामकी पुरानी बंदूकें लेनेका भी इरादा किया जाने लगा। सेनापति हेअर्सने ८ जूनको ४३ और ७० नं० सेनाओंके. नई बंदूक व्यवहार करनेके, प्रार्थनापत्र कलकत्ता भेजा। १३ जूनको उन्होंने गवर्नर जनरलको लिखा कि, आज रातको सिपाहियोंने सरकारके खिलाफ उठनेका षड्यंत्र रचा है। इसलिए बहुत शीघ्र इनके हथियार लेनेकी आवश्यकता है। गवर्नर जनरलने इच्छा न होनेपर भी आज्ञा दी। वे इतनी अधिक कठोरतासे काम नहीं लेना चाहते थे। पर आज्ञा देनेमें उन्हें जरा भी देर न हुई। उसी रातको कलकत्तासे एक गोरी सेना बारकपुरके लिये रवाना हुई। दूसरी चूंचड़ासे चली।

१३ जूनकी रात शान्तिसे बीती। उस रातको अंग्रेज़ बड़े चिन्तित हो उठे थे पर कुछ न हुआ। दूसरे दिन सवेरेही गोरी सेना वहां जा पहुंची। गोरी सेना थक गई थी। बहुतोंके पैरोंमें मोज़े

और जूते न थे, बहुतोंके पास केवल रातके पहननेके कपड़े थे। पैरोंमें छाले पड़ गये थे। ये भागते भागते जब ऐसी अवस्थामें बारकपुर पहुंचे तब वहां शान्ति थी इसलिये उसी समय हथियार लेनेकी जल्दी न की गई। दिन भर सब शान्तिसे पड़े रहे। शामको जब सब सिपाहियोंको परेटके मैदानमें जानेका हुक्म हुआ तब वहां पहुंचकर सबने देखा कि सामने तोपें भरी हुई लगी हैं और उनके पीछे गोरी सेना तैयार है। यह देखकर सब समझे। सेनापति हेअर्सने शान्तिके साथ हथियार डालनेका हुक्म दिया। सिपाहियोंने उसी तरह शान्तिसे हथियार रख दिये। उनके अंग्रेज़ अफसर इस दृश्यसे मर्माहत हुए। सिपाहियोंके समान उनके चहरे भी उदास हो गये। बहुतोंने सिपाहियोंको फिर हथियार देनेकी प्रार्थना की। पर इसका फल कुछ न हुआ। हथियार लेनेका काम शान्तिपूर्वक समाप्त हुआ। यह समाचार तार द्वारा गवर्नर जनरलको दिया गया। बारकपुरके सिपाही कलकत्ताके किले और दमदममें पहरेका काम करते थे। जब उनकी सेनाके हथियार ले लिये गये तब उनके हथियार लेने भी आवश्यक थे। इस काममें भी किसी तरहकी गड़बड़ न हुई। सब काम शान्तिपूर्वक हो गया।

१४ जूनको रविवार था। बारकपुरमें शान्ति रही। पर इस दिन कलकत्तामें बड़ी अशान्ति रही। न मालूम किस अफवाहसे डरकर सब यूरोपियन और ईसाई इधर उधर छिपने लगे। किसीको किसीकी सुध नहीं, सबको अपनी जान बचानेकी

चिन्ता थी। दलके दल यूरोपियन अपने बाल बच्चोंको साथ लिये फोर्ट विलियममें छिपनेके लिये आ रहे थे। एक कुहराम मच गया था। कारण यह था कि किसीने कहा था कि रातको बारकपुरके सिपाही सरकारके खिलाफ उठ खड़े हुए और अवधके नवाबके नौकर सिपाहियोंसे मिलकर यूरोपियनोंको मारते कलकत्ता आ रहे हैं। इससे कलकत्ताके सब यूरोपियन डरकर इधर उधर छिपने लगे। बहुतसे अंग्रेजोंने अपने साहसका परिचय दिया पर औरोंने इस साहसकी ओर आंख भी न उठाई। गवर्नर जनरलकी मंत्रिसभाके जो सभासद गदरकी बातें कह कहकर हँसी उड़ाया करते थे और सेनापतियोंपर कहकहे लगाते थे, उनके होश भी उड़ गये। वे भी अपने अपने घरोंकी रक्षाका प्रबन्ध करने लगे। बहुतसे यों घर छोड़कर न जाने कहां जा छिपे। अंग्रेज़ क्लर्क चौरंगीसे गंगाके किनारेकी ओर भागे। वहां जाकर वे विनीत भावसे किलाके भीतर घुसनेकी आज्ञा मांगने लगे। सवेरे सूर्योदयसे शहरमें यह भगदड़ मची। मेमें और गोरे बच्चे गाड़ियोंमें ठसाठस भर भरकर भागने लगे। अपनी जरूरीसे जरूरी चीज लेनेका भी उन्हें होश न था जो कपड़े वे शरीरपर पहने थे वे ही पहने वे भागने लगे। गंगाके किनारे बड़ा भारी मेला हो गया। इन लोगोंने किले और जहाजोंमें आत्मरक्षा करनेका निश्चय किया था। जो किलेकी ओर गये वे दरवाजेमें सबसे पहले घुसनेको बढ़ने लगे, जो गंगाके किनारे गये वे मलाहोंको सबसे पहले उन्हें

ले चलनेको कहने लगे। सक्युलर रोडके अंग्रेज़ोंके मकान खाली हो गये। बहुतोंको मकानोंके दरवाजे बंद करनेकी भी फुरसत न थी। खिड़कियां तो अक्सर खुली थीं। यदि चोर उस ओर जाते तो उन्हें जरा भी परिश्रम न करना पड़ता पर सिपाहियोंके डरसे चोर भी न मालूम कहां जा छिपे थे। यूरोपियन लोग अपने प्यारे कुत्ते बिल्लियोंतकको छोड़ गये थे।* मंत्रिसभाके सभासदतक घर छोड़कर जहाजोंपर जा चढ़े। देखते देखते तमाम किला इन भगोड़ोंसे भर गया। इस समय इनकी बुद्धि ठिकाने न थी, विचारका तो नाम भी न था। बहुतसे एक दूसरेसे कहते थे कि दिल्लीसे सिपाहियोंने कलकत्तापर धावा किया है। पहले वे बारकपुरके सिपाहियोंके आनेकी खबरोंसे डर रहे थे। अब दिल्लीके सिपाहियोंका नाम सुनकर तो होश उड़ गये। चौरंगी और खिदरपुर खाली हो गया, किला और तमाम जहाज भर गये, जो मकान मजबूत और ऊंचे थे उनमें हजारों आदमी जा भरे। होटलोंकी रक्षाका प्रबंध किया गया था। जहाजोंके मल्लाह हथियार लेकर रास्तोंपर घूमने लगे। ये लोग शराब पीनेके लालचसे प्रसन्न थे। भारतवासियोंको बड़ी संदेहकी दृष्टिसे देखा जाने लगा। कलकत्ताके इस (१८५७ की १४ जून रविवारके) दृश्यको कोई भूल नहीं सकता। दूसरे दिन सबको मालूम हुआ कि खबर गलत थी,

* Sepoy War. Vol III. P. 32 note.

सब अपनी जान बची समझकर वापिस आने लगे। दूसरे दिन सवेरे सब वापिस आ गये।*

रविवारका डर जाता रहा। सोमवारको फिर नियमसे काम होने लगा। पर सोमवारका दिन बीता भी नहीं एक और चिरस्मरणीय घटनाका उदय हुआ। कई दिनोंसे अफवाह उड़ रही थी कि कलकत्ताके पास अवधके नवाब वाजिदअली शाहके नौकर किलेके सिपाहियोंको भड़कानेकी कोशिश कर रहे हैं। अब बहुतसे इस पदभ्रष्ट नवाबको विद्रोहियोंका सहायक बताने लगे। कलकत्ताके सेनापति कर्नल कावनको समाचार मिला कि नवाबके नौकर किलेके सिपाहियोंसे मिला करते हैं और अवधके प्रधान ताल्लुकदार राजा मानसिंह कलकत्ता आकर नवाब वाजिदअली शाह और उनके मंत्रियोंसे मिले।† यह समाचार सच हो या न हो या यह संभव है कि नवाबके नामसे उनके अदूरदर्शी नौकर कुछ कर रहे हों पर गवर्नर जनरलने शीघ्र ही इसका उपाय सोचा। नवाब वाजिदअली शाह और उनके चार मंत्रियोंको कैद करनेका निश्चय किया गया।

इस कठोर कार्यका भार परराष्ट्रसचिव एडमनस्टनके जिम्मे हुआ। एडमनस्टन साहब कुछ अंग्रेज़ अधिकारी, कुछ गोरी सेना और पुलिस लेकर दल बल सहित नवाब साहबके स्थान-

* Kaye's Sepoy War. Vol III. P. 35 note.

† Kaye's Sepoy War. Vol III. P. 36.

पर पहुँचे। मकानको सेनाने घेर लिया। अफसरोंके साथ एड-मनस्टन भीतर गये। नौकर सोतेसे उठे थे। हथियारबंद अंग्रेज़ सैनिकोंको देख कर उन्होंने बाधा न दी। उनके हृदयमें शंका और आश्चर्यका उदय हुआ। पहले वे नवाबके मंत्री अली नकी खांके घर गये। अली नकी और दूसरे मंत्री कैद हुए। हथियारबंद सिपाहियोंके साथ इन्हें ओचीलोलाके पास खड़े हुए जहाज़पर भेज दिया गया।

इसके बाद एडमनस्टन नवाब साहबके महलपर पहुँचे। नवाब वाजिदअली शाहने गवर्मेण्टके सेक्रेटरीसे मिलनेके पहले स्नान करके नमाज़ पढ़ी। इसके बाद एडमनस्टन और उनके साथियोंको नवाब साहबके कमरेमें जानेकी आज्ञा मिली। नवाब साहब अपने आदमियों सहित एक चौकीपर बैठे थे। नवाब साहबने सेक्रेटरीको सादर बैठनेको कहा। सबके बैठनेपर एड-मनस्टनने नवाबसे कहा—"गवर्नर जनरलको समाचार मिला है कि, गुप्तचर आपका नाम ले लेकर हर जगह सिपाहियोंको सरकारके विरुद्ध उभार रहे हैं। इसलिये गवर्नर जनरलने मुझे भेजा है कि आप मेरे साथ कलकत्ता पधारें।"

सरकारके परराष्ट्रमंत्रीके मुँहसे यह बात सुनकर नवाब वाजिदअली शाह अपनी निर्दोषिता साबित करने लगे। पर एड-मनस्टनने केवल यही कहा कि, मैं इसपर बहस नहीं करता, सरकारकी आज्ञाका पालन करने मैं आया हूं। फिर नवाब साहबने कोई बात न कही। वे एडमनस्टनके कन्धेपर हाथ रख-

कर महलसे उतरे। बाहर गवर्नर जनरलकी गाड़ी खड़ी थी उसमें सेक्रेटरीके साथ बैठ गये।

नवाब साहबको लिये हुए गाड़ी किलेकी ओर चली। जब वे अपने महलसे उतरे तब उनके मुखसे किसी विशेष भावका पता न लगता था, पर जब गाड़ी किलेकी ओर जाने लगी तब इस लकड़ीके खिलौनेको अपने पतनपर तरस आया। उनकी दोनों आँखोंसे आँसुओंकी धार बहने लगी। वे आंसू बहाते हुए अपने पूर्वपुरुषोंकी सरकारको दी हुई सहायता, उनका पद गौरव और अपने अधःपातका बखान करते हुए कहने लगे—"जिस दिन मेरे पीछे २० लाख आदमी थे उस दिन मैंने सरकारकी मुखालफत नहीं की। आप जनरल आउट्रामसे दरियाफ्त करें, मैंने कितनी सीधी तरहसे अपना राज्य उनके हाथ सौंपा था, पर मुझे अब भी चैन नहीं लेने दिया जाता!" थोड़ी देरतक नवाब साहब चुप रहे। वे बड़े आश्चर्यमें थे। उनके गुलूबंदपर कुरानकी कुछ आयतें लिखी थीं। उन्हें देखकर वे फिर आंसू बहाते हुए बोले—"जब मैंने हरकरा अखबारमें पढ़ा कि मुझपर सरकारके खिलाफ सिपाहियोंको बहकानेका दोष लगाया गया है तब मैंने पवित्र ग्रन्थ कुरानकी कसम खाकर कहा था कि मैं सब बातोंसे निर्लिप्त हूं।" एडमनस्टनने कहा कि वे इज्जतके साथ रक्खे जायँगे। नवाब साहब चुप रहे। किलेमें वे ८ बजे पहुँचे। उनकी रक्षाका भार अंग्रेज सेनापतिको दिया गया।

इस प्रकार १५ जूनको नवाब वाजिदअली शाह अपने तीन मंत्रियों सहित फोर्ट विलियम किलेमें कैद हुए। वे किलेके भीतरवाले भवनमें रक्खे गये। सिवा अफवाहके इस बातका कोई सबूत न था कि नवाब साहब किसी तरहके षड्-यन्त्रमें शामिल थे। एक दूरदर्शी अंग्रेज़ (लंडन टाइम्सके सम्वाद दाता रसेल) ने लिखा था कि, नवाबके कामोंसे कोई उन-पर शक तक नहीं कर सकता कि वे किसी तरहके विद्रोहमें शामिल होंगे। जब अवध लिया गया तब केवल नवाब वाजिद-अली शाहके सबबसे ही बलवा नहीं हुआ। एक इतिहास लेखकने लिखा है—"गदरके मौकेतक नवाब साहबने सरकारसे पेंशन लेना मंजूर न किया। वे कहते थे कि मैं अंग्रेज़ोंका कैदी बन सकता हूं, पर पेंशनखोर बनना नहीं चाहता। इससे मालूम होता है कि उन्हें कितना आत्माभिमान था। जब नवाब साहबने कानपुर और लखनऊके गदरकी कथा और वहाँके हत्याकांडकी बातें सुनीं तब वे समझे थे कि, उनके राज्यमें जो कुछ हूकूमतकी खराबियाँ थीं उनका फल सामने आया है। जो कहीं इस समय अवध राज्य नवाब साहबके पास होता तो जैसे और राजाओंने सरकारकी मदद की थी वैसे ही अवधसे भी मदद मिलती। पर सरकारके ले लेनेके कारण वही राज्य दुश्मन हो गया। वाजिदअली शाहको बदला लेनेका खयाल होता तो वे कैद होनेपर भी बदला ले सकते थे। पर वे बदला चाहते ही न थे। नवाब साहबने अच्छी तरह समझा था कि मेरे आलस्यने

हाथसे राज्य खो दिया—उन्होंने यह भी समझा था कि जो दोष मुगलोंमें है वह अंग्रेज़ोंमें नहीं है।" *

बारकपुरके सिपाहियोंके हथियार लेने और वाजिदअली शाह-के कैद होनेसे कुछ दिनके लिये कलकत्ता शान्त हो गया। यूरो-पियन कुछ समयके लिये निश्चिन्त हो गये। जब मद्रासके सेना-पति ग्रान्टने कलकत्ता आकर प्रधान सेनापतिका पद ग्रहण किया और सेनापति हावेलने उत्तरकी यात्रा की तब उनकी जानमें जान आई। पर यह सन्तोष भी अधिक दिन न टिका। वे फिर लार्ड कैनिंगके धैर्यसे विरक्त होने लगे। पर लार्ड कैनिंग अपने कर्त्त-व्यका पालन कर रहे थे। वे स्थान स्थानसे सेना संग्रह कर रहे थे। जो सेना वे एकत्र करते वह शीघ्रही पश्चिमोत्तार प्रदेशकी ओर भेज देते। उन्होंने इंगलैंडके अधिकारियोंको सेना भेजनेके लिये लिखा। इसके अलावा उन्होंने दूसरी बातोंकी ओर भी कम ध्यान नहीं दिया। खर्चकी दूसरी मद्दें रोककर वे फौजी खर्च बढ़ाने लगे। पलासीकी लड़ाईका सौवां वर्षदिन आया और चला गया। पर अंग्रेज़ोंकी नजर इस समय सरकारके कामोंपर थी। जो अपने आपको सरकारका उपदेशक समझते थे वे शान्त न थे। श्रीरामपुरके "फ्रेंड आफ इंडिया" नामक समाचारपत्रमें पलासीके सौवें वार्षिकोत्सवके उपलक्ष्यमें एक लेख प्रकाशित हुआ। इस लेखमें भारतवासियोंको जैसा हीन बताया गया था उससे गवर्नमेंटने समझा कि प्रजा भड़क सकती है। इसी कारण

* Martin's Indian Empire. Vol II. P.275.

उसे चेतावनी दी गई। पर इसपर कुछ ध्यान न देकर फिर सम्पादकने एक लेख लिखा। इस लेखमें सर्वसाधारणको शान्त करते हुए लेखक खुद अशान्त हो गया था। गवर्नमेंटने इसे कानूनन बंद करना चाहा पर उसके अधिकारियोंने सम्पादक बदल दिया। इसलिये मामला यहींतक रहा।

पर ऐसी शान्ति और धैर्यका परिचय देकर भी लार्ड कैनिंग यूरोपियनोंके प्रशंसाभाजन न बन सके। सप्ताहके बाद सप्ताह बीतने लगे, प्रतिसप्ताह पश्चिमोत्तर प्रदेशसे अधिकाधिक भयानक खबरें आने लगीं। अंग्रेज़ जिनको अपना दासानुदास समझते थे, जिन्हें अपने पैरोंके नीचे दबाये रखना ही उनकी मंशा थी, उनको ही यों सामने उठते और उनके हाथों अपनी कोमलांगी स्त्रियों और बच्चोंका नाश करते देखकर वे बदलेके लिये अधीर होने लगे। पश्चिमोत्तर प्रदेशसे जो अंग्रेज़ भाग भागकर कलकत्ता पहुँचने लगे वे उन्हें भयानक घटनायें सुना सुनाकर और अधिक विचलित करने लगे। गवर्नर जनरलका धैर्य देखकर उन्हें उनके धैर्यपर क्रोध आने लगा। वे सम्पूर्ण भारतको मनुष्यशून्य करनेके पक्षपाती बनने लगे। पर गवर्नर जनरलका यह भाव न था। वे उत्तेजित होकर खूनकी नदियां बहाना नहीं चाहते थे। इससे नाराज होकर अंग्रेज़ आपसमें सलाह करने लगे कि इंग्लैंड एक प्रार्थनापत्र भेजा जाय जिसमें लार्ड कैनिंगका इस्तीफा लेनेका अनुरोध हो।

पर अपने देशवासियोंके शोर मचानेपर भी गवर्नर जनरलकी

शान्ति पहलेके समान ही रही। वे अपने गौरवके साथ काम करते रहे। अंग्रेज़ जितने ही अधीर होकर क्रोधित होने लगे उतनीही अधिक सावधानीसे वे अपना काम करने लगे। ज्यों ज्यों समय बीतने लगा त्यों त्यों भारतके अंग्रेज़ोंका क्रोध बढ़ने लगा। इन उत्तेजित और क्रोधित अंग्रेज़ोंके हाथसे लार्ड कैनिंगने भारतवासियोंकी रक्षाका पक्का निश्चय किया। इन लोगोंका क्रोध इतना बढ़ गया था कि जो इनके रास्तेमें किसी प्रकारकी बाधा न होती तो वे भारतको एक सिरेसे मनुष्यरहित करना शुरू कर देते। लार्ड कैनिंग इन क्रोधित अंग्रेज़ोंके मार्गमें सबसे बड़े बाधक थे। जुलाई मासके अन्तमें बंगाल और पश्चिमोत्तर प्रदेशके सरकारी कर्मचारियोंके नाम आज्ञा निकली—जो रेजीमेंट सरकारके विरुद्ध नहीं खड़ी हुई उसके हाथमें यदि हथियार न हों, जो सिपाही सरकारके खिलाफ खड़े हुए पर अफसरों आदिकी हत्यासे जिनका सरोकार नहीं वे यदि बिना हथियार हों जिन्होंने सरकारके खिलाफ लड़ाई की, अफसरोंको मारा या इसी तरहका और कोई अपराध किया तो उन सबका विचार फौजी अदालतमें होगा, पर सज़ा बिना सरकारकी आज्ञाके न दी जायगी। इस हुक्ममें अपराधियोंके छोड़नेका कहीं जिक्र नहीं है। इस हुक्मसे सरकारकी मंशा अपराधियोंको सज़ा देने और निरपराधियोंको छोड़नेकी है। कलकत्ताके यूरोपियनोंने भारतवासियोंपर फौजी कानून जारी करनेकी प्रार्थना की थी पर सरकारने प्रार्थना स्वीकार न की। अन्तमें

वे कहने लगे कि सिपाहियोंके पास बाहरसे हथियार आ रहे हैं, उनका आना रोकना चाहिए। इसको रोकके लिये गवर्मेंटने हथियार न रखनेका कानून (आर्म्स एक्ट) बनाया। इस कानूनके अनुसार हर एक विभागके अधिकारियोंको सारी प्रजाके हथियारोंकी सूची बनानेका अधिकार मिला। इस सूचीकी आवश्यकताके अनुसार हथियार रखनेके लिये लाइसेंस देनेका अधिकार मिला। लार्ड कैनिंगने यह कानून भारतके हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सबके लिये बनाया था। पर अंग्रेज़ इससे भी उनपर प्रसन्न न हुए। वे कोई बात ऐसी न चाहते थे जिससे उनको नीच हिन्दुस्तानीके बराबर समझा जाय। वे भारतवासियोंको मन, वचन, कर्मसे ठुकराना चाहते थे। पर लार्ड कैनिंग अन्यायी न थे, वे सबको एक नजरसे देखते थे। वे समझते थे कि इस समय जिन जमींदार तालुकदारों और राजा महाराजाओंने सहायता की है उनके साथ यूरोपियनोंको बराबर न रखनेसे उनके मनमें विद्वेष पैदा होगा। इसलिये उन्होंने काले गोरोंके लिये एकही कानून बनाया। पर इससे अंग्रेज़ोंके क्रोधकी सीमा न रही। इसकी सीमा यहींतक न रही, बल्कि यूरोपियनोंकी दयासे इंग्लैंडके समाचारपत्रोंमें भी आन्दोलन शुरू हुआ। और वहांके पत्रोंने लार्ड कैनिंगको दयालु कैनिंग लिखा।

चाहे अंग्रेज़ अपने जातीय क्रोधके कारण उन्हें बुरा कहें, पर उस समय हिंसा सवार होनेके कारण अंग्रेजोंमें विचारशक्ति न थी। वे न्याय अन्याय और भले बुरेको न देखते थे। पर लार्ड

कैनिंगने जो कुछ किया था, उसे बहुत सोच विचारकर धैर्यके साथ किया था। दोनों ओरके प्रबल झकोरे सहकर भी वे शान्त थे। अबतक उनके शरीररक्षक हिन्दुस्तानी थे। हथियार लेकर वे गवर्नर जनरलके साथ रहते थे। कई बार इनके हथियार लेनेका प्रस्ताव उनके सामने रक्खा गया पर वे सहमत न हुए। उनके महलकी रक्षाके लिये गोरे सैनिक तैयार थे, पर उन्होंने भारतीय सिपाहियोंको ही अपने महलका रक्षक बना रक्खा था। जिनके भाइयोंने अंग्रेज़ोंका खून बहाया था, जो सरकारके खिलाफ युद्ध कर रहे थे, उन्हींके हाथमें गवर्नर जनरलने अपनी जान दे रक्खी थी। इससे उनका महत्व प्रगट होता है। इससे वे यह सिद्ध कर रहे थे कि उन्हें इस देशकी सेनाओंपर अब भी विश्वास है। उनके मंत्रियोंने इस विषयमें सावधान होनेके लिये बार २ नम्रतासे अनुरोध किया पर उन्होंने कभी अनुरोधपर ध्यान न दिया। अन्तमें जब बंगालके लेफ्टिनेंट गवर्नर हालिडे साहब नैनीतालसे कलकत्ता आये तब उनके बहुत अनुरोध करनेपर अनिच्छासे लार्ड कैनिंगने माना। सितम्बर मासके पहले दिनसे हिन्दुस्तानियोंके स्थानपर गोरे शरीररक्षक नियत हुए। हिन्दुस्तानी सिपाहियोंकी जगह महत्वकी रक्षापर भी गोरे तैनात हुए।

१ अगस्तको सर जेम्स आउट्राम फारसकी लड़ाई जीतकर कलकत्ता पहुँचे। इनके आनेके सात दिन बाद जहाजी सेनाध्यक्ष कप्तान पील भी आ पहुँचे। १३ अगस्तको सर कोलिन कैम्पबेलने

आकर प्रधान सेनापतिका अधिकार ग्रहण किया। लार्ड एलगिन चीनके युद्धमें जा रहे थे, पर वे भी पीलके जहाजमें कलकत्ता आ पहुँचे। ये लार्ड कैनिंगके सहपाठी थे। इन सब वीरोंके आ जानेसे वे निश्चिन्त हुए। उन्हें केवल पश्चिमोत्तर प्रदेशकी ही चिन्ता न थी, वे मध्य प्रदेश और बंगालके लिये भी चिन्तित थे। वे निरन्तर दिन भर और राततक काम करते थे, चारों ओरसे यूरोपियन सम्प्रदायकी निन्दाकी बौछार उनपर होती थी, फिर भी शान्त रहकर वे अपने कर्त्तव्यमें अग्रसर होते थे।
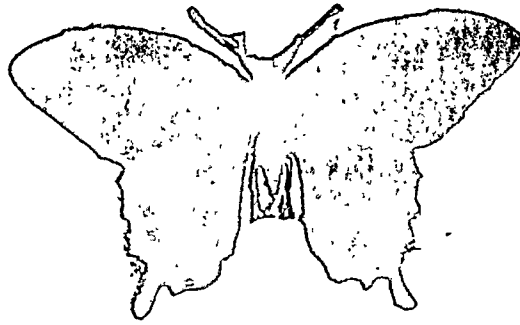
सातवाँ अध्याय

बिहारमें गदर—बिहार—दानापुरके सिपाही—पटना—दानापुरकी घटना—कुँवरसिंहका सिपाहियोंसे मिलना—कप्तान डनवर-विनसेंट-आयर—जगदीशपुरका विध्वंस—कुँवरसिंहकी शसराम यात्रा—भिन्न भिन्न स्थानोंपर उनका पहुँचना—अंग्रेजी सेनासे उनका युद्ध—उनका रणकौशल—घायल होना—जगदीशपुरमें अंग्रेजी सेनाकी हार—कुँवरसिंहका शरीरान्त—अमरसिंह ।

सन् १८५३ के कानूनके अनुसार बंगाल, बिहार और उड़ीसाका शासन एक लेफिटनेंट गवर्नरके अधीन था। पैदावार, जनसंख्या और जमीनके अनुपातसे ये तीनों प्रदेश भारतमें प्रसिद्ध हैं। इनमें बहुतसी नदियां, बहुतसे पर्वत और बहुतसे प्रसिद्ध वन हैं। तीनोंका प्राचीन इतिहास है, तीनों गौरवपूर्ण इतिहासकी सामग्री हैं। दिग्विजयी पाल और सेन वंशोंने इन प्रान्तोंसे भारतका शासन किया था। मौर्य-वंशियोंका सिंहासन यहीं था जिन्होंने पंजाबसे तामिल देशतक-का राज्य किया था। चन्द्रगुप्त और अशोकका शासनचक्र यहींसे चलता था। राजनीतिके धुरन्धर आचार्य महामति चाणक्य जैसे पुरुष यहीं पैदा हुए थे। पीछेसे बंगाली और

उड़ीसावासी अपनी भीरुताके कारण युद्धसे हाथ खींच बैठे पर बिहारी वीर फिर भी सैनिक थे। पटनामें मुसलमानोंकी तादाद खासी थी, दानापुरमें पुरबिया सिपाहियोंकी सेना थी। इन सबमें ज़ोश था, इस जोशकी लहरमें बिहार प्रान्त "युद्धं देहि" कह सकता था। बिहारके अनेक जिलोंमें नीलकी खेती होती थी। इस खेतीके करानेवाले यूरोपियन थे। स्थान स्थानपर नीलकी कोठियां थीं। इसके अलावा सरकार अफीमकी खेती कराती थी। पटनामें सरकारी अफीमका गोदाम था। बहुतसे अंग्रेज़ अफीमके लिये ही अफसर थे। पटनाके कमिश्नर टेलर साहबने सरकारको लिखा था कि तिरहुतके अंग्रेज़ अपनी रक्षाके लिये सरकारसे सहायता चाहते हैं। उनका विश्वास है कि वहांकी सर्वसाधारण प्रजा अंग्रेज़ोंके विरुद्ध उठकर विप्लव करेगी। बक्सर और शाहाबादके आदमी दानापुर जायंगे। पटनाके कमिश्नरने बिहारियोंके सम्बन्धमें यही कहा था। बिहारके अंग्रेज़ वहाँकी प्रजाको सरकारके विरुद्ध इतना ही उत्तेजित समझते थे। इन लोगोंका दृढ़ विश्वास था कि यदि दानापुरके सिपाही उठकर पटना आवेंगे तो वे वहाँका खजाना और अफीमका गोदाम लूटकर नीलके कोठीवाले गोरोंकी हत्या करने तिरहुतकी ओर धावा करेंगे। इससे सम्पूर्ण बंगाल हिल उठेगा। बागी सिपाही मुर्शिदाबाद पहुँचकर नवाब नाजिमको फिर सिंहासनपर बैठायगे। मुगल राजधानी दिल्लीमें जो कुछ हुआ वही बंगालकी प्राचीन राजधानी मुर्शिदाबादमें होगा। ऐसी हालतमें दानापुर-

के सिपाहियोंके हथियार लेना ही सबसे अच्छा काम है। इस समय दानापुरमें १० नं० गोरी पैदल सेना, ७,८ और ४० नं० सिपाही पैदल सेना और एक सिपाही गोलंदाज सेना थी। मेजर जनरल लायड नामक एक वृद्ध सेनापति सबके मालिक थे। कमिश्नर टेलर साहबने यूरोपियनोंके विश्वासके कारण सिपाहियोंके हथियार ले लेना ही उचित समझा था। पर गवर्नर जनरलने एकाएक इसमें सम्मति न दी।

बहुतसे समझेंगे कि यह लार्ड कैनिंगकी गलती थी जो उन्होंने चार सिपाही सेनाओंको ऐसे स्थानपर हथियारबन्द रहने दिया। बिहार और उत्तरी बंगालके गोरे इनके हथियार लिये जानेसे निरापद होते। पर भारतके गवर्नर जनरलकी दृष्टि इस समय किसी एक व्यक्ति या एक सम्प्रदायपर न थी। सम्पूर्ण भारतका शासन उनके सामने प्रधान बात थी। वे यह जानते थे कि दानापुरकी चार भारतीय सेनाओंके हथियार लेनेसे बिहार प्रान्तके यूरोपियन शान्त हो सकते हैं पर इससे अधिक डर उन्हें तमाम बिहार और उड़ीसाके अशान्त हो जानेका था। गोरोंको शान्त करते हुए इतनी बड़ी अशान्ति जगाना उन्हें इष्ट न था। कलकत्ताको छोड़कर बंगाल, बिहार और उड़ीसाके बड़े भारी प्रान्तमें केवल दानापुरमें एक गोरी सेना थी। अंग्रेज़ी राज्यकी रक्षा सिपाहियोंसे ही हो रही थी। यदि दानापुरके सिपाहियोंके हथियार लिये जाते तो बंगालकी अन्य सिपाही सेनायें भी अपने लिये चिन्तित हो उठतीं। सिपाहियोंका

यह विश्वास हो गया था कि हथियार लेनेके बाद या तो गोरे हमें गोलियोंसे मार डालेंगे या जहाजमें भरकर किसी बीरान टापूमें हमें जाकर छोड़ देंगे। इसलिये जहां उन्हें हथियार लेनेका शक हुआ वहीं उन्होंने गदर किया। जो दानापुरके सिपाहियोंके हथियार लिये जाते तो सारे बंगालके सिपाही इसी आशंकासे, बिगड़ खड़े होते। लार्ड कैनिंगके यही विचार थे।

लार्ड कैनिंगने दानापुरके सेनापतिको जो पत्र लिखा उससे प्रगट होता है कि वे इस प्रान्तको भयशून्य समझते थे। वे लिखते हैं—"यद्यपि इस समय सिपाहियोंकी राजभक्तिपर किसीका वैसा विश्वास नहीं है फिर भी मेरा पक्का खयाल है कि जबतक उनके सामने किसी लोभ या उत्तेजनाका कारण न होगा, तबतक वे शान्त रहेंगे।" यह गवर्नर जनरलकी उक्ति सर्वथा ठीक थी। कुछ दिन बाद सिपाहियोंके सामने उत्तेजनाका कारण भी आ गया। बनारसके सिपाहियोंसे हथियार ले लिये गये। यह खबर दानापुरके सिपाहियोंने सुनी, पर वे शान्त रहे, किसी तरहकी अशान्तिका उन्होंने परिचय न दिया। इसके बाद छपरा और आरासे पटनामें २० लाख रुपये गये। यह दूसरा लोभ उनके सामने था, पर इसपर भी वे शान्त रहे। सेनापतिका विश्वास हुआ कि उसके अधीन सिपाही अपने नमककी लाज रक्खेंगे।

ऊपरी शान्ति होनेपर भी सिपाहियोंके चित्त अशान्त थे। उन्हें समाचार मिला था कि जहाजसे उतरकर बहुतसी गोरी

सेना यहां आवेगी और वह आकर उनके हथियार लेगी। यह समाचार कहांसे पैदा हुआ और किसने प्रचलित किया सो मालूम नहीं। समाचार केवल अफवाह होनेपर भी सिपाही डर गये। सेनापतिने सिपाहियोंको समझाया कि यह बात बिलकुल गलत है। पर सिपाहियोंके हृदयोंमें जो शंका घुस गई थी, वह न निकली, एकाएक किसी प्रकारकी गड़बड़ न करनेपर भी वे निश्चिन्त न हुए तथा गोरे सैनिकोंको भी वे शंकाकी दृष्टिसे देखने लगे।

पटनाके कमिश्नर टेलर साहब दूरदर्शी राजनीतिज्ञ थे, पर वे समवेदना और न्यायपरताकी परवा न करते थे। अधिक दिन इस प्रदेशमें रहकर निवासियोंकी प्रकृतिसे परिचित होनेपर भी सहृदयताने उन्हें कोमल न किया। मस्तिष्ककी शक्तिसे उन्नत होनेपर भी हृदयकी शक्ति उनमें न थी। जब बिहार प्रान्तके निवासी उत्तेजित थे, सिपाहियोंमें बेचैनी फैल रही थी, चारों ओर आग जल रही थी, उस समय दीवानी और फौजी अधिकारियोंको सोच समझकर काम करना चाहिये था, दोनोंको मिलकर सोचना चाहिए था। पर बिहारके उच्च कर्मचारियोंमें इस ऐक्यके दर्शन न हुए। जो फौजी अधिकारी हैं, नरहत्या और तोप बंदूक जिनका खिलौना है, रणभूमियां जिनकी क्रीड़ाभूमि हैं उनका कठोर होना सहज बात है। पर मुल्की मामलात और रक्षाका काम जिनके हाथमें है उनका सहज कोमल होना आवश्यक है। जिस समय दानापुरके फौजी अधिकारी भारत-

वासियों और अंग्रेज़ोंमें सद्भावकी स्थापना कर रहे थे उस समय पटनाके कमिश्नर लोगोंको फांसीपर लटका रहे थे।

टेलर साहब जिस विभागके कमिश्नर थे उसमें पटना, विहार, सारन, शाहाबाद, तिरहुत और चम्पारन नामक छः जिले थे। इन छहों जिलोंकी कचहरियां क्रमसे पटना, गया, छपरा, आरा, मुजफ्फरपुर और मोतिहारी थीं। इन सब स्थानोंपर जज, मजिस्ट्रेट, कलेक्टर और अफीम विभागके अधिकारी रहते थे। इन्हींकी अधीनतामें जेलखाना, खजाना और अफीमका गोदाम रहता था। नजीब नामक सशस्त्र पुलिस इन सब स्थानोंकी रक्षक थी। अधिकारियोंका विश्वास था कि यदि सिपाही विद्रोही हो भी गये तो यह पुलिस सेना राजभक्त रहेगी। जब दिल्लीका समाचार पटना पहुंचा और वहांके मुसलमान निवासियोंने सुना कि दिल्लीपर सिपाहियोंका अधिकार हो गया, उन्होंने बूढ़े मुगल बादशाहको फिर भारत-सम्राट् बना दिया, वहांके अंग्रेज़ मारे गये तब मुसलमानोंमें उत्तेजना फैलनी शुरू हुई। कमिश्नरका खयाल हो गया कि पटनामें जैसी उत्तेजना है, वैसीही प्रान्तभरमें है। यह बात उन्होंने सरकारको लिखी, दानापुरसे समाचार आया कि सिपाहियोंकी उत्तेजना बढ़ती चली जा रही है। वे शीघ्रही पटनाकी ओर बढ़ेंगे। यह समाचार जरा सी देरमें पटना भरमें पहुंच गया। सब यूरोपियन अपनी रक्षाके लिये चिन्तित हो उठे। कमिश्नरने सबको अपने निवासस्थानमें आनेका अनुरोध किया। पास जो यूरोपियन थे उनके घर जा

जाकर कमिश्नरने उनसे चलनेको कहा। शामसे पहलेही सब गोरे कमिश्नरके घरमें आ गये। कोई २ अफीमके गोदाममें मान-रक्षाके लिये जा छिपे। सारी गोरी स्त्रियां, बच्चे और पुरुष कमिश्नरकी कोठीमें घबराकर प्रतिक्षण दानापुरके सिपाहियोंके आनेकी प्रतीक्षा करने लगे। पटनासे नौ मील दूर मेजर हलमेसकी अधीनतामें एक १२ नं० रिसाला था। इस रिसालाके कुछ सवार पटनामें थे। ये सवार घोड़ोंपर बैठकर, हथियार हर्बोंसे तैयार होकर, यूरोपियनोंकी रक्षा कर रहे थे। नीले कपड़े पहने नजीब पुलिस सेना अपने हथियारोंसे तैयार होकर गोरोंके स्थानके चौगिर्द घूम २ कर पहरा देने लगी। धीरे २ सन्ध्या हुई। आकाशमें पूर्णचन्द्र खिल उठा। प्रकाश इतना उज्ज्वल था कि दूरकी चीज भी साफ दीखती थी। पटनासे ४० मील दूर राट्रे नामक एक सैनिककी अधीनतामें एक सिक्ख सेना थी। टेलर साहबने इनको शीघ्र पटना पहुंचनेको लिखा था। सब यूरोपियन उत्कण्ठासे इनके आनेकी प्रतीक्षा कर रहे थे। इसी तरह उत्कण्ठा ही उत्कण्ठामें सवेरा हो गया, पर दानापुरके सिपाही न आये। इधर राट्रेके अधीन सिक्ख सैनिक आ पहुंचे। इन्हें देखकर यूरोपियनोंने अपने आपको रक्षित समझा। सब कमिश्नरके घरसे अपनी २ कोठियोंपर चले गये।

पटनाके कमिश्नर टेलर साहबने जो कुछ किया उसके विषयमें किसी प्रकारका मतभेद नहीं हो सकता। उन्होंने अपने देश-वासियोंकी रक्षाका जैसा प्रबन्ध किया उसकी निन्दा कोई नहीं

करता। पर इसके साथ ही वे यदि विचारशक्तिसे काम लेते तो और भी अच्छा होता। जैसे पटनाके मुसलमान जोशमें आ गये थे वैसे ही उन्होंने सब प्रान्तको समझ लिया, यही गलती की। पटनाके जोशमें आनेके कई कारण थे। एक तो वहां मुसलमानोंकी बस्ती अधिक थी, उन्होंने सुना था फिर मुसलमान बादशाहकी हुकूमत हो गई। इसलिये पटनामें भी इनका मुसलमान राज्य स्थापित करनेको पक्षपाती होना सहज था। दूसरे, अवध ब्रिटिश राज्यमें शामिल होनेपर भी बहुतसे लखनऊवाले पटनामें थे। अंग्रेज़ोंपर इनका द्वेष होना सहज था। उन्होंने पड़ोसी मुसलमानोंको भी उत्तेजित कर दिया। पर इस एक बस्तीके जोशको देखकर सारे प्रान्तका पारा चढ़ा हुआ मानना कमिश्नर साहबकी गलती थी। इस विषयकी एक घटनाका उल्लेख इस स्थानपर किया जा सकता है। जून मासके अन्तमें तिरहुतके अधिकारियोंको समाचार मिला कि उनकी पुलिसका वारिसअली नामक एक जमादार, पटनाके मुसलमानोंसे सरकारके विरुद्ध पत्र व्यवहार कर रहा है, समाचार मिलते ही अधिकारियोंने एक सिविलियन युवक और दो एक गोरे नीलवालोंको घटनास्थल पर भेजा। पहुंचकर इन्होंने देखा कि वारिसअली अलीकरीम नामक एक धनी मुसलमानके नाम अंग्रेज़ोंके विरुद्ध पत्र लिख रहा है। खैर, वारिसअलीको गिरफ्तार कर झटपट फांसीपर चढ़ा दिया गया। जिस समय उसे फांसीके पास ले गये उसने पुकारकर कहा—"यहां यदि कोई दिल्लीके बादशाह-

का आत्मीय हो तो वह शीघ्र आकर मेरी रक्षा करे।" पर कोई न आया।

अभागा वारिसअली मर गया। अब कमिश्नरने उसके तमाम कागजपत्र लेकर अलीकरीमको गिरफतार करना चाहा। पटनाके मजिस्ट्रेट और कप्तान राट्टे सिक्ख सिपाहियोंको लेकर इसे गिरफतार करने गये पर वे गिरफ्तार न कर सके, क्योंकि वह पहले ही हाथीपर चढ़कर चला गया था। पर मजिस्ट्रेटका इक्का अधिक न चल सका। टेलर साहबने लिखा है कि इस समय अलीकरीमकी गिरफतारीमें किसी पड़ोसीने सहायता न की बल्कि सबने उससे सहानुभूति प्रगट की। इसी कारण अधिकारियोंने सारी बस्तीको अपने विरुद्ध समझ लिया।* यदि इस समय वे स्थानीय लोगोंपर दयाभाव प्रगट करते तो अच्छा था। खैर, मजिस्ट्रेट अलीकरीमको गिफतार न कर सके, वे अपनी सेना सहित खाली हाथ लौटे। पर उन्होंने उसकी सब सम्पत्ति जप्त कर ली और उसके गिरफ्तार करानेवालेको १००० रु० इनामकी घोषणा की गई।

पटनाके निवासी मुसलमान अत्यधिक क्रोधित थे। दिल्लीमें पुनः बादशाहकी प्रतिष्ठा उन्हें उभार रही थी। वे अंग्रेज़ोंके विरुद्ध विचार कर रहे थे, असन्तोषका धूंआ निकल रहा था। कमिश्नर टेलर साहबने अपने अविचारसे उसे और भी हवाके झोंके दे दिये। पटनावालोंको पागल कुत्तेकी तरह मारना ही उन्होंने

* Tayler's Patna Crisis P. 58.

आपत्तिसे बचनेका सीधा उपाय सोचा। वे शीघ्रतासे अपने सोचे उपायको अपने काममें लाने लगे। भविष्यको ओरसे आखें मीचकर वे भारतवासियोंके खूनपर उतारू हुए। अपने दायें और बायें जो मिले उसेही पकड़कर फाँसीपर लटका देना नीच और पतित काम है। पटनाके मुसलमानोंका जीवन चारों ओरसे आपत्तिमें आ गया। कोई यह खयाल नहीं कर सकता था कि आज मैं जीता रहूंगा। कमिश्नरके स्वेच्छाचारसे सब त्रस्त और हताश हो गये। परेटका खुला मैदान वध्यभूमि बनायी गई। उसमें लम्बे लम्बे फांसियोंके लट्ठे गाड़कर सबको गंभीर आशंका-से त्रस्त किया गया। एकके बाद एक गिरफ्तार किया जाने लगा। नगरवासी प्रतिक्षण अपने जान मालकी चिन्तासे दुःखी हो गये। न मालूम किस समय कमिश्नर किसकी गिरफ्तारीका हुक्म भेज दे' फौजी कानून जारी हो गया। शामके ९ बजेके बाद किसीको अपने घरसे निकलनेका हुक्म न था। सब आदमी अपने अपने घरमें ९ बजेसे सवेरे ६ बजेतक कैद रहने लगे। कमिश्नरने सब मुसलमानोंको गिरफ्तार न किया पर उनके जितने बड़े बड़े आदमी थे उन्हें दूसरी बातोंमें तंग करना शूरू किया। इस स्थानपर उस समयकी एक घटनाका वर्णन किया जाता है :—

पटनामें महमूद हुसेन, अहमदुल्ला और वाजुलहक नामके तीन मौलवी थे। ये लोग अपनी प्राचीन पद्धतिके अनुसार धार्मिक उपदेश देते थे। मुसलमानोंमें इनका सम्मान भी अधिक था। बहुतसे अनुचर और शिष्य इनको आज्ञा पालनके लिये

[illegible] तैयार रहते थे। मुसलमानोंमें ऐसा कोई भी न था जिसकी इनके प्रति श्रद्धा न हो। कमिश्नरने सन्देह किया कि ये सरकारके विरुद्ध षड्यन्त्र करते हैं। इसी कारण वे इनकी गिरफ्तारीके लिये तैयार हुए। पर सबके सामने गिरफ्तार करनेसे नगरवासी उत्तेजित हो सकते थे। इसलिये उन्होंने गिरफ्तारीका एक नया कौशल निकाला। उन्होंने राजनीतिक कामोंकी आलोचनाके लिये नगरके बड़े २ और प्रतिष्ठित आदमियोंके नाम निमन्त्रण-पत्र भेजे। तीनों मौलवियोंको भी बुला भेजा। निमंत्रित आदमी ठीक समयपर कमिश्नरके घर पहुंचे। जब सब जा पहुंचे तब कुछ सैनिकोंके साथ कमिश्नर साहब भी आये। सबके साथ बैठकर आपने कुछ समयतक विप्लवके सम्बन्धमें बातें कीं। बाद सबको विदा कर दिया। जब ये तीनों मौलवी जाने लगे तब उन्हें कुछ समय ठहरनेके लिये कहा। वे तीनों शंकित चित्तसे बैठे। हृदयमें भावोंकी तरंगे उठने लगीं। पर वे कमिश्नर टेलरके अनुरोधका विरोध न कर सके। जब सब चले गये तब कमिश्नरने तीनोंसे कहा,—"जबतक इस गड़बड़की शान्ति न हो तबतक सर्वसाधारणकी भलाईके लिये मैं आप तीनोंको कैदमें रखना चाहता हूं।" यह सुनकर मौलवियोंने किसी प्रकारका क्रोध प्रगट न किया। उन्होंने गम्भीरतापूर्वक सम्मानके साथ कहा—"आपका जैसा ज्ञान है, वैसी ही हमपर दया है। आपने जो आज्ञा दी वह आपके लिये मंगलप्रद हो। इसके बाद हमारे दुश्मन आपके निकट और कोई शिकायतका मौका न

पावेंगे ।” कमिश्नरने वैसीही गम्भीरतासे कहा—“जो आपके लिये शुभ है वही मेरे लिये भी हितकर है।” इसके बाद ये निरपराध और शान्त मौलवी लोग हंसते हुए विदा हुए। सिक्ख सिपाहियोंसे घिरे हुए वे सर्कट हाउसमें कैद किये गये। रह २ कर उन्हें यह भी आशंका होने लगी कि शायद फांसीपर हमारी जान ली जायगी। मौलवी अहमदुल्लाके पिता मौलवी इलाही-बक्स भी जीवित थे, पर वे अत्यधिक वृद्ध और अन्धे थे, इस-लिये कैद न किये गये। पर कमिश्नरने चलते समय अहमदुल्ला-से कहा था—“याद रखना, मैंने तुम्हारे बापको कैद नहीं किया, पर उनका जीवन तुम्हारे हाथ और तुम्हारा उनके हाथ है।” इससे साफ था कि पिताके अपराधपर पुत्रको और पुत्रके अपराधपर पिताको वे फांसीपर लटकानेको तैयार थे।

इस घटनाके एक साल बाद कमिश्नर साहबने अभिमानके साथ लिखा था कि, तीन मौलवियोंको कैद करते हुए जिस नीतिका अनुसरण किया था उसमें मैं सफल हुआ था।* तीन सम्माननीय मुसलमानोंको इस तरह गिरफ्तार करनेपर एक राजनीतिज्ञ अंग्रेज़ने अभिमान प्रकाश किया है। पर जो कहीं अंग्रेज़ोंके साथ किसीने ऐसी चालाकी की होती, जो और कोई उन्हें इस तरह गिरफ्तार करता तो अंग्रेज़ उसे, संसारमें सबसे अधिक नीच लिखते। इतिहास लेखक 'के' साहबने इस सम्बन्धमें लिखा है—“जिसने इस तरह मित्ररूपसे बुलाकर सम्भ्रान्त

* Tayler's Patna Crisis P. 51.

लोगोंको गिरफ्तार किया उसे विश्वासघातक कहना चाहिए। जो मौलवी लोग किसी प्रकारकी बाधा देते तो शायद तलवार-से उनके सिर काटे जाते। सर्दार मुहम्मद अकबरखां द्वारा सर विलियम मेकेन्टनकी हत्याका वर्णन मैंने जिस भाषामें किया है, उसी भाषामें मुसलमान इतिहास लेखक टेलर साहबकी गिरफ्तारीवाली नीतिका वर्णन करेंगे।"* एक दूसरे इतिहास लेखकको 'के' साहबकी यह बात पसंद नहीं आई, इस-लिये उसने लिखा है—"मुहम्मद अकबरखां और सर विलियम मेकेन्टन दो भिन्न २ जातियोंके प्रतिनिधि थे। दोनों एक दूसरेके विरुद्ध संग्राम कर रहे थे। मुहम्मद अकबरने अंग्रेज़ प्रतिनिधिको रक्षाका वचन देकर निमंत्रणमें बुलाया था और फिर गोलीसे उनकी हत्या की थी। दूसरी ओर टेलर साहब राजप्रतिनिधि और शासक थे तथा मौलवी लोग प्रजा। इन्हें कोई निमंत्रण न दिया गया था, बल्कि उन्हें राजाकी आज्ञा सुनानेके लिये बुलाया गया था। उसी आज्ञाके अनुसार वे कैद किये गये।"† इतिहास लेखककी यह उक्ति सहृदय पाठक पसंद नहीं कर सकते। मौलवी निस्सन्देह ब्रिटिश सरकारकी प्रजा थे। पर प्रजाके साथ विश्वासघात करना ब्रिटिश प्रतिनिधिका कर्त्तव्य न था। इसके बिना भी वे मौलवियोंको गिरफ्तार कर सकते थे। पर उन्होंने विश्वासका बहाना दिखाकर पहले अपने घरमें बुलाया।

* Kaye's Sepoy War. Vol III. P·83-84.

† Malleson's Indian Mutiny. Vol III P· 53

उन्होंने यही सोचा था कि कमिश्नरने राजनीतिक बातोंकी आलोचनाके लिये बुलाया है, इसलिये उनपर विश्वास करके सब लोग गये। अन्तमें ब्रिटिश प्रतिनिधि, एक विभागके कमिश्नरने प्रजाके साथ विश्वासघात किया, जिस विश्वासघातसे वीर अफगान कलंकित हुआ उसीसे कमिश्नर टेलर भी हो सकते हैं।

कमिश्नर टेलरकी कार्यवाहीसे और चाहे जो सुफल हुआ हो, पर पटनामें शान्ति न हुई। मौलवियोंकी कैदके बाद पटनावालोंके हथियार लेनेका विचार किया जाने लगा। पर इसमें पूरी सफलता न हुई। बहुतोंके हथियार लिये गये पर बहुतोंने उन्हें छिपा रक्खा। इससे मुसलमानोंके हृदयोंपर बहुत आघात लगा। पहले उन्होंने विश्वासघातकतासे अपने मौलवियोंको कैद होते देखा, फिर कमिश्नरकी आज्ञासे उनके हथियार लिये जाने लगे। अब वे शान्त न रह सके। ३ जुलाईको अर्द्धचन्द्र शोभित हरा झंडा खड़ा करके वे प्रगटमें सरकारके विरुद्ध निकले। डौंढी पीट २ कर वे धार्मिक मुसलमानोंको अपने दलमें शामिल होनेको कहने लगे। शीघ्र ही सिक्ख सेना उनके पीछे चली। गोरी सेना भेजनेके लिये दानापुर समाचार भेजा गया। इस समय अफीम महकमाका एक अफसर डाक्टर लायल उन्हें शान्त करनेके लिये घोड़ेपर सवार होकर गया, पर उसका प्रयास सफल न हुआ। मुसलमानोंके सामने पहुंचते ही एकने उन्हें गोलीसे मार दिया। इसी समय घटनास्थलपर

पहुंचकर सिक्ख सेनाने धावा किया। विद्रोही तितर बितर होकर घरोंमें चले गये। थोड़ी देर बाद फिर शान्ति हो गई।

इसके कुछ दिन बाद इस अशान्तिमें भाग लेनेके कारण कुछ आदमी गिरफ्तार किये गये। इनमें एक पीर अली नामक पुस्तक-विक्रेता भी था। पहले इसका निवासस्थान लखनऊ था। पीर अली अपने जातीय साहित्यकी आलोचना करके कुछ परिमार्जित बुद्धिका हो गया था पर उसके जातीय गुण उद्धतता आदि न दबे थे। कहा जाता है कि पीर अली जैसा साहसी था वैसा ही अंग्रेज़-द्वेषी भी था। गदरके मौकेपर लखनऊके उत्तेजित मुसलमानोंके साथ उसने पत्र-व्यवहार भी किया था। अधिकारियोंको विश्वास हो गया था कि इसी आदमीकी गोलीसे डाक्टर लायलके प्राण गये हैं। इस कारण पीर अलीको प्राणदंडकी आज्ञा मिली। वह जब कमिश्नर टेलर और अन्य अंग्रेज़ अफसरोंके सामने लाया गया तब उसके हांथ पैर हथकड़ियों और बेड़ियोंसे जकड़े थे, चोट लगनेके कारण कमरसे खून बह रहा था, कपड़े पसीनेसे भीग रहे थे, पसीना और खून मिलनेसे कपड़े सब लाल हो गये थे। इस दशामें कमिश्नरके सामने पेश होनेपर कमिश्नरने पूछा—"इस विप्लवके सम्बन्धमें तुम कोई ऐसी बात बता सकते हो जिससे प्रसन्न होकर सरकार तुम्हारी प्राणरक्षा करे। लोहेकी सांकलोंसे जकड़े, चोट खाये, पसीनेसे भीगे, मुसलमानने ऐसी दृढ़ता और निडरता दिखाई कि किसी अंग्रेज़की यदि यही दशा होती तो शायद उससे बोला भी न जाता। पीर अलीने

कहा—"बहुतसे ऐसे काम हैं, जिनके लिये जीवन रखनेकी आवश्यकता होती है और बहुतसे ऐसे होते हैं जिनके लिये जीवन देना ही सबसे अधिक जरूरी होता है।" इसके बाद उसने अंग्रेज़ोंकी बेईमानी और उनके अत्याचार, विशेषकर कमिश्नर टेलरके अत्याचारोंका वर्णन करके अन्तमें कहा—"आप मुझे फांसी दे सकते हैं, मेरी तरह और बहुतसे नित्य फांसीपर लटक सकते हैं, पर मेरी या उनकी जगह दूसरे खड़े होंगे। आपका उद्देश्य कभी सफल न होगा।"

पीर अलीने बड़ी गम्भीरतासे मार्मिक बात कही थी। इसके बाद उसने कमिश्नरसे कहा—"मैं एक बात पूछना चाहता हूं।"

कमिश्नरने पूछनेकी आज्ञा दी।

पीर अलीने कहा—"मेरा घर?"

कमिश्नरने कहा—"तोड़कर ज़मींदोज़ होगा।"

पीर अली—"मेरी सम्पत्ति?"

कमिश्नर—"जप्त होगी।"

पीर अली—"मेरी औलाद?"

औलादके नामपर कमिश्नरका हृदय हिला। उसने पूछा—"औलाद कहाँ है?"

पीर अलीने कहा—"अवधमें।"

कमिश्नरने कहा—"इस समय वहाँ गदर हो रहा है, इसलिये क्या होगा सो मैं नहीं कह सकता।"

फिर उसने कोई सवाल न किया। शान्ति और धैर्यके साथ

वह वध्यभूमिकी ओर गया। उसका मकान तोड़ दिया गया, सम्पत्ति ज़ब्त हो गई।*

पीर अली धनी न था। उसके पूर्वपुरुष भी धनी न थे। कमिश्नर टेलर साहबका विश्वास था कि इस आन्दोलनके मूलमें कोई धनी आदमी है। विद्रोही आदमी उसके धनसे अपने आपको बली समझते हैं। पटनामें एक लुत्फ अली नामका धनी महाजन था। टेलर साहब उसपर सन्देह करने लगे। डाक्टर लायलके हत्याकांडमें लिप्त होनेके सन्देहपर उनके एक नौकरको फांसी हुई थी। कहा जाता है कि उसने बनारसके एक उत्तेजित मुसलमानको आश्रय दिया था। पीर अली और दूसरे मुसलमानोंने उससे रुपये लिये थे। इस कारण लुत्फ अली कमिश्नरके हाथसे न बचा। पटनाके मजिस्ट्रेट उसे गिरफ्तार करने गये। एक अंग्रेज़ अफसर कुछ सिक्ख सेनाके साथ उसके साथ गये। मजिस्ट्रेटने उसके घरपर पहुँचकर कमिश्नरके बँगलेपर चलनेको कहा। उसी समय लुत्फ अली खड़ा हो गया। उसने गाड़ी जोतनेको कहा, पर कोचवान न था। पर खुद कोचवानकी जगह बैठकर उसने गाड़ी हांकी और मजिस्ट्रेट आदि कैद करनेवालोंको गाड़ीमें बैठाया। इस प्रकार आत्मसमर्पण करते देखकर मजिस्ट्रेटको आश्चर्य हुआ। अदालतमें किसी प्रकारका प्रमाण न मिलनेके कारण लुत्फ अलीकी मुक्ति हुई। कमिश्नर टेलरने सेशन जजको पत्र लिखा था कि लुत्फ अलीको

---

* Tayler's Patna Crisis. P. 67.

सजा होनी चाहिये। जजने मिसल और कमिश्नरकी चिट्ठी ले० गवर्नरके पास भेज दी।

इस प्रकारकी अशान्तिके बाद पटनाके मुसलमान शान्त हुए। जुलाई मासतक दानापुरकी सेनाओंमें शान्ति थी। पर भिन्न २ स्थानोंसे भिन्न २ तरहके समाचार बराबर आते थे और इसी कारण सिपाहियोंके चित्त डांवांडोल रहते थे। कानपुरके अंग्रेज़ सिपाहियोंके हाथसे मारे गये थे, लखनऊपर सिपाहियों-का अधिकार हो गया था। आगरा और प्रायः सम्पूर्ण पश्चिमो-त्तर प्रदेशमें गदर हो रहा था, हर जगह सिपाही संग्राम मचा हुआ था। ये सब समाचार बहुत बार और भी अधिक उत्तेजना-जनक होकर पहुँचते थे। बिहारके आदमी इन समाचारोंसे अस्थिर होने लगे। दानापुरके सिपाही भी इससे शान्त न रहे। जो पहले अंग्रेज़ों द्वारा विध्वंस होनेकी आशंकासे डर रहे थे वे अब मौका समझकर अंग्रेज़ोंको विध्वंस करनेकी चिन्ता करने लगे।

जिस समय सर्वसाधारणमें इस प्रकारकी उत्सुकता थी, चारों ओर अशान्ति थी, उस समय सबकी दृष्टि दानापुरकी सिपाही सेनापर थी। पर अबतक सिपाही शान्त थे। अफस-रोंकी आज्ञाके विरुद्ध अबतक उन्होंने कोई काम न किया था। पर अन्तमें अधिकारियोंके बुद्धिदोषसे वे सरकारके विरुद्ध खड़े हुए।

पहले दानापुरके सिपाहियोंके हथियार लेनेका प्रस्ताव हुआ

था। बंगाल और बिहारके गोरोंने प्रस्तावको कार्यरूपमें परिणत करनेका बहुत अनुरोध किया था, पर सरकार सहमत न हुई थी। इस समय फिर बंगालके गोरे इस विषयमें आग्रह करने लगे। यूरोपियनोंकी उत्तेजनाके कारण सरकारने वृद्ध सेनापतिको यथायोग्य कार्य करनेकी आज्ञा दी। १५ जुलाईको प्रधान सेनापतिने दानापुरके सेनानायकको एक गुप्त पत्र लिखा। पत्रमें लिखा था —"५ नं० गोरी सेना चूंचड़ासे बनारसके लिये रवाना हुई है, जो सेना बाकी है वह दूसरे दिन रवाना होगी। यदि सेनापतिको अपने सिपाहियोंपर सन्देह हो और वे उनके हथियार लेना चाहते हों तो इस सेनाको थोड़े समयके लिये दानापुर रोक सकते हैं पर उन्हें जितनी जल्दी सम्भव हो निश्चित स्थानपर भेजना होगा।" पत्र पाकर सेनापतिने कुछ भी निश्चय न किया। कई दिन तक वे अनिश्चित दशामें रहे।

२४ जुलाईको वे कार्यक्षेत्रमें अवतीर्ण हुए। बंगालके यूरोपियनोंने पहले ही प्रस्ताव किया था कि दानापुरके सिपाही निरस्त्र किये जायँ पर सेनापतिने सिपाहियोंको अस्त्रशस्त्रसे सुसज्जित रखना चाहा था। अब भी सिपाहियोंके हथियार लेना उन्हें संगत न मालूम हुआ। उन्होंने इन दोनोंके बीचका रास्ता पकड़ा। उन्होंने जिस मार्गका अनुसरण किया उसीसे विषमय फल हुआ। २४ जुलाईको ३७ नं० यूरोपियन सेना दानापुर पहुंची। सेनापतिने दूसरे दिन हथियार लेनेके इरादासे गोरी सेनाको परेटके मैदानमें बुलाया। २५ जुलाईको गोरी सेना परेटके मैदानमें

खड़ी हुई। सेनाके बराबर गोलंदाज खड़े हुए। तोपखानेसे बंदूकोंकी टोपियां लानेके लिये बैलगाड़ियां भेजी गईं। परेटके मैदान और गोरी सेनाके बीचमें सिपाहियोंकी बारगें थीं। टोपियाँ भरी गाड़ियां जब बारगके पाससे जाने लगीं तब सिपाही शान्त न रह सके। अपने इस अपमानके कारण वे अधीर हो उठे। ७ और ८ नं० सिपाही दलोंमें अधिक जोश दीखने लगा। ४० नं० सिपाही सेना उस समय भी शान्त थी। शीघ्र ही ७और ८नं० सेनाओंके अफसरोंने अपनी सेनाओंमें पहुंचकर लोगोंको शान्त किया। इस दिन किसी तरहकी गड़बड़ न हुई। अफसर लोग प्रातः कलेवा करनेके लिये गये। सेनापतिने बाकी कामके सम्पादनका भार अपने सहायकको दिया। उन्होंने इस कामको ऐसा साधारण समझा था कि खुद उपस्थित भी न रहे।

पर इस मामूली बातसे ही बड़े भयंकर परिणामकी उत्पत्ति हुई। जो वे तोपखानेसे टोपियां निकलवाकर ही चुप रहते तब भी सिपाही शान्त रहते। पर दो फौजोंको जोशमें देखकर उन्होंने सबसे टोपियां लेनेके लिये १२ बजे फिर परेटके मैदानमें सेना एकत्र की। देशी अफसर शान्तिके साथ अपनी अपनी सेनाको समझाने लगे कि अधिकारी केवल सावधान होनेके लिये ऐसा करते हैं। सब सिपाहियोंको वे अविश्वासी नहीं समझते। अफसरोंने मीठे शब्दोंमें अपना भाषण समाप्त किया पर इसका कुछ भी असर सिपाहियोंपर न हुआ। जब सिपाहियोंसे टोपियां मांगी गईं तब ७ और ८ नं० सिपाही सेना विरुद्ध हो गई। जिस यूरो-

पिछलको वे सामने देखने लगे उसीके गोली मारकर दूसरी ओर जाने लगे। ४० नं० सेना इस समय भी शान्त थी, इस समय भी वे अफसरोंकी आज्ञाका पालन करनेको तैयार थे। कुछ सिपाही और अफसर एक श्रेणीमें खड़े होकर इस शान्तिको मिटाने लगे। ४० नं० सेनाके शान्त रहनेकी पूरी आशा थी। पर घटनाचक्र दूसरी ओर घूमा। गोरे सैनिक इस गड़बड़में घबराकर अस्पताल-की छतपरसे इस ४० नं० सेनापर गोलियां बरसाने लगे। इस सेनाने भी देखा कि विपत्ति अवश्यम्भावी है। इसलिये यह भी ७ और ८ नं० सेनाके पीछे हो ली। इस प्रकार तीन सिपाही फौजें अपनी वर्दी फेंककर सिर्फ हथियार लिये दानापुरसे चलीं। वृद्ध सेनापति अपने बंगलेसे निकलकर गंगाके किनारेके एक जहाजमें जा बैठे।

इस मौकेपर सेनापतिका उपस्थित होना बहुत जरूरी था। वे वृद्ध और असमर्थ पुरुष थे। उनका शरीर जरूर शिथिल था, वे अधिक चल न सकते थे। घोड़ेपर बैठनेका भी उनमें सामर्थ्य न था। इसीलिए जहाजमें बैठकर किनारेके सिपाहियोंका कार्य देखना अधिक उपयुक्त समझा। वे अपनी इस कमजोरीको प्रगट करते हुए संकुचित भी न होते थे। इस समय दानापुरमें एक कार्य-क्षम सेनापतिकी आवश्यकता थी। विपत्ति अनिवार्य हो गई थी। गोरी सेना घबरा गई थी। कोई योग्य सेनापति संचालक न था।

भागते हुए सिपाहियोंको बाधा देनेके लिये गोरी सेना तैयार हुई। तमाम परेडका मैदान पानीसे भरा था, चारों ओर पानी ही

पानी था। गोरी सेना जंगी पोशाकमें थी, कीचड़ और पानीमें वह जल्दीसे आगे न बढ़ सकी। दूसरी ओर सिपाहियोंने वर्दी फेंक दी थी। केवल हथियार लिये वे जल्दी जल्दी जा रहे थे। कीचड़ और पानीमें भी वे फुर्तीसे जाते थे। इसी कारण गोरी सेनाको हमला करनेकी सुविधा न मिली। गोरी सेनाके सेनापति न थे, किसी अफसरपर किसी तरहकी जिम्मेदारीका दबाव न था। उन्हें क्या करना होगा सो वे न जानते थे। इधर सिपाही जल्दी जल्दी जा रहे थे। कोई कोई बिना समझे बूझे गंगाके किनारेके नावमें जाकर बैठा। वह वहां गोरोंकी बंदूकका निशाना बना। पर उनमें-से बहुत अधिक बिना किसी प्रकारकी बाधाके सोन नदीके किनारे पहुंचे। उनके पीछे कोई गोरी सेना न थी। उन्होंने नावें एकत्र करके बिना बाधा सोन नदी पार की। बिना बाधा वे शाहाबादके आरा नामक स्थानकी ओर चले।

घटनाक्रमसे, एक क्षमताशाली और तेजस्वी राजपूत जमींदारने इन्हें उत्साह दिया और वह इनका प्रधान सहायक बना। सम्पूर्ण बिहार प्रान्तमें इसका प्रताप और क्षमता थी। पहले यह सरकारका भक्त था। राजभक्त जमींदार समझकर अधिकारी इसका सम्मान करते थे। पर अन्तमें राजभक्तिका अन्त हो गया। यह वृद्ध जमींदार अन्तमें गवर्मेंटका शत्रु बना। इसका नाम था बाबू कुँवरसिंह।

भिन्न २ इतिहास लेखकोंने बाबू कुँवरसिंहके चरित्रको भिन्न २ तरहसे लिखा है। किसी २ ने उन्हें शुरूसे ही सरकारसे

विरक्त और राजभक्ति-शून्य बताया है।* कइयोंने उनका प्रताप, चरित्र और गुणोंका वर्णन करके उनके चरित्रको अंग्रेज़ोंके चरित्रसे भी अधिक उज्ज्वल प्रमाणित किया है।† अंग्रेज़ इतिहास-लेखकोंके हाथसे बाबू कुँवरसिंहका चरित्र चाहे जैसा लिखा जाय पर बिहार प्रान्तका बच्चा २ आज भी कुँवरसिंहके नामसे परिचित है। सम्पूर्ण बिहारके निवासी आज भी उनकी अपूर्व शक्ति और सामर्थ्यकी बात भूले नहीं हैं। शुरूमें कुँवरसिंह राजभक्तिहीन न थे। हां, उन्हें अदूरदर्शी चाहे कहा जाय। वे जैसे क्षमताशाली, प्रतापशाली और तेजस्वी थे वैसे ही राजभक्त प्रजाकी तरह सदा सरकारके अनुरक्त भी थे।

बाबू कुँवरसिंह आरा जिलाके माननीय जमींदार थे। आराके पास जगदीशपुरमें इनका घर था। जो सब क्षत्रिय उज्जयिनीसे शाहाबाद पहुंचे थे, उनकी सन्तानोंमें डुमरांव राजवंश प्रधान था। वंश-मर्यादाके लिहाजसे ये राजा भोजके वंशज ही शाहाबादमें प्रधान थे। कुँवरसिंहके साथ डुमरांव राजवंशका सम्बन्ध था। इसी कारण डुमरांव राजवंशकी मर्यादारक्षाके लिये वे सदा तैयार रहते थे। कहा जाता है कि पटनाके कमिश्नर साहबने किसी कार्यके उपलक्ष्यमें एक सभा की थी। उसमें पटना विभागके अनेक जमींदार भी एकत्रित हुए थे। सभामें सबसे पहला आसन एक और जमींदारको दिया गया। डुम-

* Mallson's Indian Mutiny Vo.. I P. 76

† Martin's Indian Empire. Vol 11. P. 400.

रांवके राजाके साथ कुँवरसिंहने जाकर देखा कि पहला आसन दूसरेके लिये रक्खा गया है। यह देखकर तेजस्वी क्षत्रिय कुँवर-सिंहने बिना किसीकी आज्ञाके जोरसे कहा कि सबसे पहला आसन, वंशमर्यादाके अनुसार, महाराज डुमरांवका है। इसके बाद अधिकारियोंको भी उन्होंने यह बात समझा दी। डुमरांव राजवंशकी मर्यादा रक्षाके लिये उनका इतना आग्रह था। सम्पूर्ण बिहारमें वे, इस विषयमें, कभी किसीसे न झुके। उनमें क्षात्रगुण कूट २ कर भरा था।

बाबू कुँवरसिंहकी बाल्यावस्थाका विवरण नहीं मिलता। केवल इतना ही मालूम हुआ है कि, छुटपनसे वे किताब पढ़नेकी अपेक्षा साहस और वीरताके कामोंको अधिक पसंद करते थे। उनकी बाल्यावस्था गुरुके सहवास और पुस्तकोंके बीचमें नहीं बीती। वे जबानी किताबें पढ़नेकी अपेक्षा प्रकृत वीरता और संयमके अभ्यासी थे। प्रकृतिने जन्मसे उन्हें इस गुणका अधिका-री बनाया था। महाराणा प्रतापसिंह जैसे अपने आदमियोंके साथ जंगलों और पहाड़ोंमें घूमते हुए प्रकृत वीरताका पाठ याद करते थे, गोविन्दसिंह जैसे हथियार हर्बोंसे तैयार होकर भविष्य कीर्तिकी नींव जमा रहे थे, फूलासिंह जैसे असीम वीरता दिखाकर अमर कीर्तिके अधिकारी बने वैसे ही कुँवर-सिंहने भी सिंहोचित गुणोंका शुरू हीसे परिचय दिया। शस्त्र-विद्या उनका सबसे प्रधान आमोद था। उनके गांवके पास ही घना जंगल था। यह वही जंगल था जिसका नाम रामायणमें

तारका वन लिखा है। इस जंगलमें जो शालके वृक्ष थे उन्हें यदि वे बेंचते तो बहुत अधिक धन मिल सकता था, पर उन्होंने अपनी वनस्पति कभी नहीं बेंची। इस जंगलमें शिकार करके वे प्रसन्न होते थे। पुरुषसिंह शेरशाहने जिस जगह वीरताका परिचय दिया था। हुमायूंका विजेता, दिल्लीका भविष्य सम्राट् जहां विजयलक्ष्मीका वरपुत्र बना उसी रोट्स पर्वतके निकटवाले पहाड़ी जंगलोंमें कुँवरसिंह शिकार खेला करते थे। दृढ़ता, साहस, वीरता, धीरता और सम्मानमें वे सम्पूर्ण बिहार प्रान्तमें अद्वितीय हो गये थे।

वे जैसे तेजस्वी वैसे ही प्रतापी और दृढ़तासम्पन्न भी थे। सम्पूर्ण बिहार उनके सामने सिर झुकाता था। उनके विरुद्ध किसीको बात करनेका साहस न था। आरा शहर एक प्राचीन मुसलमान परिवारकी सम्पत्ति माना जाता था। इस सम्पत्तिके एक तिहाईके हिस्सेदारको, अन्य हिस्सेदारोंके षड्यन्त्रके कारण, हिस्सेसे बंचित रहना पड़ता था। बहुत कोशिश करनेपर भी वह अपने एक तिहाईपर कब्जा न कर सकता था। कोई उपाय न देखकर उसने अपना हिस्सा बाबू कुँवरसिंहके हाथ बेंच दिया। कुँवरसिंहने केवल इसी हिस्सेपर कब्जा न किया, बल्कि उन्होंने बाकी हिस्सेदारोंके भी हिस्सेपर कब्जा कर लिया। इस प्रकार आरा शहर उनकी सम्पत्ति हो गया। अन्यायसे उन्होंने यह सम्पत्ति नहीं ली। पहलेवाले अधिकारियोंको उनसे रकम मिलती थी। उस समय पश्चिमोत्तर देशको

ओर जैनियों और हिन्दुओंमें बड़ा द्वेष था। कोई हिन्दू किसी जैनीको अपने पड़ोसमें रखना पसंद न करता था। कारण, जैनियोंको नास्तिक समझा जाता था। पर कुंवरसिंहके आश्रयमें बहुतसे जैनी वैश्य रहते थे, वे जमींदार और धन सम्पत्तिपूर्ण थे। उनसे कुंवरसिंहको कभी कोई द्वेष न था। पर उन्होंने आरामें कोई जैन मन्दिर न बनने दिया। जो बने भी वे उनकी मौतके बाद बने।

इन दो उदाहरणोंसे कुंवरसिंहकी क्षमता और प्रतिपत्तिका परिचय मिलता है। आरामें उनकी शक्ति असीम थी। कोई उनके विरुद्ध होकर अपना गौरव न बढ़ा सकता था। यदि किसी-पर किसी प्रकारकी विपत्ति आती तो वह कुंवरसिंहके नाम-की दुहाई देता था। फिर विपक्षीको हिम्मत उसे सतानेकी न होती थी। सर्वसाधारणमें उनका ऐसा सम्मान, प्रतिपत्ति और आधिपत्य था। जब वे हवाखाने या किसी कामके लिये रास्तेसे निकलते तब रास्ता चलनेवाले इधर उधर हाथ जोड़कर खड़े हो जाते थे। जो इधर उधर बैठे होते वे उठ खड़े होते थे। उनकी नजर पड़ते ही सब सिर झुकाते थे। उनके सामने कोई बैठा न रहता था। कोई सामने तम्बाकू पीनेका साहस न कर सकता था। कोई जोरसे न बोलता था। सब चुप होकर उनका सम्मान करते थे। उनका नाम लेनेसे जैसे विपत्तिमें पड़े हुओं-की विपत्ति, दुःखमें पड़े हुओंका दुःख दूर होता था वैसे ही उन-की बातसे भी काम होता था। जिसकी मंशा जिस कामको

करनेकी न हो उसे कुंवरसिंह वही काम करनेको कहते तो फिर वह इनकार न करता था, सिर झुकाकर मान लेता और करता। जिस समय सिपाही अपने धर्मनाशकी आशंकासे डर रहे थे, चारों ओर गदरकी आग सी लग रही थी। उस समय आराके मजिस्ट्रेटने कैदियोंको खानेके लिये मिट्टीके बर्तन दिये। और खा चुकनेपर उन्हें धोकर दूसरे दिन रखनेके लिये कहा। इस कारण हिन्दू कैदी व्यथित हुए। धर्मके अनुसार एक बार मिट्टीके बर्तनमें खाकर दुबारा उसमें नहीं खा सकते। कैदियोंने खानेसे इनकार किया। मजिस्ट्रेटने बाबू कुंवर-सिंहसे सहायता माँगी। कुंवरसिंहने एक आदमीसे कहला भेजा कि, कैदियोंसे कह देना कि तुम्हें कोई जातिसे बाहर या धर्मभ्रष्ट न करेगा, तुम मिट्टीके बर्तनोंमें खाओ। सिर झुका-कर कैदी उन्हीं बर्तनोंमें खाने लगे, किसीने आंखतक ऊंची न की? खुद कुंवरसिंह आदमियोंसे कहने न गये थे; उन्होंने आदमीसे कहला दिया था। उनकी क्षमता और प्रताप कितना था सो इसी छोटी सी घटनासे मालूम होता है। शक्तिशाली मजिस्ट्रेटकी शक्तिसे जो न हुआ वह दूर बैठे जमींदारकी बातसे हो गया।

कुंवरसिंह जैसे क्षमता और प्रतापशाली थे वैसे ही दाता, शरणागत प्रतिपालक और आश्रित वत्सल थे। आरामें उनके मकानके पास ही एक बाग था। इस बागसे एक ब्राह्मण रोज फूल तोड़ा करता था। उन्हें यह पसन्द न था कि सारा बाग फूलोंसे

खाली हो, इसलिये ब्राह्मणको बागकी एक बीघा जमीन दान दे दी। उस बीघे भरमें जो फूल होते उन्हें वह ब्राह्मण तोड़ता। इस तरह वह जमीनका मालिक हो गया। कोई चाहे जैसा बड़ा अपराध करके आया हो, शरण आनेपर कुंवरसिंह उसकी हर तरहसे रक्षा करते थे। कहा जाता है कि रणदलनसिंह नामक एक नैपाली खून करके कुंवरसिंहकी शरणमें आया। कुंवरसिंहने शरणापन्नके जीवनकी रक्षा की। रणदलनसिंह उनके आश्रयमें रहने लगा। अन्तमें वही इनका सलाहकार हो गया।

कुंवरसिंहको अपने पितासे बड़ी भारी जमींदारी मिली थी। उनके पिता शाहजादासिंहने अपनी बारह आना जमींदारी कुंवरसिंहको दी थी और बाकी चार आना छोटे तीन बेटोंको। उनके नाम दयालसिंह, राजपतसिंह और अमरसिंह थे। बाकायदा प्रबन्ध करनेपर अमरसिंहकी जमीनसे बहुत पैदा हो सकती थी, पर प्रबन्ध अच्छा न था। वे इतनी बड़ी जमीनके मालिक होकर भी अपने खर्चके लिये रुपया उधार मंगाते थे। उनका कर्ज इतना हो गया था कि उसका चुकाना कठिन था महाजनोंने रुपयेकी अदायगीके लिये उनपर मुकदमा चलाया कुंवरसिंहकी जमींदारी नीलामपर चढ़ी। पर वे बड़े प्रतापी पुरुष थे। सरकारके अधिकारियोंके काम सदा उनसे निकला करते थे। इसलिये अधिकारी भी नहीं चाहते थे कि उनकी जमीन नीलाम हो। आराके सदरआलाके हुक्मसे नीलामका दिन बदल गया। इसके बाद सरकार कुंवरसिंहकी जमींदारीका

बन्दोबस्त करनेको तैयार हुई, पर रिवेन्यू बोर्डके कारण न कर सकी। इसके बाद कुंवरसिंहने दूसरे महाजनसे बीस लाख रुपये लेकर कर्ज चुकानेका प्रबन्ध किया। इधर शाहाबादके कलक्टरने हुक्म दिया कि कुंवरसिंहकी जमींदारीकी आमदनीसे हरसाल थोड़ा थोड़ा कर्ज चुकाया जाय। इधर बीस लाख रुपये नहीं मिले पर महाजनोंने शीघ्र देनेका वादा किया। इसी समय एक दूसरेसे उन्हें रुपया मिला, पर वे अपना कर्ज अदा न कर सके। इसी समय उन्हें पटनाके रिवेन्यू बोर्डसे एक पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि —“यदि एक मासमें कर्जका सब रुपया अदा न किया गया तो बोर्ड सरकारसे दरखास्त करेगा कि वे आपकी जमीनसे आपका सम्बन्ध न रक्खे। सरकार अब उनकी जमींदारीका कोई काम न करेगी।” कुंवरसिंह इससे दुःखी हुए। पर वे सरकारके विरोधी न बने। पटनाके कमिश्नर टेलर साहबने भी बोर्डके इस फैसलेपर आपत्ति की। उन्होंने लेफ्टिनेंट गवर्नरको जो पत्र लिखा उसमें बोर्डके फैसलेके विरुद्ध मत दिया। पर इससे कोई फल न निकला। कुंवरसिंह कर्जसे बरी न हुए। *

रिवेन्यू बोर्डके फैसलेसे वे दुःखी हुए। उन्हें अपने बाप दादोंकी जमीन नीलाम होनेकी भारी चिन्ता थी। उनका इकलौता बेटा दलभंजनसिंह मर चुका था। वीरभंजनसिंह नामक एक पोता था। पर जन्मसे ही वह पागलसा था। भाई और भाईके

* Mallson's Indian Mutiny. Vol I P. 17 note.

बेटे उनके अवलम्ब थे। पर बेटेके मरनेके बाद सुख शान्ति उनके भाग्यमें न थी। कर्जकी चिन्ता, पुत्रका शोक और बुढ़ापा, चारों ओरसे वे घिर गये थे। फिर भी उनका प्रताप वैसा ही था। उनके नामसे शेर और बकरी एक घाट पानी पीते थे। इस दशामें भी वे सरकारके विरुद्ध न थे। १४ जून १८५७ को पटनाके कमिश्नर टेलर साहबने सरकारको लिखा था—"बहुतसे लोग मुझे अनेक जमींदार और विशेषकर बाबू कुँवरसिंहकी राजभक्तिके विरुद्ध पत्र लिख रहे हैं। पर कुँवरसिंह मेरे मित्र हैं, उनका सरकार-पर जैसा प्रेम है, उससे मैं इस बातपर विश्वास नहीं करता।" इसके बाद ८ जुलाईको कमिश्नरने लिखा—"बाबू कुँवरसिंह सब कुछ कर सकते हैं। पर इस समय उनका कोई अवलम्ब नहीं है। उन्होंने मेरे पास कई राजभक्तिपूर्ण पत्र भेजे हैं।"* शाहा-बादके मजिस्ट्रेट भी इस विषयमें सहमत हैं। उन्होंने सरकारको लिखा था—"इस गड़बड़के शुरू होते ही बाबू कुँवरसिंहके सम्ब-न्धमें बहुतसे लोग बहुत तरहकी बातें कहते हैं। पर मैं उनपर विश्वास नहीं करता। कमिश्नरने उनकी राजभक्तिपर पूर्ण विश्वास प्रगट किया है। मैं भी उनके विरुद्ध कोई बात कहना नहीं चाहता।"†

पर कमिश्नर साहबके ये विचार अधिक समयतक न टिके। वे अधिक समयतक बाबू कुँवरसिंहको राजभक्त न समझ सके।

---

* Kaye's Sepoy War. Vol II P· 98.

† Ibid P. 98.

कारण क्या था सो भी सुनिये। कहा जाता है कि जब दानापुरके सिपाहियोंने नये कारतूस प्रयोग करनेसे इनकार किया तब कमिश्नरने डुमरांवके महाराज और कुँवरसिंह दोनोंको बुलाया। जब दोनों वहां पहुंचे तब कमिश्नरने कुँवरसिंहसे कहा कि जैसे हो वैसे सिपाहियोंको इस बातपर राजी करो। कुँवरसिंहने कहा—"दानापुरके सिपाही शाहाबादके निवासी नहीं हैं। शाहाबादके आदमी मेरी बात मान सकते हैं, पर जो दूसरे देशोंके हैं वे मेरी बात न मानेंगे।" कुँवरसिंहने यह बात मुनासिब कही थी; क्योंकि उन्हें विश्वास था कि शाहाबादके आदमी मेरी बात मान सकते हैं पर और तो नहीं। यह सत्य बात कहकर उन्होंने अपनी सरलताका परिचय दिया था। इसमें कोई बात सरकारके विरुद्ध न थी। पर कमिश्नरने इसका अर्थ उल्टा लगाया। इसी सन्देहके कारण उनका पहलेवाला भाव बदला। वे अबतक जिसे विश्वासी और राजभक्त समझ रहे थे उसे अविश्वासी और अराजक मानने लगे। एक बात और थी जिसके कारण अधिकारियोंका उनपर सन्देह था। वे कर्जके बोझसे दबे थे। जमींदारी नाश होनी चाहती थी। खर्चकी उन्हें तंगी रहती थी, मानसिक चिन्ता उन्हें सताती रहती थी। यदि कानूनका जाल टूट जाय, सरकारका राज्य उठ जाय, शक्ति-शालीके दोनों हाथ खुल जायं तो उनके सभी मनोरथ पूर्ण हों।* इसी विचारसे अधिकारी उन्हें गदरका पक्षपाती मानने

* Kaye's Sepoy War. II, P. 100. note.

लगे थे क्योंकि गदरके कारण उन्हें सब तरहकी सुविधा हो सकती थी।

इस प्रकारकी अनेक शंकाओंके कारण अधिकारी कुँवरसिंह-पर कड़ी दृष्टि रखने लगे। जब गदरका आरम्भ हुआ तब बहुत-से इस वृद्ध राजपूतके खिलाफ तरह २ की बातें कहने लगे। शाहाबादके जो आदमी कुँवरसिंहकी क्षमताको संकुचित करना चाहते थे वे इस समय उन्हें गदरका पक्षपाती और सिपाहियों-का हिमायती कहने लगे थे। यदि कमिश्नर साहबका विश्वास पहलेके समान ही उनपर होता तो इस क्षत्रियका इतिहास न मालूम कैसा लिखा जाता, पर उन्हें शक हो गया था। यह शक किसी प्रकार भी दूर न हटा। वयोवृद्ध क्षत्रियका भाग्य भी प्रसन्न न हुआ। गयाके मजिस्ट्रेटने उन्हें इस वृद्धके साथ अच्छा व्यवहारका उपदेश देकर पत्र लिखा था—"दो एक आद-मियोंको फांसी देनेसे डर बैठ सकता है, फल भी अच्छा हो सकता है, पर जहाँ साधारण प्रजा हमारे विरुद्ध हो वहां यदि फांसी आदिकी घटना हो तो फल बुरा होता है। यदि कुँवरसिंहके समान प्रतापी जमींदारपर सन्देह किया जाय और उन्हें विरक्त किया जाय तो सम्भव है वे सरकारके विरुद्ध हों। एक बड़े आदमीके विरुद्ध होनेसे छोटे भी उसका अनुसरण करते हैं।"* आराके मजिस्ट्रेटकी भी यही राय थी। पर कमिश्नर टेलर विश्वास न कर सके। वे इस वृद्ध क्षत्रियपर फिर आस्था न

* Martin's Indian Empire. Vol II. P. 400.

रख सके। उन्होंने कुँवरसिंहको लानेके लिये पटनासे एक मुसलमान रईसको भेजा।

यह रईस कुँवरसिंहका विश्वासी मित्र था। इसका नाम था सैयद अजीमुद्दीन हुसैन। यह डिप्टी कलक्टरका काम करता थे। अपने मित्रके मुँहसे कमिश्नरकी आज्ञा सुनकर कुँवरसिंह चिन्तित हुए। कहा जाता है कि इससे पहले, दानापुरके सिपाहियोंसे कुँवरसिंहके पत्र-व्यवहारका शक करके आराके कलक्टर उनके मकानपर गये थे पर जांच करनेपर कोई कागज या चिट्ठी न मिली। कुँवरसिंह उस समय जगदीशपुरमें थे। उनकी अनुपस्थितिमें कलक्टर उनके मकानपर जाकर विरुद्ध प्रमाण संग्रह कर रहे हैं, यह सुनकर उन्हें दुःख हुआ। अब अपने मुसलमान डिप्टी कलक्टर मित्रसे कमिश्नरकी आज्ञा सुनकर वे और भी अधिक चिन्तित हुए। वे कमिश्नरका मतलब समझ गये। पटनाके मुसलमान मौलवियोंके कैद होनेका विवरण सुन चुके थे। अब उन्होंने समझ लिया कि कमिश्नर पटना बुलाकर उन्हें भी विश्वासघातसे कैद करेगा। इसलिये वे अपने मित्रके साथ पटना जानेको राजी न हुए। उन्होंने कहा कि मेरा शरीर अभी अच्छा नहीं है, जब शरीर स्वस्थ हो और ब्राह्मण यात्राका मुहूर्त निकाल दें, तब मैं पटना आऊंगा। दूत विदा हुआ। वे उसे दरवाजेतक पहुँचाने गये। जाते हुए उन्होंने कहा—"न चलकर आप अच्छा नहीं कर रहे हैं। इससे आपकी बड़ी हानि हो सकती है।" कुँवरसिंहने कहा—"आप मेरे

सच्चे मित्र हैं। मित्रता और धर्मके नामपर क्या आप कह सकते हैं कि पटनामें मेरी किसी तरहकी हानि न होगी?" मुसलमान दूतने इसका कुछ भी उत्तर न दिया। वैसे ही वे जगदीशपुरसे चले गये। कुँवरसिंह विषण्ण भावसे वापिस घरमें गये।

चाहे उनके सौ अपराध हों पर कभी राजभक्तिकी उन्होंने अवमानना न की थी। वे जो काम करते थे उसीमें उनकी राजभक्ति प्रगट होती थी। कमिश्नरने औरोंके मुँहसे सुना था कि, "कुँवरसिंह कहते हैं कि हम पटना न जायँगे और यदि हमें जबर्दस्ती ले जाना चाहेंगे तो हम इसमें बाधा देंगे।" पर इसमें कोई प्रमाण नहीं। यह सब जानते थे कि यदि कुँवरसिंह सरकारके विरोधी होंगे तो उनके सब आदमी भी बदल जायँगे। कुँवरसिंहके इशारेपर शाहाबादके आदमी चलते थे। पहले ही कहा जा चुका है कि आराके कैदी कुँवरसिंहके कहला देनेसे मिट्टीके बर्तनोंमें खाने लगे थे। आराके अधिकारियोंको खजानेकी चिन्ता थी। चारों ओर सिपाही विद्रोही हो रहे थे। दानापुरके सिपाहियोंकी त्योरियाँ भी बदल रही थीं। ऐसी सुविधा न थी जो खजाना पटना भेज देते। इस मौकेपर अधिकारियोंकी दृष्टि कुँवरसिंहपर पड़ी। खजानेकी रक्षाके लिये कुँवरसिंहसे कहलाते ही उन्होंने अपना रिसाला रक्षाके लिये भेज दिया। इसीसे सिद्ध होता है कि उस समयतक वे सरकारके विरोधी न थे। यदि गदरकी उनकी इच्छा होती

तो न वे कैदियोंको शान्त रखते और न खजानेकी रक्षाका भार लेते। कमिश्नरके अमूलक सन्देहसे वे दुःखी थे।

जब भ्रममें पड़कर अंग्रेज़ोंका राज्यनाश करनेके लिये सिपाही उठ खड़े हुए तब वे किसी शक्तिशाली पुरुषका सहारा देखने लगे। उस समय बिहारमें कुंवरसिंहके समान कोई प्रबल पराक्रमी पुरुष न था। उनके कहनेके विरुद्ध कोई कुछ करनेकी हिम्मत न करता था। सिपाहियोंने कुंवरको अपनेमें मिलाना चाहा, पर वे न मिले। पर जो सदा कुँवरसिंहके पास मंत्रियोंकी तरह हाजिर रहते थे वे विप्लववादी थे, वे धीर और दूरदर्शी न थे। उन्होंने निरन्तर इस बातकी कोशिश की कि कुंवरसिंह सिपाहियोंको शरण दें। सिपाहियोंके आदमियोंने कुंवरसिंहके मंत्रियोंसे उत्साह पाया होगा पर कुंवरसिंहने किसीसे कोई बात न की। वे पहलेके समान ही धैर्यवान रहे।

कुंवरसिंहके मंत्रियोंमें रणदलनसिंह और हरेकृष्णसिंह प्रधान थे। ये दोनों हर तरहसे गदरके पक्षपाती थे। उनकी इच्छा थी कि कुंवरसिंहको सिपाहियोंका नेता बना दिया जाय। जब रणदलनसिंह और हरेकृष्णसिंह उन्हें इस तरहसे उभार रहे थे तब वे अपने भाई दयालसिंह और अमरसिंहसे सलाह कर रहे थे। ये दोनों कुंवरसिंहको गदरका पक्षपाती होनेसे रोकने लगे क्योंकि उनका विश्वास था कि सरकारकी शक्ति बहुत है और उसका विरोध करनेसे हमारा समूल नाश हो जायगा। पर पटनाके कमिश्नर यदि मौलवियोंकी घटनाके बाद कुंवरसिंहको पटना

न बुलाते तो घटनाका रूप ही दूसरा होता। पर मुसलमान दूतके आनेसे उनके चित्तमें सन्देह हो गया। फिर भी सहसा वे सरकारके विरुद्ध न हुए। उनके भतीजे रिपुभंजनसिंहने कहा—"अंग्रेज़ देशके बादशाह हैं और हम मामूली जमींदार मात्र हैं। न हमारे पास बंदूकें हैं, न तोपें और न फौजें। हम बादशाहके साथ किस तरह युद्ध कर सकते हैं? ऐसे कामसे हमारा समूल नाश होगा। इसलिये आपका पटना जाना ही अच्छा है।" किन्तु उन्हें चिन्ता अधिक थी। भतीजेकी बातपर वे विश्वास न कर सके, उनका विश्वास हो गया कि बेटा मर चुका, पोता पागल है, उनकी सम्पत्तिके अधिकारी भाई भतीजे ही हैं। भाई भतीजे उन्हें जानेकी सलाह दे रहे हैं। इसका अर्थ यही है कि उनकी सम्पत्तिके वे इच्छुक हैं। यदि वे चुपचाप रहें तो कमिश्नर उन्हें जबर्दस्ती पटना पकड़ ले जायगा और वहाँ न मालूम फांसीसे, बन्दूकसे या तोपसे उनके प्राण लिये जायँ। इस चिन्ताने उन्हें अवसन्न और दुःखी कर दिया। उन्होंने रणदलन और हरेकृष्णकी बातको उचित समझा। कहा जाता है कि एक और जमींदारने उन्हें युद्धके लिये उभारा। पर अमरसिंहने उन्हें ऐसा करनेसे मना किया। पर भाई और भतीजोंकी बात उन्हें अच्छी न लगती थी। उन्हें चारों ओर अपने जीवनका सन्देह था। कमिश्नर टेलरकी कारवाइयोंसे वे ऐसे सन्देहमें पड़ गये थे कि सिवा राजद्रोही बननेके उन्हें और कोई मार्ग न दीखता था। अन्तमें हरेकृष्ण दानापुरके

सिपाहियोंके पास भेजे गये। इस प्रकार शाहाबादमें गदरका बीज उगा।

कुंवरसिंहने हरेकृष्णको केवल इसलिये दानापुर भेजा था कि वह सिपाहियोंके हार्दिक भाव मालूम करे। रणदलन और हरेकृष्णने उन्हें समझाया था कि जो वे सिपाहियोंसे न भी मिलें और सरकारके राजभक्त भी बने रहें तोभी उनकी सम्पत्तिकी रक्षा न होगी, वह तो जायगी। कुंवरसिंहने इसपर विश्वास किया था। पर विश्वास करनेपर भी सरकारके विरुद्ध उठनेकी उनकी प्रवृत्ति न थी। उस समयतक सिपाहियोंके सेनापति बनकर सरकारसे युद्ध करनेके लिये वे तैयार न थे। जब उनके चित्तकी यह दशा थी तब हरेकृष्णने दानापुर यात्रा की। वहाँ पहुँचकर उसने कुंवरसिंहकी इच्छाके अनुसार काम नहीं किया। हरेकृष्णने सोचा कि दानापुरके सिपाहियोंके हृदय-का भाव जानकर वापिस जगदीशपुर जानेसे क्या मतलब निकलेगा? पर यदि वह बलवाई सिपाहियोंको साथ लेकर जगदीशपुर जायँ तो बाध्य होकर कुंवरसिंहको उनका नेता बनना होगा। चतुर हरेकृष्णने यह सोच कर कुंवरसिंहकी आज्ञाके विरुद्ध काम किया। उसके सफल होनेमें किसी प्रकारका विघ्न भी न हुआ। दानापुरके सिपाही पहले हीसे बागी हो रहे थे। जब उन्होंने हरेकृष्णके मुँहसे सुना कि कुंवरसिंह उनके संचालक बननेको तैयार हैं तब उनके आनन्दकी सीमा न रही। वे क्षणमात्रकी देर न करके आराकी ओर चले। गदरके इतिहास

लेखक मालेशनने लिखा है कि कुंवरसिंहके आदमियोंने सोन नदी पार करनेके लिये पहलेसे नावोंका प्रबन्ध कर रखा था। २६ जुलाईकी शामको अधिकतर सिपाही नदी पार हुए। यहाँपर खुद कुंवरसिंह मौजूद थे और उन्होंने सिपाहियोंसे कहा था कि वे आरा जाकर खजाना लूटें और अंग्रेजोंको मारें।* पर लेखककी यह बात सत्य घटनासे दूर है। कुंवरसिंहने अपने नौकरोंको नाव संग्रह करने नहीं भेजा और न वे नदी पार मौजूद ही थे। उनकी सलाहसे कोई कार्यप्रणाली निश्चित नहीं हुई थी। उन्होंने किसीको उत्साहित नहीं किया, न उन्होंने आराका ख़जाना लूटनेको किसीसे कहा और न अंग्रेजोंका वध उन्हें अभीष्ट था। उनके कुचक्री नौकरके कौशलसे सिपाही आराकी ओर बढ़े थे। पर उनका सम्बन्ध कुवंरसिंहसे कुछ भी न था। कुंवरसिंहका चित्त अभीतक सिपाहियोंका पक्ष समर्थन करनेको पूरे तौरपर तैयार भी न था। अबतक वे ब्रिटिशराज्यके दुश्मन न बने थे। अभीतक शाहाबादकी शान्तिभंग करनेका उन्होंने इरादा न किया था।

पर दानापुरके सिपाही हरेकृष्णके साथ आरा आ पहुँचे। हरेकृष्णने जगदीशपुर कुंवरसिंहके पास समाचार भेजा कि दानापुरके सिपाही आरामें आ गये। यदि वे शीघ्र आरा न आये तो सिपाही शीघ्र जगदीशपुर आकर उनका मकान लूटेंगे। यदि वे आरा आकर उनके स्वामी बनेंगे तो सिपाही सदा सर्वदा

* Malleson's Indian Mutiny. Vol I P. 79.

उनकी आज्ञाका पालन करेंगे। इस समाचारसे कुंवरसिंह चमक उठे। दानापुरके सिपाही आरा आवेंगे, यह पहले उन्हें मालूम न था। हरेकृष्णको जिस उद्देश्यसे उन्होंने दानापुर भेजा था वह पूरा न हुआ यह देखकर वे नाराज़ हुए। पर समय निकल चुका था। तरह तरहकी गड़बड़ोंसे चिन्तित होकर अन्तमें वे आरा गये। उनके आनेके समाचारसे सिपाही प्रसन्न हुए। दूसरे दिन सिपाहियोंके अफसर लोग उनके मकानपर गये। जब वे अफसरोंके साथ घोड़ेपर बैठकर अपने मकानके बराबरवाले मैदानमें आये तब एक लाइनमें खड़े होकर सिपाहियोंने फौजी सलामी दी। इस प्रकार कुंवरसिंह उनके संचालक सेनापति बने। नाना प्रकारकी चिन्ताओं और कष्टोंका मुकाबला करते करते वे बूढ़े हो गये थे। इस अन्तिम अवस्थामें वे ब्रिटिशसिंहके मुक़ाबिलेपर खड़े हुए। कोई दूसरा उपाय न देखकर उनका छोटा भाई भी साथी बना। जिस घरमें आराके अंग्रेज़ोंने शरण ली थी उसके घेरनेका प्रबन्ध होने लगा।

जिस घरमें प्राणरक्षाके लिये अंग्रेज़ लोग छिपे थे वह दुमंजिला था। उसके चारों ओर खुले बरामदे थे। उस समयतक रेलवेकी पैमाइश शुरू हो गई थी। जगह २ रेलवेके एंज़िनियर काम कर रहे थे। आरामें जो एंजिनियर थे उनका नाम विकर्सवायाल था। इनके दो मकान आरामें थे, इनमेंसे यह एक था। यह छोटा था। पहले बिलियर्ड खेलनेके लिये यह बनाया गया था। इसीमें आपत्तिके समय सब अंग्रेज़ आकर

छिपे। खजानेकी रक्षाके लिये ५० सिक्ख सैनिक थे। वे इस समय अंग्रेज़ोंके रक्षक बने। २७ जुलाईको दानापुरके सिपाहियोंने गदरका निर्दिष्ट कार्य जेलखाना तोड़ना और खजाना लूटना, समाप्त किया। कचहरी और दफ्तर भस्म हुए। पर कलक्टरीके कागज न जलाये गये। कलक्टरकी कचहरी इसलिये छोड़ी गई कि फिर जमींदारोंको अपनी जमीनोंके निश्चय करनेमें कठिनाई होगी, झगड़े बढ़ेंगे। कुंवरसिंहकी आज्ञासे इसकी रक्षा हुई। अब सिपाहियोंने अंग्रेज़ोंके रक्षित स्थानको घेरा। अंग्रेज़ोंमें कोई फौजी विभागका आदमी न था, सब दीवानी महकमामें काम करनेवाले थे। आराके मजिस्ट्रेट सिक्खोंके सेनापति बने और रेलवे एंजिनियर सब प्रकारके आवश्यक पदार्थ संग्रह करनेके कामपर नियुक्त हुए। इनका साहस इनके साथ था, पराक्रमसे ये लोग अपने २ कर्त्तव्यका पालन करने लगे। बहुतसे सिपाहियोंके हमलेका जवाब इन्होंने जैसा दिया, वैसा ही उनकी शक्तिका अधिक विकास देखा गया। बड़े २ थैलोंमें बालू और मिट्टी भर कर इन्होंने नीचे और ऊपरवाले बरामदामें दीवारके तौरपर चुना। सिपाहियोंके आनेका समाचार सुनते ही एंजिनियरने इस घरमें आटा, बिस्कुट, बूरा, शराब आदि संग्रह कर ली थी। इसलिये शुरूमें इन लोगोंको खाने पीनेका कष्ट न हुआ। उनके इस रक्षा-स्थानके सामने १०० हाथपर एक बड़ा मकान था, उसकी दीवार ठीक सामने पड़ती थी। एंजिनियरने पहले हीसे उस दीवारको तुड़वा दिया था क्योंकि उसकी आड़से सिपाही

इनपर गोलियां बरसा सकते थे। इस प्रकार आगे पीछेका सब विचार करके अंग्रेज़ोंने अपनी रक्षाका निश्चय किया था। पर सिपाही उनके समान उद्योग और साहसका परिचय न दे सके। उनकी कार्यप्रणाली निश्चित न थी। जिस राजपूतने उनके संचालनका भार लिया था, उन्होंने भी इसमें किसी तरहका उत्साह प्रगट न किया। सरकारके विरोधी होनेकी शुरूसे ही उनकी इच्छा न थी, पर घटनावश वे इसमें आ ही गिरे। अंग्रेज़ोंसे उनकी ऐसी दुश्मनी भी न थी। वे जैसे अंग्रेज़ अफसरों-का हर एक काम निकलवा देते थे वैसे ही अंग्रेज़ अफसर भी समयपर उनका काम कर देते थे। दोनोंमें सद्भाव था। अन्तमें कमिश्नरके शकसे उन्हें चिन्ता हुई थी पर वह चिन्ता ऐसी न थी जिससे वे अंग्रेज़ोंके दुश्मन बन जाते। इसीलिये शुरू शुरूमें वे सिपाहियोंके काममें अधिक उत्साहसे भाग न ले सके। वे युद्ध-कुशल थे, लड़ना उन्हें आता था, पर वे उदासीन थे। भाग्य उन्हें घसीटकर इस ओर ले आया था पर उन्होंने भाग्यके निकट हर तरहसे सिर न झुकाया था। दूसरे कुंवरसिंहकी युद्ध-सामग्री भी अच्छी न थी। वे पहलेसे इरादा ही न रखते थे। इस-लिये बंदूक और गोली बारूदका भी उन्होंने संग्रह न किया था। जिस समय वे अंग्रेज़ोंके विरुद्ध खड़े हुए उस समय साधारण हथियार ही उनके पास थे। दानापुरके सिपाही उनके पास थे, उनके नौकरोंकी संख्या भी खासी थी। दूसरी ओर १६ अंग्रेज़ और ५० सिक्ख थे। यदि सिपाही जी तोड़कर लड़ते तो इनकी

अवस्था बहुत जल्द बदल जाती पर युद्धके लिये किसीका उत्साह दिखाई न देता था। कुंवरसिंह भी उदास थे। अंग्रेज़ोंने बरामदे-में जो मिट्टीके बोरे चुन रखे थे उनके बीचसे निशाना लगाकर वे सिपाहियोंपर बंदूक छोड़ते थे। सिपाही सामनेवाले मकानसे गोलियां चलाते थे। पर इससे अंग्रेज़ोंकी कुछ भी हानि न होती थी। इधर अंग्रेज़ोंकी गोली काम करती थी। सिपाहियोंने अंग्रेज़ोंके इस रक्षास्थानको आगसे जलाना चाहा। इसी इरादेसे उन्होंने पास बहुत सी लकड़ियां और फूसका ढेर लगाकर आग दे दी। पर हवाका रुख दूसरी ओरका था इसलिये वहां आग न लगी। अपनी यह कोशिश व्यर्थ देखकर सिपाहियोंने पास ही मिर्चोंका ढेर लगाकर उसमें आग लगा दी। खयाल था कि उसके कड़वे धुएंसे घबराकर अंग्रेज़ भागेंगे, पर इस समय भी हवाने साथ दिया। मिर्चोंका धुआं उस ओर न गया। अंग्रेज़ोंके घोड़ोंको मार मारकर सिपाहियोंने उनको उस किलेके पास रक्खा पर उनके सड़नेकी बू भी न पहुंची। सिपाहियोंके पास तोपें न थीं। कुंवरसिंहकी दो तोपें जमीनमें गड़ी थीं। वे खोद-कर निकाली गईं, पर उनके लिये न बारूद थी न गोला। इस प्रकार सिपाही अकृतकार्य रहे। इसी एंजिनियरके दूसरे मकान-पर सिपाहियोंने कब्जा कर लिया था। उसमें लोहे पीतलकी जो चीज मिली उसे वे तोपमें भरने लगे। एंजिनियर साहब अपनी कुर्सी और मेजके टुकड़े तोपसे बरसते देखकर आश्चर्यमें रह गये। प्रकृतिने उनकी बहुत सहायता की थी। आग और मिर्चोंके

धुएँसे वे बचे थे, मरे घोड़ेकी बदबूसे भी वे बच गये थे; पर समयसे वे न बचे। जितना ही अधिक समय बीतने लगा उतने ही उनके कष्ट बढ़ने लगे। उनकी भोजन-सामग्री खतम होने पर भी, सिपाही बराबर गोलियाँ बरसा रहे थे। उनके नाशके तरह तरहके उपाय रच रहे थे। भगवानसे वे अपनी मुक्तिकी प्रार्थना करते थे। ऐसे समयमें रातको उन्होंने दूरसे बंदूककी आवाज़ सुनकर समझा कि हमारे सहायक सैनिक आ रहे हैं। पर सहायक न आये।

रातमें दूर बंदूकोंकी आवाज क्यों हुई थी यह कहनेके लिये एक बार फिर दानापुरकी घटनाका वर्णन करना होगा। जब उत्तेजित सिपाही दानापुरसे चल पड़े तब अधिकारी बड़े चिन्तित हुए। यह पहले कहा जा चुका है कि उनके रोकनेकी पूरी कोशिश न हुई थी। सेनापति वृद्ध और बीमार थे। उनके सहायकोंमें भी कोई ऐसा चतुर आदमी न था। सेनापतिने सोचा कि शायद विद्रोही सिपाही पटनापर हमला करें इसलिये ५०० गोरे सैनिक और चार तोपें रखकर बाकी सबको उन्होंने पटनाकी रक्षाके लिये भेज दिया। उनकी सेनामें सवार न थे इसलिये पैदलोंसे ही काम लेनेका निश्चय किया। सिपाही यदि आरा जाना चाहें तो उन्हें सोन नदी पार करनी होगी इस विचारसे सोनकी नावें उन्होंने डुबानेके लिये आदमी भेजा। पर वहां सिपाहियोंको देखकर वे भाग आये। सिपाहियोंको रोकनेकी फिर कोशिश हुई पर इसमें भी सफलता न हुई। २७

जुलाईको ३७ नं० गोरी सेनाके कुछ सिपाही जहाजमें बैठाकर भेजे गये। अधिकारियोंका खयाल था कि ये लोग जहां जाकर उतरेंगे वहांसे आरा ६ मील है। इस रास्तेको तय करके ये लोग आराके विपद्ग्रस्त अंग्रेज़ोंको छुड़ाकर वापिस आ जायंगे। पर यह उद्देश्य भी पूरा न हुआ। नदीमें पानी कम था इसलिये थोड़ी दूर चलकर जहाज रुक गया। सेनापतिने सैनिकोंको वापिस बुलाना चाहा पर कमिश्नर टेलर इससे सहमत न हुए। उन्होंने कुछ सेनाके साथ एक और जहाज भेजनेका प्रस्ताव किया। उनका मतलब था कि यह दूसरा जहाज पहले जहाजको कम पानीसे खींच ले जायगा। घटनावश एक और जहाज दानापुर आया। वह इलाहाबादके अंग्रेज़ों और मेमोंको लेकर कलकत्ता जा रहा था। निश्चय हुआ कि इस जहाजमें आराके उद्धारके लिये सेना भेजी जाय। पर जहाज पहलेसेही भरा था। बिना उन्हें उतारे सैनिक आ नहीं सकते थे। दानापुरके प्रोटेस्टैंट गिर्जेमें इन सब यात्रियोंको उतार दिया गया। जबतक जहाज अपना काम करके वापिस न आये तबतकके लिये सब इसमें ठहराये गये। इस प्रकार २९ जुलाईको सवेरे दूसरा सैनिकदल रवाना हुआ। पर जब २५० गोरे सैनिक तैयार होकर जहाजपर चढ़नेके लिये किनारे पहुंचे तब जहाजके कप्तानने इतने आदमियोंको लेकर चलनेसे इनकार किया, कारण, नदीमें पानी कम था और पहला जहाज रुक गया था। इतने यात्रियोंके साथ दूसरे जहाजको खींचनेकी उसमें शक्ति न थी। दूसरे

जहाजके यात्री सो रहे थे। कमिश्नर टेलरने सबको जगानेके लिये कहा। यात्री जागे पर कप्तानने आधे सैनिक लिये। बाकी आधे वापिस गये। पहले कर्नल फ्रेडरिक सेना नायक बने थे पर जब उन्होंने देखा कि सैनिकोंकी तादाद कम हो गई तब वे थोड़ी सेनाको ले जानेके लिये तैयार न हुए। इसलिये कप्तान डनबरपर इस छोटी सेनाका भार समर्पित हुआ। दानापुरके वृद्ध सेनापतिको कप्तान डनबरकी योग्यतापर सन्देह था। एक अयोग्य अफसरपर, समयके कारण, उन्हें सेना-संचालनका भार देना पड़ा।

सवेरे ६॥ बजेके करीब जयध्वनिके साथ जहाज दानापुरसे चला। कमिश्नर टेलरके सहायक मांगलस साहब और छपराके मजिस्ट्रेट मेकडानल्ड साहब इस यात्री सेनाके साथ थे। इन्होंने भी अपने अभ्यस्त कार्यका त्याग करके सैनिक बाना लिया था। खैर, कप्तान डनबरकी अधीनतामें शुरूसे ही यह सेना अनेक असुविधाओंमें पड़ी। ये लोग भूखे ही जहाजमें बैठे थे और जहाजमें भी भूखे ही रहे। जहाजमें खाद्य सामग्री काफी थी पर बहुत सी गड़बड़ोंके कारण वह सैनिकोंको न दी गई। दोपहरके करीब वह फँसा हुआ जहाज निकाला गया। जब जहाज निश्चित स्थानपर पहुंच गया तब सब सेना जहाजसे नावोंमें उतरी। क्योंकि आराके पास पहुंचनेके लिये एक नहरसे जाना पड़ता था। सैनिक भूखे थे, तकलीफें सहते हुए शामको ७ बजे वे किनारेपर उतरे। इस समय चारों

और चांदनी खिल गई थी। इस प्रकारसे मार्गदर्शकके बताये रास्तेसे कप्तान डनवर आराकी ओर बढ़े। थोड़ी देर बाद वे एक पुलपर पहुंचे। यहाँ सैनिकोंने अध्यक्षसे कुछ देर आराम करनेकी अनुमति मांगी और शराब तथा बिस्कुट चाहे। पर डनवरने उनकी इस बातपर कुछ भी ध्यान न दिया। उसका विचार रातों रात आरा पहुंचनेका था। भूखे सैनिक रातको ११ बजे फिर चलने लगे। आधी रातके समय चारों ओर अन्धेरा हो गया विद्रोही सिपाहियोंकी मौजूदगीका कुछ फिकर न करके वे अन्धेरेमें ही आगे बढ़ने लगे। वे आराके निकट जिस समय आमोंके बागोंके बीचमें पहुंचे उस समय दोनों ओरसे गोलियोंकी बौछारें उनपर होने लगीं। सबसे पहली गोली कप्तान डनवरके ही लगी। सैन्य संचालनमें यदि उन्होंने कुछ गलतीकी तो उसका फल उन्हें ही सबसे पहले मिला। चोट खाकर इनके प्राणपखेरू उड़ गये।

एक तो रातका समय, दूसरे थके और भूखे सैनिक, तीसरे सेनापतिका न होना, चारों ओरसे लगातार गोलियाँ बरसने लगीं इससे बहुतसे गोरे सैनिक खेत रहे। वे जो गोलियां छोड़ते थे वे सब व्यर्थ थीं—क्योंकि सिपाही आमके पेड़ोंकी ओटमें खड़े थे फिर गोरे सैनिकोंकी वर्दी सफेद थी इसलिये अन्धेरेमें भी वह चमकती थी। उसी ओर लक्ष्यकरके सिपाही गोलियाँ छोड़ते थे पर गोरोंको कहीं कुछ न दिखाई देता था। इस प्रकार शुरूमें वे एकाएक हमलेसे घबरा गये। फिर उन्होंने अपने आपको

बचानेके लिये किसी स्थानपर छिपना उचित समझा। बिगुलकी आवाजपर सब एकत्र होकर आमके बागसे खेतोंकी ओर निकले। खेतोंके पास एक सूखा तालाब था। उसीमें सबने आश्रय लिया। पर इस स्थानपर भी वे निरापद न रहे। हथियारोंकी आवाजोंसे सिपाहियोंने उनके स्थानका निश्चय किया और उसी ओर लक्ष्य करके वे बंदूकें छोड़ने लगे। गोरे उस तालाबके निकट जैसे जैसे बढ़ने लगे वैसे ही उन्हें मालूम हुआ कि पेड़ भाड़ और टीलोंकी ओटसे चारों ओरसे उनपर गोली बरस रही है। वे सिपाहियों-की बंदूकोंसे निकले धुएँको लक्ष्य करके गोली चलाते पर फल कुछ न हुआ। सब तरहसे उनकी हानि हो रही थी। घायलोंको ले चलनेके लिये उनके पास डोली आदि कुछ भी न थी। साथ डाक्टर आदि भी न था। एक डाक्टर था, पर वह घायल होनेके कारण खुद ही निकम्मा हो गया था। उनके लिये केवल एक ही सहूलियत थी और वह यह कि सिपाही जैसे जैसे उनपर बंदूकें छोड़ते थे वैसे ही वैसे उनकी बारूद और गोली समाप्त होती जाती थी। यदि सिपाहियोंके पास काफी गोली बारूद होता तो उनमेंसे एक भी जीता वापिस न लौटता।

इस प्रकार पीछे हटते हटते गोरे सैनिक नहरके पास आये। सौभाग्यसे वहाँ नावें मौजूद थीं। गांववालोंने दया करके नावें एकत्र कर दी थीं। पर इस भागी हुई सेनामें किसी प्रकारका नियम और व्यवस्था न रही। सब अपने आपको बचानेके लिये जल्दी करने लगे। अफसरोंकी बातोंपर कोई ध्यान न देता था।

सिपाही इस भागती सेनापर गोलियां दाग रहे थे। नावें डुबोने या जलानेकी भी वे कोशिश कर रहे थे। उनकी यह कोशिश बिलकुल व्यर्थ भी न गई। दो नावें उन्होंने जला दीं—एक डुबो दी। गोरे अपनी रक्षाके लिये व्यस्त थे। बहुतोंने हथियार फेंक दिये, कपड़े उतार दिये और नावपर चढ़नेके लिये पानीमें कूद पड़े। पर इनमेंसे भी कई सिपाहियोंकी बंदूकोंके निशाने बने। कई पानीमें डूब गये और कई नावकी आगसे झुलस गये।

जो किसी तरह नहरके दूसरे किनारे जा पहुंचे वे निश्चिन्त हुए। किसी तरह बचकर बड़ी दीन दशामें वे जहाजपर पहुंचे। इन सब आपत्तिग्रस्त सैनिकोंको लेकर जहाज दानापुरकी ओर चला। जब जहाज दानापुरके पास पहुंचा तब वहाँके यूरोपियन विजयका समाचार निश्चित समझकर किनारेपर प्रसन्नता करने लगे। पर जहाजपरसे किसीने आनन्द-ध्वनि न की। इससे वे बड़ी आशंकाके साथ जहाजको देखने लगे। दानापुरसे चार सौ सैनिक स्वस्थ और सबल काय गये थे। इनमेंसे केवल पचास अक्षत शरीर वापिस आये। यह दशा देखकर यूरोपियनोंके शोककी सीमा न रही, स्त्रियाँ छाती पीटने लगीं। सेनापति लायड इसके लिये कुछ भी जिम्मेवार न थे पर अंग्रेज़ोंको ऐसा क्रोध आ रहा था कि जो सेनापति सामने होते तो उनके टुकड़े टुकड़े कर डालते।

आराके उद्धारके लिये जो सैनिक गये थे उनकी यह दशा हुई। पर ऐसी दशामें भी उनमेंसे कइयोंने समुचित वीरताका परिचय

दिया। शुरूमें कहा गया है कि इस सेनाके साथ दो दीवानीके अफसर भी थे। लड़ाईके अवसरपर सेनाके बराबर खड़े होकर इन्होंने अपनी रणनिपुणताका परिचय दिया था। शिकार खेलते रहनेके कारण ये लोग जैसा घोड़ेपर चढ़ना जानते थे वैसा ही निशाना लगाना भी जानते थे। शिकारके कारण अंग्रेज़ोंको युद्ध-विद्याका अच्छा अभ्यास बना रहता है और बहुत बार वे रणनिपुण सैनिककी अपेक्षा भी अधिक अच्छी तरहसे संग्राम करते हैं। जब चार्ल्स मटकाफने भरतपुरके हमलेके समय सैनिकोंको उत्साहित किया था, जब माउएट स्टुअर्ट एल-फिनस्टन आसाईके संग्राममें सर आर्थर वेलजलीके बराबर खड़े रहे थे, उस समय भी सिविल कर्मचारियोंकी वीरता अप्रकाशित न थी और १८५७ में भी उसका अवसान न हुआ था। सरकार-के सब कर्मचारी कलमके साथ साथ बंदूक चलाना भी जानते थे। शान्तिके समय वे कलम चलाते और अशान्ति होते ही कलम रखकर बंदूक उठा लेते थे। आराके इस युद्धमें, जो दो सिविलियन अफसर सैनिक बनकर गये थे, वे दो घायल सैनिकोंको पीठपर लादकर गोलियोंकी बौछारमें ६ मील आये थे। नाव पकड़नेके लिये वे नहरके पानीमें गिरे पर घायलोंको न छोड़े। २४ घंटे भूखे और ४८ घंटे काम करके भी वे न थके। इस प्रकार यह युद्ध भी वीरतासे खाली न था।*

इधर आरामें जो अंग्रेज़ किला बनाकर अपनी रक्षा कर रहे

* Martin's Indian Empire. Vol II. P. 403.

थे वे बहुत चिन्तित हुए। रातके अन्तिम प्रहरमें एक घायल सिक्खने अंग्रेज़ोंकी दुर्गतिका समाचार उन्हें जाकर सुनाया। इस समाचारसे उन्हें मार्मिक दुःख हुआ। उनके पीनेका पानी समाप्त हो चुका था, इधर लगातार गोलियां बरसनेके कारण घरसे निकलनेका कोई उपाय न था। परिश्रमी सिक्खोंने और कहीं न जाकर भीतर ही १८ फुट गहरा कुवां खोद डाला। इनके इस स्थानमें आटे, मैदे और बिस्कुटोंका अभाव न था पर मांस-भोजी अंग्रेज़ोंकी उससे तृप्ति न होती थी। निरामिष भोजनसे वे शक्तिहीन होते जाते थे। वे मांसके लिये कोशिश करने लगे। रातको बहुतसी बकरियां चरनेके लिये उनके घरके पास आतीं। एक रातको उन्होंने चार बकरियां पकड़ लीं। इधर सिपाही भी निश्चेष्ट न थे। वे उस मकानको ही उड़ानेके उपाय रचने लगे। अंग्रेज़ रक्षा करने लगे। इस प्रकार एक सप्ताह बीत गया। इतने दिनतक उन्होंने बड़ी वीरतासे आत्मरक्षा की। समय समयपर इनके कष्टोंकी भी सीमा न रहती थी। एक सप्ताह बाद (२ अगस्त) अंग्रेज़ोंने देखा कि बहुतसे आदमी हाथी, घोड़े और बैलगाड़ियोंपर लूटका माल दूसरे स्थानोंकी ओर ले जा रहे हैं। इस समय भी सिपाही गोलियां बरसा रहे थे। पर ज्यों ज्यों दिन चढ़ता जाता था त्यों त्यों उनका उद्यम ढीला होता जाता था। थोड़ी देर बाद उन्होंने तोपकी आवाज सुनी। इससे उनके हृदयोंमें आशा और निराशा दोनोंका उदय हुआ। वे बड़ी उत्सुकतासे सब कुछ देखने लगे। अन्तमें उन्हें

विश्वास हुआ कि उनके सहायक आ रहे हैं। इससे उन्हें अपार प्रसन्नता हुई।

गोलंदाज सेनाके विन्सेंट आयर नामक सेनापति अपनी सेनाके साथ, पानीके रास्तेसे, कलकत्तासे, इलाहाबाद जा रहे थे। २५ जुलाईकी शामको उनका जहाज दानापुर पहुंचा। इसी समय सेनापति लायडकी उत्तेजित सिपाही सेना दानापुरसे गई थी। विन्सेंट आयरने सेनापति लायडके पास जाकर उत्तेजित सिपाहियोंके विरुद्ध युद्धयात्रा करनेका प्रस्ताव किया। प्रस्ताव स्वीकार हुआ। दूसरे दिन बक्सर जाकर आयरने सुना कि सिपाही सोन नदी पार करके आराकी ओर चले गये। गाजीपुरमें भी अशान्ति थी इसलिये आयर सीधे वहां गये और दो तोपें छोड़कर वापिस बक्सर आये। यहां एक सेना और आयरको मिली। इस सेना और अपने तोपखानेको लेकर आयरने आरापर चढ़ाई की।

इधर सम्पूर्ण आरा कुंवरसिंहके अधिकारमें था। वृद्ध राजपूत वीरके प्रतापसे आरावासी कांपते थे पर सब दुर्दशाग्रस्त नहीं हुए। कुंवरसिंहकी आज्ञा थी कि किसीपर अत्याचार या जोर जुल्म न हो। कहा जाता है कि इस समय कुछ बंगाली उनके सामने लाये गये, ये अंग्रेज़ोंके पक्षमें थे। अंग्रेज़ोंकी नौकरीसे इनकी जीविका चलती थी। इसी कारण इन्हें विश्वास था कि कुंवरसिंह उन्हें मौतकी सजा देंगे। बंगाली हाथ जोड़कर दीन भावसे कुंवरसिंहके सामने खड़े हुए। वृद्ध

राजपूतने अपनी विशाल आंखें उठाकर इन्हें देखा। उस दृष्टिमें न शंका थी, न आवेग, न कठोरता, वह दृष्टि शान्त और उज्ज्वल थी। शान्तभावसे कुंवरसिंहने कहा,—"तुम निर्भयतासे अपने देश वापिस चले जाओ। मेरी आज्ञासे कोई कुछ न कहेगा।" यह कहकर उन्होंने इनको हाथीपर बैठाकर पटना भेज देनेकी आज्ञा दी। तेजस्वी और प्रतापी वीरने निरीह और साधारण आदमियोंका खून बहाकर अपने वीरधर्मको कलंकित न किया। वृद्ध कुंवरसिंहका हृदय इतना उन्नत था। वे पवित्र वीरधर्म-अलंकृत थे।

सेनापति आयरने बक्सरसे अट्ठाईस मील दूर शाहपुरमें सेनापति डनवरके मारे जाने और उनकी सेनाकी दुर्दशा होनेका वृत्तान्त सुना। इस समय लगातार पानी बरसनेके कारण आरा और बक्सरके बीचका भूखंड पानीसे भर गया था फिर भी आयर न रुके। वे पहली अगस्तकी शामको गजराजगंज नामक गांवमें पहुंचे। उनके दोनों ओर धानके गहरे खेत पानीसे ऊपरतक भरे हुए थे, सामने आमोंका बाग था। अंग्रेज़ सेनापतिकी गति रोकनेके लिये कुंवरसिंहने यहीं सेना एकत्र की थी। आयर २ अगस्तके प्रातःकाल जब यात्राकी तैयारी कर रहे थे तब एकाएक बिगुलकी आवाज हुई। इस आवाजसे उन्होंने समझ लिया कि पास ही विपक्षी हैं। अंग्रेज़ सेनापति युद्धके लिये तैयार हो गये। इधर कुंवरसिंहकी सेना पेड़ोंकी आड़से बंदूकें चलाने लगी। आयरने आगेके भागमें तोपें लगाकर गोले

बरसानेकी आज्ञा दी। कुंवरसिंहकी सेना साहसी और विजयिनी थी। उनकी तादाद भी अंग्रेज़ी सेनासे अधिक थी। पर दो बातोंमें उनकी सेना कमज़ोर थी। एक तो उनके पास तोपें न थीं, इधरसे अंग्रेज़ सेनापति लगातार उनपर गोले बरसा रहा था। दूसरे उनकी सेनाकी बंदूक उतनी अच्छी न थीं। अंग्रेज़ोंके पास उस समयकी सबसे अच्छी 'एनफील्ड राइफल' थी। लड़ाईके सामानकी कमजोरीके कारण कुंवरसिंहकी सेना अधिक समयतक अंग्रेज़ी सेनाको न रोक सकी। तोपकी मारके कारण उनकी सेनाको पीछे हटना पड़ा, अंग्रेज़ सेनापति आगे बढ़ने लगा। इस प्रकार दो मील पीछे हटनेके बाद एक छोटी नदी उनके पीछे आ गई। नदीके दूसरे किनारे बीबीगंज नामक छोटा गांव था। नदी पार होनेके बाद कुंवरसिंहने उसे तोड़ दिया। इसलिये आयर नदी पार होनेके लिये दक्षिणकी ओर रेलवेके पुलकी तरफ बढ़े। इस पुलसे आरा जानेके लिये एक रास्ता था, उसीके लिये आयर आगे बढ़ने लगे। इधर कुंवरसिंह नदी पार होकर नदीके दूसरे किनारे किनारे उसी पुलके सामनेकी ओर जाने लगे। अंग्रेज सेनापति उनकी ओर बराबर गोले फेंकते जा रहे थे पर इस बार कुंवरसिंह गोलोंसे न रुके। बड़े भीम वेगसे बूढ़ा क्षत्रिय वीर पुलका दूसरा मुहाना रोकनेके लिये आगे बढ़ा। बीबीगंजके निकट भयानक संग्राम मचा।

पुलके पास पेड़ोंसे भरा एक छोटासा जंगल था। अंग्रेज़

सेनापति पुल छोड़कर फिर रास्तेपर आये भी न थे कि कुंव-रसिंहने इस जंगलपर कब्जा कर लिया। एक क्षणमें जंगलसे अंग्रेज़ी सेनापर लगातार गोलियोंकी बौछार होने लगी। फिर वे आगे न बढ़ सके। कुंवरसिंहने बड़े वेगसे अंग्रेज़ी सेनापर धावा किया। इस धावेको एकाएक गोरी सेना न संभाल सकी। बूढ़े क्षत्रियकी वीरता, पराक्रम और रणकुशलता देखकर अंग्रेज़ सेनापति चौंक उठा। गोरी सेना गोलियां बरसाने लगी पर इससे क्षत्रियकी चलाई हुई सेना न रुकी। तोपोंके पास जो गोरी पैदल सेना थी वह इस जोरके हमलेसे तोपें छोड़कर पीछे हट गई। कुंवरसिंहकी सेना तोपोंपर आ गई। कोई उपाय न देखकर अंग्रेज़ सेनापतिने गोरी सेनाको संगीन चलानेका हुक्म दिया। अंग्रेज़ोंकी तेज संगीनोंके सामने सिपाही सेना अधिक समयतक न टिक सकी। सिपाही सेना पीछे हट गई। इस प्रकार आयरका मार्ग साफ हुआ। रेलवेका जो सामान पड़ा था, वह लगाकर आयरने पुल बनवाया और तोपोंको पार उतारा। ३ अगस्तको सबेरे वे आरेमें पहुंच गये। आरेके रुके हुए अंग्रेज़ उन्हें देखकर प्रसन्नता प्रगट करने लगे।

इधर कुँवरसिंह अपने निवासस्थान जगदीशपुर गये थे। उनकी ओरके कुछ घायल सिपाही अंग्रेज़ोंके कैदी हो गये थे। इन घायल कैदियोंपर जरा भी दया न करके आयरने उन्हें प्राणदंडकी सजा दी। लोगोंके हथियार लिये गये। इस काममें एक सप्ताह लग गया। इधरका काम समाप्त करके आयर जग-

जगदीशपुरकी ओर चले। रास्तेमें जंगल था। इस जंगलमें डुलुर नामक स्थानपर कुंवरसिंहने अपनी सेना एकत्र की थी। पर उनकी यह कोशिश भी अन्तमें सफल न हुई। आयर जगदीशपुर चला गया, कुंवरसिंहके मकानमें बहुतसा अनाज जमा था उसे निकालकर सेनापतिने मकानको बारूदसे उड़ा दिया। कुंवरसिंहने बहुत धन लगाकर एक सुन्दर मन्दिर बनवाया था, उसका भी नाश कर दिया गया। उनके दोनों भाई दयालसिंह और अमरसिंहके मकान भी इसी तरह उड़ा दिये गये। थोड़ी दूरपर जोतरा नामक स्थानमें कुंवरसिंहका एक मकान था वह भी सेना भेजकर नष्ट कर दिया गया।

दानापुरकी १६ नं० सेनाके गोरे सैनिक आराके उद्धारके लिये भेजे गये थे। उस समयके एक पत्र-लेखकने इंगलैंडके प्रसिद्ध समाचारपत्रमें इस विषयका पत्र प्रकाशित कराया था—"घायल सिपाहियोंको इन्होंने रास्तेके किनारेके पेड़ोंपर लटकाकर फांसियां दी थीं। जो लड़ाईमें मारे गये थे उनकी लाशें भी इस तरह लटकाई गई थीं। कुंवरसिंहके मकानकी रक्षा करते हुए पचास सिपाही गोलीसे मरे थे, वे भी इसी तरह पेड़ोंसे लटकाये गये। कुंवरसिंहका मकान विध्वंस करके जगदीशपुरके आसपासके तमाम गांव जलाकर भस्म किये गये और निवासी मारे गये।"* जगदीशपुरका मन्दिर तोड़नेके कारण प्रधान सेनापतिने आयरकी प्रशंसा न की। सैनिक अधिकारीके ऐसे कामसे

* Martin's Indian Empire Vol. II P. 406.

गवर्नर जनरलको विशेष आशंका हुई।* इतिहास लेखक 'के' साहबने लिखा है कि यह मन्दिर पुराना न था। लोग प्राचीन मन्दिरके प्रतिही विशेष श्रद्धा रखते हैं।† पर इतिहास लेखककी यह उक्ति व्यर्थ है। जहां देवताकी पूजा होती है वह चाहे नया हो या पुराना, हिन्दुओंका पूज्य और पवित्रस्थान है। उसकी पवित्रतामें कहीं मतभेद नहीं हो सकता। सेनापति आयरने हिन्दुओंके मन्दिरका नाश करके उन्हें धिक्कारा और ठुकराया था।

१० नं० सेना जब जगदीशपुरका नाश करके वापिस दानापुर जा रही थी, तब रास्तेमें उसने गाँवोंके साथ जो बर्ताव किया वह एक खूनी राक्षसके कामको भी नीचा दिखानेवाला था। कड़ी शराब पीकर वे राक्षस बन जाते थे, फिर उन्हें भले बुरेका कोई खयाल न रहता था। दानापुरके बूढ़े सेनापति लायड कामपरसे हटा दिये गये थे। इस कारण यह सेना और भी अधिक मदोन्मत्त हो गई थी। ४० नं० सिपाही सेनाके करीब १०० सिपाही उस समय भी सरकारके पक्षमें थे। उनके साथी दानापुर छोड़कर चले गये। पर वे वहीं बने रहे। जबतक बूढ़े सेनापतिके हाथमें सेनाका काम था, तबतक इन सिपाहियोंका कुछ भी अनिष्ट न हुआ। ये लोग शान्तिसे रहते थे, अधिकारी भी इनके

* Kaye's Sepoy War. Vol III. P. 145 note.

† Ibid War. Vol III. P. 146.

साथ शिष्ट व्यवहार करते थे। पर बूढ़े सेनापति अपने कामसे हट गये थे और जगदीशपुरसे राक्षसी प्रकृतिवाले गोरे वापिस आये थे। गांव जलाते, सम्पत्ति लूटते और प्रजाके आदमियोंको मारते २ भी इनका कलेजा ठण्ढा न हुआ था। ये गोरे दानापुर पहुंचे और ४० नं० सेनाके बाकी राजभक्त सिपाहियोंको जबर्दस्ती खींच २ कर संगीनों और गोलियोंसे मार डाला। अफसर लोग बाहर आये। उन्होंने जो कुछ देखा उससे आश्चर्यमें रह गये। सिपाहियोंमेंसे बहुतसे मर गये थे और बहुतसे सिसक रहे थे। सब बड़ी कातरतासे अपनी असीम यातना प्रगट कर रहे थे।* इनमें एक स्त्री भी घायल की गई थी। जो सेनापति आउट्राम इस मौके (१७ अगस्त) पर दानापुर न होते तो अफसर लोग इस हत्याकी बातको ही छिपा जाते। सेनापति आउट्रामने ५ नं० गोरी सेनाके सैनिकोंको नगर-रक्षापर नियुक्त किया और १० नं० गोरी सेनाके सैनिकोंको यहांसे हटाया। दानापुरके सैनिक अफसर इस घटनाको गुप्त रख सकते थे और सेनापति आउ-ट्रामने १० नं० सेनाको दूसरी जगह बदल दिया। पर यह सच है कि उन गोरोंको इन निरपराधोंके खूनकी कोई सजा नहीं दी गई। राजभक्त सिपाही कुत्तेकी मौत मारे गये। अधिकारियोंकी जरा भी सहानुभूति न हुई।

जगदीशपुर नष्ट हुआ। सिपाही हार गये, पर कुंवरसिंह-

* Martin's Indian Empire Vol II P. 414

ने सरकारके हाथ आत्मसमर्पण न किया। किलेके समान उनका बड़ा भारी मकान गिर चुका था, मन्दिर तोड़ दिया गया था। ऐसी दुर्दशासे वे ससरामकी ओर चले। उनकी स्त्रियां इससे पहले ही अपने २ बापके घर भेज दी गई थीं। अपनी स्त्रियों और घरवालोंके लिये चिन्तित न होकर कुंवरसिंह अपने नौकरों सहित ससरामके निकटवाले पहाड़पर पहुंचे। उनकी एकरक्षिता मुसलमानी बीबी इस समय भी साथ थी। शामको सब पहाड़पर पहुंचे। पहुंचकर सुस्ताने लगे। एक सतरञ्जपर हरेकृष्ण और रणदलनसिंह बैठे। उनके पास सिपाहियोंके सरदार लोग बैठे। पास ही एक कुर्सीपर कुंवरसिंह बैठकर कलीकी लम्बी नैसे धुआं खींचने लगे। इस तरह सवेरा हुआ। सिपाहियोंने देखा कि कुंवरसिंह बैठे हुका पी रहे हैं पर उनकी दोनों आंखोंसे आंसू बह रहे हैं।

अपने सरदारको आंखोंसे आंसू बहते देखकर सिपाही चौंक उठे। उन्होंने कहा—"आप रो क्यों रहे हैं? हमने जब ऊखलमें सिर दे दिया तब मूसलका क्या डर?" कुंवरसिंहने कहा—"डर कुछ नहीं है, मैं रो रहा हूं तुम्हारे लिये। तुम लड़ना नहीं जानते, जिस घोर त्यागके साथ गोरे आगे बढ़कर मर मिटते हैं वैसे तुम नहीं बढ़ते। मेरी सम्पत्ति और जमींदारी मेरे ही हाथसे नाश हो गई। एक पोता है, वह भी पागल है, उसका कोई ठिकाना नहीं।

आज जो मेरा बेटा जीता होता तो मेरा सिर काटकर अंग्रेजोंके पास ले जाता और कहता—"मेरा बाप नमकहराम था मैं उसका सिर काटकर लाया हूं।" इससे मेरे इस प्राचीन वंशका बीज बाकी रहता। पर यह सब अब होनेका नहीं, अब आगे क्या करना है सो सोचो।" इन बातोंसे भी सिद्ध होता है कि वह सरकारके द्वेषी न थे। घटनावश कुमंत्रियोंकी सलाहसे वे इसमें गिरे थे। जो वे हृदयसे विद्रोही होते तो इस प्रकार आंसू बहाकर न पछताते। वास्तवमें पटनाके कमिश्नरके सन्देहने उन्हें हिताहित ज्ञानशून्य कर दिया। यदि कमिश्नर उनके साथ भला व्यवहार करता तो कुछ भी न होता, सम्पूर्ण शाहाबाद भी शान्त रहता।

अब कुंवरसिंह अपनी सम्पूर्ण शक्तिके साथ उठे। जब वे जगदीशपुरसे आरा जाकर सिपाहियोंसे मिले थे, तब सरकारके विरुद्ध होनेका उनका इरादा ही न था। थोड़ेसे सिक्ख सैनिकोंके साथ अंग्रेज एक छोटेसे मकानमें घिरे थे, हजारों सिपाही भी कुछ न कर सके। सिपाहियोंके अलावा शाहाबादके उच्छृंखल और उत्तेजित आदमी भी कुंवरसिंहका नाम सुनकर शामिल हो गये थे। वे यदि पर्याप्त युद्ध-सामग्री एकत्र करते और अपनी पूरी शक्ति लगाते तो शायद घटनाचक्र घूम जाता। उनके पराक्रमसे कप्तान डनवरकी गोरी सेना नष्ट हुई थी। पर अच्छे और योग्य हथियारोंके बिना वे सेनापति आयरका सामना न कर सके, पर जब जगदीशपुरका उनका दादा

परदादाका मकान तोड़ा गया और जिसमें वे पूजा किया करते थे वह मन्दिर तोड़ा गया तब वे क्रुद्ध हुए। फिर उनके बूढ़े शरीरमें अपूर्व तेज प्रगट हुआ। अब उन्होंने भाग्यके सामने पूरे तौरपर सिर झुकाकर केवल अंग्रेज़ोंके नाशकी ओर दृष्टि की। उनकी अवस्था अस्सी वर्षकी थी पर बुढ़ापा उनकी ओर अभीतक आंख उठाता शरमाता था। गोली खाये बूढ़े शेरकी तरह अब यह पुराना क्षत्रिय दहाड़ने लगा। अब तक लड़ते हुए भी उसकी आंखें बंद थीं, पर अपने मन्दिरको टूटता देख-कर उसने रक्तनेत्र खोले।

सेनापति आयरने जगदीशपुर और उसके आसपासके गावोंको भस्म कर दिया था। मकान तोड़ डाले थे। अस्सी वर्षके बूढ़े कुंवरसिंहके कटे सिरके लिये दस हजार रुपयेके इनामकी डौंड़ी पीटी गई थी। अन्तमें डौंड़ी पिटी कि जो कोई कुंवरसिंहका सिर लावेगा उसे पचीस हजार रुपया इनाम मिलेगा। पर इस क्षत्रियके नौकर इतने सच्चे थे कि—'पचीस हजारकी रकमपर वे लानत देते थे।' बल्कि इन बातोंसे उनका क्रोध और भी अधिक जाग उठा था। कुंवरसिंहकी प्रजा इस गिरे ज़मानेमें भी उनकी हितैषी थी। अब भी उनकी सहायता करती थी। अब भी उनका प्रताप था। अंग्रेज़ कुंवर-सिंहके नामसे कांप उठते थे। इंग्लैंडके टाइम्स नामक पत्रमें छपा था—" अब भी कुंवरसिंहके पास तमाम सिपाही सेनाका पांचवां हिस्सा है। जो वे रानीगंजपर धावा करके

रेलवे पर कब्जा करें और कलकत्ता जा पहुंचें तो क्या होगा ?"*
टाइम्स अखबारका यह लिखना असत्य न था ; क्योंकि आसा-
मका एक राजा जब पकड़ा गया, उसका खजाना लिया गया,
तब कुछ गोर्खोको छोड़कर बाकी सारी सेना कुंवर सिंहके पक्षमें
थी। सुदूर पूर्वमें आसाम और मध्य भारतमें बरारतक उनका
प्रताप था। जबलपुरको ५२ नं० सिपाही सेना कुंवरसिंहके
लिये उत्तेजित हो उठी थी। कुछ गोरी पैदल सेना, गोलंदाज
और मद्रासी सिपाही नागपुरसे सागर नर्मदाके लिये रवाना
हुए थे। १५ सितम्बरको गोंडवन प्रदेशके शंकरशाह नामक
एक बूढ़े राजाको उनके १३ नौकरों सहित कैद करके फौजी
जेलमें रक्खा गया था। इसके घरमें सरकारके विपक्षका कोई
कागज पत्र न मिला, केवल एक प्रार्थनापत्र था उसमें देवीसे
प्रार्थना की गई थी कि वह धर्मरक्षाके लिये प्रार्थना सुने और
अंग्रेज़ोंको नाश करे। इस बूढ़े राजा और उसके बेटेको तोपसे
उड़ा दिया गया। उत्तेजित सिपाहियोंने एक बार इस बूढ़े
राजा और उसके पुत्रको कैदसे निकालनेकी कोशिश की थी।
पर अधिकारियोंकी होशियारीसे सफलता न हुई। १८ सित-
म्बरको बूढ़े राजा वध्यभूमिमें गये। उनके तमाम बाल सफेद
हो गये थे। गोंडवनमें वे साठ पीढ़ियोंसे राज करते चले आ रहे
थे। तेजस्विनी महारानी दुर्गावती इसी खान्दानमें हुई थीं। यह

* Times, June 14 Quoted in Martin's Indian Empire Vol. II P. 490

खान्दानी बूढ़ा राजा पुत्र सहित हथकड़ी बेड़ियोंसे जकड़ा हुआ जब तोपके सामने लाया गया तब लोगोंके हृदय दुःखसे फटे जा रहे थे। सिपाही अंग्रेज़ोंकी यह नीचता देखकर जल रहे थे। तोपके सामने वे कुछ न कर सके। पिता पुत्र उड़ा दिये गये। रो रोकर राजाके नौकरोंने अपने चिरमान्य भूपतिके शरीरके टुकड़े एकत्र किये। उस समय अंग्रेज़ हंस रहे थे।

ऐसे घातक दृश्यसे ५२ नं० सिपाही सेना अधिक समय-तक शान्त न रही। उसी रातको सब सेना छावनी छोड़ गई, केवल एक अफसर और दस सिपाही रहे। जाते हुए सिपाही सेनापति मेकग्रेगरीको पकड़ ले गये। अधिकारियोंने इनके छुड़ानेकी अधिक कोशिश न की। अधिकारियोंने सेनापतिके बदलेमें सिपाहियोंको रुपया देना चाहा पर उन्होंने न लिया। २७ सितम्बरको जबलपुरसे २५ मील दूर एक जंगलमें गोरी सेनासे उनका संग्राम हुआ। इस लड़ाईमें वे मेकग्रेगरीकी लाश छोड़-कर पीछे हट गये। इसके बाद वे नागोद नामक स्थानमें गये। यहीं वे ५० सिपाही सेनासे मिले। अंग्रेज़ स्थान छोड़कर भाग गये। सिपाहियोंने खजानेपर अधिकार कर लिया। यहीं उन्होंने कुंवरसिंहकी अधीनता स्वीकार की। कहा जाता है कि कुंवरसिंह नागोदसे रीवां होते हुए उत्तर भारतमें जानेको तैयार थे। रीवांके राजासे कुंवरसिंहका रिश्ता था। पर इस रिश्तेदारीके होते हुए भी रीवां राजने कुंवरसिंहका पक्ष न

* Martin's Indian Empire. Vol. II P. 491.

लिया। इस समय राजाकी अवस्था शोचनीय थी। रीवांके तमाम गांव सिपाहियोंने भस्म कर दिये। इलाहाबादके अधिकारी रीवां नरेशको विश्वासके अयोग्य कहते थे। पर रीवांके रेजीडेंटने राजाका पक्ष समर्थन किया था। कुंवरसिंह रीवांकी ओर न जाकर बांदाकी ओर बढ़े। कहा जाता है कि इस रास्तेसे वे दिल्ली जाना चाहते थे, पर दिल्लीके सिपाहियोंकी हारका समाचार सुनकर वे अवधकी ओर मुड़े। जब आरामें वे अंग्रेज़ोंसे लड़े तब उनके हथियार अच्छे न थे। जब वे जगदीशपुरसे चले उस समय भी उनके हथियार पुराने और निकम्मे थे तथा फौज भी थोड़ी ही थी। पर बादमें जब वे अपनी भुजाओंपर भरोसा करके निकल पड़े तब उन्हें किसी बातकी कमी न रही। जब वे मध्य भारत और उत्तर भारतमें गये तब दलके दल सिपाही सैनिक आ मिले। अच्छेसे अच्छे हथियारोंकी भी कमी न रही। सिपाही राजा कुंवरसिंहके नामसे अपने आपको विजयी मानने लगे। यह सेना लेकर वे आजमगढ़पर हमला करनेको तैयार हुए। शायद उनका इरादा था कि आजमगढ़के बाद इलाहाबाद और बनारसपर हमला करके वापिस जगदीशपुर जायंगे।

इस समय आजमगढ़की रक्षाके लिये दो सौ छः पैदल गोरे, कुछ मदरासी सवार और दो तोपें थीं। कर्नल मिलमन इनके सेनानायक थे। कुंवरसिंह १७ या १८ मार्च (१८५८) को आजमगढ़से २५ मील दूर आत्रालिया स्थानपर पहुंचे। यहां एक

छोटासा किला था। जब कुंवरसिंह इस स्थानपर पहुंचे तब सेनानायक मिलमन दूसरी जगह थे। मजिस्ट्रेटने शीघ्र ही उनके पास कुंवरसिंहके आनेकी खबर भेजी। समाचार पाते ही मिलमन अपनी सेना लेकर, रातभर चलकर, २१ मार्चके प्रातः काल कुंवरसिंहके सामने पहुंचे। कुंवरसिंहकी सेना किलेमें न थी। वे पासके दो आमके बागोंमें ठहरे थे। पहुंचते ही मिलमनने हमला किया। इस हमलासे कुंवरसिंहकी सेना हारकर हट गई। मिलमनने अपनी सेनाको भोजन और विश्रामकी आज्ञा दी। थकी हुई सेना खाना पकानेमें लगी। जब सैनिक खानेके लिये बैठनेवाले ही थे तब समाचार मिला कि कुंवरसिंह बड़ी सेनाके साथ आगे बढ़ रहे हैं। खाना छोड़कर मिलमनके सैनिक तैयार हुए। पर फिर मिलमन न जीत सका। कुंवरसिंहकी सेना आगे बढ़ने लगी, मिलमनके सैनिक पीछे हटने लगे। सिपाहियोंने फिर उनके पैर न जमने दिये। हारकर मिलमनके सैनिक आजमगढ़ चले गये। आजमगढ़में पहुंचकर भी मिलमनको कुंवरसिंहके हमलेका भय बना रहा। वहांसे उसने बनारस, इलाहाबाद और लखनऊ सहायताके लिये लिखा।

२४ मार्चको मिलमनके हारनेका समाचार बनारस पहुँचा। समाचार मिलते ही वहांके अधिकारियोंने ४६ गोरे सैनिक सहायताके लिये भेजे। गाजीपुरसे ३६ नं० गोरी सेनाके १२० पैदल गोरे सैनिक चले। कर्नल डेम्स उनके सेनापति थे। आजमगढ़के सैनिकोंने अपने आपको सुरक्षित कर रखा था।

कुंवरसिंहके हमलासे पहले ही सेनापति डेम्स आजमगढ़ जा पहुँचे। उन्होंने कई सौ गोरे सिपाही, मद्रासी सवार और दो तोपें लेकर कुँवरसिंहको भगानेकी कोशिश की पर उनके ११ सैनिक और एक अफसर काम आये, उन्हें खुद भागकर अपनी रक्षाके लिये उसी स्थानमें छिपना पड़ा।

२७ मार्चको मिल्मनकी हारका समाचार इलाहाबाद पहुंचा। लार्ड केनिंग उस समय इलाहाबादमें थे। वे आजमगढ़की हारसे चिन्तित हुए। कुंवरसिंहकी वीरता, साहस और क्षमतासे वे परिचित थे। वे जानते थे कि जगदीशपुरका यह पुराना क्षत्रिय जन्मका रणदक्ष और चतुर सेनानायक है। बल्कि अवधके सिपाही जैसे दिन पर दिन जा जाकर उनमें शामिल हो रहे हैं उससे बहुत शीघ्र वे आजमगढ़पर कब्जा करेंगे और फिर ८१ मील रास्ता तय करके बनारसपर उनका धावा होगा। इस तरह इलाहाबादसे लखनऊ और कलकत्ताका रास्ता रुक जायगा। गवर्नर जनरलकी आशंका निर्मूल न थी, क्योंकि अकेला कुंवरसिंह कई सेनापतियोंके बराबर योग्य और चतुर थे। फिर बड़ी भारी सिपाही सेनायें उनके अधीन थीं। गवर्नर जनरल इलाहाबाद और प्रधान सेनापति लखनऊमें थे। यदि कलकत्ता, इलाहाबाद और लखनऊका रास्ता रुक जाता तो बड़ी असुविधा होती। इस समय इलाहाबादमें १३ नं० गोरी पैदल सेना थी। लार्ड मार्ककार इसके सेनापति थे। लार्ड कैनिंगने इनको अपनी तथा बनारसकी तमाम सेना लेकर कुंवरसिंहको

रोकनेके लिये भेजा। आज्ञा मिलतेही लार्ड मार्ककार अपनी सेना लेकर बनारस आये। बनारससे जो सेना और तोपें मिल सकीं वे लेकर दो अप्रैलकी रातको आजमगढ़के लिये रवाना हुए। उनकी सेनामें २२ अफसर और ४४४ गोरे सैनिक थे। ५ अप्रैलको वे आजमगढ़से ८ मील दूर ससौना नामक स्थानपर पहुंचे। यहींसे उन्हें आजमगढ़के पत्र मिलने लगे। हरएक पत्रमें आजमगढ़के सेनापति एक क्षणमात्रकी देर किये बिना पहुँचनेका अनुरोध करने लगे। पर रातके समय अंग्रेज़ सेनापतिकी हिम्मत अपनी छोटी फौज ले जानेकी न हुई। दूसरे दिन सवेरे ही गोरी सेना आगे बढ़ी। सेनापति मार्ककार सबसे आगे मार्गदर्शक बनकर चले। दो घंटे चलनेके बाद उन्होंने देखा कि बाईं ओर कुछ मकान और आमोंका बाग है। दाहिनी ओर खेतोंके नालेपर पुल पड़ा है। इन सब स्थानोंपर सिपाही लोग छिपकर उनपर हमला करनेका इरादा कर रहे हैं। यह देखते ही मार्ककारने सवारोंको घोड़ोंपरसे उतरनेकी आज्ञा दी। जबतक पीछेसे लड़ाईका सामान लेकर हाथी, ऊंट और बैल गाड़ियाँ न आवें तबतक यहीं ठहरनेकी आज्ञा दी। इसके बाद बाईं ओर कुछ पैदल सेनाको सिपाहियोंके मार भगानेको भेजा। देखते२ उन मकानोंकी ओरसे गोलियाँ बरसने लगीं। सेनापति-ने शीघ्र ही तोपें तैयार कीं पर गोले कारगर न हुए। इसी मौके-पर पीछेसे जो हाथी सामान ला रहे थे वे पागल हो गये, बैल-गाड़ियोंमें भी गड़बड़ हो गई। जो गाड़ियाँ सामानसे भरी

थीं उनमें सिपाहियोंने आग लगा दी। एक घंटेतक सेनापतिने बड़ी योग्यतासे संग्राम किया पर सिपाहियोंकी शक्तिको वे वशमें न कर सके। जब तोपोंके गोलोंसे भी सिपाही न हटे तब सेनापतिको चिन्ता हुई। कुंवरसिंहकी सेनाका पराक्रम देखकर अब उन्हें अपनी रक्षाका खयाल हुआ। आमके बागके पास जो घर थे उनमेंसे किसी एक बड़े घरपर कब्जा करके अपने सैनिकोंको बचानेका इरादा किया। तोपोंके गोलोंसे बहुत थोड़ा हिस्सा इन घरोंका गिरा था। इसलिये गोरे सैनिकोंके वहाँ पहुँचनेमें कुछ सहूलियत न हुई। वे सेनाके जानेके लिये मकानोंमें रास्ता करने लगे, पर सिवाय तोपके गोलोंके रास्ता करनेका और कोई उपाय न था। सैनिक तोपें चलानेके लिये वापिस आये पर साथ ही वहां आग लगाते आये। तोपके गोलोंसे जो काम न हुआ वह आगसे हुआ। सिपाही इस आगको किसी प्रकार न बुझा सके। आगसे घबराकर सिपाही बाहर आये। इसी समय सेनापतिने उनपर हमला किया। इस हमलेमें उन्हें सफलता हुई।

आगे बढ़नेका रास्ता साफ हुआ पर गोरी सेनाके दायें और पीछेकी ओर सिपाही आने लगे। जिस रास्तेसे सेनापति बढ़े थे उसके बराबर ही धानके खेतोंमें होकर पुल था। उसी पुलसे सिपाही आगे बढ़ें। एक गोरा अफसर अपनी सेना लेकर इसी ओर सिपाहियोंको भगानेके लिये सामने आया। उसने सिपाहियोंका रास्ता तो रोका पर उसे मरना पड़ा।

लार्ड मार्ककारकी सेनाका अगला भाग आजमगढ़की ओर बढ़ा। आगे एक पुल था। कुंवरसिंहने इस पुलकी ऐसी हालत कर दी थी कि उसके ऊपर होकर कोई जा नहीं सकता था। गोरी सेनाके एक एंजिनियरने इस पुलको ठीक करना शुरू किया। सिपाहियोंकी गोलियां बरसती रहीं। पर इस दशामें भी पुल ठीक करके गोरी सेना आगे बढ़ी। आजमगढ़में जो गोरी सेना थी उसकी बुरी हालत थी। शहर छोड़कर उन्होंने जेलखानेमें शरण ली थी। सिपाही चारों ओरसे इस जेलको घेरकर गोलियां बरसाते थे। भीतर घिरे हुओंको खानेपीनेकी चीजें न मिलती थीं। ऐसे अवसरपर लार्ड मार्ककारका आगमन हुआ। १३ अप्रैलको कुंवरसिंहने आजमगढ़ छोड़ा।

बनारस और इलाहाबादसे आजमगढ़को किस प्रकार सहायता मिली यह ऊपर लिखा गया। अब लखनऊकी गोरी सेना जो आजमगढ़के लिये चली उसका उल्लेख करना भी आवश्यक है। आजमगढ़की विपत्तिका समाचार २८ मार्चको लखनऊ सेनापति सर कोलिन कैम्पबेलको मिला। प्रधान सेनापतिने दूसरे दिन सर एडवर्ड लुगार्डको कुछ सेनाके साथ आजमगढ़की ओर भेजा। इस समय एक अंग्रेज़ सेनापति संग्राममें नियुक्त था। ग्वालियरकी सेना कानपुरके निकट कुँवरसिंह, नानासाहब, तांतिया तोपी और बालासाहबकी सेनाओंसे लड़नेके लिये तैयार थी। इतिहास लेखकोंमें इस विषयमें मतभेद

है।* खैर, लूगार्डने २६ मार्चको लखनऊसे आजमगढ़के लिये प्रस्थान किया। ५ अप्रैलको ये सुलतानपुर नामक स्थानपर पहुंचे। यहांसे एकदम आजमगढ़ पहुंचनेका इरादा था। पर कुँवरसिंहने पहले ही गोमतीका पुल जला दिया था। नावोंका भी इन्तजाम न हो सका। नदी पार न हो सकनेके कारण लूगार्ड उसके दाहिने किनारे किनारे जौनपुर पहुंचे। वे इस स्थानसे कुछ मील रास्ता चले थे कि समाचार मिला कि आगे कई हजार सिपाही गुलाम-हुसेन नामक सर्दारकी अधीनतामें खड़े हैं। लूगार्ड युद्धके लिये तैयार होकर चले। ब्रिटिश सेनापतिके हमलेसे थोड़ी देरमें ही गुलामहुसेनके सिपाही तितर बितर हो गये। इस युद्धमें सेना-पति हावेलके आत्मीय लेफ्टिनेंट हावेल मारे गये। १४ अप्रैलको लूगार्ड आजमगढ़से ७ मील दूर रह गये। इस स्थानसे तमसा नदी पार करके आजमगढ़का रास्ता था। नदीपर एक नावोंका पुल था। लूगार्डके आनेका समाचार पाकर कुँवरसिंहने इस पुलके सामने अपनी सेना जमाई थी। कुँवरसिंह युद्ध-कुशल आदमी थे। वे यह समझ गये थे कि जब लार्ड मार्ककारकी छोटीसी सेनाको सिपाही न रोक सके तब लूगार्डकी बड़ी सेनाको रोकना कठिन है। इसलिये बड़ी योग्यतासे उन्होंने व्यूह बनाया जिससे अपनी हानि न हो। छांट छांटकर वीर सिपाही पुल

*ग्वालियरकी सेनाने झांसीकी रानी लक्ष्मीबाईका पक्ष ग्रहण किया था। तांतिया तोपी इसके अध्यक्ष थे। Malleson's Indian Mutiny Vol. II P,158.

रोकनेके लिये लगाये गये, बाकी गाजीपुरके पाससे गंगा पार करके जगदीशपुरमें लड़ाईकी तैयारीके लिये रक्खे गये।

सेनापति लूगार्डने बड़े वेगसे पुलके रक्षक सिपाहियोंपर हमला किया। वीर सिपाही ऐसा घमासान संग्राम करके गोरी सेनाको हटाने लगे कि उनके साहसकी कथा इतिहासमें सदा अमर रहेगी। कोई सिपाही पीछे न हटा, मरते मारते वे आगे बढ़े। गोरी सेनाका पहला हमला व्यर्थ गया, सेना पुलकी ओर न बढ़ सकी। फिर दूसरा हमला हुआ। इस समय बड़ी होशियारीसे सिपाही हट गये। तमसा पार होकर लूगार्डने सिपाहियोंके पीछे थोड़ी सेना भेजी। इधर पीछे हटकर सिपाही फिर जमा हुए, फिर एकत्र होकर वे गोरी सेनापर धावा करनेके लिये आगे बढ़े। गोरी सेना उनपर गोलियाँ बरसाने लगी, पर इससे सिपाही न रुके। लूगार्डने रिसाला आगे करके सिपाहियोंपर धावा किया, पर रिसाला भी कारगर न हुआ। वे आधे चाँदकी शकलका किला बनाकर लड़ते हुए आगे बढ़ने लगे। फिर गोरी सेना आगे बढ़ी, घोर संग्राम हुआ। दोनों ओरके बहुतसे मारे गये, घायल हुए, फिर सिपाही पीछे हटकर गंगाकी ओर बढ़े। सेनापति लूगार्डकी सेना अबकी बार सिपाहियोंके पीछे न गई। सेनापति लूगार्डने आजमगढ़ पहुँचकर ब्रिगेडियर डगलसको कुँवरसिंहके विरुद्ध भेजा।

इधर कुँवरसिंहने नघाई नामक गांवमें अपनी सेनाका व्यूह जमाया। वे जानते थे कि अंग्रेज़ी सेना उनके पीछे आवेगी। बिना

इसके रास्तेमें विघ्न डाले वे जगदीशपुर न पहुँच सकेंगे। इसी कारण कुँवरसिंहने बड़ी चतुराईसे सेनाका संगठन किया। पास ही घने वृक्षोंकी कतार थी। इसीकी आड़में सिपाही सेना तैयार रही। आगे तोपें लगाई गईं। १७ अप्रैलके प्रातःकाल सेनापति डगलसने कुँवरसिंहपर हमला किया। उन्होंने एक सेनाको डगलसका रास्ता रोकनेको भेजा। बाकी सेनाके दो हिस्से करके दोनों ओर भेज दिये। जब पहला दल डगलससे लड़ने लगा तब कुँवरसिंह दूसरे स्थानके लिये रवाना हुए। डगलसकी सेना पीछे चली। चार पांच मील जाकर चाल कम हुई। कुँवरसिंहको जो सेना दो हिस्सोंमें बट गई थी वह रातके समय फिर एक हुई।

उसी रातको ब्रिगेडियर डगलसने सिपाही सेनासे ६ मीलके फासिलेपर पड़ाव डाला। सवेरा होते ही वह फिर सिपाहियोंकी ओर बढ़ने लगा पर सिपाहियोंने उससे भी अधिक योग्यताका परिचय दिया। वे बड़ी फुर्तीसे १० मील रास्ता पार करके नाग्रा नामक स्थानमें पहुंचे। सवार और घोड़ोंकी तोपें दिन भर उनका पीछा करती रहीं। पर पैदल सेनाके न आ सकनेसे डगलस युद्ध न कर सका। रातको वह कुंवर-सिंहकी सेनासे तीन चार मील दूर पड़ाव डालकर रहा। कुंवर-सिंहके दूत चारों ओरके समाचार ले रहे थे। पास ही गोरी सेनाके पड़ावकी खबर सुनकर कुंवरसिंह उसी रातको कूच करके सिकन्दरपुरकी ओर चले और बिना किसी प्रकार-

की बाधाके घाघरा नदी पार हो गये। इसके बाद वे गाजी-पुर विभागके मानाहार नामक स्थानकी ओर पहुंचे। उनकी सेना भूखी थी और रास्ता चलनेके कारण थक गई थी। यहीं भोजन करके आराम करनेका इरादा था, पर वे ऐसा न कर सके। कुंवरसिंहके कूचकी खबर मिलते ही सवेरे तीन बजे डगलसने सिकन्दरपुरकी ओर कूच कर दिया था। रातको वह फिर कुंवरसिंहकी सेनासे चार मील दूर जाकर पड़ा। दूसरे दिन फिर यात्रा शुरू हुई। २० अप्रैलको कुंवर-सिंहकी सेना सामने दिखाई दी। इस दिन जिस जगह कुंवर-सिंहकी सेना थी वह स्थान साफ मैदान था, व्यूह रचनाके योग्य न था, कोई रुकावट भी न थी। डगलसके हमलेसे उनकी सेनाके पैर जरूर उखड़े पर वे तितर बितर न हुए। ६ मील रास्ता लड़ते २ पार करके भी गोरी सेना कुछ न बिगाड़ सकी। कुंवरसिंहने आगेके किसी स्थानपर मिलनेका हुक्म देकर सेनाके दो हिस्से करके दो दिशाओंमें भेज दिया। डगलसको यह न मालूम हो सका कि वे आगे कहाँ मिलेंगे। इसलिये रात भर सेनापतिको पड़ा रहना पड़ा

इधर कुंवरसिंह निश्चेष्ट न थे। गङ्गा पार होना उनका उद्देश्य था। अपने उद्देश्यमें वे किसी तरह पीछे न रहे। अंग्रेज़ोंने गाजीपुर प्रान्तकी तमाम नावें डुबा दी थीं। पर वहांकी प्रजा कुंवरसिंहकी भक्त थी उसने कुंवरसिंहके नौकरों-को डूबी हुई नावोंका स्थान बता दिया। कई नावें निकाली

गईं। सवेरा होते २ कुंवरसिंह गङ्गा पार हुए। दूसरे किनारे पहुंचकर वे हाथीपर बैठे। उनके पीछे रणदलनसिंह था। एक नौकर सिरपर राजछत्र पकड़े था। इस समय सवेरा हो गया था। यह किसीको खयाल न था कि राजछत्र-से वे दूरसे ही पहचाने जायंगे। इस समय गोरी सेना गङ्गाके दूसरे किनारे आ पहुंची थी। उन्होंने कुंवरसिंहको निशाना बनाकर तोप छोड़ी। तोपके गोलेसे रणदलनसिंह और छत्र-धारी नौकर उड़ गये। कुंवरसिंहकी भुजाके ऊपरके भागका मांस गोलेके साथ उड़ गया। बेहोश होकर वे हौदेमें गिर पड़े। फीलवान फौरन हाथी भगाकर ले गया? थोड़ी दूर जाकर उनके नौकरोंने उन्हें हाथीसे उतारकर होशमें लानेकी कोशिश की। होश होनेपर कुंवरसिंहने कहा कि मेरी दाहिनी भुजा काटकर गंगामें फेंक दो। पर कोई नौकर अपने मालिकका शरीर काटनेको तैयार न हुआ। बहुत कहनेपर एक आदमीने उनकी भुजा काटकर गंगामें प्रवाह की। अपना हाथ गंगाकी भेट करके वे प्रसन्न हुए। इसके बाद उन्हें खाटपर डालकर नौकर जगदीशपुर ले गये। उनका मकान खण्डहर हो गया था केवल एक बैठक बची थी। इसीमें उन्हें लिटाया गया। इस प्रकार यह बूढ़ा क्षत्रिय घायल होकर २१ अप्रेलको फिर जगदी-शपुर आया। उनके भाई अमरसिंह कई हजार सिपाहियोंके साथ वहां थे। कुंवरसिंहकी सेना भी आकर इनसे मिल गई।

इस समय आरामें बहुतसी अँग्रेज़ी सेना थी। कप्तान ले

ग्राण्ड उसके अध्यक्ष थे। सेनापति आयरने जिस वीरतासे जगदीशपुरपर कब्जा किया था, उसी वीरताको प्रगट करनेके लिये कप्तान ग्राण्ड २३ अप्रैलको जगदीशपुरकी ओर बढ़े। पर कुंवरसिंहने सेनाको रास्तेके जंगलमें लगा रक्खा था। कुंवरसिंहने इस जोरका धावा किया कि कप्तान ग्राण्डको सेनाके पैर न टिके वे पीछे भी न हट सके। संग्राममूमिमें १३३ गोरे खेत रहे। बाकी सेना तोपें छोड़कर आराकी ओर भाग गई। सेनापति ले ग्रांड घायल हुए। घायल होते हुए भी कुंवरसिंहने इस प्रकार रणदक्षताका परिचय दिया।

ब्रिटिश सेनाकी हारसे आरामें फिर अशान्ति मची। अंग्रेजोंको फिर अपनी जानकी चिन्ता हुई। उन्होंने ब्रिगेडियर डगलसको सहायताके लिये लिखा। अपनी ओरकी हारका समाचार सुनकर डगलस फिर आगे बढ़े। पर डगलसके पहुंचनेसे पहले ही सिपाही सेनाका वीर सर्दार इस संसारसे चला गया।

कुंवरसिंहको गोलेकी चोट लगी थी, उनकी दाहिनी भुजा कट गई थी, जाँघका मांस भी उड़ गया था, ऐसी कड़ी चोट खाकर भी उस अस्सी वर्षके राजपूतने आह न की, फिर भी उसने घोड़ेपर बैठकर ले ग्रांडको सम्मुख संग्राममें हराया। पर उनकी आयु पूरी हो चुकी थी। वे विजयी हो चुके थे। ले ग्रांडको हराके तीसरे दिन रातको अपने घरमें शान्तिसे उनकी मौत हुई।

इस प्रकार बाबू कुंवरसिंह अपने सम्पूर्ण पार्थिव जीवनसे विदा हुए। वे अपने जीवनके अन्तिम समयमें किस प्रकार

सिपाहियोंसे मिले, किस प्रकार स्थान स्थानपर अंग्रेज़ सेनापतियोंको उन्होंने छकाया यह सब ऊपर कहा जा चुका है। यह पहलेही कहा जा चुका है कि संग्राममें प्रवृत होकर भी उन्होंने किसी गोरी स्त्री या बच्चेका खून नहीं होने दिया। उनके आरा पहुंचनेसे पहले ही सिपाहियोंने एक अंग्रेज़को पकड़ा था। कुंवर-सिंहने इसके प्राणनाश न किये केवल दूसरे अंग्रेज़ोंसे न मिले, इसलिये कैद़कर रखा था। कैद होनेपर भी लोग इस अंग्रेज़से मिल सकते थे। सिवा लड़ाईके मैदानके उन्होंने वैसे हाथ पड़े किसी अंग्रेज़की जान नहीं ली। उन्होंने किसीपर किसी तरहका जुल्म या अत्याचार नहीं किया। गदरके समय भारतवासियोंने जैसे राक्षसी भावोंका परिचय दिया और अंग्रेज़ोंने जैसे उनसे भी बढ़कर अत्याचार किये वैसा कुंवरसिंहके हाथसे एक भी न हुआ। उनका असाधारण तेज, बल, वीर्य और ओज वैसेका वैसा ही था। अस्सी वर्षकी अवस्था होनेपर भी बुढ़ापा उनके पास आनेसे डरता था। जगदीशपुरसे निकलकर वे नौ महीनेतक भारतके भिन्न २ स्थानोंमें घूम घूमकर अपनी वीरताका परिचय देते रहे। इस अर्सेमें अनेक बार दुर्दशाग्रस्त होनेपर भी कभी अंग्रेज़ सेनापतिके हाथ आत्मसमर्पणका खयालतक नहीं किया। उनकी युद्ध-प्रणाली प्रशंसनीय और रणकौशल असामान्य था। अंग्रेज़ोंने भी इस विषयमें उनकी प्रशंसा की है। इतनी दूरसे उन्होंने जगदीशपुर यात्रा की थी, हर जगह ब्रिटिश सेना उनके पीछे थी पर उनके कौशलको कभी भंग नहीं कर सकी। वे लड़ाईका जो

तरीका बता देते उसे सिपाही लोग अन्ततक निभा नहीं सकते थे। बहुत बार सिपाहियोंके सरदार लोग उनकी आज्ञाओंके अनुसार काम ही नहीं करते थे। इसीलिये बार बार वे असफल हुए। जो कुछ हो वे वीरोचित गुणोंसे पूर्ण थे। उन्होंने दूर-दर्शितासे कभी काम नहीं लिया। पर गदरके इतिहासमें वे सदा अमर रहेंगे।

कुँवरसिंहके देहान्तके बाद उनके भाई अमरसिंह सेना-नायक बने। वे अपने बड़े भाईके समान समरकुशल न थे पर एकाग्रता और स्थिरतामें कम भी न थे। उनकी योग्यतासे अंग्रेज़ोंको अधिक समयतक रास्ता देखना पड़ा। सेनापति लेग्रांडको हराकर उन्होंने आरापर धावा किया। वे सफल न हुए पर बिलकुल निष्फल भी न हुए। आसपासके गांवोंसे उत्तेजित लोग आ आकर उनकी सेनामें मिलने लगे। सेनापति ग्रांड लूगार्डके इन्तजारमें थे। लूगार्ड अपनी सेना सहित जगदीशपुरके पास आ गये थे। अमरसिंहने सिपाही सेनाको आरा और जगदीशपुरके बीचवाले जंगलमें एकत्र किया। लूगार्ड ८ अप्रैलको वहाँ पहुंचे। अपनी सेनाका एक हिस्सा उन्होंने आराकी रक्षाके लिये भेज दिया। ९ अप्रैलको जगदीशपुरके पश्चिम ओरसे वे बढ़े। अपनी मददके लिये उन्होंने ससरामके सेनापति कर-फील्डको शीघ्र आनेको लिखा। करफील्डके आनेतक लूगार्डने ठहरना निश्चय किया था। पर इसी दिन शामको लूगार्डको मालूम हुआ कि अमरसिंह हमला करनेवाले हैं, इसलिये पह-

लेका इरादा छोड़कर वे लड़ाईके लिये तैयार हुए। इस प्रकार अमरसिंहसे दीर्घकालव्यापी संग्रामका सूत्रपात हुआ। इन युद्धोंका विस्तृत विवरण व्यर्थ है। अमरसिंहकी सेना जंगलसे निकलकर आराकी ओर चली थी। लूगार्डके सवारों और गोलंदाजोंने उनका रास्ता रोका। इसके बाद लूगार्डने अपनी सेनाके तीन हिस्से करके लड़ते लड़ते जगदीशपुरपर कब्जा किया। अमरसिंहकी सेना सतवरपुर नामक गांवमें रहने लगी।

फिर लूगार्डने वहाँ भी चढ़ाई की। इधर ससरामके सेनापति करफील्ड ११ मईको जगदीशपुरसे सात मील दूर पीरू नामक स्थानपर लूगार्डसे मिले। ससरामसे पीरूतक उन्हें अनेक स्थानोंपर अमरसिंहकी सेनासे संग्राम करना पड़ा था। जिस दिन करफील्ड लूगार्डसे मिले उसी दिन लूगार्डकी सेनासे सिपाही हेतमपुर नामक स्थानमें हारे। अब एक ओर लूगार्ड और दूसरी ओर करफील्ड उनके पराक्रमको तोड़ने लगे। २० मईको एक अंग्रेज़ी सेनाका अफसर मारा गया। २७ जूनको दलीलपुर नामक स्थानपर सिपाही हारे।

पर ऐसी पराजयोंसे भी अमरसिंहकी सेना डटी रही। जंगली और तमाम पहाड़ी रास्ते अमरसिंहको मालूम थे। वे एक स्थानसे झट दूसरे स्थान जाकर सेनाका किला बना देते थे। एक संग्राममें सिपाही हटने लगते थे, दूसरी जगह उनका नया व्यूह बनकर युद्ध प्रारम्भ करता था। प्रबल ब्रिटिश सेनाकी कोशिश बार बार व्यर्थ होती थी। सिपाही कहींसे निकलकर

लड़ने लगते थे और कहीं लड़ते लड़ते एकदम छिप जाते थे। इस प्रकारके संग्राम बराबर होने लगे।

दलीलपुरमें हारकर भी सिपाही निराश न हुए। उनका एक दल डुमरांवके निकट एक नीलकी कोठी तोड़ आया। दूसरे दलने बक्सरके पास राजपुर नामक गांवको लूट लिया। इससे शाहाबादमें फिर आतंक छा गया। अंग्रेज़ फिर चिन्तित हुए। अंग्रेज़ी सेनाको भी कम कष्ट नहीं हुआ ? वह बहुत थक गयी, गर्मीके मारे परेशान हो गयी, हर समय जंगली और पहाड़ी रास्तोंमें घूमते २ हैरान हो गयी। दूसरी ओर सिपाही मानों नित्य नये उत्साहसे उनके सामने आते थे। सेनापति लूगार्डने २ जुलाईको अपनी सेनाको दो हिस्सोंमें बांटा। एक हिस्सा केशवा और दूसरा दलीलपुरकी ओर चला। यहां रास्ता बनवा लिया गया था। इससे उसकी विजय हुई। पर जीतनेपर भी सिपाहियोंका दल भंग न हुआ। वे फिर दूसरे स्थानपर एकत्र हुए। १५ जूनतक लूगार्ड उनसे युद्ध करते रहे, पर उन्हें पूरी तरह न हरा सके। लगातार लड़ाई करते २ थककर अन्तमें लूगार्डने, सेनापति-पद त्याग कर इंग्लैंडकी राह ली। अंग्रेज़ी सेना एक स्थानपर छावनी डालकर पड़ गई। अंग्रेज़ी सेनाको इस तरह एक स्थानपर हांफते देखकर अमरसिंहने अपने पहलेवाले स्थानोंपर फिर कब्ज़ा किया। इस प्रकार जो ताकत कम हो गई थी वह उन्होंने फिर संग्रह कर ली। चारों ओरसे दलके दल आदमी आकर उनके सिपाही बने।

अब लूगार्डके स्थानपर ब्रिगेडियर डगलस सेनापति बने। उन्होंने सेनापति-पद ग्रहण करते ही सुना कि अमरसिंहने गयाका जेलखाना तोड़ दिया, सब कैदी निकल गये। पुलिस और कैदियों-ने मिलकर अंग्रेज़ोंको शहरसे निकाल दिया। दूसरे स्थानपर अंग्रेज़ अपनी रक्षा कर रहे हैं। इधर आराकी रक्षाके लिये जो हिन्दुस्तानी सेना रक्खी गई थी वह उत्तेजित हो रही है। इस प्रकार शाहाबादसे फिर अंग्रेज़ी सत्ता हिलने लगी।

ऐसे समयमें डगलस सेनापति बने। दानापुरतक सैन्य-संचालनका भार उनपर था। उनके अधीन सात हजार शिक्षित सैनिक थे। इस सेना द्वारा सेनापति काम करने लगे। थोड़ी २ दूरपर उन्होंने सेनाके स्टेशन बनाये। वे ऐसे रक्खे गये कि हुक्म पातेही एक दूसरेसे मिल सकें। विश्वासी सैनिकोंको वेष बदल-वाकर इधर उधर देखने भालनेके लिये भेजा। वे जंगलमें रास्ता तैयार करने लगे। चारों ओरसे घेरकर उन्होंने अमरसिंहको जगदीशपुर लानेका नक्शा तैयार किया। उनका उद्देश्य था कि यदि सब सिपाही एक स्थानपर एकत्र हो जायं तो वे उन्हें सहजमें हरा सकेंगे। पर डगलसने जो प्रणाली तैयार की उसके अनु-सार वे अक्टूबर और नवम्बर मासतक काम न कर सके।

इधर अमरसिंह अपना काम कर रहे थे। उन्होंने जगदीशपुर-पर फिर कब्जा कर लिया। उनके साथी जुलाई, अगस्त और सितम्बरतक शाहाबादके भिन्न भिन्न स्थानोंपर अपना प्राधान्य बनाये रहे। गंगाके दक्षिण और सोन नदीके पश्चिम हर स्थानपर

उनकी प्रधानता थी। अंग्रेज़ी सेनासे लड़ाई होती रहती थी। एक सेनापतिने उन्हें ९ सितम्बरको रामपुरमें हराया, दूसरे सेनापतिने २० सितम्बरको, सोन नदीपर जो उनकी नावें थीं, उन्हें नष्ट कर दिया। एक सिविलियनने सिक्ख सेना लेकर उनकी बड़ी २ चार नावें नष्ट कीं। पर ऐसी हारोंसे भी वे हतोत्साह न हुए। रोज उनका उत्साह बढ़ता था और रोज उनके कुछ न कुछ नये काम होते थे। फिर उन्होंने आरापर हमला किया और वहाँकी सवार सेनाको त्रस्त कर दिया।

इस प्रकार अमरसिंहकी समर-निपुणता देखकर सेनापति डगलस होशियारीसे काम करने लगे। बरसातके कारण अबतक वे सब प्रबन्ध न कर सके थे। पर १३ अक्टूबरसे डगलसने अपनी कार्रवाई शुरू कर दी। फिर किसी असुविधाकी ओर उसने नरज न की। अपनी सेनाके सात दल बनाकर भिन्न २ स्थानोंपर तैनात किये। इन सातों स्थानोंसे अमरसिंहके सिपाहियोंको वे जगदीशपुरकी ओर खदेड़ने लगे। पर सेनापतिका यह उद्यम भी सफल न हुआ। हाँ, अमरसिंहकी साढ़े चार हज़ार सेना भिन्न २ स्थानोंपर हारने लगी। सात स्थानोंमेंसे छः सेनानायकोंने अपनी ओरसे हमले किये पर सातवेंको हमला करनेमें पांच घंटेकी देर हो गई, उसी ओरसे सब सिपाही निकल गये।

सफलता न होनेके कारण सेनापति डगलस चिन्तित हुए। पर इस समय एकने और नया उपाय निकाला। सर हेनरी हावेलने अवधमें थोड़े सवारों और पैदलोंको भिन्न २ कामपर

भेजकर सफलता प्राप्त की थी। इस समय सर हावेल डगलस-की सेनामें थे। इसलिये इन्होंने अपनी प्राचीन प्रणालीके अनुसार ही सेनापतिसे काम करनेको कहा। इनका उद्देश्य था कि पैदल घोड़ोंपर सवार होकर सिपाहियोंके पीछे भागें और उनके आगे जाकर घोड़ेसे उतरकर उन्हें तबतक रोकें जबतक पीछेसे सेना न आवे। इस प्रस्तावकी परीक्षा की गई। पहले ४० पैदलोंको घोड़ोंपर चढ़ाया गया। बादमें २० और उनके सहायक बने। ६० आदमी लेकर हावेल अपनी कार्यप्रणाली दिखाने लगे।

सर हेनरी सोनके किनारे सिपाहियोंको रोकनेपर तैनात हुए। सिपाहियोंने प्रबल युद्ध करके १२ घंटेतक अपने स्थानकी रक्षा की पर अन्तमें वे दक्षिणपश्चिमकी ओर भागे। हावेलने घोड़ोंपर सवार होकर उनका पीछा किया। सिपाहियोंके मार्गकी ये लोग जांच रखने लगे। वे भागकर जगदीशपुरके जंगलमें घुसनेकी चेष्टा करने लगे पर सफल न हुए। इसलिये पश्चिमकी ओर भागे। इधर हावेलके सैनिक सवार उनके पीछे थे। खेतोंमें पानी भरा था इस कारण चलनेमें रुकावट होने लगी। २० अक्टूबर-को तीसरे पहर नोनदी नामक स्थानपर घोड़ोंसे उतरकर सैनिक उनको रोकने लगे। पीछेसे पैदल सेना पहुंची। उनके हमलेसे हारकर अमरसिंह गन्नेके खेतमें छिप गये। सिपाही थक चुके थे। तीसरे पहर वे अपने भोजन आदिकी तैयारी कर रहे थे। इसी समय हावेलके सवारोंने उनका पता लगा लिया। सवार फिर घोड़ोंसे उतरकर उन्हें आगेसे रोकने लगे।

इधर समाचार पाते ही डगलसकी सेना उनकी ओर बढ़ी। पर डगलसकी सेना सिपाहियोंके पीछे न जाकर हावेलके बराबर पहुंची। इस भ्रममें सिपाही वहाँसे भी निकल गये। शामका अंधेरा फैल चुका था। ४० घंटेमें वे ६३ मील रास्ता चलकर शाहाबादके दक्षिण पहाड़ियोंमें जा छिपे। २३ अक्टूबरको हावेलके सवारोंने पहाड़ोंपर पीछा किया। यहाँसे युद्ध करते २ वे चले। पांच दिन और पांच रातमें २०१ मील रास्ता तय किया। इन युद्धोंमें हावेलके सैनिकोंमें ३ मरे तथा १८ घायल हुए। ४२ घोड़ोंसे गिर पड़े। सिपाही भी बहुतसे घायल हुए और मरे। इस प्रकार एक स्थानसे दूसरे स्थानपर जाते २ और आत्मरक्षा करते २ सन् १८५८ भी समाप्त हो गया।

अमरसिंह सात आठ महीने लड़े। अंग्रेज़ी सेना हैरान हो गई थी। सेनापतियोंके दिमाग चक्कर खाने लगे थे। सैनिक रोज पचीस २ मील रास्ता तय करते २ थक गये थे। बिहारके समान ग़दरका और कोई संग्राम इतना लम्बा नहीं चला। अन्तमें अमरसिंह अपने साथियों सहित मारे गये। उनके मंत्रियोंको फांसियाँ हुईं।

बुढ़ापेमें बाबू कुँवरसिंह इस प्रकार लड़े। डेढ़ वर्षतक बिहारमें अशान्ति रही। आज भी बिहारनिवासी कुँवरसिंहके नामको गौरवसे देखते हैं। उनके वंशवालोंके पास आज भी थोड़ी बहुत जमींदारी है। जिस २ सम्पत्तिको उन्होंने अपनी बताया उसे गवर्मेंटने नहीं छुआ।

आठवाँ अध्याय
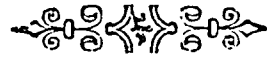
बंगाल, बिहार और उड़ीसामें गदर—सिगौली—मुजफ्फरपुर—छपरा--गया—टेलर साहबकी बर्खास्तगी—रोहिणी—कटक—जलपाई गुड़ी—चटगांव—ढाका—छोटा नागपुर।

ऊपरवाले अध्यायमें यह आ चुका है कि पटनासे १२ मील दूर सिगौली नामक स्थानमें १२ नं० सिपाही रिसाला था। मेजर हालमस इसके सेनानायक थे। कमिश्नर टेलर जैसे शक्की मिजाजके कड़े अफसर थे वैसे ही ये सेनानायक भी पटनाके तमाम मुसलमानोंके दुश्मन हो गये थे। सेनानायक हालमसने तिरहुत, छपरा, चम्पारन, आजमगढ़ और गोरखपुरके जिलोंमें फौजी कानूनकी घोषणा करा दी। एलान हुआ कि जो किसी तरहसे सरकारके विरुद्ध होगा उसे फांसीकी सजा दी जायगी और जो सिपाहीको गिरफ्तार करावेगा उसे ५० रुपये इनामके मिलेंगे। पर यह आज्ञा सरकारकी न थी इसलिये मजिस्ट्रेटोंने इसके माननेसे इनकार किया, उन्होंने लेफ्टिनेंट गवर्नरको इसकी सूचना दी। ले० गवर्नरने पटनाके कमिश्नरसे इस गैरकानूनी कार्रवाईकी कैफियत मांगी। कमिश्नरने लिखा कि यह गैरकानूनी तो है पर जरूरी था। इससे सरकार सन्तुष्ट न हुई। पर कमिश्नर और सेनानायक

दोनों चुप न रहे। वे भारतीयोंके खूनके प्यासे थे। नीलकी कोठियोंके गोरे भी अपने जुल्मसे बरी न थे। इसका फल भी मिला। ३० जुलाईको सेनानायक हालमस अपनी स्त्री सहित गाड़ीमें बैठकर हवा खाने निकले। इस समय ६ सवारोंने घोड़ेको रोककर स्त्री सहित सेना नायकका सिर धड़से जुदा कर दिया। इसके बाद सवारोंने सिगौलीके अन्यान्य अफसरोंको मारा। इसके बाद सवार सेना लूट करके और अंग्रेज़ोंके घर जलाकर आगे बढ़ी। इस मौकेपर कुछ विश्वासी सवारने अंग्रेज़ोंकी जाने बचाई।

गदरके इतिहासमें, हर स्थानपर, पहले उजाला और फिर अन्धेरा नजर आता है। हर स्थानके अधिकारियोंने शुरूमें कड़ाईसे लोगोंको दबाना चाहा था। पर अन्तमें उन्हें अन्धेरा नजर आया। पटनाके कमिश्नर और सिगौलीके सेनानायकने वही मार्ग पकड़ा था। कमिश्नरने मुसलमानोंपर तलवार खींची थी हर जगह उन्होंने फौजी कानूनकी घोषणा की थी। पटनाके कमिश्नरकी आज्ञा जब मुजफ्फरपुर पहुंची तब वहांके अंग्रेज़ दानापुर और सिगौलीकी घटनासे घबरा उठे थे। उन्होंने दानापुरके सेनापतिको सहायताके लिये फौज भेजनेको लिखा। इधर उन्होंने फौजके लिये लिखा, उधर इरादा हुआ कि मुजफ्फरपुरसे दूसरे किसी स्थानकी ओर चला जाय। मजिस्ट्रेटने स्थान छोड़नेके लिये उन्हें मना किया। पर उन्होंने एक न सुनी। सब अंग्रेज़ चले गये। मजिस्ट्रेट भी कमिश्नरसे मिलने पटना गये।

मुजफ्फरपुरमें कोई अंग्रेज़ न रहा। पर फिर भी वहां अमन न रहा। लोग शान्त रहे। न जेलखाना टूटा और न अंग्रेज़ोंके घर ही जले। सेनानायक हालमसकी अधीन सेनाके कुछ सवार वहां थे। वे अंग्रेज़ोंके जाते ही सरकारके विरुद्ध खड़े हुए। पर इस समय नजीब नामक पुलिस सेनाने सवारोंको हराकर खजानेकी रक्षा की। यदि यह पुलिस सेना राजभक्त न रहती तो वहां भी सब कुछ होता। सवार कुछ अंग्रेज़ोंकी कोठियां लूटकर चल दिये। इधर मजिस्ट्रेट कमिश्नरको न समझा सकनेके कारण वापिस आये। देखा कि खजानेका नौ लाख रुपया रक्षित है। जेल भी नहीं टूटा है। शहरमें शान्ति है।

मुजफ्फरपुरके समान छपरा और तिरहुत भी विपत्तिका स्थान माना गया था यद्यपि पास ही ४५ नं० गोरी सेना और १०० सिक्ख सैनिक थे। फिर भी कमिश्नर टेलरकी आज्ञासे यूरोपियनोंने छपरा खाली कर दिया। इस समय काजी रमजान अली नामक एक मुसलमानने अपने आप छपरेकी शान्तिका भार लिया। वे नियमित रूपसे कचहरी करने लगे, खजाने और जेलखानेकी रक्षा करने लगे। जब अंग्रेज़ वापिस आये तब सब चीजें वैसीकी वैसी रमजान अलीने अंग्रेज़ोंके हाथ सौंपी। जिस समय कमि॰ र टेलर पटनामें मुसलमानोंके दुश्मन हो गये उस समय छपरामें मुसलमान सज्जनकी राजभक्ति पूर्ण विकसित हो रही थी। नजीबकी सेनाने मुजफ्फरपुर बचाया और दूसरे मुसलमानोंने छपरा। गयाकी रक्षा भी इसी तरहकी राजभक्तिसे

हुई। इस समय गयामें ८४ नं० पैदलके ८० सैनिक और ११६ सिक्ख थे, मार्नि साहब मजिस्ट्रेट थे। दानापुरके समाचार गया पहुँचे। मजिस्ट्रेटका अनुमान था कि जो कुँवरसिंह सरकारके दुश्मन बने तो कमसे कम आधा विहार उनके साथ होगा। कमिश्नर टेलरका हुक्म आते ही वहांके सब यूरोपियन पटना चले गये। वे खजानेमें सात लाख रुपये और जेलखाना आदि सब छोड़ गये। दारोगा पुलिस सेनाके भरोसे गया रहे। जब सब यूरोपियन कूच कर गये, तब दो तीन मील जाकर मजिस्ट्रेट मार्नि और एक अफीम विभागके अफसरको अपने इस तरह भागनेपर शर्म आई और वे गयाकी रक्षाके लिये आये। राजभक्त पुलिस सेना पहलेके समान खजाने और जेलकी रक्षा कर रही थी। पर पास ही हजारीबागकी सेना विद्रोही हो गई थी। मजिस्ट्रेटने खजानेको निरापद न समझकर उसे कलकत्ता पहुंचाना उचित समझा। कुछ गाड़ियां आदि संग्रह करके, ६४ नं० गोरी सेनाके कुछ सिपाहियोंकी रक्षामें खजाना कलकत्ताके लिये रवाना हुआ। पीछेसे पुलिस सेना भी विद्रोही हो गई। कैदियोंने जेल तोड़ दी। पुलिस और कैदी मिलकर रुपया लूटनेके लिये चले। पर वे कामयाब न हुए। अगस्तके मध्य भागमें मजिस्ट्रेट साहब खजाना लेकर कलकत्ता पहुंचे। गवर्नर जनरलने इन दोनों अंग्रेजोंकी प्रशंसा की।

एक ओर गयाके मजिस्ट्रेटपर सरकारकी दया हुई दूसरी

और पटनाके कमिश्नर टेलर साहबसे इस्तीफा लिया गया। बिहारमें बिना सरकारकी आज्ञाके फौजी कानून चलाने और मुसलमानोंको फांसी देनेसे सरकार उनसे नाराज थी। उन्होंने अपनी भद्दी नीतिसे कुंवरसिंहको सरकारके खिलाफ किया था। यदि अनुचित संदेह न करते तो कुंवरसिंह कभी विरोधी न बनते। खैर, टेलरसाहबकी जगह सामुएलसाहब बिहारके कमिश्नर बने। परेटके मैदानसे फांसियाँ उखाड़ी गईं। जो मुसलमान व्यर्थ कैदी किये गये थे वे छोड़े गये। एक मुसलमानको सामुएलने उच्च पद देकर सम्मानित किया। उसकी योग्यता और तत्परतासे मुहर्रम शान्तिसे बीता।

बिहारके और भी कुछ स्थानोंपर जोश था, पर इस कारण वहाँ विद्रोह न हुआ। सौंताल परगनेमें देवघर हिन्दुओंका प्रसिद्ध तीर्थ है। देवघरके पासही रोहिणीमें ५ नं० सिपाही सेना थी। सब तरहसे शान्ति थी पर एकाएक १२ जूनको, जब कुछ अफसर अपने बरांडेमें बैठे चाय पी रहे थे तब कुछ सिपाहियोंने उनपर हमला किया। दोनोंको घायल किया। वे अस्पतालमें जाकर ठीक हुए। तीस सवार सिपाही शकमें पकड़े गये। उन्हें फाँसी दी गई। इसके बाद फिर तीन महीनेतक शान्ति रही। अफसरोंकी आज्ञाको सेना बराबर पालन करती थी। तीन महीने बाद इस सेनाकी बदली रोहिणीसे भागलपुरकी हुई। भागलपुर जाकर अगस्त महीनेमें फिर इनके खयाल बदले। चारों ओरके सिपाहियोंने दानापुरके गोरे सैनिकोंके

अत्याचार सुने थे। इसी डरसे वे विचलित हो उठे। १५ अगस्तको एक जहाज भागलपुर आकर ठहरा। इसमें जनरल आउट्राम थे। इस समय दो सवारोंने ५ नं० रिसालासे कहा कि आज रातमें तुमपर हमला होगा। इससे घबराकर सब सवार अपनी चीजें छोड़कर, घोड़ोंपर बैठकर इधर उधर भाग गये।*

अधिकारी जिस समय काफी गोरी सेना संग्रह करनेमें असमर्थ थे तब भिन्न भिन्न स्थानोंकी सिपाही सेनाओंके हथियार तथा गोरोंके हाथों अपने प्राण लिये जानेकी आशंकासे वे घबरा उठते थे। सरकार काफी गोरी फौजें न ला सकी। सिपाहीसेना गोरी सेनाको अपना दुश्मन समझने लगी थी। एक तो वैसे ही चारों ओर अफवाहोंका जोर हो रहा था उसपर गोरी सेनाओं द्वारा उनके हथियार लिये जा रहे थे, फिर दानापुरके समान गोरे सिपाहियोंपर अत्याचार भी करते थे। कटकमें भी एक सिपाही सेना थी। यह सेना अपने बालबच्चों सहित रहती थी। उत्तेजित मुसलमानोंने इनको बहकाया कि तुम्हारे हथियार गोरी सेना लेगी। सिपाही बहुत घबराये पर उन्होंने सरकारके खिलाफ हथियार न उठाये। वे उत्तेजित हो उठे थे पर उनके परिवार साथ थे, स्त्री बच्चोंकी चिन्तासे वे ऐसा न कर सके। उन्होंने उत्तेजित मुसलमानोंको यही उत्तर दिया था कि हमारे दोनों हाथ बँधे हैं।

* Martin's Indian Empire, Vol II. p. 415.

कटकमें जैसे शान्ति रही वैसे ही जलपाईगुड़ीमें भी गड़बड़ न हुई। इस स्थानपर सेनापतिकी उदारता और समदर्शितासे शान्ति रही। जलपाईगुड़ीमें ७३ नं० सिपाही सेना थी। कर्नल सियारार इसके सेनापति थे। वे सिपाहियोंपर अधिक विश्वास करते थे। उनका विश्वास था कि बहुतसे स्थानोंपर जो सिपाही विद्रोही बने उसका कारण निर्मूल अफवाहें और अकारण डर था। जून मासमें कटकके समान जलपाईगुड़ीमें भी अफवाह उड़ी कि शीघ्रही सिपाहियोंके हथियार लिये जायंगे। हथियार लेकर गोरे सब सिपाहियोंको बंदूकोंसे उड़ा देंगे। सिपाहियोंका हथियार लेना उस समय एक मामूली बात थी। जहाँ अधिकारियोंको जरा शक होता था वहीं हथियार ले लिये जाते थे। सेनापति सियारारको शक था कि उन्हें भी यही करनेकी आज्ञा मिलेगी। पर उन्हें इस प्रथापर जरा भी विश्वास न था। वे अपनी सेनाको राजभक्त समझते थे। उन्होंने कहा था—हम खुद काम छोड़ देंगें पर अपने अधीन सैनिकोंके हथियार न लेंगे।" अपने अधीन सैनिकोंकी सम्मान-रक्षाके लिये वे यहाँतक तैयार थे। धीरे धीरे जून मास बीत गया पर सिपाहियोंकी उत्तेजनामें किसी प्रकारकी कमी न दिखाई दी। बहुतसे भड़कानेवाले उन्हें बराबर सन्देह दिला रहे थे। इसी सेनाके जो सिपाही ढाकामें उत्तेजित हो उठे थे वे भी उन्हें डरा रहे थे। जूनके अन्तमें इनमें अधिक जोश देखा गया। सिपाहियोंको विश्वास दिलाया गया था कि कलकत्तासे बहुत

बड़ी गोरी सेना आ रही है। सिपाहियोंने हथियार लेनेकी मुखालफत करनेका दृढ़ निश्चय किया। सेनापतिने अपने सैनिकोंमें उत्तेजना देखी पर उन्होंने अपनी नीति न बदली। दूसरे दिन परेटके मैदानमें उन्होंने सबको एकत्र होनेकी आज्ञा दी। सेनापति घोड़ेपर बैठकर सेनामें गये। कई सैनिकोंने उत्तेजनाकी बातें कहीं। दूसरे दिन सब परेटके मैदानमें एकत्र हुए। बंदूकें सबके हाथमें थीं। पर सबने अफसरोंकी आज्ञाका पालन किया।

किसी प्रकारकी अशान्ति न हुई, पर सिपाहियोंकी दुश्चिन्ता भी न मिटी। जलपाईगुड़ीमें अनेक प्रकारकी अफवाहोंका जन्म हो रहा था। सेनापतिने ले० गवर्नरके दफ्तरके कागज पत्र लानेके लिये कुछ हाथी भेजे। इनके साथ सिपाहियोंका कोई संसर्ग न था पर जोशीले लोगोंने अपनी कल्पनासे इस सामान्य विषयको बड़ा भयानक बना दिया। सिपाहियोंमें यह अफवाह फैल गई कि सेनापतिने गोरी सेना मंगानेके लिये सवारियां भेजी हैं। इस अफवाहसे फिर सिपाहियोंका जोश उभरने लगा। इस समय भी सेनापतिने अपनी सेनाके हथियार लेनेका इरादा न किया। उन्होंने षड्यन्त्रकारियोंको पकड़ा। उन्होंने इन दोषियोंको दंड दिया और राजभक्त सिपाहियोंको इनाम देकर प्रसन्न किया। महीनेके बाद महीने बीते पर जलपाईगुड़ीमें शान्ति रही। दुःखका विषय यही है कि अन्य स्थानोंके सेनापति ऐसे सहृदय न थे।

पश्चिमोत्तर बंगालमें जो कुछ हुआ वह दक्षिणमें नहीं हुआ।

चटगांवमें ३४ नं० सिपाही सेना थी। यह १८ नवम्बरकी रातको एकाएक सरकारके विरुद्ध खड़ी हो गई। इसके सेनापति इन्हें शान्त रखनेके लिये कवायदके मैदानमें ले गये। पर वे शान्त न हुए। इनमेंसे किसी किसीने अफसरोंको गोलीसे मारना चाहा, किसी किसीने उनको रोककर अफसरोंको किसी रक्षित स्थानमें जानेका अनुरोध किया। घटनाओंकी विपरीततासे इनके मानसिक भाव बदले थे पर उस दशामें भी इन्होंने अफसरोंका खून नहीं बहाया। और कोई उपाय न देखकर सेनापति समाचार देने यूरोपियनोंके घर गये। उनके पहुंचनेसे पहले ही कई भाग चुके थे। इसके बाद सेनाके कप्तान आदि वेश बदलकर जंगलके रास्तेसे भागे। कलक्टर साहबके कहार उनके मार्गदर्शक बने।

इधर उठे हुए सिपहियोंने खजानेके करीब तीन लाख रुपये लूट लिये, जेलखाना तोड़ दिया, छावनी जला दी, तोपखाना उड़ा दिया। ग़दरके अनुकूल यह काम समाप्त करके वे सरकारके दो हाथियों और घोड़ोंपर अपनी लूटका सामान लादकर त्रिपुराकी ओर चले। रजबअली नामक एक हवलदारने उनके सेनापतिका पद ग्रहण किया। चटगांवमें इन्होंने किसी यूरोपियनपर हमला नहीं किया। जेलखानाका एक सिपाही उन्हें रोकनेके कारण मारा गया था। चटगांवके कमिश्नरने त्रिपुराके महाराजको इन सिपाहियोंके रोकने या मारनेका हुक्म दिया। इस प्रान्तके दो बड़े बड़े जमींदारोंके नाम भी इसी आशयके पत्र भेजे गये।

सीताकुंड पहुँचकर सिपाहियोंने ब्रिटिशराज छोड़कर स्वाधीन त्रिपुराकी ओर यात्रा की। पर त्रिपुराराजने बहुतसे हथियारबंद आदमी उन्हें रोकनेके लिये भेजे थे। इन्होंने २ दिसम्बरको सिपाहियोंका मार्ग रोका। इस कारण फिर ब्रिटिशराजमें प्रवेश करके ये कसिमल्लाके पाससे पहाड़ोंकी ओर जाने लगे। इस पहाड़ी इलाकाको पार करते हुए उनके कष्टोंकी सीमा न थी। उनके तीन हाथी और दस हजार रुपये निकल गये। उन्होंने जिन कैदियोंको छुड़ाया था उनमेंसे अधिकांश पकड़े गये। त्रिपुराके बड़े बड़े जमींदार उन्हें हर स्थानपर दुःखी करने लगे। अन्तमें उपाय न देखकर वे मणिपुरकी ओर बढ़े। रास्तेमें उन्होंने एक पुलिस स्टेशन बर्बाद कर दिया। श्रीहट्टके अफसर एलन साहबने देखा कि मददके लिये गोरी सेना देरसे आवेगी। इसलिये उन्होंने देशी सेना लेकर मेजर बाइंगको सिपाहियोंके विरुद्ध जानेको कहा। सेना लेकर मेजर बाइंग श्रीहट्टसे चले। ८० मील रास्ता पार करके प्रतापगढ़में जब वे पहुंचे तब समाचार मिला कि सिपाही शीघ्र ही लातू नामक स्थानपर पहुंचनेवाले हैं। लातू प्रतापगढ़से २८ मील था। सेनापति लातूको पीछे छोड़कर प्रतापगढ़ गये थे, समाचार पाकर वापिस लातू आये। रास्ता जंगली था। विद्रोही सिपाहियोंने श्रीहट्टके सैनिकोंको अपनी ओर करनेकी कोशिश की पर वे सफल न हुए। लातूमें दोनों दलोंका घोर संग्राम हुआ। सेनापति बाइंग गिर पड़े, फिर भी सेना लड़ती रही। श्रीहट्टकी इस राजभक्त सेनाका हमला

बर्दाश्त न कर सकनेके कारण चटगांवके सिपाही जंगलमें जा छिपे।

इस जंगलमें उनका पीछा करना सहज न था। श्रीहट्टके सिपाहियोंका एक भाग उनका काम देखनेपर नियुक्त किया गया, बाकी सेना श्रीहट्ट चली गई। चटगांव और ढाकाके समाचार पाकर सरकारने जो ५४ नं० गोरी सेना भेजी थी वह ढाका होती हुई कलकत्ता चली गई। इधर चटगांवके विद्रोही सिपाही मणिपुर राज्यमें जा घुसे। पर यहां भी वे निरापद न रहे। ६ जनवरी (१८५८) को फिर श्रीहट्टके सिपाहियोंने उनपर हमला किया। दो घंटेकी लड़ाईके बाद वे फिर पहाड़ोंमें चले गये। इसके आठ दिन बाद फिर एक संग्राम हुआ। इस लड़ाईमें चटगांवके सिपाहियोंकी शक्ति नष्ट हुई, उनमेंसे बहुतसे मारे गये थे। जो जीते बचे उनके बचनेका कोई उपाय न था। वे उस पहाड़ी इलाकेमें फिरकर बड़ी शोचनीय दशामें अपने जीवनके दिन बिताने लगे।

जब चटगांवके विद्रोहका समाचार ढाका पहुंचा तब वहां भी हलचल मची। ढाका बंगालका प्रसिद्ध शहर है। मुसलमानी जमानेमें एक बार यह शहर बंगालकी राजधानी रह चुका है। अंग्रेज़ी जमानेमें भी कपड़ेके व्यापारके कारण ढाका किसीसे अपरिचित नहीं था। ढाकाकी मलमल संसारमें प्रसिद्ध है। उस समय जलपाईगुड़ीकी ७३ नं० सिपाही सेनाके कुछ आदमी और कुछ गोलंदाज सेना (सब मिलकर २५०) खजानेकी रक्षा

कर रहे थे। चटगांवके विद्रोहके चार दिन बाद ढाका समाचार पहुंचा। उसी दिन ढाकाके सिपाहियोंके हथियार लेने ले० ल्यूस दो तोप और सेनाके साथ वहां पहुंचे। पहले वे खजानेपर गये। वहीं सिपाहियोंके हथियार लिये गये, बादमें दूसरे स्थानोंपर जाकर उन्होंने हथियार लिये। जिस समय ७३ नं० सिपाही सेनाके एक दस्तेके हथियार लेने वे लालबाग गये तब सिपाहियोंने इसमें आपत्ति की। इससे गोरोंने उनपर गोलियां चलानी शुरू कीं। सिपाही भी गोलियां चलाने लगे। इस गड़बड़में ४० सिपाही काम आये। अंग्रेज़ोंमेंसे भी कई घायल हुए, दो एक मरे भी। आधे घंटेकी लड़ाईके बाद बाकी सिपाही जलपाईगुड़ीकी ओर रवाना हुए। पर रास्ता रुका होनेके कारण भूटानके पहाड़ोंमें चले गये।

चटगांव और ढाकाका समाचार पाकर कलकत्ताके अधिकारियोंने ५४ नं० गोरी सेनाकी एक रेजीमेंट और सौ जहाजी गोरे जलमार्गसे मददके लिये भेजे। अधिकारियोंकी मंशा थी कि यह सहायक सेना पहले ढाका और बादमें चटगांव जाकर भागे हुए सिपाहियोंको पकड़ेगी। पर अधिकारियोंने पहले ही सिपाहियोंको मार कर जंगलों और पहाड़ोंकी ओर भगा दिया था।

यह ऊपर आ चुका है कि दानापुरका ५ नं० रिसाला भागलपुर जाकर विद्रोही हो गया था। इधर ढाकाके सिपाही जलपाईगुड़ीकी ओर चले थे। भागलपुरके कमिश्नर उसी समय

जलपाईगुड़ीकी ओर चले। इस समय एक गोरी सेना मुंगेरमें थी, उसीको लेकर कमिश्नर भागलपुरसे रवाना हुए। जिस समय वे जलपाईगुड़ीकी ओर जा रहे थे उस समय मदारीगंज और जलपाईगुड़ीकी ११ नं० रेजीमेंटके दो दस्ते सवार सरकारके विरुद्ध होकर (४ और ५ दिसम्बर) दीनाजपुरकी ओर जा रहे थे। इस समाचारसे रंगपुरके कलक्टरने खजानाका रुपया रक्षित स्थानपर पहुंचा दिया। दीनाजपुरके कलक्टर भी अपने स्थानकी रक्षाका प्रबन्ध करने लगे। सवारोंको जब मालूम हुआ कि पीछेसे गोरी सेना आ रही है तब उन्होंने दीनाजपुरका रास्ता छोड़कर पुर्नियाकी ओर यात्रा की। समाचार पाकर ह्यूल साहब भी पुर्नियाकी ओर चले। वे ठीक समयपर पुर्निया पहुंचे, क्योंकि सिपाही लूटका इरादा कर ही रहे थे। यहांसे वे भगाये गये। हलकी सी लड़ाई हुई जिसमें कई एक काम आये। यहांसे उत्तरकी ओर चलकर ह्यूल साहब शीघ्र नाथपुर पहुंचे। फिर आगे न बढ़ सकनेके कारण सवारोंने नैपालके जंगलोंमें शरण ली। जिस समय कमिश्नर नाथपुरमें थे उन्हें ढाकाका समाचार मिला। इसलिये वे शीघ्र उधर चले। ढाकाके सिपाही जब तिस्ता नदी पार कर रहे थे तब वे वहां पहुंचे। ये सिपाही भी ब्रिटिशराजसे निकलकर नैपालकी ओर गये। पर वहां भी सिपाही स्थिर न रह सके। कमिश्नर साहबने नैपालके महाराज जंगबहादुरसे सहायताकी प्रार्थना की। महाराजने अपने एक सेनापति रत्नमणिसिंहको सहायताकी आज्ञा

दी। पर फल कुछ न हुआ। कारण सिपाही लोग नेपालके पहाड़ी, जंगली रास्तोंसे अवधके पश्चिम-उत्तरकी ओर आ गये। अंग्रेज़ी और नैपाली सेना उन्हें न रोक सकी।

सिपाहियोंके कामोंमें इस समय किसी प्रकारका नियम न था। वे दुश्चिन्तासे या उत्तेजनासे सरकारके खिलाफ जरूर हो गये थे पर सरकारकी शक्तिको हानि पहुंचानेकी एकाग्रता उनमें न थी। वे आराकी घटना जाननेके लिये बहुत समय-तक निश्चेष्ट रहे। १४ अगस्तको उन्हें समाचार मिला कि आरापर फिर अंग्रेज़ोंका कब्जा हो गया है। पर वे इस समाचारको असत्य समझे बैठे रहे। यदि वे कुंवरसिंहकी सेनासे मिलते तो सरकारकी कठिनाइयां और भी अधिक बढ़तीं। खैर, आराका समाचार पाकर यह रिसाला बिहारके पूर्व एक छावनीकी ओर बढ़ा। यहां ३२ नं० सिपाही सेना थी। सवारोंको आशा थी कि पैदल सेना उनके साथ उठ खड़ी होगी पर उनकी उम्मीदें पूरी न हुईं। ३२ नं० सेनाने सरकारका पक्ष न छोड़ा। जब सवार उनके सामने पहुंचे तब सैनिकोंने बंदूकों और संगीनोंसे उनका स्वागत किया। हताश होकर सवार आराकी ओर गये।

इस प्रकार बिहारके पूर्वी भागकी अशान्ति दूर हुई। पर बिहारके दक्षिणी पहाड़ोंकी ओर गड़बड़ थी। इस तरफ़ छोटे नागपुरका इलाका पहाड़ी और जंगली था। इसमें कोल भील आदि जातियोंका निवास था। कुछ छोटे छोटे राजा भी थे, इन राजाओंके निवासस्थानका नाम छुटिया था, इसी कारण

उसका नाम छोटा नागपुर पड़ा था। छोटा नागपुरके हजारी-बाग, रांची, चांईबासा और पुरलियामें सेनायें थीं। इन सब स्थानोंपर देशी पैदल और गोलंदाज सेनायें थीं। ३० जुलाईको दानापुर और आराके समाचार हजारीबाग पहुंचे। समाचारसे ८ नं० सिपाही सेना बिगड़ने लगी। इस कारण वहाँके अंग्रेज़ोंने अपनी रक्षाका स्थान ढूंढा।

हजारीबागका समाचार पातेही पासके अंग्रेज़ सेनापति अपनी सेना लेकर हजारीबागकी ओर चले। रास्तेमें उन्हें एक अफसरने समाचार दिया कि ८ नं० सेनाकी एक रेजीमेंट विद्रोही हो गई। उसके अधीन जो सैनिक थे उन्होंने बागी होकर तमाम तोपों और गोले बारूदके अलावा चार हाथियोंपर भी कब्जा कर लिया। पर इस अवसरपर भी रिसालावाले शान्त थे। कमिश्नर डाल्टन साहब इस समय रांचीमें थे। जब विद्रोही सिपाही हजारीबागसे कूच कर गये तब कमिश्नर वहां आकर कचहरी करने लगे। इससे पहले ही अंग्रेज़ सेनापति अपनी सेना लेकर वहां जा पहुंचे थे। सिपाहियोंने रांची और उसके पासका एक और नगर ले लिया था। गदरके अवसरपर अन्यान्य स्थानों पर जो कुछ हुआ वही रांचीमें भी हुआ। कैदी छूट गये, खजाना लुट गया और लोगोंकी सम्पत्ति बर्बाद हो गई।

कप्तान डाल्टन इस अशान्तिको रोकने लगे। रामगढ़के राजाने उनकी सहायता की। रांची और हजारीबागकी घटनासे पुरलिया और चाईबासाके सिपाही भी उठ खड़े हुए। इन स्थानोंके खजाने

भी लूटे गये और जेलखाने टूटे। अंग्रेज़ोंके मकान जले। पर छोटे नागपुरके सारे सिपाही विद्रोही न बने। बहुतसे कप्तान डाल्टनके सहायक बनकर अपने साथियोंपर हमला करने लगे। इससे डाल्टनकी शक्ति बढ़ी। इधर डाल्टनने सरकारको मददके लिये लिखा। पश्चिमोत्तर प्रदेशके विप्लवको शान्त करनेमें सरकारकी पूरी ताकत लगी थी इसलिये वह इस ओर सेना न भेज सकी। पर इस समय मद्रासी सिपाही सिक्खोंकी तरह राजभक्त थे। जिन्होंने एक समय फरासीसियोंकी शक्ति तोड़ी थी, जो हैदर अलीके विरुद्ध लड़े थे वे इस अवसरपर भी सरकारके साथ थे। मद्राससे सहायताके लिये सेनायें कलकत्ता आई थीं और वहाँसे अन्यान्य स्थानोंकी ओर भेजी गईं। कलकत्तासे थोड़े मद्रासी सिपाही कप्तान डाल्टनकी सहायताके लिये छोटा नागपुर आये।

२ अक्टूबरको चात्रा नामक स्थानपर सिपाहियोंका अंग्रेज़ी सेनासे युद्ध हुआ। एक घंटेकी लड़ाईके बाद सिपाही हारकर इधर उधर भाग गये। अंग्रेज़ी सेनाकी तादाद कम और सिपाहियोंकी अधिक थी। पर अशान्ति न मिटी। पालामऊ, संभलपुर, और सिंहभूमिमें अशान्ति मची। इन स्थानोंपर कोल और संथाल लोगोंने अपने धनुष वाण उठाये। जिन राजाओंसे इन्हें किसी प्रकारकी हानि पहुंची थी या जिनसे ये लोग नाराज थे उन्हें उतार नये राजाओंको गद्दीपर बैठानेके लिये इनका प्रयास था। एक ओर सिपाहियोंके विद्रोहसे अशान्ति थी, दूसरी ओर इन असभ्य जातियोंने अधिकारियोंको परेशान कर दिया। पहाड़ों-

पर बेशुमार जंगल था, वहां न सेना जा सकती थी और न शान्तिरक्षक। इन स्थानोंसे इन लोगोंने तमाम देशमें विप्लव कर दिया। एक बार बहुतसे कोल एकत्र होकर सिक्ख सेनाके चारों ओर हो गये, पर सिक्खोंने इन्हें भगा दिया। पर इनके तीरोंसे बहुतसे सिक्ख मारे गये, अंग्रेज़ अफसर भी घायल हुए। अन्तमें बड़ी कोशिशके बाद अराजकताका स्रोत बंद हुआ। अधिकारियोंने बहुतसे गांव जला डाले। बहुतोंके जानवर ले लिये, बहुतोंको फांसी दी। इस प्रकार सन् १८५८ के शुरूमें शान्ति हुई।

जिस समय बंगाल और बिहारमें घटनायें हो रही थीं उस समय पश्चिमोत्तर प्रदेशमें विद्रोहकी आग पूर्णरूपसे धधक रही थी। लेफ्टिनेंट गवर्नर आगरामें रुक गये थे। बहुतसे स्थानोंसे उनका प्रभुत्व भी लोप हो गया था। दिल्लीपर सिपाहियोंका राज्य था। अवध और मध्य भारतमें विद्रोह पूरे जोरपर था। कलकत्ता तथा अन्यान्य स्थानोंके अंग्रेज़ भारतवासियोंको नीच समझकर उनके खूनके प्यासे बन गये थे। पिछले अध्यायोंमें पाठक जो वर्णन पढ़ चुके हैं उसमें स्थान स्थानपर इसके उदाहरण आये हैं। केवल भारत ही नहीं, यह भाव इंग्लैंड भी पहुंचा था और वहांका प्रसिद्ध पत्र "टाइम्स" बराबर बेबुनियाद बातें छाप छापकर अंग्रेज़ जातिका क्रोध बढ़ा रहा था। लार्ड शैफ्ट्सबरीने अक्टूबर मास (१८५७) में लंडनमें किसी सभामें भाषण देते हुए कहा था—"हमें विश्वस्त सूत्रसे मालूम

हुआ है कि कलकत्तामें जो अंग्रेज़ स्त्रियां हैं उनके नाक कान काटकर आंखें फोड़ दी गई हैं, बच्चे हलाल करनेको रक्खे गये हैं।" पर यह बिलकुल गलत थी। जब भारतसे विधवा गोरी स्त्रियां भली चंगी इंग्लैंड पहुंचीं तब वहांके लोगोंमें समाचारोंकी असत्यतापर तर्क होने लगा। एक व्यक्ति (सर जान पैकिंटन) ने कहा था—"सिपाहियोंने यदि सचमुच यूरोपियनोंके साथ इतना अत्याचार किया है तो हमारे हाथ भी अत्याचारसे छूते नहीं हैं। हमने भी शासनकी दुर्दशा की है।" ब्रिटिश मंत्री डिजरायलीको भी यह व्यवहार पसंद न आया। *

* Martin's Indian Empire, Vol II. P· 409.

सन् १८५७

के

ग़दरका इतिहास
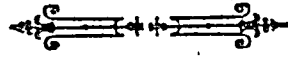
चौथा खण्ड.

पहला अध्याय
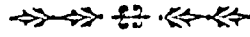
पश्चिमोत्तर प्रदेश—आगरा—अलीगढ़—इटावा—भारतवासियोंकी सहायता—मैनपुरी—कालविन साहबकी घोषणा—मथुरा और आगराके सिपाहियोंके शस्त्र लेना ।

गंगा यमुनाकी उत्पत्तिके स्थानसे लेकर दक्षिणमें कर्मनाशातक विस्तृत प्रदेशका नाम पश्चिमोत्तर प्रदेश है। जब अंग्रेज़ोंका राज्य पंजाब और दिल्लीपर नहीं हुआ था, तब यह इलाका ही उनके राज्यके पश्चिम उत्तर पड़ता था। इसलिये तबसे इसका नाम पश्चिमोत्तर पड़ा। बादमें जब अवधके नवाबका अन्त हुआ और वह राज्य भी इसमें आ

गया तब इसका नाम "आगरा व अवध" पड़ा। आगरामें लेफ्टिनेंट गवर्नरका निवास था और यहींसे प्रदेशपर शासन होता था। अवध नया ही लिया गया था इसलिये वहाँके लिये एक अलग कमिश्नर था। उस समय आगरा विभागकी आबादी ३० लाख थी। इस प्रदेशमें आगरा, मथुरा, मेरठ, कानपुर, इलाहाबाद, लखनऊ, बनारस, इटावा आदि प्रसिद्ध नगर, गंगा यमुना आदि प्रसिद्ध नदियां, वृन्दावन, अयोध्या, चित्रकूट आदि प्रसिद्ध तीर्थ हैं। हिन्दुओंके जमानेमें यह प्रदेश सबसे आगे था, और अंग्रेज़ोंके जमानेमें यह प्रदेश कितना बढ़ा हुआ था सो पाठक इसी इतिहासमें पढ़ रहे हैं। सिपाही इसी प्रदेशके निवासी थे। वीरतामें यह प्रदेश सबसे आगे था, लाखों सिपाही अंग्रेज़ोंकी सेनामें भर्ती हो गये थे। इस प्रदेशके सीधे सादे और सच्चे किसान इस प्रदेशके वीर ब्राह्मण और क्षत्रिय थे। छोटेसे लेकर बड़े तक और शूद्रसे लेकर ब्राह्मणतक धर्म-पर मरनेवाले थे। छुआछूत और धर्मका विचार जितना इस प्रदेशके निवासियोंमें था उतना भारतके किसी प्रदेशमें न था। यहांके निवासी भोले और सच्चे थे। और किसी प्रदेशवालोंको कारतूसोंमें चर्बीका खयाल नहीं हुआ पर इस प्रदेशके भोले आदमी चर्बीके नामसे डर गये। उस समय ब्राह्मण और क्षत्रिय ही सेनाओंमें थे। धर्मके लिये वे लोग हँसते २ प्राण दे सकते थे। चर्बीके नामपर आतंकित होकर इन्होंने जो कुछ किया वह इस इतिहासके पाठक पढ़ते आ रहे हैं।

इस समय कालविन साहब इस प्रदेशके लेफ्टिनेंट गवर्नर थे। ये योग्य और दूरदर्शी शासक थे। शुरूमें जब मेरठसे गदरका प्रारम्भ हुआ तब कालविन साहबने उसे एक साधारण घटना समझा। उन्होंने यह न समझा था कि सौ बरसका हमारा राज्य इस साधारण घटनासे उथल-पुथल हो जायगा। पर जब दिल्लीके अंग्रेज़ोंकी दुर्दशाका समाचार उन्होंने सुना और साथ ही बूढ़े मुगल बादशाहका सिंहासनपर बैठकर भारत सम्राट्की उपाधि ग्रहण करनेकी खबर सुनी तब वे गङ्गाके किनारेके शहरोंकी रक्षाके लिये चिन्तित हुए। सिवा मेरठके और कहीं गोरी सेना न थी। इलाहाबाद खाली था। इस समाचारसे आगराके अंग्रेज़ अपनी रक्षाके लिये चिन्तित हुए, साथ ही आगराके निवासी उत्तेजित हुए। उस समय चिरप्रसिद्ध ताजमहलकी ओर फौजी छावनी और अंग्रेज़ोंके बंगले थे। ईसाइयोंका गिर्जा भी था। शहर और छावनीके बीचमें किला था। किलाके पास ही पुल था, इस पुलसे उतरकर अलीगढ़ और कानपुरका रास्ता था।

मेरठ और दिल्लीका समाचार १२ और १३ मईको आगरा पहुंचा। समाचार मिलतेही अंग्रेज़ अपनी रक्षाके लिये तैयार हुए। एक गोरी सेनाको किलेमें रखनेका प्रबन्ध हुआ। आगरामें दो सिपाही सेना थी। दूसरी ओर एक गोरी पैदल और गोलंदाज सेना थी। आगराके सिपाहियोंके लिये यह सेना काफी थी। पर यदि आसपासके नगरोंसे सिपाही सेना आ जाती और प्रजा

उत्तेजित हो उठती तो यह कम हो जाती। जब सिपाहियोंने दिल्ली फतह कर ली तब अंग्रेज़ोंको विश्वास हो गया कि अब वे पश्चिमोत्तर प्रदेशके बड़े बड़े शहरोंको फतह करने निकलेंगे। कालविन साहब भी इस विचारसे स्थिर हुए। इस समय आगराकी रक्षा उनके सामने मुख्य बात थी। इसके लिये उन्होंने १३ मईको आगराके तमाम प्रधान प्रधान अंग्रेज़ोंको बुलाया। दीवानी, फौजी और धर्मप्रचारक सब बड़े बड़े अंग्रेज़ उपस्थित हुए। इस अवसरपर ले० गवर्नरने ईसाइयोंको किलेमें ले जानेका प्रस्ताव किया। पर दूसरे अंग्रेज़ोंने इसका विरोध करके कहा कि इतना डरनेकी आवश्यकता नहीं। हर एक भिन्न भिन्न तरहकी बात कहने लगा। कोई कहने लगा जेलखानेका प्रबन्ध किया जाय, कोई कहने लगा किलेमें भोजन-सामग्री यथेष्ट रक्खी जाय, कोई कहने लगा सिपाहियोंपर नजर रक्खी जाय, सब अपनी अपनी रायपर जोर देने और उसे पूर्ण करनेके लिये आग्रह प्रगट करने लगे। बड़ी गड़बड़ और बहसके बाद अन्तमें निर्णय हुआ कि लेफ्टिनेंट गवर्नर सब सिपाहियोंको परेटके मैदानमें एकत्र करके उपदेश दें। अंग्रेज़ोंकी स्वयंसेवक सेना बनावें और लोगोंको स्थान स्थानपर शान्त किया जाय।

सभा समाप्त हुई। दूसरे दिन दीवानी विभागके सब अंग्रेज़ अफसर परेटके मैदानमें आये। कालविन साहब गाड़ीमें बैठकर पहुंचे। उनकी सलामीके लिये तोपें दागी गईं। अंग्रेज़ स्त्रियां तोपोंकी आवाज़को गोरों और सिपाहियोंका युद्ध समझकर डर

गई। गाड़ीमें खड़े होकर कालविन साहबने पहले गोरे सैनिकों-को सम्बोधन करके कहा—"तुम अपने सहयोगियोंपर एकाएक अविश्वास मत करो, पर जिन दुष्टोंने दिल्लीमें तुम्हारे पादरीकी कन्याका बध किया है उन्हें मत भूलो।" जब लेफ्टिनेंट गवर्नर यह कह रहे थे तब गोरे सिपाही अपनी बंदूक संभाल रहे थे। इसके बाद उन्होंने सिपाहियोंको सम्बोधन करके हिन्दीमें कहा, तुमपर मेरा विश्वास है। यदि किसीको किसी तरहकी शिकायत हो तो वह प्रगट करें। यदि किसीको नौकरी न करनी हो तो वह प्रसन्नतासे विदा हो। बस, इससे न किसी सिपाहीने शिकायत की और न नौकरी छोड़ी। वे प्रतिक्षण अपने धर्मकी आशंका कर रहे थे। सरकारके विरुद्ध विद्वेषसे उनके हृदयोंमें आग लग रही थी। उनके चेहरोंको देखकर यूरोपियन प्रसन्न न हो सके।

इसके बाद ले० गवर्नरने दिल्ली और आगराके मार्गकी रक्षा-के लिये एक अंग्रेज़ कर्मचारीको नियुक्त किया। इसे आज्ञा दी गई कि रास्तेके निवासियोंको शान्त रक्खा जाय और यदि दिल्लीके सिपाही आगराकी ओर आवें तो उन्हें रोकनेके लिये जो सेना भेजी जाय उसका रास्ता न रुके। इस तरह रास्तेका प्रबन्ध करके उन्होंने दूसरी ओर ध्यान दिया। भारतके मित्र-राज्योंसे सहायता लेना आवश्यक था। उस समय सन्धिके अनुसार अनेक राज्योंमें ऐसी सेनायें थीं जो काम पड़नेपर सरकारकी सहायताके लिये तैयार रहती थीं। ग्वालियरमें सइ

तरहकी सेनायें थीं। कोटा राज्यमें भी ऐसी एक सेना थी। इसके अलावा भरतपुरकी वीर जाटसेना युद्धकुशल थी। भरतपुर आगराके निकट था। ग्वालियरपर भी आगराका भरोसा था। इसलिये कालविन साहबने भरतपुर और ग्वालियरको सहायताके लिये लिखा। दोनों राजाओंने उसी दम अपनी अपनी सेनाएं भेजीं। कप्तान निक्सन नामक अंग्रेज़ सेनापतिकी अधीनतामें भरतपुरकी एक सेना १५ मईको मथुरा आई। दूसरे दिन ग्वालियरसे रिसाला और गोलंदाज सेना आई। महाराज सिंधियाने अपने शरीररक्षक सिपाहियोंको भी ले० गवर्नरके पास भेज दिया। सरकारको इस तरह राजाओंसे सहायता लेते देखकर लोग कमजोर समझ सकते थे पर कालविन साहबने लोगोंके समझने न समझनेकी परवा न की। उन्होंने देखा कि जो कहीं सिपाहियोंके साथ बड़े बड़े राजा लोग बिगड़ गये तो ब्रिटिशराजका पता लगना कठिन हो जायगा। इसलिये उन्होंने जाट, मरहट्टे और राजपूत राजाओंसे सहायता ली।

इस प्रकार शान्तिके साथ एक सप्ताह बीत गया, किसी तरहकी गड़बड़ न हुई। सब काम पहलेके समान हो रहे थे। पर सबके हृदयोंमें आशंका थी। सब किसी अज्ञात भविष्यकी आशंकासे डर रहे थे। २१ मईको अलीगढ़से समाचार पहुंचा कि वहांकी सिपाही सेना सरकारके विरुद्ध हो गई। अलीगढ़ आगरासे ५० मीलपर है। वहां फौजी छावनीका नाम कोयल और किलेके स्थानका नाम अलीगढ़ है। उस समय वहां ६ नं०

सिपाही सेनाके कुछ सिपाही थे। इस सेनाके बाकी सिपाही मैनपुरी, इटावा, बुलन्दशहर आदि भिन्न भिन्न स्थानोंमें थे। मई मासके मध्यमें अलीगढ़में उत्तेजना फैली। चारों ओरसे आशंका-जनक समाचार आने लगे। एक अंग्रेज़ अफसर कुछ सिपाहियों-को लेकर इस उत्तेजनाको दूर करने गया। दीवानी विभागका एक नौजवान अंग्रेज़ और कुछ सवार साथ थे। जब ये शहरके कसाईखानेके पाससे गुजरे तब कई एक बलवाई इन्हें दिखाई दिये। पर वे शान्त रहे। सब कुछ देखभालकर ये लोग वापिस आये।

हृदयमें उत्तेजना होनेपर भी सब शान्त थे। पर इस शान्ति-को नाश करनेके लिये एक चिनगारी आ पहुंची। पड़ोसके गांवमें एक ब्राह्मण था। आस पासके गांववाले उसका सम्मान करते थे। इसका एक सम्बन्धी जेलका कर्मचारी था। इस कारण इसके अनुरोधकी उसे रक्षा करनी पड़ती थी। इस समय अलीगढ़के खजानेमें ७ लाख रुपये थे। इस रुपयेकी बात किसीको मालूम न थी, पर ब्राह्मण जानता था। ब्राह्मणने सोचा कि जो सिपाही और गाँववाले मिलकर गदर करें तो दोनोंको यह रुपया मिल सकता है। इसलिये एक सिपाही द्वारा यह प्रस्ताव कराया गया कि यदि सिपाही गदर करें तो उनका साथ देनेको २००० ग्रामीण लोग तैयार हैं। ब्राह्मणको छिपकर सिपा हीसे सलाह करते देखकर एक देशी अफसरको सन्देह हुआ। बात सुनकर उस अफसरने कहा कि इस विषयकी सलाह किसी

गुप्त स्थानमें होनी चाहिये। ब्राह्मण यदि उसके स्थानपर आवे तो बात निश्चित हो सकती है, इसपर वह सहमत हुआ। निश्चित स्थान-पर ब्राह्मण आया और अफसरके इशारेसे वह गिरफ्तार कर लिया गया।* इस ब्राह्मणकी बात सुनतेही सिपाहियोंने अंग्रेज़ सेनापतिसे कह दिया था। सेनानायकने ब्राह्मणको पकड़नेकी आज्ञा दी थी, इस प्रकार ब्राह्मण पकड़ा गया। उसपर अभियोग चला और उसे फांसी दी गई। अबतक सिपाही विश्वासी थे, वे सरकारके विरोधी न थे। पर ब्राह्मणकी फांसीने उनमें विद्रोहका बीज बो दिया। एक सिपाहीने पुकारकर कहा—"देखो, हमारे धर्मकी रक्षाके लिये ब्राह्मणने शरीर त्यागा है।" बस, बारूदमें आग पड़ गई। तमाम नियम कानून उथलपुथल हो गये। सिपाहियोंको गदरके लिये तैयार देखकर अंग्रेज़ अफसर भागे। इस प्रकार फौजी, दीवानी और व्यापारी सभी अंग्रेज़ अलीगढ़ खाली कर गये। इनमेंसे कोई आगराकी ओर भागा और कोई मेरठकी ओर। जो मेरठकी ओर गये थे उन्हें रास्तेमें विपत्तिका सामना हुआ, पर अलीगढ़में किसीपर हमला नहीं हुआ।

जब यूरोपियन अलीगढ़से भाग गये तब सिपाही और गांव-वालोंने मिलकर अपना काम किया। उन्होंने सहजमें कलक्टरी-के ७ लाख रुपये आपसमें बांट लिये। जेलखानेको तोड़ दिया। अंग्रेज़ोंके मकान जला दिये। जो कुछ अंग्रेज़ोंका था, जिस चीजसे अंग्रेज़ोंका सम्बन्ध था, सब नष्टभ्रष्ट कर दी गई।

* Chamber's Indian Revolt. P. 112

सिपाही रुपया लेकर दिल्ली चले गये, शहर और गांववाले रुपया लेकर अपने अपने घर गये।

२० मईको अलीगढ़में यह गड़बड़ हुई। यह पहले ही कहा जा चुका है कि ९ नं० सिपाही सेनाके कुछ आदमी बुलन्दशहर, इटावा और मैनपुरीमें थे। अलीगढ़का समाचार इन सब स्थानों-पर पहुंचा। अपने साथियोंके कामसे इन स्थानोंके सिपाही भी उत्तेजित हो उठे। बुलन्दशहरमें अधिक गड़बड़ न हुई। सिपा-हियोंने केवल खजाना लूटकर अपना रास्ता पकड़ा। पर इटावा और मैनपुरीमें विशेष हुआ। इटावा मेरठके रास्तेपर आगरासे करीब ७३ मीलकी दूरीपर है। जब दिल्ली और मेरठका समाचार इटावा पहुंचा तब वहांके मजिस्ट्रेट ह्यूम साहब विद्रोहियोंको पकड़नेके लिये तैयार हुए। इसी कारण इटावाके सिपाही विद्रोही सिपा-हियोंको देखनेके लिये भेजे गये। १९ मईको इन सिपाहियोंने मेरठके ७ सवारोंको गिरफ्तार किया। जब ये सवार इटावाके फौजी निवासमें लाये गये, तब एक सवारने अंग्रेज़ अफसरको गोली मारी और दूसरेपर हमला करनेको उद्यत हुआ। इस समयतक सवारोंके पास तलवार और पिस्तौल थे। इटावाके सिपाहियों तथा कोतवालने इसे घायल किया। इससे और सवारोंने सिपाहियोंपर हमला किया। खासा युद्ध हुआ, कई मरे। एक सवारको भागते हुए पुलिसने गिरफ्तार किया। ये सब सवार फतेहपुरके निवासी पठान थे।

इसके कुछ दिन बाद मेरठके इसी ३ नं० रिसालाके कुछ

सवार इटावासे १० मीलपर आकर ठहरे । ये भी हथियारोंसे सज्जित थे। जिन बैलगाड़ियोंपर इनका सामान था उन्हें रोककर, इटावाके सिपाहियोंने इन्हें हथियार डालनेको कहा । हथियार खोलनेके बहानेसे उन्होंने बंदूकें निकालकर सिपाहियोंपर हमला किया। इसके बाद एक मन्दिरमें घुसकर वे अपनी रक्षा करने लगे। मन्दिर छोटा ही था पर था मजबूत । सवारोंके मन्दिरमें छिपनेकी बात सुनकर मजिस्ट्रेटने अपनी गाड़ी तैयार कराई । गाड़ीमें वे अपने सहायक सहित ६ बजेके लगभग चले । जाकर उन्होंने देखा कि सवार जहां छिपे हैं वह स्थान बड़ा मजबूत है । मामूली दर्जेके मुसलमान मन्दिरके आसपास थे। कहा जाता है कि इन्होंने मजिस्ट्रेटकी कुछ सहायता न की। जो सिपाही इटावासे बुलाये गये थे वे रास्ता भूल जानेके कारण समयपर न पहुंच सके। मजिस्ट्रेटके साथ पुलिसके हथियारबंद जवान थे। पर इन्होंने भी योग्यता न दिखाई । एक पहरेवाला दरवाजे-पर गया, पर अभागा सवारकी तलवारसे मारा गया। मजिस्ट्रेटका सहायक भी घायल हुआ । उपाय न देखकर मजिस्ट्रेट साहब वापिस इटावा आये ।

इस घटनाके दूसरे दिन अलीगढ़के सिपाही विद्रोही हुए । तीसरे दिन इटावा समाचार पहुंचा। मजिस्ट्रेटने सेनानायक-से सलाह की। इटावाके सब सिपाहियोंको अलीगढ़का समाचार मिल गया था, इसलिये उन्हें दूसरे स्थानपर भेजनेका निश्चय हुआ । मजिस्ट्रेटने आगरा सहायक सेना भेजनेको लिखा

था, पर सहायक सेनाके आनेमें देर थी। इस कारण इटावाके सब सिपाहियोंको बरपुरा नामक पुलिस चौकीपर जानेका हुक्म हुआ। पहले तो सिपाही प्रसन्नतासे चले। पर दो मील भी न गये थे कि बहुतोंके भाव बिगड़े। बहुतसे अपने अफसरोंका कहा न मानकर वापिस इटावा आ गये। कुछ सिपाही और अफसर शान्त रहे। ये लोग अंग्रेज़ स्त्रियों और बच्चोंको बरपुरा ले गये, इधर विद्रोही सिपाहियोंके वापिस आते ही नगरके सब गुण्डे उनके साथ हो गये। इन्होंने गदरका निर्दिष्ट काम बाकी न रक्खा। खजाना लूटा गया, कैदी छोड़ दिये गये, अंग्रेज़ोंके (मजिस्ट्रेटका छोड़कर) मकान जलाये गये। मजिस्ट्रेट साहब वेश बदलकर इटावासे भागे। तीन चार दिनके लिये इटावासे अंग्रेज़ी राज्य उठ गया।

महामति ह्यूम साहबने इटावाके ग़दरका बड़ा अच्छा वर्णन किया है। उन्होंने लिखा है—"मैं रातको इटावासे भागा, चारों ओर चाँदनी खिल रही थी। मैंने हिन्दुस्तानियोंके समान कपड़े पहने और सिरपर बड़ा साफा बाँधा। ऊपरसे एक चद्दर ओढ़ ली। पतलून उतार डाली। एक देशी जूता पहन लिया। गयादीन नामक एक चपरासी और एक नगरवासी मेरे साथ थे। यदि सिपाहियोंको मालूम हो जाता कि मैं ही कलक्टर हूं तो निस्सन्देह मेरे प्राण ले लिये जाते। मेरे साथी भी मारे जाते। पर चपरासी और वह नगरवासी जाते २ जोरसे बातें करते चल रहे थे, जिससे हम पहचाने न जायँ। ६ नं० सेनाके अधिकांश

सिपाही दिल्ली गये थे। इन लोगोंके हाथ अधिक रुपया न लगा था क्योंकि मैंने अपने मित्र लक्ष्मणसिंह और जोरावरसिंहकी सहायतासे रुपया पहले ही आगरा भेज दिया था।* ९ नं० सेनाके सब सिपाही विद्रोही न हुए थे। एक अहीर सूबेदारकी अधीनतामें अब भी २० सिपाही राजभक्त थे। उन्होंने भागते हुए यूरोपियनोंकी सहायता की।"

जिस समय ग्वालियरकी सेना वहाँ पहुँची उस समय सरकारके पक्ष-समर्थकोंका खयाल हो गया था कि यह सेना भी अब विद्रोही होगी। उस समय कलक्टर ह्यूम साहबके पास तीस अंग्रेज़ स्त्रियाँ और बच्चे थे। ह्यूम इनको आगरा भेजना चाहते थे। पर चारों ओर विद्रोही सिपाही घूम रहे थे। बलवाई आदमियोंका चारों ओर जोर था। गांवके बाद गांव भस्म हो रहे थे। लूट मारका खूब जोर था। इस समय राजा लक्ष्मणसिंहने अपने भाई अनूपसिंह और जोरावरसिंहकी मददसे अंग्रेज़ महिलाओं और बच्चोंको आगरा पहुँचाया। यह बात जून मासकी है। जुलाई में ह्यूम वापिस आये। शासनके लिये इन्होंने इटावाको पांच तहसीलोंमें विभक्त किया। पांचोंमें एक २ देशी अफसर प्रबन्धके लिये रहा, इनके नाम जोरावरसिंह, राजा जसवन्तसिंह (ब्राह्मण थे) चौधरी गंगाप्रसाद, लाला लायकसिंह, मथुरावासी एक वैश्य तहसीलदार। इस प्रकार इटावाका शासन ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और कायस्थोंको सौंपा गया। गदरके समयमें

* ये प्रतापनेरके चौहान वंशीय क्षत्रिय थे। लक्ष्मणसिंह अन्तमें राजा हुए।

इन्होंने अपने २ इलाकेमें शान्ति रखी। पांच महीने इन्होंने शासन किया। प्रति सप्ताह ये लोग अपनी कार्रवाई ह्यूम साहबके पास भेजते रहे। इनके शासनके विरुद्ध किसीने कोई बात नहीं कही। ये लोग दूसरे स्थानोंसे समाचार लेते थे। कानपुरके सेनापति वीडका समाचार इन्हें मिला। अंग्रेज़ी सेनाकी सहायताके लिये इन्होंने सात सौ ऊंट एकत्र किये थे। इन्हीं सवारियोंसे कानपुरकी सेना लखनऊ शीघ्र पहुँच सकी। योग्य अंग्रेज़ शासक भी इनसे अधिक योग्यताके साथ शासन नहीं करते। खुद कलक्टर ह्यूमने इनके शासनकी प्रशंसा की थी। बूढ़े वैश्य शासकने बड़ी निर्भीकताका परिचय दिया था। जब इन्हें मालूम हुआ कि झांसीके विद्रोही सिपाही इनकी तहसीलकी ओर आ रहे हैं तब इन्होंने सब रुपये दूसरे स्थानमें भेज दिये। यह बात दो तीन विश्वासी आदमियोंके सिवा और किसीको मालूम न हुई। पर वहांके कुछ गुण्डोंने विद्रोही सिपाहियोंसे कहा कि इस बूढ़े तहसीलदारने न मालूम कहाँ रुपये छिपा दिये हैं। जो वे लोग सिपाहियोंसे न कहते तो सिपाही कुछ न करते। वे यही सोचते कि और तहसीलोंकी तरह यह तहसील भी लुट चुकी है। पर गुण्डोंके कहनेसे सिपाहियोंने तहसीलदारको पकड़कर कहा कि रुपये कहाँ हैं। सिपाहियोंने उन्हें फाँसी देनेका डर दिया पर बूढ़े बनियेने कुछ भी न बताया। अन्तमें उन्हें एक तोपसे बाँध दिया गया। पर इसपर भी उन्होंने कुछ न बताया। सिपाही इन्हें तोपके साथ घसीटते

घसीटते इटावा लाये, बिचारा बूढ़ा बेहोश हो गया। इटावा-वालोंने उन्हें छोड़नेको कहा। सिपाहियोंने उन्हें छोड़ा पर वे बहुत कष्टमें थे। एक आध दिन बाद उनका शरीर छूट गया। इस प्रकार इस विश्वासी वैश्यने राजभक्ति और धनकी रक्षामें कष्ट सहकर प्राण दिये। ऐसे सच्चे सहायकोंके ही कारण भारतमें फिर अंग्रेज़ी राज्य टिका!

सितम्बर और अक्टूबरमें सिपाहियोंने आगरापर हमला करने-का इरादा किया। अधिकारियोंने इनकी शक्तिका पता लगानेके लिये दूत भेजे पर अच्छी तरह पता न लगा। किसी २ को सिपाहियोंने पकड़कर फांसी दे दी और कोई २ वैसे ही अकृतकार्य होकर वापिस लौट आये। अधिकारी चिन्तित हुए। इस समय राजा लक्ष्मणसिंह समाचार लानेको तैयार हुए। यह काम विपत्तिपूर्ण और बड़े साहसका था। आगराके २००० बलवाई आदमी सेनाके साथ थे। यदि एक भी उनमेंसे पहचान लेता तो मृत्यु अनिवार्य थी। पर लक्ष्मणसिंह तैयार हुए। वे संन्यासीका वेश बनाकर सिपाहियोंकी छावनीमें पहुंचे। दो तीन दिन रहकर सब हालत देखी और वापिस आगरा आकर अधिकारियोंसे उनकी हालत बयान की।

दीवानी विभागके कलक्टर और मजिस्ट्रेटोंकी बहादुरीका वर्णन पाठक अनेक स्थानपर पढ़ चुके हैं। पर दीवानी विभागके हिन्दुस्तानी कार्यकर्त्ताओंने भी असीम साहसका परिचय दिया था। वज़ीर अली नामक एक उच्च श्रेणीका मुसलमान पहले

देशमें वकील था। फिर ह्यूम साहबने कलक्टरीमें उसे सहायक सरिश्तेदारका पद दिया। इस विभागमें डाकुओंने कई स्थानों-पर अधिकार कर रक्खा था। एक स्थानके किलेपर ठगोंका कब्जा था। जब वज़ीर अली उसपर कब्जा करने गया तब उन्होंने हमला किया। हमलेसे वज़ीर अलीके कई आदमी मारे गये, पर इससे वह निराश न हुआ। रस्से डालकर वे किलेपर चढ़ गया। इसके पराक्रमसे गूजर किला छोड़कर भाग गये।

ह्यूम साहब जिस समय अलीगढ़में मजिस्ट्रेट थे, एक रामपुरका पठान जेलका दारोगा था। उसे सब पहलवान कहा करते थे। ह्यूम साहब जब जेलखाना देखनेके लिये जाते तब वहाँका काम देखकर प्रसन्न होते। इस प्रकार जेल दारोगा पठानसे उनकी मित्रता हुई। दिल्ली और मैनपुरीके रास्तेमें सदा डाक चोरी जाया करती थी। ह्यूम साहबने खुफिया पुलिसका अफसर बनाकर पठानको इस चोरीकी जांच करने भेजा। इसकी कोशि-ससे चोर पकड़े गये, उन्हें सजा मिली। इस कामके पुरस्कारमें पठानको मुजफ्फरनगरके एक विभागका तहसीलदार बनाया गया। जिस समय चारों ओर सिपाहियोंका विप्लव शुरू हुआ तब ह्यूम साहबने इस पठान तहसीलदारको एक पत्र लिखकर भेजा कि, इस समय सरकारके प्रति विश्वासी बने रहना; क्योंकि सरकारके अनुग्रहसे तुम्हें यह पद मिला है। उस समय डाकके आनेजानेका ठीक ठीक प्रबन्ध न था। पर एक पत्र पठानका ह्यूम साहबको मिला जिसमें लिखा था—"मैं कभी भी नमकहराम

न बनूंगा। मेरी कोशिशसे जो कुछ बन पड़ेगा मैं करूंगा, इससे आगे परमात्माकी इच्छा।" साहसी तहसीलदारने इस समय अपनी तहसीलकी रक्षा की थी। विद्रोही सिपाहियोंने दो तीन बार तहसीलपर हमला किया, तहसीलदारने उनके हमले व्यर्थ किये। इसके बाद बहुतसे सिपाहियोंने तहसीलको घेर लिया। इनमें ३ नं० रिसालाके मुसलमान सिपाही ही अधिक थे। सिपाही पठानसे परिचित थे। इसलिये वे तहसीलदारसे कहने लगे कि, अंग्रेज़ी अमलदारी समाप्त हो गई, अब उन्हें दिल्लीके बादशाहकी अधीनता स्वीकार कर लेनी चाहिये। अबतक वे सरकारकी ओरसे तहसीलदार थे, अब वे बादशाहकी ओरसे यह काम करें, या दिल्ली चलें तो वहाँ इससे भी बड़ा ओहदा मिल सकता है। तहसीलकी सम्पत्ति वे बादशाहके सिपाहियोंके अधीन करें। पर साहसी पठान इन बातोंसे विचलित न हुआ। जब किसी तरह न माना तब सिपाहियोंने तहसीलपर हमला किया। तहसीलदारने अपनी रक्षाका समुचित प्रबन्ध किया था, पर हमला करनेवाले सिपाही बहुत अधिक थे। तोपके गोलेसे तहसीलका दरवाजा टूट गया। तलवार हाथमें लिये तहसीलदार, उसके नौकर और घरवाले बाहर आये। जो सिपाही भीतर घुसनेकी चेष्टा करने लगे वे उनके सिर काटने लगे। तहसीलकी रक्षा न हुई पर वीर तहसीलदारने अपने घरवालों सहित तहसीलकी रक्षामें तलवार चलाते चलाते अपने प्राण दिये, कर्मस्थलपर उन्होंने अपने कर्त्तव्यका पालन किया। प्राण दे दिये

पर अपने कर्त्तव्यसे विचलित न हुए। अपने कर्त्तव्यपर डटा हुआ कोई अंग्रेज़ भी इससे अधिक कर्त्तव्यका पालन नहीं कर सकता। अपने स्वामीकी भक्तिमें इस प्रकार आत्मोत्सर्ग करके अपनी कर्त्तव्यपरायणताका उदाहरण नहीं छोड़ सकता।

जब इस तहसीलदारके मरने और तहसीलके नाशका समाचार मुजफ्फरनगर पहुँचा तब कलक्टर साहब ऐसे डरे कि उसी समय गाड़ीमें बैठकर वे मेरठकी ओर भागे। कलक्टरके नौकरोंने यह बात सरिश्तेदार और तहसीलदारसे कही। तहसीलदारने सोचा कि कलक्टरके भागनेकी खबरसे यहाँ भी विद्रोह हो जायगा, फिर सब घर लूटे जायँगे, आग लगेगी। इसलिये वह घोड़ेपर बैठकर भागते भागते कलक्टरके पीछे पहुँचे और उन्हें समझा बुझाकर वापिस ले आये। इनकी रक्षाका प्रबन्ध करके सरिश्तेदार और तहसीलदारने उनके नामसे शहरमें घोषणा की और तमाम घटना लिखकर सहारनपुरके कलक्टरके पास भेजी कि वे दूसरा आदमी भेजें। जब सहारनपुरसे दूसरे अंग्रेज़ने आकर कलक्टरका भार ग्रहण किया तब इस कायर अंग्रेज़को मेरठ पहुँचाया गया। ये कलक्टर साहब मेरठ आकर सीधे इंग्लैंडके लिये रवाना हो गये। इन भारतवासियोंने अंग्रेज़ोंके लिये अपने प्राण दिये थे और इसकेसे अंग्रेज़ोंने कायरताकी हद की थी।

इन सब घटनाओंका उल्लेख करके ह्यूम साहबने साफ श[illegible] में कहा था कि मनुष्योचित गुणोंमें भारतवासी और [illegible]

बराबर हैं। काम पड़नेपर दोनों जातियाँ अपनी दक्षता और योग्यताका परिचय देती हैं। दोनों जातियोंमें गुणी और वीर हैं, और दोनों समयपर अपनी पापप्रवृत्तिका परिचय देती हैं। यदि निष्पक्ष विचार किया जाय तो दोनोंमें गुण और दोष समान हैं। यदि योग्य और शिक्षित भारतवासीके मुक़ाबिलेपर अशिक्षित और साधारण अंग्रेज़को रखा जाय तो वह आदमीके मुकाबिले-पर बन्दर मालूम होगा। साथ ही यदि प्रवीण और अनुभवी भारत प्रवासी अंग्रेज़के मुकाबिलेपर यदि भारतवासियोंको रखा जाय तो अंग्रेज़ देवता मालूम होगा। पर यदि दोनों जातियोंके योग्य ही योग्य पुरुष छांटकर मुकाबिला किया जाय तो दोनों श्रेष्ठ मालूम होंगे। भारतमें आनेवाले अंग्रेज़ सदा भारतवासियोंके अवगुण ही देखते हैं, इसी कारण उनकी यह भ्रान्त धारणा हो जाती है कि भारतवासी निन्दित चरित्रके और अंग्रेज़ उच्च होते हैं।*

इसी भ्रान्त धारणाके कारण गदरके समय अंग्रेज़ोंने भारत-वासियोंको कुत्ते बिल्लीके समान निरर्थक जीव समझा था, इन्हीं जीवोंका ख़ून बहानेके लिये उनकी उत्तेजना थी। यदि वे महामति ह्यूमके समान भारतवासियोंके हृदय देखनेवाले होते तो उन्हें दिखाई देता कि, विपत्तिके अवसरपर उनके बरा-बरमें भारतीय मनुष्यरूपमें देवता बनकर खड़े हैं। उन्होंने चाहे

* A. O. Hume's A good word for the Indian, quoted Statesman, June 28, 1891.

न देखा हो, पर भारतके इन मनुष्यरूपी देवताओंके साहस और अपूर्व त्यागसे भारतपर फिर अंग्रेज़ी राज्य हुआ।

२४ मईकी रातको ग्वालियरकी सहायक सेना बरपुरा पहुँची। इस सेनाके आ जानेसे वहांके यूरोपियन निश्चिन्त हुए। सवेरे इसी सेनाने इटावा जाकर वहाँ फिरसे कब्जा किया। पर बिना खून बहाये यह काम न हुआ। दीवानी अदालतने जिन जमींदारोंको जमीनके स्वत्वसे वंचित किया था उन्होंने इस अवसरपर फिर कब्जा किया। एक गांवके एक जमींदारने गवर्मेंटके कर्मचारीको हटा कर फिर गांवपर कब्जा कर लिया। पर सेनाने इसके छोटे किलेको बर्बाद कर दिया, इसके आदमी मारे गये। इस प्रकारकी नरहत्याके बाद इटावापर फिर अंग्रेज़ी शासन हुआ।

यह ऊपर आचुका है कि अलीगढ़की सेनाका दूसरा हिस्सा मैनपुरीमें था। मैनपुरी आगरासे ७१ मील पूर्वकी ओर है। २२ मईकी सन्ध्याको अलीगढ़का समाचार मैनपुरी पहुँचा। समाचार पहुँचते ही मजिस्ट्रेटने कमिश्नरसे सलाह की। सलाहमें निश्चय हुआ कि अंग्रेज़ स्त्रियों और बच्चोंको आगरा भेज दिया जाय और सिपाही सेना भावगांव भेजी जाय। गोरी स्त्रियाँ और बच्चे सहायक मजिस्ट्रेटकी देखरेखमें आगराके लिये रवाना कर दिये गये। कुछ दूर जाकर सहायक मजिस्ट्रेटने इनकी रक्षाका भार एक विश्वासी मुसलमानको दिया। मुसलमानने इन्हें सही सलामत आगरा पहुँचा दिया। सहायक मजिस्ट्रेट वापिस मैनपुरी आ गये।

लेफ्टिनेंट क्राफोर्ड और डी कांटेज मैनपुरीकी सेनाके नायक थे। इन्होंने सिपाहियोंको भावगांवकी ओर चलनेको कहा। इनके अनुरोधसे सिपाही चले। पर अपने परेटके मैदानमें पहुँचकर इन्होंने जानेसे इनकार किया और अफसरोंसे कहा कि तुम भाग जाओ। सिपाहियोंमें गड़बड़ हुई। इस समय डी कांटेज घोड़ेसे उतरे। ले० क्राफोर्डने उन्हें न देखकर समझा कि वे मारे गये। वे झट मजिस्ट्रेटको समाचार देनेके लिये रवाना हुए। क्राफोर्डने पहुँचकर देखा कि मजिस्ट्रेट और कमिश्नर एक ही स्थानपर हैं। सेनानायकने सेनाका हाल कहकर अपने साथीका जो हाल सोचा था वह भी कह दिया और फिर झटपट आगरा जाना चाहा। कमिश्नरने भी ऐसी दशामें मैनपुरी छोड़ना ही उचित समझा। वे एक पादरीके साथ गाड़ीमें बैठकर आगराकी ओर रवाना हुए। पर मजिस्ट्रेटने नगर त्याग न किया। इस विपत्तिमें भी वे अपना कर्त्तव्य पूरा करनेके लिये मैनपुरीमें रहे। उनकी यह हिम्मत व्यर्थ न गई। उनके छोटे भाई सहायक थे। जब बड़ा भाई रहा तब छोटेको भी रहना पड़ा। और भी तीन अंग्रेज़ इन दोनों भाइयोंके बराबर खड़े रहे। इनके साथ एक साहसी कर्मवीर और आकर मिला।

मैनपुरीराजके आत्मीय भवानीसिंह कुछ सवार और पैदल लेकर आ गये। इनके आ जानेसे मजिस्ट्रेटका बल और भी बढ़ गया। इधर मजिस्ट्रेटको दूसरे सेनानायकका कुछ समाचार न मिला, इस कारण वे अधिक चिन्तित हुए। जब वह

घोड़ेसे उतर पड़ा तब सिपाहियोंने उसे घेर लिया था। जब सिपाही शहरकी ओर दौड़े तब सेनानायक उन्हें किसी तरह भी न रोक सका। पागल होकर सिपाहियोंने तोपखाना लूट लिया और किसीका कहा न सुनकर चारों ओर गोलियां छोड़ने लगे। सेनानायकने पहले उन्हें रोबसे समझाया, अन्तमें नम्रतासे कहा। सेनानायकने कहा कि तुम कुछ अंग्रेज़ोंकी जान ले सकते हो पर उन्हें हरा नहीं सकते। पर एक न सुनकर वे जेल-खानेपर पहुंचे। सेनानायक उनके साथ था। तीन घंटेतक उन विद्रोही सिपाहियोंके साथ रहकर अपनी जानकी परवा न करके सेनानायकने उन्हें समझाया। सेनानायकके साहसकी बात सुनकर मजिस्ट्रेटने खुद उनकी सहायताके लिये जाना चाहा था। पर सेनानायकने उन्हें आनेसे मना कर दिया; क्योंकि सिपाही उनके प्राण ले सकते थे। सेनानायकके प्राण विपत्तिमें थे। उन्हें साथ लिये हुए सिपाही खजानेपर गये। खजानेके रक्षकोंने विद्रोहियोंपर गोलियां चलानी चाहीं। पर सेनानायकने रोका। इस धैर्यका फल यह हुआ कि विद्रोहियोंने भी हथियार न चलाये। पर वे रुपयेके लिये जरूर छटपटाने लगे। ऐसे समयमें भी सेनानायकने धैर्य और साहससे काम लिया। वे सबको समझाते हुए खजानेको बचाने लगे। पर उनके बार बार कहनेपर भी सिपाही न माने। इससे वे हतोत्साह हो रहे थे। इसी समय राव भवानीसिंह आ गये। उन्होंने भी सिपाहियोंको शान्त रहनेको कहा। सिपाहियोंपर उनका

असर हुआ। सबने कहा कि जो राव भवानीसिंह हमारे साथ रहें तो हम वापिस जानेको तैयार हैं। भवानीसिंह उनकी बातपर राजी हुए। उनके साथ सिपाही दूसरी ओर चले गये। खजाना बच गया। सिपाही मैनपुरीसे रवाना हुए। युवक सेनानायक अक्षत शरीर रहा। राव भवानीसिंहके साहस और योग्यतासे मैनपुरीमें शान्ति रही। इस कारण गवर्नर जनरलने उनको पत्र लिखकर धन्यवाद दिया था।

इस घटनाका समाचार आगरा पहुंचा। वहांके यूरोपियन और ईसाई बड़े चिन्तित हुए। जिन स्थानोंको वे आत्मरक्षाके योग्य समझते थे उनकी ओर दौड़े। इस समय एक अंग्रेज़ने अपने भाईको एक पत्र लिखा था, उससे आगराकी दशाका ज्ञान अच्छी तरह हो सकता है। उसमें इस व्याकुलताका वर्णन इस प्रकार है--"भय इतना अधिक छा गया है कि पहले मैंने कभी नहीं देखा। घरके सामान, बिछौने, फरनीचर, मुर्गियोंसे भरे बजड़े, इक्के गाड़ियोंमें लदी गोरी स्त्रियां तथा बच्चे किलेकी ओर भागे चले जा रहे हैं। अलीगढ़के यूरोपियन भी भाग आये। सेनापति आउट्रामकी स्त्री भी कुछ रास्ता घोड़ेपर तथा कुछ पैदल चलकर आ गई। दो एक सिविलियोंने बहुत ही लज्जाजनक काम किया। इनमेंसे एकने अपने दफ्तरमें पहुंचकर गोरे कर्मचारियोंसे कहा कि जैसे तुम्हें अपनी जान बचानी मुनासिब मालूम होती हो वैसे ही बचाओ।"*

* Kaye's Sepoy War. Vol III. P. 227

एक और अंग्रेजने आगराके त्रासका वर्णन इस प्रकार किया है—"हरएक अंग्रेजके हाथमें तलवार या पिस्तौल थी, रास्ता गाड़ियोंसे भर गया था। लोग पुकार कर कह रहे थे कि अलीगढ़के विद्रोही आ रहे हैं। बदमाश मूँछोंपर ताव दे देकर अपने मौकेकी तलाशमें थे। मिशन कालिजके बाहर इसके कारण लोगोंमें बड़ी बेचैनी थी। भीतर मिशनरी शान्तिसे लड़कोंको शिक्षा दे रहे थे। हमारे वेतनभोगी बहुतसे हिन्दुस्तानी कर्मचारी विद्रोहियोंसे मिल गये थे पर मिशन कालिजके विद्यार्थी शान्तिसे अध्यापकका उपदेश सुन रहे थे। जब और सब गदरकी बातोंसे अस्थिर थे तब विद्यार्थियोंको अपने शिक्षकोंपर विश्वास था।"

ऐसे त्रास और भयसे पश्चिमोत्तर प्रदेशकी राजधानी आगराकी रक्षा करना आवश्यक था। ले० गवर्नर इससे अनभिज्ञ न थे। पहले ही उन्होंने चारों ओर शान्तिरक्षक तैनात किये थे। अब दूसरी बातोंका भी प्रबन्ध होने लगा। किलेकी रक्षाके लिये गोरी सेना पहले ही वहां चली गई थी। छः महीनेतककी खुराक इकट्ठी कर ली गई। अधिकारियोंको डर था कि जो सिपाही लड़ाईपर आमादा हुए तो आसपासके आदमी उनके साथ हो जायंगे। यहां भी गदरके अनुरूप सब काम—खजानेका लूटना जेल तोड़ना आदि—हो सकते हैं। यूरोपियनोंकी कोठियां एक दूसरेसे पृथक् थीं। इन कोठियोंकी रक्षा नहीं हो सकती थी। इधर मिशनरियोंके स्कूल, ईसाइयोंकी बस्ती और

विवाहित सिविलियनोंके मकानोंपर अन्यान्य गोरी स्त्रियां थीं। इनकी रक्षाका उपाय सोचना अधिकारियोंकी खास चिन्ताका विषय था। ले० गवर्नरने बाहरी हमलेसे शहरको बचानेके लिये योग्य कर्मचारी नियुक्त किया।

इस अफसरने शीघ्र आगराकी रक्षाकी कार्यप्रणाली बनाई। शहरमें आत्मरक्षाके स्थान नियत किये गये और बाहर घाटियां बनाई गईं। इससे बाहरी सेनाके आनेका समाचार पहलेहीसे मिल सकता था। समाचार मिलते ही नगरमें आत्मरक्षाकी तैयारी शुरू हो जाती। ले० गवर्नरकी कोठी, डाकखाना, आगरा बंक, मेडिकल कालिज और कंदहारी बागीचा आदि स्थान यूरोपियनोंके रक्षास्थान नियत हुए। ये सब स्थान ताजसे लगाकर कचहरीतक हैं। इसी कारण इनकी रक्षाका प्रबन्ध सोचा गया। पर यह सब कार्यप्रणाली काममें न लाई गई। विपत्तिके समय सब अपनी अपनी राय दिया करते हैं। उस समय आगराके यूरोपियन भी नाना प्रकारके उपाय सोच रहे थे। इसलिये जिस अफसरको यह काम सौंपा गया था उसकी राय आधी मानी गई और आधी नहीं। इधर आगराके कलक्टरने पुलिसको सैनिक बना दिया था। एक हिस्सा पैदल और दूसरा सवारोंका बना। इस प्रकार कामके मौकेपर पुलिस भी यूरोपियनोंकी रक्षाका काम कर सकती थी।

जिस समय यूरोपियन लोग डरकर अपनी रक्षाके तरह तरहके उपाय सोच रहे थे उस समय ले० गवर्नर एक और

उपाय सोच रहे थे। उस समय एक बूढ़े फौजी अफसरने उन्हें लिखा कि मैं ३६ सालसे भारतीय सेनामें काम कर रहा हूं। इनकी प्रकृति और आचार व्यवहारसे अच्छी तरह परिचित हूं। मेरा विश्वास है कि सिपाही केवल डरके कारण विद्रोही हो रहे हैं। यदि आप इस विषयकी घोषणा कर दें कि सिपाहियोंके पिछले अपराध माफ कर दिये जायंगे, एक सभा सिपाहियोंकी शिकायत सुनेगी, इस सभामें अंग्रेज़ और भारतवासी दोनों अफसर होंगे तो यह घोषणा दस हजार गोरे सिपाहियोंका काम देगी। पर यह आपके नामसे होनी चाहिये; क्योंकि बिना आपके किसीको विश्वास नहीं होगा। सेनापति कालिनद्रपकी यह बात गवर्नरको पसन्द आई। उनका विश्वास था कि बूढ़े सेनापतिने यथार्थ बात कही है। सिपाहियोंकी धर्म और जाति-नाशकी आशंका ही अधिक प्रबल थी। जो धर्मनाशकी आशंकासे भेड़ोंकी तरह दूसरोंकी देखादेखी विद्रोही बन रहे हैं, वे इससे बचेंगे इसलिये ले० गवर्नरने २५ मईको यह घोषणा निकाली :—

"जो सिपाही पिछले विद्रोहमें शामिल हुए थे, वे यदि अपने घर जाना चाहें तो सरकारके किसी भी दीवानी या फौजी मुकामपर हथियार दे देवें। उन्हें उनके घर जाने दिया जायगा।"

"बहुतसे विश्वासी सिपाही भी विद्रोही बननेके लिये मजबूर हुए हैं। उनके जीमें यह बात जम गई है कि सर-

कार उनकी जाति नाश करना चाहती है। निर्मूल होनेपर भी वे इस बातपर विश्वास करते हैं। अभी हालमें गवर्नर जनरलने जो घोषणापत्र निकाला है, उससे उनका यह सन्देह हटेगा। दुष्ट और स्वार्थी आदमियोंने सिपाहियोंको सरकारके विरुद्ध भड़काया है, ये दुष्ट सजा भोगेंगे। इस घोषणापत्रके बाद भी जो लोग सरकारके विरुद्ध हथियार उठावेंगे उनके साथ दुश्मनके समान बर्ताव किया जायगा।"

पर भारत सरकारने इस घोषणापत्रका अनुमोदन न किया। लार्ड कैनिङ्गको साफ मालूम हुआ कि इस घोषणाके अनुसार बहुतसे सजा भोगने योग्य आदमी भी छूट जायंगे। इसलिये लार्ड कैनिङ्गने इस भावका एक और घोषणापत्र तैयार किया—"किसी रेजीमेंटके किसी सिपाहीने यदि बड़ा अपराध न किया हो तो वह अपने स्थानको छोड़नेपर भी माफ किया जायगा। यदि वह सिपाही दीवानी या फौजी अफसरको अपने हथियार दे दे तो उसे अपने घर जानेकी आज्ञा मिल जायगी। पर जिन सिपाहियोंने अपने अफसरों या और दूसरोंको मारा है या और किसी तरहका नीच काम किया है वे इस तरह न छोड़े जायंगे। इनके विषयमें सरकार किसी प्रकारका नियम नहीं बनाती।"

मूलतः गवर्नर जनरल और ले० गवर्नरके पत्रोंमें कोई अन्तर नहीं है। ले० गवर्नरने विशेष २ आदमियोंको सजाके योग्य समझा था और गवर्नर जनरलकी दृष्टिमें सब सेना

सजाके योग्य थी। सरकारका उद्देश्य था कि जिन्होंने किसी भी प्रकारकी उद्दण्डता की उन्हें सजा अवश्य मिले। इसी कारण ले० गवर्नरके घोषणापत्रको गवर्नर जनरलने बदल दिया। पर यूरोपियन समाजमें इस घोषणापत्रके कारण कालविन साहबकी बड़ी निन्दा हुई। वे यूरोपियनोंका समुचित बदला चाहते थे। कालविन साहब वैसे ही अस्वस्थ थे। फिर नित्य नई विपत्तिका समाचार उनके सामने आता था। वे जो उपाय सोचते उसके साथ मन्त्रियोंकी सम्मतियां न मिलती थीं। इस प्रकार चारों ओरसे वाधा विघ्न और विपत्तियोंसे वे घिर गये थे।

धीरे २ तीन सप्ताह बीत गये। पश्चिमोत्तर प्रदेशकी राजधानीमें किसी प्रकारकी अशान्ति न हुई। सिपाही अपने अफसरोंकी आज्ञा पहलेके समान पालन करने लगे। अफसर भी प्रसन्नतासे समय बिताने लगे। दीवानी विभागके कर्मचारी भी शान्तिसे अपना काम करने लगे। आगरा निरुद्वेग और निश्चिन्त रहा।

पर इस समयकी सब बातें जादूके खेलके समान थीं। जो स्थान इस समय शान्त है, वह देखते २ अशान्तिकी आगसे जल उठता था। मई मास समाप्त भी न हो पाया था कि फिर गड़बड़ हुई। आगरासे ३५ मील मथुरा है। मथुरामें आगराकी ४४ नं० सेनाके कुछ सिपाही थे। इसी सेनाके कुछ और सिपाहियोंको मथुरा भेजनेका प्रबन्ध हुआ। इनके साथ ६७ नं०

सेनाके भी आदमी भेजे गये। मथुराके सिपाहियोंकी बदली और वहांके खजानेकी रक्षाके लिये ऐसा करनेकी आवश्यकता पड़ी थी। इस समय मथुराके खजानेमें ६ लाखसे कुछ अधिक रुपया था। अफसरोंने मथुरा और अलीगढ़के खजानेको आगरा ले जानेके लिये ले० गवर्नरको लिखा था। पर उन्हें होशियारी भी रखनी पड़ती थी। अकारण सिपाहियोंके चित्तमें सन्देह न हो—इसी खयालसे वे खजाना हटानेसे रुके रहे। एकाएक खजानेका रुपया हटानेसे सर्वसाधारणको भी शक हो सकता था। पर इससे पहलेसे ही मथुराके सिपाहियोंके चित्त बदल रहे थे। वहांकी प्रजा भी उत्तेजित हो रही थी। मथुरामें अफवाह फैली कि दिल्लीके सिपाही शीघ्र ही आगरा लूटने मथुरा होकर जायंगे। इसी कारण मथुराके अंग्रेज़ोंने अपने स्त्री-बच्चोंको आगरा भेज दिया था। मई मासके मध्य भागमें कप्तान निक्सन भरतपुरकी सेना लेकर मथुरा पहुंचे। इससे अंग्रेज़ सन्तुष्ट हुए। सिपाही भी कुछ डरे।

पर इस समय भी अधिकारी मथुराका खजाना न ले गये। ३० मईको जब यह सेना मथुरासे आगराके लिये रवाना हुई तब वे सहजमें खजाना लूट सकते थे। इस समय मथुराके अंग्रेज़ शहरकी रक्षाका प्रबन्ध करके खजाना हटानेकी कोशिशमें लगे। सारा रुपया गाड़ियोंमें रखा गया। लेफ्टिनेण्ट बोल्टनने सवार होकर गाड़ियोंको आगे बढ़ानेका हुक्म दिया। एक हिन्दुस्तान अफसरने आगे बढ़कर पूछा—"कहां जाना होगा।" बोल्टनने

कहा—"आगरा।" अफसरने कहा—"नहीं, दिल्ली जायगा।" अफसरकी बात सुनकर बोल्टनने क्रोधसे कहा—"तुम नमक-हराम है।" इस बातके कहते ही बोल्टनको गोली लगी, वे घोड़ेसे गिरकर मर गये। एक सिपाही पीछे खड़ा था, यह गोली उसने मारी थी।

इस समयसे मथुराके सिपाही प्रगटमें सरकारके विरोधी हो गये। दीवानी विभागके अंग्रेजोंने और कोई रास्ता न देखकर जान बचानेके लिये प्रस्थान किया। विद्रोही सिपाहियोंने रुपयोंकी थैलियां उठा लीं। मथुराके बड़े बड़े रईस लोग भी इस समय भाग गये। रुपया लेनेके बाद सिपाहियोंने दफ्तरों और कचहरियोंमें आग लगाई। फिर वे जेलखानेपर पहुंचे। जेलखानेके रक्षक सिपाहियोंने दरवाजे खोल दिये। बिना बाधा तमाम कैदी निकल गये। इस तरह थैलियां लेकर तमाम सिपाही दिल्लीकी ओर रवाना हुए। जाते हुए उन्होंने निम्न श्रेणीके खड़े हुए आदमियोंकी ओर पैसे फेंके।

इस समय भरतपुरके सैनिक हुडुल नामक स्थानपर थे। अधिकारियोंको इनपर कोई सन्देह नहीं था, क्योंकि भरतपुर राज्यने मित्रताके नातेसे सरकारकी मददके लिये इन्हें भेजा था। कमिश्नर हरवी साहब इनके साथ थे। ३१ मईको उन्होंने सुना कि मथुराके सिपाही विद्रोही होकर दिल्ली जा रहे हैं। समाचार मिलते ही सिपाहियोंको रोकनेके लिये उन्होंने भरतपुरकी सेना-की सब तोपें रास्तेपर लगा दीं। पर उनकी आशा फलवती न

हुई। कारण, भरतपुरके तमाम गोलंदाज वे ही पुरबिये सिपाही थे। पहले वे अंग्रेज़ी सेनामें पैदलका काम करते थे। अपने ही भाइयोंके खिलाफ कार्रवाई करनेको इस समय वे तैयार न हुए। उनके अफसरोंने अंग्रेज़ अधिकारीसे कहा कि इस समय ये लोग विश्वासके योग्य नहीं हैं। अंग्रेज़ोंने देखा कि भरतपुरकी सेना भी हमारे विरुद्ध है। पर जानेसे पहले वे भरतपुरके सिपाहियोंको अच्छी तरह जांचने लगे। सरकारकी ओरसे उन्हें बड़े २ इनामका लालच दिया गया। साफ तौरसे कहा गया कि भरतपुर राज्यने तुम्हें सरकारकी मददके लिये भेजा है, जो वे आज्ञा न मानेंगे तो भरतपुरके राजाकी बदनामी होगी, उनके रक्तमें महाराजका नमक है, नमकहराम बननेसे उनकी बुरी हालत की जायगी। भरतपुरके गोलंदाजोंने अपनी तोपोंके मुंह अंग्रेज़ोंकी ओर कर दिये। अब उपाय न था। ३० अंग्रेज़ अफसरोंने उसी समय वहांसे प्रस्थान किया। अफसरोंके जाते ही भरतपुरकी सेना भी विद्रोही हो गई। उन्होंने अंग्रेज़ोंके तम्बू और बंगले जला दिये। इस प्रकार भरतपुरके सैनिक विद्रोही हो गये।

भरतपुरके सिपाही पहले आगराकी सेनामें थे। अधिकारी इसलिये और भी अधिक चिन्तित हुए कि इनके विद्रोहके समाचार सुनकर कहीं आगराके सिपाही गदर न कर बैठें। रातको ऊंटोंकी डाकसे भरतपुरके सिपाहियोंके विद्रोही होनेका समाचार आगराके मजिस्ट्रेटको मिला। लेफ्टिनेंट गवर्नर इस समय मजिस्ट्रेटके घरपर ही सो रहे थे। उन्हें जगाकर मजिस्ट्रेटने

भरतपुरके सिपाहियोंका समाचार सुनाया, साथ ही यह भी कहा कि सवेरे ही आगराके सिपाहियोंके हथियार ले लिये जायं। कालविन साहब इससे जरा हिले। पर अब चिन्ताका समय न था। शीघ्र ही आज्ञा प्रचारित हुई। ३१ मईको सवेरेही ३ नं० गोरी सेना परेटके मैदानमें एकत्र हुई। गोलंदाज सेनाने तोपें भरकर लगा दीं। सिपाही सेनाने जब अपने सामने भरी तोपें और बंदूकें देखीं तब उन्होंने कुछ आपत्ति न की। जब ब्रिगेडियर घोड़ेपर बैठकर मैदानमें पहुंचे तब सिपाहियोंने हथियार रख दिये। कोई कोई वहांसे अपने घर गया और कोई कोई दिल्लीकी ओर चला। इस प्रकार आगराकी दो सिपाही फौजोंसे हथियार लिये गये।

दूसरा अध्याय

पश्चिमोत्तर प्रदेशकी दशा—मेरठ और रुहेलखंड—मुजफ्फर-नगर और सहारनपुर—मुरादाबाद—बरेली--शाहजहांपुर--बदायूँ।

मई मास बीता। जून मासकी प्रचंड गर्मीके साथ २ पश्चिमोत्तर देशवासियोंकी प्रकृति भी भयानक हो चली। जिन सिपाहियोंके हथियार ले लिये गये थे, उनमेंसे बहुतसे दिल्ली न जाकर अपने अपने गांव चले थे। पर वे तरह २ की भ्रांत बातों और अफवाहोंको अपने साथ ले गये थे, अपने गांव और आसपासके गांवोंमें उन्होंने उनका प्रचार किया। उनकी धर्मनाशको आशंका, अंग्रेज़ोंके राज्यकी समाप्ति आदि अनेक तरहकी बातोंसे गांवोंके जनसाधारण उत्तेजित हुए और दुष्ट लोगोंका साहस बढ़ा।

अधिकारी इन उद्धत लोगोंकी अराजकतासे परिचित थे। मई मासके अन्तमें ले० गवर्नरने गवनर जनरलको लिखा था—"तमाम देहात अनियमित है। बदमाश लोग बलवेकी चिन्तामें हैं। लोगोंका विश्वास है कि हमारा राज्य अधिक दिन स्थायी न होगा। इसी विश्वासके कारण वे हमेशा काम छोड़कर दूसरोंका धन लूटते और अपने आपको धनी बनाते हैं। मेरठके उत्तरके देहातपर तो दुष्ट लोगोंका कब्जा हो गया है। इस प्रान्तमें बहुतसे

साधारण आदमी हमारे पक्षके हैं, पर छोटे मनुष्योंके कारण वहां शान्ति नहीं होती। अलीगढ़ और इटावा अनेक प्रकारके अत्याचारोंसे अनियमित है। इन स्थानोंकी—३०—४० मीलतककी—प्रजा सतायी गई है। जिनके कल्याणके लिये हमने परिश्रम किया, जिनके लिये हमने सदैव चिन्ता की, उनकी यह शोचनीय दशा दुःख देती है। अबसे तीन महीने पहले जिन स्थानोंकी उन्नतिका मुझे गर्व था, उन सबकी यह दशा हुई।" कालविन साहबकी बात आगेके वर्णनसे और अधिक स्पष्ट होगी।

पश्चिमोत्तर प्रदेशके जो स्थान दिल्लीके निकट हैं उन सबमें उत्तेजना अधिक देखी गई। तमाम जिलोंमें खजाने और जेलखानोंकी रक्षाके लिये सिपाही सेना थी। इस समय हर स्थानसे लगानका रुपया वसूल हुआ था, मई माससे पहले कोई अंग्रेज़ यह न जानता था कि खजानेके संदूक रुपयोंसे भरे थे। यह रुपया ही अनर्थका मूल होगा। वे इन खजानोंको भी रक्षित समझते थे। पर मई मास बीतनेके पहले ही उनकी यह धारणा निर्मूल सिद्ध हुई। जब सिपाहियोंका विश्वास हुआ कि सरकारका राज्य समाप्त हो गया तब उन्हीं सिपाहियोंने खजानेके ताले तोड़ डाले। उत्तेजित लोग प्रलय मचाने लगे। मुजफ्फरनगर, सहारनपुर और मुरादाबादमें इसी प्रकारका भयंकर विप्लव हुआ।

मुजफ्फरनगर मेरठके उत्तरमें है। मेरठमें जो २० नं० सिपाहीसेना विद्रोही बनी थी उसीके थोड़ेसे सिपाही मुजफ्फरनगरमें थे। मेरठके समाचारसे ये लोग शान्त न रहेंगे. यह

अधिकारियोंका पहले हीसे खयाल था। पर समाचार मिलते ही इन्होंने उद्दंडता न की। वे तीन दिनतक शान्त रहे। पर यहांके मजिस्ट्रेट अपने कर्त्तव्यका पालन न कर सके। मेरठका समाचार सुनते ही वे सब अंग्रेजों सहित एक स्थानमें छिप रहे। कचहरी दफ्तर आदि बंन्द हो गये। खजानेके रक्षकोंको उन्होंने अपना शरीररक्षक बनाया। बरफोर्ड साहबने इससे अपने आपको रक्षित समझा। पर इधर शान्तिके स्थानपर अशान्तिका उदय हुआ। जब उन्होंने अंग्रेज़ी दफ्तर और कचहरी बंद तथा मजिस्ट्रेट और अंग्रेज़ोंको छिपा देखा तब विश्वास हो गया कि अंग्रेज़ी राज्य समाप्त हो गया। इसी विश्वासके कारण वे अपने अभीष्ट साधनके लिये अग्रसर हुए। सिपाही शान्त थे पर हथियारबन्द उद्धत लोग प्रगटमें सरकारके खिलाफ हो गये। इधर मजिस्ट्रेट साहब शहरके किनारेवाले जंगलके पास रक्षकोंसे घिरे हुए भी घबरा रहे थे। अपने आपको बचानेके लिये उन्होंने जेलखानेके पहरेवालोंको भी बुला लिया। जेलखाना वैसा ही पड़ा रहा। कैदी पहरेवालोंके न होनेसे निकल भागे। जब शान्तिरक्षक कलक्टर साहब इस तरह अपने प्राणोंकी रक्षा कर रहे थे, तब कचहरी और दफ्तर जलने लगे। एक ओरसे दूसरी ओरतक यह समाचार प्रचारित हुआ कि अंग्रेज़ी राज्य समाप्त हो गया, अंग्रेज़ भाग गये। अब जिसमें बल हो वह जो कुछ चाहे सो कर सकता है। उत्तेजित आदमी सबके मालिक बन बैठे। १४ मईको खजानेके दूसरे स्थानपर ले जानेका प्रस्ताव हुआ। पर सिपाही

तैयार न हुए। उन्होंने खुद ही रुपयोंके बक्स तोड़ डाले और ८५ हज़ार रुपये लेकर लंबे हुए। इस लूटमें मजिस्ट्रेटके नौकर भी थे। हर एक अस्तव्यस्त और कर्त्तव्यमूढ़ बन गया।

सहारनपुरके लोगोंका भी यही विश्वास हो गया था पर जो जो बातें मुजफ्फरनगरमें हुईं वे सहारनपुरमें न हुईं। यहांका मजिस्ट्रेट मुजफ्फरनगरके मजिस्ट्रेटके समान न था। बरफोर्ड साहब मेरठका समाचार सुनते ही शहरसे बाहर जा छिपे थे पर सहारनपुरके मजिस्ट्रेट स्पेंकी साहब समाचार सुनते ही योग्य स्थानोंकी रक्षाके लिये तैयार हुए थे।

सहारनपुर मुजफ्फरनगरसे उत्तर और मेरठसे ७०-८० मील पर है। गंगा और यमुनासे इसकी जमीन सिंचती है। उस समय सहारनपुरकी आबादी ३०-४० हजारकी थी। बस्ती अधिकतर मुसलमानोंकी थी। इसके उत्तर ओर एक छोटासा किला था। जब अंग्रेजी राज्य आगे बढ़ा तब इस किलेको जेल खाना बना दिया गया। जब मेरठमें गदर हुआ उस समय सहारनपुरमें छः सात अंग्रेज़ थे। मुरादाबादकी २९ नं० सेनाके पैदल ७०-८० सिपाही खजानेकी रक्षा करते थे। करीब १०० सिपाही जेलखानेपर थे। इसके अलावा सर्वसाधारणकी शान्तिके लिये पुलिस थी।

मुजफ्फरनगरकी तरह सहारनपुरमें भी सर्वसाधारणकी उत्तेजना अधिक बढ़ गई थी। खजाने और जेलके रक्षक सिपाही शान्तिसे अपना काम कर रहे थे। उधार लेनेवाले अपने महाजनों-

को अंगूठा दिखाना चाहते थे। पर प्रजामें उत्तेजना थी। बलवान निर्बलोंपर अत्याचार कर रहे थे। लिखनेका अभिप्राय यह कि सब प्रकारके नियम उठले गये थे। इनका विश्वास था कि अंग्रेज़ी राज्यका समय पूरा हो गया इसलिये अब साहब लोगोंकी शक्ति भी नष्ट हो गई। जहाँ कोई गोरी चमड़ीवाला दिखाई दे वहीं उस-पर हमला करनेसे अपना काम बनेगा। इसी कारण प्रजाके दुष्ट लोगोंने अंग्रेज़ोंके खिलाफ हथियार उठानेमें कसर नहीं रक्खी। सहायक मजिस्ट्रेट रावर्टसन साहबने लिखा था कि सिपाहियों-का विरोध सहनीय है, पर यदि गांव विरोधी बने तो बड़ी कठिन समस्या होगी। २० मईसे दो एक दिन पहले मालूम हुआ था कि दो बड़े गांववाले उनपर हमला करेंगे। सहारनपुरके निवासियोंके कामोंसे भी यही मालूम होता था। दूकानदारोंने अपनी अपनी दूकानें बंद करके हड़ताल कर दी थी और गुप्तरूपसे धन और गहने आदि जमीनमें गाड़ दिये थे। तमाम रास्ते सूने पड़े थे। लोग अपने धन प्राणकी रक्षाके लिये व्याकुल थे, तमाम नियम और शान्तिरक्षाकी व्यवस्था उठ गई थी पर इस समय सिपाहियोंमें किसी प्रकारका परिवर्त्तन न था। वे जेल और खजानेकी रक्षा पहलेके समान कर रहे थे।

ऐसे अशान्तिके समय वहाँके अधिकारियोंने अपनी कर्त्तव्य-निष्ठाका अच्छा परिचय दिया था। १४ मईको मेरठका समाचार मिला। इसके दूसरे दिन उन्हें दिल्लीका हाल मालूम हुआ। समाचार मिलते ही मजिस्ट्रेट स्पेंकी साहब अपने सहायकोंसे

सलाह करने लगे। सलाहके अनुसार स्त्रियों और बच्चोंको उन्होंने मसूरी रवाना कर दिया। फिर अपना बल बढ़ानेके लिये सरकार-के मुलाजिमोंको एक घरमें एकत्र करनेका प्रस्ताव हुआ। पर पहले कई एक इससे सहमत न हुए। बादमें इनकी सम्मति बदली। इधर सहायक मजिस्ट्रेट राबर्टसन चुप न थे। जिन गांवोंमें अधिक दुष्ट लोगोंका निवास था उनमें वे जाना चाहते थे। इस कामके लिये २६ नं० सिपाही सेनाके सूबेदारसे कुछ आदमी माँगे गये। सूबेदारने पहले कुछ आपत्ति की। बादमें २० आदमी राबर्टसनको दिये। इन सिपाहियों और पुलिसको लेकर वे गांवोंको शान्त करनेके लिये निकले। उनके पहुँचते ही अधिकांश गांवोंवाले इधर उधर भाग गये। इधर शक्तिशाली ज़मींदार उनके सहायक बने। यद्यपि जो सिपाही उनके साथ थे वे अन्तमें विद्रोही बने पर गांवोंको राबर्टसनने शान्त कर दिया।

इसी समय रुहेलखंड विभागकी ओर जोश फैलने लगा, इस विभागके आदमी भी सरकारको अपना दुश्मन समझने लगे, इस समय पश्चिमोत्तर प्रदेशके अलावा और कोई स्थान सरकारकी चिन्ताका विषय न था। रुहेलखंडमें अधिकतर मुसलमानोंकी बस्ती थी। रुहेलोंने एक समय सम्मुख संग्राममें बड़ी वीरताका परिचय दिया था। मौतको वे कुछ न समझते थे पुराना इतिहास उन्हें याद था। रुहेलखंडमें बरेली एक स्थान है। बरेलीसे ४८ मील उत्तर पश्चिम मुरादाबाद है। इसी स्था

पर २६ नं० पैदल सिपाही सेना और कुछ गोलंदाज सेना थी। मुरादाबादके जज वहां अधिक समयसे थे। इस कारण लोगोंसे अधिक परिचित थे। जब गदरका अवसर आया तब इस प्रवीण पुरुषने ले० गवर्नरको अपने अधिकार बढ़ानेके लिये लिखा। ले० गवर्नरने उनकी प्रार्थना स्वीकार की। उस समय क्राक्रूफट विलसन साहबको शान्तिरक्षाके भी अधिकार मिल गये। ये सब मिलकर योग्यतासे शान्तिरक्षाके काममें लगे। १६ मईको मेरठके गदरका समाचार मुरादाबाद पहुंचा। समाचार मिलते ही सैनिक अफसरोंकी आज्ञा लेकर विलसन साहब छावनीमें गये और फौजके देशी अफसरोंको बुलाकर कहा कि तुम्हारे साथियोंने बहुत बुरा किया। जो मुरादाबादके सिपाही भी अपने साथियोंका रास्ता पकड़ेंगे तो उनका नाश होगा। इस लिये पहलेसे ही होशियार होना चाहिये। विलसनकी बातसे सिपाही शान्तिसे अपना कर्त्तव्य पालन करने लगे। शहरके उत्तेजित मुसलमानोंके बहकानेपर भी उनकी शान्ति भंग न हुई। एक हिन्दोस्तानीने इस समयकी घटनाओंका उल्लेख करते हुए लिखा था—"नवाब निमतुल्लाखां पहले सरकारके नौकर थे। मुंसिफी करके अब पेंशन ले रहे थे। इस सफेद दाढ़ीवाले आदमीने सिपाहियोंको सरकारके विरुद्ध भड़काना शुरू किया। इस विश्वासघाती नवाबने लोगोंके सामने कहा कि मैं नवाब-खान्दानका वारिस हूं। अब दिल्लीके बादशाहके नामपर मुरादाबादकी हुकूमत करूंगा। उसकी अमलदारीमें मुरादाबादमें

किसी प्रकारका अन्याय न होगा। सर्वसाधारणमें यह घोषणा करके उसने सिपाहियोंको अपनी ओर करनेके लिये रोटी और पानी भेजा। पर उसे बड़ी निराशा हुई। किसी सिपाहीने कहना न माना। इससे वह खुद गाजी बनकर दिल्ली जाने लगा पर शुरू हीमें गोलीसे मारा गया।*

आधे मई मासतक मुरादाबादके सिपाही पूरे विश्वासी और राजभक्त रहे। इस समय रुहेलखंडके अनेक रास्ते गूजरोंकी लूटमारके कारण बंद हो गये थे। स्थान स्थानपर सरकारके विरुद्ध सिपाही घूमते फिरते थे। मुरादाबादकी २९ नं० सेना इन अराजकताओंको शान्त करनेमें मदद कर रही थी। पर अन्तमें उनके सामने कठोर परीक्षाका समय आया। इस अवसरपर उनकी क्या दशा हुई सो नीचेके वर्णनसे मालूम होगी।

१८ मईकी शामको मुरादाबादके अधिकारियोंको समाचार मिला कि मेरठकी २० नं० सेनाके सिपाही लूटका माल लिये हुए शहरसे पांच मील फासलेपर आ गये हैं। मुजफ्फरनगरमें भी इसी सेनाके सिपाहियोंने गदर किया था। दो साहसी अंग्रेज़ अफसरोंने ३० सवार और थोड़ेसे पैदल लेकर रातके ग्यारह बजे इनकी ओर यात्रा की। विलसन आदि अनुभवी शासक इनके साथ हुए। चारों ओर गाढ़ अँधेरा था। यह अँधेरा रास्ता पार करके अफसरोंने सवारोंको उनका रास्ता रोकनेके लिये खड़ा किया। फिर पैदल लेकर वे आगे बढ़े। विद्रोही

*Kaye's Sepoy War. vol III. P. 235 Note.

सिपाहियोंके रक्षकोंको इन्होंने पकड़ लिया। इस गड़बड़से सोते हुए सिपाही जागे। एकाएक सिरपर हमला होते देख कर वे घबरा गये। अँधेरेके कारण सिपाही इधर उधर छिपकर बचे पर उनके हथियार और सामान आदि इनके हाथ लगे। आठ हज़ार रुपये हाथ लगे। और आठ दस आदमी कैद किये गये।

इस समय भी २६ नं० सेनाके सिपाहियोंने राजभक्तिका परिचय दिया। किसी किसीका कहना है कि इस समय भी वे पूरे विश्वासी न थे। पर वहाँ जितने अफसर थे उन सबने इनको विश्वासी कहा था। घोर अन्धकारके कारण सवार विद्रोहियोंको रोक न सके। पर विद्रोही २० नं० सेनाके सिपाहियोंका यह विश्वास न था कि २६ नं० सेना उनके विरुद्ध होगी। इसी कारण उनमेंसे कई सिपाही दूसरे दिन २६ नं० सेनाकी छावनीमें पहुंचे। इस सेनाके एक सिक्खकी गोलीसे, उनमेंसे एक मारा गया, बाकी कैद हुए। ये कैदी जेलमें रक्खे गये, पर भारी विपत्तिका मेघ इससे भी न हटा। जो आदमी २० नं० सेनाका मरा था उसका एक रिश्तेदार २६ नं० सेनामें था। इसकी कुछ क्षमता और प्रतिपत्ति भी थी। जब इसे मालूम हुआ कि इसका रिश्तेदार मारा गया है तब इसने अपने दलके उद्धत सिपाहियोंको उभारा। उन्हें साथ लेकर वह जेलपर गया। जेल तोड़कर उसने ६०० कैदियोंको खोल दिया।

जज विलसन यह समाचार सुनते ही घोड़ेपर बैठकर जेलकी ओर गये। कैदी प्रसन्नतासे पुकारते पुकारते चारों ओर

आगे जा रहे थे। ऐसे दुष्ट लोगोंके सामने अकेले जाना बड़े साह-सका काम था। मुरादाबादसे १८ मील पूर्व रामपुर रियासत है। मुरादाबादके पास ही रामपुरके नवाबकी सेना थी। उसी समय विलसन साहबने रामपुरकी सेनासे सहायताके लिया कहा। पर रामपुरके सवारोंने मदद करनेसे इनकार किया। इस समय भी २६ नं० सेनाके सब सिपाही विद्रोही न बने थे। इनमेंसे अधिकांश अब भी आज्ञापालन कर रहे थे। इन सिपाहियोंको लेकर एक अफसरने भागते कैदियोंका पीछा किया। दूसरी ओरसे विलसन कुछ सिपाही लेकर दौड़े। डेढ़ सौ कैदी पकड़-कर फिर जेलमें डाले गये। एक घंटे बाद विलसन शहरमें आये। शहर शान्त था। तमाम दूकानें बंद थीं—रास्ते सूने पड़े थे। सब शंकित थे, अब क्या होगा इसी चिन्तासे डर रहे थे। जो शान्त थे वे अशान्तिके कारण घबरा रहे थे और जो बदमाश गुंडे थे वे पड़ोसियोंको लूटनेका मौका ताक रहे थे। किसीने उस दिन खाना नहीं खाया, कहीं चूल्हा नहीं जला, कोई निश्चि-न्त न था। विलसन साहबने शहरके प्रतिष्ठित प्रतिष्ठित आद-मियोंको बुलाकर शान्तिरक्षा करनेको कहा। इसके बाद २६ नं० सेनापर उनकी नजर पड़ी। घोड़ेपर बैठे हुए वे छावनी पहुंचे। उन्होंने सिपाहियोंको समझाया। फिर गोलंदाजोंके सामने गये। येही अधिक उत्तेजित थे। नाश करनेके लिये अपनी तोपें लगानेसे भी ये न हिचकते थे। पर विलसनकी निर्भीकतासे ये भी संकु-चित हुए; इसके बाद विश्वास दिलानेके लिये उन्होंने सिपाहियोंको

कारतूस दिये और अपने साथ आनेको कहा। सब लाइन बना-कर खड़े हुए। विलसन साहबने सामने घोड़ेपर बैठे बैठे कहा कि, कुछ बच्चोंके जोशमें आ जानेसे तुम मत घबराओ, तुम अपने जीवन कलंकित मत करो, जो भविष्यमें वे राजभक्ति दिखावें तो गवर्नर जनरलको लिखा जायगा कि वे उनके तमाम अपराधों-को माफ़ कर दें। सेनाके भारतीय अफसरोंने कहा कि क्या विलसन साहब अपनी बाइबिल हाथमें लेकर यह बात कह सकते हैं। विलसन उसी समय तैयार हुए। फिर अफसरोंने सन्देह न किया। इधर विलसन और उधर सिपाहियोंने एक दूसरेके साथ रहनेकी शपथ खाई। फिर सद्भाव हो गया। मुरा-दाबादमें फिर शान्ति हुई। दूकानें खुल गईं और कारोबार होने लगा। पर एक ओरकी बुझी आग दूसरी ओर जा लगी। मुरा-दाबाद जिलेमें अशान्ति मची। गूजर लोग पहलेसे डाके डालनेके आदी थे। इस अशान्तिके समय दलके दल गूजर गांवों और बस्तियोंमें लूट करते फिरते थे। २० मईको ८० गूजर पकड़े गये। इसके दूसरे दिन विलसन साहबको समाचार मिला कि रामपुरके एक मौलवीने विद्रोही मुसलमानोंका गिरोह बनाया है। नीला झंडा उड़ाते हुए ये शहर लूटने आ रहे हैं। उसी समय कुछ सवार साथ लेकर विलसन चले। बरेलीके घाट-परसे रामगंगा उतरकर वे बलवाइयोंको रोकने लगे। एक थानेदारकी तलवारसे मौलवी मारा गया। उसके कई शागिर्द कैद हुए। बाकी भाग गये। इस समय भी २६ नं० सेनाके

सिपाही विश्वासी साबित हुए। इसके दो दिन बाद सिपाहियों-के सामने एक और कठिन काल आया। सफरमैना (सेनाओंके आगेका रास्ता साफ करनेवाली सेना) की दो सेनायें रुड़की-से अंग्रेज़ोंके विरुद्ध होकर लूट मार करती मुरादाबादकी ओर आईं। २३ मईको मुरादाबाद यह समाचार पहुंचा। उसी समय दो पैदल रेजीमेंट और ६० सवारोंको तैयार होनेका हुक्म दिया गया। कप्तान हीर्स इनके नायक थे। यह सेना और दो तोपें लेकर वे विद्रोहियोंके सामने गये। पर उनके पहुंचनेके पहले ही विद्रोहियोंको उनके आनेका समाचार मिल गया। इससे वे तिराईकी ओर चल दिये। पर सवारोंसे वे रोके गये। पीछेसे कप्तान सेना लेकर पहुंचे। घेरकर उनके हथियार और तमाम चीजें ले ली गईं। रास्तेके भिखारी होकर वे भागे।

इस घटनाके बाद अधिकारियोंने समझा कि २९ नं० सेना राजभक्त रहेगी। पर उनका यह विश्वास अधिक दिन न टिका। मुरादाबादमें दुष्ट प्रकृतिके लोगोंका अधिक निवास था। ये लोग मौका मिलते ही चोरी करते और डाके डालते थे। सिपाही इनके दबानेको सदा तत्पर थे। पर जब कोई विशेष घटना हो और अशिक्षितोंमें अफवाहोंका बाजार गर्म हो तब अपने आप व्याकुलता बढ़ जाती है। धर्म, जाति और इज्जतसे बढ़कर भारतवासियोंको और कोई अधिक प्रिय चीज नहीं है। मुरा-दाबादमें जब धर्मनाशका शोर मचा तब सभी शंकित हो उठे। सबमें यह चर्चा फैल गई कि अंग्रेज़ सबका धर्म नाश करेंगे।

लोगोंने इन बातोंसे सिपाहियोंको भी उत्तेजित किया। सिपाही धर्मनाशके डरसे विचलित हो उठे। सब आपसमें पूछने लगे कि बरेलीका समाचार क्या है?

वैशाख लगा। वैशाखकी गर्मीके साथ साथ अंग्रेज़ोंका भय भी बढ़ा। बरेली रुहेलखंडका प्रधान स्थान था। बरेलीकी शान्तिपर ही अन्यान्य स्थानोंकी शान्ति निर्भर थी। उनका विश्वास था कि यदि बरेलीमें अशान्ति हुई तो फिर मुरादाबादमें शान्ति रहनी कठिन है। बरेलीके समाचारोंके लिये सब उत्सुक रहने लगे। १ जूनको बरेलीकी डाक बंद हो गई। मुरादाबादकी छावनीमें अफवाह उड़ी कि बरेलीके सिपाही सरकारके खिलाफ खड़े हो गये। आधी रातको रामपुरके नवाबका एक दूत बरेलीका समाचार लेकर मुरादाबाद आया। विलसन साहब सोते उठे। दूतने कहा कि बरेलीके सिपाहियोंने सरकारके खिलाफ हथियार उठाये हैं। बहुतसे यूरोपियन मारे गये। इसलिये आपका यहांसे भागना ही अच्छा है। गम्भीरता-पूर्वक विलसन साहबने ये बातें सुनीं। उसी समय तैयार होकर वे फौजी अफसरोंसे मिलने गये। २ जूनको सवेरे अंग्रेज़ और हिन्दुस्तानी अफसर एकत्र हुए। विलसन साहबने सरलतासे सब कुछ कहकर कहा कि अब झंडा, तोपें और खजाना लेकर मेरठ चलना चाहिये। हिन्दुस्तानी अफसर इसपर राजी हुए। पर सिपाहियोंने इसका विरोध किया। उन्होंने सोचा कि मेरठ जाते ही वे मारे जायंगे। उन्हें या

तो फांसियोंपर लटकाना पड़ेगा और या जेलमें रहना होगा। इसलिये मेरठ जानेकी उनकी इच्छा न हुई।

दूसरे दिन सिपाही अधिक जोशमें थे। उन्होंने खजा-नेको अपने ही हाथ रखना चाहा। कोई उपाय न देखकर अधिकारी रुपयोंकी थैलियां खजानेके रक्षकोंके अधीन रखनेपर मजबूर हुए। विलसन साहबने रुपयोंकी थैलियां उठा उठाकर दीं। उन्होंने पचहत्तर हजार रुपये दिये, पर इससे भी सिपाही खुश न हुए। वे खजानचीको पकड़कर तोपके पास ले गये और कहा कि बाकी रुपया जहां हो वह बता दो नहीं तोपसे उड़ा देंगे। कप्तान फार्डि नामक एक फौजी अफसरने आगे बढ़कर खजानचीको छुड़ाया। मजिस्ट्रेटने इस समय तमाम स्टैम्प नष्ट कर दिये थे। विलसन और मजिस्ट्रेट घोड़ोंपर बैठ चुके थे। चार सिपाही उनको मारनेको आगे बढ़े पर सूबेदार भवानीसिंह और हवलदार बलदेवसिंहने उन्हें कठोर भाषामें रोककर कहा कि हमने धर्मसे प्रतिज्ञा की है कि किसी अंग्रेज़को न मारेंगे। सिपाहियोंने बंदूकें नीची कीं। अंग्रेज़ वहांसे भागे।

इस तरह मुरादाबादके सिविलियन मेरठ गये और फौजी अफसर नैनीताल। कारण, नैनीतालका रास्ता साफ था और वह पास भी पड़ता था। अंग्रेज़ चले गये पर कुछ गोरे रह गये थे। इनमेंसे कोई सिपाहियोंकी तलवारसे मारा गया और किसी किसीको मुसलमान बनाकर दिल्लीके बादशाहकी नजरके लिये भेजा गया। संभव है दिल्लीमें ये लोग मारे गये हों।

बरेली रुहेलखंडका प्रधान नगर है। दीवानी और फौजी दोनों विभागोंमें प्रधान थी। व्यापारके कारण यहां भिन्न भिन्न स्थानोंके अनेक निवासी रहते थे। बरेलीके पिछले इतिहाससे वहांके निवासियोंकी प्रकृतिका पता लग सकता है। मुगल-राज्यकी अवनतिके समय रुहेलखंडपर पठानों-का कब्जा था। अठारहवीं सदीके पिछले भागमें हाफिज रहमत-की अधीनतामें रुहेले पठान अपनी स्वाधीनताकी रक्षा कर रहे थे। अवधके नवाबके षड्यन्त्र और अंग्रेज़ोंकी सैनिक शक्तिसे इन रुहेले पठानोंका जिस तरह पतन हुआ वह इतिहासके पाठकोंसे छिपा नहीं है। सन् १७७४ के अप्रैल मासमें कात्राकी लड़ाईमें हाफिज रहमत मारे गये। इसके बाद लार्ड लेककी सेनाने रुहेलखंडको जीता और अंग्रेज़ी राज्य स्थापित किया। बरेलीके वीर पठानोंका वह भाव इस प्रान्तमें सदा जागृत था। सन् १८१६ में जब लगान बढ़ानेके कारण रुहेलखंडवासियोंने सरकारका विरोध किया था तब उनको दबाना सरकारके लिये कठिन हो गया था। बरेली प्रान्तकी प्रजा इसी वीर भावकी परिचायक रही है। बरेलीके व्यापारी हिन्दू थे पर मुसलमानोंकी तादाद भी कम न थी। इनके शरीर और बल देखकर इन्हें युद्धकुशल जातिकी सन्तान कहना पड़ता था।

बरेली

उस समय बरेलीमें कोई गोरी सेना न थी। सिपाही सेना-ओंमेंसे १८ नं०, ६८ नं० पैदल और ८ नं० अनियमित रिसाला था। इसके अलावा एक फौज गोलंदाजोंकी थी। ब्रिगेडियर

सिवल्ड सबके सेनापति थे। दीवानी और फौजी तमाम अंग्रेज़ अफसर थे। कुछ व्यापारी अंग्रेज़ भी थे। १०० के लगभग इन-की तादाद थी। इनके अलावा अंग्रेज़ स्त्रियां, बच्चे और ईसाई थे।

मई मासमें जब मेरठ और दिल्लीका समाचार बरेली पहुंचा तब वहांकी सिपाही सेना शान्त थी। सवारोंने अच्छी राज-भक्तिका परिचय दिया था। अधिकारियोंने समझा था कि इनकी मजबूत तलवारकी तरह इनकी राजभक्ति भी मजबूत होगी। इस सेनामें रुहेलखंड और दिल्लीके पठान ही अधिक थे। पर मई मासमें किसी तरहका परिवर्त्तन न दिखाई दिया। धीरे धीरे बाजारू अफवाहोंका स्रोता बहने लगा। अशिक्षित और अदूरदर्शी लोगोंकी कल्पनाओंसे अतिरंजित होकर अफवाहें फैलने लगीं। अफवाहोंके साथ २ लोगोंका उद्वेग और उत्तेजना भी अधिक हो चली। सिपाहियोंमें इस तरहकी अस्थिरता देख-कर सेनापतिको भी चिन्ता हुई। २१ मईको तमाम सिपाही परेडके मैदानमें एकत्र किये गये। सेनापतिने उन्हें शान्त रहने-का उपदेश दिया। इससे सिपाही शान्त हुए और उन्होंने सेनापतिसे कहा कि आजसे उन्होंने नया जीवन प्राप्त किया। ८ नं० रिसालाके सिपाहियोंने यही बात प्रगट की। इस कारण अधिकारियोंने इनकी संख्या बढ़ानेकी आज्ञा दी। उसी दिन २०—२५ आदमी इनमें नये भर्ती किये गये। इनके घोड़ों और वर्दीके लिये रुपये दिये गये। सेनापतिने लै० गवर्नरको लिख भेजा कि सिपाहियोंपर विश्वास प्रगट करनेकी आवश्यकता है।

उनके अनुरोधका पालन किया गया। ले० गवर्नरने उन्हें लिख भेजा—"लोगोंके हृदय उत्तेजित होनेपर भी अभीतक ऐसा कुछ नहीं हुआ कि जिसके कारण ले० गवर्नरका विश्वास सिपाहियोंपरसे हटा हो।" यह पत्र ३० मईको लिखा गया था। पर इस पत्रके पहुंचते २ बरेलीके सिपाही विद्रोही हो गये।

जिस दिन सेनापतिने कवायदके मैदानमें सिपाहियोंको एकत्र करके उपदेश दिया था उसके बाद दो तीन दिनतक हर प्रकारकी शान्ति रही। छावनी और बाजार सब कहीं अमन बना रहा। पर यह शान्ति अधिक समयतक न रही। वह प्रातःकालकी उषाके समान शीघ्र ही लीन हो गई। २९ मईको फौजी देशी अफसरोंने कर्नल ट्रिपसे आकर कहा कि आज नदीपर नहाते हुए उन्होंने १८ और ३८ नं० सेनाके सिपाहियोंको सरकारके विरुद्ध उठनेकी शपथ लेते सुना है। कर्नलने यह बात उसी समय कप्तान मेकेंजीसे कही। उसी समय उनकी अधीनतामें रिसाला तैयार होकर यूरोपियनोंकी रक्षापर तैनात हुआ।

धीरे २ सूर्य ऊपर उठने लगा, गर्मी बढ़ने लगी। गर्मीके साथ २ यूरोपियनोंकी आशंका भी अधिक हो चली। पर उस दिन शान्ति रही। पर सिपाहियोंके न खड़े होनेपर भी अशान्तिके लक्षण जरूर दिखाई दिये। फीरोजपुरके विद्रोही सिपाही दलके दल बरेलीमें आने लगे, इन्होंने तरह २ की बातोंसे लोगोंमें अधिक डर पैदा किया। जब बरेलीके सिपाहियोंने इनके मुंहसे सुना कि उनके नाश करनेके लिये पास ही गोरी पैदल, सवार

और गोलंदाज़ सेना तैयार है, तब बरेलीके सिपाही भी शान्त न रह सके। इस समाचारसे मानों बरेलीकी सेनामें कोई नया तूफान आ गया। सब अपनी २ बुद्धिके अनुसार उपाय सोचने और करने लगे। सब अंग्रेज़ोंको सारे अनिष्टकी जड़ समझकर उनके नाशके लिये उद्यत हुए। सिपाहियोंकी इस उत्तेजनासे अंग्रेज़ोंके बंगलोंमें गंभीर दुश्चिन्ता दिखाई दी। अबतक सवारों-पर यूरोपियनोंका विश्वास था। उन्होंने सोचा था कि विपत्ति आनेपर सवारों द्वारा वे रक्षित रहेंगे। पर अन्तमें यह आशा भी न रही। एक मुसलमान सज्जनने इस समय कमिश्नर एलेक-जेंडरसे कहा कि सिपाही अंग्रेज़ोंकी विरोधके लिये खड़े हो गये हैं। इसलिए इस समय आत्मरक्षाका मार्ग देखना चाहिए।

३१ मईका रविवार शान्तिके साथ प्रारम्भ हुआ। गदरके खतम होनेके बाद बहुतोंका यह खयाल हुआ था कि षड्यन्त्र करके भारतके सब सिपाहियोंने ३१ मई ही गदरका दिन निश्चित किया था पर इसका कोई प्रमाण नहीं। बरेलीमें इस दिनका प्रातःकाल शान्तिसे बीता। अधिकारियोंने सोचा था कि पहले वे यूरोपियनोंपर हमला करेंगे। लगभग ११ बजे तोपकी आवाज हुई। इससे यूरोपियन चौंके। उन्होंने अपने खिलाफ सिपाहियोंके दलबद्ध होनेकी इसे सूचना समझी। बहुतसे तैयार होकर सवार सेनाके पीछेवाले एक बागीचेमें एकत्र हुए। सवार थोड़ी दूरपर थे। इधर भयानक कांडका प्रारम्भ हो गया। ६८ नं० सेनाके कुछ सिपाही अंग्रेज़ोंके बंगले लूटने चल दिये। लूट

पाटकर इन्होंने उनमें आग लगा दी। आग लगतेही बंगले जलने लगे। इधर गर्मी थी और फिर दोपहरकी लू चल रही थी। मकानोंका नाश करके विद्रोही सिपाही उनकी जान लेनेके लिये आगे बढ़े। जो अंग्रेज उन्हें नजर पड़ने लगा उसे वे गोलियोंसे मारने लगे। तोपकी आवाज सुनते ही ब्रिगेडियर घोड़ेपर बैठकर सवार सेनाकी ओर जा रहे थे। इनके पीछे पीछे दो सवार थे। एक सिपाहीने इनकी छातीमें गोली मारी। सेनापति उस दशामें भी घोड़ेपर बैठे बैठे रिसालातक गये। पर वहां पहुंचकर वे घोड़ेपरसे गिर पड़े और मर गये।

ब्रिगेडियरके मरते ही ट्रिप सेनापति बने। अबतक ६८ नं० सेना और गोलंदाज ही विरोधी बने थे। दूसरे सैनिकोंने कुछ निश्चय न किया था। जिस समय उनके साथी अंग्रेज़ोंके प्राण ले रहे थे और उनकी सम्पत्ति भस्म हो रही थी उस समय भी बाकी सिपाही तटस्थ थे। जिनके हथियारों और रणशिक्षासे वे वीर बने, जिनके वेतनसे उनके घरवाले पले उन्हींके खिलाफ हथियार उठाते देखकर वे आश्चर्यमें थे। इधर रिसालापर अधिकारियोंको अधिक विश्वास था। ब्रह्मदेशकी लड़ाईमें रिसालाने अधिक पराक्रम दिखाया था इस रिसालाके सवारोंको रक्षाके लिये लेकर अंग्रेज़ोंने नैनीतालकी ओर घोड़े छोड़े। थोड़ी दूर सवार उनके साथ गये पर बादमें वे भी वापिस लौट आये अफसरोंके साथ केवल २२-२३ सवार गये। इनमें १२ अफसर थे। इनकी स्वामिभक्तिकी जितनी प्रशंसा की जाय उतना ही कम है।

मुसलमानोंका हरा जातीय झगड़ा देखकर भी इन्होंने अंग्रेज़ोंका ही साथ दिया।

आत्मरक्षाके लिये अफसर नैनीताल चले गये। पीछेसे सिपाहियोंने ग़दरके निर्दिष्ट काम पूरे किये। १८ नं० सिपाही सेना अभीतक शान्त थी। विद्रोही उन्हें विद्रोहके लिये उभार रहे थे। उनकी ओर भरी तोपें लगाकर सिपाहियोंने कहा कि जो तुम अंग्रेज़ोंके ख़िलाफ न खड़े होगे तो तोपोंसे उड़ा देंगे। इससे १० नं० सेनाके सब सिपाही खड़े हो गये। अबतक बाकी अंग्रेज़ इसी सेनाके सहारे थे। जो उन्हें इस सेनाका सहारा न होता तो वे भी अबतक नैनीतालकी ओर चल दिये होते, पर अब वह भी सुयोग न रहा। उद्भ्रान्त होकर इस सेना तथा उनके साथ और अंग्रेज़ोंने भी बरेलीका त्याग किया पर सबका भाग्य अनुकूल न था। बहुतसे गांववालोंके हाथ मारे गये। कितनोंकी प्राणरक्षा विलसन साहबकी कोशिशसे हुई।

बरेलीमें जो अंग्रेज़ रह गये उनमेंसे बहुतसे विद्रोहियोंके हाथसे मारे गये और कुछने कहीं छिपकर अपनी प्राणरक्षा की। अंग्रेजोंके तमाम स्थान जलानेके बाद ख़जाना लूटा गया। जेलखानेके रक्षकोंने पहले सिपाहियोंसे लड़कर जेलकी रक्षा की पर अन्तमें हार कर हटना पड़ा। तमाम क़ैदी बाहर हो गये। बरेलीके सब उत्तेजित और स्वार्थी आदमी सिपाहियोंके साथ हो गये। इनके हाथ कई गोरे मारे गये। अंग्रेज़ी राज्य बरेलीसे भी उठ गया।

बरेलीका विजय करके अब मुसलमान सम्पूर्ण रुहेलखंडपर अपना अधिकार जमाने निकले। तर्क इसपर होने लगा कि रुहेलखंडका सबसे बड़ा शासक कौन बनाया जाय। दो आदमी इस पदके लिये अग्रसर हुए, ये दोनों ही प्राचीन पठान वंशके सम्भ्रान्त पुरुष थे। इनमेंसे एकका नाम खां बहादुरखां और दूसरेका मुबारिकशाह था। मुबारिकशाहकी प्रतिपत्ति सबसे अधिक थी। बहादुरखां हाफिज रहमतखांका वंशज था। बहुत वर्ष बीत जानेपर भी हाफिज रहमतकी वीरता लोग न भूले थे। इसी कारण रुहेलोंने खां बहादुरखांको रुहेलखंडका शासक स्वीकार किया। इससे मुबारिकशाह भीतर ही भीतर जल गया। ऊपरसे उसने बन्धुता प्रगट की पर भीतर वैसा ही कपट था। खां बहादुरखां रुहेलखंडके अन्तिम शासक हाफिज रहमतकी सन्तान होनेके कारण सरकारसे पेंशन पाता था। वह सदर अमीनका काम करके पेंशन ले रहा था। शान्ति-रक्षाके कामोंमें सदा कमिश्नर डिप्टी कमिश्नरसे मिलता रहा। अधिकारी समझते थे कि इतने पर यह बूढ़ा पेंशनख्वार क्या विद्रोही बनेगा, पर अन्तमें वही हुआ।

सरकारका यह पेंशनख्वार मुसलमान, ईसाइयोंके खूनपर आमादा होकर सूबेदार बना। जो गोरे गुप्त स्थानोंमें छिपे थे वे इस नये हाकिमके सामने लाये गये। खां बहादुरखां खुद जज बने। थोड़ी देरमें उन्हें फाँसीका फैसला सुनाया गया। जेलसे बाहर लगे फाँसीके खंभोंपर इन अभागोंको लटकाया गया। जो

यूरोपियन उनके सामने लाये गये उन सबकी यही दशा हुई। इस प्रकार यूरोपीय संहारके बाद खां बहादुरखांने राज्यकी अन्य बातोंकी ओर ध्यान दिया। घोषणापत्र द्वारा उसने सर्वसाधारणको अपने राज्यकी सूचना दी और सजे हुए हाथीपर बैठकर वह बरेलीके बाजारोंमें घूमा। इस समय नौकर छत्र, चँवर आदि राजचिह्न लेकर उनके साथ थे। रुहेलखंडके हरएक भागके लिये नौकर चुने गये। दिल्लीके बादशाहके नामपर टैक्स वसूल किया जाने लगा। पर इस नये नवाबके शासनमें न कहीं नियम था न कायदा। बलवान कमजोरोंको सताते थे। जो शक्तिशाली थे वे हर तरहसे अपने भोग-विलासका साधन देखते थे। शान्ति-प्रिय आदमी अंग्रेज़ी राज्यके लिये लंबी सांसें लेते थे। बनियों और व्यापारियोंकी मिट्टीपलीत थी। हरएक उनसे नये बादशाहके नाम कुछ न वसूल करता था। सब कारोबार बंद था। लोग अपनी जान ले लेकर छिप रहे थे।

खां बहादुरखां दुष्ट लोगोंको न दबा सके। न उनके पास शक्ति थी और न योग्यता। तमाम रुहेलखंडमें लूट, डाका, अत्याचार और पाप होने लगे। जो बलवान था वही अपनेसे कमज़ोरकी सम्पत्ति हरण करने लगा। कर्जके कारण बहुतोंकी जमीनें छिन गई थीं। बहुतसे पहले जमींदार थे पर रुपया अदा न कर सकनेके कारण अब वे साधारण आदमी हो गये थे। इस मौके-पर सबने अपनी अपनी जमीनोंपर कब्जा किया। महाजन लोग मारे गये। जिनको कर्ज देना था उन्होंने अपने कागज वापिस ले

लिये। इस प्रकार गदरका जहरीला फल भारतवासियोंको भी मिलने लगा। इधर दूसरी सेनाका अफसर बखत खां अपनी सेना सहित बरेलीमें ही था। यह खां बहादुरखांके खिलाफ हो गया। बखतखांने मुबारिकशाहका पक्ष लिया।

रविवारको प्रातःकाल जब बरेलीमें इस तरहका विकट तांडव हो रहा था, तब शाहजहांपुरमें भी यह भीषण गदर फैला। शाहजहाँपुर बरेलीसे ५७ मील है। यहां २८ नं० सिपाही सेना रहती थी। कप्तान जेम्स इसके सेनापति थे। बाकी कलक्टर, मजिस्ट्रेट आदि दीवानी विभागके कर्मचारी काम करते थे। कुछ यूरोपियन व्यापारके कारण भी इस स्थानपर रहा करते थे। २६ मईको दिल्लीका समाचार शाहजहाँपुर पहुँचा। इस समाचारसे नगरवासियोंमें अधिक आतंक और उत्तेजना फैली। पर अधिकारी शुरूमें इस परिवर्तन-से विचलित न हुए। सिपाहियोंपर उनका विश्वास था। उनका विश्वास था कि दुष्टों और बदमाशोंके विरोधी बननेसे सिपाही विद्रोही न होंगे। इसी खयालके कारण वे निरुद्विग्न थे। ३१ मईको रविवारके दिन सब यूरोपियन उपासनाके लिये गिर्जेमें गये। जब वे बैठे २ प्रार्थना कर रहे थे तब सिपाही विद्रोही बने। गदरका जो कुछ निर्दिष्ट काम था वह शाहजहाँपुरमें भी हुआ। खजाना लूटा गया, जेल तोड़ी गई और यूरोपियनोंके मकान तथा बँगले जलाये गये। शहर और अड़ोस पड़ोसके भूखे लुटेरे, डाकू, चोर, क़ैदी, सब गदरकी आड़में अपना काम करने लगे।

शाहजहाँपुर

जहाँ उन्होंने अंग्रेज़ी चीनीका गोदाम और रम नामक शराबका कारखाना लूटा वहाँ लगे हाथ हिन्दुस्तानियोंके घर भी साफ हुए। शामसे पहले २ काम तमाम हो गया।

अन्य स्थानोंके यूरोपियनोंके भाग्यमें जैसा था वही यहां-वालोंके भाग्यमें भी था। गदरका प्रारम्भ हर स्थानपर धर्मके डरसे हुआ है। लोग धर्मनाशके डरसे अंग्रेजोंके खिलाफ उठे हैं पर अन्तमें वह गदर हो गया है। अन्तमें लूट और हत्यासे इसकी समाप्ति हुई है। ये लोग धर्मके नामपर उठते थे और दुराचारी कैदियोंको छोड़ना, खजाना लूटना, और यूरोपियनोंको मारना इनका काम हो जाता था। हर स्थानके सिपाहियों और दुष्ट लोगोंने मिलकर यही किया। शाहज-हांपुरके गिर्जेमें जब अंग्रेज मिलकर ईश्वरसे प्रार्थना कर रहे थे, तब कुछ दुष्टोंने उनपर हमला किया। इससे प्रार्थनाकारी विचलित हुए। कई एक मर गये और बाकी गिर्जेके किवाड़ बन्द करके शंकित हो उठे। स्त्रियां भयसे व्याकुल हो उठीं।

इस समय फौजमें बड़ी गड़बड़ हुई। सेनापति जोन्स फौजको समझाने गये थे। वहीं वे मार डाले गये। अस्प-तालका डाक्टर वापिस घर जा रहा था। वहांसे वह अपनी स्त्री बच्चे और एक गोरे नौकरको गाड़ीपर बैठाकर और खुद कोचबक्सपर बैठकर गिर्जेकी ओर चला। रास्तेमें सिपाहि-योंने उन सबपर बंदूकें छोड़ीं। डाक्टर गिरकर मर गया। उसकी स्त्री घायल हो गई फिर भी किसी तरह भागकर वे

गिर्जेमें पहुंचे। इस मौकेपर अंग्रेज़ोंके हिन्दुस्तानी नौकरोंने अपने मालिकोंकी जान बचानेकी बेहद कोशिश की। जो कहीं सिपाहियोंमें ऐक्य होता तो इस समय कोई यूरोपियन न बचता। पर उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई थी। न उन्होंने भविष्यत्‌का विचार किया था और न भूतकालकी बात सोची थी। वे वैसे ही सरकारके खिलाफ खड़े हो गये थे। जिस समय सिपाही अंग्रेज़ोंकी जान लेनेको तैयार हुए उस समय उनमेंसे कोई कोई उनकी रक्षाके लिये भी आगे बढ़ा। अंग्रेज़ोंके हिन्दुस्तानी नौकरोंने बंगलोंसे हथियार ला लाकर उन्हें गिर्जेमें दे दिये। इधर १०० विश्वासी सिपाही अपने अफ़सरोंकी रक्षाके लिये आकर खड़े हुए। अब अंग्रेज़ोंने अपने भागनेका रास्ता देखा। एकने प्रस्ताव किया कि इस समय पौहायिन चलना चाहिए क्योंकि वहांका राजा हमारी मदद करेगा। इस समय थोड़ेसे घोड़े और दो एक गाड़ियां गिर्जेके सामने लाई गई। उसी समय उनमें बैठकर यूरोपियन पौहायिनकी ओर भागे। पर पौहायिनवालोंने कहा कि हम तुम्हें नहीं बचा सकेंगे इसलिये वे अवधके प्रान्तवर्ती मुहम्मदी नामक स्थानकी ओर चले। इनके भाग्यमें क्या था सो आगे आवेगा।

बरेलीसे ३० मील बदायूं है। एडवर्ड्स साहब यहांके कलक्टर थे। इन्होंने गवर्नर जनरल लार्ड एलनबरा और लार्ड हार्डिंजके जमानेमें परराष्ट्र विभागका काम किया था। दीवानी अदालतोंके प्रबन्धके कारण इस

बदायूं

प्रदेशके निवासी किस बुरी दशामें आ गये थे सो इनसे छिपा न था। इनकी इस विषयकी सम्मति उद्धृत कर चुके हैं। मेरठके गदरका समाचार मिलते ही इन्होंने अपने बाल बच्चोंको नैनीताल भेज दिया। इस प्रकार तैयार होकर अब ये अपने कर्त्तव्यपालनपर लगे। इन्हें समाचार मिला कि २५ मईको मुसलमान सरकारके खिलाफ खड़े होंगे। यह ईदका मौका था, इसलिये मुसलमान प्रसन्न थे। मजिस्ट्रेटने खास खास मुसलमानोंको बुलवाया। जबतक बलवेका निश्चित समय न बीता तबतक इन सबको मजिस्ट्रेटने बातोंमें लगाये रक्खा। इनमेंसे कई बड़े उत्तेजित थे, कइयोंने उत्तेजनाकी बातें भी कहीं। निश्चित समय इस तरह बीत गया। दो दिन इस तरह इस वीर अंग्रेज़ने बलवाइयोंके बीचमें बिताये। बदायूंमें ६८ नं० सेनाके कुछ सिपाही थे। पर कलक्टरको इन सिपाहियों या पुलिसपर भरोसा न था। वे जानते थे कि बरेलीका इशारा मिलते ही सब बागी हो जायँगे। तीसरे दिन जब वे अकेले बैठे खाना खा रहे थे तब दूरसे इनको कुछ सवार आते दिखाई दिये। पास आनेपर देखा कि वे एटाके कलक्टर फिलिप्स हैं। एटामें गदर हो गया था। नरहत्या, लूट, डाका सब कुछ हो गया था। गदरके अवसरपर भागकर वे बदायूं मददके लिये आये थे। रास्तेमें भी उनपर अनेक विपत्तियाँ आई थीं। हर जगहके सिपाही सरकारके खिलाफ हो गये थे। कुछ विश्वासी सवार उनके साथ आये थे। उन्हींकी मददसे वे यहाँतक आये। एड-

वर्ड्स इनके आनेसे प्रसन्न हुए पर किसी तरहकी मदद न कर-सके। चारों ओरके सिपाही विद्रोही थे, दुष्ट लोग डाका और लूटसे अशान्ति फैला रहे थे, अंग्रेजोंकी जान हर जगह आपत्तिमें थी। इस प्रान्तमें कहीं भी गोरी सेना न थी। ऐसी हालतमें एडवर्ड्स क्या मदद कर सकते थे। इस समय अंग्रेज़ अपनी जान बचानेकी चिन्तामें थे। वे दूसरोंसे मददकी आशा करते थे। एक स्थानसे दूसरे स्थानको मदद देना असम्भव था। पर जब उन्हें मालूम हुआ कि विद्रोही लोग प्रधान व्यापारी स्थान खिलसापर हमला करनेवाले हैं तब उन्होंने बरेलीके कमिश्नरको मददके लिये लिखा। ३१ मईकी रातके ६ बजे कमिश्नरका जवाब आया कि एक सिपाही सेना गोरे अफसरकी मातहतीमें मजिस्ट्रेटकी मददके लिये रवाना की जाती है। इस जवाबसे बदायूं और एटाके कलक्टर प्रसन्न हुए। एडवर्ड्स साहबने एक सवार गोरे अफसरको लानेके लिये भेजा। इधर फिलिप्सने रातको तीन बजे वापिस एटा जानेका इरादा किया। रातको ढाई बजे बदायूंके कलक्टर उठकर एटाके कलक्टरको जगाने जा रहे थे, इसी समय एक घबराये हुए चपरासीने आकर कहा कि जिस सवारको आपने भेजा था वह वापिस आ गया। उसने कहा है कि बरेलीके सिपाही विद्रोही हो गये। वहाँके यूरोपियन मारे गये। जेलके करीब चार हजार कैदी सब जगह फैल गये हैं। एक सिपाही सेना बदायूं का खजाना लूटने और यहाँके अंग्रेज़ोंको मारने आ रही है।

समाचार मिलते ही एडवर्ड्सने फिलिप्सको जगाकर यह बात सुनाई। उसी समय घोड़ेपर बैठकर फिलिप्स वापिस एटाके लिये रवाना हुए। फिलिप्सके जानेके बाद दो नीलकी कोठीवाले गोरे और एक अंग्रेज़ एडवर्ड्ससे मिले। एडवर्ड्सने दूसरी जगह जानेका इरादा न किया, क्योंकि बदायूंमें अभी शान्ति थी। दूसरे खजानेके रक्षक अफसरने विश्वास दिलाया था कि उनके सिपाही अन्ततक खजानेकी रक्षा करेंगे। पर उन-की यह बात अन्तमें गलत साबित हुई। जिस दिन फौजी अफसर अपनी प्रामाणिकताका विश्वास दिला रहा था उसी शामको दूसरी हवा बहने लगी थी। बरेलीके सिपाहियोंने अपने साथियों-को अंग्रेज़ोंके खिलाफ खड़े होनेको कहला भेजा। इसलिये शीघ्र ही गदरका काम शुरू हो गया। आसपासके डाकू लुटेरे एकत्र हो गये, लूट शुरू हुई। जेल तोड़ दी गई। करीब ३०० कैदी कलक्टरकी कोठीके चारों ओर बकने लगे। बरेलीके सिपाही आकर गदरके लिये लोगोंको उकसाने लगे। अन्य उपाय न देखकर कलक्टरने भागनेका इरादा किया। वे उसी समय अपने तीन अंग्रेज़ साथियोंके साथ घोड़ोंपर बैठकर निकले। इस समय एक मुसलमान सज्जन कुछ अपने आदमियोंको साथ ले-कर आये और कलक्टरसे कहा कि तमाम रास्ते विद्रोही सिपा-हियों और कैदियोंसे घिरे हैं, इसलिये इस समय और कहीं न जाकर मेरे घरमें छिप रहें। इस मुसलमानका घर बदायूंसे तीन मील दूर शेखूपुरा नामक स्थानमें था। कलक्टर इसीके

मकानपर गये। कलक्टरने लिखा था कि जिस समय वे बदायूं-से चलनेको हुए तब चारों ओर विद्रोहियोंसे हरएक स्थान घिर गया था। बेखौफ लोग लूटने लगे थे। उनके चपरासीतक उनके बंगलेका सामान लूट रहे थे। अपने नौकरोंका यह व्यवहार देखकर वे क्रोधित हुए। पर सबसे पहले उन्होंने जान बचाना मुनासिब समझा। जब वे उस मुसलमानके मकानपर पहुंचे तब शेखका भाई आकर नम्रतासे कहने लगा कि जो इतने आदमी इकट्ठे यहां रहेंगे तो सिपाहियोंको पता लग जायगा। इसलिये गंगाके बांये किनारे, यहांसे करीब १८ मील एक दूसरे गांवमें उनका रहना अधिक अच्छा है। पहले मजिस्ट्रेट साहब इस बातपर राजी न हुए। पर अन्तमें उन्हें १८ मील दूरवाले दूसरे गांवमें जाना पड़ा। यहां उन्होंने अपने कपड़े लत्ते सब कुछ उतारकर हिन्दुस्तानी लिबास पहना और हिन्दुस्तानी तरहसे गांवमें रहने लगे। बादमें क्या हुआ सो आगे आवेगा।

यह ऊपर आ चुका है कि जेल पहले ही तोड़ दी गई थी। कैदी अड़ोस पड़ोसको लूटने लगे थे। बस्ती और गांवोंके दुष्ट लोग लूटने मारने लगे थे। सबका ध्यान खजानेपर था। पर एडवर्ड्स साहबने होशियारीसे काम किया था। जमानेका रुख समझकर उन्होंने किश्तका रुपया जमींदारोंसे वसूल न किया था। खजानेमें बहुत ही कम रुपया था। इससे विद्रोहियोंको बहुत निराशा हुई। पर वे इधर उधर लूटकर अपने आपको मालदार करने लगे। जितने नीच जातिके आदमी थे

वे सब इस समय सर्दार थे। सिपाही दिल्लीके लिये रवाना हो हो गये। पर ये लोग हिन्दुस्तानियोंको ही लूटने मारने लगे। दिल्लीके बादशाहके नामपर लगानका रुपया मांगा जाने लगा। खां बहादुरखांके नामकी घोषणा की गई।

इस अवसरपर खां बहादुरखां अपना अधिकार अच्छी तरह जमाने लगा। रुहेलखंडमें मुसलमानोंसे हिन्दुओंकी बस्ती अधिक थी। खां बहादुर हिन्दुओंको अंग्रेज़ोंके विरुद्ध उभारने लगा। इतिहास लेखक 'के' साहबने खां बहादुरकी चालबाजियोंका विवरण अच्छी तरह लिखा है। हिन्दू सीधे सादे किसान थे। ये लोग न तो हथियार चलाने ही वाले थे और न मुसलमानोंकी तरह चतुर थे। सीधे हिन्दू ही गदरके मौकेपर लूटे और मारे गये। इन्हीं हिन्दुओंको अंग्रेज़ोंके खिलाफ बहकाकर अपना राज्य जमानेके लिये खां बहादुरने एक एलान तैयार किया। उसमें लिखा था कि "यदि अंग्रेज़ हिन्दुओंको अपनी ओर मिलानेके लिये हमारी तरह वादे करें, या हिन्दुओंको मुसलमानोंका विरोधी बनानेका यत्न करें, तो समझदार हिन्दुओंको याद रखना चाहिये कि वे धोखा खायंगे। अंग्रेज़ धोखेबाज और झूठे हैं। ये चालबाज अंग्रेज़ सदा हमारे भोले देशवासियों-को बहकाकर अपना मतलब बनाते हैं। हममेंसे किसीको यह मौका हाथसे न खोना चाहिये। यही मौका हमारे काम करने-का है।" इतिहास लेखक'के'साहबने इस विषयमें लिखा है कि, "हमारी सरकार जैसे एलान निकलती है, वैसाही यह घोषणा-

पत्र है, इसमें भारतवासियोंकी दृष्टिसे अंग्रेज़ोंको झूठा बताया गया है। पर अंग्रेज़ोंका विश्वास है कि भारतवासी झूठे हैं। एक दूसरेको झूठा समझते हैं। इसलिये हमारी कोई शिकायत नहीं। मुसलमानोंकी अमलदारीमें भारतवासियोंने जो हर तरहकी तकलीफें उठाई हैं, उन्हें हम हर समय याद दिलाते रहे हैं, और सदा कहते रहे हैं कि यह अमन और शान्ति अंग्रेज़ी सरकारके स्थायित्वपर ही निर्भर है। इसलिये अगर मुसलमान हमारे खिलाफ यह कहें कि हमारे राज्यसे ही हिन्दुओंको सुख मिलेगा तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं। हमको और हमारी सरकारको मुसलमानोंने तरह २ से बदनाम किया था। यह अफवाहें उड़ाई गई थीं कि अंग्रेज़ हिन्दुओंका धर्मनाश करना चाहते हैं। हिन्दुओंसे यह कहा गया कि हमने उनकी सतीदाहकी प्रथाको रोका, हमने उनकी विधवाओंके विवाहका कानून बनाया, हिन्दुओंको उन्नतिके लोभसे ईसाई बनाया। और तो क्या यह कानून बनाया कि जो राजा बिना औलाद मर जाय उसकी सम्पत्तिकी अधिकारी सरकार हो। इसी नीतिके अनुसार नागपुर और लखनऊ ब्रिटिश अमलदारीमें शामिल किया गया। हे राजाओ! तुम्हारा धर्मनाश करनेको अंग्रेज़ोंका यह बड़ा भारी जाल है। हम सबको यह समझ रखना चाहिये कि यदि इन अंग्रेज़ोंको भारतमें रहने दिया तो ये हम सबको मार डालेंगे। सबका धर्मनाश कर देंगे।"* इस तरहकी घोषणा करके मुसलमानोंने

*Kaye's Sepoy War. Vol III. P. 289.

अपने सजातियों तथा हिन्दुओंको उभारनेकी कोशिश की थी। और तो क्या मुसलमान यह कहकर भी लोगोंसे मदद मांगने लगे थे कि आज जो खुदाके बन्दोंकी हुकूमत कायम करनेमें एक पैसा देगा उसे कयामत (प्रलय) के दिन ७०० पैसे मिलेंगे और जो रुपया देगा उसे खुदा कयामतके दिन ७०० रुपये देगा।* बरेलीके खजानेका तमाम रुपया बलवाई मुसलमानोंने लूट लिया था, आसपासके खजाने भी लूटे गये थे। रुपयेकी कमी क्या, एकदम टोटा था। इसलिये मुसलमान नवाब खुदाका विश्वास दिलाकर आदमियोंसे रुपया लेना चाहते थे। पर लोगोंको खुदाकी दातारीपर इतना विश्वास ही नहीं आया जो वे अपने घरका धन निकालकर दे देते। खैर, जो कुछ हो रुहेलखंडका प्रबन्ध खां बहादुरखां करने लगे, पर कहीं शान्ति न थी। किसीपर विश्वास न था और न कोई उनके राज्यका विश्वास ही करता था। जो अंग्रेज़ इधर उधर भाग गये थे वे छिपकर किसी तरह अपना जीवन बिता रहे थे। विश्वासी हिन्दुस्तानी उन्हें छिपाये हुए थे।

फर्रुखाबाद

इसी अर्सेमें फरूखाबादमें भी गदर हुआ। फरूखाबाद आगरा कमिश्नरीमें गंगापार है। इसे हुकूमतके लिये रुहेलखंडसे अलग किया गया था पर जनता और सामाजिकतामें रुहेलखंडका ही यह एक हिस्सा है। फरूखाबादमें भी क्षमताशाली मुसलमानोंकी तादाद अधिक थी और वे

* Kaye's Sepoy War Vol III. P. 391

भी अन्य स्थानोंकी तरह उत्तेजित थे। जब इस जिलेपर अंग्रेज़ोंका राज्य हुआ तब यह शहर चोरों और डकैतोंका बड़ा अड्डा था। चोरी और डाकोंके अलावा यहां सदा खून होते रहते थे। जब अंग्रेज़ी राज्य हुआ तब ये सब उपद्रव मिटे पर लोगोंके भीतरी भाव वैसेके वैसे ही थे। मुसलमान नवाबी ज़मानेमें जो जीमें आता सो करते थे, पर अंग्रेज़ी राज्यमें वे नहीं कर सकते थे। मुसलमान अंग्रेज़ोंसे डरते थे। पर गदरके समयमें यह डर न रहा। हर जगह विद्रोहके कारण अंग्रेज़ अपनी प्राणरक्षामें लगे थे। फर्रुखाबादमें कुछ आदमी पुराने नवाब वंशके थे। समयके प्रभावसे इनकी दुर्दशा हो रही थी फिर भी वंशका गौरव इनके साथ था। इन लोगोंके पास खानेतकको न था पर अपने आपको नवाब कहकर किसी काममें हाथ न लगाते थे। गदरकी हवा चलती देखकर इन्होंने अपना भाग्य बदला समझा। ये सब समयके मारे आलसी नवाब कमर कसकर कोशिश करने लगे कि किसी तरह गदर हो जाय। उस समय फर्रुखाबादमें १० नं० पैदल सिपाही सेना थी। जून महीनेमें जब उद्धत मुसलमान लूटके लिये गांव जला रहे थे, महाजनोंको लूट रहे थे, तबतक इन सिपाहियोंने अंग्रेज़ोंके विरुद्ध हथियार नहीं उठाये। सिपाहियोंके उठनेसे एक महीना पहलेसे बस्तियोंके दुष्ट और डाकू लोगोंने लूट मार शुरू कर दी थी।

जहांकी बस्तीमें अधिकतर दुष्ट लोग होते हैं वहां छोटेसे कारणसे ही विप्लव हो जाता है। वहांके लोग अपनी अद्भुत

कल्पनाके सहारे तरह २ की बातें फैलाकर दूसरोंको भी उत्तेजित कर डालते हैं। जो दूसरोंके धनसे अपने भोग विलासके साधन प्राप्त करते रहे हों, वे ऐसे मौके देखते रहते हैं कि जिनके कारण दूसरोंका धन और सम्पत्ति वे हड़प लें। वे कायदे कानून और शान्तिका राज्य नहीं चाहते, क्योंकि कायदे कानूनोंके रहते वे दूसरोंका धन नहीं हरण कर सकते। फर्रुखाबाद ऐसेही दुष्ट नीच आदमियोंका निवासस्थान था। १८५७ के शुरूसे ही इस प्रान्तके निवासी तरह २ की अफवाहें फैलाने लगे और उन अफवाहोंके कारण उत्तेजित होने लगे। अशिक्षित अनजान लोग अपनी कल्पनासे बातको जितना बढ़ाकर कह सकते हैं उतना बढ़ा २ कर ये लोग बातें करने लगे। लोग कहने लगे कि अंग्रेजोंने हिन्दू मुसलमानोंका धर्मनाश करनेके लिये आटेमें गाय और सुअरकी हड्डियां पीसकर मिला दी हैं और घीमें चर्बी डाल दी तथा लोगोंके पानी पीनेके कुओंमें गाय और सुअरका मांस डाल दिया है। फर्रुखाबादके आदमियोंका दिमाग बड़ा तेज था। उन्होंने एक नई अफवाह और निकाली और वह यह कि अब अंग्रेजोंने चांदीका जगह चमड़ेका रुपया निकाला है। वैलर नामक एक एंजिनियर उस समय फतेहगढ़में था। यह अंग्रेज एक महाजनके पास आकर बातें करने लगा। महाजनको उसने समझाया कि हमारी सरकार आटे और घीका व्यापार नहीं करती और न वह किसीके खानेपीनेकी चीज अपवित्र ही करती है। पर महाजनको विश्वास न हुआ।

उसने कहा,—"आपको यह भी मालूम है कि सरकार चमड़ेका रुपया चलाकर यहांसे चांदी सोना ले जायगी।" सुनकर अंग्रेज़ ज़ोरसे हंसने लगा। महाजनने कहा कि, मैंने खुद अपनी आंखोंसे चमड़ेके रुपये देखे हैं। वैलर साहबने कहा कि तुम्हारे यहां जितने चमड़ेके रुपये हों वे सब ले आओ मैं अठारह आनेके हिसाबसे दाम दूंगा। महाजन चला गया पर फिर वापिस नहीं आया।* ऐसी बातोंके लिये लोग यहांतक कह डालते थे कि हमने यह आंखों देखा है। इससे दूसरे भोले लोगोंको विश्वास हो जाता और वे अंग्रेज़ोंको अपना दुश्मन समझने लगते। लोगोंके कारोबार रुकते जाते थे; क्योंकि डरके मारे कोई अपना वाणिज्य व्यापार नहीं बढ़ाता था, सब अस्थिर होते जाते थे।

आगराके पास ही एक दूसरे स्थानपर भी इस समय गदरका पूर्ण विकास था। यह स्थान पठान नवाबोंके स्थान फरूखाबाद-से ६ मील और शाहजहांपुरसे २५ मील है। इसका नाम फतेहगढ़ है। इस जिलेमें दश लाख आदमियों-का निवास था। इनमें नौ लाख हिन्दू और एक लाख मुसलमान थे। ये मुसलमान ही तमाम गदरके बीज थे। यहां तोपोंके लिये गाड़ियां बनती थीं। इस कारखानेका मैनेजर गोलंदाजसेनाका एक अंग्रेज़ अफसर था। १० नं० पैदल सिपाही सेना और गोलंदाजोंकी सेना यहां रहती थी। इस

फतेहगढ़

* Kaye's Sepoy War. Vol III. P. 293

सेनाके सेनापति कर्नल स्मिथका विश्वास था कि उनकी वह सेना और सेनाओंके मुकाबिलेमें जातिभ्रष्ट समझी जाती है; क्योंकि बर्माकी लड़ाईमें यह समुद्र पार गई थी। पर सेनापतिका यह विश्वास अन्तमें निर्मूल साबित हुआ। आचार व्यवहारका कोई भेद इस समय किसीको भिन्न न रख सका। किसी महाशक्तिकी प्रेरणासे सब एक होते चले जा रहे थे। जो जातिगत आचार व्यवहारके कारण इन सिपाहियोंको औरोंसे न्यारा समझते थे उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि समयपर सब एक हो गये, उनमें आचार विचारका भेद रहा ही नहीं।

१० मईको मेरठके ग़दरका हाल फतेहगढ़ पहुंचा। बिजलीके वेगकी तरह यह समाचार एक हृदयसे दूसरेमें दौड़ गया। पर उस समय ऊपरसे सब शान्त रहे। पूरा मई मास इसी तरह शान्तिसे बीत गया। ३ जूनको उन्होंने बरेली और शाहजहांपुरके ग़दरका समाचार सुना। इससे वे हिले। इधर उनके अफसरोंने देखा कि सारा अवधका इलाका ग़दरसे व्याप्त होता जा रहा है। रुहेलखंड भी ग़दरकी लीलाभूमि बना। ऐसी दशामें फर्रुखाबाद कैसे बच सकता था? इसलिये अधिकारियोंने निश्चेष्ट रहना योग्य न समझा। उन्होंने अपनी स्त्रियों और बच्चोंको कानपुर भेजना निश्चित किया, क्योंकि उन्हें पता लगा था कि कानपुरकी छावनी निरापद है। वहां अंग्रेज़ सेनापति थे और इलाहाबादकी सेना वहां जानेवाली थी। कानपुर जानेके लिये

४ जूनको १७० अंग्रेज़ स्त्री बच्चे नावमें बैठे। रातको एक बजे ये निरीह जीव फतेहगढ़से चले।

फतेहगढ़के सिपाही अबतक शान्त थे। पर चारों ओर गदरकी भयंकरता देखकर उनके अफसर इन्तजाम कर रहे थे। वे समझ चुके थे कि एक क्षणमें ये सिपाही भी विद्रोही बन सकते हैं। जिस दिन अंग्रेज़, स्त्रियां और बच्चे फतेहपुरसे कानपुरके लिये रवाना हुए उसी दिन कर्नल स्मिथने खजानेका रुपया किलेमें ले जाना चाहा। पर सिपाहियोंके बाधा देनेसे न जा सका। व्यवहारमें इन सिपाहियोंने अपनी विश्वस्तता प्रगट की और सज्जनताका वर्ताव किया। १६ जूनको इन्होंने अपने सेनापतिको एक पत्र दिया। यह पत्र सीतापुरसे ४१ नं० सिपाही सेनाके सूबेदारने लिखा था। इसमें लिखा था कि वह अपनी सेना सहित सरकारका आश्रय छोड़कर फतेहगढ़से थोड़ी दूरपर आ गया है। अब १० नं० सेना भी अपने अफसरोंको मारकर, खजाना लूटकर उनके साथ हो जाय। जिस आदमीने कर्नल स्मिथको यह पत्र दिया था उसने कहा कि हमारी ओरसे इसका यह जवाब दिया गया है कि, हम बहुत दिनसे सरकारका नमक खा रहे हैं। इसलिये इस समय नमकहराम नहीं हो सकते। यदि ४१ नं० सेना आगे बढ़ेगी तो वे सब उनके विरुद्ध खड़े होंगे। इसी क्षण कर्नल स्मिथ गंगाका पुल तोड़नेको तैयार हुए क्योंकि इसी पुल द्वारा अवधकी सेना आ सकती थी। इस समय भी उनके सिपाहियोंने उनकी सहायता

की। पर जूनका दूसरा सप्ताह भी न बीत पाया और यह आशा निर्मूल हुई। चारों ओर ग़दर ही गदर दिखाई देने लगा। १० सप्ताह उनके सिपाहियोंने समझा कि जब चारों ओर ऐसा भयानक विप्लव हो रहा है अंग्रेज़ोंका ठिकाना नहीं लग सकता। अंग्रेज़ी राज्य समाप्त हो गया। अब गदरमें शामिल होकर जो कुछ ले सको सो ले लो। पुल तोड़नेके बाद सिपाहियोंके अफ़सरोंने कहा कि, बस अब किलामें आत्मरक्षाके लिये तैयार रहनेका समय आ गया।

जब सिपाहियोंने यह बात साफ तौरसे कह दी तब कर्नल स्मिथने अपने अधीन आदमियों सहित किलेमें आश्रय लिया। उन्होंने समझ लिया कि इसी किलेमें रहते हुए उन्हें असंख्य सिपाहियोंके आक्रमण झेलने होंगे, इधर किला कुछ भी मजबूत न था। न उसमें काफी हथियार थे और न भोजन सामग्री ही पर्याप्त थी। बड़ी मुश्किलसे ११ नं० सेनाके एक सिपाहीकी मददसे चालीस पचास बकरियां किलेकी दीवारके भीतर ली गईं। एक सौ बीस ईसाई किलेमें रहे। इनमेंसे एक चौथाई हथियार उठाने लायक थे। बाकी स्त्रियां और बच्चे थे। कर्नल स्मिथने पुरुषोंको हथियार देकर स्थान स्थानपर खड़ा किया।

जिस समय सेनापति किलेमें इस तरह हथियार और खाद्य-पदार्थ संग्रह कर रहे थे और लोगोंको युद्धविद्या सिखानेमें लगे थे तब फतेहगढ़की १० नं० सेना प्रगटमें सरकारके विरुद्ध खड़ी हुई। उन्होंने तोपकी आवाज करके नवाबको सिंहासनपर

बैठाया। अपने दलको बढ़ानेके लिये जेल तोड़कर कैदी छोड़ दिये गये। खज़ानेको उन्होंने अपने लिये रक्खा। पंजाबके महा[illegible] रणजीतसिंहके पुत्र दलीपसिंके हीरे,मोती और [illegible] चारों ओर [illegible] जगह थे। वे भी सब सिपाहियोंके ही [illegible]। नवाबको उन्होंने सिंहासनपर बैठा दिया था, पर उसे एक पैसा भी नहीं लेने दिया। नावोंमें गंगा पार करके ४१ नं० सेनाके सिपाही फतेहगढ़ आये पर १० नं० सेनाने इन्हें भी खजानेका एक पैसा न लेने दिया। इससे ४१ नं० सेनाके सैनिक नाराज हुए। उन्होंने इनको बहुत धिक्कारा कि अंग्रेज़ोंको जीते क्यों जाने दिया। पर इसपर १० नं० सेनाने कान भी न दिया। उन्हें रुपयेकी चिन्ता थी। वे न अंग्रेज़ोंपर हमला करना चाहते थे और न किसी तरहकी अशान्तिके ही पक्षपाती थे, वे रुपयेके भूखे थे। खजानेके रुपये लेकर वे शान्तिसे अपने घरोंकी ओर चलने लगे। जो रह गये उनके साथ परेडके मैदानमें ४१ नं० सेनाके सिपाहियोंसे लड़ाई हुई। दोनों ओरके आदमी मरे। अन्तमें कोई बात होती न देखकर १० नं० सेनाके सिपाहियोंने ४१ नं० सेनावालोंकी बात मानी। दोनों सेनायें मिलकर अंग्रेज़ोंके किलेपर हमला करनेका दिन निश्चित करने लगीं। २५ जून यह दिन निश्चित हुआ। इस दिन सिपाहियोंने अंग्रेज़ोंके किलेपर हमला किया।

धीरे धीरे यह आक्रमणका दिन आ गया। सिपाहियोंने सबसे पहले किलेमें काम करनेवाले कुलियोंपर गोलियां

बंदूकोंसे फेंकने लगे। इस तरह सामानका भी अन्त आगया, युद्धविद्यामें शिक्षित सैनिक भी कम थे, फिर भी उनका उत्साह उनके साथ था। जो दीवानी महकमेमें कलमसे काम किया करते थे उन्हें इस समय सिपाहियोंके मुकाबिलेपर खड़े किलेपर हमला [illegible] थी। और [illegible] क्या अनेक स्त्रियोंने गोलियां चला कर, दूसरे दिन सिपाहियोंने दो तोप लगाईं। पर तोपोंसे कोई फल न देखकर रस्सियोंद्वारा किलेपर चढ़नेकी कोशिश की। दूसरे दिन भी वही कोशिश करते रहे पर कृतकार्य न हुए। इधर अंग्रेज़ोंकी तोपों और बंदूकों-से उनकी विशेष हानि हुई। पाँचवें दिन वे सब उपाय छोड़कर उन्होंने नई तरकीब निकाली। किलेके पास ही हुसेनपुर नामक गाँव था। इस गांवके मकानोंकी छतसे किलेके भीतरका एक हिस्सा अच्छी तरह दिखाई देता था। पांचवें दिन इन मकानोंकी छतपरसे सिपाही गोलियां चलाने लगे। वहांसे फेंकी हुई उनकी गोलियां अंग्रेज़ोंकी बहुत हानि करने लगीं। इस समय उन्होंने किलेसे करीब ७ गजके फासिलेपर एक मकानपर कब्जा कर लिया। यहांसे वे किलेकी दीवारके पास आये और दीवारमें छेद करके गोलंदाजोंपर गोलियां दागने लगे। इससे गोलंदाज़ घबराये, तोपें भी ठंडी पड़ीं। इसके बाद सिपाही सुरंग खोदने लगे। सुरंगमें बारूद भरकर उन्होंने उड़ा दिया। इससे पांच छः गजकी दीवार उड़ गई और रास्ता साफ हो गया। इसके बाद दो बार जोरके हमलेसे उन्होंने किलेमें घुसना चाहा

बैठाया। अपने दलको बढ़ानेके लिये जेल तोड़कर कैदी छोड़ दिये गये। खज़ानेको उन्होंने अपने लिये रक्खा। पंजाबके महा[illegible] रणजीतसिंहके पुत्र दलीपसिंके हीरे, मोती और [illegible] चारों ओर [illegible] जगह थे। वे भी सब सिपाहियोंके ही [illegible]। नवाबको [illegible] उन्होंने सिंहासनपर बैठा दिया था, पर [illegible]

[illegible]लके अंग्रेज़ [illegible]हिम्मत और वीरताके साथ अपनी रक्षा करने लगे। वे तादादमें बहुत कम थे, फिर भी हिम्मत न हारे। उनके निकट स्त्रियां और बच्चे थे। रात और दिन वे खड़े खड़े किलेकी रक्षा कर रहे थे। जिस समय जीवन विपत्तिसे घिर जाता है, प्रतिपल जानका खतरा रहता है, चारों ओर केवल अन्धकारके और कुछ नहीं दिखाई देता, उस समय अंग्रेज़ोंकी कार्यतत्परता, शक्ति और नियमसे रहनेकी शक्ति पूर्ण वेगसे जाग उठती है। संसारकी बहुत कम जातियोंमें यह गुण देखनेको मिला है। गदरके इतिहासमें जहां जहां वे इस प्रकारकी आपत्तिसे घिरे हैं वहीं अपने अधिकारियोंकी सत्ता मानकर उन्होंने योग्यतासे आज्ञाओंका पालन किया है। पर भारतवासियोंमें यह गुण कहीं भी नहीं दिखाई दिया। फतेहगढ़के किलेमें वे बहुत कम थे, बारूद और गोले समाप्त हो गये थे, स्त्रियां और बच्चे कातर हो रहे थे। किलेकी दीवारें चारों ओरसे टूट चुकी थीं, दो तोपें निकम्मी हो गई थीं। फिर भी वे हतोत्साह न थे। उनकी गोलियां सब समाप्त हो गईं तब से कीलें, हथौड़ी तथा लोहेकी अन्यान्य चीजें भर भरकर

बंदूकोंसे फेंकने लगे। इस तरह सामानका भी अन्त आगया, युद्धविद्यामें शिक्षित सैनिक भी कम थे, फिर भी उनका उत्साह उनके साथ था। जो दीवानी महकमेमें कलमसे काम लिया करते थे उन्हें इस समय सिपाहियोंके मुकाबिलेपर खड़े होकर बंदूक पकड़नी पड़ी थी। और तो क्या अनेक स्त्रियोंने बंदूकें उठाई थीं। इस प्रकार विद्रोहियोंके सामने अंग्रेज़ अपने अटल धैर्यका परिचय देने लगे। धीरे धीरे उनके पास जो लोहेका सामान था वह भी समाप्त हो गया। अब उनके वीर सैनिक सिपाहियोंकी गोलियोंसे अपने प्राण खोने लगे। कर्नल स्मिथने सहायताके लिये फ्रेञ्च भाषामें पत्र लिखकर आगरा भेजा था। उनका पत्र पहुंच गया था। आगराके सिपाहियोंके हथियार ले लिये गये थे। आगरासे कुछ गोरे सैनिक भेजनेका प्रस्ताव भी हुआ, पर कार्यरूपमें वह परिणत न हो सका। कर्नल स्मिथ आगराका रास्ता देख रहे थे पर कोई सेना न आई। इसके बाद किलेकी रक्षा उन्होंने असम्भव समझी। अब वे भागनेका रास्ता देखने लगे।

सौभाग्यसे उन्हें भागनेका अवसर मिला। वर्षाके कारण गंगाका पानी बढ़ गया था। इसलिये पानीके रास्तेसे कर्नलने कानपुर पहुँचनेका इरादा किया। तीन बड़ी बड़ी नावें संग्रह की गईं। इनमें ३ जुलाईकी रातको करीब १०० यूरोपियन बैठकर कानपुरकी ओर चले। फतेहगढ़से पहला दल जो यूरोपियनोंका गया था उसके भाग्यमें जैसी दुर्दशा थी, उसका वर्णन कानपुरके

गदरमें हो चुका है। इस दूसरे यात्री दलका भविष्य भी प्रसन्न न था। कर्नल स्मिथ, कर्नल गोल्डी और मेजर राबर्टसन, तीन प्रधान पुरुष तीनों नावोंके कप्तान बने। पर थोड़ी दूर जाते ही कर्नल गोल्डीकी नाव पानी कम होनेके कारण रुक गई। इन्होंने नावको फिर बहावमें डालनेकी कोशिश की पर बेकार गई। पास ही सुन्दरपुर नामक गांव था। सवेरा होते गांववालोंने आकर इनपर हमला किया। कुछ सैनिकोंने उतरकर इन्हें बंदूकोंके जोरसे भगा दिया। नावको चलती न देखकर सब इस नावसे उतरकर कर्नल स्मिथकी नावमें बैठे। इस तरह इन भयातुर प्राणियोंको लिये हुए दोनों नावें गंगाके बहावके साथ आगे चलीं।

अपने जीवनकी रक्षाके लिये उन्होंने फतेहगढ़से यात्रा की थी पर आगे और भी अधिक कठोरताका सामना हुआ। जब सिपाहियोंको मालूम हुआ कि गोरे नावोंपर चढ़ कर भागे हैं तब वे किश्तियोंपर बैठकर उनके पीछे चले। इधर गंगाके दाहिने किनारेपर एक तोप लगाई गई। गंगाके दोनों ओरके उत्ते-जित गांववालोंने इन भागतोंपर हमला किया। ये गांव मुस-लमानोंके थे और मुसलमान ही सबसे अधिक अंग्रेजोंका नाश चाहते थे। इन सब विरोधियोंके सामने यूरोपियनोंका भागना कठिन हो गया। इसी समय मेजर राबर्टसनकी नाव सिंहराम-पुर नामक गांवके पास पानी कम होनेके कारण फिर रुक गई। रुकते ही पीछेसे सिपाही आ पहुंचे। उन्होंने हमला किया।

कानपुरके सतीचौर घाटपर जो कुछ हुआ था वही सिंहरामपुरके पास गंगाके घाटपर हुआ। मेमोंने जान बचती न देखकर अपने बच्चोंको गंगामें डाला और खुद भी कूद पड़ीं। इनमेंसे कई पानीमें डूबकर मर गईं, कई गोलीसे और कई सिपाहियोंकी तलवारसे काम आईं। रावर्टसन आदि तीन आदमियोंने किसी तरह अपनी जान बचाई। पादरीके गहरी चोट लगी। वह अपनी स्त्री और बच्चे सहित गंगामें कूदा पर पानीसे ऊपर न उठ सका। बहुत देर बाद व एक जंगलके किनारे निकला। पर स्त्री और पुत्र डूबकर मर गये। रातभर वह जंगलमें छिपा रहा। सवेरे वह कर्नल स्मिथकी नावमें बैठा। बैठते ही उसको आँसू बहने लगे, उसने कहा, मैं अपनी स्त्री और बच्चेको न बचा सका। एक नीलकी कोठीका गोरा उसके साथ था। पादरी घायल हो गया था। पासके किसानोंकी दयासे उसे भोजन मिला। किसानोंने ही उसे बचाकर रखा। पर दो महीने बाद पादरी मर गया। जिन अंग्रेज स्त्री बच्चोंको सिपाही पकड़कर ले गये थे उन्हें फरूखाबादमें नवाबके तोपोंसे उड़वा दिया गया। बाकी एक नाव जो कानपुरकी ओर गई थी उसके विषयमें कई लेखक कई तरहकी बातें कहते हैं। किसीका कहना है कि वे गंगापर ही मार डाले गये, कोई कहता है कि वे कानपुरमें कैद करके मारे गये। जो कुछ हो, उनका विनाश हुआ। इस प्रकार फरूखाबाद खाली हुआ।

फरूखाबादसे अंग्रेजी अमलदारीके तमाम चिह्न जाते रहे।

भागते अंग्रेजोंकी दुर्दशाका अन्त न था। कोई मारा गया, किसीको पकड़कर मुसलमान बनाकर मारा गया। कोई कोई दयालु भारतवासियोंकी दयासे उनके घरोंमें छिपकर अपने दिन गिनने लगा। नवाब अफजल हुसेनखां फरूखाबादकी गद्दीपर बैठे। पर ये ऐसे योग्य न थे। विषयी और दुराचारी होनेके कारण सरकारके समयमें ही इनके घरका प्रबन्ध ठीक न था। ब्रिटिश सरकारने अपने कर्मचारियों द्वारा उनके खर्च आदिका प्रबन्ध कराया था। इससे निश्चिन्त होकर नवाब अपने भोग विलासमें समय बिता रहे थे। फरूखाबादवाले उन्हें सरकारकी पेंशन खानेवाला अनुगृहीत समझते थे। अब गदरमें वे स्वाधीन नवाब बने। जिनकी दयासे इतने दिन आरामसे गुजारे थे उन्हींके बाल बच्चोंको उन्होंने अब तोपोंसे उड़वाया। इस तरहकी कृतज्ञताका परिचय देकर वे फरूखाबादका शासन करने लगे। नवाबके नामपर प्रजासे नजराना और लगान वसूल किया जाने लगा। सिपाहियोंने उनको नवाब बनाया था इसलिये उनकी ही सबसे अधिक चलती थी। फिरसे सब अधिकारी और अमले रखे गये। पर काममें न शान्ति थी, न नियम। हरएक अपने आपको स्वाधीन समझता था, हरएकको अपने सुखकी सबसे पहले चिन्ता थी। हरएकका ध्यान अपने आराम और अपने भोगविलासकी ओर था। खुद नवाब भी ऐसे ही थे। लोग चारों ओरसे दबाये और सताये जा रहे थे। शान्त प्रजा फिर अंग्रेजी राज्य आनेके लिये मना रही थी।

फतेहपुरकी कथा समाप्त करनेके पहले मजिस्ट्रेट एडवर्ड्सकी बात हमें कहनी है। उन्होंने अपने बालबच्चोंको पहले ही नैनीताल भेज दिया था। उपाय न देखकर चार अंग्रेजोंके साथ वे बदायूंसे भागे थे। वे हिन्दुस्तानी लिबासमें शेखपुरा नामक गांवमें जाकर छिपे। रास्तेमें लोगोंने उनकी खाने पीनेकी चीज़ोंसे ख़ातिर की। एक दिन वे धूपके मारे लड़खड़ाकर रास्तेकी धूलमें ही बैठ गये। पास ही एक गांवमें पेंशन-प्राप्त बूढ़ा सिपाही था। इसे कलक्टरकी हालतपर दुःख हुआ। बूढ़ेने दूध रोटीसे उन्हें तृप्त किया। एक घंटेके बाद फिर उन्होंने आगेकी यात्रा की। जाते समय कलक्टरने सिपाहीको कुछ रुपये देना चाहा, पर बूढ़े सिपाहीने न लिया। उसने कहा— "इस समय मेरी जरूरतसे आपकी जरूरत कहीं अधिक है। मैं घरमें रहता हूं और आप जंगल जंगल घूम रहे हैं। जो आपका राज्य हो तो मुझे और मेरे इस छोटेसे कामको याद रक्खें। इस तरह जगह जगह भटकते और लोगोंसे सहायता प्राप्त करते, वे अवधके अन्तर्गत धरमपुर नामक स्थानमें पहुंचे। यहां हरदेवबक्स नामक एक जमींदार था, उसने इन विपत्तिके मारोंको आदरके साथ अपने घरमें स्थान दिया। कलक्टर और उनके चारों साथी कुछ दिन हरदेवबक्सके घर रहे। धरमपुरके तमाम हिन्दुओंने इनकी सहायता की और जहांतक हो सका आराम पहुंचाया। चारों ओर सिपाहियोंका जोर हो गया था। बदायूं, फर्रूखाबाद, बरेली और फतेहपुरमें नवाबी चल रही थी।

जो अंग्रेज़ोंको पनाह देनेकी बात सिपाहियोंको मालूम होती तो जमींदारका सर्वनाश था पर किसी बातकी परवा न करके हरदेवबक्सने इन्हें रक्खा। अन्तमें उसे मालूम हुआ कि फरूखाबादके नवाबने सुना है कि मेरे आश्रयमें अंग्रेज़ हैं, तब उसने उन्हें किसी निर्जन स्थानकी ओर भेजा। दूसरे ही दिन नवाबके आदमीने आकर कहा कि अंग्रेज़ोंको मेरे यहां हाजिर करो। नहीं तो हरदेवकी जमीनके साथ जान भी ली जायगी। पर हरदेवने इसपर ध्यान ही नहीं दिया। उसने अपने आदमियोंको तैयार रहनेको कह दिया। अंग्रेज़ोंकी दुर्दशाका अन्त न था। वे बड़ी गन्दी और घिनौनी जगहमें पड़े थे। जिस घरमें इनको रक्खा गया था उसीमें गाय भैंस आदि जानवर बंधते थे। इनके गोबर और पेशाबकी बदबूके साथ साथ तरह तरहकी दुर्गन्धिसे ये लोग अधमरे हो रहे थे। इस प्रकार भारतवासियोंकी करुणासे अंग्रेज़ोंके प्राण बचे।

फतेहपुरके गदरके कारण गंगा और यमुनाके बीचके प्रदेशसे अंग्रेज़ी राज्य उठ गया। जिस प्रदेशको अंग्रेज़ोंने अपूर्व वीरता और राजनीतिके बलपर लिया था वह एकाएक छोटेसे कारणसे चला गया। सिपाही विद्रोही हुए पर हर स्थानके सिपाहियोंको अपने भविष्यकी चिन्ताने विद्रोही बनाया।

तीसरा अध्याय

ग्वालियर—इन्दौर—राजपूताना—ग्वालियरके महाराज जयाजीराव सिंधियाकी सेना—ग्वालियरकी घटना—उनकी सेनामें उत्तेजना और विद्रोह—अंग्रेजोंका भागना—महाराज तुकोजीराव होल्कर—इन्दौरकी घटना—राजपूताना।

पश्चिमोत्तर प्रदेशकी घटनाओंसे कालविन साहब चिन्तित थे। जिसपर कुछ सप्ताह पहले शान्तिसे ब्रिटिश शासन हो रहा था वह एकाएक हाथसे जाता रहा। जो कुछ सप्ताह पहले उंगलीके इशारेपर काम करते थे वे ही दुश्मन बन बैठे। ऐसे समयमें यदि शक्तिशाली राजा लोग भी विरोधी होते तो सरकारका पैर जमना कठिन था। कालविन साहब देशी राज्योंकी बात सोचकर चिन्तित थे।

इस समय आगरासे ६५ मीलके अन्तरपर महाराष्ट्रराजा, महाराज जयाजीराव सिंधिया (शिंदे) ग्वालियरपर राज्य कर रहे थे। सन् १८४३ में, जब जयाजीराव नाबालिग़ थे, तब राज्यमें अनेक तरहकी गड़बड़ें हो रही थीं। राज्यके मन्त्रियोंमें अनेक प्रकारके षड्यन्त्र हो रहे थे। उस समय गवर्नर जनरल लार्ड एलनबराने, सन्धिके नियमोंके अनुसार, कुछ अंग्रेज़ कर्मचारी प्रबन्धके लिये रक्खे थे। इनके सुप्रबन्धसे राज्यकी दशा सुधरी। उस समय सरकार हरएक

ग्वालियर

देशी राज्यमें कुछ रक्षित सेना रखा करती थी। राज्यके साथ सुलहके नियमोंमें यह तय हो जाता था कि अंग्रेज़ अफसरोंकी मातहतीमें इतनी सेना राज्यमें तैयार रहेगी, वह सेना काम पड़नेपर सरकार जहां चाहे ले जा सकेगी और उसका तमाम खर्च राज्य देगा। इसी नियमके अनुसार ग्वालियरमें ८००० से भी अधिक सिपाही और २६ तोपें अंग्रेज़ अफसरोंके अधीन थीं। इसके अलावा केवल हिन्दुस्तानी अफसरोंकी मातहतीमें १० हजारके लगभग और सेना राज्यमें थी। लें० गवर्नरकी प्रधान चिन्ता ग्वालियरकी सेनाकी ओरसे थी। जैसे सरकारकी और सेनाओंके सिपाही विद्रोही हो चुके थे, वैसे ही इनका भी भरोसा न था, क्योंकि ये भी वे ही पुर्बिये सिपाही थे। इसलिये अधिकारियोंको राज्यकी रक्षित सेनासे आशा न थी। पर डर यह था कि इस समय जयाजीरावके पास सब मिलाकर अठारह उन्नीस हजार सिपाही सेना तैयार थी, जो वे महाराजपुर और पानियरकी लड़ाईका बदला लेने खड़े हो जायँ या अपना राज्य बढ़ानेके लिये तैयार हों, तो अंग्रेज़ी राज्य संकटापन्न हो जाय। इस समय सब यही सोच रहे थे कि, अब महाराज संधिया क्या करते हैं?

महाराज जयाजीराव उस समय २३ वर्षके नौजवान थे। उनका प्राचीन वंश वीरताके लिये प्रसिद्ध था। दूसरे एक नौजवान शक्तिशाली राजाका लड़ाईकी ओर उत्साह होना साधारण बात थी। पर ज़माना बहुत बदल चुका था। अंग्रेज़ी शक्ति

भारतमें बढ़ चुकी थी। जो कहीं ग़दरसे पचास साल पहले ग़दर होता तो भारतकी पृथ्वीपर अंग्रेज़ी नाम भी नहीं सुनाई पड़ता। उस समयके सब राजा स्वाधीन थे, शक्तिशाली थे। पर ग़दरके समय राजाओंकी शक्तियाँ संकुचित हो गई थीं। ब्रिटिश रेज़ीडेंट राज्यके तमाम कामोंको देखता था। तमाम फौजी महकमाके संचालक अंग्रेज़ थे। जो ये बातें न होतीं तो शायद सिंधिया खड़े हो जाते। पर वे न हुए। महाराजके योग्य मंत्री दिनकरराव बड़े दूरदर्शी थे। जैसे निजाम राज्यको सालारजंगने बचाया वैसे ही ग्वालियरके रक्षक दिनकरराव हुए। इन्होंने राज्यका प्रबन्ध इतनी सुन्दरतासे किया था कि सम्पूर्ण प्रजा सुखी हो गई थी।

इस अवसरपर महाराज सिंधिया ब्रिटिश भारतकी राजधानी कलकत्ता जाकर लार्ड कैनिंगसे मिले। गवर्नर जनरलके सौजन्य शिष्टाचार और अंग्रेज़ोंके वैभवसे उन्हें अनुरक्ति हुई। सरकार-की सहायताके लिये उन्होंने अपनी सेना तयार रखी। पर रेज़ीडेंट मेकफर्सन साहबको इस सेनापर सन्देह था। इसलिये रेज़ीडेंटने महाराजसे उनकी शरीररक्षक सेना भेजनेकी प्रार्थना की। महाराजने बिना संकोच सेना भेज दी। ग्वालियरमें जो रक्षितसेना थी उसपर न महाराजका विश्वास था और न रेज़ीडेंटका। कहा जाता है कि इस समय ग्वालियरकी ये सेनाएं रातको आपसमें मिलतीं और हाथमें गंगाजल लेकर अंग्रे-ज़ोंके विरुद्ध होनेकी कसमें खातीं। इधर उधरसे जो सिपाही

आते उनकी बातें आग्रहसे सुनतीं। वे अंग्रेजों द्वारा अपने धर्म-नाशकी आशंकासे विचलित हुई थीं, परस्पर कसमें खाकर अंग्रेजके दुश्मन बने थे। रेजीडेंटका विश्वास सेनापर न था पर सेनापति ब्रिगेडियर रामसेको अपनी सेनापर विश्वास था। फिर भी रेजीडेंटने अंग्रेज़ स्त्रियों और बच्चोंको एक स्थानपर रखना उचित समझा। रेजीडेंटकी कोठी ही इसके लिये निश्चित हुई। ग्वालियरराज्यकी सेना इसकी रक्षक थी। पर ब्रिगेडियर रामसेने इसका विरोध किया। उन्होंने कहा कि इससे सेनाका अविश्वास करना साबित होगा।

महाराजका राजभवन लश्करमें था और छावनी मुरारमें। मुरार और लश्करमें ६ मीलका अन्तर था। महाराज अंग्रेजोंकी रक्षाके लिये सदा सचेष्ट थे। २८ मईको एकाएक छावनीमें गड़बड़ हुई। अंग्रेज़ स्त्री पुरुष डर गये। सब अपनी रक्षाके लिये रेजीडेंटकी कोठीकी ओर भागे। अंग्रेज़ोंका विश्वास था कि इस रातको ग्वालियरकी सेना उनके विरुद्ध खड़ी होगी। पर अन्तमें यह बात असत्य सिद्ध हुई। अंग्रेज़ अपने डरसे अपने आप लज्जित हुए। पर जब महाराजको समाचार मिला तब वे कुछ सवारोंसे घिरे हुए रेजीडेंटकी कोठीपर आये और अंग्रेज़ स्त्रियों बच्चोंको अपने राजभवनमें भेजनेका अनुरोध किया। दूसरे दिन अंग्रेज़ स्त्रियाँ अपने बच्चोंके साथ राजमहलमें गईं। पर सिपाही इसपर आपत्ति करने लगे। वे कहने लगे कि अपने बाल बच्चोंको भेजकर अंग्रेज़ हमारा विश्वास नहीं

करते। महाराजने उन स्त्रियों और बच्चोंके लिये अपना महल खाली कर दिया था, अपने विश्वासी आदमी उनकी रक्षाके लिये रख दिये थे। हर तरहके खाने पीनेके सामान उन्होंने पहलेसे रखवा दिये थे। पर यूरोपियनोंमेंसे कोई कोई महाराजपर भी शक कर रहा था। एक कपलैण्ड नामक धर्मप्रचारक पादरी अपनी स्त्री सहित वहींपर था। इसकी स्त्री कहती थी—"दुर्भाग्यसे महाराज हिन्दू हैं, इसलिये गौ उनके निकट पवित्र है। हम उनके राज्यमें गोमांस नहीं खा सकते। यह कभी कभी हमारे लिये आगरासे आता है। इस खोटे संस्कारके कारण महाराजपर मुझे बहुत क्रोध आता है।" पादरीपत्नी गोमांस न मिलनेके कारण महाराजसे नाराज थी। ईसाईधर्मका प्रचार करने जो इस देशमें आये थे, उनका यह आक्षेप है। समदर्शिता, उदारता और दया जिस धर्मका मूल है उसके प्रचारकोंका यह हाल!

ऊपर आ चुका है कि ब्रिगेडियरको अपनी सेनापर विश्वास था। इस कारण उन्होंने आत्मरक्षाका कोई आयोजन नहीं किया। रेजीडेंटने कालविन साहबको एक तार दिया था कि महाराजकी शरीररक्षक सेनाको वापिस भेज दिया जाय। यह तार ब्रिगेडियरको दिखाकर दिया गया था। इसके उत्तरमें कालविन साहबने तार दिया कि, जबतक सिपाही विरुद्ध खड़े न हो जायँ तबतक अंग्रेज़ स्त्रियों और बच्चोंको आगरा न भेजा जाय। इस प्रकार ग्वालियरके यूरोपियनोंका भाग्य भँवरमें फँसा। ब्रिगेडियरने जिस सेनापर विश्वास किया था और गवर्नर

तथा ले० गवर्नरको भी लिखा वही सेना अब अविश्वासी होने लगी। राज्योंमें अंग्रेज़ोंकी जो रक्षित सेनायें थीं वे इस समय करीब २ सब विद्रोही हो गई थीं। ४ जूनको नीमचकी एक सेना विद्रोही हो गई। ७ जूनको एक सेना झांसीमें बिगड़ खड़ी हुई। सीपरी और जबलपुरकी सेनाओंमें भी विद्रोह दीखने लगा। इसके अलावा अंग्रेज़ी राज्यके नगरोंसे ले० गवर्नरके पास भयानक समाचार आने लगे। बहुतसे स्थानोंसे अंग्रेज़ भाग खड़े हुए या मारे गये। इन सब स्थानोंसे अंग्रेज़ी राज्य उठ गया। लुटेरोंने सब कुछ अव्यवस्थित कर डाला।

इस समय सब लोगोंका यह विश्वास हो गया था कि अंग्रेज़ी राज्यका अन्त हो गया। ग्वालियरके आदमियोंका भी यही विश्वास था। बहुतसे ग्वालियरवाले महाराज सिंधियाको यही समझा रहे थे। पर तमाम राजकार्यका भार दिनकररावपर था। दिनकरराव दूरदर्शी और विचारशील पुरुष थे। ग्वालियरवाले दिनकररावको अंग्रेज़ी राज्यका पक्षसमर्थक समझकर उनसे जलते थे। फिर भी वे नवयुवक महाराजको तरह तरहके लोभ दिखाने लगे। महाराजने उनकी बातें सुनीं और उनका यथायोग्य उत्तर दिया। उन्हें स्थिर रहनेको उन्होंने कहा, पर किसी तरह उनका पक्ष समर्थन न किया। महाराजकी इस शान्तिके कारण दरबारकी सेनामें किसी प्रकारकी अशान्ति न दिखाई दी पर रक्षित सेना शान्त न रही। वह धर्मनाशके डरसे उत्तेजित हो उठी थी।

१४ जूनको रविवार था। सब यूरोपियन इस दिन शान्तिसे उपासना करते हैं। इसी चिरप्रथाके अनुसार, ग्वालियरके तमाम यूरोपियन स्त्री पुरुष मिलकर, जब प्रार्थना कर रहे थे तब उत्तेजित सिपाहियोंने इनपर हमला किया। सवेरे भी प्रार्थना निर्विघ्न समाप्त हुई। एक मृतको इस दिन समाधि देनी थी, वह क्रिया भी समाप्त हुई। शामको एकाएक शोर मचा। पैदल सिपाहियोंने अपनी बंदूकें उठाईं और गोलंदाजोंने तोपें भरीं। बंदूकोंकी आवाजोंसे यूरोपियन चौंके। अफसर लोग शान्तिसे बैठे बातें कर रहे थे। वे झट वर्दियां पहन और हथियार लेकर सेनाकी ओर दौड़े। इनमेंसे अधिकतर मारे गये। बच्चे और औरतें अपनी रक्षाके लिये बाहर निकलीं। पर सिपाही इस समय निर्दयी हो गये थे। रेजीडेंटके बँगले या सिंधियाके राजभवनमें बहुतोंने प्राण बचाये। बहुतसे सिपाही घायल अफसरोंको अस्पतालमें भी ले गये। तीन यूरोपियन एक घरसे जान बचाने भागे। इनमेंसे एक पैदल था इसलिये वह जल्दी न भाग सका। दो सिपाहियोंने उससे कहा कि हम तेरी जान बचावेंगे। य कहकर उन्होंने उसकी टोपी फेंक दी, पतलून फाड़ डाल , और फेंक दिया और घोड़ेका चारजामा उठाकर कन्धे चले। जिस किसीने रास्तेमें इनसे पूछा उन इनकी दुर्दशाका कि हम अपने साथीकी स्त्रीको ले जा रहे हैं। हलायें अपने पतियोंसे होकर जब वे निरापद स्थानपर जा । सुख सौभाग्यमें पले बच्चे उसे आगरा जानेको कहा। भागते हुए बहुतसे मारे गये थे।

कहीं भी जाना स्वीकार न किया। सिपाहियोंने बहुत जानेको कहा पर वह नहीं गया। तब सिपाहियोंने कहा कि जो तुम्हारी स्त्री जिन्दा होगी तो उसे भी हम लिये आते हैं। २० मिनट बाद उसकी स्त्रीको भी सिपाही ले आये। उसका घर लुट गया था, रुपये पैसे और घड़ी चैन भी छीन ली गई थी। सिपाहियोंने घोड़ेके चारजामेमें मेमको बांधकर, बंदूकको बांसकी जगह बीचमें डालकर, दोनों कंधेपर रखकर ले चले। मेम इस विचित्र डोली-में जा रही थी और अंग्रेज़ उसके बराबर चल रहा था। इस तरह ७ मील रास्ता पार करके सिपाही रेजीडेंटके बँगलेपर आये। इस समय उन्हें एक हाथी मिल गया था। उसपर सब अंग्रेज़ और स्त्रियाँ बैठकर महाराजके भवनकी ओर रक्षाके लिये चले। आध मील आगे बढ़ते ही महाराजकी भेजी छः गाड़ियाँ मिलीं, इनके साथ महाराजके शरीररक्षक सवार थे। अंग्रेज़ बड़ी शान्तिसे राजभवनमें पहुँचे। इस प्रकार विश्वासी सिपाहियोंने अंग्रेज़ोंके प्राण बचाये।

जा. इस घटनासे महाराज सिंधिया चिन्तित और दुःखी हुए। दिवाने ... के कर्त्तव्यका निश्चय न कर सके। रेजीडेंट मेकफर्सन उत्तर दिया। ...के भवनपर गये। रास्तेमें कुछ सिपाही उनपर तरह उनका पक्ष स... पर एक महाराष्ट्रने उनसे कहा कि हम इन्हें कारण दरबारकी सेनामें ...ा रहे हैं। सिपाही वापिस लौट गये। पर रक्षित सेना शान्त न रही। महाराज और मंत्री दोनों बैठे हैं। उठी थी। ...ार उनके चारों ओर खड़े हैं।

रेज़ीडेंट भी बैठे। इनमें सलाह हुई कि जो यूरोपियन भाग गये हैं उनके लिये चम्बलकी ओर और आगराकी ओर सवारियाँ भेजी जायँ। रेजीडेंटने महाराजके पास रहना चाहा पर महाराज इसपर राजी न हुए। उन्होंने सोचा कि रेजीडेंटके यहाँ रहनेसे सिपाही अधिक उत्तेजित होंगे। संभव है वे राजमहलपर भी हमला करें। महाराजने रेज़ीडेंटको भी भागनेकी सलाह दी। रक्षितसेना तमाम विद्रोही हो गई थी, दरबारकी सेनाके विषयमें भी शक था। तमाम प्रजा अंग्रेज़ोंके खिलाफ हो गई थी। ऐसी दशामें महाराजने अंग्रेज़ोंका वहाँ रखना उचित न समझा। रेज़ीडेंटने भी जानेका ही इरादा किया। महाराजने कहा कि इन विद्रोही सिपाहियोंको रुपया देकर इनके घर भेज दिया जाय। पर रेज़ीडेंट इससे सहमत न हुए। उन्होंने कहा कि इन्हें अपने २ कामपर आप बहाल रखिये। महाराजने रेजीडेंटकी सलाहके अनुसार ही काम किया। इस कारण थोड़े समयतक रक्षित सिपाही सेना ग्वालियरमें ही रही। रेजीडेंटने सोचा था कि छुट्टी मिलनेपर सिपाही दूसरे स्थानोंपर जाकर विद्रोह कर सकते हैं, विद्रोहियोंसे मिलकर सरकारकी कठिनाइयाँ और अधिक बढ़ा सकते हैं।

अंग्रेज़ ग्वालियरसे चम्बलकी ओर भागे थे। इनकी दुर्दशाका वर्णन दुःखपूर्ण है। पतिप्राणा अंग्रेज़ महिलायें अपने पतियोंसे सदा सर्वदाके लिये न्यारी हो गई थीं। सुख सौभाग्यमें पले बच्चे अनाथ हो गये थे। छावनीसे भागते हुए बहुतसे मारे गये थे।

पर उत्तेजित होनेपर भी सिपाहियोंने स्त्रियों और बच्चोंपर शस्त्र नहीं चलाये। पादरी कूपलैंड और डाक्टर कार्क उनकी गोलियोंसे मारे गये थे पर उनकी स्त्रियां अक्षतशरीर थीं। अपने पतिको आँखके सामने मरता देखकर उनकी स्त्रीने कहा था—मुझे भी मार। सिपाहियोंने कहा था—"नहीं।" मेमके पास ६ सालका बच्चा था। उत्तेजित सिपाहीने कहा था—"बच्चेको मत मारना।" सिपाहियोंको अपनी ओर आता देखकर कुछ अंग्रेज़ स्त्रियोंने हाथ जोड़कर कहा था—"मत मारो—मत मारो।" सिपाहियोंने कहा—"नहीं, हम मेम साहबको नहीं मारेंगे। साहबको मारेंगे।" कहा जाता है कि सिपाहियोंने स्त्रियों और बच्चोंको नहीं मारा पर उनके रुपये और गहने जरूर छीन लिये। खैर, इन्होंने ग्वालियर त्याग किया। जिस समय ये लोग चम्बलसे दो मील रह गये तब दो सौ सिपाही इनको मारनेके लिये आ गये। जहाँगीर खां नामक हवलदार इनका सर्दार था। यह आदमी पहले सेनामें था, बादमें महाराज सिंधियाके दर्बारमें नियुक्त हुआ था। हरे रंगके कपड़े पहने जहाँगीरखां रेजीडेंट मेकफर्सन साहबके पास आया। पहले इसने बातें बनाकर कहा कि मैं युरोपियनोंको हानि न पहुंचाऊंगा। पर किसीको इसकी बातपर विश्वास न हुआ। सौभाग्यसे दिनकररावकी आज्ञासे बलदेवसिंह नामक एक युद्धकुशल ब्राह्मण अपने हथियारबन्द आदमियोंके साथ शामको आ गया। इसके आनेसे अंग्रेज़ोंको प्रसन्नता हुई। बलदेवसिंहने कुछ आदमियोंको जहाँगीरखांको

रोकनेपर नियुक्त किया और बाकी अपने साथ लेकर अंग्रेज़ोंके साथ चला। इसकी मददसे अंग्रेज़ चम्बलपार हुए। मेकफर्सन साहबके लिखनेसे ढोलपुरके राजाने सवारीके हाथी और रक्षक सेना भेज दी थी। चम्बलके दूसरे किनारे हाथी और सेना मिली। अंग्रेज़ हाथियोंपर बैठकर आगे बढ़े। ढोलपुरके राजाने इनके साथ दया और सज्जनताका व्यवहार किया। राजाने ग्वालियर-की डाक इनतक जारी रखकर समाचार बराबर पहुंचाये। १५ जूनको आगराके अधिकारियोंने ग्वालियरके गदरके समाचार सुने, १७ जूनको ये लोग आगरा पहुंचे। इनके पीछे चलनेवाले अंग्रेज़ १६ और २२ जूनको आगरा पहुंचे। आगराके किलेमें ये निश्चिन्त हुए।

ग्वालियरमें सब मिलाकर बीस अंग्रेज़ मारे गये थे। इनमेंसे किसीका शरीर छिन्न न किया गया था। महाराजने इनकी समाधि करवा दी थी। यह पहले कहा गया है कि अपने एक मरे हुए अफसरको उन्हीं सिपाहियोंने लेजाकर दफनाया था। इस अफसरका नाम मेजर ब्लेक था। ब्लेककी स्त्रीके साथ सिपा-हियोंने भला व्यवहार किया। विधवाकी सहायता करनेके कारण इसके नौकर मिर्जाको पीछे इनाम मिला था।

रेजीडेंटकी सलाहके अनुसार महाराजने सिपाहियोंको छुट्टी न दी। इसी कारण एकाएक आगरापर चढ़ाई न हुई। पर ले० गवर्नर कालविन साहब और चिन्ताओंसे चिन्तित थे। उन्हें समाचार मिला था कि नीमचकी सिपाही सेनायें गवर्मेंटके

विरुद्ध खड़ी होकर आगरापर धावा करने आ रही हैं। पहले नीमच ग्वालियर राज्यके अधीन था, बादमें वहां अंग्रेज़ी छावनी डाली गई। यह स्थान स्वास्थ्यके लिहाजसे बहुत अच्छा था। १८५७ के शुरूमें, नीमचमें दो सिपाही सेना और अव्वल नम्बर रिसाला था। नीमचसे १५० मील उत्तर नसीराबादमें दो पैदल सिपाही सेना, एक गोलंदाज सेना तथा एक बम्बईकी सेना थी।

नीचम और नसीराबाद

कुछ दिनसे उनमें विद्रोहके लक्षण दीख रहे थे। २८ मईको तीसरे पहर वे एकाएक तैयार हो गये। पैदल और गोलंदाज सेना भी तैयार हो गई। पर बम्बईकी सेना तैयार न हुई। पर जब बम्बई सेनाको इनसे तोपें छीननेकी आज्ञा दी गई तब उसने आज्ञाका पालन न किया। इसलिये पैदल और गोलंदाज सिपाही सेनाने अफसरोंपर वार कर दिया। दो अफसर मारे गये और दो घायल हुए। सरकारकी नीति सब सेनाओंके लिये एकसी न थी। बंगालकी सेनायें अपने परिवारोंसे न्यारी होकर दूर देशोंमें पड़ी रहती थीं और बम्बईके सिपाहियोंके साथ उनके बालबच्चे होते थे। नसीराबादमें जो बम्बई सेना थी उसका परिवार साथ था। इसलिये उस सेनाको अपने बच्चोंकी चिन्ता थी। जो वे सिपाही सेनाओंपर हमला करते तो उन्हें डर था कि पीछे सिपाही उनके बाल बच्चों पर फायर करेंगे, इसी कारण वे हुक्म मिलनेपर भी शान्त रहे। यूरोपियनोंके लिये कोई उपाय न रहा। वे अपने

बालबच्चोंको लेकर नसीराबादसे ३० मील दूर ब्यावर भाग गये। सिपाहियोंने उनके घर और अपनी छावनी फूंककर दिल्लीका रास्ता पकड़ा।

नसीराबादके सिपाहियोंके विद्रोही हो उठनेसे नीमचके सिपाही शान्त न रह सकते थे। इनके विषयमें सन्देह पहलेसे ही था। ३ जूनको ये लोग सरकारके विरुद्ध खड़े हो गये और अपने अफसरोंके बंगले फूंककर दिल्लीकी ओर रवाना हुए। इन्होंने जोशमें किसी अफसर या गोरी स्त्रीको नहीं मारा। घटनावश केवल एक गोलंदाजकी मेम मारी गई थी। इस समय इन सबका लक्ष्य मुगलबादशाहकी राजधानी दिल्ली थी। इसलिये आगराके अधिकारी नीमचके सिपाहियोंकी चिन्तासे चिन्तित थे, क्योंकि दिल्लीके रास्तेमें आगरा था। पर सिपाही कभी एक खयालसे नहीं चले। उनके मनसूबे क्षण क्षणमें बदलते थे। जो खयालमें आ गया उसीके अनुसार काम करने लगते थे। नीमचसे आगरा ३०० मील दूर था। इससे निकट एक और महाराष्ट्रराज्य था। उस राज्यमें क्या हो रहा था यही आगे वर्णन किया जाता है।

सन् १७६७ में महारानी अहिल्याबाईने होल्कर राज्यकी राजधानी इन्दौरकी प्रतिष्ठा की थी। महाराष्ट्र राज्यकी यह राजधानी भारतके प्रसिद्ध स्थानोंमेंसे है। मध्यभारतके बीचमें यह

इन्दौर

प्रदेश जमीनकी पैदावारके लिये प्रसिद्ध है। आगरासे इसकी दूरी ४०० मील है। शहरसे १३ मील दूर

मऊ नामक स्थानमें फौजी छावनी है। १८५७ की गर्मियोंमें मऊमें २३ नं० पैदल सिपाही सेना, १ नं० रिसालाके कुछ दस्ते थे। पैदल सेनामें १६ अंग्रेज़ अफसर और ११७६ सिपाही सैनिक, सवारोंमें १३ अंग्रेज़ और २८२ हिन्दुस्तानी, गोलंदाजों-में ६१ गोरे और ६८ हिन्दुस्तानी थे। विपत्तिके समय गोरे गोलंदाजोंपर ही तमाम दारोमदार था। कर्नल प्लेट सबके सेनापति थे।

इन्दौरसे ६ मीलपर ब्रिटिश रेजीडेंटकी दुमंजिली कोठी थी, कोठीके चारों ओर बड़ा बाग था। बाहर बाजार और बस्ती थी। इसके पासही डाकखाना, खजाना और तारका दफ्तर था। सर राबर्ट हैमिल्टन इन्दौरके रेजीडेंट थे पर वे अस्वस्थ होनेके कारण इङ्गलैंड चले गये थे। उनके स्थानपर कर्नल हेनरी डुरांट-राजप्रतिनिधिका काम कर रहे थे। फौजी कामोंमें हेनरी डुरांटकी अच्छी प्रसिद्धि थी। अफगान युद्धमें गजनीका दर-वाजा तोड़कर उन्होंने सेनाको आगे बढ़ाया था। इसके बाद वे इङ्गलैंड चले गये। जब लार्ड एलनबरा गवर्नर जनरल बने तब उनके प्राइवेट सेक्रेटरी बन कर फिर वापिस आये। बादमें दीवानी विभागमें वे काम करने लगे। १८५७ में वे मध्यभारतमें गवर्नर जनरलके एजेंट नियत हुए। सर राबर्ट हैमिल्टन और कर्नल डुरांट भिन्न भिन्न प्रकृतिके आदमी थे। जो राजा पहले स्वाधीन थे, पर समयके फेरमें पड़कर ब्रिटिश सरकारके सामने झुक गये थे उनके साथ सर राबर्ट हैमिल्टनका बर्ताव बड़ी

सज्जनताका होता था। इसी नीतिके अनुसार वे महाराज होल्करके दर्बारका तमाम काम देखा करते थे। पर कर्नल डुरांड इस खसलतके आदमी न थे। उनका विश्वास था कि विना कठोरताके कोई कर्त्तव्य अच्छी तरह समाप्त नहीं होता। उन्हें कोई बात अनिष्टकारी मालूम होती तो वे बड़ी कठोरतासे उसकी मुखालफत करते। उनमें सहनशीलता न थी, आगे पीछे देखकर वे काम न करते थे। वे कल्पनाप्रिय थे, जो बात उनके खयालमें आती उसीके अनुसार काम करते। वे जिस सैनिक-कामके योग्य थे यदि उसीपर रखे जाते तो एक साहसी वीरके नामसे प्रसिद्ध होते। पर शान्तिमय राजनीतिक कामके वे योग्य न थे। क्योंकि राजाओंके साथ उनकी कोई सहानुभूति न थी, सहिष्णुता भी न थी। वे जिस राजाके दर्बारमें प्रतिनिधि थे उस राजाको मुगल बादशाहकी तरह ही विद्रोही समझते थे।

उस समय महाराज तुकोजीराव होल्कर इक्कीस वर्षके युवा थे। वे धीर, शिक्षित और बुद्धिमान थे। रेजीडेंट सर रावर्ट हैमिल्टनने उनकी शिक्षाका अच्छा प्रबन्ध कर दिया था। उम्मेदसिंह नामक एक शिक्षित और अनुभवी ब्राह्मण उनका शिक्षक नियत किया गया था। उम्मेदसिंहको मराठी आदि अनेक प्रकारकी भारतीय भाषाओंका ज्ञान था। अंग्रेज़ीमें वे धारा-प्रवाह बोलते और लिखते थे। इस अनुभवी ब्राह्मणने अपने विद्यार्थीको योग्य बनानेमें कोई कसर उठा न रखी। उसके परिश्रमसे महाराज तुकोजीराव सुशील, विनयी और शान्त बने। इन्दौरके सर्दारोंके

लड़के भी महाराजके साथ शिक्षा प्राप्त करते थे। इन सब साथियोंके कारण महाराजका विद्याप्रेम और भी अधिक बढ़ा था।

जबतक सर रावर्ट इन्दौर राज्यके रेजीडेंट थे, तबतक महाराजको किसी विषयकी असुविधा न हुई। किसी तरहकी शिकायत होती तो वे धैर्यके साथ सुनते और योग्य मालूम होने पर उसका प्रतीकार करते। पर कर्नल डुरांड कड़े स्वभावके आदमी थे। वे एक मरहठा राजाको ब्रिटिश प्रतिनिधिके सामने शिकायत करते अच्छा नहीं समझते थे। उनका विश्वास था कि ब्रिटिश सरकारका प्रतिनिधि सर्वशक्तिमान् है। महाराज होलकर चाहे जितने बड़े क्यों न हों रेजीडेंट उन्हें तुच्छ समझता था। महाराज तुकोजीराव भी इस कठोर प्रकृति रेजीडेंटसे दुःखी हुए। इस समय चारों ओरसे विपत्ति आगे बढ़ रही थी। ग्वालियरकी सेना विद्रोही हो चुकी थी। नसीराबाद और नीमचकी फौजें सरकारके खिलाफ चल पड़ी थीं। दिल्लीसे अंग्रेज़ी राज्य उठ गया था। दिल्लीके बाहर अंग्रेज़ी सेना पड़ी हुई थी। करीब २ सम्पूर्ण पश्चिमोत्तर प्रदेशसे अंग्रेज़ी अमलदारीका नाश हो चुका था। इन्दौरके चारों ओर भी विद्रोहकी आग जल रही थी। उद्धत प्रजा और सिपाही सेना अंग्रेज़ोंको निकाल रही थी। चारों ओर विप्लवके समाचारोंसे महाराज तुकोजीराव चिन्तित और साथ ही दुःखित थे। रेजीडेंटके कड़े व्यवहारके कारण उन्हें कुछ घृणा सी हो गई थी, पर अंग्रेज़ जातिके प्रति यह घृणा न थी। अवस्था कम होनेपर भी उनमें

विचारशीलताके साथ धैर्य था। अंग्रेज़ोंकी शक्तिपर उनका विश्वास था। अंग्रेज़ोंकी दृढ़ता और उनके चरित्रसे वे परिचित थे। इसलिये कर्नल डुरांटके समान वे तमाम अंग्रेज़ोंको न समझते थे। डुरांटके कारण न तो वे अंग्रेज़ोंको घृणाकी दृष्टिसे ही देखते थे और न अविश्वास ही था।

महाराज तुकोजीरावकी चिन्ताका एक और भी कारण था। उनका तोपखाना अस्त्रशस्त्रोंसे शून्य था। विद्रोही सिपाहियोंके हमलेको रोकनेके लिये उनके पास शस्त्र न थे। इन्दौर दर्बारने रेजीडेंट द्वारा बम्बईके गवर्नरको एक हजार बंदूक, तीन सौ जोड़े पिस्तौल और चार लाख टोपी भेजनेको लिखा। गवर्नरने रेजीडेंटको जवाब दिया कि इसका आधा भेज देनेसे ही महाराजको सन्तोष हो सकता है। जिस समय कर्नल डुरांटने गवर्नरको लिखा था तब उन्हें राजाकी ओरसे किसी प्रकारका सन्देह न था। उन्हें यह शक न था कि इन्दौर दर्बार विरोधी होगा। इस समयतक पड़ोसके सिपाही विद्रोही न बने थे। नसीराबाद और नीमच शान्त थे। पर जब नसीराबाद और नीमचकी सेनायें दिल्लीकी ओर चल पड़ीं तब तमाम बातें और भाव बदल गये। नसीराबाद और नीमचके बाद भी मऊकी सेना शान्त थी। एक तो वहाँ कुछ गोरे सिपाही थे, दूसरे कर्नल प्लेटी ३० वर्षके अनुभवी आदमी सेनापतिका काम कर रहे थे। जून मास शान्तिसे बीता पर १ जुलाईको सबेरे ८ बजे कर्नल डुरांटने कर्नल प्लेटीको लिखकर भेजा—"जितनी जल्दी

हो सके अंग्रेज़ी गोलंदाज़ोंको भेजो, इसपर होल्करने हमला कर दिया।"

इस विप्लवके सम्बन्धमें इतिहासलेखकोंमें कुछ थोड़ा मतभेद है। पर मोटी बात यह है कि सवेरे सेनामें किसी प्रकारकी अशान्ति न थी। सिपाही स्नान करके अपने खाने पकानेकी तैयारीमें थे। कोई आपसमें बातें कर रहे थे, कोई खेल रहे थे। इस समय एकाएक तोप चली। सब चौंक उठे। होल्कर रिसालेका एक शहादतअली नामक अफसर आठ दस सवारोंके साथ पुकारकर कहने लगा—"तैयार हो, तैयार हो, महाराज होल्करका हुक्म है, साहबलोगोंको मारो।" देखते २ इधर उधरके उद्धत आदमी एकत्र होने लगे। सेनाके अफसर वंश-गोपालने सिपाहियोंको रोकना चाहा, पर कोई न रुका। वे अपने आप तैयार होकर अंग्रेज़ोंकी ओर बढ़े। गोलंदाज भी तोपें हटाकर गोले बरसानेको तैयार हुए। इस समय कर्नल डुरांट बम्बईके गवर्नरको तार लिख रहे थे। तोपकी आवाज सुनकर वे चौंके। जो तोपें उन्होंने रेजीडेंसी और खजानेकी रक्षाके लिये होल्करसे मांगकर ली थीं उन्हींसे गोले बरसनेकी आवाज सुनकर आश्चर्यमें रह गये। आठ बजेके लगभग होल्करके दो सौ पैदल अंग्रेज़ोंके खिलाफ हो गये। होल्करकी तीन तोपोंसे, सबसे पहले, भोपालके रिसाले और पैदल सेनापर गोले बरसे। कर्नल ट्रैवर्स भोपालसेनाके अध्यक्ष थे। तोपकी आवाज सुनते ही वे तैयार होकर घोड़ेपर बैठकर विपक्षियोंकी ओर

चले पर छः सवारोंके अलावा कोई भी उनके साथ न हुआ। विरोधी बराबर गोले फेंक रहे थे। भोपालकी पैदल सेना सुस्त पड़ी थी। कर्नल ट्रोवर्सने भोपालसेनाको तैयार होकर उनका मुकाबिला करनेको कहा पर वे वैसे ही पड़े रहे। देखकर ट्रोवर्सको आश्चर्य हुआ। एक गोलीसे उनका घोड़ा घायल हो गया, तलवार टूट गई। भोपालकी तमाम सेना और सवारोंने ट्रोवर्सकी आज्ञा नहीं मानी। फिर भी कुछ तैयार हुए और दो तोपोंसे विपक्षियोंके हमलेका जवाब देने लगे। पर इससे कुछ मतलब सिद्ध न हो सका। इस समयकी सब बातें अंग्रेज़ोंके खिलाफ थीं।

इस समय इन्दौरकी सेनामें जो कुछ हुआ उसका किसीको स्वप्नमें भी ध्यान न था। जब सिपाही तोपें तैयार करके गोले बरसाने लगे तब सिपाहियोंको ही आश्चर्य हुआ। फिर सिपाहियोंपर भारतीय या यूरोपियन किसी अफसरकी क्षमता न रही। सब इस एकाएक गड़बड़से आश्चर्यमें रह गये। कर्नल डुरांटके क्रोध और मानसिक उद्वेगका अन्त न था। वे जिन्हें पैरोंके नीचे दबाकर रखना चाहते थे, जो उनकी दृष्टिमें तुच्छातितुच्छ थे उनका यह साहस और पराक्रम उनके हृदयमें बिच्छूकी तरह डंक मारने लगा। उन्होंने भागनेका निश्चय किया। अपनी मनोयातनाके विषयमें उन्होंने स्वयं लिखा है—"जीवनमें जितनी विरक्तिकर घटनायें हुई हैं, उनमें यह सर्वोच्च है। कारण, मैं कभी अपने स्थानको नहीं छोड़ा करता था। पर यदि इस समय मैं इस स्थानपर रहता तो जिनको कष्ट देनेका मुझे अधिकार

नहीं उनको विपत्तिग्रस्त करता। फिर भी मैं सैनिक आदमी हूं, स्थान त्यागसे मेरे आत्मसम्मानको कितना धक्का लगा सो नहीं कह सकता। इस समय यदि कोई गोलीसे मेरे प्राण नाश कर देता तो मैं उसे धन्यवाद देता।" इस तरहकी विरक्तिसे कर्नल डुरांड भागनेको तैयार हुए। स्त्रियाँ और बच्चे तोपोंकी गाड़ियोंमें बैठाये गये, मर्द हाथियोंपर चढ़े। ३०० भोपालके भील, २०० सवार इनके रक्षक होकर चले। रेजीडेंसी छोड़कर ये लोग निर्विघ्न आगे बढ़े। पीछेसे उनकी कोठियां और मकान जल उठे। ये लोग भोपाल पहुंचकर दयामयी बेगमके अतिथि बने। पर बेगमने इनसे कहा कि अधिक दिन यहां रहनेसे उसके राज्य-पर विपत्ति आ सकती है। इसलिये यहांसे भी आगे चले। पर जून मास-समाप्त होते होते इन्दौर ब्रिटिश सेना आ गई, इधरसे दर्बारने भी दृढ़तासे काम लिया। इसलिये भागे हुए अंग्रेज फिर वापिस इन्दौर आये।

इस अवसरपर मऊके सिपाहियोंका भी हृदय हिला। कर्नल प्लेटीपर सिपाहियोंका विश्वास था। इस विश्वासके विरुद्ध प्लेटीने कोई काम भी न किया। गोलंदाज सेनाके अध्यक्ष कप्तान हंगरफोर्डने सिपाहियोंपर पूरा विश्वास न करके अपनी तोपें मैदानमें तैयार रखनेकी आज्ञा मांगी। पर कर्नल प्लेटीने उसे ऐसा करनेकी आज्ञा न दी। फिर कप्तान हंगरफोर्डने अपनी स्त्री और बच्चोंकी रक्षाके लिये एक तोप ठीक स्थानपर लगाना चाहा पर कर्नल प्लेटीने सिपाहियोंके विश्वासमें किसी तरहका

अन्तर न आने दिया। कप्तानको उन्होंने तोप न लगाने दिया। तमाम तोपें तैयारी की गईं पर यूरोपियनोंकी रक्षाके लिये कुछ भी न किया गया। पूरी तरहसे विश्वास दिखाया गया। १ जुलाईको होल्कर सेनाके विद्रोहकी बात सुनकर कप्तान हंगरफोर्ड अपनी तोपें लेकर गये। पर आधा रास्ता पहुंचते पहुंचते सामनेसे भोपाल रिसालेका सवार मिला। इसे कर्नल ट्रोवर्सने भेजा था। उसने कहा कि रेजीडेंट तमाम यूरोपियनों सहित स्थान छोड़ गये। इस समाचारसे हंगरफोर्ड वापिस छावनी आ गये।

हंगरफोर्डने कर्नल प्लेटीको रेजीडेंसीके तमाम समाचार कहकर किलेमें तोपें लगानेकी आज्ञा मांगी। कर्नल प्लेटीने फिर विश्वासकी महिमाका गान किया। दिन बीतने लगे पर हंगरफोर्डको आज्ञा न मिली। वे बार बार सेनापतिसे अपनी रक्षाके लिये तैयार होनेकी आज्ञा मांगने लगे। हंगरफोर्डका आग्रह देखकर सेनापतिका हृदय हिला। शामको उन्होंने आज्ञा दी। हंगरफोर्ड अपनी सब तोपें किलेमें ले गये। इस समय अशान्तिके लक्षण दीखने लगे। यूरोपियनोंके घर रातको आगसे जल उठे। गदरके शुरूमें आग लगने लगी थी। वही यहां भी देखकर यूरोपियन चिन्तित हुए। रातको ६ बजे कर्नल प्लेटीने डुरांडको लिखा—"सब ठीक है, पैदल और सवार शान्त हैं।" इसके एक घंटे बाद ही यह शान्तिमय दृश्य बदल गया। रातको १० बजे सिपाही अंग्रेज़ोंकी हत्याके लिये तैयार हो गये।

उसी समय सेनापति घोड़ेपर बैठकर हंगरफोर्डके पास गये। तमाम तोपें तैयार रखनेकी आज्ञा दी। एक क्षणमें तोपें सट गईं। फिर वे सेनाकी ओर आये। रसदखानेके पास खड़े होकर वे सिपाहियोंको समझाने लगे। पर सिपाहियोंकी गोलीसे उनकी आवाज रुक गई। वे गिर कर मर गये। १ नं० सेनाके नायकपर भी इसी तरह गोली फेंकी गई। पहली गोलीसे घोड़ा गिरा। दूसरी गोलीसे वह खुद मरा। उस रातको दो ही अफसर मरे, बाकीकी प्राणरक्षा हुई।

कप्तान हंगरफोर्डकी तोपें तैयार थीं। पर पहले सिपाही उन्हें दिखाई न दिये। वे किलेसे आध मील दूर छावनीकी ओर बढ़े। अन्धेरेमें उनकी ओर गोलियाँ आने लगीं। पर निशाना न लगा सके। इधर अंग्रेज़ोंके मकान और बंगले जलने लगे। खैर, हंगरफोर्ड छावनीकी ओर गोले फेंकने लगे। सिपाही तोपोंकी मारसे डरकर, दलके दल इन्दौरकी ओर चले। इन्दौरके विद्रोही सिपाही इनके कामोंपर प्रसन्नता प्रगट करने लगे। सिपाही सरकारकी वर्दी और सामान आदि छोड़कर चले गये। अब हंगरफोर्डही सबसे बड़े अफसर थे। उन्होंने मरे हुए अफसरोंको समाधि दी, फौजी कानूनकी घोषणा की। सब कुछ करके महाराज होल्करकी ओर उन्होंने ध्यान दिया। पहले तो उनका खयाल हुआ कि महाराज विद्रोही सिपाहियोंके साथ हो सकते हैं। इस विषयके अनेक गुमनाम पत्र उन्हें मिले थे। पर बिना प्रमाण उन्होंने किसीपर विश्वास न किया। उन्होंने महाराज होल्करको

पत्र लिखा—"मैंने आपके देशी आदमियोंसे सुना है कि आपने सरकारके विरोधियोंको खानेकी चीजें दी हैं। मुझे यह भी मालूम हुआ है कि आपने उन्हें तोपें दी हैं तथा अपना अनियमित रिसाला देकर उनकी सहायता की है। संभव है यह समाचार मेरे पास बहुत बढ़कर पहुंचा हो। मैं अबतक निश्चय नहीं कर सका कि इसपर विश्वास करूं या न करूं। मैं झूठी बातोंपर विश्वास करनेको तैयार नहीं हूं। आप सरकारके अनेक प्रकारसे ऋणी हैं फिर भी यदि आप सरकारके विरुद्ध हों तो आपका सर्वनाश निश्चित है। मैं अभीतक विश्वास नहीं करता कि आपने सरकारके दुश्मनोंकी मदद करके अपनी हानि की है।" हंगरफोर्डका यह पत्र मिलतेही महाराजने उसके जवाबमें लिखा—"आपने जो कुछ सुना वह बढ़ाकर नहीं। बिलकुल झूठ है। इन्दौर और मऊमें जो कुछ हुआ है उसके कारण मुझे जितना दुःख है उतना शायद ही किसीको हो। मैंने ब्रिटिश सरकारकी मित्रतासे पृथक् होनेका खयाल कभी स्वप्नमें भी नहीं किया। अंग्रेज़ोंकी न्यायपरायणतापर मेरी पूर्ण आस्था है। जो राजा सदा कृतज्ञताका परिचय देनेको तैयार है उसपर सन्देह करते हुए अंग्रेज़ अफसरका आत्मसम्मानही सबसे पहले बाधक होगा।" इस पत्रके साथ महाराजने दो राज्योंके उच्च कर्मचारियोंको मऊ हंगरफोर्डके पास भेजा, जिससे वे १ जुलाई-की इन्दौरकी तमाम घटना सेनापतिको समझा दें। सुनकर हंगरफोर्ड निःसन्देह हुए।

इस प्रकार इन्दौर राज्यका प्राधान्य नष्ट हुआ। गोलंदाज सेना अब अपना कर्त्तव्य समझकर काम करने लगी। किलेकी रक्षाके लिये उन्होंने हर तरहकी तैयारी की। खाद्यसामग्री एकत्र कर ली। छावनीका तोपखाना उड़ा दिया गया। किलेकी दीवारों-पर तमाम तोपें लगा दी गईं। एक महीनेतक लड़ने योग्य युद्ध-सामग्री रक्खी गई। अब वे बड़े अधिकारियोंकी आज्ञाकी प्रतीक्षा करने लगे। पर कोई आज्ञा न आई। कर्नल डुरांटको पत्र लिखा पर उसका कोई उत्तर न मिला। अनन्तर गवर्नर जनरलके प्रतिनिधिकी हैसियतसे उन्होंने बम्बईके गवर्नर लार्ड एलफिन्स्टन-को पत्र लिखा। इस प्रकार कप्तान हंगरफोर्डने सब बातोंमें अपने आपको आगे बढ़ाया। जिस कामका उन्हें अधिकार न था उन सबका सम्पादन उन्होंने किया। कर्नल डुरांट उनके कामोंको 'अनधिकार चर्चा' कहते थे। पर इसमें सन्देह नहीं कि उनकी अनधिकार चर्चाके ही कारण ब्रिटिशराज बचा रहा।

इस विपत्तिके अवसरपर महाराज तुकोजीराव होल्करकी मानसिक शान्ति भाग गई थी। कर्नल डुरांटकी तरह महाराज भी एकाएक तोपकी आवाजसे चौंक उठे थे। वे यह समझ रहे थे कि उनकी सेनाही तोपें चला रही है पर क्यों चला रही है यह वे न समझे। उनके महलमें गड़बड़ हो गई थी। नौकर चाकर डरकर इधर उधर भाग रहे थे। महाराज यह निश्चय न कर सके कि इस समय किससे सलाह लेनी चाहिये। एक आदमीने आकर उनसे एक बात कही, दूसरेने उसी समय उसके विरुद्ध समाचार

दिया। इस तरह किसी बातकी स्थिरता न रही। जब वे थोड़ी देरमें स्वस्थ हुए तब सुना कि गवर्नर जनरलके वीर प्रतिनिधि रेजीडेंसी छोड़कर जा रहे हैं। पर वे किस ओर गये हैं सो कोई न बता सका। महाराजने यह स्वप्नमें भी न सोचा कि विपत्तिके प्रारम्भमें ही एक ब्रिटिश दूत इस तरह स्थान त्याग करेगा। अब इससे उनके आश्चर्यकी सीमा न रही, साथ ही चिन्ता भी हुई। उन्हें अपने चारों ओर इस समय कोई योग्य पुरुष दिखाई न दिया।

पर इस एकाएक आई विपत्तिसे थोड़ी देरके लिये घबरा जानेपर भी महाराज कर्त्तव्यहीन न हुए। वे समझ गये थे कि जब उनकी सेनाने रेजीडेंसीपर हमला किया और ब्रिटिश दूत वहांसे भाग गया तब उनके सिर कलंकका टीका जरूर लगेगा। ब्रिटिश सरकारके सामने इस काले धब्बेको हर तरहसे साफ करना उनका कर्त्तव्य था। सवेरे ८ बजे सिपाहियोंने हमला किया और १०॥ बजे रेजीडेंट भाग खड़े हुए। इन दो घंटोंमें महाराज होलकरके सामने अनेक प्रकारके समाचार पहुंचे। इसके बाद युवक महाराजने अपना कर्त्तव्य निश्चित किया। इन्दौरमें इस समय जो कुछ थोड़ेसे यूरोपियन थे उन्हें महाराजने अपने महलमें छिपाया। ११ बजेके करीब शहादतखां खूनसे भीगा हुआ महाराजके सामने हाजिर होकर कहने लगा कि उसने रेजीडेंटपर हमला करते हुए एक अंग्रेज़का खून किया है। महाराजने उसी समय उसे कैद करनेका हुक्म दिया। इस प्रकार १ जुलाईका

दिन बीता। इसके बाद दो दिन तक इन्दौरमें तरह तरहके उत्पात हुए, क्योंकि सिपाहियोंके समान साधारण प्रजा भी उत्तेजित हो उठी थी। शान्ति और नियम उड़ गये थे। हर स्थानपर लूट मार और डाके होने लगे थे। मानों इन्दौरसे महाराजका राज्य उठ गया था। दो दिन तक ब्रिटिश सेना उनकी मददके लिये न आई। विद्रोही लोग महाराजसे उनके आश्रित अंग्रेज़ोंको मांगने लगे। चारों ओर इस तरहका भयानक कांड देखकर महाराज अस्थिर हो गये। वे ४ जुलाईको विश्वासी नौकरोंसे घिरे हुए, हाथीपर बैठकर तलवार हाथमें लिये हुए विद्रोही सिपाहियोंके खेमेमें गये। उनके पहुंचतेही शोरके मारे आकाश फटने लगा। फिर सब शान्त हो गये। जब सब शान्त हो गये तब महाराजने गम्भीरतासे कहा—"मेरे महलमें जितने यूरोपियनोंने आश्रय लिया है वे जब तक जीवित रहेंगे तब तक मैं उनकी रक्षा करूंगा। वे यदि मर गये तब भी उनके शरीर मैं किसीको न दूंगा। मैं अपने प्राण दे दूंगा, पर अपने शरणागतोंको कभी न दूंगा। तुमने अंग्रेज़ोंपर हमला करके मेरी आज्ञाओंको तोड़ा। धर्मके नामपर किसीको किसीपर हमला करने या प्राण लेनेका अधिकार नहीं है। सच्चा धर्म कभी किसीकी जान लेनेकी आज्ञा नहीं देता। तुम धर्मके नामपर लूट मत करो, डाके मत डालो, नहीं तो राजाका धर्म पालन करनेके लिये मैं तुम्हें दंड दूंगा।" पर विद्रोही सिपाहियोंने अपना हठ न छोड़ा। उन्होंने यह कह कर महाराजकी बातका जवाब

दिया—"आप अपने पहले महाराज यशवन्तरावके वीरत्वकी बात सोच कर देखें। अभिमानी और कृतघ्न अंग्रेज़ोंका राज्य भारतसे उठ गया। अब आप अपने हाथकी तलवार ऊंची करके हमें दिल्लीकी ओर चलाइए। इसमें पीछे पैर रखकर कायरता न दिखाइये।" महाराज होल्करने इसका भी जवाब दिया, वे शान्त रहे। शान्तिके साथही कहा कि, मैं अपने बड़ोंके समान शक्तिशाली और वीर नहीं हूं। मैं शरणागत और असहायके वधको पाप मानता हूं। महाराजकी इस बातसे लोगोंने समझा कि युद्धके समय भी ऐसे नृशंस काम करने बुरे हैं। महाराष्ट्र साम्राज्यके संस्थापक महाराज शिवाजीने नियम बनाया था कि युद्धके समय गौ, किसान और स्त्रियोंको हानि न पहुंचाई जाय।

इसके बाद महाराज होल्कर वापिस अपने राजमहलमें आये। उत्तेजित सिपाही कुछ शान्त हुए। लोगोंने लूट मार बन्द की। लूटका धन तोपें और बंदूकें लेकर सिपाही दिल्लीकी ओर चले। महाराज अंग्रेज़ी खजानेका जितना रुपया बचा सके थे उनके साथ रक्षित अंग्रेज़ोंको अपने आदमियोंकी रक्षामें मऊ सेनापति हंगरफोर्डके पास भेज दिया। इसके अलावा राजके अलंकार और कम्पनीके कागज भी रक्षाके लिये मऊ भेजे। जिस दिन उत्तेजित सिपाहियोंने रेजीडेंसीपर हमला किया उसी दिन महाराजने एक पत्र सेनापति डुरेंडके नाम मऊ भेजा था। उसमें उन्होंने साफ लिखा था कि सेनाएं उनके वशमें

नहीं हैं, वे आज्ञा नहीं मानतीं। इसी दिन बम्बईके गवर्नर एल-फिन्स्टनके पास भी उन्होंने इसी आशयका पत्र भेजा था, इस पत्रमें उन्होंने घटनाका आनुपूर्विक वर्णन देकर सहायताके लिए सेनापति उडवर्नको भेजनेके लिये लिखा। कर्नल डुरांटके पास भी उन्होंने इसी आशयका पत्र भेजा। इस प्रकार युवक महाराज हर तरहसे अपने आपको अंग्रेज़ोंका मित्र साबित करते हुए राज्यका उद्धार करने लगे।

इस समय एक बातसे महाराजकी चिन्ता और अधिक बढ़ गई। उन्होंने सुना कि, आमजीराके महाराजने उनके किलेपर कब्जा कर लिया। कप्तान हचिन्सन इन्दौरकी भील सेनाके सेनापति थे। हचिन्सनने राबर्ट हैमिल्टनकी कन्यासे विवाह किया था। इन्हें महाराजने भील सेनाका सेनापति बनाया था। ये भूपावर नामक स्थानके निकट अपनी सेना सहित पड़े थे। २ जुलाईको समाचार पहुंचा कि महाराजने अपनी सेना सहित रेजीडेंसीपर हमला किया है। इससे मालवाके छोटे २ जागीरदार चिन्तित हुए। कप्तान हचिन्सन भूपावरमें थे, उन्होंने सुना कि आमजीराके स्वामी उनपर हमला करेंगे। आमजीरा सिंधियाका करद राज्य था। भूपावरमें दो सौ भील सैनिक थे। इन्हें लेकर हचिन्सन अपने स्थानकी रक्षा करने लगे। २ जुलाईकी रातको उनके पास समाचार पहुंचा कि पासके धार नामक गांवसे उत्तेजित मुसलमान भूपावर आ रहे हैं। इस समय केवल ३० भील हचिन्सनके पास थे। बाकी भील डरकर भाग गये थे। इस कारण

कप्तान हचिन्सन और उनके एक सहायक अपने स्त्री-बच्चोंको लेकर भागने लगे। वेश बदलकर, पारसी बनिये बनकर वे जबूया नामक स्थानकी ओर चले। जबूया आमजीराका एक छोटा करद राज्य है। इसमें अधिकतर भीलोंका निवास है। खैर, इन भागे हुए अंग्रेज़ोंने अपनी रक्षाके लिये जबूयाके जागीरदारको कुछ सैनिक भेजनेको कहलाया। एक सौ भील जबूयासे इनकी रक्षाके लिये आ गये। कुछ निश्चिन्त होकर वे एक गांवमें पहुंचे। वहांके जागीरदारने इन्हें भोजन दिया। ५ जुलाईको वे जबूया पहुंचे।

जबूयाका जागीरदार सोलह सालका लड़का था। नाबालिग होनेके कारण उसकी दादी राज्यका काम करती थी। इस वृद्धा स्त्रीने अतिथियोंकी रक्षाका प्रबंध किया कुछ विश्वासी राजपूत रक्षक नियत हुए। वहां कुछ अरब मुसलमान थे। वे अंग्रेज़ोंके आनेसे अधिक जोशमें आये, पर राजपूतोंने उन्हें किसी तरह भी पास न आने दिया। महाराज होल्करको खबर मिली कि जबूयाके ठाकुरने अंग्रेज़ोंको कैद कर रखा है। इससे महाराजने उनके उद्धारके लिये एक सेना और कुछ तोपें भेजीं। पर जब उन्हें सच्चा समाचार मिला तब उन्होंने सेना वापिस बुलाकर अंग्रेज़ोंको लानेके लिये थोड़से रक्षक भेजे। १२ जुलाईको रक्षित अंग्रेज़ राजपितामहीसे बिदा हुए। वे शीघ्रही मऊ पहुंचे। वहां हंगरफोर्डने उन्हें ब्रिटिश रेजीडेंटका काम सौंपा। महाराज इससे भी निश्चिन्त हुए।

इस समय कर्नल डुरांटने महाराजको जिस दृष्टिसे देखा था और महाराजने अपने आपको निर्दोष साबित करनेके लिये जो कुछ किया था, उसपर दो पक्ष हैं। एक पक्षने महाराजको निर्दोष बताया है। दूसरेने कर्नल डुरांटका पक्ष समर्थन किया है। पर इस समय न कर्नल डुरांटही हैं और न महाराज हैं गदरकी बात भी पुरानी ऐतिहासिक घटना हो गई है। पर महाराजने हर पत्रमें साफ कहा है कि मेरी सेना कहा नहीं मानती, मेरी आज्ञाओंका वह उल्लंघन कर रही है। अपने अलंकार तक उन्होंने मऊ भेजे थे, बम्बईके गवर्नरको सहायताके लिये लिखा था, आश्रित अंग्रेजोंकी रक्षा की थी, विद्रोहियोंको शान्त करने गये थे। इन सब बातोंसे साबित होता है कि वे विवश हो गये थे। सिपाही सेना उनकी आज्ञा न मानती थी। शहादतखां उनकी आज्ञासे गिरफतार किया गया था। सितम्बरमें उसे फांसी दी गई। उस समय उसने स्वीकार किया था कि दर्बारकी ओरसे किसीने उससे विद्रोहके लिये नहीं कहा। १ जुलाईको रेजीडेंसीके आक्रमणका समाचार सुनते ही महाराज वहां नहीं गये, इसलिये कि कहीं उन्हें उपस्थित देखकर सिपाही उत्साहित न हों। जब सेनाको उनकी ओरसे किसी तरहका उत्साह न मिला तब सिपाही दिल्लीकी ओर गये। इससे महाराजका धैर्य और बुद्धिमत्ता मालूम होती है। जो धैर्य और शान्तिसे विचार करते हैं उन्हें महाराजका कोई दोष नहीं दिखाई देता। इधर कर्नल डुरांट बिना सोचे समझे डरकर झट रेजीडेंसी छोड़ भागे। डुरांटकी

दलीलें हैं कि सामने हथियारबंद सिपाही थे, उनका भवन रक्षाके योग्य न था, मऊकी सिपाही सेना विश्वासके योग्य न थी, महाराज होल्कर इच्छासे हो या अनिच्छासे अपनी सेनाको वशमें रख नहीं सकते थे। पर ऊपरवाली घटनाओंसे साबित होता है कि मऊमें सहायक सेनाकी कमी न थी। कप्तान हंगरफोर्ड उसी समय अपना तोपखाना लाये थे। फिर कर्नल डुरांड खुद भी एक योग्य सैनिक थे। पर वे इस तरह महाराजके सिर कलंक मढ़कर रेजीडेंसी छोड़ भागे। बम्बई गवर्मेंटने इनके भागनेपर कहा था कि दो बातें हो सकती हैं, या तो महाराज बेईमान हों या रेजीडेंट अविचारी हो। सब बातोंका विचार करके अन्तमें गवर्मेंट दूसरे निश्चयपर पहुंची थी।* कर्नल डुरांडने केवल महाराज होल्करपर ही कलंक न मढ़ा था बल्कि उन्होंने धार नामक जागीर लेनेका भी प्रस्ताव किया था; कारण नाबालिग जागीरदारके नौकरोंने गवर्मेंटके आदमियोंकी मुखालफत की थी। पर कम्पनीके डाइरेक्टरोंने ऐसा न किया। डाइरेक्टरोंने इस सम्बन्धमें भारत सरकारको लिखा था—"हम इस कारण धार राज्यको किसी तरहकी सजा नहीं दे सकते। जब ग्वालियर और इन्दौर जैसे राज्य और शक्तिशाली ब्रिटिश गवर्मेंट अपने सिपाहियोंपर काबू न कर सकी तब छोटा और कमजोर धार राज्य क्योंकर अपने आदमियोंपर काबू कर लेता। अपने घरमें आग लगाकर, जब

* Kaye's Sepoy War, Vol. III. P. 346.

उसी आगसे पड़ोसियोंके घर भस्म कर दिये जायं, तब उन्हें दोषी बनाना न्यायसंगत नहीं। कर्नल डुरांटकी दलीलें भी ऐसी ही हैं।" इससे सिद्धान्त निकलता है कि कर्नल डुरांटके काम अयोग्य और महाराज होल्करके योग्य थे।

फिर भी डुरांटके लगाये कलंकसे महाराज बहुत दिनतक मुक्त न हो सके। जब बोर्ड आफ कंट्रोलरने गदरके बाद भारतके सहायक राजाओंकी सूची मांगी तब लार्ड कैनिंगने होल्करका नाम इस सूचीसे काट दिया। सन् १८६४ की ४ जुलाईको भारत-मंत्री सर चार्ल्स वुडने भारतके गवर्नर जनरल सर जान लारेंस (बादमें लार्ड लारेंस) से पूछा कि होल्करका सम्मान क्यों नहीं किया गया। इस समय परराष्ट्र विभागके मंत्री कर्नल डुरांट थे। उन्होंने वही पहलेवाली बात लिख दी। जब लार्ड मेयो गवर्नर जनरल बने तब उन्होंने भी होल्करके विषयमें पूछा। पर-राष्ट्र-विभागने फिर वही जवाब दिया। इस प्रकार एकके बाद दूसरा और दूसरेके बाद तीसरा भारतमंत्री और गवर्नर जनरल महाराज होल्करके असम्मानकी बातें पूछते रहे और पर-राष्ट्र-विभाग उन्हें यही जवाब देता रहा कि महाराज १८५७ की १ जुलाईसे ५ जुलाईतक उदास थे। पर इतिहासलेखकोंने महा-राजके इस धब्बेको दूर करनेमें कसर न की। के, मालेसन आदि लेखकोंने महाराजका सम्मान किया। इधर कर्नल डुरांट ऊंचेसे ऊंचे ओहदेपर बढ़ने लगे। वे पंजाबके ले० गवर्नर हो गये। पर शीघ्र ही उनका देहपात हुआ।

पश्चिमोत्तर प्रदेशके ले० गवर्नर कालविन साहब मध्य प्रदेश-के महाराष्ट्र राज्योंके कारण जैसे चिन्तित थे वैसे ही वे एक ओर बड़े भारी देशकी चिन्तासे उद्विग्न थे। राजपूतानाके स्वाधीन राजा शक्तिके साथ राजकार्य कर रहे थे। ये स्वाधीन साथ ही शान्त थे। आपसमें ऐक्य न था। ब्रिटिश गवर्मेंटपर सबकी श्रद्धा थी। ये लोग मुसलमानों, मरहठों और पिण्डारियोंसे खूब सताये गये थे; इस कारण शान्तिप्रिय और शक्तिशाली अंग्रेज़ गवर्मेंटके पक्षपाती थे। ग़दरसे पहले एक बार यह अफवाह उड़ी थी कि गवर्मेंट राजपूतानाको अपने राज्यमें शामिल करेगी। यद्यपि यह अफवाह गलत थी और कम्पनीके डाइरेक्टरोंने इसे निर्मूल बताया भी था पर इसीसे राजपूतानामें हलचल मच गया था। ग़दरसे पहले अन्यान्य स्थानोंकी तरह, राजपूतानाके निवासियोंका भी यह विश्वास हो गया था कि गवर्मेंट सबका धर्मनाश करनेपर तुली हुई है। कोई कोई दिल्लीके बादशाहके फिर तख्तपर बैठनेके संबंधमें अनेक प्रकारकी बातें कहता था। यद्यपि इन अज्ञान मूलक बातोंसे कोई भय न था, पर आगराके अधिकारी राजपूतानाको भी शककी दृष्टिसे देखते थे।

राजपूताना

जोधपुर, उदयपुर, जयपुर आदि अठारह स्वाधीन राज्य राजपूतानामें हैं। इनमेंसे सत्रहपर हिन्दू राजपूतोंका राज्य है और एकपर मुसलमान अधिपतिका। प्रसिद्ध पिण्डारी सर्दार अमीरखांके वंशवाले टोंकपर राज्य कर रहे हैं। खैर, इन अठा-

रह राज्योंमें छः स्थानोंपर ब्रिटिश रेजीडेंट रहते हैं। राजपूताना-का प्राकृतिक दृश्य मनोहर तथा विचित्र है। अर्वली पर्वतमालासे घिरा यह प्रदेश वीर, रौद्र, करुण रसका संचार करता है। एक ओर बीकानेर जोधपुरकी भयानक मरुभूमि, दूसरी ओर उदयपुर सिरोहीकी हरी पहाड़ी भूमि विचित्र है। ऊपर कहा जा चुका है कि राजा लोग गवर्मेंटसे असन्तुष्ट न थे, पर जागीरदार सन्तुष्ट भी न थे। उन्हें गवर्मेंटके कारण अपनी सम्पत्ति बढ़ानेका अवसर न मिलता था, जितनी गांवकी आमद थी उसीपर किसी तरह दिन काटने पड़ते थे। लूट, मार और डाकोंसे उन्हें हाथ खींचना पड़ा था।

राजपूतानाके कामोंके लिये आबूमें एक ब्रिटिश रेजीडेंट रहता है और उसकी अधीनतामें एजेंट राज्योंके कामोंकी देख भाल करते रहते हैं। उस समय सर हेनरी लारेंसके एक भाई कर्नल जार्ज लारेंस ब्रिटिश रेजीडेंट थे। ये भी जान लारेंसकी तरह निर्भीक और कर्त्तव्यपरायण थे। जब मेरठके गदरका समाचार इनके पास आबू पहुंचा, तब इन्होंने अपने कठोर कर्त्तव्यको सामने देखा। इस समय एक लाख तीस हजार वर्ग मीलसे भी अधिक भूमिके वे रक्षक थे। मेरठके समाचारसे चार दिन बाद उन्होंने एक घोषणा प्रगट की। इस घोषणामें उन्होंने सब राजाओंको अपनी अपनी फौजें तैयार रखने और प्रजामें अमन बनाये रखनेका अनुरोध किया। उनके सहायक एजेंट भी इसके लिये तैयार हुए। पश्चिमोत्तर प्रदेशके ले० गवर्नर कालविन साहबने

कर्नल लारेंसको तमाम गोरी सेना और गवर्मेंटका खजाना लेकर आगराकी रक्षाके लिये आनेको लिखा। इससे कर्नल लारेंसको बड़ा आश्चर्य हुआ। वे यदि अपने रक्षित स्थानको छोड़ें तो राजपूतानामें गड़बड़ होनेका अंदेशा था। राजपूतानाके बीचमें ब्रिटिश राज्य अजमेर है। यहां हर तरहके हथियारों और लड़ाईके सामानोंसे भरा मेगजीन था। यहांके खजानेमें रुपया भी काफी था। राजपूतानाके महाजनों और कोठीवालोंका धन भी यहीं था। कर्नल लारेंस अपनी जिम्मेदारी समझकर आगे न बढ़े। इधर कालविन साहब भी अपनी युक्तिको असारता समझकर चुप हो रहे। बल्कि कर्नल लारेंसको अधिक शक्तिशाली बनानेके लिये कालविन साहबने उन्हें राजपूतानाकी तमाम सेनाओंका ब्रिगेडियर जनरल बना दिया। इधर लारेंसने सबसे पहले अजमेरकी रक्षाका निश्चय किया। अजमेरमें एक सिपाही सेना और एक माहीर नामक निम्न जातिकी सेना थी। पहले माहीर असभ्य थे, पर अजमेरके कमिश्नरके प्रयत्नसे वे सैनिक बने। यह सेना देवली नामक स्थानपर थी। सिपाहियों और माहीरोंमें अधिक ऐक्य न था। किसी तरहकी गड़बड़ होनेसे पहले ही ब्रिगेडियर लारेंसने अजमेरसे सिपाही सेना हटाकर उनके स्थानपर माहीरोंका रखना निश्चय किया। उनकी आज्ञासे लेफ्टिनेंट कार्नेल नामक अफसर देवलीसे माहीर सेना लेकर अजमेर आया। अजमेरकी रक्षा हुई साथ ही राजपूताना भी ग़दरके झपेटसे बचा।

राजपूत राजाओंमें उदयपुरके महाराणा सबसे प्रधान समझे जाते हैं। इनका वंश जैसा प्राचीन गौरवशाली है वैसे ही अपार वीरताके लिये भी प्रसिद्ध है। जिस समय राजपूतानाके अन्यान्य राजाओंने मुगलोंकी अधीनता स्वीकार कर ली थी उस समय भी मेवाड़के महाराणा स्वाधीन थे। जिस समय राजपूत राजाओंने मुगलोंसे विवाह-सम्बन्ध प्रचलित किया था, उस समय महाराणाने घृणा प्रगट की थी। ऐसे राजाओंके साथ उन्होंने हर तरहका नाता तोड़ दिया था। अपने जातीय गौरव और स्वाधीनताकी रक्षाके लिये उन्होंने किसी कष्टको कष्ट नहीं समझा। महाराणा प्रताप संग्रामके बाद संग्राम करते हुए जंगलसे जंगल और पहाड़से पहाड़ घूमते रहे, अन्तिम सीमाके कष्टोंका उन्होंने सामना किया, पर अपने वंशगौरव और स्वाधीनताको हानि न पहुंचने दी। ऐसी राजस्थानकी भूमि गौरवमय पुण्यपुरुषोंसे पवित्र है। राजपूत उस देवतुल्य प्रतापसिंहके महत्वको कभी भूल नहीं सकते। गदरके समय इसी वीरभूमि मेवाड़के महाप्रतापी महाराणापर अंग्रेजोंकी कड़ी नजर थी। कप्तान शावर्स गदरके अवसरपर उदयपुरके एजेंट थे। १८५५ में मेवाड़के कुछ सर्दारोंके कामोंपर सर हेनरी लारैंस और कर्नल लारैंसको सन्देह पैदा हुआ। इन दोनोंने अंग्रेजी सेना भेजकर इन दोनों अबाध्य सर्दारोंको दबानेका प्रस्ताव किया। यह काम महाराणाके प्राधान्यको बनाये रखनेके लियेही किया गया था। सन् १८५७ में जब चारों ओर गदरकी भयानक आग जल रही थी तब महाराणासे ब्रिटिश

रेजीडेंटकी मित्रता ही थी।* जो कुछ हो गर्मियोंके अवसरपर महाराणा साहब तालाबमें बने एक सुन्दर महलमें निवास कर रहे थे। जब उन्हें ग़द्रका हाल मालूम हुआ तब उन्होंने अपने योग्य सैनिकों द्वारा गवर्मेंटकी सहायता करनेका वचन दिया। अपने कुछ सर्दारोंको कप्तान सावर्सके पास भेजा और बाकी जागीरदारोंके नाम पत्र भेजे गये। इस प्रकार महाराणा साहब हर तरहसे गवर्मेंटका पक्ष समर्थन करने लगे।

कप्तान सावर्सको नीमच और नसीराबादके सिपाहियोंके विद्रोही होनेका समाचार मिला। ४० भागी हुई अंग्रेज़ स्त्रियां और बच्चे कष्ट भोग रहे हैं यह समाचार मिलते ही कप्तान सावर्स अपने दो सहायक और मेवाड़के कुछ सवार लेकर इनकी मददके लिये पहुँचे। महाराणा साहब इनकी सहायतासे भी विमुख न हुए। उन्होंने बेदलाके सर्दारको इनकी रक्षाके लिये भेजा। ये सर्दार गोरी स्त्रियाँ और बच्चोंको सम्मानके साथ उदयपुर लाये।

इधर जयपुर राज्य भी गवर्मेंटकी सहायताके लिये तैयार हुआ। आगरा और जयपुरकी सीमापर जयपुरकी सेना जाकर पड़ी रही। जोधपुर भी सहायताके लिये तैयार हुआ। साहस और वीरताके लिये मारवाड़ सदासे प्रसिद्ध है। मुगल बादशाह भी

---

* जार्न लारेंसने उदयपुरमें ब्रिटिश सेना रखने और एक सरदारको गद्दीसे उतारनेका प्रस्ताव किया था। यह भी सन्देह था कि महाराणा नीमच और नसीराबादके सिपाहियोंकी सहायता करेंगे।

Kaye's Sepoy War Vol. III. Appendix P. 683—684

मारवाड़की वीरतापर हैरान हुए थे। मारवाड़की तलवारके कारण एक दिन शेरशाहने कहा था—"कि एक मूठी भर दानोंके बदलेमें मैं भारतका राज्य खो रहा था। पर गदरके मौकेपर मारवाड़के ठाकुरोंमें भीतरी कलह था। राजा एकको दबाता था, दूसरा उभरता था। इसी कारण मारवाड़की शक्ति क्षीण थी। फिर भी जोधपुरने एक हजार पैदल और एक हजार सवार तथा [illegible] तोपें देकर गवर्मेंटकी मदद की। इस तरह जून मासके भीतर राजपूताना तैयार हो गया। कर्नल जार्ज लारैंसने इस विषयमें लिखा है—"गदरका समाचार मिलनेके पंद्रह दिन बाद ही भरतपुर, जोधपुर और अलवरकी सेना हमारी मददके लिये तैयार हो गई।" राजपूतानामें न तो किसी तरहकी गड़बड़ हुई और न किसीने बूढ़े मुगल बादशाहका नाम ही लिया। फिर भी आगराके ले० गवर्नर कार्लविन साहब निश्चिन्त न हुए। इतिहासलेखक 'के' साहबने लिखा है कि जिन राजपूतोंके साथ एक समय मुगलोंका विवाह-सम्बन्धतक हुआ था, जिनके नामके रुपये वे अपने राज्योंमें ढालते थे, जिनके अधीन रहे थे, उनके पक्षको वे समर्थन करते हैं या नहीं यह कालविन साहबकी [illegible] थी।
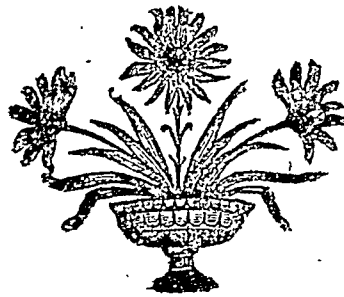
चौथा अध्याय

आगरा—नीमचके सिपाही—कालविन साहबकी अस्वस्थता—प्रबन्ध—कोटाके सिपाही—आगराके पास संग्राम—अंग्रेजी सेनाका लौटना—छावनीका नाश—आगराका किला—कालविन साहबका शरीरान्त।

आगराके सिपाहियोंके हथियार ले लिये गये थे। वे अपने २ रुपयेकी बसनी कमरसे बांधकर और लोटा डोर कंधेपर डालकर अपने २ घर गये। कोई २ घर न जाकर दिल्ली गया था और नये हथियारोंसे सजकर बादशाहकी प्राधान्य रक्षाके लिये तैयार हुआ था। इनकी कालविन साहबको चिन्ता न थी। सिपाहियोंके इस तरह चले जानेपर भी पश्चिमोत्तर प्रदेशकी राजधानी आगरा भयशून्य न था। जून महीनेमें यमुनाके किनारेके करीब करीब तमाम स्थानोंसे अंग्रेज़ी राज्य हट गया था। आगरामें इस समय शान्ति थी। पर यह शान्ति ऐसी ही मालूम होती थी जैसी भयानक तूफानसे पहले हुआ करती है।

पिछले अध्यायमें यह वर्णन आ चुका है कि नीमचके सिपाही गवर्मेंटके विरुद्ध उठ खड़े हुए थे। विद्रोही होकर वे

आगराकी ओर रवाना हुए। इधर ग्वालियरके अंग्रेज़ोंने भाग कर आगराके किलेमें शरण ली। इस कठिन अवसरपर लेफ्टि-नेंट गवर्नर कालविन साहबका स्वास्थ्य खराब हुआ। कालविन साहब गठे हुए शरीरके मजबूत अंग्रेज़ थे, पर गदरके कारण उन्हें चारों ओरकी हजारों चिन्तायें थीं। उनका काम इतना अधिक बढ़ गया था कि समयपर खाना और सोना तक उन्हें नसीब न होता था। फिर उनकी शक्तियां बाहरी हमलोंकी चिन्तामें ही खर्च न होती थीं, बल्कि भीतरी कलह, सहायक मंत्रियोंका मत न मिलना और भी अधिक चिन्ताकी बात थी। उनके मंत्री उनके विरुद्ध गवर्नर जनरलको तरह तरहके पत्र लिखने लगे थे, बहुतसे उनके प्रति बहुत ही लचर भाषाका प्रयोगतक करते थे। उन्हें पदच्युत करने तकके प्रस्ताव किये जा रहे थे। लार्ड कैनिंग इन पत्रलेखक मंत्रियोंको "आगराके बोलनेवाले मेढक" कहते थे। इन सब कठिनाइयों और चिन्ताओंके कारण कालविन साहबका स्वास्थ्य भंग हुआ। पर ऐसी शोचनीय दशामें भी उन्होंने अपनी शान्ति न खोई। वे फिर भी विचार करके रक्षाका मार्ग निश्चित करने लगे।

जून मासके तीसरे सप्ताह अफवाह उड़ी कि नसीराबाद और नीमचके विद्रोही सिपाही बहुसंख्यक बलवाई प्रजाके साथ आगरापर चढ़ाई करने आ रहे हैं। इस अफवाहमें अधिक गलती न थी क्योंकि आनेवाली सिपाही सेनाकी तादाद दो हजार छः

सौ और १२ तोपें उनके पास बताई जाती थीं। इस समय कालविन साहबकी चिन्ताका अन्त न था। जब उन्होंने देखा कि समाचार सत्य है तब तमाम ईसाइयोंको उन्होंने किलेमें जानेकी आज्ञा दी। आवश्यक पदार्थोंके अलावा और कोई पदार्थ उन्हें न लेजाने दिया गया। २ जुलाईको नीमचके सिपाही आगरेसे २३ मील दूर फतहपुर सिकरी नामक स्थान-पर पहुंचे। अधिकारियोंने आगराकी रक्षाका प्रबन्ध किया। कोटामें जो गवर्मेंटको रक्षित सेना थी वह आगरा बुलाई गई। इसके अलावा करौलीके छः सौ सैनिक, भरतपुरके तीन सौ सवार और दो तोपें भी मददके लिये आई थीं। ले० गवर्नरके एजेंटके तौरपर एक अंग्रेज़ सेनाके साथ था।

जब पता लगा कि विद्रोही सिपाही फतहपुर सिकरी आगये तब आगरामें इन सैनिकोंको भिन्न भिन्न स्थानोंपर बांटा गया। कोटाकी सेना छावनीकी रक्षापर नियत की गई। करौलीकी सेना फतहपुर सिकरीके रास्तेमें शाहगंज नामक गांवके पास रही। इस तरह भिन्न भिन्न स्थानोंपर तैयारी की गई।

दूसरे दिन कालविन साहब और भी अधिक बीमार हो गये। उनके शरीरमें लकवेके लक्षण दीखने लगे। विवश होकर उन्होंने अंग्रेज़ोंकी एक योग्य सभा बनाकर २४ घंटेके लिये उसे अपना अधिकार दिया। दूसरे दिन (४ जुलाई) ब्रिगेडियरके मकान-पर इस सभाकी बैठक हुई। कालविन साहब अपने डाक्टरके साथ बराबरकी कोठरीमें लेट गये। सभा आगराकी रक्षाका

उपाय सोचने लगी। जेलखानेके कैदियोंकी तादाद अधिक थी। जो कहीं यह टूटा तो बलवाइयोंकी तादाद सहजमें बढ़नेकी संभावना थी। इसलिये सभासदोंने प्रस्ताव किया कि जो मजबूत और बलवान कैदी हों उन्हें यमुनापार ले जाकर छोड़ दिया जाय। किलेके पास यमुनापर जो पुल था उसे तोड़नेका निश्चय हुआ। इसके अलावा कोटाकी सेनाको आगे बढ़कर विद्रोहियोंपर हमलेका इरादा किया गया।

पहले दिन तो अच्छी तरह काम हुआ। पर अन्तिम दोनों बातोंके पूरा होनेमें शक हुआ। कोटाकी सेनापर सन्देह हो गया था। किसी किसीने उसके हथियार लेनेका भी प्रस्ताव किया था पर ब्रिगेडियरने ऐसा न किया। अन्तमें जब विश्वास हुआ कि इस सेनाके पास रहनेसे अधिक हानिकी संभावना है तब ४ जुलाईको इसे फतहपुर सिकरीके रास्तेपर, विद्रोहियोंके सामने भेज दिया गया। पर वे रास्तेहीसे लौटकर अंग्रेज़ अफसरोंपर अपनी बंदूकें चलाने लगे। एक अफसर मारा गया। यह करके अब कोटाकी सेना नीमचके सैनिकोंसे मिलने गई। इस समय अंग्रेज़ अफसरोंने सुस्ती न की। स्वयंसेवक अंग्रेज़ सवारोंका रिसाला लेकर एक अफसर इनपर धावा किया। इस हमलेसे इनके कुछ आदमी मारे गये, कुछ कैद हुए और सामान लदे ऊंट पकड़े गये। इसी दिन शामको करौली सेनाके सेनापति नवाब सैफउल्लाखांने कहला भेजा कि मुझे अपनी सेनापर भरोसा नहीं है। भरतपुरके सवार पीछे हट

गये और उनकी तोपें भी हट गईं। इसलिये करौलीकी सेना भी उत्साहहीन हो गई। इसी समय सैफउल्लाखांको आज्ञा दी गई कि वे अपनी सेना लेकर फौरन करौली चले जायं। इसी रातको करौलीकी सेना वापिस हो गई।

जब कोटाकी सेना भी विद्रोही हो गई तब बीमार लेफ्टिनेंट गवर्नरको किलेमें ले जानेका निश्चय हुआ; क्योंकि ब्रिगेडियर-की कोठीपर हमला हो सकता था। ले० गवर्नरकी इच्छा न थी फिर भी उन्हें किलेमें जाना पड़ा। पर जब उन्होंने सुना कि कोटाकी फौज बिगड़कर नगरमें इधर उधर गड़बड़ कर रही है, तब उन्होंने फिर ब्रिगेडियरकी कोठीपर जाना चाहा। पर खुद ब्रिगेडियरने उन्हें रोका। दूसरे दिन उनकी हालत ऐसी खराब हो गई कि उनके मित्रोंको जीवनकी चिन्ता हो गई। पर इस दशामें भी वे अपने कर्त्तव्यसे उदास न थे। उनकी इच्छा देख-कर डाक्टरोंने नाउम्मेदीके साथ काम करनेकी आज्ञा दी।

५ जुलाईको समाचार मिला कि विद्रोही आगराके पास आ गये हैं। एक अंग्रेज़ अफसरने ब्रिगेडियरसे हमला करनेकी आज्ञा मांगी पर ब्रिगेडियरने न दी। अन्तमें जब वे शहरमें घुसने लगे तब ब्रिगेडियरने सोचा कि ऐसे अवसरपर दो ही उपाय हो सकते हैं, एक तो किलेमें रहकर आत्मरक्षा करनी और दूसरे आगे बढ़कर हमला करना। यह दूसरा उपायही सबसे अधिक उपयुक्त मालूम हुआ। उसी समय उसने विद्रोहियोंपर धावाकी तैयारीकी आज्ञा दी।

गये। अब

ब्रिगेडियरकी आज्ञासे एक बजेके करीब गोरे सैनिक परेटके मैदानसे रवाना हुए। विद्रोही सिपाहियोंकी तादाद अढ़ाई हज़ारके करीब थी। इधर गोरे सैनिक ८०० तैयार थे। वृद्ध ब्रिगेडियर पलहोयल इनके सेनापति थे। शाहगंज पहुंचकर ब्रिगेडियरने सेनाको रोका। यहां अपनी सेना जमाकर वे विपक्षियोंकी गति देखने लगे। करीब एक मील दूर शानिया नामक गांवके पास उन्हें विद्रोही दिखाई दिये। पैदल सेना गांवके पीछेकी ओर थी। दोनों ओर तोपें लगाई गई थीं और आगे घने पेड़ोंकी कतारें थीं। जब गोरी सेना आगे बढ़ी तब सिपाहियोंके बांये बाजूसे तोपें चलने लगीं। उसी समय ब्रिगेडियरने अपनी सेनाको जमीनपर लिटाकर तोपोंको दो हिस्सोंमें बांटा। यहांसे गोले फेंके जाने लगे। पर वे घने पेड़ोंकी आड़में थे, दूसरे ऊंची ज़मीन भी उनकी रक्षा कर रही थी। एक बारूदकी पेटीमें आग भी लग गई। अपनी तोपोंको निकला देखकर ब्रिगेडियरने विद्रोहियोंपर हमला करना ही उचित समझा। इधर गोरे सैनिक भी सेनापतिसे धावाकी आज्ञा मांगने लगे। पर सेनापति सोच रहे थे कि यह छोटी सी सेना ही आगराका भरोसा है; इसलिये उन्होंने आगे बढ़नेकी आज्ञा न दी। इधर अंग्रेज़ी तोपोंका गोला बारूद समाप्त हो गया था और विपक्षियोंके गोलोंसे उनकी हानि भी हुई थी। गोलंदाज सेनाके सेनापति कप्तान डायली घोड़ेपर बैठे अपने सैनिकोंको तैयार कर रहे थे। ऊपर शैकी गोलीसे उनका घोड़ा लेट गया। वेबिना

घोड़के जमीनपर खड़े हुए ही सेनाको आज्ञा देने लगे। पर उनकी यह हालत भी अधिक देरतक न रही। उनकी पसलीमें गोली लगनेसे वे घायल होकर गिर गये। गिरते गिरते वीर कप्तानने कहा—"मेरा काम पूरा हो चुका। मेरी समाधिपर जो पत्थर लगाना उसपर लिख देना कि यह अंग्रेज़ अपनी तोपके बराबर खड़ा खड़ा मरा था।" इस घायल कप्तानको सैनिक किलेमें ले गये थे। दूसरे दिन यह यही बात कहता कहता मरा। एक और अफसर इसी तरह मरा। बहुतसे अफसरोंके घोड़े और सैनिक मरे। तोपोंके जो दो हिस्से किये गये थे उनमेंसे एक हिस्सेकी तोपें निकम्मी हो गईं। ऐसी हालत देख-कर ब्रिगेडियरने पैदलोंको धावाकी आज्ञा दी। पर तोपोंके निक-म्मी हो जानेके कारण अंग्रेज़ोंका पक्ष कमजोर हो गया था। दूसरे, रिसाला तेज और चालाक न था। स्वयंसेवक अंग्रेज़ रिसालामें भर्ती हुए थे। इनमेंसे कोई दीवानी अफसर था और कोई व्या-पारी। युद्ध-विद्याका अच्छी तरह ज्ञान न था। और तो क्या फ्रांससे एक दल बाजीगरोंका तमाशा करने आया था। इस दलके आदमी भी स्वयंसेवक बने थे। इस लड़ाईमें सात बाजीगर मारे गये। ऐसे विचित्र रिसालासे युद्धकुशल सैनिकोंका काम नहीं हो सकता था। सिपाही रिसाला युद्धविद्याका अच्छा जानकार और अंग्रेज़ सेनापतियोंका सिखाया हुआ था। उसने आगे बढ़कर इस रिसालाको रोक लिया। वृद्ध ब्रिगेडियरने देखा कि तोपें निकम्मी हो गईं, सवार [illegible] हो गये। अब अकेले

पैदलोंसे वे सिपाहियोंको नहीं जीत सकते। विवश होकर उन्होंने अपने सैनिकोंको पीछे हटनेकी आज्ञा दी।

वापिस हटते हुए गोरी सेनामें किसी तरहकी गड़बड़ न हुई। पर एक इतिहासलेखकने लिखा है कि सवारोंकी कमीके कारण हमें पीछे हटना पड़ा, फिर भी यह लज्जाकी बात है। पीछेसे गोला बारूद नहीं भेजा गया। जो हमारी तोपें निकम्मी न होतीं और पैदलोंको योग्यताके साथ लड़ाया जाता तो सेनापतियोंको इस तरह नीचा न देखना पड़ता।*

किलेके अंग्रेज़ उत्सुकताके साथ युद्धक्षेत्रकी ओर देख रहे थे। तोपोंकी आवाज़ोंसे उनके हृदयोंमें हर्ष विषाद दोनोंका उदय हो रहा था। इसी युद्धपर उनका तमाम दारोमदार था। जिन गोरी स्त्रियोंके पति युद्धमें गये थे वे व्याकुलताके साथ किलेकी ऊँची बुर्जों पर चढ़कर दोनों सेनाओंकी गति देख रही थीं। पर अन्तमें उन्हें निराशा हुई। उन्होंने दूरसे अपने सैनिकोंको सिपाहियोंके सामनेसे भागकर आते देखा। जिन्होंने लड़ाईके भागे सैनिकोंकी हालत देखी थी, वे ईश्वरसे प्रार्थना करते थे कि उन्हें ऐसा मानसिक कष्ट फिर कभी देखनेको न मिले। सिपाही पीछे-से गोरी सेनापर धावा करते चले आ रहे थे। धूलसे सब नीचे ऊपरतक सफेद हो गये थे। जो घायल हुए थे उनके शरीर खून और धूलसे कीचड़की तरह लाल हो गये थे। सब प्याससे घबराये हुए और कष्टसे अधमरे हो रहे थे। तमाम तोपें वे मैदानमें ही छोड़

*Kaye's Sepoy War Vol. III. P. 391.

आये थे। जो मरे थे वे भी मैदानमें ही पड़े थे। दो हाथी आगरासे भेजे गये थे पर वे केवल घायलोंको ला सके थे। हथियार और मुर्दे मैदानमेंही पड़े रहे। किलेमें घुसतेही गोरे सैनिक पानीपर टूट पड़े। स्त्रियां अपने कष्ट भूलकर इनकी शुश्रूषा करने लगीं। चाय और शराबसे इनकी प्यास शान्त की गई। सैनिक इनकी शुश्रूषासे प्रसन्न हुए पर हारके कारण जो दुःख था वह अब और चौगुना मालूम होने लगा। उधर नगरमें विद्रोह पूर्ण वेगसे फूट पड़ा। आस पासके जितने लुटेरे डाकू थे वे सब अपना पराक्रम दिखाने लगे। जो पोर्चुगीज और थोड़ेसे यूरोपियन शहरवालोंपर विश्वास करके अपने मकानोंमें ही थे वे सब मारे गये। तमाम अंग्रेज़ोंके घर और बंगले, छावनी, कचहरी, दफ्तर यूरोपियनोंके मकान और कोठियां—सब मिलाकर लगभग छः मीलमें आग लगाई गई। यह दृश्य जैसा भयानक था वैसा ही शोचनीय था, जैसा विचित्र और क्षणिक था वैसा ही आश्चर्यमय था।

सिपाही शाहगंजकी लड़ाईके बाद अंग्रेज़ोंपर लपके थे। पर किलेपर उन्होंने धावा नहीं किया। उनके पास गोली बारूद काफी न थी। ५ जुलाईकी रातको वे दिल्लीके लिये रवाना हो गये और ८ जुलाईको दिल्ली जा पहुंचे। शाहगंजकी लड़ाई जीतने और आगरा विध्वंस करनेके कारण दिल्लीके सिपाहियोंने तोपोंकी सलामीसे उनका स्वागत किया।

कहा जाता है कि लड़ाईके बाद दूसरे दिन, कोतवाल मुबारिक अलीकी आज्ञासे आगरामें मुगल सम्राटके आधिपत्यकी

घोषणा हुई। हर जगह हथियारबंद आदमी घूमने लगे। पुलिसमें अधिकतर मुसलमान थे। आसपासके डाकू भी इनके साथ हो गये थे। कोतवाल सबके सर्दार हो गये। सिपाहियोंके चले जानेपर भी अंग्रेज़ निश्चिन्त न हुए। अड़ोस पड़ोसके गांवोंके बदमाश बराबर लूटमार करते रहे। जिसकी जिससे दुश्मनी थी उसे यह अवसर मिला।

पर इस दुर्दिनके समय भी आगरामें अंग्रेज़ोंके सहायक थे। इस इतिहासमें हर जगह यह वर्णन आया है कि भारतवासियोंने अपनी जान जोखोंमें डालकर भी अंग्रेज़ोंकी मदद की। आगरामें भी लोगोंने सहायता की। ७ जुलाईको राजाराम नामक एक व्यक्तिने किलेमें मजिस्ट्रेटके पास यह समाचार भेजा कि यहाँ अब सिपाही सेना नहीं है—केवल दुष्ट लोग अशान्ति मचाये हुए हैं। यदि मजिस्ट्रेट थोड़ी भी सेना लेकर बाहर आवें तो लोग दब सकते हैं। दूसरे दिन मजिस्ट्रेट साहब थोड़ेसे सैनिक और तोप लेकर बाहर आये। और खास खास रास्तोंपर घूम घूमकर गवर्मेंटके आधिपत्यकी घोषणा की।

पर अंग्रेज़ किलेके बाहर रहनेकी हिम्मत न कर सके। सिपाहियोंका सामना करनेकी उनमें ताकत न थी। किलेमें लगभग छः हजार आदमी थे। इनमें अधिकतर यूरोपियन, यूरेशियन और बाकी ईसाई थे। हिन्दू और मुसलमान भी करीब १५०० थे। सिपाहियोंके चले जानेके बाद किलेवासी कुछ निश्चिन्त थे। बीमारोंकी दवा हो रही थी। सैनिक किलेकी रक्षामें लगे थे।

अधिकारी बाहरसे पत्रव्यवहार कर रहे थे। जिस समय यह हालत थी उस समय एक डर और उनके सामने उदय हो रहा था समाचार फैला कि ग्वालियरके सिपाही आगरा आनेवाले हैं। महाराज सिंधियाने उन्हें बहुत कुछ शान्त किया था, पर उनसे यह आशा न थी कि वे अधिक दिन शान्त रहेंगे। ग्वालियरकी सेनाको बड़ी अच्छी रणशिक्षा दी गई थी और उनके पास बहुत अच्छी युद्ध-सामग्री थी। इसलिये बहुत जल्दी अंग्रेज़ोंने किलेको रक्षित किया। इसी चिन्तामें जुलाई और अगस्त मास बीता, पर किनारा न दीखा।

कालविन साहब दिल्ली और लखनऊके समाचार जाननेके लिये बड़े उत्सुक थे पर दोनों स्थानोंसे ऐसे समाचार न आते थे जिनसे उनको आशा होती। दिल्ली और लखनऊ दोनों स्थानोंपर सिपाहियोंका आधिपत्य था। तमाम पश्चिमोत्तर प्रदेशमें अराजकता फैली हुई थी। अलीगढ़में गाउसखां नामक एक आदमीने अपने आपको दिल्लीके बादशाहका सूबेदार कहकर राज्य करना शुरू किया था। कर्नल काटनने इसके विरुद्ध सेना भेजी। मैनपुरीके प्रसिद्ध सेनापति डी कांटलोपर सैन्य-संचालनका भार था। कुछ स्वयंसेवक सवार भी इनके साथ थे। प्रान्तिक सेनाका भार मेजर मांटगोमरीपर था। २० को चलकर २४ अगस्तको मांटगोमरी अलीगढ़ पहुंचे। ठाकुर गोविन्दसिंह कुछ सवारोंके साथ इनकी मददके लिये आये। गाउसखां अपनी सेना लेकर दीन दीन पुकारते सामने आये। मांटगोमरीने तोपें लगवा दीं। इन तोपोंके

सामने भी वे वीरताके साथ लड़ते रहे। अन्तमें उनकी शक्ति क्षीण हो गई। तोपोंके सामने न टिक सकनेके कारण वे अलीगढ़से भाग खड़े हुए। तारके महकमेमें जो अंग्रेज़ लड़के काम करते थे उन्होंने इस लड़ाईमें बड़ी फुर्ती दिखाई। उन्हींकी होशियारीसे अलीगढ़ और आगरामें तारका सम्बन्ध था। एक लड़केने गाड़ीमें बैठकर लड़ाईको देखा और उसका सम्पूर्ण विवरण आगरा भेजा। आगराके अधिकारी दिल्ली और लखनऊके लिये चिन्तित थे।

ले० गवर्नर काल्विन साहबकी शारीरिक और मानसिक शक्ति कम होती जारही थी। शाहगंजकी हारके बाद वे बहुत कमजोर हो गये थे। चिन्ताके कारण उनके शरीरका रोग बढ़ता जा रहा था। वे खुद आगराके किलेमें कैद थे। सामने दिल्ली और लखनऊमें विद्रोहियोंका राज्य था। पश्चिमोत्तर प्रदेशसे उनका राज्य उठ चुका था। इसी चिन्ताके कारण ले० गवर्नर घुले जा रहे थे। पर इस दशामें भी उठकर वे काम करते थे। अपने कर्त्तव्यको पूरा करनेमें उन्हें आलस्य न था। उनके शरीर-की यह हालत थी पर वे छोटेसे छोटे कामको भी खुद देखते और करते थे। एक जजने लिखा है कि इस समय यदि मेगज़ीनसे एक पिस्तौल लेनेकी जरूरत होती तो अर्जीपर ले० गवर्नरके दस्तखत होते। काल्विन साहब इतनी बारीकीसे काम कर रहे थे। न उन्हें आलस्य था और न उन्होंने किसीपर किसी तरहका भार दिया। रोज उनके पास चारों ओरसे सहायताके लिये ग्रीक और फ्रेंच भाषामें पत्र आते, वे उन्हें खुद पढ़ते।

कठोर बीमारीके साथ इतना परिश्रम और फिर चिन्ता उन्हें क्षीण कर रही थी। बड़े भारी प्रदेशके शासन और शान्तिका भार उनपर था। पर वे शान्ति नहीं रख सके और ब्रिटिश राज्य भी करीब करीब सम्पूर्ण प्रदेशसे उठ गया। उनके रक्षित हजारों स्वदेशवासी मारे गये, हजारों ईसाइयोंका वध हुआ। करोड़ोंकी सम्पत्ति नाश हुई। रोज चारों ओरसे पत्र पर पत्र—'सहायता सहायता'—के जाने लगे। पर ले० गवर्नरके पास शक्ति न थी, वे अपनी राजधानी आगराकी भी रक्षा नहीं कर सके। दूसरे स्थानोंके विपन्न देशवासियोंकी क्या सहायता करते! लोग उनकी अवमानना करने लगे थे, उन्हें धिक्कारते हुए पत्र लिखा करते थे। उनके अनुगत भी आदर नहीं करते थे। इसपर भी वे शान्त थे। वे विपत्तिकी अवधि देख रहे थे। पर उनके शरीरकी अवधि भी समाप्त हो गई थी। ९ सितम्बरको वे काम करते २ इस संसारसे विदा हो गये। १० सितम्बरको उन्हें समाधि दी गई। लार्ड कैनिंगने घोषणाद्वारा मृतका सम्मान किया। बम्बई, मद्रास और कलकत्तामें उनके शोकमें झंडे झुकाये गये और १७ तोपोंसे सम्मान किया गया। चाहे पश्चिमोत्तर प्रदेशके अंग्रेज़ और उनके सहायक कर्मचारी नाराज़ हों पर इतिहासमें उनका सम्मान है। उनके पास सेना न थी जो वे प्रबन्ध करते, फिर भी उन्होंने अपनी शक्तिभर कमी न की। आदमी जो कुछ कर सकता है, उन्होंने किया।

पांचवाँ अध्याय

लखनऊ—अवध—अवध प्रान्तकी दशा—वहांके जमींदार—नवाबके वंशवालेकी रक्षाकी चिन्ता—अवध प्रान्तमें अशान्ति—सीतापुर—मुलावन—मोहमदी—शाहजहांपुरके भगोड़ोंकी हत्या फैज़ाबाद—सुलतानपुर—बहराइच—सिकरोरा—गोंडा — मुल्लापुर दरियाबाद—कचनेर।

अवधके अलावा और स्थानोंकी चिन्ता अधिकारियोंको अधिक न थी। कारण, अवधप्रान्त ही सिपाहियोंका घर था। अवधके आदमी सिपाहियोंकी जातिके, देशके, और धर्मके थे। यहांके निवासी वीर, मजबूत शरीरवाले, सहिष्णु और तेजस्वी थे। इन्हें अपनी फौजोंमें भर्ती करके अंग्रेज़ोंने देशके बाद देश लिया था। वीर पंजाब देश ले लिया था, वहांके सिक्खोंको इन्हीं सिपाहियोंसे हरा दिया। काबुल और सरहदी जातियोंके मुकाबिलेपर ये सिपाही सेनाएं ही डटी थीं। इन सिपाहियों-की सेनाओंसे अंग्रेज़ोंने सब कुछ किया पर जब इनकी जन्म-भूमि अवधको भी उन्होंने नवाबसे खाली करा लिया, तब सेनाओंके दिल हिल उठे। वे समझने लगे कि अंग्रेज़ जाति स्वार्थी है, एकको अपनाकर दूसरीको मूड़ना इनका काम

है। अंग्रेज़ अवध लेनेके बड़े बड़े कारण देते हैं, वे नवाब वाजिदअली शाहकी बड़ी निन्दा करते हैं, नवाबके जमानेमें अवधकी बड़ी बुरी हालत बताते हैं, फिर भी अवध लेनेसे केवल अवधवासी ही नहीं, तमाम भारतवासी चौंक उठे थे। हिन्दू और मुसलमान दोनोंको बराबर शंका हुई थी। तमाम राजे महाराजा आंखें खोलकर देखने लगे थे। सबने देखा कि पीढ़ी दर पीढ़ीसे लखनऊके नवाब अंग्रेज़ोंके मित्र थे, अंग्रेज़ोंकी धन और फौजोंसे मदद करते थे—गवर्मेंटकी फौजोंके लिये आधा राज्यतक दे दिया—फिर भी अंग्रेज़ोंने नवाबको उतारकर कैद किया। उनके गहने बिकवा डाले और मकान तोड़ दिये। इससे सबने समझ लिया था कि अंग्रेज़ जाति विश्वासके लायक नहीं। जिसने अपना सिर इनके सामने झुका दिया उसका सिर इन्होंने काट लिया। एक प्राचीन मुसलमान राज्यके अस्तसे तमाम मुसलमानोंका हृदय दुखा था। जिन्हें जो पेंशनें और जागीरें मिल रही थीं वे सब जप्त हो गईं। अबतक नवाबके कारण उनके परिवारका भरण पोषण हो रहा था अब वह सहारा जाता रहा। दूसरी ओर अंग्रेज़ी हुकूमत चाहे जितने आरामकी हो पर नवाबके जमानेमें इतना अधिक जमीनका लगान न था। माफीदार, इजारदार, जमींदार और काश्तकार सब खुश थे। पर अंग्रेज़ी राज्य होते ही जो जमीनका लगान बढ़ा, जमींदार और ताल्लुकेदार बेदखल हुए उससे प्रजा पछताकर नवाबके बीते राज्यको याद करने लगी। नवाब चाहे कम-

जोर थे, आलसी थे और विलासी भी थे, पर प्रजाका उनपर प्रेम था—प्रजा दुःखी न थी। नवाबके राज्यमें प्रजाको ऐसी कठिनाइयां न पड़ी थीं। पर सभ्य अंग्रेज़ी राज्यके आते ही तमाम प्रजा कष्ट अनुभव करने लगी। जिनका नवाबके दर्बारसे किसी प्रकारका सम्बन्ध होता था उनकी तनख्वाहें नियत हो जाती थीं—वे अपने परिवारके पालनकी चिन्तासे बरी थे। पर नवाबीके अन्त होते ही इस तरहके हजारों परिवार मूठी भर अन्नके लिये तरसने लगे। इनमेंसे बहुतसे अन्नके लिये अपने बहुमूल्य कपड़े बेचने लगे और बहुतसे भूखे मरते भीख मांगने लगे।* इन लोगोंकी हालतें देखकर सहृदय अंग्रेज़ोंतकके हृदय हिल उठे थे। अवधके प्रबन्ध सम्बन्धी कमिश्नर गबिन्सने लिखा था—"अवधके खान्दानी और नवाबके सम्बन्धी अधिकतर दयाके पात्र थे। इन लोगोंको नवाबके खानेसे वृत्तियां मिलती थीं—पर हमारा राज्य होते ही वह बंद हो गईं। गवर्मेंटने कुछ रकम इन लोगोंको देनी सोची थी पर तलाश करके इन लोगोंके नामोंकी सूची बननेमें ही बेहद देर हो गई। इधर ये खान्दानी लोग भूखों मरने लगे। हम अच्छी तरह जानते हैं कि जो स्त्रियां कभी महलोंसे बाहर नहीं निकलीं वे शामको अन्धेरेमें बाहर आकर भीख मांगती थीं।" † टैक्स विभागके कमिश्नरका यह बयान है। अंग्रेज़ी राज्यसे नवाबके आश्रित भीख मांगने लगे,

---

* Kaye's Sepoy War. Vol. III, P. 419.

† Gubbins's Mutinies in Oudh P. 78.

जमींदार और ताल्लुकदार जमीनसे बेदखल होनेके कारण रास्ते-के किनारे बैठने योग्य हो गये। जिनके पास जमीनें रहीं वे बेहद लगानके कारण काँप उठे। लखनऊके इतिहासलेखक रीड साहबने लिखा है—"हमसे लखनऊवालोंकी भलाई कम और बुराई अधिक हुई है। कारीगर और शिल्पी जो नवाब और उनके अमीरोंका काम करके सुखसे दिन बिताते थे अंग्रेज़ी राज्य आते ही वे सब भूखों मरने लगे। साधारण प्रजा और खासकर दरिद्र आदमी हमसे अधिक असन्तुष्ट हुए क्योंकि हमने उनपर बेहद टैक्स लाद दिया।" * जो नवाबके जमानेमें अलग थे वे सब दुःखी हो गये। अन्तमें जब सर हेनरी लारेंस अवधके प्रबन्धक नियत हुए तब २० मार्च १८५७ से वे पुराने कागजात संग्रह करके इन्तजाम करने लगे। पर देर हो चुकी थी। दुःखी होनेवालोंका दुःख असीम हो गया था। खेती सूखने पर यह बरसात थी।

ताल्लुकदार और जमींदार भी ब्रिटिश गवर्मेंटसे नाराज थे। इसी ग्रन्थमें जहां जमीनके बन्दोबस्तका वर्णन आया है वहां किस तरह ये लोग जमीनके स्वत्वोंसे वंचित करके साधा-रण काश्तकार श्रेणीमें ला रखे गये, इसका विवरण दिया गया है। ताल्लुकदारों और जमींदारोंके साथ बड़ी निर्दयताका व्यव-हार हुआ। अंग्रेज़ोंका यह विश्वास था कि जो जितना ही बड़ा अधिकारी होता है वह उतना ही नीच और अमिताचारी तथा

* Rees' Siege of Lucknow. P. 34.

अन्यायी होता है। भारतके राजा महाराजा और नवाबोंको सबसे अधिक जुल्मी समझते थे और उनसे उतरकर छोटे छोटे जागीरदारों ताल्लुकदारोंको। कर्नल स्लीमनने अपने विवरणमें इस तरह जुल्मोंका खूब ही खाका खींचा है।* अंग्रेज़ इन ताल्लुकदारोंको नीच समझते थे। इसलिये इन्हें बेदखल करने और अधिकारभ्रष्ट करनेसे उन्हें ज़रा भी दुःख न था। ताल्लुकदार लोग गवर्मेंटसे बेहद नाराज़ हुए। राजाके बराबर उनका सम्मान था। अपने इलाकेमें उनकी असीम शक्ति थी, हर साल बहुतसा रुपया उन्हें मिलता था। अंग्रेज़ी नीतिके प्रतापसे न उनकी शक्ति रही, न क्षमता रही और न धनकी आमद ही रही।†

इनके अलावा अवधमें एक और सम्प्रदाय थी जो अंग्रेज़ोंके खिलाफ हुई। अवधमें नवाबके आश्रित बहुतसे सिपाही योद्धा थे। इनकी शिक्षा अंग्रेज़ी सिपाहियोंके समान न थी और न ये नियमित ही थे। जिस समय अवध लिया गया तब नवाबके ६० हज़ार सिपाही सैनिक थे। गवर्मेंटने इनमेंसे २० हज़ार छांटकर अपनी सेनामें शामिल किये और बाकीको कुछ २ रुपया देकर विदा किया। रुपया मिलनेके कारण ये लोग एकाएक असन्तुष्ट तो न हुए पर अवधमें क्या हो रहा है इस

* Sleeman's Journey through the Kingdom of Oudh Voiis,

† Syed Ahmad khan's Cause of the Indian Revolt P. 30

पर नजर जरूर थी। धीरे २ गवर्मेंटके प्रति इनका भी असन्तोष बढ़ चला था।

अंग्रेजी अमलदारीके साथ ही साथ चीजें भी महँगी हो गई थीं। हर चीजकी गरानी सबको खटकने लगी। मुसलमान फकीर इस अवस्थाकी कविता बनाकर बाजारोंमें गाने लगे और मौलवीगण व्याख्यानोंमें कहने लगे। एक व्याख्यान देनेवाले फकीरके १०० बेतें मारी गईं। अवधके मुसलमान पहले ही दुःखी थे। जब वे मुल्ला मौलवियोंके भाषण सुनने लगे, जब उन्हें मालूम हुआ कि अंग्रेजी राज्यके कारण उनके चिर पवित्र धर्मका नाश होगा, उन्हें सुअरकी चर्बी खानी पड़ेगी, तब वे घबराये। द्वेषकी आग उनके हृदयोंमें जलने लगी।

जिस समय अवधकी यह दशा थी तब सर हेनरी लारेंस वहांके प्रबन्धकर्त्ता बने। २० मार्चको इन्होंने कार्यभार लिया। वे भारतवासियोंसे मिला करते थे, भारतीयोंकी प्रकृतिसे परिचित थे, भारतीयोंका उपकार भी करना चाहते थे। उनका विश्वास था कि अंग्रेजोंने समयकी प्रतीक्षा न करके बहुत जल्दीसे अपनी नीति प्रचलित कर दी। भारतीयोंकी अनेक शिकायतें मौजूद हैं। इसी विश्वासके साथ उन्होंने अपनी राजनीतिका अनुसरण किया। इस समय वे गवर्नर जनरल तथा अपने आत्मीयोंको जो पत्र लिखा करते थे उनसे शासनसम्बन्धी विचारोंका अच्छी तरह पता लगता है। अप्रैल मासमें उन्होंने गवर्नर जनरलके निकट जो पत्र भेजा था, उसमें लिखा था—

"बहुत शीघ्रता और कठोरतासे नगरकी उन्नतिमें हाथ दिया गया। शाही मकानात तोड़ डालनेसे लोग नाराज हैं। मन्दिर, मसजिद और खाली जमीन गवर्मेंटकी कहकर ले ली गईं इससे भी असन्तोष बढ़ा है। इन सब स्थानोंको मैंने देखा और अड़ोस पड़ोसके आदमियोंको खुश किया। मैंने आज्ञा दे दी है कि बिना अधिकारियोंकी आज्ञाके कोई मकान न तोड़ा जाय। लगान लेनेकी प्रथा बहुत ही कठोर है। पिछले साल इतना टैक्स बढ़ाया गया कि फीसदी १५, २०, ३०, क्या ३५ तक लिया गया। ताल्लुकदारोंके साथ भी बहुत कठोर व्यवहार किया गया। फैजाबादके ताल्लुकदारोंमेंसे किसीको आधा गांव छोड़ना पड़ा और किसीको तमाम।"* सर हेनरी लारेंसने इस प्रकार अवध-वासियोंकी दशा और उनके असन्तोषके कारणोंका वर्णन किया था। पर वे बहुत देरसे कार्यक्षेत्रमें आये थे। सुलगती आग जल उठी थी। जलतीको बुझाना कठिन था।

सर हेनरीका विश्वास था कि जबतक प्रजाका सरलता-पूर्वक विश्वास किया जाता है, सरलतासे प्रजाके मंगलके काम किये जाते हैं, तबतक किसी तरहकी विपत्तिका सामना नहीं करना पड़ता। इसी विश्वासके कारण वे सैनिकोंपर भी सहृदय व्यवहार करते थे। अवधके प्रान्त भरमें, केवल लखनऊमें ३२ नं० गोरी पैदल सेना थी। पर अप्रैलतक यह प्रदेश शान्त रहा। अंग्रेज़ अपनी नई राजनीतिके अनुसार काम कर रहे थे।

* Kaye's Sepoy War. Vol. III P. 429.

पश्चिमोत्तर प्रदेशपर अधिक समयसे अंग्रेज़ोंका राज्य था। निवासियोंको शान्त देखकर अंग्रेज़ प्रसन्न थे। मई मासके शुरूसे थोड़ी थोड़ी चंचलता दिखाई देने लगी थी पर अप्रैलतक वह भयानक न बनी।

मईके प्रारम्भमें ही ७ नं० अनियमित पैदल सेनाने कारतूसोंके व्यवहारसे इनकार किया। अफसर लोग उन्हें समझाने लगे पर वे न समझे। परेटके मैदानमें एकत्र करके ब्रिगेडियरने उन्हें समझाया। जब न माने तब सर हेनरीने जबर्दस्ती इनके हथियार लेनेका इरादा किया। सिपाहियोंकी आपत्ति थी कि दूसरी सेनाओंके सिपाही भी कारतूसोंका व्यवहार नहीं करते इसलिए हम भी नहीं करते। इन सिपाहियोंने ४८ नं० सिपाही सेनाको भी अपनी मदद करनेके लिये लिखा था। पर घटनावश यह पत्र एक युवक सिपाहीके हाथ लगा। उसने यह पत्र सूबेदार सेवकतिवारी और हवलदार हीरालाल दुबेको दिखाया। इन तीनोंने मिलकर यह पत्र गोरे अफसरोंको दिया। फिर हेनरी लारेंसने देर न की। उन्होंने अपने इरादेको कार्यरूपमें परिणत किया। १० मईकी चांदनी रातको सिपाही एकत्र किये गये। उनके सामने भरी तोपें और तैयार गोरे सैनिक थे। तोपोंके बराबर गोलंदाज बत्तियां लिये खड़े थे। सिपाहियोंने समझा कि अब हमें तोपोंसे उड़ावेंगे। डरकर वे भाग खड़े हुए। १२० आदमी मैदानमें खड़े रहे। इन्हें हथियार डालनेका हुकम दिया गया, हथियार रख दिये गये। इसके बाद सर हेनरी लारेंस इन

सिपाहियोंसे बातें करने लगे। तीन सिपाही १३ नं० सेनाको बहकाने गये थे। इन्हें हुसैनबक्स नामक सिपाहीने गिरफ्तार करवा दिया। सर लारेंसने इनपर प्रगटमें मुकद्दमा चलानेका इरादा किया।

सर हेनरी लारेंस इस समय मरियनमें थे। १२ मईकी शामको उनके मकानके सामने खुली जगहमें दर्बार हुआ। इस दर्बारका दृश्य बड़ा मनोमोहक था। बड़ी सजावट की गई थी। तमाममें गालीचोंकी बिछावट, कामदार शामियाने, मखमली बैठकें थीं। पीछे सेना तैयार थी। जिन सिपाहियोंने अच्छे काम किये थे उनको इनाम देनेके लिये चीजें सामने सजाकर रक्खी गई थीं। ठीक समयपर कमिश्नर अन्य ओहदेदारों सहित दर्बारमें आये और सिपाहियोंके समक्ष उन्होंने हिन्दी भाषामें इस आशयका व्याख्यान दिया—"ब्रिटिश गवर्मेंट किसीके धर्ममें हस्तक्षेप करना नहीं चाहती। मुसलमानोंके जमानेमें, भारतपर बहुत धार्मिक अत्याचार हुए। ब्रिटिश गवर्मेंटने इन अत्याचारोंको रोककर, हर सम्प्रदायके साथ समानताका व्यवहार किया। गवर्मेंटके पास जैसी सैनिक शक्ति है वैसी ही धनकी ताकत है। थोड़ेसे समयमें गवर्मेंट विलायतसे गोरी सेनाएं ला सकती है। ऐसी शक्तिशाली गवर्मेंटके उच्छेदका साधन खोजना पागलपन है। हम (प्रधान कमिश्नर) अपने सुखके लिये यहां नहीं आये हैं। हम यहांकी प्रजाके सुख और कल्याणके लिये आये हैं। सिपाही बहुत वर्षसे सरकारका

नमक खाते आ रहे हैं, इनकी पीढ़ियां बीत गईं, लड़ाइयोंमें वीरता दिखानेके कारण सरकारका इनपर विश्वास हो गया है। इन्हें यह ध्यानमें रखना चाहिए कि इस विश्वासमें किसी तरहका अन्तर न आने दें।" इस प्रकार भाषण देकर सर हेनरी लारेंसने अपने हाथसे सिपाहियोंको इनाम दिया। उनका भाषण मनोहर और हृदयग्राही था। गवर्मेंटके कर्मचारी और दर्शक सन्तुष्ट हुए। अंग्रेज़ और देशी अफसर परस्पर मित्रकी तरह बातें करने लगे। सिपाही पहलेके समान सन्तुष्ट रहे। सबके व्यवहार और बातचीतसे सन्तोष मालूम होता था। पर अधिकारियोंको सन्देह था कि यह सरल भाव अधिक समय रहेगा या नहीं। सर हेनरी लारेंसने कहा था कि दो सप्ताहतक उन्हें चिन्तित रहना होगा। यही अनुमान सच निकला। फिर उत्तेजनाके मारे वे संहारकार्यके लिये प्रवृत्त हुए।

लखनऊ गोमतीके दाहिने किनारेपर बसा है। शहरकी लम्बाई करीब पांच मील और नगरके मकानात लगभग सात मीलमें बसे हुए थे। शहरमें लगभग दो लाख सिपाही और अन्य अस्त्रधारी आदमी थे। नदीके दोनों किनारे मरियन और मुदकीपुरमें फौजी छावनियाँ थीं। इन दोनों छावनियोंके बीचमें नदीपर पक्का पुल था, उसके पास ही एक डाटोंका पुल था। कुछ दूर आगे चलकर नावोंका पुल था। पक्के पुलके पास ऊंची दीवारोंसे घिरा पुराना मच्छीभवन नामक स्थान था। इस स्थानपर अनेक घटनाओंका जन्म और संहार हुआ था। उस समय यह गोदाम

के काममें आ रहा था ; पर इसकी बनावट और मज़बूती तथा विस्तारके लिहाजसे किलेके स्थानपर काम आ सकता था। पर उसकी दीवारें अत्यन्त पुरानी होनेके कारण जीर्ण हो गई थीं। अंग्रेज़ोंने इसी स्थानको अपनी रक्षाके लिये योग्य समझा। सब तरहके आवश्यक सामान उसमें रखे जाने लगे। आसपासके मकानोंपर पीछे सिपाहियोंका कब्जा हो जाय, इस विचारसे उनके तोड़नेका प्रस्ताव हुआ। पर सर हेनरी कोमलचित्त थे। उन्होंने मकानदारोंको बिना वाजिब कीमत दिये तोड़नेकी राय न दी। लोगोंके मकान तोड़ डालना और उस दशामें जब उन्हें उनका मूल्य भी न दिया गया हो विशेष कठोरताका काम था। सर हेनरीके प्रस्तावके अनुसार काम होने लगा पर स्थान २ पर मसजिदें थीं। मसजिदोंकी ओटसे विपक्षी अंग्रेज़ोंपर गोले बरसा सकते थे। पर कमिश्नरने मसजिदोंके तोड़नेकी आज्ञा न दी। इसलिये मसजिदें वैसीकी वैसी ही रहीं।

गोरी सेनाका निवास रेजीडेंसीसे लगभग डेढ़ मील दूर नदीके मोड़पर था। एक पहाड़ गोमतीकी ओर झुका हुआ था। इस पहाड़पर रेजीडेंटकी तिमंजिली कोठी थी। सन् १८०० में नवाब शआदत अलीने रेजीडेंटके लिये यह कोठी बनाई थी। इसमें कुछ तहखाने भी थे। ग़दरके अवसरपर इनमें ३२ नं० गोरी सेनाकी स्त्रियाँ और बच्चे इसमें छिपे थे। रेजीडेंसीकी हदके भीतर जो अन्यान्य घर थे वे बेलीगार्डके नामसे पुकारे जाते थे। शहरमें अनियमित सिपाही सेना रहती थी। यही

पहरेका काम करती थी। इनके विद्रोही होनेसे अधिक आपत्ति आ सकती थी। इसलिए कमिश्नरने पहले इन्हींकी शक्ति तोड़नी चाही। पहरेवालोंकी तादाद कम करके उनमें गोरे सैनिक रखे गये। रेजीडेंसीकी हदके भीतर खजाना था, इस समय खजानेमें ३० लाख नकद और इससे भी अधिक मूल्यके करेन्सी-के कागज थे। इसकी रक्षापर भी सिपाही ही थे। इनके हटाने-का जब प्रस्ताव हुआ तब पहले तो गविन्स साहब सहमत न हुए। कारण, वे जब खजानेसे हटाये जायँगे तब सोचेंगे कि अब गवर्मेंट उनका विश्वास नहीं करती। इससे ग़दर हो जायगा। पर जब सब इसका विरोध करने लगे तब हेनरी लारेंस और गविन्सको भी सहमत होना पड़ा। रेजीडेंसीसे सिपाही हटाकर गोरे रखे जाने लगे। भिन्न २ घरोंसे कागजात हटाकर एक घरमें रखे गये। जो स्थान खाली हुए उनमें गोरे सैनिक और अंग्रेज़ स्त्रियाँ तथा बच्चे रखे गये।

इस समय तारसे नित्य नये और भयानक समाचार आने लगे। पहले दिन मेरठके और दूसरे दिन दिल्लीके समाचारोंसे सर हेनरी चौंक उठे। दिल्ली सिपाहियोंके कब्जेमें चली गई और बहादुरशाह फिर बादशाह बन गये। इस समाचारके मिलते ही सर हेनरी लारेंसने कलकत्ता गवर्नर जनरलको तार दिया कि मुझे सेनाके सब अधिकार दिये जायँ। गवर्नर जनरलने उन्हें ब्रिगेडियर जनरल बना दिया। इस समय चारों ओरके समा-चारोंसे सिपाही भी उत्तेजित हो रहे थे। पर न उनकी कोई

कार्यप्रणाली थी और न ऐक्य। ऐसी दशामें वे अधिक दिन शान्त न रहेंगे यह सर लारेंस समझते थे। लखनऊके सिपाहियोंके हथियार लिये जा सकते थे पर सर लारेंस अकेले लखनऊकी चिन्तामें चिन्तित न थे, उनके सामने सम्पूर्ण अवधप्रान्त था। एक स्थानके सिपाहियोंके हथियार लेनेसे अन्य स्थानके सिपाहियोंके उत्तेजित होनेकी संभावना थी। इसलिये प्रधान कमिश्नर उनके हथियार लेनेको तैयार न हुए। वे अब इस विषयका विचार करने लगे कि सिपाहियोंकी उत्तेजनाके जितने कारण हैं वे सब दूर किये जा सकते हैं या नहीं। सिपाहियोंका विश्वास हो गया था कि गवर्मेंट उनके प्रति अन्याय कर रही है। वेतनके सम्बन्धमें अनियमित सेनाकी शिकायत थी। कारण इस सेनाकी तलब औरोंसे कम थी। यह प्रस्ताव किया गया कि अनियमित सेनाका वेतन नियमित सेनाओंके बराबर कर दिया जाय। उसी समय यह प्रस्ताव कार्यरूपमें परिणत हुआ। आज्ञा सुनाई गई कि अनियमित सेनाका वेतन बढ़ा दिया गया।

इस प्रकार सिपाहियोंको सन्तुष्ट रखनेकी कोशिश की गई पर सिपाही सन्तुष्ट न रहे। दिन पर दिन उनकी उत्तेजना बढ़ने लगी। रोज नई अफवाहें उड़ने लगीं। इनका कोई मूल न था इसलिये अधिकारी भी चुप थे। पर वे सिपाहियोंके कामोंको तीखी दृष्टिसे देखने लगे। ऊपरसे शान्तिके साथ सिपाही भी अपना काम कर रहे थे।

ऊपर कहा जा चुका है कि लखनऊमें बहुतसे मकानात थे

इनमें फरीदबक्स, शाहनजीफ, सिकन्दरबाग, इमामबाड़ा, बेगम महल, कैसरबाग आदि प्रसिद्ध थे। शहरके दक्षिणपूर्व एक नहर है। इस नहरके दक्षिणकी ओरके अनेक स्थान इतिहासमें प्रसिद्ध हुए। इनमें आलमबाग सबसे अधिक प्रसिद्ध हुआ। यह पुराना-बाग शहरसे दो मीलके फासिलेपर कानपुर जानेवाली सड़कके किनारे है। इसी जगह चारबाग नामक एक और स्थान था। जिस जगह गोमतीसे नहरका संगम हुआ है उससे थोड़ी दूर दक्षिण दिलकुशा नामक महल है। इसके पास मांटीनियर कालिज है। रेजीडेंसीपरसे नगरका दृश्य बहुत अच्छा मालूम होता है। इस सुन्दर नगरमें सर हेनरी लारेंस शान्तिसे रहना चाहते थे, पर उनका इरादा पूरा न हुआ। घटनाचक्रमें पड़कर उनकी सुख शान्ति अन्तर्हित हुई।

यूरोपियन अबतक सिपाहियोंकी गति देख रहे थे। पर इस देखनेसे सिपाहियोंकी चाल न रुकी। मई मासका अन्त होते न होते उनके जोशका पारा उबल पड़ा। ३० मईको शामको सर हेनरी लारेंस मरियन छावनीके अपने रेजीडेंसीवाले भवनमें खाना खा रहे थे, इसी समय उनके साथीने कहा कि आज रातके ९बजेकी तोपके बाद सिपाही विद्रोहके लिये खड़े होंगे। इसके बाद ही ९ बजेकी तोप चली पर विद्रोहके लक्षण न दीखे। सर हेनरी लारेंसने हंसकर कहा कि आपके मित्रोंने समयपर काम नहीं किया। इस बातके समाप्त होते ही छावनीकी ओरसे बंदूकें चलनेकी आवाज आई। प्रधान कमिश्नर गम्भीरतासे स्थिर रहे।

खाना छोड़कर उन्होंने अपने घोड़े लानेको कहा और हथियार लेकर कोठीसे बाहर आ गये। चन्द्रमा खिल रहा था, कोठीके बाहर सेनापतिके साथ एक दल तैयार खड़ा था। अफसरने सेनापतिसे बंदूक भरनेकी आज्ञा माँगी। आज्ञा दी गई। बंदूकें भरकर ३० सिपाही तैयार रहे। सर हेनरी लारेंसने घोड़ेपर बैठकर कहा—"मैं दुष्टोंको छावनीसे बाहर निकालने जा रहा हूं। जबतक मैं न आऊँ तबतक इसी जगह खड़े हुए मेरी कोठीकी हिफाजत करो। किसी तरहका नुकसान न हो नहीं तो तुम्हें फांसी दी जायगी।" गोलीभरी बंदूकें लिये सिपाही कोठीकी रक्षा करने लगे। उस रातको जब छावनीके मकान जल रहे थे तब रेजीडेंसीमें शान्ति थी।

घोड़ोंपर बैठकर सर हेनरी लारेंसके साथ अफसर लोग चले। एक बड़ी सड़क छावनीसे शहरको गई थी। इसी सड़-ककी पहले उन्होंने हिफाजत की। ३२ नं० सेनाके थोड़ेसे सैनिकोंको तोपोंके साथ उन्होंने रास्तेकी रक्षापर नियत किया। इधर विद्रोही सिपाही यूरोपियनोंके जान माल लेनेपर तुले। उन्होंने सोचा था कि शामको खानेके समय सब अंग्रेज़ भोजन-शालामें ही होंगे। इसलिये वे भोजनशालामें गये पर बंदूकोंकी आवाजें सुनकर यूरोपियन पहले ही परेडके मैदानमें चले गये थे। सिपाहियोंको आज्ञा पूरी न हुई। फिर भी उन्होंने उसमें आग लगा दी। उनके ब्रिगेडियरने आकर शान्त रहनेको कहा, पर उन्होंने गोलीसे उसे मार दिया। इधरसे दलके दल सिपाही

बुरी तरहसे पुकारते, शोर मचाते अफसरोंके बंगलोंकी ओर दौड़े। तमाम घर लुटने और जलने लगे। शहरमें जो अंग्रेज थे उन्होंने जब अपने अपने घरोंकी छतोंसे गहरे धुएं के साथ आग-की लपटें देखीं तब अपने देशवासियोंकी शोचनीय दशापर चिन्तित होनेके साथ साथ डर गये। पर इस समय भी तमाम सिपाहीदल विद्रोही न हुआ था। जिस समय बहुतसे सिपाही अंग्रेजोंकी सम्पत्तिनाश और गृहदाह कर रहे थे उस समय भी ऐसे सिपाही थे जो शान्त थे, विद्रोहियोंका साथ न दिया था। ७१ नं० सिपाही सेना बिगड़ी थी पर इस सेनाके बहुतसे सिपाही ३२ नं० गोरी सेनाके साथ मिलकर काम कर रहे थे। १३ नं० सिपाही सेनाके ३०० सिपाही अपने झंडा और रुपयोंकी पेटियां लिये हुए ३२ नं० गोरी सेनाके बराबर आ खड़े हुए। ४८ नं० सिपाही सेना परेटके मैदानमें खड़ी थी। जब अफसरोंने उसे विद्रोहियोंपर हमला करनेको कहा तब वे आगे न बढ़े। आज्ञा न मानी पर विद्रोहियोंके साथ भी न हुए। जब इन्होंने आज्ञा न मानी तब झंडा आदि लेकर अफसर शहरमें चले गये। एक सौसे भी कम आदमी अफसरोंके साथ गये।

ऊपर आ चुका है कि ७१ नं० सेनाके एक विद्रोही सिपाहीकी गोलीसे ब्रिगेडियरके प्राण गये। एक और अफसर भी इसी तरह मारा गया। एक सिपाहीने इसके प्राण बचानेके लिये बिछौना डाल दिया था पर उससे भी जान न बची। इस

खासबग छावनीमें अंग्रेज़ स्त्रियां और बच्चे अधिक न थे। इस लेकारण उनके वधका कलंक न लगा।

३१ मईको रविवार था। यह दिन अंग्रेज़ोंके लिये बड़ा अशुभ था। इस दिन भारतके भिन्न भिन्न सैनिकनिवासोंके सिपाहियोंके उठनेकी बात थी। ३० मईकी रातको बहुतसे सिपाही घुड़दौड़के मैदानमें एकत्र हुए थे। पर सर हेनरी लारैंसने उसी समय इनपर धावा किया। ६० कैद हो गये, बाकी इधर उधर भाग गये। शहरमें मुसलमान भी उत्तेजित हो गये थे पर पुलिसने उन्हें दबा दिया। इस प्रकार लखनऊमें शान्ति हुई। पर यह कुछ शान्ति न थी, यूरोपियन अपनी जानके लिये वैसे ही घबरा रहे थे। देखते देखते तमाम अवधमें विप्लवकी आग धधक उठी। इसमें थोड़ेसे सिपाही ही न थे, सम्पूर्ण अवधप्रान्त इस विप्लवका लीलाक्षेत्र था। योद्धा सिपाहियोंके साथ हथियारबन्द निवासी और डाकू लुटेरोंने मिलकर इसे महाविप्लव बना डाला था।

जिस विप्लवसे सबकी सम्पत्तिका नाश होता है, सबको अपने २ जीवनकी आशंका होती है, वह फिर एक सम्प्रदायमें आबद्ध नहीं रहता। प्रसिद्ध फ्रेंच लेखक विक्टर ह्यूगोने लिखा है कि, जो स्वार्थी होते हैं, दूसरोंकी सम्पत्तिसे अपने आपको मालदार बनानेकी चिन्ता करते रहते हैं; जो हिंसापरायण होते हैं, वे सब विप्लवके बढ़ानेवाले बन जाते हैं। ऐसा विप्लव बिजलीके समान शीघ्र गतिसे फैलता है, हवाके सहारे एक

स्थानसे दूसरे स्थान जा पहुंचता है। जो तरह तरहकी बातें करते हैं, जो कल्पनाके सहारे तरह तरहका स्वप्न देखते हैं, जो अपना बदला चुकानेके लिये कमर कस लेते है, जो मानसिक उत्तेजनाके कारण धैर्य खो देते हैं; वे ही विप्लवके भयंकर शस्त्र बन जाते हैं। मनुष्य जातिके सबसे नीचेवाले तहसे विप्लवकी वृद्धि होती है। जो निरक्षर निम्न आदमी कौतुकवश तरह तरहकी कल्पना करते हैं, जो दूसरोंका धन हरण करनेके इरादेसे रास्तोंमें घूमते रहते हैं, रातको इधर उधर पड़ रहते हैं, जिन्हें पेट भरनेके लिये रोज भाग्यका सहारा लेना पड़ता है, जिनके पास रक्षा करने योग्य कपड़ेतक नहीं होते, वे गदरके पोषक और जीवन होते हैं। ये लोग अपनी इच्छा पूरी करनेके लिये राज्यके तमाम नियम और समाजके शासन तोड़ डालते हैं। जैसे जोरकी आंधी चीजोंको इधर उधर फेंक देती है, वैसे ही ये लोग भी थोड़े समयके लिये तमाम नियमोंका नाश करके देशको श्मशान बना डालते हैं।

अवधप्रान्तका यही हाल हुआ। जब अवधके भिन्न २ स्थानोंके सिपाहियोंने सुना कि लखनऊके सिपाही गवर्मेंटके खिलाफ हो गये तब बिना सोचे विचारे वे सब गवर्मेंटके विरुद्ध खड़े हुए। उनके साथ अवधके अन्य विप्लववादी भी हो गये। नित्य लखनऊमें स्थान २ से विप्लवके समाचार आने लगे। रोज अंग्रेजोंके मारे जाने, लूटे जाने और घर जलाये जानेकी खबरोंसे यूरोपियन व्याकुल हो उठे। अंग्रेजोंने अवश्य थोड़े ही

दिन हुए लिया था, थोड़े ही दिनसे अंग्रेज़ी अमलदारी हुई थी। शुरू होते न होते कागजके घरकी तरह यह भस्म होने लगी। जहां जो जरा भी शक्तिशाली था वहांका वही प्रधान हो गया। उसीकी आज्ञासे तमाम काम होने लगा, अंग्रेज़ी राज्य और अंग्रेज़ी सत्ताका नाम भी न रहा। बिना किसी तरहकी लड़ाईके अंग्रेज़ोंने अवध लिया था, अब उसे फिर प्राप्त करनेके लिये उससे अधिक संग्रामकी आवश्यकता पड़ी।

खैराबाद विभागका प्रधान स्थान सीतापुर है। सीतापुरके सिपाही सबसे पहले गवर्मेंटके खिलाफ खड़े हुए। इस स्थानपर ४१ नं० पैदल और ६ तथा १० नं० अनियमित सिपाही सेनायें थीं। जार्ज क्रिश्चियन इस विभागके कमिश्नर थे। यूरोपियन अफसर इन सेनाओंके नायक थे। मई मासके अन्त-

सीतापुर

तक कमिश्नरको किसी प्रकारकी आशंका न थी। पर ३० मईको आगराके जज रेक्स साहबको उन्होंने निम्न लिखित पत्र लिखा था—"यहां सब प्रकारसे शान्ति है। मेरे विभागमें किसी तरहकी आशंका नहीं। ४१ नं० सिपाहियोंमें भी शान्ति है, मेरे अधीन साढ़े नौ सौ आदमी हैं। यदि लोगोंमें अशान्ति हो तो एक घंटेमें मैं इनके द्वारा शान्ति स्थापन कर सकता हूं।" कमिश्नरने अवधकी अनियमित सेना तथा पुलिसकी ओर दृष्टि करके यह बात लिखी। इन सबपर उनका विश्वास था। वे समझ रहे थे कि जो अशान्ति हुई तो वे इन आदमियोंसे शान्ति कर लेंगे। पर उनके शासनके कारण सब अप्रसन्न थे। धनी,

दरिद्र एक साथ कर दिये गये थे। बड़े बड़े आदमियोंका गौरव समूल नष्ट हो गया था। नियमित अनियमित सब सिपाही एक साथ गवर्मेंटके विरोधी हुए थे। यदि गवर्मेंटकी नीति ताल्लुक़दारों और जमींदारोंको बनाये रखती तो इस समय वे काम आते, इस समय अंग्रेज़ोंको चारों ओर अन्धेरा न दिखाई देता।

सीतापुरके नियमित और अनियमित दोनों तरहके सिपाही अधिकारियोंको अपना विश्वास दिलाने लगे। वे कहने लगे कि यदि अधिकारी उनका अविश्वास करेंगे तो उन्हें असह्य कष्ट होगा। एक बूढ़े हिन्दुस्तानी अफसरने आंसू भरकर अंग्रेज़ अफसरसे कहा—"जिन्होंने आजतक जबान नहीं हिलाई, छावनी हो चाहे लड़ाईका मैदान—सदैव साथ रहे-उनपर इस समय किसी प्रकारका अविश्वास न किया जाय।" पर अन्तमें सिपाहियोंकी बात पूरी न उतरी। बूढ़े अफसरकी बात भी सत्य साबित न हुई। ३ जूनको सिपाही उत्तेजित होकर अंग्रेज़ोंके खिलाफ खड़े हो गये। ४१ नं० सेनाके सिपाही पुकारकर कहने लगे कि १० नं० सेना वाले खज़ाना लूट रहे हैं। ४१ नं० सेनाके अफसर कर्नल बार्चने अपनी सेनामें जाकर देखा कि सब तरहसे शान्ति है, जब वे वापिस हो रहे थे तब खजानेके रक्षक एक सिपाहीकी गोलीसे मारे गये। एक उनका सहायक घायल हुआ। कमिश्नर साहबके बंगलेपर यूरोपियन स्त्री पुरुष एकत्र हो गये थे। हथियारबंद पुलिस

इनकी रक्षा कर रही थी। पर ये रक्षक ही अन्तमें भक्षक हो गये। कमिश्नर साहब भागकर नदीके किनारेकी ओर चले। उनकी स्त्री अपने छोटे बच्चेको लेकर उनके साथ साथ चली। कमिश्नर जब नदी पार हो रहे थे तब विद्रोहियोंकी गोलीसे मारे गये। उनकी स्त्री और बच्चा भी मार डाला गया। दूसरे अंग्रेजोंमेंसे कोई नदी किनारे मारा गया, कोई नदी पार करते मारा गया। किसी किसीने छिपकर प्राण बचाये। ४१ नं० सेनाके ३० आदमियोंने असामान्य विश्वास दिखाकर इन भागतोंकी रक्षा की थी। उन्होंने ही सारे दिन लखनऊ सीतापुरका समाचार भेजा। उसी समय लखनऊसे सिक्ख सवार बग्गियां लेकर आये। जिन सिपाहियोंने इनकी रक्षा की थी उन्होंने सिक्खोंके हाथ इन्हें सौंपकर अपने अपने घरका रास्ता लिया। वे डर गये थे। इस समय यूरोपियनोंके साथ रहना उन्हें विपत्तिजनक मालूम होता था। इनकी रक्षा करनेपर भी अपने विद्रोही साथियोंके विरुद्ध वे खड़े न हुए। इसलिये वे इन्हें सिक्खोंके हाथ सौंपकर अपने घर गये।

खैराबाद विभागके दो स्थानोंपर गदर हुआ था। सीतापुर कमिश्नरी थी जिसका वर्णन ऊपर आ गया है। दूसरा स्थान मुलावन था। यहां ४१ नं० सेनाके कुछ सिपाही और ४ नं० अनियमित सेना थी। मई मासके अन्तमें डिप्टी कमिश्नरको इनपर सन्देह हुआ। पर सन्देह होनेपर भी डिप्टी कमिश्नरने स्थान न छोड़ा। जब सीतापुरमें गदर हो गया तब भी

वे अपने कामपर डटे रहे। अन्तमें जब चारों ओर अशान्तिकी आग धधकने लगी और सीतापुरके अंग्रेज़ मारे गये, तब कोई उपाय न देखकर डिप्टी कमिश्नर घोड़ेपर बैठकर अक्षत शरीर लखनऊ चले गये। सीतापुर विभागका दूसरा स्थान मुहमदी था। यहां बड़ी शोचनीय घटना हुई। इस स्थानके डिप्टी कमिश्नर टामसन साहब थे। नवाबी ज़मानेमें ये ज़िले ९ नं० सेनाके अध्यक्ष थे वह इस समय मुहमदीमें ही थी। यह स्थान रुहेलखंडकी सीमापर शाहजहांपुरके पास ही है। शाहजहांपुरके ग़दरकी खबरोंसे अधिकारी बहुत चिन्तित हुए। १ जूनको शाहजहांपुरके भा[illegible] हुए यूरोपियन मुहमदीमें आकर ठहरे। इनके आनेके दो दिन बाद मुहमदीमें भी विप्लवकी बिजली चमकने लगी। ४ जूनको सिपाहियोंने खज़ाना लूटकर कैदियोंको छोड़ दिया। ग़दरके अनुरूप काम उन्होंने किये पर डिप्टी कमिश्नरके विरुद्ध पहले उन्होंने कोई काम न किया, क्योंकि पहले वे उनके कप्तान रह चुके थे। कप्तानके सामने उन्होंने यूरोपियनोंकी जान बचानेकी प्रतिज्ञा की। इससे आश्वस्त होकर कप्तानने अन्य यूरोपियनों तथा स्त्री बच्चों सहित घोड़ों और बग्गियोंमें बैठकर औरंगाबादकी यात्राका उद्योग किया। पर जब वे चल पड़े तब सिपाहियोंने अपनी प्रतिज्ञा तोड़ दी। उन्होंने लगातार गोलियां चलाकर सबको मार डाला। एक सिपाही गुरुदीनने इस समय कप्तानसे कहा कि यदि वे हाथका पिस्तौल डाल दें तो वह उन्हें बचावे।

मुलावन

मुहम अंग्रेजी लगानव मुहमींदार

कप्तानने पिस्तौल डाल दिया। गुरुदीन उन्हें अपनी आड़में करके खड़ा हो गया। इससे कप्तानकी जान बची।

अवधके हर स्थानमें, सिपाहियोंमें, ताल्लुकदार जमींदारोंमें किसानों और मजदूरोंमें, गवर्मेंटके विरुद्ध विद्रोहकी आग छिपी थी। एक स्थानकी ओर सब व्याकुलतासे देखते थे उसी क्षण दूसरी ओर भयानक आग लग जाती थी। जो सीतापुर मुहमदीमें हुआ, वही फैजाबादमें हुआ।

फैजाबाद अवधका पूर्वी हिस्सा है। फैजाबाद, सुल्तानपुर और सालोनी नामक तीन प्रदेशोंमें विभक्त है। लखनऊ एक कमिश्नर और एक डिप्टी कमिश्नर थे। एक गोरे सिक्खसेना, २२ नं० भारतीय सिपाही सेना तथा ६ नं० अवधका पैदल

फैजाबाद

और १५ नं० अनियमित रिसाला था। २२ नं० सेनाका अध्यक्ष तमामका सेनापति था। कमिश्नर कर्नल गोल्डन इस सेनाको विश्वासी कहते थे। पर उनका सचमुच विश्वास न था। जब मई मासमें उन्हें मेरठ और दिल्लीकी घटनाओंका पता लगा, तब उनकी धारणा हो गई कि शीघ्र ही उनके सामने भी गदरका दृश्य दिखाई देगा। पश्चिमोत्तर प्रदेशके अनेक स्थान जिस आगसे भस्म हो रहे हैं, वह बहुत शीघ्र ही वहां भी पहुंचनेवाली है। इसी कारण वे उपाय करने लगे। पहले यह विचार हुआ कि जो सब जमींदार विश्वासी समझे जाते हैं उनसे इस समय सहायता ली जाय या नहीं। जिस स्थानको आत्मरक्षाके योग्य समझा गया उसके चारों ओर मजबूत और

ऊंची दीवार बनाई जाने लगी। स्त्रियों और बच्चोंको अन्य स्थान भेजनेका प्रस्ताव हुआ। पर ये सब विचार और संकल्प कार्यरूपमें परिणत न हो सके। विश्वासी जमींदार भी शिक्षित सिपाहियोंके सामने युद्धमें नहीं टिक सकते थे। लखनऊके रास्तेमें तरह २ के विघ्न थे, इस कारण स्त्रियों और बच्चोंको लखनऊ नहीं भेज सकते थे। इसलिये सब फैजाबादमें घिरकर गदरकी आशंकासे डरने लगे।

अंग्रेजी शासनप्रणालीकी परीक्षाका यह समय था। जमीन-के लगानवसूलीका जो तरीका निकाला गया था, उससे जमींदार नाराज थे और तालुकदारोंको बेदखल या आधा दखल किया गया था, इस कारण वे गवर्मेंटके विरोधी थे। सर हेनरी लारेंसने इन लोगोंके साथ समवेदना प्रगट की थी, पर जबानी सहानुभूतिसे हृदयकी आग नहीं दब सकती। अब समय आ उपस्थित हुआ। छिपी हुई आग भड़क उठी। तालुकदारों और जमींदारोंके कामोंसे अंग्रेज भयके मारे काँपने लगे। शाह-गंजके राजा मानसिंह तालुकदारोंमें प्रधान थे। अंग्रेज़ी बन्दोबस्तके कारण वे अपनी बड़ी भारी जमीनसे खारिज कर दिये गये थे। हिसाब करके उनके नाम बहुत सा लगानका रुपया बाकी निकाला गया था। मानसिंह समझ रहे थे कि गवर्मेंट उन्हें लगानके लिये अन्यायसे उत्तरदायी बना रही है। लगान रुकनेके कारण वे कैद किये जाने वाले थे पर उस समय लखनऊमें मिले नहीं। कलकत्तामें उन्होंने क्या किया और अवधमें वे

क्या कर रहे थे, यह किसीको मालूम नहीं। पर वापिस लौटते ही वे कैद किये गये। किसीका कहना है कि वे लगानके कारण कैद हुए थे और कोई उन्हें गवर्मेंटकी आज्ञासे कैद बताता था। कमिश्नर टामसनसे उनका अच्छा परिचय था, टामसन साहबने उन्हें छोड़नेको कहा। पर डिप्टी कमिश्नरने इसका अनुमोदन न किया। गवर्मेंटकी तीखी नजर मानसिंहपर पड़ी थी इसमें सन्देह नहीं। मानसिंहने स० कमिश्नरसे कहा कि वे अपने शाहगंजके किलेमें उनकी रक्षा कर सकेंगे। स० कमिश्नरने कहा कि सब यूरोपियन स्त्री पुरुषोंकी रक्षा होनी चाहिए। मानसिंह सोचने लगे कि वे सबकी रक्षा कर सकेंगे या नहीं। उन्होंने सिविलियन परिवारोंको आश्रय देना चाहा, पर यह बात डिप्टी कमिश्नरको पसंद न आई। अन्तमें सोचकर मानसिंहने कहा कि वे सबको आश्रय दे सकते हैं पर इस शर्तपर कि सब बहुत ही गुप्त रूपसे वहाँ जायँ। राजा मानसिंहकी यह बात फौजी अफसरोंसे कही गई पर उन्हें पसंद न आई। उन्हें मानसिंहकी अपेक्षा अपने बलपर अधिक विश्वास था। केवल एक अफसर सिविलियनोंके साथ अपने बालबच्चोंको भेजनेपर राजी हुआ।

७ जूनको स्त्रियाँ और बच्चे रातके समय रक्षित स्थानको चले गये। इसके दूसरे दिन प्रगटमें सिपाही विद्रोही हो उठे। सबसे पहले वे तोपोंपर कब्जा करने आगे बढ़े। भरी हुई तोपोंके पास गोलंदाज जलती बत्तियाँ लिये खड़े थे। पर पैदल सिपाहियोंने

बत्तियां फूंकानेसे पहले ही तोपोंपर अधिकार कर लिया। अफसरोंकी आज्ञा उन्होंने न सुनी। उनके अनुनयपर भी ध्यान न दिया। उन्होंने साफ़ कहा कि तमाम तोपें हमारी हैं। तोपोंपर अधिकार करके भी उन्होंने अफसरोंका अनिष्ट न किया। रक्षक बनकर वे अफसरोंको सेनामें लाये।

पैदल इस तरह अफसरोंके रक्षक बने पर सवार इससे अधिक असन्तुष्ट हुए। वे अंग्रेज़ोंका खून बहानेके लिये तैयार हुए। १५ नं० अनियमित रिसालाके रिसालदारने विप्लवकी डोर अपने हाथमें ली। यह अंग्रेज़ोंके मारनेके लिये सिपाहियोंको उत्तेजित करने लगा। पर गोलंदाजों और पैदलोंने यह अस्वीकार किया। अंग्रेज़ अफ़सर रात भर सिपाहियोंकी रक्षामें कैद रहे। पैदल और गोलंदाजोंने उन्हें भागनेमें भी सहायता की। २२ नं० सैनिक अफसरोंको लेकर नदी किनारे उपस्थित हुए। नाव पड़ी थी पर मल्लाह न थे। इसलिये खुद ही नाव खेकर अफ़सरोंने नदी पार की।

फैजाबादसे वे अक्षत शरीर निकल गये पर तमाम विपत्तियों-से न बचे। फैजाबादके इन भगोड़ोंका वर्णन ठीक ठीक नहीं मिलता। ग़दरका निश्चित काम लूटना और आग लगाना था। यह काम तो हर जगह एक सा मिलता है—पर बाकी और घटनाओंमें अन्तर है। फैजाबादमें भी लूट और अग्निकांड तो हुआ था पर अफसरोंकी उन्होंने रक्षा की। इस समय सिपा-हियोंकी इच्छाके बिना अंग्रेज़ोंकी जान बचनी कठिन थी।

यदि सिपाही दया न करते तो एक भी जीता न बचता। जब वे आजमगढ़से भागकर ३० मील चले गये तब देखा कि आगे बेगमगंजके पास पैदल और सवार सिपाही खड़े हैं। यहाँ नदी-का पाट भी अधिक न था जो भागकर प्राण रक्षा की जाती। आजमगढ़की १७ नं० पैदल सेना इनपर गोलियां चलाने लगी। दूसरी ओरसे नदीपर नाव द्वारा सिपाहियोंने पीछा किया। कर्नल गोल्डन मारे गये। भागते हुए दोनों नावोंके बहुतसे अंग्रेज मरे। कोई २ पानीमें डूब गया। जो बाक़ी बचे उन्होंने अमोरामें प्राणरक्षा की। यहां चौथी नावके आरोही भी भाग-कर आये। सब मिलाकर आठ आदमी कप्तानगंज पहुँचे। तेजअलीखां नामक २२ नं० सेनाका एक विश्वासी सिपाही उनके साथ था। कप्तानगंज छोड़कर वे फिर आगे बढ़े। जिन जिन गांवोंसे ये गुजरे उन सबने इनके साथ अच्छा व्यवहार किया। किसी किसीने इन्हें घोड़े और रुपये दिये। पर इससे भी इन्हें चैन न मिला। किसी गांवके निवासी इन्हें मारनेको तैयार हुए। मुसलमान इस गांवमें अधिक थे। गांववालोंने बंदूकों और तलवारोंसे इनपर हमला किया। इनमेंसे सात मारे गये। केवल एक बुरी दुर्दशाके बाद जीता रहा।

८ जूनको फैजाबादसे चार नावें चली थीं उनमेंसे तीनका वर्णन ऊपर हो चुका है पर घटनावश चौथी नावके यात्रियोंपर सिपा-हियोंकी नजर न पड़ी। इसी कारण वे बच गये। फैजाबादके भागनेवालोंकी कथा विस्तारसे नहीं वर्णन की गई। इस भयावह

विप्लवसे जिनकी जान किसी तरह बच गई थी उन्होंने बादमें अपनी मुसीबतोंका वर्णन किया। इन्होंने अपने प्राण बचानेको जिन जिन स्थानोंकी ओर यात्रा की वहांका वर्णन वैसा ही है, जैसा और स्थानोंके यूरोपियनोंके भागते समयका है। कहीं आश्रय और घर न मिल सकनेके कारण इनके कष्टोंकी सीमा नहीं रही, कहीं इनके मित्रों और स्वजनोंने इनके सामने शरीर त्याग किया। उनका मर्मभेदी दृश्य इन्हें चुपचाप आंखोंसे देखना पड़ा। उनका प्राणोंसे प्यारा पुत्र असीम कष्ट पाकर उनकी गोदमें मरा है। आंखोंमें आंसू भरकर वे फिर आगे रास्ता चलनेको तैयार हुए हैं। इन आपत्तिके मारोंका वर्णन इसी तरहकी शोचनीय घटनाओंसे भरा है। फैजाबादसे एक मेम अपने कुछ बच्चोंके साथ नावमें बैठकर चली थी। बादमें यह नावसे उतरकर भागी। इसने अपना वर्णन लिखा है। कभी इसे खुले मैदानमें रात बितानी पड़ी, कभी आगकी तरह तेज धूपमें रहना पड़ा, कभी खाने और पानीके बिना यह बिलबिला उठी। इसके बच्चे बीमार हो गये जिससे इसे और भी अधिक कष्ट हुआ। कई गांववालोंने सिपाहियोंके डरसे इसकी सहायता न की। किसी किसीने दयावश इसे अपने यहां ठहराकर अच्छा खाना और ठंढा पानी देकर इसकी तृप्ति की। इसके बच्चोंको पीड़ित देखकर दयामयी स्त्रियोंने इसकी परिचर्या की। राजा मानसिंहने इसकी सहायता की। इस प्रकार कष्टपर कष्ट उठाकर, भारतवासियोंकी अनन्त दयाके कारण इसके

प्राण बचे। कोई २ अंग्रेज़ गोरखपुरकी ओर भागे। रास्तेमें वे रोके गये। रोकनेवालोंने इन्हें सिपाहियोंके हाथ सौंपना निश्चय किया। ऐसे समयमें मुहम्मद हुसेनखां नामक एक आदमीके नौकरोंने इनकी रक्षा की। मुहम्मद हुसेनखांने इन्हें आश्रय दिया। जब गोरखपुरके मजिष्ट्रेटको इनका समाचार मिला तब उन्होंने इनके लानेको आदमी भेजे। फैजाबादसे जो मेम अपने बच्चोंको लेकर भागी थी उसके साथ और भी कई अंग्रेज़ थे। उनकी दुर्दशाका भी अन्त न था। इनमेंसे एकका बच्चा रास्तेमें मर गया। पर इस समय उसे समाधि देने योग्य कोई पदार्थ इनके पास न था। इन्होंने हाथोंसे गढ़ा खोदकर उस बच्चेको जमीनमें दबाया। जो इस गदरके अवसरपर ज्ञान भूलकर इधर उधर जान बचानेके लिये भागे थे उन्हें ऐसे मार्मिक दुःख, ऐसे कष्ट और शोक सहने पड़े थे।

फैजाबादके दीवानी विभागके चार कर्मचारी नावपर न चढ़े। गदरके समय राजा मानसिंहकी सहायता प्राप्त करनेके लिये ये अपने बाल बच्चों और नौकरों सहित ११ जूनको शाह-गंज पहुंचे। पर मानसिंह वहां न थे, वे विद्रोही सिपाहियोंका समाचार लेने अयोध्या गये थे। यहींसे उन्होंने कहला भेजा कि स्त्रियाँ और बच्चे उनकी रक्षामें रहें, पर मर्दोंको वे आश्रय न दे सकेंगे। मर्द वहांसे शीघ्र चले जायं क्योंकि कल सिपाही यूरोपियनोंको तलाश करने उनके घरपर जायंगे। सिपाहियोंके आनेके दिन ही नाव एकत्र की गई। ३८ प्राणरक्षाके लिये चले

थे। इनमेंसे १८ नावमें बैठे। पर बाकीकी गाड़ी रास्तेमें ही टूट गई, इसलिये वे नाव न पकड़ सके। ये वापिस शाहगंज गये। इसके बाद इन्हें गोरखपुर भेजा गया। इधर नावके यात्री राजा गोपालसिंहकी सहायतासे निरापद दानापुर पहुंचाये गये।

यूरोपियनोंके भागनेके विवरणके साथ हर जगह भारत-वासियोंकी दयाका परिचय मिलता है। भारतकी अबला स्त्रियोंने भी अपने जीवन विपत्तिमें डालकर इनकी सहायता की। एक ओर नरहत्याका कठोर और वीभत्स दृश्य था और दूसरी ओर दया, करुणाका अपूर्व भाव था। इस प्रकारकी एक घटनाका विवरण यहां दिया जाता है।

फैजाबादके डिप्टी कमिश्नरने कचहरी जाकर सुना कि छावनीके सिपाही गवर्मेंटके विरुद्ध लड़ रहे हैं। यह सुनते ही उन्होंने एक विश्वासी चपरासीसे अपनी स्त्रीको कहलाया कि वह उसी समय सम्पूर्ण सम्पत्ति छोड़कर अपने शरीरके कपड़ोंके साथ नदीके किनारे जाय। यह चपरासी मेमके साथ जानेपर नियत किया गया। समाचार भेजकर डिप्टी कमिश्नर छावनी-की ओर चले। इधर उनकी मेम अपने विश्वासी नौकरोंके साथ पालकीमें बैठकर नदीकी ओर चली। सिपाही लूटके लिये चारों ओर चक्कर लगा रहे थे। डरकर मेम शामको एक गांवमें गई। एक दयामयी स्त्रीने इस आपत्तिकी मारी मेमको अपने यहां स्थान दिया, उसने इसे एक पुराने भाड़में छिपाया। रातको विद्रोही सिपाही उस गांवमें भागे हुए अंग्रेज़ोंको खोजते आये।

उन्होंने कहा कि जो भगोड़े अंग्रेज़ों, बच्चों और स्त्रियोंको न निकालेंगे उनकी जान ली जायगी। अपनी जान ली जानेका अंदेशा होनेपर भी उस दयामयी भड़भूंजनने अंग्रेज़ स्त्रीको न निकाला। जब शामको मेम गांवमें आई थी तब मर्द खेतीके कामके कारण जंगलमें थे इसलिये उन्हें उसके आनेका कुछ पता न था। गांवकी स्त्रियाँ इस बातको जानती थीं, पर किसी स्त्रीने किसी मर्दसे इसकी चर्चा न की। डरी हुई मेम रात-भर भाड़के भीतर छिपकर पड़ी रही। सिपाही हर जगह देख भालकर चले गये। सवेरे डिप्टी कमिश्नरके विश्वासी नौकरने राजा मानसिंहसे एक नावकी प्रार्थना की। मानसिंहने आश्रित-की रक्षाके लिये नाव दी। डिप्टी कमिश्नरकी मेम तथा अन्य दो तीन मेमें अपनी २ सन्तानों सहित नावमें बैठीं। बाहर डिप्टी कमिश्नरके विश्वासी चपरासी और कुछ सिपाही बैठे रहे। उन्होंने हर जगह इसे तीर्थयात्रियोंकी नाव बताया। शामको नाव किनारेपर लगाकर विश्वासी नौकर गांवमें खानेके लिये गये। यहाँ भी गांववालोंने इन विपत्तिके मारोंकी सहायता की। एक गांवकी स्त्रीने छोटे २ अंग्रेज़ बच्चोंको भूखसे बिलखता देख कर कई स्त्रियाँ ला दीं, जिन्होंने अपनी छातीका दूध उन बच्चों-को पिलाया। यदि सिपाहियोंको मालूम हो जाता तो वे इस स्त्री और दूध पिलानेवालियोंको मार डालते। पर अपनी जानकी परवा न करके स्त्रियोंने सहायता की। इस प्रकार ये मेमें इलाहाबाद पहुँचीं। डिप्टी कमिश्नरकी मेम इन ग्रामीण स्त्रियोंके

उपकारको न भूली। जब ग़दर शान्त हुआ तब उसने इन्हें काफी इनाम दिया।

सुलतानपुर जिलेका प्रधान नगर सुलतानपुर गोमतीके दाहिने किनारे पर बसा है। यहाँ ८ नं० अनियमित पैदल और १५ नं० अनियमित सिपाही रिसाला तथा हथियारबंद पुलिस थी। कर्नल फ़िशर नामक अफसर इनके नायक थे। ५ जुलाईको दीवानी विभागके कर्मचारियोंको पता लगा कि दूसरे स्थानोंके विद्रोही सिपाही सुलतानपुरके सिपाहियोंसे मिलकर अंग्रेज़ोंको मारनेकी आयोजना कर रहे हैं। ७ जुलाईको दो विश्वासी अफसरोंके साथ कर्नल फिशरने, अंग्रेज़ स्त्रियों और बच्चोंको इलाहाबाद रवाना किया। ९ जूनको सिपाही अंग्रेज़ोंके विरुद्ध उठे। उसी समय कर्नल सिपाहियोंके पास जाकर उन्हें समझाकर शान्त करने लगे। इसी समय एक पुलिसवालेने कर्नलकी पीठमें गोली मारी। बुरी तरहसे घायल होकर कर्नल अपने सिपाहियोंके सामने गिर गये। जिनको उसने रणशिक्षा दी थी और धैर्यके साथ शान्त रहनेका उपदेश दे रहे थे उसकी यह दशा हुई। सामने पड़े हुए अफसरकी किसीने सहायता न की। टुकर नामक एक अफसरने कर्नलको डोलीमें डाला। डोलीके पासही दूसरा अफसर भी मारा गया। डोलीमें कर्नल फिशर भी मर गये। इस तरह अपने अफसरोंको मारकर सिपाहियोंने टुकर साहबसे भागनेको कहा। प्राण लेकर टुकर साहब घोड़ेपर गोमती

सुलतानपुर

की ओर भागे। गोमतीके किनारे दड़िया स्थानपर रुस्तमशाह नामक एक तालुकदारका किला था। किलेमें चारों ओर घना जंगल था। जमीनके नये बन्दोबस्तके कारण रुस्तमशाहकी बहुत जमीन छिन गई थी पर अन्याय होनेपर भी धीर बुद्धि तालुकदार अंग्रेज़ोंका दुश्मन न बना। जिन्होंने नुकसान किया था उनका उपकार करनेके लिए वह इस समय तैयार हुआ। विपत्तिके मारे टुकर साहबने इसी तालुकदारके किलेमें शरण ली। तालुकदारके शान्त व्यवहारसे इस शरणागतको किसी प्रकारका कष्ट न हुआ। इनके साथ और भी कई एक भागे हुए अंग्रेज़ थे। बादमें बनारसके कमिश्नर हेनरी टुकरने इन लोगोंको अपने पास बुला लिया। पर सुलतानपुरके दीवानी-विभागके कर्मचारियोंका भाग्य बहुत रूठा था। इस विभागके दो अंग्रेज़ोंने जालिमखां नामक एक जमींदारके घरमें आश्रय लिया। जालिमखांने ऊपरसे तो इनके साथ मीठी मीठी बातें कीं पर अन्तमें वह विश्वासघाती मालूम हुआ। उसने बादमें दोनोंको अपने घरसे बाहर निकाल दिया, दोनों बंदूकोंके निशाना हुए। अवधके जमींदारोंकी विश्वासघातकताका यही एक उदाहरण अधिकारियोंको मिला था। इस प्रकार सुलतानपुरसे भी अंग्रेज़ी राज्यका लोप हो गया। गदरका जो कुछ निश्चित काम लूट मार और घर जलाना था, वह सुलतानपुरमें भी हुआ। अंग्रेज़ोंके मकान जलाये गये। यह सब करके वे नवाबगंजकी ओर गये।

फैजाबाद विभागमें एक स्थानपर और सिपाही थे। अवधकी १ नं० पैदल सेनाका पहला हिस्सा सालोनीमें रहता था। जून मासके पहले सप्ताह तक यहां किसी प्रकारकी गड़बड़ न दिखाई दी। सिपाही शान्त थे। लोग प्रसन्नतासे अपना काम कर रहे थे। जमींदार गवर्मेंटकी बाकी अदा कर रहे थे। शान्तिके समयमें लोग जैसे रहा करते हैं, और जो कुछ किया करते हैं इस समय तक वैसेही सब भाव थे। इसी कारण अधिकारी सोचे बैठे थे कि ऐसी शान्ति भंग करके लोग विप्लव न करेंगे। पर जब उन्हें समाचार मिला कि फैजाबाद और सुलतानपुरके सिपाही गवर्मेंटके खिलाफ विद्रोही हो गये, तब उन्हें साफ मालूम होने लगा कि सालोनीके सिपाही अधिक समय तक विश्वासी न रहेंगे। ९ जूनको सिपाहियोंमें उत्तेजना दीखने लगी। १० जूनको वे प्रगटमें अंग्रेज़ी राज्यके विरुद्ध हो गये। पर गदरके अवसरपर अन्यान्य स्थानोंके सिपाहियोंने जो कुछ किया वह सालोनीके सिपाहियोंने न किया। उन्होंने किसी यूरोपियनकी जान न ली। उन्होंने अपनी दुहाई बस्तीमें फेरी और कैदियोंको मुक्त कर दिया। जब सब अंग्रेज़ और अफसर जाने लगे तब सिपाही रक्षक बनकर उनके साथ शहरसे बाहर तक गये। २० विश्वासी सिपाही तो उन्हींके साथ गये। इस प्रकार विपत्तिसे बचकर अंग्रेज़ दरियावपुरके किलेमें जाकर छिपे। यह किला राजा हनुमन्तसिंह नामक एक तालुकदारके अधीन था। राजा

सालोनी

हनुमन्तसिंहकी भी बहुतसी जमीन गवर्नमेंटने छीन ली थी। पर इस तालुकदारकी उदारता और महानता इस समय प्रगट हुई। जिस जातिके लोगोंने उसे विपन्न और दीन बनाया था उसी जातिके लोगोंकी उसने सहायता की। सालोनीके अंग्रेज़ोंको उसने अपने किलेमें स्थान दिया। हर तरहसे उनके आरामका खयाल रखा। जब यूरोपियन इनके आश्रयसे विदा होने लगे तब एकने कहा कि, गदरकी शान्ति होनेपर हम तुम्हारी छीनी हुई जमीन वापिस दिलानेकी कोशिश करेंगे। इस बातपर उदार तालुकदारने सहजमें कहा—"साहब, आपके देशके लोगोंने हमारे देशमें आकर हमारे राजाको कैद कर लिया। हमारी दस्तावेजों और कागजोंको देखनेके लिये आप लोगोंने अपने आदमी हम लोगोंपर भेजे थे। जो जमीनें हमारे पास दस दस और बीस बीस पीढ़ियोंसे चली आरही हैं उनकी दस्तावेजें हम कहांसे लावें? फिर भी मैं आपकी आज्ञाके विरुद्ध खड़ा नहीं हुआ। अब आपका भाग्य बदला। इस देशके आदमी आपके खिलाफ खड़े हुए। आपने जिसकी जमीन छीनी उसीके पास खड़े हैं। मैंने शरण आनेके कारण आपकी रक्षा की। पर अब अपने आदमी लेकर लखनऊ जाऊंगा और आपकी कौमवालोंको मार मारकर निकालूंगा।" * राजा हनुमन्तसिंहने गम्भीरतासे यह कहकर अंग्रेज़ोंको विदा किया। सन्तोषकी बात यही है कि गदर समाप्त होनेपर इस सज्जन

* Malleson's Indian Mutiny. Vol. I P. 407 note.

तालुकदारकी जमीन वापिस कर दी गई थी। लालोजीके यूरो-पियन हनुमन्तसिंहकी सहायतासे इलाहाबाद पहुँचे। इस मौके-पर अन्य योग्य पुरुषोंने भी अंग्रेजोंकी सहायता की।

बहराइच विभागमें बहराइच, गोंडा और सुल्तापुर जिले हैं। तीनों घाघरा नदीके किनारेपर हैं। उस समय चार्ल्स डाइंग-फील्ड (बादमें सर) इस विभागके कमिश्नर थे। यह बहराइच रहा करते थे। बहराइचमें फौजी स्टेशन था, इसके पश्चिम मटपुर और दक्षिणपश्चिम गोंडामें सेना थी। सिकरोरा इस विभागका प्रधान सैनिक स्थान था। १८५७ के मई मासमें एक रिसाला, एक पैदल सेना और अवधके अनियमित सेनाके गोलंदाज सिकरोरामें थे। कप्तान बोली इस सेनाके सेनापति थे।

बहराइच

जब मेरठ और दिल्लीका समाचार बहराइच पहुंचा तब वहाँ-के सिपाहियोंमें किसी प्रकारका असन्तोष न दीखा। सिपाही पहलेके ही समान राजभक्त थे, पहलेके ही समान अफसरोंकी आज्ञा मानते थे। पर गदर केवल मेरठ और दिल्लीमें ही न रहा, वह एकसे दूसरे और दूसरेसे तीसरे स्थानमें व्याप्त होने लगा। जहाँ जहां फौजें थीं वे सब स्थान इन खबरोंसे हिलने लगे। जब यह हाल देखा तब कमिश्नर साहब सावधान हुए। उन्होंने यूरोपियन स्त्रियों और बच्चोंको विश्वासी आदमियोंके साथ लखनऊ भेज दिया। यूरोपियनोंकी रक्षाका भी उन्होंने प्रबन्ध किया। अवध अंग्रेजोंके हाथ जानेके कारण तालुकदारोंकी

सबसे अधिक हानि हुई थी पर इस अवसरपर इन ताल्लुकदारोंने ही सहायता की। बहराइचके कमिश्नरने भी अपनी रक्षाके लिये ताल्लुकदारोंसे प्रार्थना की। इनमें बलरामपुरके राजा सर दिग्विजयसिंह प्रधान थे। ये कमिश्नरके मित्र थे। अंग्रेज़ोंकी रक्षाके लिए इन्होंने वादा किया।

एक रातको एकाएक शोर हुआ कि सिपाही गवर्मेंटके खिलाफ उठ खड़े हुए। स्त्रियां और बच्चे लखनऊ भेज दिये गये थे, इस कारण सब अफसर कमिश्नरकी कोठीपर सोते थे। सिपाहियोंके उठनेका समाचार मिलते ही सब अफसर तैयार होकर अन्धेरेमें छावनीकी ओर चले। उसी समय गोलंदाजोंने उनकी आज्ञाका पालन किया। सिपाहियोंमें भी किसी प्रकारका विद्रोह न देखा गया। वापिस आकर अफसर सोये। सिपाही भी आरामसे सोते रहे।

यहांके सिपाहियोंमें यह अफवाह फैली थी कि वे जब रातमें सोते होंगे तब गोलीसे मारे जायंगे। इस डरके कारण वे बड़े चिन्तित हो उठे। यह चिन्ता ही बादमें उत्तेजना बनी। अफसरोंको साफ मालूम हो गया कि सेना अब उनकी आज्ञा न मानेगी। वे प्रतिपल गदरका अंदेशा कर रहे थे। सर हेनरी लारेंसने लिख दिया था कि यदि ग़दर हो तो उन्हें अपनी जान बचानेके लिये हर तरहकी स्वाधीनता होगी। सबसे पहले कमिश्नर डाईंग फील्डने इसका प्रयोग किया। वे हवाखोरीके बहाने कोठीसे निकले और घोड़ा भगाकर गोंडाकी ओर चले।

इस समय गोंडामें किसी तरहकी गड़बड़ न थी। दीवानी काम निश्चिन्ततासे चल रहा था। छावनीमें सैनिक भी शान्त थे। मई मासके अन्ततक यही हाल था। पर जून मासके शुरूसे भाव बदलने लगे। फिर भी किसी तरहकी गड़बड़ न हुई। सिपाही दृढ़तासे कह रहे थे कि वे कभी नमकहराम न होंगे। पर जब डाइंगफील्ड साहब फैजाबाद और सिकरोराके समाचार लेकर गये तब गोंडाके अधिकारी भी विचलित रहीं। सिपाही विश्वास दिलाने लगे पर अफसरोंकी उनपर आस्था न हुई। डाइंगफील्ड साहब दीवानी अफसरोंको साथ लेकर बलरामपुरकी ओर गये। बलरामपुरके ताल्लुकदारने इन्हें अपने यहां रखा और विश्वासी आदमियोंकी रक्षामें गोरखपुर भेज दिया। गोंडाकी सेनाके अफसरोंने अपनी सेनाको शान्त रखा। पर अन्तमें जब इन्होंने देखा कि सिपाही काबूसे बाहर हो रहे हैं तब सिकरोराके अफसरोंके साथ वे भी बलरामपुरकी ओर रवाना हुए।

गोंडा

इस प्रकार सिकरोरा और गोंडाके यूरोपियन अफसर पहले हीसे चले गये। सिकरोरामें एक साहसी सेनापति बनहोम रह गये। ये गोलंदाज सेनाके अफसर थे। इनके सिपाही इनपर अनुरक्त थे और विपत्तिके समय इनके सहायक बने। कमिश्नर पहले ही भाग गये थे। पैदल सेनाके अफसर दूसरी ओर चल दिये थे। अंग्रेज़ी अमलदारीका निशान जाता रहा था ऐसी दशामें विद्रोही सिपाहियोंके बीच गोलंदाज सेनाके सेनापति थे।

सिपाहियोंने विश्वासी बने रहनेकी प्रतिज्ञाके साथ इन्हें अपना सेनापति बनाया। ये पैदल और गोलंदाज सेनाको लेकर लखनऊ जानेका प्रबन्ध करने लगे। पर यह आशा सफल न हुई। पैदल सेनाने अन्तमें अपनी प्रतिज्ञाका भी पालन न किया। गोलंदाजोंके हृदय भी बदले। इससे भी विचलित न होकर सेनापति अपनी तोपोंके बराबर रहे। जब पैदल सेना उनकी ओर आगे बढ़ी तब उन्होंने गोलंदाजको फायर करनेकी आज्ञा दी। पर किसीने आज्ञाका पालन न किया बल्कि सेनापतिकी ओर बंदूकें तानीं। पर इनमें स्वामिभक्त भी थे। उन्होंने सबको रोका। सेनापतिके लिये वे घोड़ा लाये, अपने पाससे एकत्र करके उन्हें कुछ रुपये दिये और भागनेको कहा। कोई उपाय न देखकर अपनी तोपें छोड़कर यह साहसी सेनापति भागा। जाते जाते सिपाहियोंने कहा कि वह बहराम घाटकी ओर न जायं क्योंकि वहां विद्रोही सिपाही जमा हैं। इसी कारण सेनापति होशियार हो गये थे। पर बहराइचके अफसरोंको किसीने इस तरह सावधान न किया था। बहराइचके सेनापति और डिप्टी कमिश्नर अपने सहायकोंके साथ नवपाड़ाकी ओर भागे। पर वहां उन्हें आश्रय न मिला। कारण नवपाड़ाके मालिक नाबालिग थे। जो काम कर रहा था वह अंग्रेज़ोंके प्रति समवेदना ही न था, यहां आश्रय न मिलनेके कारण इन्हें अधिक कष्ट न हुआ पर दुर्भाग्यसे वे बहरामघाटकी ओर चले। इन्होंने हिन्दुस्तानी कपड़े पहन रखे थे, छिपकर इन्होंने किसी प्रकार अपने घोड़े नावोंमें चढ़ा दिये। इसी समय कुछ सिपाही पुकारे

कि अंग्रेज़ भाग रहे हैं और सिपाही भी आ गये। सब मिलकर इनपर गोलियां चलाने लगे। सेनापति और डिप्टी कमिश्नर वहीं मर गये। इनके सहायक नावसे बाहर लाये गये और बेरहमीके साथ तलवारोंसे मारे गये।

मुल्लापुरमें उस समय कोई सेना न थी इसलिये वहां किसी तरहकी गड़बड़की आशंका भी न थी। पर कुछ दिन बाद प्रजेके डाकू और लुटेरोंने अशान्ति कर दी। अंग्रेज़ अफसर इन आततायियोंको न दबा सकनेके कारण मुल्लापुरसे विदा हुए। रास्तेमें सीतापुर और दूसरे स्थानोंके भागे हुए अंग्रेज़ इन्हें मिले। पहले ये लोग नावसे भागे थे, पर नावके रास्तेको विपत्तिमय समझकर बादमें सड़कीके रास्तेसे भागे। रास्तेमें इनको दौड़िया नामक स्थानके राजाके मतियारी वाले मकानमें दो महीने रहना पड़ा। इसके बाद कोई कोई सिपाहियोंके हाथ पड़ा और कोई नैपालके पहाड़ोंकी ओर भाग गया। इस स्थानके एक राजाने भगोड़ोंको शरण दी पर नैपालको तराईकी खराब आबहवाके कारण कई मर गये। केवल एक आदमी बचा जो बादमें जंगबहादुरके गोरखपुरवाले भवनमें लाया गया।

मुल्लापुर

लखनऊ विभागके अन्तर्गत दरियाबादमें अवधकी ५ नं० सेना रहती थी। मई मासके अन्त तक इनमें किसी प्रकारकी अशान्ति न थी। कप्तान इन्हें प्यार करता था। उसका विश्वास था कि ये सिपाही अन्त तक उसका साथ देंगे। पर यह खयाल

दरियाबाद

गलत निकला। दरियाबादके खजानेमें उस समय तीन लाख रुपया था। इस रुपयेके ही कारण सिपाही अविश्वासी हुए। कप्तानने खज़ाने और जेलखानेकी रक्षाके लिये फौजके बीचमें तमाम खज़ानेका रुपया और जेलके कैदियोंको रखा। फिर हिफाजतसे सबको लखनऊ पहुंचानेके लिये रुपये गाड़ियोंमें लादे गये। सिपाही आधे मील तक गये भी। पर बादमें वे विद्रोही हो गये। किसीने कप्तानको मारनेके लिये बंदूक भी तानी पर स्वामिभक्त सिपाहियोंने उसे रोक दिया। सिपाहियोंने अफसरोंसे भागनेको कहा। कोई उपाय न देखकर अन्तमें अफसर भाग गये। रुपया सिपाहियोंने लूट लिया और कैदियोंको छोड़ दिया। यूरोपियनोंमेंसे कोई कोई इक्केपर और कोई घोड़ेपर बैठ कर लखनऊ पहुंचे। सिपाही एक आध दिन दरियाबादमें रहे फिर विद्रोहियोंके प्रधान स्थान नवाबगंज चले गये।

इस प्रकार अयोध्याके सब स्थानोंमें विद्रोह हुआ और अंग्रेज़ी राज्य तीन सप्ताहके भीतर उठ गया। "सिपाही संग्राम" इतिहासके लेखक 'के' साहबने इस विषयमें लिखा है—"इन सब घटनाओंसे अंग्रेज़ोंका जीवन और सम्पत्तिका विनाश तो हुआ ही पर हमारे जातीय गौरवकी भी हानि हुई। हर स्थानपर अंग्रेज़ अमलदारीका नाश हुआ और अंग्रेज़ कुत्तोंकी मौत न भी मारे गये तोभी अपनी जान बचानेके लिये पागल होकर इधर उधर भागते फिरे। जो लोग कुछ अर्से पहले

उनकी आज्ञा मानते थे उन्हींसे गिड़गिड़ाकर दयाकी भीख मांगनी पड़ी। इनमेंसे कोई बड़ी कठिनाईसे लखनऊ पहुंचा कोई गोरखपुर पहुंचा और भाग्यके फेरसे कोई इलाहाबाद गया। बाकी रास्तेमें मारे गये। किस कष्ट और किस प्रकारकी यातनासे वे मरे इसका पूरा विवरण नहीं मिला।"*

आपत्तिके मारे भागनेवालोंकी कथा बहुत संक्षेपसे लिखी गई है। फिर भी कुछ घटनाओंका उल्लेख करना आवश्यक है। सीतापुरके सर माउंट स्टूअर्ट जैकसन नामक एक सिविलियन अपनी दो बहनोंके साथ भागे थे। भागनेकी गड़बड़में एक बहन रह गई इसलिये वे एकको ही साथ लेकर भागे। रास्तेमें और कई भागनेवालोंसे इनकी भेंट हुई। सब मिथौलीकी ओर जा रहे थे। यहां मुहमदीके स० डिप्टी कमिश्नरने अपने बाल बच्चे भेजे थे। अवधकी ६ नं० अनियमित सेनाका सूबेदार ईश्वरीसिंह इनका रक्षक था। मिथौलीके राजा लूनीसिंह कप्तान 'अर'के अनेक बातोंमें ऋणी थे। इसी कारण कप्तानने अपने स्नेहियोंको रक्षाके लिये वहां भेजा था। तमाम रात रास्ता चलकर कप्तानकी स्त्री सवेरे आठ बजे मिथौली पहुंची। राजा इस समय सो रहे थे। इसके पहुंचनेके दो घंटे बाद राजाकी आंख खुली। राजाने कप्तानपत्नीको अपने किलेमें न रखकर कचियानीके किलेमें भेज दिया। राजाको वह स्थान अधिक रक्षित मालूम हुआ। कप्तानपत्नी वहां पहुंचाई गई। इसके

* Kay's. Sepay War. Vol III. P. 481

चारों ओर जंगल था। आस पास कहीं बस्ती न थी। इस किलेमें पहुंचकर अरकी स्त्री जैसी दुःखी वैसी ही शंकित हुई। किलेमें कामके योग्य कोई चीज न थी इसलिये तरह तरह-की कठिनाइयां सामने आने लगीं। शामको राजा किलेमें आये और कप्तानपत्नीको उन्होंने रक्षाका वचन दिया। अपनी बहनके साथ जैकसन साहब, कप्तान अर और कई भागे हुए यूरोपियन यहीं आकर छिपे। विद्रोही सिपाहियोंसे राजाको डर था फिर भी उसने इन आश्रितोंके लिये हर तरहकी भोजन सामग्री भेजी। इस जंगलमें शेर, भेड़िये और चीते इतने अधिक थे कि अंग्रेज़ोंको अपनी रक्षाके लिये रातको आग जलाकर रहना पड़ता था।

सीतापुरसे और भी कइयोंने भाग कर इस किलेमें शरण ली थी। इनकी भी दुर्दशाका अन्त न था। इनके शरीरके कपड़े फट गये थे, जूते टूट गये थे। कंकरीले और कंटीले रास्ते चलते २ पैर लहूलुहान हो गये थे। रास्ता चलनेकी मिहनत और खाने पीनेकी कमीके कारण ये सूख गये थे। ऐसी यातनामें ये कचियानीके जंगलमें रहे। इस दशामें इस किलेमें छिपे छिपे जून और जुलाई मास बीता। अगस्त शुरू हुआ। अब मिथौलीके राजापर भी आपत्ति आई। सिपाहियोंको अंग्रेज़ोंका पता लगा। पर सिपाही इस घोर जंगलमें न घुसे। राजाकी आज्ञासे अंग्रेजोंने किला छोड़ा। वे कहां जायं और किसके हाथ अपने आपको समर्पण करें यह समझमें न आया।

वे समझने लगे कि धूप या बरसात या जंगली जानवर अब उनका जीवन समाप्त करेंगे पर इस प्रकार उनके कष्टोंकी समाप्ति न हुई। कोई कोई रास्तेकी मुसीबतोंके कारण सुस्त होकर गिर पड़ा। कोई जंगली मच्छरोंके काटनेसे बुखारसे व्याकुल हो गया। एक दूसरेकी कुछ भी सहायता न कर सका, केवल एक दूसरेके कष्टोंको आंसू भरकर देखता था। धूप रोकनेके लिये उनके पास कपड़ा न था। कांटों और कंकरोंसे पैरोंकी रक्षाके लिये जूते न थे। पहने हुए कपड़े चीथड़ा हो गये थे, इसके अलावा उनके पास कपड़ा न था। एक मामूली कपड़ा मांगनेपर दुष्ट रक्षक उन्हें मारते थे। ऐसी बुरी दशामें असहाय अंग्रेज़ उस जंगलसे निकाले गये। जंगलसे बाहर दो गाड़ियां थीं। इन गाड़ियोंमें वे अनाजकी बोरियोंकी तरह भरे गये और अज्ञात स्थानकी ओर ले चले।

मिथौली राज्यका कर्मचारी जहीरुलहुसेन इस समय घटनास्थलपर पहुंचा। असहाय यूरोपियन इस समय तक अनेक प्रकारके कष्ट भोगनेपर भी बँधे न थे। पर जहीरुलहुसेनने अब मर्दोंको सांकलोंसे बांधा। थोड़ी देर बाद इन्हें मालूम हुआ कि वे लखनऊ लाये जा रहे हैं। डेढ़ सौ हथियारबंद आदमी और एक तोप इनके आगे चल रही थी और इतने ही हथियारबंद तथा एक तोप पीछे। मामूली खानेके पदार्थ इनके सामने फेंक दिये जाते थे। पानी बहुत देर बाद दिया जाता था। इस तरहकी यातनामय छः दिनकी यात्राके बाद

इन्हें लखनऊके कैसर बाग ले गये। महलसे कुछ दूर गाड़ीसे उतरकर ये पैदल चले। इनके शरीर जगह जगहसे कट गये थे। भूख, प्यास और नींदके कारण ये बेहोशीके किनारे पर थे। एक आदमी (सर माउन्ट स्टुअर्ट जैकसन) रास्तेमें बेहोश होकर गिर गया। मामूली लोगोंने इसे चारपाईपर उठाया। दो मेमें पानीके लिये पुकारने लगीं। उन्हें ऐसे गंदे पात्रमें पानी दिया गया कि उन्होंने उसे न लिया। ऐसी दुर्दशाकी हालतमें यूरोपियन लोग कैसरबागमें पहुंचाये गये। बागमें बहुतसे छोटेबड़े घर थे। इनमेंसे एक छोटे घरमें वे बंद किये गये।

राक्षसोंके बीचमें एक देवता भी था। जिन लोगोंने इन्हें इतने कष्ट दिये उन्हींमें एक आदमी था जिसका हृदय इनके दुःखोंसे भर रहा था। कैसरबागमें इनके पहरेपर जो सिपाही नियत किये गये थे उनमें मीर वाजिदअली शाह नामक एक सिपाही था। नवाब वाजिदअलीके नामपर ही इसका नाम था, इसने यूरोपियनोंकी बड़ी सहायता की। आधी रातको यह क़ैदियोंको एक दूसरे घरमें ले गया जो इससे बड़ा और अच्छा था।

इन क़ैदियोंका क्या हुआ यह बतानेसे पहले लखनऊकी हालतका वर्णन कर देना अधिक उपयुक्त होगा। नवाब वाजिद-अली शाहकी बेगम हज़रतमहलका एक लड़का था। इसका नाम था ब्रिजिसक़ादिर। किसी किसीने इसकी अवस्था चौदह

वर्षकी बताई है और किसी किसीने ग्यारहकी। यह नवाब वाजिदअली शाहके सिंहासनपर बैठाकर नवाब बनाये गये और हजरतमहल नवाबके नामसे राज्य करने लगीं। भिन्न २ विभागोंके भिन्न भिन्न अधिकारी नियत हुए थे और तमाम ताल्लुकदारोंको दरबारमें हाजिर होनेका हुक्म निकला था। अवध लेनेपर गवर्मेंटने १२ दल सेना तैयार की थी। ये सेनाएं नवाबकी सेनाओंमेंसे ही तैयार की गई थीं। इन्हीं अनियमित सेनाओंने लखनऊ घेरा था और इन्होंनेही ब्रिजिस-कादिरको नवाब बनाकर उसके नामसे मनमानी की थी। दारोगा मम्मूखां हजरतमहलका प्रधान सहायक था। यह पहले वाजिदअली शाहके जमानेमें टैक्स वसूलीके कामपर था। पर उद्धत सिपाहियोंके कारण इसकी शक्ति बहुत कुछ संकुचित हो गई थी। इसी समय एक धर्मोन्मत्त मौलवी साहब प्रगट हुए। इनके कारण लखनऊ दरबारको सकुचाना पड़ा। इनकी कथा जरा विचित्रतापूर्ण है।

मौलवीका नाम था अहमदुल्लाशाह। १८५७ के जनवरी मासमें कुछ शस्त्रधारी नौकरोंको साथ लेकर इन्होंने फैजाबा-दकी मसजिदमें व्याख्यान दिया। अंग्रेज़ अधिकारियोंने इनको हथियार रखनेको कहा। मौलवी इसपर राजी न हुए। तब अधिकारी जबर्दस्ती हथियार छीननेपर आमादा हुए। इस गड़बड़में मौलवीके दो तीन आदमी मारे गये और वे खुद घायल हुए। इनपर लखनऊमें मुकदमा चला। पर इसके बीचमें

ही फैजाबादमें गदर हो गया। जेलसे छूटकर मौलवी सिपाहियोंके नेता हो गये। पर तीन दिनमें ही सिपाही इनसे इतने विरक्त हुए कि तीन सौ रुपये देकर इन्हें विदा कर दिया। मौलवी लखनऊ आये। हजरतमहलने इनका स्वागत किया। खर्चके लिये इन्हें रोज बहुत रुपया मिलने लगा। दिल्लीसे भागकर बहुतसे सिपाही लखनऊ गये। ये सब मौलवीके गरोहमें शामिल हुए। इस तरह शक्तिशाली बनकर मौलवी गोमतीके किनारेवाले मंत्री अलीनकीखांके बड़े मकानमें रहने लगे। साथ ही जोशीली भाषामें एलान निकालने लगे। नवाबके नामसे जो घोषणापत्र निकलते थे उनके खिलाफ मौलवीके पत्र होते थे। इस प्रकार स्वयं भी मौलवी नवाबके विरोधी हो गये।

जिस समय लखनऊकी ऐसी दशा थी तब अभागे यूरोपियन कैसरबागमें कैद हुए थे। वाजिदअली सिपाहीके समान ताल्लुकदार मानसिंह भी अंग्रेज़ोंके सहायक थे। मानसिंहके आदमियोंने इन्हें कैदसे निकाला। जिन लोगोंके हाथ पैर जंजीरोंसे बंधे थे उनके खोले गये। मौलवीने अंग्रेज़ोंकी हालत मालूम करनेको दूत भेजे। पर सिपाही वाजिदअलीने उन्हें धन देकर ऐसा वश किया कि उन्होंने मौलवीसे कुछ न कहा। जिस दिन सेनापति हावेल और आउट्राम कानपुरसे गोरी सेना लेकर लखनऊ पहुंचे उसी दिन मौलवीकी आज्ञासे उन्नीस अंग्रेज़ स्त्रियों और पुरुषोंका वध किया गया। इनमें जेकसन साहबकी बिछुड़ी हुई बहन भी थी, [इनमें कचियानीके जंगलके

कैदी अंग्रेज़ न थे] वाजिदअली और मानसिंहके आदमियोंने कचियानीके कैदियोंको निकाल लिया पर दिल्लीसे आये सिपाहियोंके कारण वे ले न जा सके। मौलवीको वाजिदअलीपर भी शक हो गया था।

२६ अक्टूबरसे १६ नवम्बर तक मम्मूखां इन कैदियोंसे बराबर मिलता रहा। उसकी मंशा थी कि कप्तान अर सेनापति आउट्रामको इस आशयका पत्र लिखें कि अयोध्याराज्य छोड़ कर अंग्रेज़ चले जायं, तो वे तमाम कैदियोंको छोड़ देंगे। पर कप्तान अर और जैकसन दोनोंने पत्र लिखनेसे इनकार कर दिया। बादमें मम्मूखांने इनको सिपाहियोंका नेता बननेको कहा, पर अफसरोंने इसपर घृणा प्रगट की। जब दोनों प्रस्ताव न माने गये तब मम्मूखां वहांसे चले गये। अंग्रेज़ोंने समझ लिया कि बस अब हमारा अन्तिम समय है। जो कुछ उन्होंने सोचा था वह उनके सामने आया। १४ नवम्बरको इन्होंने दूर तोपोंकी आवाजें सुनीं। उन्होंने समझा कि प्रधान सेनापति सर कैम्पबेल लखनऊका उद्धार करने आ रहे हैं। दो दिन इसी चिन्तामें बीते। इन दो दिनोंमें, कैसरबागमें, सिपाहियोंका इतना शोर रहा कि इन्हें तोपोंकी आवाजें भी न सुनाई दीं। १६ नवम्बरको ६ बजेके समय ७१ नं० सेनाके सिपाही तैयार होकर अंग्रेज़ोंको दूसरे स्थान लेजानेके लिये आये। इनका मतलब सब समझ गये। इस समय सब अंग्रेज़ अपनी अपनी स्त्रियों और बहनोंसे विदा हुए, उनकी आंखें तर थीं।

थोड़ी देर बाद बंदूकोंकी आवाज़ें सुनाई दीं। सिपाहियोंने गोरी स्त्रियोंको समझाया कि कुछ देशी कैदियोंपर बंदूकें चली हैं। पर बादमें सब मालूम हो गया। स्त्रियां रक्षकशून्य हो गईं। पति, भाई और बेटे घातकोंके हाथसे मारे गये। इसके बाद एक गोरी लड़की बीमारीसे मरी। एक सिपाहीने दया करके उसे दफन की। अब दो मेमें और एक लड़की थी, इस समय लखनऊकी एक दयामयी स्त्री इस लड़कीको बचानेके लिये आतुर हुई। यह वाजिदअली सिपाहीसे मिली। वाजिदअलीने कैदियोंके कामपर इसे नियत किया।

दरबारका हाकिम दयालुप्रकृतिका था। वाजिदअलीकी सलाहसे उसने दरबारमें कहा कि लड़की बीमार है। रोज यह खबर दी जाने लगी कि लड़की और भी अधिक बीमारीसे दबती जा रही है। पहरेपर जो और सिपाही थे उन्हें धन देकर वश किया गया था। अन्तमें हाकिमने दरबारमें अर्ज की कि लड़की मर गई। इसके बाद इसके बाद उस स्त्रीने लड़कीके शरीरको काले रंगसे पोत दिया और उसे कपड़ेसे लपेटकर इस तरह रोती रोती ले चली जैसे अपनी लड़कीको वह गाड़ने ले जा रही हो। इस तरह सिपाहियोंके सामनेसे दयामयी स्त्रीने लड़कीको राजा मानसिंहकी रक्षामें पहुंचाया। जब अंग्रेज़ी राज्य फिर जमा तब लड़की फिर लाई गई।

इसके बाद दोनों मेमें अपने बचावकी सूरत देखने लगीं। यद्यपि इस समय अंग्रेज़ी सेना आगई थी और चारों ओर

उनकी विजय हो रही थी पर लखनऊमें अभी तक सिपाहियोंका अधिक जोर था। वाजिद्अली बाकी दोनों स्त्रियोंकी रक्षासे निश्चिन्त न था। वह इन्हें पालकीमें बैठाकर जैसे तैसे कैसर-बागके एक दूसरे घरमें ले गया। इस समय सिपाही ऐसे होशियार हो गये थे कि वेष बदलकर वाजिद्अली इन कैदी स्त्रियोंसे मिलता था। सेनापति आउट्रामने वाजिद्अलीसे कहा था कि जो वह दोनों मेमोंको बचाकर निकाल लावे तो उसे एक लाख रुपया इनाम दिया जायगा। गवर्नमेंटने भी इसमें सम्मति दी थी। वाजिद्अलीने अपने बच्चोंके सिरपर हाथ रखकर दोनों मेमोंके सामने कसम खाई थी कि वह उनके बचा-नेमें कोई कसर उठा न रखेगा। खैर, पहला मकान उपयुक्त न होनेके कारण वाजिद्अली दोनों स्त्रियोंको दूसरे मकानमें ले गया। यहीं उसकी स्त्री आदि भी थीं। दोनों मेमें वाजिद्अली-की स्त्री और सन्तानके पास रहने लगीं। यहींसे कप्तान अरकी स्त्रीने एक पत्र लिखकर वाजिद्अलीको दिया और कहा कि जो कोई यूरोपियन अफसर मिले उसे ही यह देना। वाजिद्-अलीका रिश्तेदार जैसे ही पत्र लेकर घरसे निकला वैसे ही उसे एक गोर्खा सेना और उसके साथ दो अंग्रेज़ अफसर दिखाई दिये। पत्र देखते ही दोनों अफसर स्त्रियोंकी रक्षाके लिये चले। कैसरबागमें पहुँचकर इन्होंने अपनी जातिकी स्त्रियोंको पाल-कियोंमें बैठाया। पालकी उठानेवाले न थे। इस कारण उनके नौकर और गोर्खा उन्हें ले चले। वे सेनापति मेकग्रेगरीके

शिविरमें उन्हें ले गये। दूसरे दिन वे सेनापति आउट्रामके खेमेमें गईं। जिन आदमियोंने उनके प्रियजनोंको संसारसे सदा सर्वदाके लिये उठा लिया था उन्हींके भाइयोंकी दया और कोशिशसे इनके प्राण बचे।

जब अवधकी भिन्न भिन्न सेनाओंमें इस प्रकार विप्लव हुआ तब प्रधान कमिश्नर सर हेनरी लारेंस बहुत उद्विग्न हुए। पर उद्वेगमें भी वे अपना कर्त्तव्य न भूले। अयोध्या आनेके बादसे उनकी तन्दुरुस्ती खराब हो गई थी। उनका शरीर दिन पर दिन क्षीण होता जाता था। फिर भी वे अपने कर्त्तव्यको पूरा करनेमें कभी विलम्ब न करते थे। ११ जूनको सम्पूर्ण उत्तरपश्चिम प्रदेशमेंसे लखनऊ और कानपुर ही अंग्रेज़ोंके अधिकारमें था, बाकी सब चला गया था। १२ जूनसे सर लारेंसको लखनऊकी चिन्ता पड़ी। रातको वे अक्सर न सोते थे। वे अपना वेष बदलकर इधर उधर देखते भालते रहते थे। समय समयपर खाट बिछाकर गोलंदाजोंके बराबर सो जाते पर इस खाटपर भी वे नींद न लेते थे। नगरकी रक्षाका उपाय सोचते थे। मतलब, वे लखनऊके हर स्थानपर थे, हर बातको देखते थे।

फ़ौजी कानूनके अनुसार तमाम फैसले होते थे। मच्छी भवनके पास कुछ फांसीके लट्ठे गड़े थे। जो गवर्मेंटके खिलाफ कुछ भी करते पाये जाते वे इन लट्ठोंपर लटकाये जाते थे। सर लारेंस कोमल स्वभावके आदमी थे, पर मजबूर होकर उन्हें ऐसा करना पड़ा था। सिपाही गोरोंकी मातहतीमें नगरकी रक्षा

करने लगे। यूरोपियन लोग अपने नियमित काम वैसे ही कर रहे थे। पर सर लारैंसका स्वास्थ्य खराब होता जा रहा था। उन्हें रात दिन चिन्ता सता रही थी। वे घोर परिश्रम करके भी शान्तिका अनुभव न कर सकते थे। जब वे बहुत कमजोर हो गये तब आवश्यक कार्य निभानेके लिये एक सभा बनाई गई। गबिन्स साहब इसके सभापति बने। तीन दिन इस सभाने काम किया, इस अर्सेमें विपत्ति और अधिक घनी हो गई।

३० मईकी घटनाके बाद गबिन्स साहबने तमाम सेनाओंके हथियार लेनेका इरादा किया। पर सर लारैंसने इसका विरोध किया। उन्होंने तमाम हिन्दुस्तानियोंको दुश्मन नहीं समझा था। काले आदमी इस समय भयानक हो गये थे। फिर भी वे विपत्तिमें आश्रय और समयपर सहायक बने थे। सिपाहियोंके भीतर भी स्वामिभक्त थे। इसी कारण सर लारैंसने सबको सिपाहीपनसे खारिज करनेका विरोध किया। पर गबिन्स साहब कुछ दिनके लिये शासनसभाके सभापति हो गये थे, इसलिये उन्होंने अपनी इच्छाके अनुसार काम करना शुरू किया। उन्होंने भिन्न २ कई सेनाओंसे हथियार लिये और उन्हें आज्ञा दी कि नवम्बर मासतक वे अपने २ घर चले जायं। जब यह बात सर हेनरीको मालूम हुई तब वे बीमारीकी खाटसे उठे। उठकर उन्होंने सभाके हुक्मको रद्द किया। सिपाहियोंको वापिस लानेके लिये आदमी भेजे गये। लगभग ५०० सिपाही फिर हंसते हुए वापिस आये, फिर वे सैनिक बनाये गये।

जिस समय अंग्रेज़ घिर गये तब इन्होंने अपनी स्वामिभक्तिका अच्छा परिचय दिया था। रेजीडेंसीको बचानेके लिये अंग्रेज़ोंके पास काफी सेना न थी। ये विश्वासी सिपाही वापिस आये तब सर लारेंसका बल बढ़ा। उन्होंने नियम बनाया कि जो सिपाही अपनी नौकरी पूरी करके पेंशन पा रहे हैं, वे लखनऊ बुलाये जायं। सर लारेंसकी आज्ञासे पांच सौ बूढ़े सिपाही आये। इनका यथोचित आदर सत्कार किया गया। इनमेंसे बहुतसे लड़ाइयोंमें अपने अंगतक खो चुके थे। किसीकी आंख गई थी, किसीका हाथ कट गया था, कोई बुढ़ापेके कारण कमजोर हो गया था। पर इस समय वे फिर अपने मालिकोंकी रक्षाके लिये वर्दियोंसे सजे। सर लारेंसने इनमेंसे १७० आदमियोंको छांटा। सिख २ सिपाही सेनाओंमेंसे सिक्ख एकत्र किये गये थे। इस प्रकार सब मिलकर ८०० भारतीय सैनिक सर लारेंसने तैयार किये।

१२ जूनको विपत्तिका सूत्रपात हुआ। ११ जूनको जो सिपाही शान्तिरक्षाके कामपर नियत थे वे विरोधी बने।

लखनऊ

दूसरे दिन रिसालावालोंने इनका साथ दिया। ये लोग सुलतानपुरकी ओर चले। एक अंग्रेज़ सेनापतिने थोड़ी सी सेना लेकर इनका पीछा किया। इनके सेनापति भी इन्हें समझाने गये। पर किसीने उनकी बात न सुनी। इस समय जो इनका संचालक बना था, उसने तलवार घुमाते हुए इसमें बाधा दी। एक सिपाहीने सेनापतिको मारनेके

लिये बंदूक ठीक की। इसी समय बारह सिपाहियोंने इसे बंदूक ऊंची करनेको कहकर अपनी बंदूकें तानीं। सेनापति वापिस चले गये।

इस समय कानपुरके सेनापति सर ह्यू ह्वीलर घिरे हुए थे। उन्होंने सहायताके लिये सर हेनरी लारेंसको लिखा। गबिन्स साहबने कानपुरके उद्धारके लिये सेना भेजनी चाही, पर और किसीकी भी इसमें सम्मति न थी। सर लारेंसकी भी सम्मति न थी। उनके पास बहुत कम सेना थी। दूसरे गंगा किनारे बहुतसे सिपाही पड़े थे, इसलिये गंगा पार होना कठिन था। थोड़ीसी सेना गंगा पार होकर बहुतसे सिपाहियोंको छेदकर न जा सकती थी। इस कारण बड़े दुःखसे सर-हेनरी लारेंस कानपुरको सहायता न भेज सके। सर हेनरीकी बातका किसीके पास जवाब न था। इस समय अंग्रेज़ोंको हर स्थानपर थोड़ी सेनाके सहारेसे लड़ना पड़ा था। यदि वे कानपुरकी रक्षा करते तो लखनऊकी शक्ति क्षीण होती। वे समझ रहे थे कि जो वे कानपुरकी सहायताके लिये थोड़ी सेना भेजेंगे तो बहुतसी सिपाही सेना गंगा पार होकर लखनऊ आ जायगी। इसी कारण कानपुरके घिरे हुओंके लिये उन्होंने अफसोस किया और उस अफसोसकी दशामें ही लखनऊकी रक्षाका प्रबन्ध करने लगे। इस समय सर हेनरीकी सहायताके लिये भारतवासी काफी तादादमें तैयार थे। जब अवधपर अंग्रेज़ोंका अधिकार हुआ तब कई सौ गोलंदाज अंग्रेज़ोंकी नौकरी करनेपर राजी न

हुए। पर इस विपत्तिके अवसरपर वे सब अपने अफसर मीर-फरजंदअलीके साथ अधिकारियोंकी सहायताके लिये आये। इनकी सहायता ली गई। अंग्रेज़ोंकी रक्षाके लिये इन्होंने अपने प्राणोंकी आहुति दी। विद्रोही सिपाहियोंने मीरफरजंदअलीका घर लूट लिया। जो पीछेसे गवर्मेंट उनकी सहायता न करती तो उनकी प्रभुभक्ति ही निरर्थक थी।

रामदीन नामक एक ब्राह्मणने भी अंग्रेज़ोंकी सहायता की थी। ये रास्तोंकी पैमाइशके ओवरसियर थे। गदरके कारण इनके विभागके तमाम काम बंद हो गये। अपने साथ मजबूत छः आदमी लेकर ये लखनऊ पहुँचे। इन्हें पैदल सेनामें लिया गया। इन्होंने बड़ी वीरता और साहससे युद्धका काम किया। रातको ये लोग तोपोंकी रक्षा करते और दिनको लड़ते। लड़ाईमें रामदीन अपने दो साथियों सहित मारे गये। बाकी सम्बन्धियोंको पीछेसे गवर्मेंटने पेंशन दी। रामदीनके अलावा मिरान नामक एक मिस्त्रीसे इस समय अंग्रेज़ोंका बहुत काम निकला। गबिंस साहबने इसके विषयमें लिखा है—"यह आदमी बड़ा होशियार कारीगर था। जो इसकी और रामदीनकी सहायता न मिलती तो हमने जो दीवार बनानी शुरू की थी, वह कभी पूरी न होती। मैंने देखा है कि जो ईंट रामदीन रखता था, वही गोलीकी चोटसे उसके हाथपर गिर पड़ती थी।" घेरेसे पहले गुलाब नामक एक कारीगर काम करता था। जब अंग्रेज़ घिर गये तब अधिकारियोंने उससे कहा कि वह

चाहे तो अपने घर चला जाय। पर गुलाब घर न गया। उसने चलती गोलियोंमें काम किया। जिस दिन अंग्रेज़ी फौज सहायताके लिये लखनऊ पहुँची उसी दिन एक गोलेकी चोटसे गुलाब मर गया। इस प्रकार भारतवासियोंने धैर्यके साथ अंग्रेज़ोंके लिये प्राण खोये थे। विदेशियोंकी जान बचाते हुए उन्होंने अपनी जान दी थी।

जिस समय अंग्रेज़ अपनी रक्षाका प्रबन्ध कर रहे थे, भारतवासी अपनी असीम भक्तिका परिचय दे रहे थे, उस समय गर्मी बेहद पड़ रही थी और गर्मीके कारण अंग्रेज़ झुलसे जा रहे थे। वे बहुसंख्यक सिपाही सेनाओंके सामने हुए थे। रात दिन परिश्रम चिन्ता और कष्टके कारण हैजा शुरू हो गया था। गोरी सेनाकी स्त्रियां और बच्चे इस रोगका शिकार होने लगे। जगहकी कमी थी, इस कारण बहुतसे आदमियोंको एक ही स्थानपर रहना पड़ता था, इस कारण बीमारी और भी अधिक हो गई। पर सौभाग्यसे २८ जूनको पानी बरसा जिससे कुछ शान्ति हुई। जिस समय बीमारीकी शान्तिसे अंग्रेज़ जरा प्रसन्न हुए उसी समय उन्हें इससे भी अधिक कठोर समाचार मिला। कानपुरके सेनापति ह्वीलरने अपने आपको विद्रोहियोंके सुपुर्द कर दिया था। इससे सिपाहियोंकी शक्ति बढ़ गई थी और वे लखनऊसे बीस मील दूर नवाबगंज नामक स्थानपर एकत्रित हो रहे थे। २९ जूनको सर लारैंसको समाचार मिला कि सिपाहियोंका बड़ा भारी दल लखनऊसे ८ मील दूर

चीनहाट नामक स्थानपर आपहुँचा है। उसी समय सिपाहियोंकी तादाद जानने और उनकी ताकतका अंदाज़ा लगाने एक दल सवार भेजे गये। पर सवार ठीक ठीक समाचार न ला सके। ठीक समाचार न मिलनेपर भी सर लारेंस थोड़ीसी सेना लेकर सिपाहियोंको रोकने चले। ३० मईको शामके ६ बजे अंग्रेज़ी सेना लखनऊसे चली। चीनहाट एक बड़ा गांव है। एक झीलके किनारे बसा है। लखनऊ और चीनहाटके बीच कोकरैल नामक एक नदी है। इसपर एक पुल था। अंग्रेज़ी सेना इसी पुलपर पहुँची। उसी समय सर लारेंसने अपने सैनिकोंको विपक्षियोंकी ओर चलाया। चीनहाटके बांये किनारे सिपाहियोंका पड़ाव था। अंग्रेज़ जिस रास्तेसे चीनहाटकी ओर बढ़े थे उसके बांये बाजूपर इस्माइलपुर नामक एक छोटा गांव था। इसी जगह दोनों सेनाओंकी मुठभेड़ हुई। सिपाहियोंने अंग्रेज़ी सेनाके रास्तेमें तोपें लगा रखी थीं। जैसे ही अंग्रेज़ी सेना दिखाई दी वैसे ही उन तोपोंसे गोले बरसने लगे। फिर सिपाही सेनाके सवार पैदल और गोलंदाज दो हिस्सोंमें बंटकर दोनों बाजुओंपर आ गये। आगेसे तोपोंकी मार और दोनों बाजुओंसे बंदूकोंकी मारसे अंग्रेज़ी सेना नियमहीन हो गई। सिपाहियोंके हमलेको वे बर्दाश्त न कर सके। जो अंग्रेज़ स्वयंसेवक बने थे वे अपने अफसरकी आज्ञासे आगे जरूर बढ़े पर युद्धविद्याका उन्हें अधिक ज्ञान न था। सिक्ख भी मैदानमें न टिके। उनके अफसरने जैसे ही उन्हें

आगे बढ़नेका हुक्म दिया वैसे ही सिपाहियोंकी गोलीसे अफसर गिर पड़ा। अफसरको गिरता देखकर सिक्ख एक ऊंचे टीलेकी आड़में जा खड़े हुए। जब सिपाहियोंके हमलेसे अंग्रेज़ी सेनाकी ऐसी हालत हो गई तब सेनापतिने पीछे हटनेकी आज्ञा दी। सर हेनरी लारेंसकी आज्ञासे लेफ्टिनेंट बनहम अपनी तोपोंको हटा रहे थे पर गोलोंके कारण तोपें खींचनेवाले हाथी पागल हो गये। बनहम भी मारे गये। इस प्रकार अंग्रेज़ी तोपें सिपाहियोंके हाथ लगीं और अंग्रेज़ी सेनाके वीर मैदानमें रहे। लड़ाईके अवसरपर सर हेनरी लारेंस सबसे आगे खड़े अपने सैनिकोंको उत्साहित कर रहे थे। वे जिस ओर जरा कमी देखते उसी ओर अपना घोड़ा बढ़ाकर सैनिकोंको उत्साहित करते। पर उनके इस उत्साहका फल कुछ न हुआ, सिपाहियोंके मुकाबिलेपर उनकी तादाद बहुत ही कम थी। सेनापतिकी आज्ञा पाकर अंग्रेज़ी सेना पागलकी तरह लखनऊकी ओर भागी। घायलोंको ले जानेका कोई प्रबन्ध न था। कुछ डोलीवाले मारे गये थे। इस कारण बाकी सब पहले ही भाग गये थे। पानीका भी प्रबन्ध न था, भिश्ती पहले ही भाग खड़े हुए थे। इधर लड़ाईका घोर परिश्रम और तीखी धूपकी गर्मीसे अंग्रेज़ी सेना घबरा उठी थी। ऐसी हालतमें पानी न मिलनेके कारण वे बिलबिला उठे। जो सिपाहियोंकी गोलियोंसे बचे थे वे कड़ी प्यासके मारे रास्तेमें लोटने लगे। पर गोरी सेना जैसी घबराई थी वैसी भारतीय सेना न घबराई थी। पैदल भारतीय

सैनिक अधिक मजबूत और कर्त्तव्यपरायण थे। इन्होंने गोरे घायलों और बेहोशोंको अपने कंधेपर उठा लिया। अबतक जिनपर शक किया जाता था उनपरसे शक मिटा। अपने स्वदेशवासी और स्वधर्मी सिपाहियोंपर इन्होंने गोलियां बरसाई थीं। इन्हींकी हिम्मतसे बहुतसे गोरोंकी जानें बचीं।

सवेरे जिस कोकरैल नदीके पुलपरसे अंग्रेज़ी सेना बड़े उत्साहके साथ आगे बढ़ी थी, इस समय उत्साहहीन निर्जीव होकर उसी कोकरैलके पुलके पास आई। विपक्षी सिपाही सेनाका रिसाला पुलका रास्ता रोके खड़ा था। यहाँ फिर एक बार घमासान लड़ाई हुई। बड़ी मुश्किलसे अंग्रेज़ी सेना रास्ता साफ करके लखनऊके किनारे आई। नगरवासी इन थके मांदे और प्यासे सैनिकोंको ठंढा पानी पिलाने लगे। इस लड़ाईमें अंग्रेज़ी सेनाके ११६ सैनिक मारे गये थे। एक तो पहले ही तादाद कम थी अब वह और भी कम हो गई। अब सिपाहियोंके हमलेसे अपने आपको बचाना भी कठिन हो गया। लखनऊ आनेके लिये दलके दल सिपाही गोमतीपर एकत्र होने लगे।

गोमतीके दोनों पुलोंके सामने तोपें लगी थीं पर सिपाहियोंने गोमती पार करनेके लिये तीसरा उपाय निकाला। उन्होंने नावोंका संग्रह किया। दोपहरतक हजारों सिपाही गोमती पार करके आ गये। इस समय फैज़ाबाद, सीतापुर, सुलतानपुर और लखनऊके सिपाहियोंने अंग्रेज़ोंके रक्षास्थानोंको घेर लिया। तोपोंकी आवाज़; बंदूकोंकी सनसनाहटके साथ सिपाहियोंकी

आकाशभेदी चिल्लाहटसे लखनऊ गूंजने लगा। नवाब वाजिद अली शाहकी राजधानीमें सिपाही ही सिपाही हो गये। उन्होंने रेजीडेंसी और मच्छीभवनवाला मकान घेर लिया। रात दिन उनकी तोपें गोले उगलने लगीं। किसी तरह भी उनकी तोपोंको बाधा न दी जा सकी।

सर हेनरी लारेंसने अपनी अवस्था लिखकर दूसरे स्थानोंसे सहायता मांगी। बनारसके कमिश्नरके पास ब्रिगेडियर हावेलके नाम पत्र भेजा। उसमें सर हेनरी लारेंसने लिखा—"आज सवेरे हम विपक्षियोंपर हमला करने शहरसे आठ मील दूर गये थे। वहाँ हम हार गये। भारतीय गोलंदाजोंके दुर्व्यवहारसे हमारी पांच तोपें दुश्मनोंके हाथ गईं। चार घंटे-तक उन्होंने हमपर हमला किया। अब भी हम घिरे हुए हैं। शायद रातसे हमपर जोरका हमला शुरू होगा। विपक्षी जैसे तादादमें अधिक हैं वैसे ही उनका साहस भी बढ़ा हुआ है। हमारे पास गोरे सैनिकोंकी तादाद बहुत ही कम है। कल हमारी जो दशा थी आज उससे दस गुनी अधिक खराब है। आप यदि पन्द्रह दिनके भीतर मददके लिये न आये तो हमारा बचना असम्भव है।" सर हेनरी लारेंसने जिस बातकी शंका की थी वही हुआ। अंग्रेजोंपर चारों ओरसे हमला हुआ। ३० जूनको वे चीन-हाटमें हार चुके थे। १ जुलाईको उनकी ऐसी हालत हो गई कि मच्छीभवन छोड़कर अंग्रेज रेजीडेंसीमें आगये।

तमाम लखनऊपर सिपाहियोंका अधिकार हो गया। केवल रेजीडेंसीमें घिरे हुए अंग्रेज़ अपनी रक्षा करने लगे।

मच्छीभवनमें लड़ाईका काफी सामान था। दीवारोंपर ३० तोपें चढ़ाकर अंग्रेज़ उसकी रक्षा कर रहे थे। गोले और बारूदका हटाना कठिन हो गया था। अन्तमें जब देखा कि अब इसकी रक्षा नहीं कर सकते तब उसे उड़ा देनेका प्रस्ताव हुआ। पर मच्छीभवन और रेजीडेंसीके बीचमें सिपाही थे। यदि मच्छीभवन वाले अपने आदमी समाचारके लिये रेजीडेंसी भेजते तो वे बीचमें ही मारे जाते। पर इञ्जीनियरोंने मच्छीभवन-वालोंको समाचार दिये। रेजीडेंसीकी छतोंपर चढ़कर उन्होंने इशारोंसे मच्छीभवनवालोंको खबरें दीं। मच्छीभवनवाले समझ गये कि रातमें बारुदमें आग लगाकर उन्हें रेजीडेंसीमें जाना होगा। इशाराके अनुसार काम हुआ। रेजीडेंसीवालोंने देखा कि शुरूमें एक लम्बी चीज जली, फिर एकाएक आकाशभेदी महाशब्द होकर तमाम आसमान धुएंसे भर गया। वे समझ गये कि इशारेके अनुसार बारूदमें आग दे दी गई। कुछ देर बाद मच्छीभवनके अंग्रेज़ रेजीडेंसीमें आ गये। रेजीडेंसीवाले इससे बहुत प्रसन्न हुए।

चीनहाटकी लड़ाईके बाद सिपाहियोंका उत्साह बहुत अधिक बढ़ गया। उन्होंने बड़े पराक्रमसे रेजीडेंसीको घेरा। जब अंग्रेज़ोंकी हारका समाचार चारों ओर फैला तब आसपासके दुष्ट लोग दलके दल उत्साहित होकर लूट मार करने लगे। इधर

सिपाही रेजीडेंसीपर बराबर गोले फेंक रहे थे। एक दिन बीतते न बीतते ऐसी घटना हुई जिससे अंग्रेज़ खिन्न हो गये। २ जुलाईको सर हेनरी लारेंस तोपोंके स्थापनका प्रबन्ध कर रहे थे। प्रबन्ध करके वे वापिस अपने भवनमें आये। कमरेमें वे एक कोचपर लेट गये थे, पास ही उनका भतीजा दूसरी कोचपर बैठा था। वे एक सरकारी कागज पढ़ रहे थे, इनके अलावा एक हिंदुस्तानी नौकर भी घरमें था। इसी समय घरमें एक बड़ी चीजके टूटनेकी आवाज हुई। साथ ही तमाम जगह रेत, कूड़े और धुएंसे भर गई। थोड़ी देरतक किसीको कुछ भी न दिखाई दिया। थोड़ी देर बाद सहकारीने कहा—"सर हेनरी क्या तुम्हें चोट लगी?" पहले कोई उत्तर न मिला। पर थोड़ी देर बाद सर लारेंसने कहा—"मैं मरा।" जब धुआँ साफ हुआ तब देखा गया कि सर लारेंसके खूनसे कोच भीग गया था। चीनहाटकी लड़ाईमें जो तोपें सिपाहियोंके हाथ लगी थीं। उन्हींमेंसे एकका गोला रेजीडेंसी भवनपर आकर गिरा था और उसके एक टुकड़ेसे सर हेनरी लारेंस घायल हुए थे।

उसी डाक्टर फरार शीघ्र बुलाये गये। परीक्षा करके डाक्टरने घावको गहरा बताया। लारेंस वैसे ही कमजोर थे। घाव होते ही उन्होंने समझ लिया था कि अब मृत्यु निश्चित है। उन्हें बहुत कष्ट हुआ। खून निकलनेके कारण शरीर शिथिल हो गया था। इस समय भी उनमें धैर्य था। मेजर बैंक्स उनके स्थानपर प्रधान कमिश्नर बनें। कर्नल हेलिंग्स प्रधान सेनापति बनाये गये।

मृत्युशय्यापर पड़े हुए सर हेनरीने इनको यथायोग्य उपदेश दिया। वे जिस मकानमें थे, वह दुश्मनोंकी तोपोंके सामने ही था। इसलिये बड़ी आसानी और होशियारीसे उन्हें डाक्टर फरारके मकानमें ले गया था। यह मकान रेजीडेंसीकी सीमापर होनेके कारण रक्षित था। यहाँ लेटकर वे समदर्शी भगवानकी करुणापर निर्भर होकर अपने अन्तिम समयकी प्रतीक्षा करते लगे। उन्होंने कहा—"मेरी समाधिपर जो पत्थर लगाया जाय उसपर ये शब्द लिखे हों—'यहां हेनरी लारेंस हैं, जिन्होंने अपने कर्त्तव्य सम्पादनकी चेष्टा की थी।" इस प्रकार शान्तिसे सबसे बोलते हुए, ४ जुलाईके प्रातःकाल यह नरदेव संसारसे उठ गया।

इस प्रकार लखनऊके विपन्न अंग्रेज़ोंका आश्रय और अंग्रेज़ जातिका नीति-धुरन्धर आचार्य संसारसे विदा हुआ। इनकी मृत्युका संवाद पहले गुप्त रखा गया। यह प्रसिद्ध किया गया कि सर लारेंस आराम हो रहे हैं। पर अन्तमें उनकी मृत्युका समाचार सबको मालूम हो गया। जिसने इस समाचारको सुना वही अपने आपको असहाय और निरवलम्ब समझकर शोकग्रस्त होने लगा। सब अंग्रेज़ सैनिक लंबी सांसें लेने लगे। सर हेनरी लारेंसका चरित्र दूसरोंके हृदयोंपर अंकित करना बड़ा कठिन काम है। संसारमें जितने महापुरुष मनुष्य-जातिके कल्याणके लिये अवतीर्ण हुए हैं उनके साथ सर हेनरी लारेंसकी तुलना की जा सकती है। उनके चरित्रकी जितनी प्रशंसा की जाय, वह उनके गुणोंको देखते प्रशंसा मालूम ही नहीं होती। सर

हेनरी लारेंस अपना कर्त्तव्य पूरा करनेके लिये आये थे और कर्त्तव्य पूरा करते करते ही इस संसारसे चले गये। इस कर्त्तव्यपरायण पुरुषकी योग्यताके विषयमें किसीको सन्देह न था। कम्पनीके डाइरेक्टरोंको सर हेनरी लारेंसकी मृत्युका समाचार न मिला था। उस समय वे २२ जुलाईको सलाह कर रहे थे कि यदि लार्ड कैनिंगने गवर्नर जनरलके पदसे इस्तीफा दिया या उनकी मृत्यु हुई तो यह पद सर हेनरी लारेंसको दिया जायगा। अपनी कर्मक्षमता, योग्यता और सदाशयताके कारण सर हेनरी लारेंस नीचेके साधारण सैनिकसे लगाकर कम्पनीके ऊंचे डाइरेक्टरोंतकके हृदयोंपर इस प्रकार अधिकार जमाये हुए थे। टाड जैसे राजपूतोंके सम्माननीय थे, मैकफर्सन जैसे खन्दोंके, आउट्राम जैसे भीलोंके, वैसे ही सर हेनरी लारेंस केवल सिक्खोंके ही नहीं सम्पूर्ण भारतीयोंके हृदयोंको वश किये हुए थे। लड़ाईके घमासान वारमें और शान्तिके निर्मल कर्मक्षेत्रमें उनका महत्त्व समान था। दुर्दशाग्रस्त पराधीन जातिके प्रति जितनी समवेदना सर हेनरी लारेंसकी थी उतनी शायद ही किसी अंग्रेज़की हो। इस महापुरुषने अपनी समाधिपर लिखनेके लिये जो सीधे सादे शब्द बताये थे, वे उसके महत्त्वको सदैव उज्ज्वलरूपसे दिखाते रहेंगे। सर हेनरी लारेंसने केवल कर्त्तव्यसम्पादनमें ही अपने प्राण नहीं खोये, बल्कि अपना कर्त्तव्य योग्यताके साथ सम्पादन करके उन्होंने ऐतिहासिकोंकी भी श्रद्धा अपनी ओर खींची।

सर हेनरी लारेंसका शरीरान्त हुआ। इधर सिपाही और भी अधिक उत्साहके साथ अपनी तोपोंसे गोले फेंकने लगे। इस समय लखनऊ सिपाहियोंका प्रधान कर्मक्षेत्र था। रेजीडेंसीमें घिरे हुए अंग्रेज़ उनकी तोपों और बंदूकोंका निशाना थे। शहरकी शान्ति और श्रृंखला नष्ट हो चुकी थी। लोग डर डर कर रेजीडेंसीसे दूर भाग रहे थे। घोड़े सवारोंके मरनेसे इधर उधर भागते थे। हाथियों और ऊंटोंको उनके संचालक जल्दी जल्दी इधर उधर ले गये थे। रेजीडेंसीके पास नदीसे तमाम नावें हटा ली गई थीं। इस प्रकार आसपासके निवासियोंके दैनिक काम प्रायः बंद हो रहे थे। दिनके बाद दिन बीतने लगे। सिपाहियोंके गोले प्रतिदिन नये उत्साहसे अधिक वेगसे बरसते थे। रात दिन गोले बरसने लगे। विराम नहीं, विश्राम नहीं। लगातार गोला-वर्षासे रेजीडेंसीके आदमी पागलसे हो हो गये। यूरोपियन स्त्रियां और बालक प्राण बचानेके लिये रेजीडेंसीमें आकर रहे थे। इस तरहकी प्राणोंकी बाजीमें, जो नौकर रेजीडेंसीमें थे, वे अधिकतर भाग गये। जो इस उष्ण-प्रधान देशमें आकर नौकरोंकी परिचर्यासे सन्तुष्ट थे अब वे नौकरोंके चले जानेके कारण, अपने हाथसे झाड़ू देने लगे, कुएंसे पानी भरने लगे, खाना पकाने लगे और कपड़े धोने लगे। जीवन बितानेके लिये जो २ बातें अनिवार्य हैं, वे सब वे करने लगे। रेजीडेंसीमें जितने आदमी थे उतने घरोंकी तादाद न थी। कई कई एक घरमें रहने लगे। बहुतसे

घुड़सालोंमें रहने लगे। इधर अस्पतालकी हालत और भी अधिक चिन्ताजनक थी। शान्तिके समय अंग्रेज़ जिस बड़े कमरेमें एकत्र बैठकर भोजन किया करते थे, वही इस समय अस्पताल बना। यह मकान रोगियों और घायलोंसे भर गया था। अंग्रेज़ महिलाएं अपने सब काम छोड़ छोड़कर इस समय रोगियों और घायलोंकी सेवा किया करती थीं। इन दुर्दशाग्रस्त जीवोंको वे शीतल जल और हवा देकर शान्त करतीं। घावोंपर पट्टियां बांधकर और समयपर दवा तथा पथ्य देकर इनकी पीड़ाकी शान्ति करती थीं।

इधर सिपाहियोंकी असामान्य वीरताका परिचय प्रतिपल नये रूपसे मिलता था। अंग्रेज़ोंके आश्रयस्थान रेजीडेंसीपर अधिकार जमानेके लिये किस २ स्थानपर तोपें लगाकर अधिक काम वे कर सकते हैं, यह वे बड़ी योग्यतासे सोचने और करने लगे। मसजिदोंकी मीनार, ऊंचे मकानोंकी छतों और दीवारों-परसे निशानेबाज सिपाही अपनी बंदूकोंके निशाने लगाने लगे। सिपाहियोंकी तोपें सेल नामक भयानक गोले फेंक रही थीं। दोपहरके समय गर्मीके कारण तोपें जरा रुकती थीं और फिर दूने वेगसे गोले बरसाने लगती थीं। रातके दस बजेतक बराबर गोले बरसते थे। फिर कुछ कम हो जाते।

इधर अंग्रेज़ अपनी रक्षाके लिये यथाशक्ति प्रयास कर रहे थे। कर्मकुशल और अध्यवसायी मनुष्य जो कुछ कर सकता है वह सब कुछ हुआ। गोलियोंकी बौछार रोकनेके लिये अंग्रेज़ोंने

सामनेकी ओर दीवार बनानी चाही। वहां चूना या ईंट न थी। फिर भी उद्योगियोंका उद्योग निष्फल न रहा। रेजीडेंसीमें जो कुछ था—टेबिल, मेज, कुर्सी आलमारी, बेंच, संदूक और तो क्या 'हे' साहबके अमूल्य पुस्तकालयकी पुस्तकें भी गोलियां रोकनेकी दीवारके लिये लगा दी गईं। एक समय ये सब आमोदकी चीजें थीं पर जान बचानेके अवसरपर वे सब मार रोकनेको लगाई गईं।

अन्यान्य स्थानोंके घिरे हुए अंग्रेज़ोंमें जैसे उद्योग प्रगट हुआ था, लखनऊमें भी वही हुआ। दीवानी विभागके कर्मचारी फौजियोंके साथ आत्मरक्षाके लिये हथियार लेकर वैसे ही लड़ने लगे। उनका उत्साह और एकाग्रता सैनिकोंके ही समान थी। दिन बीतता रात शुरू होती, फिर दिन आता रात हो जाती, पर इनके सैनिक जीवनका अन्त न आता था। एक ओर विपक्षी सिपाही उनके सामने थे, दूसरी ओर उनमें बीमारी फूट पड़ी थी। बुखार, हैजा और दस्तोंकी ज्यादती शुरू हो गई थी। इसके अलावा खानेके पदार्थोंकी भी कमी हो गई थी। बहुत बार उन्हें अपनी गाड़ियोंके बैलोंको मार २ कर भूख बुझानी पड़ती थी। इसी कारण रेजीडेंसीमें गंदगी फैल गई थी और मच्छर मक्खियोंका राज्य हो गया था। ऐसी दुर्दशाके अवसरपर सिपाही नित्य नई योजनाके साथ उनका सामना करते थे। गोले उनके पैरोंके पास आकर गिरते थे, पर रोजके कामसे वे ऐसे अभ्यासी हो गये थे कि इसकी परवा न करके आपसमें

बातें करते रहते थे। गोलियां उनके बालोंको छूती हुई चली जाती थीं। अन्तमें यह बात इतनी साधारण मालूम होने लगी कि स्त्रियों और बच्चोंको भी गोले, गोलियोंसे भय न लगता था। जुलाई और अगस्त दो महीनेतक सब घिरे हुओंके जन्म और मृत्युका साम्य इसी प्रकार रहा। इस अर्सेमें अनेक मरे और कई बालकोंका जन्म हुआ। पर बराबर मौतका मुकाबिला रहनेके कारण बच्चों स्त्रियोंकी सेवाका योग्य प्रबन्ध न हो सका। बहुतोंके पति मारे गये थे। बच्चोंके लिये दूधका कोई प्रबन्ध न था। बच्चेवाली कातरभावसे दूसरोंसे दूध मांगने लगीं। घिरे हुए शान्त न थे। ईश्वरकी प्रार्थनामें भी वे शान्तिके साथ शामिल न हो सकते थे। उनके पास ही गोले गिरकर जोरसे फटते थे। उनकी शान्ति भाग जाती थी। एक दिन गोलेसे रेजीडेंसीकी छत टूट गई जिससे छः गोरे सैनिक दबकर मर गये। खाने पीनेकी चीजें इतनी दुष्प्राप्य हो गई थीं कि मूल्यकी ओर किसीका ध्यान ही न था। सर हेनरी लारेंसकी एक दर्जन बरांडीकी बोतलें दो सौ रुपयेको बिकीं। एक अंडा एक रुपयेको मिलता था। बारह कपड़ोंकी धुलाई धोबी बारह रुपये लेता था। इस प्रकार चारों ओरसे घिरे हुओंके कष्ट बढ़ते चले जा रहे थे। अन्तमें सिपाही इनके निवासस्थानको उड़ानेके लिये सुरंग लगाने लगे। इस प्रकार जूनके बाद जुलाई और जुलाईके बाद अगस्त मास आ गया। रोज मौतें होती थीं, कोई बीमारीसे मरता, कोई गोले या गोलीके आघातसे। प्रधान

इंजीनियर भी मारा गया। प्रधान गोलंदाज भी घायल हो गया। इस समय तमाम मर्द सैनिक बन गये थे। फिर भी उनकी शक्ति कुछ न थी। रेजीडेंसीकी रक्षाके लिये १६६२ आदमी थे। इनमेंसे ९२७ यूरोपियन और ७६५ हिन्दुस्तानी थे। घेरेके समय ३५० अंग्रेज़ और १३३ हिन्दुस्तानी मारे गये।* २३० हिन्दुस्तानी नौकर भाग गये। इस प्रकार शक्तिक्षीण होनेके कारण असंख्य सिपाहियोंका हमला रोकना इनके लिये कठिन हो गया। ये दूसरे स्थानसे सहायताकी आशामें दिन बिताने लगे। पर सहायक न आये। इस समय एक अंगद नामक सिपाही दूतका काम कर रहा था। अबतक सिपाहीका काम करके वह पेंशन पा रहा था। इस विपत्तिके अवसरपर वह अन्यान्य स्थानोंसे समाचार लाकर अंग्रेज़ोंको देने लगा। समाचार दूसरे न समझ सकें इसलिये ग्रीक या फ्रेंच भाषामें पत्र लिखे जाते थे। पर सब अंग्रेज़ इन भाषाओंको न जानते थे। इसलिये छोटेसे कागजपर छोटे छोटे अक्षरोंमें अंग्रेज़ीमें पत्र लिखे जाते और दूत उन कागजोंको छिपाकर एक स्थानसे दूसरे स्थान ले जाता था। कभी कभी परोंके भीतर ये पत्र छिपा दिये जाते थे और दूत उन्हें एक स्थानसे दूसरी जगह पहुंचाता था। विश्वासी दूत अंगदकी जबानी अंग्रेज़ोंने सुना कि सेनापति हावेल कानपुरसे लखनऊके लिये चल दिये। इस समाचारसे अंग्रेज़ प्रसन्न हुए। वे नित्य हावेलके आनेकी बाट जोहने लगे।

* Lucknow and its Memorials of the Mutiny. P. 3.

सितम्बरके अन्तमें हावेल लखनऊ पहुंचे। प्रायः तीन महीने बाद उन्होंने सहायक सेनाकी खबर सुनी। इस समय लखनऊमें सिपाही सेना जमा थी। लोग इधर उधर भाग गये थे। इधर हावेलकी सेना इधर उधर विपक्षियोंसे लड़ती लखनऊके किनारे-पर आई। इनकी बंदूकोंकी आवाज़ोंसे घिरे हुए अंग्रेज़ प्रसन्न-ताके मारे नाचने लगे। सिपाहियोंके गोलोंसे उनके प्राण चले जायंगे इसकी भी चिन्ता न रही। स्त्रियां छोटी २ कोठरियों और तहखानोंसे निकलीं। घायल अस्पतालोंकी खाटोंसे चले। जो पीड़ित उठ नहीं सकते थे वे गर्दन उठाकर देखने लगे। सम्पूर्ण रेजीडेंसी मानों अपूर्व मंत्रसे सजीव हो उठी। हावेल और आउट्राम २५ सितम्बरको अपनी सेनाके साथ रेजीडेंसीमें पहुंचे। हाईलैंडर सैनिक अंग्रेज़ बच्चोंको उठा उठाकर प्यार करने लगे। बच्चे एक सैनिककी गोदसे दूसरेकी गोदमें जाने लगे। सबने ताली बजाकर प्रसन्नता प्रगट की। सबने ईश्वरको धन्यवाद दिया ।
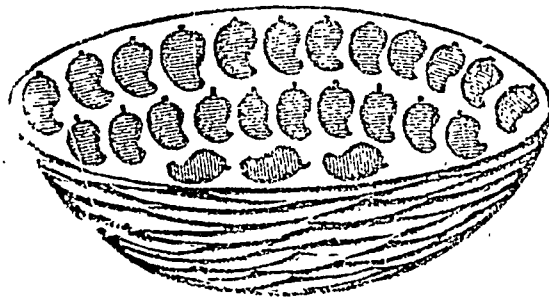
छठा अध्याय
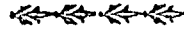
दिल्लीपर अंग्रेज़ोंका अधिकार—शहरपर धावेका प्रबन्ध—सेनापतिकी घोषणा—सिपाहियोंके पराक्रम—अंग्रेज़ीसेनाकी मादकता—किलेपर कब्जा—बूढ़े बहादुरशाहका भागना—उनका पकड़ा जाना—शाहजादोंका मारा जाना—कप्तान हडसनके काम—दिल्लीनिवासियोंको फांसी—निकल्सनका मारा जाना ।

जिस दिन सेनापति हावेल सर जेम्स आउट्रामके साथ लखनऊके उद्धारके लिये पहुंचे, उसके कुछ दिन पहले सेनापति विलसनने मुग़ल राजधानी दिल्लीपर कब्जा किया था। अगस्त महीनेके अन्ततक अंग्रेज़ी सेनाको कुछ भी कामयाबी न हुई थी। न उनके पास स[illegible] ही था और न सेना ही अधिक थी; बल्कि दिल्लीको घेरने जा[illegible]वे खुद ही घिर गये थे। अन्तमें पंजाबके ले० गवर्नरने सेना और सामान भेजा, पंजाबकी बड़ी बड़ी तोपें आईं, कर्मवीर निकल्सन सहायताके लिये आये। सेनापति निविल चेम्बरलेन यद्यपि घायल हो गये थे, पर वे फिर पहलेके समान ही कर्मदक्ष बन गये थे। ६ सितम्बरको मेरठसे एक सहायक सेना और आ गई। जम्बूके महाराजने अपने बेटेके साथ एक सेना सहायताके लिये भेजी। इस प्रकार दिल्ली फतह करनेके लिये चारों ओरसे सेनाएं, और तोपें जमा हुईं। गोले और बारूद भारी तादादमें एकत्र हुए।

प्रधान इंजीनियर बेयर्ड स्मिथने हमलेका नक्शा तैयार किया। उससे सहमत होकर प्रधान सेनापतिने आज्ञापत्र निकाला। उसमें लिखा था कि यह मौका सब सैनिकोंकी वीरता, दक्षता और पराक्रम का है। कोई सैनिक अपने इस अभ्यस्त गुणसे वंचित न रहे। सब सदा इंजीनियरोंकी सहायता करें, उनकी आज्ञामें काम करें। चाहे खाई खोदनेका काम हो, या तोपें खींचनेका काम हो, या दीवार बनानेका काम हो, किसी काममें सुस्ती न हो। फिर उन्होंने उल्लेख किया था कि किसी वक्त सैनिक जोश और क्रोधके अधीन होकर काम न करें विपक्षियोंने बड़ी निर्दतासे मनुष्य हत्या आदि काम किये हैं। पर इससे सैनिक स्त्रियों और बच्चोंको न मारना चाहिये। किसी तरह इनकी जान न ली जाय।

इसके बाद अंग्रेज़ी सेना तैयार हुई। समयके अनुसार लड़ाईकी प्रणाली भी बदल गई थी। विज्ञानकी उन्नतिके साथ लड़ाईमें भी उन्नति हुई थी। जो विज्ञानके पंडित हैं उन्होंने तरह तरहकी नई आयोजना और प्रणालियां निकाली थीं। उसी विज्ञानके सहारे अंग्रेज़ इंजीनियर विपक्षियोंका बल नाश करनेको तैयार हुए। अंग्रेज़ी सेना ६५०० थी। इनमें गोरी सेना १२००। उस समय दिल्लीमें लगभग ३० हज़ार विद्रोही सिपाहियोंका अंदाजा लगाया जाता था। इस बड़ी भारी संख्याको नाश करनेके लिये ब्रिटिश वाहिनी चली।*

Major General Handcock's Siege of Delhi in 1857. P.20

अंग्रेज़ इंजीनियरोंने काश्मीर और मोरी दरवाज़ेको अपना लक्ष्य बनाया। यह निश्चय हुआ कि ७ सितम्बरको रातको इन दरवाजोंके सामने तोपें लगा दी जायं। दिनमें सेनापति विलसनने सैनिकोंमें उद्दीपनामय पत्र प्रचारित किया। शामको इंजीनियरोंने काम शुरू किया। रातको तोपोंका तमाम सामान ऊंटोंपर लदकर दरवाजोंके सामने पहुंचा। बैलगाड़ियोंमें गोला बारूद चला। छोटी तोपें आगे लगाकर बड़ी बड़ी तोपें चलीं। एक एक तोपको चालीस चालीस बैल खींचने लगे। इनके और आदमियोंकी चीख पुकारसे बड़ी गड़बड़ हुई। सिपाहियोंने अंग्रेज़ी सेनाका उद्देश्य समझ लिया। पर उनकी तोपें शान्त रहीं और बंदूकें भी चुप थीं। सिपाहियोंके नेता ऐसे पड़े थे मानों कुछ हो ही नहीं रहा था। यह देखकर अंग्रेज़ी सेनाका उत्साह और भी अधिक बढ़ा। सब तोपें ठीक ठिकाने लगाकर गोले बरसाये जाने लगे। ८ सितम्बरसे १३ तक बराबर गोले फेंके गये। इससे दो स्थानोंसे फसील टूट गई। अब यह प्रस्ताव हुआ कि इन दोनों स्थानोंसे ब्रिटिश सेना शहरमें घुसे। प्रस्तावके अनुसार ही काम हुआ। सेना पांच हिस्सोंमें बँट गई। पाचोंके भिन्न भिन्न सेनापति बने। चार हिस्सोंको चार ओरसे शहरमें घुसनेकी आज्ञा दी गई और एक हिस्सा पीछे मददके लिये रहा।

दिल्लीके सिपाहियोंकी तादाद बहुत बड़ी थी। उनके सेनापति बखतख़ां योग्य और चतुर आदमी थे। पर सिपाहियोंमें

फूट थी, एककी सलाहके अनुसार दूसरा काम न करना चाहता था। फिर उनमें कोई विद्वान और बुद्धिमान न था। कोई विज्ञानका जानकार न था। सिपाही इन्हीं बातोंके कारण संख्यामें अधिक होनेपर भी अंग्रेज़ी सेनाके सामने कमजोर थे। अंग्रेज़ी सेना एक सेनापतिकी आज्ञापर चलती थी, पर यहां एककी आज्ञा मानना ही पाप समझा जाता था। इतनी कमज़ोरियों और दूषणोंके होते हुए भी सिपाहियोंकी वीरतामें कमी न थी। मैदानसे वे पीछे नहीं हटे, दृढ़ताके साथ उन्होंने वार किया। सिपाहियोंने अपनी तादाद बढ़ानेके लिये भिन्न २ स्थानोंके सिपाहियोंको पत्र लिख लिखकर बुलाया। इन पत्रोंमें कविता लिखी गई थी। सिपाहियोंमें भी भावुक कवि थे और उन्होंने कवितामें लिखा था—"जैसे बिना वसन्तके गुलाब नहीं खिलता और बिना दूधके बच्चा प्रसन्न नहीं होता वैसे ही बिना तुम्हारे हम प्रसन्न नहीं हो सकते। आओ, सब मिलकर अंग्रेज़ोंका अन्त करें।"* इस प्रकार कवित्वमयी भाषामें पत्र लिख लिखकर उन्होंने भिन्न २ दलोंको निमंत्रण दिया था। मुगल राजधानीमें सिपाही ही सिपाही हो गये। अपने रणशिक्षा दाता अंग्रेज़ोंसे मुकाबिला था। गुरू और चेलेकी परीक्षा थी। इन चेलोंने अपने गुरुओंसे सीखी हुई विद्याका अच्छा परिचय दिया इनकी गुरुकी तरह इनकी वीरता, धीरता और रणकौशलको देखकर बड़े

---

* Martin's Indian Empire, Vol II. P. 216.

बड़े अंग्रेज़ोंने सच्ची प्रशंसा की। इनके हार जानेपर भी उन्होंने वीरताका अपमान नहीं किया।*

१४ सितम्बरकी रातके तीन बजे अंग्रेज़ी सेना कई हिस्सोंमें बँटकर तैयार हुई। सवेरेसे पहले ही ये शहरके भिन्न भिन्न दरवाजोंकी ओर बढ़े। गोरी सेनाके बराबर वीर सिक्ख, साहसी गोर्खे आगे बढ़े। जिन्होंने एक दिन, पंजाबकी आज़ादीके लिये अंग्रेज़ोंसे चिलियांवालामें संग्राम किया था, आज वे ही सिक्ख अंग्रेज़ोंको विजयके लिये भारतवासियोंके विरुद्ध चले।† सेनानायक निकल्सनकी आज्ञाके अनुसार दो हिस्से शहरकी ओर बढ़े। इधरसे सिपाही बरसाती बूंदोंकी तरह गोलियां मारने लगे। ऊपरसे ईंट और पत्थर फेंके जाने लगे जिससे अंग्रेज़ी सेना पहले खाई पार करके फसीलपर रस्सेके सहारे न जा सकी। पर अन्तमें वे चले गये। एक सिपाहियोंकी गोलीसे मर जाता तो उसी समय दूसरा तीसरा जा पहुंचता। इस तरह काश्मीरी दरवाजेसे घुसकर ये मेनगार्डतक जा पहुँचे। दूसरा दल काबुली दरवाजेकी ओरसे बढ़ा था। इधर अंग्रेज़ी सेनाको बहुत हानि उठानी पड़ी। सिपाहियोंकी गोलियोंसे बहुतसे मारे गये पर अन्तमें वे उस स्थानपर कब्ज़ा कर ही बैठे।

जब काबुली दरवाजेपर कब्ज़ा हो गया तब निकल्सन लाहौरी दरवाजेकी ओर बढ़े। इस दरवाजेके रास्तेके दोनों

* Kaye's Sepoy War Vol III. P. 610,

† Kaye's Sepoy War. Vol III. P. 610. note.

ओरके मकानोंमें सिपाही थे। इस रास्तेसे होकर जाते हुए बहुतसे अंग्रेज़ी सैनिक मरे। सेनापति निकलसन भी बुरी तरहसे घायल हुए। उन्हें उसी समय फौजी अस्पतालमें ले गये।

इधर तीसरे दलने बारूद लगाकर काश्मीरी दरवाजा उड़ानेका आयोजन किया। होम, स्मिथ, कारमाइकेल आदि साहसी सैनिकोंने दरवाजेके नीचे बारूदके बस्ते लगाये। इस काममें दो घायल हो गये। इसके बाद सलकेल्ड नामक सैनिकने आग लगानेके लिये दियासलाई जलाई, पर दियासलाईके जलते न जलते वह भी घायल हो गया। इसने दूसरेके हाथमें दियासलाई दी। उसको भी सिपाहियोंने गोली मारी। उसने जिसके हाथमें दियासलाई दी थी वह भी मारा गया। सलकेल्डके बराबर हवलदार तिलकसिंह मारा गया था। उसके साथ ही रामहेत मारा गया। इनके अलावा दियासलाई लगानेकी कोशिशमें छः हिन्दुस्तानी सैनिक और मारे गये।

पर चौथे हिस्सेको तीसरेके समान सफलता न हुई। ये शहरके किनारे किशनगंजसे सिपाहियोंको हटाकर लाहौरी दरवाजेपर कब्जा न कर सके। इस जगहपर हमला करनेके लिये जम्बूके सैनिक नियत किये गये थे पर बहुतसे मारे गये और बाकी भाग निकले। इससे सेनापति रीड गोर्खा सेनाके साथ तोपें लेकर आगे बढ़े। पर सेनापति खुद घायल हो गये। सेनापति चेम्बरलेन पहलेसे घायल थे फिर भी वे सिपाहियोंको बाधा देनेके लिये आगे बढ़े। उनकी आज्ञासे सैनिक हिन्दूरावके घरकी

छतपर चढ़ गये। जब सेनापति विलसनको रीडके घायल होनेका समाचार मिला तब उन्होंने एक सेनापति होप ग्रांटको कई सौ गोर्खों और सिक्खोंके साथ आगे बढ़नेकी आज्ञा दी। सिपाहियोंने अपनी वीरताकी हद कर दी। शिक्षित और अनुभवी सेनापति उनकी वीरता देखकर आश्चर्यमें रह गये। धीरे धीरे सिपाहियोंकी तोपें बन्द होती जा रही थीं। अन्तमें वे इस चौथे दलको बाधा देते हुए रुके।

इस प्रकार १४ सितम्बरको अंग्रेज़ी सेनाका प्रयास बहुत कुछ सफल हुआ। वे शहरमें घुस गये। सेनापति विलसन घोड़ेपर चढ़कर एक हाथमें दिल्लीका नकशा लिए हुए शहरमें आये। प्रधान इंजीनियर भी प्रसन्नताके साथ शहरमें घुसे। शहरमें आकर इन्होंने अंग्रेज़ स्किनरके मकानमें रात बिताई।

दूसरे दिन तोपोंकी गरज, बन्दूकोंकी चटक और बारूदकी बदबू न उड़ी। इस दिन अंग्रेज़ सैनिकोंने और ही तरहसे अपनी हिंसा पूरी की। मुगल राजधानी धनके लिये प्राचीन कालसे प्रसिद्ध थी। दिल्लीका सोना चांदी, हीरा मोती संसारमें प्रसिद्ध था। सैनिकोंके लिये ये चीजें लोभनीय थीं। पर इन चीजोंका मिलना कठिन था। कारण महीनों पहलेसे कीमती चीजें इधर उधर भेज दी गई थीं। जो रही भी थीं वे जमीनमें दाब दी गई थीं। दिल्लीको इन बातोंका अच्छा अभ्यास था, क्योंकि बराबर लूट मार और हमले होते ही रहते थे। पर एक चीज सैनिकोंके लोभकी थी जिसे नगरवासी अनादरकी वस्तु

समझते थे। वह थी बोतलोंमें भरी लाल पीली शराब। १५ सितम्बरको शराबकी भट्टियों और दूकानोंपर अंग्रेज़ सैनिक टूट पड़े। एक एकने कई कई बोतलें ले लीं और शराबें पी पीकर वे पहले मतवाले हुए और बादमें बेखबर। गोरे और सिक्ख ऐसे बेखबर हुए कि अफसरकी आज्ञाकी भी कोई परवा न रही। कप्तान हडसनने लिखा था—"मैंने अपनी जिन्दगीमें पहली बार गोरे सैनिकोंको अपने सेनापतिकी आज्ञा न मानते हुए देखा।" एक दूसरे सहृदय अंग्रेज़ने इस समय शराबखोरीसे सेनाका ऐसा हाल देखकर घृणा प्रगट की। सेनापति विलसन सेनाका यह हाल देखकर चिन्तित हुए। १६ सितम्बरको विलसनने तमाम शराब फेंक देनेका हुक्म दिया। दिल्लीके रास्तों और नालियोंमें शराब बहने लगी। रास्तोंमें कीचड़ हो गई। दिल्लीमें बहुत बार इत्रोंका छिड़काव हुआ था। इस दिन अंग्रेज़ सेनापतिने शराबका छिड़काव करवा दिया।

१५ सितम्बरको अंग्रेज़ी सेना शराबके नशेमें ऐसी बेखबर थी कि, यदि सिपाहियोंका कोई संचालक होता और उनमें कुछ बुद्धि होती तो उनकी विजय थी। पर सिपाहियोंमें बुद्धि न थी, ऐक्य न था, उनका कोई योग्य संचालक न था। वे मूर्ख थे, सीधे सादे थे। इस समय भी किशनगंजपर सिपाहियोंका कब्जा था। लाहौरी दरवाजा और उस ओरके तमाम मकान उनके अधिकारमें थे। पहाड़की ओर अंग्रेज़ी छावनीमें बहुत थोड़े सैनिक थे। वहां रोगी और घायल ही अधिक थे

इधर शहरमें शराबके कारण सब सैनिक बलहीन हो गये थे। यदि कोई योग्य आदमी इस हालतका लाभ उठाता, यदि सिपाही इस समय जोरका धावा करते तो अंग्रेज़ी सेनाका बचना असम्भव हो जाता। पर सिपाहियोंकी मूर्खता और अंग्रेज़ोंका भाग्य साथ २ था। तादादमें अधिक होनेपर भी अन्तमें सिपाही हारे। वे मौका और घटनाको न समझते थे। इसी कारण अन्तमें उन्हें प्राण खोने पड़े।

१५ सितम्बरको अपने सैनिकोंकी दशा देखकर अंग्रेज़ सेनापतियोंको बड़ी चिन्ता हो गई थी। पर वह रात कुशलतासे बीती। अब सेनापति सोचने लगे कि दिल्लीके अन्यान्य स्थानोंपर हमला किया जाय या नहीं। पर उनके साथी वापिस लौटनेके विरोधी थे। एक सौ वर्ष पहले लार्ड क्राइवने कहा था कि, "एक स्थानपर स्थिर होकर रहना विपत्तिका कारण है और पीछे हटना सर्वनाश।" दिल्लीके सेनापतिने इस समय इस बातका वजन समझा। इसलिये सैनिकोंको बाकी काम समाप्त करनेके लिए आज्ञा दी गई। शान्तिपूर्वक १६ सितम्बरका प्रातःकाल आया। इससे दो दिन पहले सिपाहियोंने अंग्रेज़ी सेनाके चौथे हिस्सेको किशनगंजसे पीछे हटा दिया था। १६ सितम्बरको सिपाही किशनगंज खाली कर गये। यहाँके हथियार आदि अंग्रेज़ी सेनाके हाथ लगे। १७ सितम्बरकी शामको अंग्रेज़ी सेना रास्तेमें सिपाहियोंसे लड़ती हुई किले (शाहजहानी हवेली) की ओर बढ़े। दोनों ओरके मकानोंके छज्जों और बरांडोंसे

उनपर गोलियां आने लगीं। १८ सितम्बरको लाहौरी दरवाजे-पर हमला करनेकी कोशिश की गई, पर सिपाहियोंने इतने जोर से गोलियां बरसाईं कि अंग्रेज़ी सेनाको पीछे हटना पड़ा। सेनापति विलसन चिन्तित हुए। उनके मस्तिष्कका प्रत्येक हिस्सा ठण्ढा होने लगा। दो दिन इसी तरह छोटी मोटी लड़ाइयां होती रहीं। २० सितम्बरको अंग्रेज़ी सेनाने लाहौरी दर-वाजा, अजमेरी दरवाजा और जामा मसजिदपर कब्जा किया। इसी दिन बहादुरशाहके किलेपर उन्होंने अंग्रेज़ी झण्डा लगाया।

इस समय भी शहरके कुछ हिस्सोंमें सिपाही थे पर अब अंग्रेज़ प्रधान हो गये। २० सितम्बरको उन्होंने दिल्ली फतह करनेकी खुशीमें 'पृथ्वीके स्वर्गरूप' दीवानेखासमें अपनी दावत की।* दिल्लीपर अंग्रेज़ी राज्य फिर प्रतिष्ठित हुआ। सिपाही अपनी मूर्खताके कारण हारकर उत्साहहीन हुए। अब अंग्रेज़ी सैनिकोंको अपनी हिंसा पूरी करनेका अवसर मिला। जहां एक दिन अंग्रेज़ मारे गये थे, जहां असहाय स्त्रियों और बच्चोंका खून बहा था वहींके मालिक अंग्रेज़ बने। लड़ाई हो चुकी, अब बदला शुरू हुआ। अंग्रेज़ सैनिकोंने दिल्लीमें फिर "कत्ले आम" का दृश्य दिखाया। जो सामने पड़ता वही उनकी बंदूकका

---

* मुगल बादशाहोंका दीवानेखास सफेद सङ्गमरमरका बना है। इसकी दीवारोंपर सुन्दर काम है। इसीमें तख्त ताऊस 'मयूर सिंहासन' था। एक यहां शेर खुदा था जिसका आशय है कि संसारमें यदि स्वर्ग है तो वह यहीं है।

Mutiny in Delhi P. 11.

निशाना बनता। इनके साथ सिक्ख सिपाहियोंने भी कमी न की। दिल्लीनिवासियोंकी सम्पत्ति लूटना और उन्हें संगीने भोंककर मारना इनका काम हो गया। गुरु तेगबहादुरका मारा जाना, गुरु गोविन्दसिंहका कष्ट भोगना, बन्देकी यातना, सिक्ख भूले न थे। दिल्ली और मुगलोंके नामसे वे घृणा प्रगट करते थे, उन्हें क्रोध आता था। इसलिये गोरे सैनिक और सिक्ख अपनी अपनी हिंसा पूरी करनेके लिये दिल्लीनिवासियोंके प्राण लेने लगे। जिन्होंने अंग्रेज़ोंका खून किया था या उन्हें हानि पहुंचाई थी, उनके साथ इस व्यवहारको बदला कहा जा सकता है पर जिन्होंने किसीका अनिष्ट नहीं किया, जो शान्त रहे, जिन्हें सिपाहियोंने भी सताया था, उन नगरवासियोंको मारना निस्सन्देह नीचताका काम था, बहुतसे नगरवासी मारे गये। शहरके व्यापारी और शान्त व्यवसायीतक सिक्खों और गोरों-की तलवारों, संगीनों और बंदूकोंसे मारे गये! इस समय दिल्लीकी फसीलके भीतर जो थे वे सब अंग्रेज़ोंके दुश्मन माने गये थे और इस कारण उनके प्रति दया दिखाना अन्याय समझा जाता था। शान्त अशान्त, भले बुरे, छोटे बड़े सबको एक ही सजा दी जा रही थी। दिल्लीपर कब्जा होनेके कुछ दिनतक इसी तरह लोग अंधाधुन्ध मारे गये। वीर अंग्रेज़ सेनापतियोंने भी इसका अनुमोदन किया। लड़ाईमें जो घायल हो गये थे या जिनके हाथ पैर कट गये थे उनपर भी दया न की गई। सिपाही करीब एक सौ बीमारों और

घायलोंको एक स्थानपर छोड़ गये थे। गोरोंने संगीनोंसे इनको मार डाला। एक अंग्रेज इंजीनियरने इस समय लिखा था—"एक सिपाहीके दोनों हाथ तलवारसे कट गये थे, शरीरमें गोली लगी थी। पेटमें दो जगह संगीन घुसी थी। फिर भी वह जिन्दा था। इस तरहके असहाय और दुर्दशाग्रस्त जीवपर भी गोरे सैनिकको दया न आई। उसने सिपाहीके सिरमें गोली मारी। यह देखकर मुझे घृणा और शरम आई।"* पर सैनिकोंने स्त्रियों और बच्चोंकी जानें न लीं यदि अनजानमें किसीके लग गई हो तो बात दूसरी है पर उनपर अत्याचार न हुआ। मुसलमानोंने बड़ी बड़ी मसजिदोंमें छिपकर अंग्रेज़ी सेनापर गोलियां चलाई थीं। बहुतसे सैनिक मरे भी थे। इससे मसजिदोंको उड़ानेके लिये तोपें लगा दी गईं और अंग्रेज़ी सेनाने सबको गिरफ्तार कर लिया।

दिल्लीका शाहीभवन (किला) ले लिया गया था, पर बहादुर शाह अंग्रेज़ोंके हाथ न पड़े थे। १९ सितम्बरकी रातको जब अंग्रेज़ी सेनाने चांदनी चौकपर कब्जा कर लिया तब सिपाही सेनापति बख्तखांने भागनेके अलावा कोई रास्ता न देखा। उसने जाकर बहादुरशाहसे कहा कि दिल्ली अंग्रेज़ोंके हाथ जरूर चली गई पर अब भी कई ऐसे स्थान हैं जहां जानेसे काम हो सकता है। उनके नामसे ही बहुतसे आदमी तैयार होकर अंग्रेज़ोंसे लड़ेंगे। इतिहास लेखक मालेसन साहबने लिखा है कि

* Martin's Indian Empire, Vol II. P. 445.

जो कहीं बहादुरशाह अपने बुजुर्ग बाबर हुमायूंकी तरह कर्त्तव्यशील होते तो बख्तखांकी बात गलत न थी। उनके नामसे भारतवर्ष जाग सकता था। उनके उद्योगसे अंग्रेजी राज्यका लोप हो सकता था। पर बहादुरशाहमें न शक्ति थी, न उद्योग था। बुढ़ापेके कारण वे शिथिल हो गये थे। गदरके अवसरपर वे दूसरेके हाथका खिलौना थे। सिपाहियोंके अफसर उनपर हुक्म करते थे, अंग्रेज़ इतिहास लेखकने बहादुरशाहकी दुरवस्थाका इसी प्रकार वर्णन किया है।

इस समय एक आदमी और कर्मक्षेत्रमें उतरा। इसने बहादुरशाहको अपनी ओर खींचा। बख्तखां विदा हो चुका था। इस दूसरेका नाम था मिर्जा इलाहीबक्स। बादशाहके बड़े बेटे दाराबख्तके साथ इसकी लड़कीकी शादी हुई थी। बख्तखांके चले जानेपर इलाहीबक्सने बहादुरशाहको अपने मकानपर लाकर रखा। यहां लाकर उन्होंने समझाया कि विद्रोही सिपाहीके साथ उनका जाना योग्य नहीं, जानेपर उनकी हार होगी। बूढ़े बादशाहने बात मानी। यहां बेगम जिन्नतमहल और उसके पन्द्रह सालके बेटेको बुलाकर वे उन्हें साथ लिये हुए हुमायूंके मकबरेमें गये। जो राज्य खोकर मारा मारा फिरा था, जिसके मन्त्रियोंने जाल रचकर धोखा दिया था, जिसने अपने जीवनमें कष्ट भोगे थे, वह हुमायूं यहांपर समाधिस्थ थे। हुमायूंके अलावा गाजीउद्दीन द्वारा मारे गये दूसरे आलमगीरकी भी कबर यहींपर थी। इसी स्थानपर सबसे अन्तिम मुगल बादशाह बहादुरशाहकी इच्छाओंका अन्त हुआ।

उसेकी जान बचानेका वचन दो। हडसनने वचन दिया। साथ ही यह भी कहा कि यदि बादशाह भागनेकी कोशिश करेंगे तो वह उन्हें जैसे होगा वैसे कुत्ते की मौत मार देगा।* इसके बाद बादशाहने कप्तान हडसनको दो तलवारें दीं। कप्तानने उन्हें अपने अर्दलीके हाथमें दे दी। बादमें बहादुरशाह जिन्नतमहल और जवान-बख्तको शहरमें लाये। इनकी पालकियोंके साथ साथ बहुतसे शाही नौकर थे। जब पालकियां चांदनी चौकसे जाने लगीं तब लोग आश्चर्यसे आखें फाड़ फाड़कर देखने लगे। हडसनने बादशाह और उनके पुत्र तथा स्त्रीको प्रधान सिविल कर्मचारी सैंडर्स साहबके सुपुर्द किया।

हडसनका काम यदि धैर्य और शान्तिके साथ यहींतक होता तो वह इतिहासमें सम्मानकी दृष्टिसे देखा जाता। पर उसके कामोंसे सज्जनता नहीं टपकती। जिस बादशाहके पूर्वजोंने अंग्रेज़ कम्पनीको व्यापारकी जगह दी थी, हर तरहकी सहूलियत दी थी, इस बुरे समयमें हडसनने उसी वंशके अन्तिम पुरुषसे कहा था —"मैं तुम्हें कुत्तेकी मौत मार दूंगा।" यह साहसी सैनिकका काम नहीं। कैदी अक्षम, जरा-ग्रस्त, बूढ़ा आदमी था। छोटे आदमियोंकी सलाहसे यह छोटे रास्तेपर चलाया गया था। उसके नामपर अनिष्ट किये गये थे। ऐसी दशामें उसे कड़े शब्द कहकर दुःखी करना नीचता,

---

* Hodson's Twelve years in India P. 506.

सबसे अधिक नीचता थी।* एक दूसरे इतिहास लेखकने भी कप्तान हडसनकी निन्दा की है। कप्तानसे सेनापतिने पहले ही कह दिया था कि वह बादशाहसे किसी तरहके असम्मानकी बात न करे। पर उसने आज्ञाकी भी परवा न की।† हडसन साहबने अपनी पुस्तकमें खुद लिखा है कि बादशाह बूढ़े और असमर्थ थे। उनके नामपर लोगोंने मनमाने अत्याचार किये थे। फिर भी हडसन उन्हें जिन्दा या मुर्दा किसी हालतमें लाना चाहते थे।‡ बहादुरशाहसे उन्हें जो दो तलवारें मिली थीं उनमेंसे एक विजयी नादिरशाहके हाथकी तलवार थी और दूसरी बादशाह जहांगीर बांधा करते थे। यह दूसरी तलवार हडसनने महारानी विक्टोरियाकी भेंट करनेको रखी थी।¶ हडसनकी प्यास अभी न बुझी थी। बादशाहके बेटे शाहजादे जगह जगह छिपे हुए थे। काना रजीब अलीसे इनका पता लगता था। अंग्रेजोंको खुश करनेके लिये इलाहीबक्स भी इन्हें कैद करा रहा था। इलाहीबक्स बादशाहका समधी था। इस समय तीन शाहजादे मिर्जा खादिरसुलतान, मिर्जा मुगल और मिर्जा अबूबकर अभीतक हुमायूंके मकबरेमें थे।$ हडसनने सेनापति

---

* Kaye's Sepoy War. Vol. III, P. 647.

† Martin's Indian Empire. Vol. II P. 447

‡ Hodson's Twelve years in India. P. 300.

¶ Ibid. P. 301,

$ Kaye's Sepoy War. Vol. III P. 649 note.

विलसनसे इनकी गिरफ्तारीकी आज्ञा मांगी। पर सेनापति हडसनकी प्रकृति जानते थे, इसलिये वे आज्ञा देनेमें हिचकने-लगे। अन्तमें सेनापति निकलसनके कहनेसे उन्होंने हडसनको आज्ञा दी। हडसन सौ सैनिक और अपने सहायकोंके साथ फिर हुमायूंके मकबरेकी ओर गये। रजीब अली और इलाही-बक्स साथ थे। शाहजादोंके निकलनेका कोई उपाय न था। इनके साथ बहुतसे शस्त्रधारी नौकर थे। सबसे अधिक साहसी शाहजादेने लड़ना चाहा था। पर बाकी दोनों शाह-जादोंने इसे रोका। अन्तमें कप्तान हडसनसे अपनी जानबख्शीका वादा करानेकी कोशिश हुई। दो घंटे बीत गये पर हडसनने वादा न किया। अन्तमें भाग्यपर भरोसा करके तीनोंने आत्म-समर्पण किया।

कपड़ा पड़े हुए रथमें बैठकर तीनों शाहजादे बाहर आये। पास आकर उन्होंने कप्तान हडसनको सलाम करके कहा कि अवश्य ही अदालतमें उनका इंसाफ होगा। जवाबमें सलाम करके हडसन चुप रहे। उनका विश्वास था कि इन शाहजादोंने किलेमें आई हुई शरणागत अंग्रेज़ स्त्रियों और बालकोंका वध किया है। इसलिये हडसन उनके खूनपर उतारू थे। बदलेके लिये उनकी समग्र कठोर वृत्तियाँ जाग उठी थीं। सबसे पहले उन्होंने शाहजादोंके नौकरोंके हथियार लिये। इस समय अंग्रेज़ों-का रोआब बैठ चुका था, किलेपर ब्रिटिश झंडा लहरा रहा था, इस कारण कोई अंग्रेज़ोंके विरुद्ध होनेकी हिम्मत न करता

था। इसी कारण शाहजादोंके नौकरोंने हडसन साहबके सामने हथियार डाल दिये। कप्तानने उनके हथियार और घोड़े इकट्ठे कर लिये।

फिर रथवानको शहरकी ओर रथ चलानेकी आज्ञा दी गई। रथके चारों ओर ब्रिटिश सैनिक हो गये। बहुतसे आदमियोंने चुपचाप इस दृश्यको देखा। रथ जब शहरके निकट पहुंचा तब कप्तान हडसनने अपने सैनिकोंसे जोरसे कहा, ये शाहजादे खूनी हैं। इन्होंने हमारी औरतों और बाल बच्चोंको मारा है। अब गवर्मेंटका दण्ड इन्हें भोगना होगा। यह कहकर उसने शाह-जादोंको रथसे नीचे उतरनेको कहा। कांपते हृदयसे शाहजादे नीचे उतरे। उन्हें अपने ऊपरके कपड़े उतारनेको कहा गया। शाहजादोंने आज्ञाका पालन किया। फिर उन्हें रथपर बैठनेका हुक्म मिला। वे फिर रथपर बैठे। अब कप्तान अपनी मंशा पूरी करनेपर उतारू हुए। एक सवारके हाथसे उन्होंने पिस्तौल लिया और तीन फायरमें तीनों शाहजादोंको मार डाला। रथका परदा हटा दिया गया जिससे शाहजादोंकी लाशें सब देख सकें। इस तरह खूनी शिकारीकी तरह अपना शिकार लिये हुए वे शहर-की ओर बढ़े। चांदनी चौकमें पहुंचकर उन्होंने उनकी लाशें रथसे निकालकर कोतवालीके सामने रखीं जिससे लोग उन्हें देखें। इस घटनासे करीब दो सौ बरस पहले औरंगजेबने भी सिक्ख गुरु तेगबहादुरकी लाश इसी जगह लोगोंके देखनेके लिए डलवाई थी। ये लाशें कई दिनतक इसी जगह पड़ी रहीं। जब वे सड़ने

लगीं तब उठवाकर दूसरी जगह गड़वा दी गईं। इस तरह हिंसा पूरी की गई।

कप्तान हडसनने यह काम केवल बदला लेनेके इरादेसे किया था। जब आदमी हिंसाके अधीन होता है, तब उसके कोमल हार्दिक भाव अस्त हो जाते हैं। कप्तान हडसनकी भी यही दशा हुई थी। यदि शाहजादे लड़ते और लड़ाईमें मारे जाते तो आज उनके लिये एक शब्द भी न लिखा जाता। पर यह नहीं हुआ। उनके हथियार लेने, उनके नौकरोंके हथियार लेने और चारों ओरसे घेरकर चलनेकी भी कोई निन्दा नहीं करता, क्योंकि यह वीरधर्म है। यदि वे बादशाहकी तरह शाहजादोंको भी अधिकारियोंके हाथ सौंप देते तो उनके वीरधर्ममें कोई कलंक न था। पर उन्होंने अपने असहाय कैदियोंपर वार किया। उनके इस कामसे किसी किसी अधिकारीने अपनी नाराजी प्रगट भी की थी। खुद हडसन भी जब विचार करने लगे तब अपने कामपर दुःखी हुए थे। कर्नल मालेसनने इस विषयपर लिखा है—"इसकी अपेक्षा और अधिक पाशविक अत्याचार नहीं हो सकता। यह सबसे बड़ी गलती और सबसे बड़ा पाप था। यह अफवाह उड़ी थी कि ये शाहजादे हमारी स्त्रियों और बच्चोंकी हत्यामें शामिल थे, पर इस अफवाहकी सचाईके लिये कोई सबूत न था। जजके सामने सब बातें प्रमाणित हो सकती थीं। यदि शाहजादे जजके सामने अपराधी साबित होते तो उन्हें जो भी सजा दी जाती न्यायके अनु-

खार कही जाती। पर यह कुछ नहीं हुआ। शाहजादोंने अपने आपको कप्तानके हवाले कर दिया। जब कप्तानने उन्हें गाड़ीसे उतरकर कपड़े खोलनेको कहा तब बिला उज्र उन्होंने कपड़े उतार दिये। अपने कैदियोंकी इस अधीनतापर उन्हें तरस आनी चाहिये थी, पर कप्तान हडसनकी धमनियोंमें खूनकी जगह लोहा बह रहा था। दिल्लीके बादशाहको मारनेकी उन्हें आज्ञा न मिली इस कारण वे दुःखी थे। उन्हें अपनी पाशविक तृप्ति पूरी करनेकी आवश्यकता थी। पर उन्होंने कायर पुरुषोंके योग्य हिंसा करके अपनी जिघांसा पूरी की। दुःखका विषय है कि हडसन अपने मानसिक विकारोंके वशीभूत होकर हत्या-पर आमादा हुए थे। सर्वसाधारणके सम्बन्धमें भी यह दुःखकी बात है, क्योंकि यदि अदालतमें उनपर विचार होता तो बहुतसी रहस्यकी बातें प्रगट हो सकती थीं। उस समय लोगोंके सिर खून चढ़ा था इसलिये चाहे यह काम बुरा न लगा हो, पर जब सबके दिमाग ठंढे होंगे तब वे हडसनकी प्रकृतिको अयोग्य बतावेंगे। इतिहास कभी हडसनका समर्थन न करेगा।"*

इतिहास लेखक 'के' साहबने इस विषयपर लिखा है—"कप्तान हडसनने प्रसन्न होकर २३ सितम्बरको लिखा था—"मैंने २४ घंटेके भीतर तैमूरके वंशवालोंका काम तमाम कर दिया। मैं कठोर नहीं हूं। पर यह स्वीकार करता हूं कि पृथ्वीसे इन नर-पिशाचोंको उठा देनेके कारण मुझे प्रसन्नता हुई है।" ×× हडसन

* Malleson's Indian Mutiny Vol. II P. 80

साहब इस नरहत्यासे प्रसन्न हुए थे, अपनेको इनका घातक कहकर वे गर्व करते थे। न उन्हें इससे किसी तरहका कष्ट ही हुआ और न इसके लिये पश्चात्ताप ही किया। पर उनसे अधिक सीधे हृदयवाले अधिकारी उनसे सवाल कर सकते थे। उन सवालोंके लिये उन्होंने दो जवाब बना रक्खे थे। पहला तो यह कि वे क्रोध या हिंसाके वश न थे और दूसरा यह कि यदि वे शाहजादोंको न मारते तो उनके आदमी उन्हें मार डालते। पर सेनापति विलसनने कभी इस बातका आश्वास नहीं दिया कि शाहजादोंको विना विचार इस तरह मारा जाय। शायद उन्होंने उनकी गिरफ्तारीकी आज्ञा देते समय यही विचार किया था कि शाहजादोंको दीवानी विभागके सुपुर्द करेंगे। दूसरा कारण और भी हीन है। दिल्लीके आदमी उस समय अंग्रेजोंके सामने हीन हो गये थे। सेनानायककी आज्ञासे हुमायूंके मकबरेमें उन्होंने हथियार डाल दिये थे। इससे भी उनकी कमजोरी साबित होती है।

"× × सत्य बात यह है कि दिल्लीपर अधिकार करनेपर जब हमारे आदमियोंका खून उबल उठा था, वे विद्रोहियोंके अत्याचारोंकी बातें सुनते सुनते क्रोधके मारे अपने आपेमें न थे, इस दशामें उन्होंने ऐसे घृणित काम किये। जिन कामोंको उन्होंने अशान्तिके समय किया उन कामोंकी याद उन्हें शान्तिके समय दुःखी करती थी। कप्तान हडसनका विश्वास था कि इस कामके कारण सम्पूर्ण अंग्रेज़ जाति मेरी प्रशंसा करेगी, पर मैं

निस्सन्देह कह सकता हूं कि इंगलैंडके लोगोंने इसपर घृणा और दुःख प्रगट किया था। मैंने किसीको इसका अनुमोदन करते नहीं सुना।"*

इतिहास लेखक मार्टिनने भी इसका अनुमोदन नहीं किया।† यह पहलेही कहा जा चुका है कि इस सेनाके साथ लार्ड राबर्ट भी थे। उन्होंने लिखा है—"मैं और लोगोंके साथ दिल्लीके बादशाहको देखने गया था। मुझे मालूम हुआ कि वे बड़ी दुर्दशामें हैं। वापिस आते हुए रास्तेमें पड़े बादशाहके दो बेटे और एक पोतेकी लाश देखकर मैं चमक उठा। वे कोतवालीके सामने जमीनपर पड़े थे।"‡

उस समय अंग्रेज़ क्रोधके मारे पागल हो गये थे। एक अंग्रेज़ी अखबारने लिखा था—"औरतों और बच्चोंकी जीवन-रक्षाकी आज्ञा देकर सेनापतिने बड़ी गलती की। हिन्दुस्तानी आदमी नहीं, राक्षस या कुत्ते हैं। इन्हें कुत्तोंकी तरह मार डालना ही अधिक उपयुक्त है।" २१ नवम्बरको दिल्लीकी जो दशा हुई थी, उसका वर्णन इसने इस प्रकार किया है—"तमाम विद्रोही दिल्लीसे चले गये थे। हमारे सैनिकोंके अलावा बहुत कम आदमी शहरमें दिखाई देते थे। जब हमारी सेना शहरमें

* Kaye's Sepoy War. Vol. III. P. 652-654.

† Martin's Indian Empire. Vol. II P. 449.

‡ Lord Robert's Forty-one years in India Vol. I P. 249.

† Martin's Indian Empire, Vol. II. P. 449.

घुसी तब जो मर्द मिला वही संगीन घुसेड़कर मार डाला गया। किसी किसी घरमें चालीस चालीस पचास पचास आदमी छिपे थे। इससे समझा जा सकता है कि मरेहुओंकी तादाद कितनी होगी। वे लोग विद्रोही नहीं बल्कि शान्त दिल्ली-निवासी थे। इन लोगोंको आशा थी कि हम इन्हें हर तरहसे क्षमा करेंगे, अभय करेंगे। पर इन लोगोंकी आशा धूलमें मिल गई। विजयी ब्रिटिश सैनिकोंने दो दिन दिल्लीमें खूब मनमानी की। आदमियोंको मारना और चीजें लूटना उनका प्रधान काम था। एक प्रत्यक्षदर्शी अंग्रेजने लिखा था कि, चांदनी चौककी छोटी मसजिदमें खड़े होकर जिस दिन नादिरशाहने दिल्लीवालोंको मरते देखा था उसके बाद गदरके जमानेमें फिर अंग्रेजोंने वैसा ही कतलेआम किया।"*

---

* इस समय दिल्लीकी बहुत अधिक सम्पत्ति लूटी गयी थी। एक देखनेवाले अंग्रेजने लिखा है कि एक २ गोरा सिपाही दस दस हजारका माल लेकर इंगलैण्ड गया (Indian Empire Vol II.P. 449 note) लार्ड रावर्टने लिखा है "मैं जब घोड़ेपर चढ़कर काश्मीरी दरवाजेकी ओर जा रहा था तब एक स्थानपर देखा कि डोली है और कहार नहीं हैं। मैंने समझा कि इसमें जरूर कोई घायल होगा। उतर कर देखा तो उसमें घायल ब्रिगेडियर जान निकल्सन थे। उन्होंने मुझसे कहा कि कहार मुझे छोड़कर लूटने चले गये। मुझे अस्पताल पहुंचाओ तकलीफ बढ़ रही है। घाव उनकी कमरमें था इसलिए मुझे दिखाई न दिया। मैंने पूछा,क्या घाव गहरा है? उन्होंने कहा मैं मर रहा हूं, मेरी कोई आशा नहीं। मुझे बड़ा दुःख हुआ। मुझे मालूम हो रहा था कि बिना निकल्सनके हम सब कुछ खो देंगे। डोलीके कहार पासके घरों और दूकानोंको लूट रहे थे। मैंने किसी तरह चार

अंग्रेज़ोंके स्त्री बच्चे और देशवासी मरे थे और उनका बदला लेनेके लिये अंग्रेज़ोंने हिन्दुस्तानियोंको मारा और उनकी सम्पत्ति लूटी। संसारके इतिहासमें यह बात नई नहीं है। मनुष्यकी प्रकृति ही ऐसी है। मनुष्य क्रोधित होकर अपने अपकार करनेवालेका सर्वनाश करना चाहता है। पर साधारण मनुष्यत्व अंग्रेज़ों और भारतवासियोंमें समान है। जैसे अपनी जान जोखोंमें डालकर भी भारतवासियोंने अंग्रेज़ोंको बचाया था वैसे ही उदारप्रकृति अंग्रेज़ोंने भी अपने देशवासियोंके गर्हित कामोंकी निन्दा की थी। भले बुरे दोनोंमें थे। हम मनुष्य हैं, इस बातको कभी न भूलना चाहिये। अंग्रेज़ और भारतवासियोंमें समान पुरुष हैं।

दिल्लीके निवासी बेहद सताये गये। इतने सताये गये कि इतिहासमें हमें दो चार ही वैसे उदाहरण मिलते हैं। कई स्थानोंपर मर्दोंने अपनी बहनों, बेटियों और स्त्रियोंको इसलिये मार डाला था कि वे अंग्रेज़ सैनिकोंके हाथ पड़कर धर्मभ्रष्ट होंगी। एक प्रत्यक्षदर्शीने लिखा है कि मैंने चौदह औरतोंकी लाशें देखीं। हरएक स्त्रीकी गर्दन धड़से बिलकुल अलग हो गई थी। एक आदमीको पकड़कर मैंने पूछा। उसने कहा कि पीछेसे थे आपलोग फिरंगियोंके हाथ न पड़ें इसलिए इनके मालिकोंने

डाढ़ार एकाव करके एक सार्जेटके साथ फौजी अस्पतालको रवाना किया। निकल्सनसे मेरी यही अन्तिम भेंट थी।" Lord Robert's. Forty-one years in India Vol. I. P. 236.

इन्हें मार डाला। यह कह कर उस आदमीने उनके मालिकों-की लाशें भी दिखा दीं। मालिकोंने अपनी औरतोंको मारकर पीछेसे अपने गले काट लिए थे।* इससे मालूम हो सकता है कि दिल्लीवासियोंको कितना भय था और अंग्रेजोंको वे क्या समझते थे। दिल्लीके कमिश्नर ग्रिथेड साहबने अपनी स्त्रीको जो पत्र लिखा था उसमें उन्होंने दिल्लीकी हालतका इस प्रकार वर्णन किया था —"जो बादशाहको अपनी और अपने परिवारकी जान बचानी थी तो उन्हें किलेको हमारे सुपुर्द कर देना था। यदि ऐसा होता तो मैं हत्याकांडको रोकता। बहुतसी औरतोंने हमारी दयापर भरोसा करके आत्मसमर्पण किया था हमने इनको दूसरी जगह जानेकी आज्ञा दी। इनमें बच्चे और बूढ़े थे जिनसे चला भी न जाता था।"†

विद्रोही सिपाहियोंके हाथसे दिल्लीके अंग्रेज मारे गये और अंग्रेजी सैनिकोंके हाथ दिल्लीवाले मारे गये। पुराने जमानेसे दिल्लीवालोंपर बार २ इस तरहके अत्याचार हुए हैं। किसके जुल्म और किसकी दयाका वर्णन किया जाय। अन्तमें हिन्दू-मुसलमान और ईसाई सब नश्वर शरीर त्यागकर परमात्माके सामने इस न्याय अन्यायका विचार कराने चले गये। संसारमें इतिहास-की धारा उसी प्रकार बहती रही।

दिल्लीपर अंग्रेजोंका कब्जा हो गया। तमाम विद्रोह अंग्रेजोंके

* Indian Empire Vol. II P. 460.

† Greathed's Letters P. 284.

रास्तेसे हट गये। बूढ़े बादशाह अंग्रेज़ोंके कैदी बने। दिल्ली-के अधिकांश मकान टूटकर खंडहर हो गये। सैनिकोंने लूटकर सबको दिवालिया बना दिया। सर टामस मटकाफ मजिस्ट्रेट बने। ये महीनों तक लोगोंको फांसियां देते रहे। अबतक दिल्ली और मुगल बादशाहका नाम विद्रोही सिपाहियोंका अवलम्ब था। वह समाप्त हुआ। सिपाहियोंका मोह टूटा। उन्हें ज्ञान हुआ कि उनकी शक्ति क्षुद्र है। अंग्रेज़ोंको इस सफलतामें बहुत हानि उठानी पड़ी। उनके ३८३७ सैनिक इस लड़ाईमें मरे, घायल और लापता हुए। उनका करीब ६१ लाख रुपया दिल्ली लेनेमें खर्च हुआ। इसके अलावा प्रसिद्ध सेना संचालक जान निकल्सन मरे। अंग्रेज़ोंको अपने इस सेनापतिके मरनेका बहुत दुःख हुआ। १४ सितम्बरको घायल होकर २३ सितम्बर-को वे मरे। दिल्ली लेनेकी अंग्रेज़ोंको जितनी खुशी थी उतना ही निकल्सनकी मौतका गम था। नगरके बाद नगर, देशके बाद देश यह समाचार पहुंचा कि दिल्ली फतह हो गई। बादशाह कैद हो गये। निकल्सन मर गये। इस समाचारसे हर स्थानके अंग्रेज़ प्रसन्न हुए और साथ ही दुःखकी आह निकली।

* Martin's Indian Empire Vol II P. 450

सातवाँ अध्याय
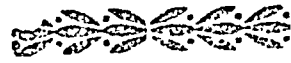
लखनऊपर चढ़ाई—सेनापति हावेलकी लखनऊ यात्राकी तैयारी—उन्नाव और बशीरगंजकी लड़ाइयाँ—हावेलका वापिस कानपुर लौटनेका इरादा—सेनापति नीलकी विरक्ति—फिर हावेलकी लखनऊ यात्रा—बशीरगंजकी दूसरी लड़ाई—हावेलका फिर वापिस कानपुर लौटना—फिर लखनऊपर चढ़ाई—बशीरगंजकी तीसरी लड़ाई—हावेलका फिर कानपुर लौटना—बिठूरकी लड़ाई—हावेल आउट्राम और नीलकी लखनऊ यात्रा—लखनऊकी छोटी २ लड़ाइयाँ—सेनापति नीलकी मृत्यु ।

दिल्ली विद्रोही सिपाहियोंका प्रधान स्थान था । हर स्थानके सिपाही उठ उठकर दिल्ली गये थे । दिल्लीके बादशाहके नामपर सब उठ खड़े होते थे । उनमें उत्साह भी आजाता था । बादशाहके नामपर वे स्वाधीन बनकर काम करते थे । पर दिल्ली सिपाहियोंके हाथसे निकल गई । बूढ़े बादशाह अंग्रेजोंके कैदी बन गये । दिल्लीमें उनके उत्साहकी कोई चीज न रही । इसलिये उन्होंने दिल्ली त्याग की । इनमेंसे अधिकांश नवाब वाजिदअली शाहकी राजधानी लखनऊकी ओर गये । एक तो लखनऊमें सिपाहियोंकी संख्या अधिक थी दूसरे लखनऊ और अवध प्रदेश उनके साथ था ।

दिल्लीके चली जानेसे लोगोंको अंग्रेज़ोंकी ताकतका ज्ञान हुआ। पर गदरका बहता सोता इससे न रुका। सिपाहियोंकी सबसे बड़ी तादाद लखनऊमें थी। प्रजा भी विद्रोही हो रही थी। स्थान स्थानपर विद्रोही नेता उनका संचालन कर रहे थे। बरेलीमें खां बहादुरखां राज्य कर रहे थे। फरूखाबादमें नवाब साहब कर्त्ता-धर्ता थे। कुंवरसिंहके पराक्रमसे सम्पूर्ण बिहार और पश्चिमोत्तर प्रदेश हिल रहे थे। झांसीकी महारानी लक्ष्मीबाई अंग्रेज़ी राज्यके नाशके लिये खड़ी हो गई थीं। तांतियातोपी अपनी सेना लेकर अंग्रेज़ी फौजोंपर हमला कर रहा था। मध्यप्रदेश और बम्बई प्रेसीडेंसीमें लोगोंको अंग्रेज़ी राज्यपर विश्वास नहीं रह गया था। स्थान स्थानपर सिपाहियोंके गरोह बन गये थे। स्थान स्थानकी प्रजा उनकी सहायक बनी थी। इस इतिहासको पढ़ते पढ़ते पाठक गदरकी चाल और घटना अच्छी तरह समझ गये होंगे। बार बार उसीका वर्णन करना व्यर्थ है। वीर कुंवरसिंहके समान तांतियातोपी और महारानी लक्ष्मीबाईकी कथा भी वर्णनके योग्य है। वह आगे चलकर लिखी जायगी। इस समय लख-नऊकी चढ़ाईका वर्णन संक्षेपसे यहाँ कहा जायगा।

जिस समय दिल्ली फतह हुई तब अंग्रेज़ लखनऊकी रेजी-डेंसीमें घिरे हुए थे। इनकी सहायताके लिये सेनापति हावेल और आउट्राम २५ सितम्बरको लखनऊ पहुंचे। पाठकोंने कानपुर-के वर्णनमें पढ़ा है कि सेनापति हावेल २१ जुलाईको कानपुरसे लखनऊके लिये चले थे। इस २१ जुलाईसे २५ सितम्बरतककी

घटनाओंका वर्णन, इस सेनाके मार्गमें किस किस प्रकारकी कठिनाइयां आईं उनकी कथा, इस अध्यायके वर्णनका विषय है। २१ जुलाईको प्रातःकाल वर्षा हो रही थी। इसी कारण गंगा चढ़ावपर थीं। इस दुर्दिनमें हावेलकी कुछ सेना और थोड़ी तोपें एक स्टीमरकी सहायतासे गंगा पार हुईं। तमाम सेनाके उतरनेमें चार दिन लगे। २४ जुलाईको सम्पूर्ण सेना और सामानके साथ कूच करके सेनापति हावेल, लखनऊके रास्तेमें मंगलोया नामक स्थानपर पहुंचे। गाड़ियों और रसदके लिये इस जगह सेनापतिको चार दिन रुकना पड़ा। सामान लेकर वे २६ जुलाईको उन्नावकी ओर चले। जब वे तीन मील आगे पहुंचे तब सामने विद्रोही सिपाही नजर आये। जिस जगह हावेलकी सेना थी उसके दाहिनी ओर तमाम जमीन पानीसे भरी थी और बाईं ओर आमके बाग थे। ये बाग कच्ची मिट्टीकी दीवारोंसे घिरे थे और दीवारें बस्तीतक चली गई थीं। इन्हींके सहारे एक पतला रास्ता उन्नावकी ओर गया था। गांवमें सिपाही थे और वे अंग्रेजोंपर वार करनेके लिये तैयार थे। अवस्था देखकर सेनापति साहसके साथ आगे बढ़े। उन्होंने सिपाहियोंको पीछे हटाया पर उन्नाव कब्जेमें न रख सके। सिपाहियोंने बड़े जोरका हमला किया जिससे १५ तोपें निकम्मी हो गईं।

वापिस लौटकर सेनापतिने सेनाको विश्रामकी आज्ञा दी। खाना पीना होने लगा। बाकी तोपें साथ न चलती देखकर सेनापतिने उन्हें निकम्मी कर दीं। खाने पीनेमें तीन घंटे लगे।

खा पीकर वे फिर चले। जब वे छः मील रास्ता पार कर गये तब उन्हें कच्ची दीवारोंसे घिरा एक गांव दिखाई दिया। इसका नाम बशीरगंज है। इसके सामने एक झील थी जो बर्सातो पानीसे भर गई थी। इस परसे पार होनेके लिये एक कच्चा पुल था। गांवके मुहानेपर मिट्टीके टीले बनाकर, चार तोपें रक्खी थीं। सिपाही अंग्रेजोंको आगे बढ़नेमें बाधा देने लगे। पर वे कामयाब न हुए। अंग्रेजी सेना सिपाहियोंको पीछे हटाकर आगे बढ़ी। सिपाहियोंने वह पुल तोड़कर आत्मरक्षा की। उन्नाव और बशीरगंज दोनों स्थानोंपर हावेलके सैनिक विजयी हुए पर सेनापतिको अपनी जीत भी हारके समान मालूम हुई क्योंकि उनके पास पैदल सनिक साढ़े आठ सौ ही रह गये थे। घायल और बीमारोंको ले चलनेका कोई साधन न था। इतनी सेना भी न थी कि इन्हें योग्य रक्षकोंकी अधीनतामें कहीं छोड़ दिया जाय। फिर वे यह भी जानते थे कि लखनऊके रास्तेमें उन्हें और भी कई स्थानोंपर संग्राम करना होगा। फिर सूर्यकी तीखी धूप, लगातार वर्षा और बुखार तथा हैजेसे सेना सुस्त हो रही थी। इधर नानासाहबके सवार कानपुर वापिस लौटनेका रास्ता रोक रहे थे। इस प्रकार तरह तरहके विघ्न देखकर सेनापतिने कानपुर वापिस लौटनेका इरादा किया। वे ३० जुलाईको उन्नाव और उसके दूसरे दिन मंगलोया वापिस आये। इस स्थानसे उन्होंने बीमारों और घायलोंको कानपुर भेज दिया। यहींसे उन्होंने सेनापति नीलको लिखा कि उन्हें लखनऊपर चढ़ाई

करनेके लिये एक हजार पैदल सैनिकोंके साथ तोपें और गोलन्दाज सेनाकी आवश्यकता है।

कानपुरके वर्णनमें यह आ चुका है कि सेनापति नील कानपुर-में शान्ति स्थापनके लिये नियुक्त थे। उनके साहस और उद्धत प्रकृतिकी बात इलाहाबाद और कानपुरके वर्णनमें आ चुकी है। सेनापति हावेलका पत्र इस उद्धत सेनापतिके पास पहुंचा। इससे नील बहुत ही खीझे। वे समझने लगे कि जब सेनापति हावेल आगेसे पीछे हट आये तब सर्वसाधारणको उनकी जय-में सन्देह होगा। सेनापतिकी सहायताके लिये एक सेना और कुछ तोपें भेजी गईं पर साथ ही नीलने हावेलको कठोर भाषा-में एक पत्र भी लिखा। उत्तरमें हावेलने नीलको लिखा कि उन्होंने अपने जीवनमें कभी ऐसा कठोर पत्र नहीं देखा।* खैर, हावेलको विश्वास था कि उनकी सहायताके लिये कलकत्तासे दो दल सेना आवेगी। पर पश्चिमोत्तर प्रदेशके समान बिहारमें गदर हो रहा था और कुंवरसिंह गदरके नेता थे। जिन अंग्रे-ज़ी सेनाओंका हावेलको विश्वास था वे बिहारमें शान्ति स्था-पित करनेके काममें लग गई थीं। हावेलको कानपुरसे जो सेना और तोपें मिलीं वे लेकर उन्हें ४ अगस्तको फिर आगे बढ़े। उन्हें समाचार मिला कि विपक्षी सिपाही युद्धके लिये फिर बशीरगंजमें तैयार हैं। यहां फिर अंग्रेज़ी सेनासे सिपाहियोंका संग्राम हुआ। फिर सिपाही हारकर पीछे हटे। पर सिपा-

*Mallson's Indian Mutiny Vol. I P. 502 note

हियोंके हारनेसे भी अंग्रेज़ सेनापतिका उद्देश्य सिद्ध न हुआ। सेनापतिने अपने गोलंदाज अध्यक्षको १५ तोपें निकम्मी करनेकी आज्ञा दी थी। पर उनमें दो तोपें कामको रह गई थीं जिन्हें वे इस लड़ाईमें काममें लाये। सिपाहियोंको जीतनेमें उनका एक चौथाई गोला बारूद खर्च हो गया। इधर सेनामें हैजा शुरू हो गया। रास्तेमें सई नामक एक गहरी नदी थी तथा तीन स्थानोंपर सिपाही युद्धके लिये जमा थे। ग्वालियरकी सेना महाराजकी आज्ञा न मानकर कालपीकी ओर आ गई थी। कालपी कानपुर-से ४६ मील दक्षिणपश्चिम है। इस स्थानसे सहजमें कानपुर-पर हमला हो सकता था और कानपुरसे इलाहाबादका रास्ता रुक सकता था। यह सब बातें सोचकर सेनापतिने फिर कानपुर वापिस जानेका इरादा किया। उन्होंने सब बातोंको बड़ी बारीकीसे सोचा था। इस समय बरसातके कारण सब जगह पानी ही पानी हो गया था। हाथी ऊंट और गाड़ियाँ बड़े कष्टसे एकत्र होती थीं। रास्तेमें कई जगह विद्रोही सिपाही जमा थे। फिर हैजाके कारण सेनापतिकी शक्ति क्षीण हो गई थी। फ़र्रुखाबादके नवाबने बहुतसे सिपाही जमा करके अंग्रेज़ोंसे युद्धकी तैयारी कर रखी थी। दक्षिणकी ओर ग्वालियरकी सेना कानपुरकी ओर बढ़ रही थी। लखनऊका उद्धार करना आवश्यक था पर ऐसी हालतमें चारों ओरसे घिरकर थोड़ी सी सेनाके साथ आगे बढ़ना सेनापति हावेलको उचित न मालूम हुआ। इन्हीं कारणोंसे वे फिर कानपुरके लिये वापिस लौटे।

सेनापति वापिस मंगलोया लौटे। तमाम सेनाके एकत्र होनेमें चार दिन लगे। यहांसे वे वापिस गंगा पार करनेकी तैयारी करने लगे। यहां उन्हें समाचार मिला कि बशीरगंजमें युद्धके लिये फिर सिपाही एकत्र हो गये हैं। इनका एक दल उन्नावकी ओर बढ़ आया है और वे जब गंगा पार करेंगे तब लड़ेंगे। इसलिये सेनापति सिपाहियोंको भगानेके लिये फिर लखनऊकी ओर आगे बढ़े। उन्नावसे फिर सिपाहियोंको भगा दिया। बशीरगंजमें फिर तीसरी बार चढ़ाई हुई। १२ अगस्तको उन्होंने आगे बढ़कर देखा कि सिपाही बशीरगंजके सामने मिट्टीकी दीवारोंकी आड़में खड़े हैं। इस लड़ाईमें सिपाही हारकर भाग गये। सेनापति १३ अगस्तको गंगा पार हुए। दो दिन उन्होंने सैनिकोंको आराम करने दिया। बशीरगंजमें फिर तीसरी बार लड़ाई हुई। १२ अगस्तको उन्होंने आगे बढ़कर देखा कि सिपाही बशीरगंजके सामने मिट्टीकी दीवारोंकी आड़में खड़े हैं। इस लड़ाईमें सिपाही हारकर भाग गये। सेनापति १३ अगस्तको गंगापार हुए। दो दिन उन्होंने सैनिकोंको आराम करने दिया। तीसरे दिन १६ अगस्तको सौ सैनिक नीलके पास छोड़कर बाकीको लेकर वे बिठूरकी ओर रवाना हुए। यहां भिन्न २ सेनाओंके बहुतसे सिपाही थे, नानासाहबके नौकर दो तोपें लिये हुये इनमें थे। उस समय करीब चार हजार हथियारबन्द आदमी अंग्रेज़ी सेनाके विरुद्ध खड़े हुए थे। जब सेनापति हावेलने इनपर हमला

किया तब ये वीरताके साथ लड़े। इन्होंने बड़ी वीरतासे अपनी तोपोंकी रक्षा करके अंग्रेज़ी सेनाका व्यूह छेदा था। अंग्रेज़ी सेनाको भी इनके साहसकी प्रशंसा करनी पड़ी। पर अन्तमें वे हार गये। हारकर वे भाग निकले। १७ अगस्तको सेनापति वापिस कानपुर आये। यहां ५ अगस्तको कलकत्तामें गजट उनके हाथ पड़ा। उसमें गवर्मेंटने सर जेम्स आउट्रामको लखनऊके उद्धारके लिये प्रधान सेनापति बनाया था।

शायद लार्ड कैनिंगको हावेलके वापिस लौटनेसे दुःख हुआ था। पर यदि वे घटनाका पूर्वापर अवस्था देखते तो हावेल-को यों लज्जित न करते। खैर, जो कुछ हो, जनरल आउट्रामको इस विषयमें अधिक कष्ट न हुआ। वे १ अगस्तको कलकत्ता आये थे। इसके चार दिन बाद अवधके प्रधान कमिश्नरके पदपर नियुक्त हुए। शीघ्र वे कलकत्तासे चले। १६ सितम्बरको वे कान-पुर पहुंचे। गवर्मेंटने उन्हें सेनापतिके पदपर प्रतिष्ठित किया था पर उन्होंने देखा कि इस पदको ग्रहण करनेसे सेनापति हावेलको मानसिक कष्ट होगा। इसलिये उन्होंने शीघ्र ही विज्ञापन दिया कि सेनापति हावेलके कामोंसे वे सन्तुष्ट हैं। वे दीवानी विभागके कर्मचारीकी हैसियतसे लखनऊ जायंगे और सेनापति हावेलकी सहायता करेंगे। आउट्रामके इस स्वार्थ-त्यागसे प्रधान सेनापतिने प्रसन्नता प्रगट की।

लखनऊके उद्धारके लिये जो सेना तैयार हुई थी उसके प्रधान सेनापति हावेल ही रहे। आउट्राम उनके सहायक बने।

एक दल सेनाका अधिकार सेनापति नीलको दिया गया। इस प्रकार तीनों वीर सेनापति लखनऊके उद्धारके लिये चले। गंगा पार करनेके लिये नावोंका पुल तैयार होने लगा। १६ सितम्बरको पुलका काम समाप्त हुआ। इसी दिनसे सेना गंगा पार करने लगी। दूसरे दिन तोपें उतरीं। २१ सितम्बरको गंगाके दूसरे किनारेसे चलकर सेना मंगलोया पहुंची। इस स्थानपर विद्रोही सिपाही थे। वे एक छोटी सी लड़ाई करके भाग गये। फिर सैनिक उन्नावमें थोड़ी देर ठहरकर बशीरगंज पहुंचे। पानी बराबर बरस रहा था, पर इस दशामें भी १६ मील रास्ता पार करके वे बानों नामक गांवमें पहुंचे। बानोंसे लखनऊ जाते हुए सई नदी पार करनी पड़ती है। नावपर ईंटोंका पुल था इसलिये नदी पार करनेमें कोई कठिनाई न हुई। यहांसे सैनिक आलमबागकी ओर बढ़े। इस बड़े बागमें सिपाही छः तोपें लगाये पड़े थे। २३ सितम्बरको थोड़ी देर आराम करके ब्रिटिश सैनिक इसकी ओर बढ़े। सेनापति नीलने बराबरके गाँवसे सिपाहियोंको भगाया। सिपाही आलमबाग और उसके पासके एक मकानमें डटकर अंग्रेजी फौजका मुकाबिला करने लगे। पर अन्तमें इस स्थानसे भी उन्हें भागना पड़ा। शाम हो जानेके कारण सेनापति हावेलकने सेनाको विश्राम करने दिया। अपनी तोपें ठीक स्थानोंपर लगाकर वे आराम करने लगे। पर इसी समय उनमें गड़बड़ मची। सिपाही नई तोपें लाकर बड़े उत्साहसे उनपर गोले बरसाने लगे। चारों ओर

अन्धेरा हो गया था। रास्तेमें हाथी घोड़े और बैल खड़े थे। एक बार अंग्रेज़ी सेना हैरान हुई। पर सिपाहियोंको फिर भी सफलता प्राप्त न हुई। एक दल गोरी सेना घुटने भर कीचड़ पार करके चारों ओरसे रक्षा करने लगी। इस समय पानी बरसना बंद हुआ। इसी समय खबर आई कि दिल्ली फतह हो गई और बादशाह कैद हो गये। यह समाचार मिलते ही अंग्रेज़ी सेनाने लखनऊके आगे तोपें चलाकर खुशी जाहिर की। दूसरे दिन उन्होंने आराम किया। आलमबागमें उनका सामान रहा। ढाई सौ सैनिक उसकी रक्षापर रहे।

२५ सितम्बरको सवेरे हावेलने आउट्रामसे सलाह करके, सीधा रास्ता छोड़कर, जरा घूमकर रेजीडेंसीकी ओर यात्रा की। जब वे चारबागके पास पहुंचे तब सिपाहियोंने बड़े ज़ोरसे उनपर हमला किया। चारबागके पुलके दूसरे हिस्से-पर तोपें जमाकर वे अंग्रेज़ी सेनापर इस ज़ोरसे गोले फेंकने लगे कि अंग्रेज़ी तोपें निकम्मी हो गईं। सेनापति हावेलके बेटेने देखा कि पुलके पास उसके पिता या सेनापति आउट्राम-मेंसे कोई भी नहीं है। वह शीघ्र अपने पिताके पास गया और दो मिनिटमें वापिस आकर सेनापति नीलसे कहा कि सेनाको पुलकी ओर बढ़नेकी आप आज्ञा दें। सेनापति नीलकी आज्ञासे बरसती गोलियोंमें पचीस गोरे सैनिक आगे बढ़े। पर चार मिनिटमें पचीसों जमीनपर लोट गये। सेनापति हावेलका पुत्र भी मारा गया। आगे बढ़कर सेनापति हावेलने अपनी तल-

वार ऊंची करके अपने सैनिकोंको आज्ञा दी कि, आगे बढ़ो। अंग्रेज़ी सेना गोलोंकी बरसातमें आगे बढ़कर पुल पार कर गई। इस बढ़ी हुई सेनाने संगीनोंसे सिपाहियोंके पेट फाड़ दिये। सिपाहियोंकी तमाम तोपोंपर कब्ज़ा कर लिया। अब ब्रिटिश सेना बड़े वेगसे लखनऊ शहरमें घुसी।

वहांसे हटकर सिपाही कैसरबागमें जमा हुए। वहांसे बंदूकोंकी मारसे वे फिर अंग्रेज़ी सेनाको हानि पहुंचाने लगे। चारबागमें बहुत सिपाही मारे गये थे, फिर भी वे पुलके पासका एक नाला पार करके छत्रमंज़िल और फरीदबक्स नामक महलोंसे अंग्रेज़ी सेनापर वार कर रहे थे। सेनापति आउट्रामने पीछेकी सेनाके आनेतक अगली सेनाको रोकनेका प्रस्ताव किया। पर सेनापति हावेलकने यह प्रस्ताव न मानकर अपनी सेनाको रेजीडेंसीकी ओर बढ़ाया। इससे पहले सेनापति आउट्रामकी बांहमें गोली लगी थी। खून रोकनेके लिये उन्होंने रूमाल कसकर बांध लिया था। एक अफसरने उनसे कहा कि घोड़ेसे उतरकर पट्टी बांध लें। आउट्रामने कहा कि जबतक रेजीडेंसीमें न पहुंचेंगे तबतक योंही रहने दो। रेजीडेंसीमें पहुंचनेके लिये हाईलेंडर गोरी सेना सबसे आगे रक्खी गई। उनके पीछे सिक्ख सेना और उसके बाद मद्रासी सेना। इस तरह व्यवस्थित होकर अंग्रेज़ी सेना शहरकी पतली गलीमेंसे रेजीडेंसीकी ओर बढ़ी। गलीके दोनों ओरके मकानोंमें सिपाही छिपे थे। जब अंग्रेज़ी सेना खास बाजारके मुहानेपर पहुंची

तब सिपाहियोंने दोनों ओरसे गोलियोंकी बौछार की। सबसे आगे सेनापति नील अपनी सेनाको बढ़ा रहे थे। बाजारके भीतर घुसकर उन्होंने अपने घोड़ेकी बाग रोककर कहा कि, तोपें दूसरे रास्तेसे चली गईं उन्हें वापिस लाओ। यह कह कर सेनापतिने मुंह मोड़कर देखा कि तोपें आ रही हैं या नहीं। इसी समय दरवाजेके ऊपरसे एक सिपाहीने उनके सिरमें गोली मारी। उनके मगजमें गोली घुस गई। सेनापति घोड़ेसे गिर पड़े। उसी समय जान निकल गई। पर सेनापतिके मरनेसे सेना न रुकी। सेनापति हावेल और आउट्रामने बरसती गोलियोंके भीतर आगे बढ़नेका हुक्म दिया। अन्तमें मरते मारते ये लोग २५ सितम्बरकी शामको रेजीडेंसीमें जा पहुंचे। इनके पहुंचनेसे रेजीडेंसीके घिरे हुए अंग्रेज़ोंको कितनी खुशी हुई सो वर्णन की जा चुकी है। पीछेकी सेना दूसरे दिन सवेरे रेजीडेंसीमें आई। अपने तमाम घायलोंको लेकर बाकी सेनाके साथ कर्नल नेपियर (बादमें लार्ड) रेजीडेंसीमें पहुंचे। इस तरह विघ्नों और विपत्तियोंको पार करते हुए हावेल और आउट्रामकी सेना लखनऊ रेजीडेंसीमें पहुंची। रास्तेमें उनके बहुतसे सैनिक हैजे और बुखारसे मर गये थे और बहुतसे सिपाहियोंसे लड़नेमें काम आये। सेनापति नीलका भी इस लड़ाईमें देह-पात हुआ।

आठवाँ अध्याय

पश्चिमोत्तर प्रदेश और आगरा व अवध—सेनापति ग्रिथेडकी दिल्लीसे रणयात्रा--गाजीउद्दीन—बुलन्दशहर--मालघर--खुर्जा--मौनी संन्यासी--अलीगढ़--अकबराबाद--आगरा-मैनपुरी--आउट्रामका पत्र-काली नदीके किनारे लड़ाई—प्र० सेनापति काम्पवेलकी रणयात्रा-खजुहाकी लड़ाई—प्र० सेनापतिका अवधमें प्रवेश--जंगबहादुर--प्र० सेनापतिका लखनऊ प्रवेश--सेनापति हावेलकी मृत्यु--प्र० सेनापतिकी कानपुरयात्रा।

सेनापति विलसन बीमार हो गये थे। दिल्ली फतह करनेके बाद वे अपनी तन्दुरुस्ती सुधारने शिमला चले गये। दिल्लीसे जानेके पहले उन्होंने गंगा यमुनाके बीचके प्रदेशसे विद्रोही सिपाहियोंको निकालनेके लिये सेना भेजनेका प्रबन्ध किया। ७५० गोरे और १६०० हिन्दुस्तानी सिक्ख तथा गोर्खे तैयार किये गये। लेफ्टिनेंट कर्नल ग्रिथेड इनके सेनापति बने। २४ सितम्बरको सवेरे यह सेना दिल्लीसे रवाना हुई। इस समय दिल्ली और उसके आस पासके गांव श्मशान हो गये थे। घर मकान फूटे खंडहर हो गये थे, चीज़ें लुट गई थीं, जगह २ मुर्दे पड़े थे, कहीं आदमीकी सूरत दिखाई न देती थी, कहींसे कोई आवाज़ सुनाई न देती थी, दिनके बारह बजे बस्तियोंमें आधीरातके समान सन्नाटा

था। मुर्दोंके सड़नेसे हर गली और घरमें बदबू हो गई थी, कुत्ते मुर्दोंको चीरते और खाते थे। यह हालत दिल्लीकी थी। जो सैनिक ग्रिथेडके सेनापतित्वमें जा रहे थे उन्हें अपने पैरोंकी आवाजके अलावा कोई आवाज़ नहीं सुनाई पड़ती थी। यह श्मशानके समान दृश्य देखकर सैनिक भी चौंक उठे थे।

दिल्लीके नगर रूपी श्मशानसे निकलकर सैनिक जब खुली हवामें गये तब उन्हें कुछ प्रसन्नता हुई। ग्यारह मील चलकर वे गाजीउद्दीन नामक स्थानपर पहुंचे। यहांसे सिपाही चले गये थे। जिस दिन दिल्ली फतह हुई उससे दूसरे दिन यहाँपर कुछ अंग्रेज़ सिविलियन आये थे। इनमें बुलन्दशहरके सहायक मजिस्ट्रेट लायल भी थे। अंग्रेज़ी सेनाके साथ ये सिविल कर्मचारी वापिस अपने २ कामोंपर चले। २८ सितम्बरको कर्नल ग्रिथेड बुलन्दशहरकी ओर चले। आगेका सैनिक दल शामको एक चौरास्तेपर पहुंचा। इस चौरास्तेसे एक रास्ता बुलन्दशहरकी ओर और एक मालघरकी ओर गया था इस जगहपर सिपाही सवार थे। अंग्रेजी सेनाका पहला दस्ता बुलन्दशहर पहुंचते न पहुंचते ये लोग वहांसे चले गये। सेनापति ग्रिथेडने बुलन्दशहरपर हमला किया। इस युद्धमें अंग्रेज़ी सवार और गोलंदाज ही थे। थोड़ी देरकी लड़ाईके बाद सिपाही भाग गये। इस थोड़ी देरकी लड़ाईमें तीन सौ विद्रोही सिपाही मारे गये। अंग्रेज़ी सेनाके ४७ मरे तथा घायल हुए। सिपाहियोंकी तीन तोपें और बहुत सा

लड़ाईका सामान अंग्रेज़ी सेनाके हाथ लगा। बुलन्दशहरकी लड़ाईके बाद सेनापति ग्रिथेडने एक मील दूर काली नदीके किनारे अपना पड़ाव डाला। इसी दिन तीसरे पहर अंग्रेज़ी सेना मालघर पहुंची। मालघरके बूढ़े नवाब वालिदखां दिल्ली-के बादशाहके नामपर राज्य करने लगे थे। अंग्रेज़ी सेनाके आते ही नवाब भाग खड़े हुए। उनके किलेमें अनेक प्रकार-का सामान था। इस किलेके नीचे बारूदकी सुरंगें लगाकर यह उड़ा दिया गया। एक गोरा सैनिक आग लगाते हुए मरा। अपने घायलोंको मेरठ भेजनेके लिये ग्रिथेड साहब चार दिन यहां रहे। मि० लायल फिर यहां शान्ति स्थापित करने लगे। दो तीन दिन बाद इनकी सहायताके लिये मेरठसे सैनिक आ गये। बुलन्दशहरके पश्चिम रुहेलखण्डका बड़ा भारी प्रदेश था। इसमें विद्रोही सिपाहियोंका बड़ा भारी जत्था मौजूद था। मेरठके सैनिक मि० लायलकी अधीनतामें इन सिपाहियोंका हमला रोकनेको तैयार रहे।

ग्रिथेडकी सेना ३ अक्टूबरको बुलन्दशहरसे चली। इसी दिन तीसरे पहर वे खुर्जा पहुंचे। खुर्जा अलीगढ़के रास्तेमें है। यहां अधिकतर मुसलमानोंका निवास है। सैनिकोंने खुर्जामें घुसते हुए रास्तेके किनारे एक लाश देखी उसके सिर न था। डाक्टरने देखकर उसे अंग्रेज़ स्त्रीकी लाश बताई। इससे अंग्रेज़ी सेनाके क्रोधका पारा बेतरह चढ़ा। उन्होंने खुर्जावालोंसे इसका पूरा बदला लेनेका इरादा किया। खुर्जावासी लाख कहते रहे कि

हमारा कोई कसूर नहीं है, हम राजभक्त प्रजा हैं, पर सुनता कौन था। अंग्रेज़ी सेनाका क्रोध जगानेका जरा निमित्त मिल गया। अंग्रेज़ी सेनाकी उत्तेजनाका एक और भी कारण था। खुर्जाके जिस स्थानपर अंग्रेज़ी सेनाने पड़ाव डाला था उसके पास पेड़के नीचे एक मौनी संन्यासी बैठा था। सैनिकोंने उसे बुलाना चाहा, पर वह न बोला। अन्तमें उसने पास रखी एक पेटी खोलनेका इशारा किया। उसमें कुछ खाद्य पदार्थके टुकड़े थे। पहले कुछ न मिला, पर उसके नीचे एक छेद था जिसे खोलनेपर एक छोटा सा कागजका टुकड़ा मिला। यह सेनापति हावेलका लिखा ग्रीकभाषाका पत्र था। उसमें लिखा था कि वे लखनऊके उद्धारके लिए जा रहे हैं। उनकी सेना कम है। गाड़ी आदि नहीं हैं। इस समय अन्य सेनाकी सहायताकी आवश्यकता है। जिस किसी अंग्रेज़ सेनापतिके हाथ यह पत्र पड़े वह सहायताके लिये शीघ्र पहुंचे। यह पत्र मिलते ही सेनापति ग्रिथेडने शीघ्र कानपुर पहुंचनेका इरादा किया। इस समय अंग्रेज़ एक स्थानसे दूसरे स्थानको इसी तरह समाचार भेजा करते थे। दूत इन पत्रोंको तरह तरहसे छिपाकर दूसरे सेनापतियोंके पास पहुंचाते थे। अंग्रेज़ ग्रीक या फ्रेंच भाषामें पत्र लिखते थे जिससे कोई दूसरा उन्हें समझ न सके। लखनऊके घेरेके समय भी अंग्रेज़ोंको इसी तरहके दूतोंसे सहायता लेनी पड़ी थी, यह पहले ही कहा जा चुका है।

खुर्जाका पटरा करके अंग्रेज़ी सेना अलीगढ़ पहुंची। यहां-

से सिपाही पहले ही रवाना हो चुके थे। शहरके हुलड़बाज लोग सींगका बिगुल बजाते और ढोल पीटते तथा असभ्य भाषामें बकते हुए ब्रिटिश सेनाको रोकने आये। इनके पास दो तोपें भी थीं। जब ब्रिटिश तोपखानेके साथ सैनिक आगे बढ़े और बन्दूकोंके फायर किये तब अपने २ ढोल फेंककर, जान लेकर ये लोग भागे। सेनाने इनका पीछा किया, भागकर ये लोग खेतोंमें जा घुसे। रिसालावालोंने बहुतोंको भगा २ कर मार दिया। ब्रिटिश सेनाके आनेसे अलीगढ़की प्रजा प्रसन्न हुई। कारण वे लोग इन हुलड़शाहीवाले, बदमाशोंसे तंग आ गये थे। ये लोग रात दिन उन्हें हर तरहसे तंग करते थे। ब्रिटिशशासन-के आनेसे उन्हें प्रसन्नता हुई। उन्होंने सैनिकोंको आवश्यक खाद्य पदार्थ दिया।

अलीगढ़से चौदह मीलपर अकबराबाद है। सेनापति ग्रि-थेड अलीगढ़के लिये थोड़ी सेना छोड़कर अकबराबादकी ओर चले। यहांपर मंगलसिंह और महताबसिंह दो जोड़ले भाई अधि-कार किये हुए थे। इनके साथ और भी बहुतसे आदमी ब्रिटिश राजके खिलाफ हो रहे थे। इन्हें जीता पकड़नेके लिये सेनापति-ने शामको सवारोंका घेरा डाल दिया। पर ये लोग जान बचा-नेके लिए भागे। भागते हुए सैनिकोंकी गोलियोंसे मारे गये। इनके घरमें तीन छोटी २ तोपें और कुछ लूटका सामान मिला। गांववालोंको इसकी काफी सजा दी गई।

जिस समय ग्रिथेडको हावेलका पत्र मिला था उसी समय-

से उन्हें आगराके पत्र बराबर मिल रहे थे। इसलिये सेनापतिने कानपुरसे पहले आगरा जानेका निश्चय किया। आगराके अंग्रेज किलेमें बैठे थे। उन्होंने बड़े कातर भावसे सहायताकी प्रार्थना की थी।

ले० गवर्नर कालविन साहबके शरीरान्ततककी आगराकी घटना पीछे आ चुकी है। कालविनके बाद रीड उनके पदपर प्रतिष्ठित हुए। पर इस समय सिविल कर्मचारी कुछ नहीं कर सकते थे। तमाम काम फौजी अधिकारियोंके हाथमें था इस लिये रीडके स्थानपर फ्रेजर काम करने लगे। ये अधिकारी आगरा या उसके आसपास शान्ति स्थापित न कर सके। वे आगराके किलेमें बन्द थे। आगरा और चारों ओरसे उनका राज्य उठता गया था। हर समय हर स्थानपर सिपाहियोंके हमलेका डर था। कालविन साहबके शरीरान्तसे पहले अफवाह उड़ी थी कि ग्वालियरके सिपाही मेहदीपुर, मालवा और भूपालके सिपाहियोंसे मिलकर आगरापर चढ़ाई करेंगे। उस समय महाराज संधिया (शिंदे) ने जिस कौशलसे सिपाहियोंको रोका और उनके मन्त्री दिनकररावने जिस बुद्धिमानीसे काम लिया, यह सब इस ग्रंथके पिछले अध्यायोंमें आ चुका है। पर महाराज और दिनकररावका प्रयास अन्तमें निष्फल हुआ। सिपाहियोंने उनका शासन नहीं माना। वे इधर उधर चलदिये। मध्य भारतके उक्त स्थानोंके सिपाहियोंसे उनकी ताकत और अधिक बढ़ी। जब १८ सितम्बरको दिल्ली अंग्रेजोंके कब्जे आई

तब सिपाही बड़े हताश हुए। हताश होकर उन्होंने दिल्ली त्याग की। फीरोजशाह नामक एक शाहजादा सिपाहियोंका सेनापति बना। इसकी मातहतीमें सिपाही सेना २६ सितम्बरको मथुरा पहुंची। मथुरामें हीरासिंह सूबेदारके अधीन ७२ नं० सिपाही सेना इनसे मिल गई। इनके साथ मध्य भारतके सिपाही भी हो गये। इस बड़ी भारी सेनाके हमलाके डरसे आगराके किलेमें बैठे अंग्रेज डर गये। इसी कारण वे पत्रपर पत्र लिखकर सेनापति ग्रिथेडको सहायताके लिये बुलाने लगे। ग्रिथेड भी सीधे आगराकी ओर चले।

७ अक्टूबरको ग्रिथेडकी सेना विजयगढ़ पहुंची। दूसरे दिन आधी रातको चलकर, १० अक्टूबरको यमुनाका नावोंका पुल पार करके आगरा पहुंचे। ब्रिटिश सेना बड़ी जल्दी आई थी। धूपके मारे इनके चेहरे झुलस गये थे। ऊपरसे नीचेतक धूल और कीचड़से ये सफेद हो गये थे। किलेके अंग्रेजोंने पहले इन्हें न पहचाना। बहुत तो यह कहने लगे थे कि यह अफगान सेना कहांसे आ गई। ये लोग ४८ मीलका सफर पूरा करते अपने देशवासियोंके उद्धारके लिये आये थे। आगरा पहुंचकर ये लोग किलेके सामने मैदान और सड़कपर ठहर गये। इधर इनके सेनापति दो घण्टेतक यही तय करते रहे कि फौज अपना पड़ाव किस ओर डालेगी। दो घण्टेतक सैनिक किलेके सामने ठहरे रहे। अन्तमें निश्चय हुआ कि परेडके मैदानमें ये ठहरें। खेमोंके गाड़नेके निशान किये गये, घोड़े

बांधे गये, बावर्ची खाने पकाने लगे। जिनका सामान पीछेसे आ रहा था वे वैसे ही जमीनपर लेटकर सोने लगे। आगराके किलेके बन्द अंग्रेज भी बाहरकी खुली हवा खाने निकले। उनका चित्त प्रसन्न था। जब यह थकी हुई सेना मैदानमें आराम कर रही थी तब दलके दल आगरावाले इस सेनाको देखनेके लिये आने लगे। जिस सेनाने दिल्ली फतह की और बादशाहको कैद किया उसे देखनेका सबको चाव था। इसे देखने लाखों आगरानिवासी जमा हो गए। यह आगराके वर्णनसे पाठक समझ ही गये होंगे कि आगरामें शान्ति न थी। हुल्लड़शाहीकी प्रधानता हो रही थी।

जब ग्रिथेडकी सेना थककर मैदानमें लेट गई थी तब चार आदमी ताली बजाते २ पहरेवाले सैनिकके सामने पहुंचे। पहरावालेने इनसे चले जानेको कहा। पर उनमेंसे एकने अपने कपड़ेके नीचेसे तलवार निकालकर पहरावालेपर वार किया, वह कटकर गिर गया। दूसरा सैनिक मददको आया पर वह भी घायल हो गया। बादमें सैनिकोंकी संगीनोंसे ये चारों मारे गये। पीछेके सैनिकोंको यह बात मालूम होते न होते तोपोंकी गंभीर आवाजके साथ ग्रिथेडकी आराम करती हुई सेनापर गोले गिरे। कोई घासपर लेटकर सो रहा था, कोई अपने साथियोंसे बैठा बातें कर रहा था, कोई तम्बू गाड़नेकी फिकरमें था, ये सब एकाएक तोपोंकी आवाजसे चौंक उठे। उसी समय बिगुल बजा। तमाम सेना और तोपें तैयार हुईं। पर

दुस तैयार होनेमें जो दस मिनट लगे उसमें बहुतसे सैनिक, बहुतसे सेनाके नौकर और बहुतसे शहरके तमाशाई मारे गये।

जो अफसर किलेमें (लार्ड रावर्ट्स भी गये थे) मिलने गये वे वहाँ आनन्दसे अंग्रेज़ परिवारोंके साथ बातें कर रहे थे। जब सब मिलकर भोजनके लिये बैठे उस समय तोपोंकी आवाजसे वे भी चौंक उठे। फिर नम्बर लग गया। बार २ तोपें गरजने लगीं। सब खाना छोड़कर खड़े हो गये। स्त्रियोंको सब दिलासा देने लगे—"नहीं, यह तोपोंकी आवाज दुश्मनोंकी नहीं है।" पर इन बातोंसे कोई लाभ न था। विपक्षियोंने ग्रिथेडकी सेनापर हमला किया था। अफसर लोग खाना पीना छोड़कर एक सांसमें नीचे आये और अपने अपने घोड़ोंपर चढ़कर किलेसे बाहर निकले। लार्ड रावर्ट्सने इस समयके दृश्यका वर्णन इस प्रकार किया है—"नाना वर्ण और नाना श्रेणीके लोग बालक, बालिका, वृद्ध और स्त्रियां एक ओर थीं। हाथी, घोड़े, ऊंट और बैल सेनाके दूसरी ओर थे। लोग ऐसे चीख पुकार रहे थे जैसे महाराक्षस मुँह फाड़े उन्हें निगलनेको आ रहे हों। जो किलेके अंग्रेज़ बाहर आये थे वे घबरा कर फिर वापिस किलेमें जानेके लिये छटपटा रहे थे। जो शहरसे सेना देखने आ रहे थे वे वापिस भाग रहे थे। तोपोंकी आवाजोंके सुनते ही ये ऐसे डर गये कि भाग भागकर हाथियों और ऊंटोंपर आ गिरे। सब जल्दीसे भागनेकी चिन्तामें थे, सब अपना रास्ता साफ चाहते थे। गाड़ियोंके कारण हाथियोंका रास्ता रुक गया। लोग भाग

भागकर हाथियोंपर गिरने लगे। ऊंटोंके साथ बैलोंकी रगड़ होने लगी। अपना अपना रास्ता साफ करनेके लिये पहले ठेल-मठेल होने लगी। तोपोंकी आवाजोंसे महावतोंके साथ हाथी भी डर गये। अंकुश खाकर वे बुरी तरहसे चीखते थे। ऊंटोंको लोग घोड़ोंके समान तेज भगानेके लिये उनकी नकेल इतने जोरसे खींच रहे थे कि नाकसे खून गिर रहा था।" इस तरह रास्ता रुका हुआ था। रास्ता रुका होनेके कारण सेनामें पहुं-चनेमें अफसरोंको भी देर लगी। जब अफसर सेनामें पहुंचे तब देखकर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। हर जगह हाथों हाथ संग्राम हो रहा था। कहीं सवारसे सवार भिड़ गया था, कहीं पैदल सैनिक अपनी किरचसे विपक्षीकी तलवार रोक रहा था, कहीं कहीं सवार तोपोंको खींचकर कुछ आगे ले गये थे। बहुतसे गोरे सैनिक खाली कमीज पहने विपक्षी सवारोंसे लड़ रहे थे। इन सैनिकोंसे थोड़ी दूरपर, बांये बाजूसे अंग्रेज़ी गोलंदाज अपनी तोपें चला रहे थे। ये भी खाली कमीजें पहने थे। साईस घोड़ोंको तैयार कर रहे थे। पैदल अपने हथियार लेनेकी जल्दी कर रहे थे। सेनापति ग्रिथेड सिपाहियोंके इस अचानक हमलेके कुछ मिनिट बाद ही सेनामें आ गये थे। उन्होंने अपने सैनिकों-को आगे बढ़नेका हुक्म दिया। सिपाही हमला करके एकाएक पीछे हट गये। अंग्रेज़ी सेना इनके पीछे दौड़ी। एक तोप छोड़कर ये काली नदीके दूसरे किनारे चले गये। इस प्रकार सिपा-हियोंका अचानक संग्राम समाप्त हुआ।

ग्रिथेडकी सेना १३ अक्टूबरतक आगरामें रही। १४ अक्टूबरको ये आगरासे मैनपुरीकी ओर चले। रास्तेमें सेनापति बदले। गवर्मेंटने ग्रिथेडके स्थानपर कर्नल होपग्रांटको सेनापति बना दिया था। होपग्रांटने दिल्लीसे ग्रिथेडके पड़ावपर जाकर कार्यभार ग्रहण किया। मैनपुरीकी घटनाओंका वर्णन किया जा चुका है। मैनपुरीके राजाने गवर्मेंटकी मुखालफत की थी। उसके एक सम्बन्धीके कारण खजानेकी रक्षा हुई। अंग्रेजी सेनाके पहुंचनेसे एक दिन पहले राजा मैनपुरी छोड़कर भाग गया। अंग्रेजी सेनाने मैनपुरी पहुंचकर उसका किला बारूदसे उड़ा दिया। मैनपुरीके सिविलियन गदरके कारण भाग कर आगराके किलेमें जा छिपे थे। इस सेनाके साथ वापिस आकर उन्होंने अपने कामोंका भार फिर ग्रहण किया। यहां हर प्रकारसे शान्ति स्थापित करके ब्रिटिश सेना बियोर नामक स्थानपर पहुंची। यह स्थान कानपुर, आगरा और फतहपुर मेरठके चौरास्तेपर है। यहां सेनापति होपको आउट्रामका पत्र मिला। यह भी ग्रीक भाषामें लिखा था। पत्र एक पोले परके भीतर भरा गया था, इस परको दूतने अपनी पोली लकड़ीके भीतर रखा था। दूत उस समय किस चतुराईसे एक स्थानसे दूसरे स्थान पत्र पहुंचाते थे, सो इसी घटनासे मालूम हो सकता है। सेनापति आउट्रामने सहायता मांगी थी। यहांसे २२ अक्टूबरको चलकर सेनापति होप २८ मील दूर गुरसागंज पहुंचे और इसके दूसरे दिन कन्नौज प्रान्तके मीराकी सराय नामक स्थानपर पहुंचे।

यहां विपक्षी सिपाहियोंसे एक छोटीसी लड़ाई हुई। भाग कर सिपाही अपनी तोपें लिये हुए काली नदी पार हुए। अंग्रेज़ी सेनाने इस पारसे तोपोंके गोले फेंके, इसलिये अपनी तोपें छोड़कर वे आगे बढ़े। होपकी सेना नदी पार होकर उनके पीछे दौड़ी। सिपाही सवार गंगामें कूद पड़े। बहुतसे गंगाके प्रवाहमें बह गये और कोई कोई दूसरे किनारे लगा। २६ अक्टूबरको होपग्रांटकी सेना कानपुर पहुंची। ३१ अक्टूबरको वे आलमबागके निकट पहुंचकर ठहर गये।

यह पहले कहा जा चुका है कि सर कोलिन काम्पबेल भारतके प्रधान सेनापति नियुक्त हुए थे। १३ अगस्तको ये इङ्गलैंडसे कलकत्ता आये थे। इस समय चारों ओर गदर मचा हुआ था। सम्पूर्ण अवधप्रान्त विद्रोही सिपाहियोंका लीलाक्षेत्र था। रुहेलखंडसे अंग्रेज़ी राज्य उठ गया था। गंगा और यमुनाके बीचके प्रदेशमें उत्तेजना पूर्ण वेगसे फैल रही थी। दिल्ली चली गई थी। मध्यभारतमें भी उत्तेजना थी। एक स्थानसे दूसरे स्थान समाचार जाना कठिन था। ऐसी दशामें काम्पबेलने प्रधान सेनापतिका पद ग्रहण किया।

सबसे पहले सेनापतिने विद्रोही स्थानोंमें सेना भेजनेका प्रबन्ध किया। यह पहले आ चुका है कि चीन देश जो ब्रिटिश सेना जा रही थी वह भारतका ग़दर रोकनेके लिये यहीं रख ली गई थी। समुद्री सेनाके अध्यक्ष कप्तान पील अपनी समुद्री सेना और तोपखाना लेकर कलकत्ता आगये थे। मरीच आदि द्वीपोंसे

सेना और लड़ाईका सामान एकत्र किया गया। इस प्रकार चारों ओरसे शक्ति संग्रह करके, गवर्मेंटके खोये राज्यको फिर लेनेके लिये, सेनापतिने प्रयत्न किया। सर कोलिन कास्पवेलने २७ अक्टूबरको कलकत्तासे यात्रा की। रात दिन घोड़ोंकी डाकमें बैठकर वे १ नवम्बरको इलाहाबाद पहुंचे। इसके दूसरे दिन फतेहपुर पहुंचे। जिस समय प्रधान सेनापति इतनी जल्दी युद्ध क्षेत्रकी ओर बढ़ रहे थे तब कप्तान पीलने कानपुरके रास्तेमें सिपाहियोंको हराया। फतहपुरसे प्रायः २४ मील उत्तरपश्चिम खजुहा गांव है। सन् १६५९ में औरंगजेबने इसी स्थानपर अपने भाई शुजाको हराया था। इसलिये यह स्थान इतिहास-प्रसिद्ध है। दानापुरके बहुतसे सिपाही खजुहामें एकत्र हुए थे। १ नवम्बरको ब्रिटिश सेना इस गांवकी ओर चली। इस युद्धमें अंग्रेज़ सेनापति मारा गया पर समुद्री सेनाके सेनापति पीलकी योग्यतासे सिपाही बिखरे, इधर उधर भाग गये। इसके एक दिन बाद अर्थात् ३ नवम्बरको प्रधान सेनापति कानपुर पहुंचे। इस समय उनकी तीखी नजर लखनऊपर थी। उन्हें समाचार मिला था कि लखनऊकी सेनाके पास जो खाने पीनेकी चीजें हैं वे १ नवम्बरको खतम हो जायंगी। एक तो उनके पास खानेको न होगा, दूसरे लखनऊमें बड़ी भारी सिपाही सेनाका मुकाबिला, इससे अंग्रेज़ी सेनाके घिर जानेका अंदेशा था। इसलिये सबसे पहले वे लखनऊको मदद भेजना चाहते थे। यह पहले कहा जा चुका है कि सेनापति होपग्रांट अपनी सेनाके साथ

आलमबागके रास्तेमें पड़े थे। प्रधान सेनापति काम्पवेल अपने प्रधान सहायक ब्रिगेडियर मांसफील्ड (बादमें लार्ड सैन्डर्स) के साथ ६ नवम्बरको इस स्थानपर पहुँचे। उनकी आज्ञासे सेनापति वाइंडहम कानपुरकी रक्षा करते रहे।

सर काम्पवेलके सैनिक जब अयोध्या राज्यमें घुसे तब उन्हें चारों ओर ग़द्दर ही ग़द्दर नजर आया। रास्तेमें कोई आदमी न दिखाई देता था। बस्तियोंसे कभी कभी कुत्तोंके भूंकनेकी आवाज आ जाया करती थी। तमाम गांव सूने पड़े थे। गांव और खेतोंमें तथा जंगलोंतकमें आदमी न दिखाई देता था। ऐसे सून-सान इलाकेको पार करते हुए प्रधान सेनापति लखनऊके किनारे-पर पहुंचे। काम्पवेलके साथ इस समय हिन्दुस्तानी सेनायें भी थीं। नैपालके मंत्री जंगबहादुर अपनी तीन हजार पहाड़ी सेना लेकर गवर्मेंटकी मददके लिये आये थे। जंगबहादुर इंग्लैंड गये थे, वहां उन्होंने अंग्रेजोंका प्रताप और शक्ति देखी। उनको विश्वास हो गया कि हिन्दुस्तानसे अंग्रेजोंका राज्य नहीं जा सकता। इस समय नैपाल राज्यके स्वामी वे ही थे। अंग्रेजोंसे उनका जितना ही प्रेम था सिपाहियोंसे उतना ही द्वेष था। इसलिये जंगबहादुर अंग्रेजोंकी सहायता करते हुए सिपाहियों-का खून बहानेके लिये तीन हजार सेना लेकर नैपालकी तराईसे चले। इस समय गवर्मेंटने उन्हें लिखा कि हम सोच रहे हैं कि आपकी मदद ली जाय या नहीं। इससे जंगबहादुर अपनी राज-धानी काठमंडूकी ओर वापिस गये। पहाड़ी तराईकी हानिकर

जलवायुके कारण उनकी सेना बीमार हो गई थी। जब वे अपनी राजधानीमें पहुंचे तब कलकत्तासे समाचार गया कि गवर्मेंट उनकी मदद लेगी। इसलिये २६ जूनको गोर्खा फौजें पहाड़ोंसे उतरकर तराई पार करने लगीं। जिस समय वे अंग्रेज़ी राज्यमें आये उसके कुछ दिन पहले सर हेनरी लारेंस मर चुके थे। सर ह्यू ह्वीलर कानपुरके अंग्रेज़ों सहित मारे जा चुके थे। जंगबहादुर इससे विरक्त हुए थे। उन्होंने अपने एक अंग्रेज़ मित्रसे कहा था। 'आप देखिए मेरे साथ कैसा व्यवहार किया गया? ऐसे शासक जब राज्य कर रहे हैं तब भारतकी रक्षाकी क्या आशा है?'* पर भारतके शासनकी डोर जिसके हाथमें थी वह बड़ी होशियारीके साथ इस समय काम कर रहा था। गोर्खोंपर डलहौज़ीका विश्वास न था। यूरोपमें जब लड़ाई शुरू होती तभी गोर्खा अपने हथियार संभालने लगते थे। उनमें दुश्मनीका भाव दिखाई देता था।† इसी कारण लार्ड कैनिंगको गोर्खोंकी मददमें शक था। पर बादमें विचार करके उन्होंने नैपालकी मदद लेनेका ही निश्चय किया। सर हेनरी लारेंसने गवर्नर जनरलको तार दिया था कि नैपालके गोर्खे शीघ्र मददके लिये बुलाये जायं। किसी किसीका यह भी कहना था कि यदि समयपर गोर्खोंकी मदद आ जाती तो सर लारेंस अवधके विद्रोहको शान्त करके कानपुरके घिरे हुए अंग्रेज़ोंकी मदद करते।‡ खैर, शुरूमें गवर्मेंटको नैपाली

---

* Mead's Sepoy Revolt P. 87 † Martin's Indian Empire Vol. II P. 278 ‡ Mead's, Sepoy Revolt P. 88.

गोर्खों पर सन्देह हुआ था पर अन्तमें गोर्खों ने किसी तरहका विश्वासघात नहीं किया। वे वीरतासे सिपाहियोंसे लड़े। इतिहासलेखकोंने बड़ी प्रसन्नताके साथ इनकी वीरताका वर्णन किया है। अब प्र० सेनापतिकी चढ़ाईका वर्णन करनेसे पहले यह कहना आवश्यक है कि इससे पहले लखनऊमें क्या क्या हो चुका था।

सेनापति हावेल और आउट्राम लड़ते लड़ते रेजीडेन्सीमें जा पहुंचे थे पर सिपाहियोंको वे लखनऊसे निकाल न सके। उनके आनेसे घिरे हुए अंग्रेजोंकी शक्ति बढ़ गई थी पर वाजिद अली शाहकी राजधानीमें जगह जगह उस समय भी सिपाही प्रधान हो रहे थे। सेनापति आउट्राम सिपाहियोंकी शक्ति तोड़ कर कानपुरसे लखनऊका रास्ता साफ नहीं कर सके थे। सिपाहियोंको निकालनेके लिये आउट्रामने पहले ताराकोठी, छत्रमंजिल और फरीदबक्स मकानोंपर कब्जा करनेका इरादा किया। २६ सितम्बरको उन्होंने इन सब स्थानोंपर कब्जा कर लिया। ६ नवम्बरको उन्हें समाचार मिला कि होपग्रांट अपनी सेना लेकर आलमबागके रास्तेमें पड़े हैं। वे प्रधान सेनापतिके आनेकी प्रतीक्षामें हैं।

सर जेम्स आउट्रामने अपनी हालत और लखनऊके विवरणके साथ सेनाके सन्निवेशका समाचार प्रधान सेनापतिको मालूम कराना चाहा, पर इस विचारको वे पूरा न कर सके। लखनऊसे कानपुरका रास्ता सिपाहियोंने रोक रखा था।

सिपाहियोंके व्यूहको भेदकर जाना महा कठिन था। एक हेनरी कावेना नामक दीवानी विभागका अंग्रेज़ कर्मचारी यह समाचार कानपुर ले जानेके लिये तैयार हुआ। अंग्रेज़के जल्दी पहुंचाने जानेकी आशंकासे आउट्रामका चित्त हिला। पर कावेनाका आग्रह देखकर अन्तमें उन्होंने आज्ञा दी। कावेनाने हिन्दुस्तानी ढंगका वेश बनाया। पाजामा, अंगरखा और पगड़ी पहनी, हाथ पैर और मुंहमें तेल मिलाया, काला रङ्ग पोता। यह वेष बनाकर वह एक विश्वासी दूत कनौजीलालके साथ ९ नवम्बरकी रातके ९ बजे प्रधान सेनापतिकी सेनाकी ओर चला। दूसरे दिन निर्विघ्न वह प्रधान सेनापतिके पास पहुंचा। कावोनाके इस साहससे सर आउट्रामकी तमाम बातें काम्पबेलको मालूम हो गईं। जब प्रधान सेनापति अपनी सेना बढ़ाकर आलमबागकी ओर होपग्रांटकी सेनासे मिलना चाहते थे तब विद्रोही सिपाहियोंने उनके रास्तेमें स्थान स्थानपर तोपें लगा दी थीं। आउट्रामने हावेलकी जबानी कहला दिया था कि प्र० सेनापतिको किस रास्तेसे पहुंचना चाहिये। ११ नवम्बरको तीसरे पहर उन्होंने अपनी सेना देखी। दूसरे दिन सवेरे ही वे रेजीडेंसीकी ओर चले।

१३ नवम्बरको प्र० सेनापतिने आलमबाग और दिलकुशाबागके बीचवाले जलालाबाद नामक मिट्टीके किलेपर कब्जा किया। दूसरे दिन उनकी सेना दिलकुशाबागमें पहुंची। अंग्रेज़ी सेनाने इस बाग तथा मार्टिनियर कालेजपर अधिकार

किया। यहांसे वे सिकन्दरबागकी ओर आगे बढ़े। सिकन्दरबागके बीचवाले मकानकी खिड़कियां और दरवाजोंसे सिपाहियोंने ऐसी गोलियां बरसाईं कि अंग्रेज़ी सेना हैरान हो गई। इस मौकेपर सिक्खोंने बड़ी वीरताका परिचय दिया। जब तोपोंके गोलोंसे बागकी दीवार तोड़ दी गई तब हाईलैंडर गोरे, सिक्ख और पंजाबी बागमें घुसनेको आगे बढ़े। सबसे पहले एक हाईलैंडर घुसा, वह मारा गया। इसके बाद एक सिक्ख गया वह भी मारा गया। इसके बाद गोकुलसिंह नामक सिक्ख सर्दारने अपनी सेनाको इसी ओर बढ़ाया। इस दलके मुबारिकखां नामक पंजाबी मुसलमानने बड़ी वीरताका परिचय दिया। जब भीतरके सिपाहियोंने बागका सदर दरवाजा बन्द करना चाहा तब मुबारिकखांने अपना हाथ दोनों किवाड़ोंके बीचमें दे दिया। जब तलवारसे सिपाहियोंने उसका यह हाथ काट डाला तब मुबारिकखांने अपना दूसरा हाथ दे दिया। कोहनी तक यह हाथ भी काट डाला गया। पर वीर मुबारिकखांका उद्देश्य पूरा हो गया। दरवाजा खुला रह गया। ब्रिटिश सेना बागमें घुस गई। इस लड़ाईमें प्रधान सेनापतिकी जांघमें घाव आया, पर वह अधिक गहरा न था।*

इस समय प्रधान सेनापतिके साथ जो सैनिक इस लड़ाईमें थे उनमेंसे किसी किसीने युद्धका वर्णन किया है। ९३ नं० हाईलैंडर सेनाके एक लेफ्टिनेण्ट फरवस मिचलने लिखा है—

*Lord Robert's Forty-one years in India Vol. I.P.326.

"सिकन्दरबागके बीचमें एक बड़ा पीपलका पेड़ था। वह ऊंचा और पत्तोंसे भरा हुआ था। जब लड़ाई समाप्त हुई तब ब्रिटिश सैनिक सुस्तानेके लिये इस पेड़के नीचे बैठे। इसके नीचे ठंढा पानी था। एक आदमी अपने मरे हुए सैनिकोंके चोटकी परीक्षा कर रहा था। कई सैनिकोंकी चोटीपर गोली लगी थी। यह देखकर उसने कहा कि यह गोली इस पेड़परसे चलायी गई होगी, देखो इसपर कोई है या नहीं। एकने देखकर कहा—"हां कोई है।" यह कहकर उसने निशाना लगाकर बन्दूक मारी। ऊपरसे एक लाश नीचे गिरी। उसके वस्त्र रेशमी थे। गिरते हुए छातीका हिस्सा नंगा हो गया था। सबने देखा कि वह एक औरत थी। जिसने गोली मारी थी उसने आंखोंमें आंसू भरकर कहा—"जो मुझे यह मालूम होता कि यह औरत है तो मैं कभी गोली नहीं मारता।"* इसके बाद तोपोंसे सिकन्दरबागका वह मकान उड़ा दिया गया।

१६ नवम्बरको तीसरे पहर बाकी बची हुई अंग्रेज़ी सेना फिर रेजीडेंसीकी ओर बढ़ी। इनके बाईं ओर लगभग ग्यारह सौ गजतक खुला मैदान चला गया था। मैदानके किनारेपर छोटा सा गांव था। दाहिनी ओर करीब तीन सौ गजतक मैदान और फिर चार सौ गजतक झाड़ियां थीं। बीचमें छोटे मोटे स्थान थे, इसके बाद नवाब गाजीउद्दीन हैदरका मकबरा था।

---

* Fobes Mitchell s Reminiecences of the Great Mutiny P. 57.

यह सफेद संगमरमरके गुम्बजसे सुशोभित था। शाहनजीफसे कुछ दूर आगे कदमरसूल नामक मसजिद थी। अंग्रेज़ी सेनाने जब इस छोटे गांवपर कब्जा किया तब किसी प्रकारकी बाधा न हुई। इसके बाद गोलन्दाज शाहनजीफ और कदमरसूलकी ओर गोले फेंकने लगे। सिक्ख सैनिकोंने मसजिदपर कब्जा कर लिया पर शाहनजीफपर कब्जा करना कठिन हो गया। मकब-रेके पासवाले जङ्गल और उसकी ऊंची दीवारोंसे सिपाही अंग्रेज़ी सेनापर गोलियां बरसाने लगे। घोड़ेपर बैठे हुए प्र० सेनापति इस मकबरेकी ओर देखने लगे। अफसर लोग उनके पास खड़े हुए सेनाकी गति देखने लगे। पहले जो मकबरा लेनेके लिये भेजे गये थे उनकी मददके लिये और पैदल सिपाही भेजे गये। सिपाही तीन घन्टेतक अंग्रेज़ी सेनाको इसी तरह बाधा देते रहे। उनकी तोपों और बन्दूकोंसे अंग्रेज़ी सेनाकी बड़ी हानि हुई। अपनो सेनाकी यह दशा देखकर प्र० सेनापतिको चिन्ता हुई। एक अफसरकी बांह कट गई, एक घायल हो गया। एक अफसरका घोड़ा मर जानेसे वह गिर पड़ा। इधर धीरे धीरे रातका अन्धकार होने लगा। इसी कारण उनका ललाट सिकुड़ा, मुखपर चिन्ताकी झलक दिखाई दी। उन्हें मालूम होने लगा कि इतनो ही ताकतसे वे सिपाहियोंको न हरा सकेंगे। उनकी सेना आगे न बढ़ सकी और पीछे भी न हटी। वे जैसे ही आगे बढ़ते थे वैसे ही मकबरेकी ऊंची दीवारोंके छेदोंसे गोलियोंकी बौछार होती थी। आगे बढ़नेवाले

मारे जाते थे। उनके साथ रस्सियां न थीं जो उनके सहारे दीवारपर चढ़नेकी कोशिश होती। अन्तमें तोपके गोलोंसे दीवार तोड़नेकी आयोजना हुई। पर दीवारें इतनी मजबूत थीं कि गोले टकराकर रह जाते थे, दीवार हिलती भी न थी। यह देख कर कप्तान पीलने तोपें वापिस मंगाईं। इधर प्रधान सेनापतिने होपग्रांटके पास आज्ञा भेजी कि मुर्दों और घायलोंको लेकर वापिस आ जाओ। इस प्रकार पीछे हटना ही निश्चय हुआ।

जो प्र० सेनापतिकी आज्ञा लेकर होपग्रांटके पास गया था उससे सलाह करके ग्रांटने निश्चय किया कि पीछे हटनेसे पहले एक बार और कोशिश करके देखना चाहिये कि हमारी सेना किसी तरह भीतर जा सकती है या नहीं। ये दोनों उसके चारों ओर जङ्गलमें घूमकर देखने लगे। एक ओर इन्हें फटा दर्रा दिखाई दिया। उसीसे ये भीतर घुसे। इनको किसीने न रोका क्योंकि सिपाही पहले ही मकबरा छोड़कर चले गये थे। भीतरसे इन्होंने मकबरेका दरवाजा खोल दिया। प्रधान सेनापतिसे कह दिया गया कि सिपाहियोंका पीछा करनेकी जरूरत नहीं। इस प्रकार बड़ी हानि उठाकर यह स्थान अंग्रेज़ी सेनाके अधिकारमें आया।

अन्धेरा हो जानेपर ब्रिटिश सैनिकोंने शाहनजीफमें प्रवेश किया। जल्दीमें सिपाही अपनी खाद्य सामग्री भी छोड़ गये थे। भीतर घुसकर सैनिकोंने देखा कि दीपक जल रहा है, रोटियां

तैयार हैं, दाल चूल्होंपर रखी उबल रही है। खैर, शाहनजीफसे आगे दो स्थानोंपर और सनिकोंको कब्जा करना पड़ा। इधर रेजीडेंसीके सेनापति भी चुप न थे। वे ऐसी कोशिशें कर रहे थे जिससे प्र० सेनापतिका रास्ता साफ हो। जब हावेलको मालूम हुआ कि सिकन्दरबागपर प्र० सेनापतिका कब्जा हो गया तब उन्होंने बारूदकी सुरंगें लगाकर फरीदबक्स महलकी चहारदीवारी उड़ा दी और इस जगह तोपें लगाकर वे सिपाहियोंपर गोले फेंकने लगे। इस अर्सेमें उनकी पैदल सेनाने फरीदबक्स और मोतीमहल नामक दो इमारतोंपर कब्जा किया। इससे प्रधान सेनापतिका रास्ता और भी अधिक साफ हो गया। १७ नवम्बरको सवेरे सिपाहियोंके नक्कारोंकी आवाजसे जाग कर काम्पवेलके सैनिकोंने खुर्शेदमंजिल नामक भवनपर हमला करनेकी तैयारी की। शाहनजीफके लेनेमें प्र० सेनापतिकी बहुत ताकत टूट चुकी थी, इसलिये उन्होंने खुर्शेदमंजिलपर धावा करनेवाले सैनिक चुने। एक छोटी लड़ाईके बाद खुर्शेदमहल भी ब्रिटिश सैनिकोंके हाथ आया। सिपाही इस जगहसे हटकर मोतीमहलमें जा डटे। मोतीमहलसे रेजीडेंसीतकका स्थान सेनापति हावेलने साफ कर दिया था। अब मोतीमहलके हाथ आते ही प्र० सेनापतिकी सेना रेजीडेंसीकी सेनासे मिल सकती थी। सिपाहियोंने बड़ी वीरतासे मोतीमहलकी रक्षा की, घोर संग्राम हुआ। दिन भरकी लड़ाईके बाद, शामको मोतीमहलपर अंग्रेजोंका अधिकार हो गया।

जब खुर्शेदमंजिलपर कब्जा हो गया तब प्रधान सेनापतिने उसपर अपना झंडा खड़ा करनेको राबर्ट्सको कहा। इस झंडेको देखकर सेनापति हावेल और आउट्रामको मालूम हो गया कि ब्रिटिश सेना खुर्शेदमंजिलसे आगे बढ़ी। पर कैसरबागके सिपाहियोंने अपनी तोपका निशाना लगाकर झंडेपर गोला मारा जिससे झंडा गिर पड़ा। राबर्ट्सने फिर झंडा खड़ा किया, सिपाहियोंने फिर गोला मारा जिससे झंडा गिर पड़ा। तीसरी बार फिर राबर्ट्सने झंडा खड़ा किया। इस प्रकार अ... साहसका परिचय दिया। जिस सिपाहीने तोपके...मतीके इतनी होशियारी दिखाई थी उसे सिपाहियोंने ५०...योंकी लाशें दिये। ... कठिन था।

मोतीमहलपर अंग्रेजोंका कब्जा होनेपर भी फिर सिकन्दर-...त्साह नहीं हुए। वे कैसरबागसे मोती...पाहियोंकी हड्डियां जिलके बीचमें गोले फेंकने लगे। सेना ...

...ट्राम खुर्शेदमंजिलके नीचेवाली खुली...लकुशा पहुंचे। २०,२१ मिले। जाते समय कर्नल नेपि...र्यां एकत्र की गईं। यहां जो गये। जब खुर्शेदमंजिलके नी... लाख रुपयेके हीरे जवाहिरात रहे थे तब एक आदमीने ...वाबखान्दानके थे। पर एक घट-भी घायल हो गया। ... २० नवम्बरको सेनापति हावेलको रहे। इस प्रकार ...में डालकर दिलकुशा लाये गये। यहाँ रास्ता प्र० सेनाप...न्हें रखा गया। उनकी हालत बिगड़ने लगी। हानि हुई थी। ...में चोट आई थी। उसमें पट्टी बांधकर वह

इस मैदानमें झटपट मिट्टीकी दीवार बनाकर उसपर तोपें चढ़ाई गईं। इन तोपोंसे सिपाहियोंके स्थानोंपर गोले फेंके जाने लगे। इधर १६ नवम्बरसे अंग्रेज़ों, स्त्रियों और बच्चोंको दिलकुशाकी ओर रवाना करना शुरू किया गया। इनके लिये गाड़ी या पालकी आदिका कोई प्रबन्ध न था। इनके जानेमें तरह २ की गड़बड़ें हुईं। सूर्य छिपते छिपते ये लोग सिकन्दरबाग पहुंचे। पर यहाँ भी ये रह नहीं सकते थे। इस स्थानपर संग्राम हुआ था। उसमें करीब दो हजार सिपाही मरे थे। जो अंग्रेज़ मरे थे वे यहाँ गाड़ दिये गये थे। सिक्खोंने अपने मुर्दे गोमतीके किनारे ले जाकर जलाये थे। पर सैकड़ों सिपाहियोंकी लाशें पड़ी सड़ रही थीं। इस बदबूमें अंग्रेज़ोंका ठहरना कठिन था। सन् १८५८ के मार्च मासमें जब अंग्रेज़ी सेना फिर सिकन्दरबागमें पहुंची तब छः महीने बाद इन सिपाहियोंकी हड्डियां इकट्ठी कराई गई थीं।

अंग्रेज़ स्त्रियां और बच्चे निर्विघ्न दिलकुशा पहुंचे। २०,२१ और २२ नवम्बरको ३ दिन सवारियां एकत्र की गईं। यहां जो मकान टूटे उनमें लगभग पचीस लाख रुपयेके हीरे जवाहिरात मिले। ये सब लखनऊके नवाबखान्दानके थे। पर एक घटनासे अंग्रेज़ बड़े घबराये। २० नवम्बरको सेनापति हावेलको हैजा हो गया। वे डोलीमें डालकर दिलकुशा लाये गये। यहाँ एक अलग तम्बूमें उन्हें रखा गया। उनकी हालत बिगड़ने लगी। उनके बेटेके बाजूमें चोट आई थी। उसमें पट्टी बांधकर वह

अपने पिताकी सेवा करने लगा। पर बीमारी न गई। २४ नवम्बरको डोलीमें ही उनके प्राण निकल गये। उन्होंने जिस योग्यतासे, अपने पदको निबाहा था उसका सब सम्मान करते थे। मौतसे कुछ दिन पहले ही उन्हें "नाइट" की पदवी मिली थी। जब यह समाचार इंग्लैंड पहुंचा तब वहां बहुत शोक मनाया गया। वहाँके लोगोंने आपसमें चंदा करके नौसेनापति नेलसनके बराबर इनकी कीर्ति स्थापित की।

२२ नवम्बरकी शामको ब्रिटिश सेना लखनऊ रेजीडेंसीसे वापिस लौटी। इस दिनसे लखनऊ बिलकुल खाली हो गया। अंग्रेज़ी राज्यका कोई चिह्न लखनऊमें न रहा। पर सिपाहियोंको २३ नवम्बरको यह मालूम हुआ कि अंग्रेज़ी फौजें अपने बाल-बच्चोंको लेकर लखनऊसे चली गईं। इसी कारण वापिस जाती हुई ब्रिटिश सेनापर सिपाही हमला न कर सके। सेनापति हावेलको आलमबागमें समाधि दी गई। प्रधान सेनापतिने ४ हजार सेना और २५ तोपें देकर सेनापति आउट्रामको आलमबागमें छोड़ा। बाकी ३ हजार सेना और दो हजार अंग्रेज़ स्त्रियाँ बच्चे लेकर वे कानपुरकी ओर चले।

यह पहले कहा जा चुका है कि सेनापति वाइंडहम कानपुरकी रक्षापर नियत किये गये थे। प्रधान सेनापतिने उन्हें आज्ञा दी थी कि वे कानपुरका त्याग न करें। वे मिट्टीके किलेको मजबूत करते रहें और जो इस अर्सेमें ग्वालियरकी सेना आजाय तो इस किलेमें अपनी रक्षा करें। यह आज्ञा देकर प्रधान सेना-

पति लखनऊके लिये रवाना हुए थे। पर इस आज्ञाके अनुसार काम न करनेके कारण कानपुरके सेनापतिको विपत्तिमें पड़ना पड़ा। जब प्रधान सेनापति लखनऊकी स्त्रियों और बच्चोंको लेकर कानपुर पहुंचे तब उन्होंने देखा कि कानपुरके सेनापति ग्वालियरके सिपाहियोंसे हारकर दुर्दशामें पड़े हैं। कानपुरकी इस घटनाका विवरण अगले अध्यायमें होगा।

नवां अध्याय
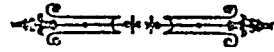
तांतियातोपी—तांतियाका युद्धकौशल—सेनापति वाइंडहमसे उसका संग्राम--कानपुरपर तांतियाका अधिकार--प्रधान सेनापति काम्पवेलका कानपुर आना--तांतियाको हारना।
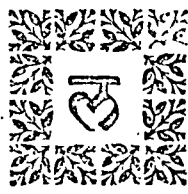
लखनऊसे चलकर प्रधान सेनापति काम्पवेल २९ नवम्बरको कानपुरकी गंगा पार हुए। कानपुरकी अंग्रेज़ी सेना उनके आनेका रास्ता देख रही थी। सेनापति वाइंडहमको आज्ञा दी गई थी कि वे मिट्टीके किलेमें अपनी रक्षा करते रहें। आजकल जिस जगहपर गवर्मेंटका घोड़ेके साजोंका कारखाना है उसी जगह नावोंके पुलके पास कच्ची मिट्टीका किला बनाया गया था। कप्तान मौब्रे टामसन अजीमुल्लाके अत्याचारोंसे किसी प्रकार बचकर फिर उसी कानपुरकी रक्षा कर रहे थे। उनकी अधीनतामें चार हजार कुली सुबहसे शामतक मिट्टीकी दीवार बनाते थे। पहले सेनापति ह्वीलर विपक्षियोंके चक्रमें आकर अपने स्थानको छोड़नेके कारण समूल नष्ट हुए थे और सेनापति वाइंडहम अभिमानसे अपना स्थान छोड़नेके कारण सैनिकोंके नाशका कारण बने। षड्यन्त्र और विश्वासघातकताके कारण ह्वीलरका पतन हुआ और अभिमान तथा अपरिणामदर्शिताके कारण वाइंडहमको हारना पड़ा।

जिस युद्धकुशल वीरने वाइंडहमको हराया उसका नाम है तांतियातोपी। यह महाराष्ट्र ब्राह्मण था। अहमदनगरमें इसका जन्म हुआ था। यह नानासाहबके प्रधान मन्त्रियोंमेंसे था। अपने मालिकके काममें इसने हद दरजेकी विश्वस्तताका परिचय दिया था। इस समय इसकी अवस्था लगभग पचास वर्षकी थी। इसका गठा हुआ विशाल शरीर, उन्नत मस्तक, गौर वर्ण, तेजस्वी मुखमण्डल वीरताका परिचायक था। इस ब्राह्मणने अपने मालिक नानासाहबके भागनेके बाद अंग्रेज़ोंके विरुद्ध तलवार निकाली। अपनी वीरता और रणकौशलसे यह भी इतिहासके अमर पुरुषोंमें हो गया। यह ग्वालियरकी प्रसिद्ध सेनाका सेनापति बना। ग्वालियरकी सेना जैसी शिक्षित वैसे ही पराक्रमशील थी। इससे पहले कभी किसी लड़ाईमें यह सेनायें हारी न थीं। महाराज सिंधिया और उनके योग्य मंत्री भी इस सेनाको अपने वशमें न रख सके। वाइंडहमके पास २४०० सैनिक थे। इससे उन्होंने सोचा था कि तांतियातोपीकी इस सेनाको वे भगा देंगे। जब उन्हें मालूम हुआ कि यह सेना कानपुरसे सात मील दूर पांडू नदीके किनारे आ गई तब वे इसी स्थानसे उसके भगानेका विचार करने लगे।

२६ नवम्बरको अपनी सेना लेकर सेनापति वाइंडहम पांडू नदीकी ओर बढ़े। इधर तांतियातोपी युद्धके लिये तैयार था। वह ९ नवम्बरको कालपी गया था। कालपी यमुनाके दाहिने किनारे-पर कानपुरसे ४६ मील दक्षिणपश्चिम है। कानपुरसे कालपीके

रास्तेमें भगिनीपुर और सुचंडी गांव हैं। सुचंडीसे कानपुर १४ मील है। यहांसे पांडू और गंगा नदीकी नहरें अलग हुई हैं। सुचंडीसे ४ मील पांडू नदी और उससे चार मील गंगाकी नहर है। कालपीसे कानपुरका एक और भी रास्ता है। कालपीसे अकबरपुर तथा कुछ उत्तर शिवली गांव है तथा इससे चार मील गंगाकी नहर पार करनेपर शिवराजपुर गांव है। यह गांव बड़ी सड़कके किनारे गंगाके सरायघाटसे करीब तीन मील फासिलेपर, कानपुरसे २१ मील है।

चतुर मरहटा सेनापतिने कानपुरकी ओर चढ़ाई करते समय इन सब रास्तोंका नकशा बना लिया था। दूतोंकी सहायतासे प्रधान सेनापति काम्पबेलकी सेनाका राई रत्ती हाल उनसे मालूम हो गया था। उसने तीन हजार सिपाही और २० तोपोंसे कालपीकी रक्षा की। २० नवम्बरको यमुना पार होकर भगिनीपुरमें उसने १२०० सिपाही और चार तोपोंका व्यूह बना दिया। इसके बाद अकबरपुरमें २००० सिपाही और ६ तोपोंका किला बनाया। इससे आगे शिवलीमें २००० सिपाही और चार तोपोंका मोर्चा किया तथा शिवराजपुरमें १००० सिपाही और ४ तोपें रखीं। इस प्रकार १० से १६ तारीखतक मरहटा सेनापतिने इन सब स्थानोंपर कब्जा कर लिया। इसी तरफसे अंग्रेजी फौजोंके लिये रसद जाती थी। पर तांतियाकी व्यूह-रचनासे रसद जानी बन्द हो गई। २० नवम्बरको सेनापति वाइंडहमको पता लगा कि कालपीसे शिवराजपुरतक मरहटा

सेनापतिने कब्जा कर लिया है। यह ऊपर आ चुका है कि शिवली और शिवराजपुर गंगाकी नहरके पासके स्थान थे। सेनापति वाइंडहमने सोचा कि नहरके जरियेसे रातको सेना और तोपें भेजकर इन स्थानोंपर हमला किया जाय और अकबरपुरकी सेना आते न आते नहरके रास्तेसे ही वापिस आया जाय।

वाइंडहमने अपना इरादा लिखकर प्रधान सेनापतिके पास लखनऊ भेजा, पर वहांसे कोई जवाब न आया। कानपुरसे लख-नऊका रास्ता रुक गया था। वाइंडहमने अपनी सेना तैयार की। वे ग्वालियरकी रणकुशल सेनाको हरानेके लिये तैयार हुए। २४ नवम्बरको प्रातःकाल आगे बढ़कर उन्होंने कालपीके रास्तेमें, गंगाकी नहरके पुलके पास छावनी की। तांतियातोपीने समझ लिया कि वाइंडहम उनपर चढ़ाई करने आ रहे हैं। इसलिये वह भी तैयार हो गया। इसी दिन उसकी अकबरपुरकी सेना सुचंडीकी ओर चली। इस गांव और गंगाकी नहरके बीचमें पांडू नदी है। ग्वालियरकी सेना २५ तारीखको पांडू नदीके किनारे आ गई। समाचार पाते ही वाइंडहम आगे बढ़े। इस छोटी नदीके किनारे महाराष्ट्र सेनापतिसे उनका संग्राम हुआ।

२६ नवम्बरको सूर्य निकलनेके समय वाइंडहम अपने सामानकी रक्षाका प्रबन्ध करके तांतियाके व्यूहको देखनेके लिये आगे बढ़े। उन्होंने देखा कि पांडू नदी करीब करीब सूखी पड़ी है और उसके किनारेपर २५०० पैदल सिपाही सेना, ५०० सवार और ६ बड़ी तोपें जमी हुई हैं। वाइंडहमने इनपर धावा करनेकी

आज्ञा दी। सिपाहियोंके सामने घने पेड़ोंकी कतार थी। जब अंग्रेजी सेना उनके सामने बढ़ी तब तांतियाने अपनी सेना दाहिनी ओर हटा दी। इसके बाद तोपोंके गोले बरसने लगे। अंग्रेज़ी तोपें भी चुप न थीं। अंग्रेज़ी तोपोंने तांतियाकी तीन तोपोंको निकम्मी कर दिया। तीनों अंग्रेज़ी सेनाके कब्जेमें चली गईं। बन्दूकोंकी भी लड़ाई हुई। सिपाही पीछे हट गये। मैदानसे पीछे हटकर वाइंडहमकी सेना कानपुरकी ओर चली। यह देखकर सिपाही सेनाका जोश और अधिक बढ़ा। सिपाही रिसालाने पीछेसे हमला किया। यह देखकर अंग्रेज़ी सेना फिर घूमकर खड़ी हुई। पर फिर धावा न किया गया। कालपीके रास्तेपर कुछ दूर चलकर वाइंडहमकी सेनाने ईंटोंके भट्ठोंके सामने अपना शिविर स्थापित किया। उनके १२ आदमी मरे और घायल हुए थे। तांतियाकी सेनाके इससे अधिक मरे और घायल हुए थे। इस समय प्रधान सेनापतिका पत्र वाइंडहमके पास आया कि लखनऊकी तमाम गड़बड़ शान्त हो गई। अब उनकी सेना कानपुरकी ओर आ रही है। वाइंडहमने समझा कि तांतिया-की इस लड़ाईमें जैसी हानि हुई है उससे वह दो चार दिनतक अंग्रेज़ी सेनापर हमला न करेगा। तबतक प्रधान सेनापति आ जायँगे। यह सोचकर वाइंडहम वहीं सेना डाले पड़े रहे।

पर मरहटा सेनापति इतना अज्ञानी न था जो इस घातको न समझता हो। महाराष्ट्र सेना जब मुसलमानोंसे लड़ी थी तब उसकी रणकुशलता, व्यूहरचना और आत्मरक्षाकी योजना तांति-

याने देखी थी और महाराज शिवाजीकी व्यूहरचनाकी बातें सुनी थीं। वह पीछे हटने, आगे बढ़ने और भागती सेनापर हमला करनेके कौशलसे परिचित था। अंग्रेज़ी सेनासे एक लड़ाई लड़कर उसे अपनी कमजोरीका पता लग गया। वह पीछे हट गया था। वह समझता था कि सिपाही ब्रिटिश सेनाके धावाके सामने नहीं टिक सकते। अब उसने देखा कि अंग्रेज़ी सेना वापिस जानेकी चिन्तामें है। इससे उसने वाइंडहमकी गलती मालूम कर ली।

रणकुशल महाराष्ट्रने वाइंडहमको २४ घंटेका भी अवसर न दिया। उसने आज्ञा दी कि जो सिपाही सेना २६ तारीखको सवेरे लड़ी थी वह अपनी कमर कसे तैयार रहे। शिवली और शिवराजपुरकी सिपाही सेनायें जिस वक्त दाहिनी ओरसे आकर अंग्रेज़ी सेनापर गोलियां बरसावें उस वक्त यह सेना बाईं ओरसे धावा करे। यह आज्ञा देकर महाराष्ट्र वीर आगे बढ़ा। जैसेही अंग्रेज़ी सेनापर उसकी नजर पड़ी वैसे ही उसकी तोप गरजकर गोले फेंकने लगी। अंग्रेज़ी तोपें भी इसके जवाबमें गरजने लगीं। पर अबकी बार तांतियाकी तोपें इतनी भयानक थीं कि अंग्रेज़ी सेना बिलबिलाने लगी। तांतियाने बड़ी बुद्धिमानीसे अपनी सेनाका किला बनाया था। पहले उसने तोपोंको आगे बढ़ा कर उन्हींसे युद्ध प्रारम्भ किया था। फौजें पीछे किला बना कर खड़ी थीं। जो अंग्रेज़ी सेना आगे बढ़ती तो उसी समय घिर जाती। पांच घंटेकी लड़ाईके बाद वाइंडहमको मालूम हुआ कि तांतियाकी सेना कानपुरमें घुसने लगी है, कोई उपाय न देखकर वाइंडहम-

ने अपनी सेनाको वापिस मिट्टीके किलेमें घुसकर आत्मरक्षा करनेकी आज्ञा दी। अंग्रेज़ी सेना वहांसे भागी। भागती सेना तोपोंकी मारसे बिछौना होने लगी। अंग्रेज़ी सेनामें कोई नियम न रहा। उनके नौकर भाग गये थे। सामान सिपाहियोंके कब्ज़ेमें चला गया था। करीब तीन सौ ब्रिटिश सैनिक मारे गये। गोरे इतने घबरा गये थे कि एक लाइनमें चलना कठिन था। मालगोदामके बक्स तोड़कर उन्होंने शराबकी बोतलें निकाल लीं और शराब पीते हुए पागलोंकी तरह वापिस भागे। मिट्टीके किलेके दरवाजेपर एक सिक्ख सर्दार खड़ा था। उसने इनको इस तरह भागते देखकर कहा कि ठहरकर पहले अपनी लाइन बना लो। पर उसे धक्का देकर गोरे भीतर घुसने लगे। यह देख कर सिक्ख सर्दारने कहा—"जिन्होंने खालसा फौजोंको हराकर पंजाब जीता, तुम उनके भाई नहीं हो।" तांतियातोपीके रण-कौशलसे २७ नवम्बरको अंग्रेज़ी सेना इस बुरी तरहसे भागी।*

इस समय भी वाइंडहम सीधे मिट्टीके किलेमें न जाकर, गंगा और शहरके बीचवाले आमके बगीचोंमें ठहरे। यहांपर गिर्जाघरके अलावा अन्यान्य गृह तथा ५०० नये तंबू तथा ११ हजार बक्स कारतूसोंके, घोड़ोंका सामान तथा कपड़े आदि थे। यह सम्पत्ति लगभग पांच लाख रुपयेकी थी। २० तारीखको यह सब अंग्रेज़ सेनापति किलेमें ले जा सकते थे। पर उन्होंने इस ओर कुछ ध्यान ही न दिया। शायद उनका खयाल था कि

* Russell's Diary Vol, I P. 206

वे अपने इसी स्थानसे इस सामानकी रक्षा कर सकेंगे। दूसरे दिन सवेरे ही तांतियातोपीने कानपुरपर अधिकार किया। बीबी-घर और गंगाके किनारेतक उसका अधिकार हो गया। शहरके बाहरी हिस्सेमें तोपें लगाकर इस बाहर पड़ी सेनापर उन्होंने ऐसे गोले बरसाये कि शाम होते होते यह सेना भी भागकर मिट्टीके किलेमें चली गई। बाहर पड़ा यह भांडार सिपाही सेनाके हाथ लगा। जो सामान सिपाहियोंके मतलबका था, वह उन्होंने ले लिया और बाकीमें आग लगा दी। कर्नल नेपियर (बादमें लार्ड) ने इंजीनियरिंग महकमामें रह कर जो कागज पत्र बड़ी मिहनतसे तैयार किये थे वे सब इसीमें जल गये।

वाइंडहमकी सेनामेंसे किसी २ अफसरने तांतियाकी सेना-को बाधा देनी चाही थी पर सामनेकी तोपोंकी मार इतनी प्रबल थी कि कोई सैनिक आगे न बढ़ सका। बूढ़े ब्रिगेडियर विलसनका घोड़ा मर गया। अन्तमें वे भी मर गये। दो अफसर और काम आये। पर उनकी वीरतासे सिपाही सेना आगे न बढ़ सकी। तांतियाने न नावोंका पुल तोड़ा और न गंगाकी नहर ही पार की। इसलिये लखनऊसे कानपुर और कानपुरसे इलाहा-बादका रास्ता साफ था। पर २७ तारीखको तांतियाकी वीरतासे अंग्रेज़ी सेना चिन्तामें पड़ गई कि आजकी रात और कलका दिन कैसे बीतेगा। पर रात शान्तिसे बीती। दूसरे दिन सवेरे ही उन्हें प्रधान सेनापतिकी सेना गंगाका पुल पार करती दिखाई दी।

प्रधान सेनापति काम्पवेल लखनऊसे कानपुरके लिये बड़ी

जल्दी चले थे। २६ नवम्बरको जब वाइंडहमने तांतियाकी सेनाका अपार बल देखा तब उन्होंने पत्र लिखकर दूतको दिया कि कानपुरसे लखनऊके रास्तेमें जो कोई अंग्रेज़ सेनापति मिले उसे पत्र दिया जाय। हिन्दुस्तानी दूतने काम्पबेलके एक सैनिकके हाथमें पत्र दिया। पत्र पढ़कर प्रधान सेनापति समझ गये कि कानपुरपर हमला हो गया। इसलिये वे जितनी जल्दी हो सका कानपुरकी ओर बढ़े। गंगाके किनारे पहुंचकर उन्होंने देखा कि नावोंका पुल वैसे ही बना है। वे गंगाके उसी किनारे ठहर गये। थोड़ी सेनाके साथ सेनापति पुल पार करके किलेके पीछेकी ओर आये और रस्सा डाल डालकर मिट्टीकी दीवारपर चढ़ गये। इस प्रकार प्रधान सेनापति वाइंडहमसे मिले। इस समय वाइंडहमकी रणकुशलता और बुद्धि-चातुरी तांतियातोपीके सामने पराजित थी। कानपुरकी यह अवस्था देखकर प्रधान सेनापति दुःखित हुए। वाइंडहमको अपनी तमाम बातें बताकर वे वापिस गंगा पार करके अपनी सेनामें आये। रातभर तोपें, सामान और पीछे रही हुई स्त्रियां, बालक, रोगी उनके पड़ावपर आते रहे।

दूसरे दिन तांतियातोपीने देखा कि गंगाके दूसरे किनारे अंग्रेज़ी सेना आ गई। यह देखकर उसने नावोंके पुलके सामने बड़ी बड़ी तोपें सटा दीं। पर कप्तान पीलकी तोपोंसे इस जोरसे गोले बरसने लगे कि तांतियाकी तोपें कुछ काम न कर सकीं। प्रधान सेनापतिकी सेना नावोंके पुलपरसे कानपुरकी ओर बढ़ने लगी। उनके पीछे पीछे सामानोंकी गाड़ियां और लखनऊ-

के घिरे अंग्रेजों, स्त्रियों और बच्चों तथा घायलोंकी सवारियां चलने लगीं। २६ नवम्बरको तीसरे पहर यह दल कानपुरकी ओर बढ़ा और ३० नवम्बरकी शामको कानपुर पहुंचा। गंगाकी नहरके दूसरे किनारे विशाल मैदानमें इनका डेरा लगा। इस समयसे पांच महीने पहले जिस जगह सेनापति ह्वीलरने घिरकर लड़ाई की थी और अन्तमें निकलकर प्राण दिये थे, उसके निकट ही काम्पवेलका शिविर लगा।

इस समय कानपुर शहर और गंगाका किनारा विपक्षी सिपाहियोंके कब्जेमें था। उनकी तादाद भी काफी थी और तोपोंकी ताकत भी कम न थी। इसके अलावा एक बार ब्रिटिश सेनाको हरा कर उनका उत्साह चौगुना बढ़ गया था। उन्होंने अपना व्यूह भी बड़ी चतुराईसे बनाया था। उनके बांये गंगा और शहरका किनारा, बीचमें ऊंचे पेड़ और खंडहर थे, पीछे शहरकी बस्ती थी, जिसमें बचनेके लिये बहुतसी गलियां और रास्ते थे। नहरके इस किनारेपर ग्वालियरकी सेनाका शिविर था। नहरका पुल उनके कब्जेमें था। दूसरी ओर भारतके प्रधान ब्रिटिश सेनापति काम्पवेल थे जिन्होंने सैकड़ों संग्राम जीते थे, हजारों तरहके व्यूह और लड़ाइयां लड़ी थीं। वे बड़े चतुर सेना-नायक थे। उन्होंने देखा कि तांतियाकी सेनाका बायां हिस्सा और बीचका भाग मजबूत है। पर दायां हिस्सा कमजोर है क्योंकि बाईं ओर घने वृक्ष और गंगाका किनारा उनके बचावके लिये काफी है और बीचके हिस्सेमें शहर है पर दाहिनी ओर खुला

मैदान है। जो इस दायें बाजूपर जोरका हमला किया जाय तो बीच और बाईं बाजूसे जबतक सेना मददके लिये आवेगी, तब तक इसे हराया जा सकता है। दूसरे इस स्थानपर कब्जा हो जानेसे फिर कालपीकी सेनासे कानपुरकी सेना न मिल सकेगी और यों सिपाहियोंकी ताकत कम हो जायगी।

सेनापति काम्पवेलने यह विचार किया, पर विचारके अनुसार उन्होंने शीघ्र हमला न किया। कारण यह था कि उनके पास इस समय लखनऊके बहुतसे सहायहीन अंग्रेज़, स्त्री, बच्चे तथा रोगी और घायल थे। इनकी रक्षाका पूरा इन्तजाम किये बिना वे विपक्षियोंपर हमला करना न चाहते थे। इनमेंसे कोई अनाथ हो गया था, कोई बन्धुबांधवहीन हो गया था और कोई जख्मी घायल पड़ा था। सेनापति इन्हींके लिये चिन्तित थे। पहली, दूसरी और तीसरी दिसम्बरको इन सबको इलाहाबाद भेजनेका प्रबन्ध हुआ। तीसरी दिसम्बरको ये सब रक्षित इलाहाबादके लिये रवाना किये गये। इन कई दिनोंमें सिपाहियोंने छोटे मोटे हमले किये थे पर उनसे कोई हानि लाभ न हुआ। इधर प्रधान सेनापति अपने रक्षितोंको भेजकर चिन्तासे मुक्त हुए। अब वे तांतियाकी सेनाके सामने आये। उनके पास ५ हजार पैदल, ६०० सवार और ३५ तोपें थीं। तांतियातोपीके पास २५ हजार सैनिक थे जिनमें १४ हजार शिक्षित सिपाही और बाकी उनके सहायक थे। ४० तोपें उनके पास थीं। ग्वालियरकी चार गोलंदाज सिपाही फौजें, नानासाहबके नौकर और बुंदेल-

खंडके सिपाही भी इनके साथ थे। तांतियातोपी तमाम सेनाके अध्यक्ष थे। नानासाहब बायें हिस्सेकी सेनाके संचालक थे।*

६ दिसम्बरको सवेरे हीसे दोनों सेनाओंका युद्ध शुरू हुआ। तांतियातोपी और नानासाहब अपनी सेनाको आगे बढ़ाने लगे। इधर प्रधान सेनापति काम्पबेल, वाइंडहम, वालपोल आदि सेनापति अपनी सेनाका संचालन करने लगे। दिनभर दोनों ओरकी सेनायें लड़ती रहीं। कप्तान पीलकी तोपोंने बड़ा काम किया। तोपोंकी मारसे सिपाही सेना घबरा उठी। अन्तमें तांतियातोपी हार गया। उसकी सेना तितर बितर होकर भागी। अंग्रेज़ी सेनाने १४ मील तक इनका पीछा किया। इस तरह भगा कर आधीरातको ब्रिटिश सेना वापिस कानपुर आई।

ग्वालियरकी सेना इतनी जल्दीमें गई थी कि वह अपने साथ कोई चीज न ले जा सकी। जब ब्रिटिश सेनाने वापिस आकर उनका शिविर देखा तब वहां किसीकी दाल चूल्हेपर चढ़ी थी, किसीका आटा गुंधा था, किसीकी रोटियां बनी रखीं थीं। सामानकी गाड़ियाँ वैसे ही खड़ी थीं। ब्रिटिश सेनाके हमलासे सिपाही सब कुछ छोड़कर भाग गये थे। प्रधान सेनापतिने सेनापति मान्सफील्डको बिठूरका रास्ता रोकनेको भेजा था। पर वे रोक न सके। जो वे यह रास्ता रोक लेते तो सिपाहियों-को भागनेको रास्ता न रहता। बिठूरके रास्तेसे भागकर सिपाही

---

* मार्टिन साहबने लिखा है कि नानासाहबके भाई बालासाहब थे।—
Indian Empire, Vol. II. P. 474

शिवराजपुरके सामने सरायघाटसे गंगा पार होकर अयोध्याकी ओर जानेका विचार कर रहे थे। प्रधान सेनापतिने सेनापति होपग्रांटको उनका पीछा करने भेजा। सिपाही गंगा पार होनेका प्रबन्ध कर रहे थे, उसी समय होपग्रांटकी सेनाने उनपर हमला किया। १५ तोपें छोड़कर सिपाही भाग गये। यह लड़ाई ६ दिसम्बरको शिवराजपुर गांवके सामने हुई थी। इस तरह यह ग्वालियरकी सेना गंगा पार न होकर कालपीकी ओर गई। तांतियातोपीने फिर इस सेनाको एकत्र किया। नाना-साहब बिठूर आये थे पर हारका समाचार सुनकर अपने नौकरों और तोपों सहित गंगा पार होकर अवधकी ओर चले गये। प्रधान सेनापतिकी आज्ञासे ११ दिसम्बरको होपग्रांटने बिठूर जाकर नानासाहबका मन्दिर और महल तोपोंसे गिरा दिया। नानासाहबके महलमें जो कुंआ था उसमेंसे तीस लाख रुपया और चांदी सोनेके बर्तन ब्रिटिश सैनिकोंने निकाले।*

*नानासाहबके आनेकी खबर एक विश्वासी सैनिक अर्जुन तिवारीने राबर्टसको दी थी। अर्जुन तिवारीने बांदाकी गड़बड़में एक अंग्रेज और मेमकी जान बचाई थी। तबसे यह दूतका काम करने लगा था। ग़दरके बाद इसे उम्र भर सौ रुपया महीना मिलता रहा। Forty-one years Vol. I P. 37. note.

दसवाँ अध्याय

फतेहगढ़पर अंग्रेजोंका अधिकार—प्रधान सेनापतिकी लखनऊ यात्राका उद्योग और लखनऊपर चढ़ाई—उन्नावमें सेनाका ठहरना—दूतका विचित्र विवरण और उसको फाँसी।

ग्वालियरकी शिक्षित सेनाके हमलेका डर कानपुरसे जाता रहा। पर गंगा यमुनाके बीचके प्रदेशमें हर जगह सिपाहियोंका जोर था। सेनापति ग्रिथेड और होप-ग्रांट भिन्न भिन्न स्थानोंपर गये थे पर इससे विप्लवकी शान्ति न हुई थी। फिर प्रबल होकर सिपाहियोंने फतेहगढ़ और मैनपुरीसे अंग्रेज़ी राज्य उठा दिया था। प्र० सेनापति कालम्बेल इन सब स्थानोंपर फिर कब्जा करनेको तैयार हुए। वे दुआबपर कब्जा करके सिपाहियोंको खदेड़ना चाहते थे। इस दुआबके तीन स्थान उनके कब्जेमें थे। उत्तरपश्चिम दिल्ली, दक्षिणपूर्व इलाहाबाद और दोनोंके बीचमें आगरा ब्रिटिश अधिकारमें थे। पर फ़तेहगढ़ और फर्रुखाबादके नवाब स्वाधीन हो रहे थे। सबसे पहले उन्होंने इन्हीं स्थानोंपर कब्जा करना चाहा। सेनापति वालपोलको उन्होंने मैनपुरीतक कब्जा करनेके लिये भेजा। दुआबके उत्तरपश्चिमसे कर्नल सीटनकी देखभालमें सेनाके लिये रसद आती थी। इन्हें मैनपुरीके पास वालपोलसे मिलनेकी

आज्ञा दी गई। यहां दोनों सेनापतियोंकी सेना मिलाकर फतेहगढ़की ओर जानेकी योजना हुई।

कर्नल सीटन रसद पहुँचानेपर मुकर्रर थे। ६ दिसम्बरको रसद लेकर ये अपनी सेनाके साथ दिल्लीसे चले। इससे पहले उन्हें समाचार मिला था कि विद्रोही अलीगढ़में हैं। एक स्थानपर वे रसद और सामानको रखकर तथा उसकी रक्षाके लिये थोड़ी सेना छोड़कर बाकीको साथ लिये हुए विद्रोहियोंकी ओर चले। खासगंज और पतियालीमें दो जगह लड़ाई हुई। कप्तान हडसनके रिसालाने बहुत काम किया। विद्रोहियोंको हराकर यह सेना मैंनपुरीकी ओर बढ़ी। मैंनपुरीके राजा तेजसिंहने इनको बाधा देनेकी बड़ी कोशिश की पर उनका प्रयास विफल हुआ। २७ दिसम्बरको अंग्रेज़ी सेना मैंनपुरीके संग्राममें विजयी हुई। इधर ब्रिगेडियर वालपोल अकबरपुर और इटावा होते हुए मैंनपुरीके पास कर्नल सीटनसे मिले। दोनों सेनापतियोंने अब फतेहगढ़की ओर यात्रा की।

इधर २४ दिसम्बरको प्रधान सेनापति कानपुरसे चले। ३१ दिसम्बरको वे गुरसागंज पहुँचे। कप्तान हडसन, सेनापति वालपोल और सीटन पहले ही आ गये थे। प्रधान सेनापतिका शिविर यहांसे पन्द्रह मील मीरांकी सराय नामक स्थानपर था। इस स्थानसे पांच मीलके फासिलेपर काली नदी थी। जो सिपाहियोंमें कुछ भी बुद्धि होती तो वे नदीके पुलको तोड़कर सेनाके रास्तेमें रुकावट पैदा करते। पर विपत्तिके समयमें उनकी बुद्धि

भी मारी गई थी। जब अंग्रेज़ी सेना गुरसागंज पहुंची तब उन्होंने पुल तोड़नेकी कोशिश की, पर कोशिश नाकामयाब रही। प्रधान सेनापतिने सोचा था कि जबतक वालपोल और सीटन न आ जायं तबतक वे गुरसागंजमें ही पड़े रहेंगे, पर जब उन्होंने पुलके तोड़े जानेकी खबर सुनी तब अपना इरादा बदल दिया। १ जनवरी १८५८ के नये दिन वे उत्साहके साथ खुदागंज होकर काली नदीके पुलके सामने पहुंचे। पुलका जो हिस्सा सिपाहियोंने तोड़ दिया था, उसकी सैनिक इंजीनियरोंने झटपट मरम्मत की। दूसरे दिन सिपाही फतेहगढ़से निकलकर ब्रिटिश सेनाको रोकनेके लिये काली नदीके किनारे आये। जब सवेरेका कुहरा दूर हुआ तब दिखाई दिया कि फर्रुखाबादके नवाब-की सेना खुदागंजमें आ गई है। नदीके किनारे खुदागंजके मैदानमें २ जनवरीको दोनों सेनाओंका संग्राम हुआ। सिपाहियोंने दृढ़ता और वीरतासे युद्ध किया। उनकी एक तोप पुलके पास ढोलघरपर रखी थी। उससे अंग्रेज़ी सेनाके सैनिकोंकी बड़ी हानि हुई। इस तोपको रोकनेके लिये कप्तान पोलकी तोपें लगाई गईं। इन तोपोंके गोले ढोलघरपर गिरने लगे। इससे सिपाहियों-की तोप भी निकम्मी हो गई और बहुतसे मारे भी गये। जब इस तरह सिपाहियोंने अपनी हानि होती देखी तब वे बाकायदा पीछे हटे। जब वे तीन चार मील पीछे हट गये तब फिर लड़ने-को खड़े हुए पर सिक्ख सवारोंकी तलवारोंसे बहुतसे मारे गये। बहुतसे मैदानके गढ़े मुर्दोंसे भर गये। यहांसे हटकर

सिपाही फतेहगढ़ खाली करके गंगाकी ओर गये। गंगापार होकर वे रुहेलखंडमें चले गये।

दूसरे दिन काउपवेल फतेहगढ़के किलेकी ओर गये। तोपोंके गोलोंसे किलेका दरवाज़ा तोड़ दिया गया। सिपाही सब चीजें छोड़कर पहले ही चले गये थे। तोपोंकी गाड़ियाँ, कपड़े, वर्दियां सब मिलाकर लगभग दस लाख रुपयेकी सम्पत्ति सिपाही छोड़ गये थे। सिपाहियोंने इसे भस्म नहीं किया। जाते हुए उन्होंने गंगाका नावोंवाला पुल भी ज्यों का त्यों रहने दिया। अब ब्रिटिश सेना इस पुलकी रक्षा करने लगी।

ग्वालियरकी सेनाके हारके बाद गंगाके दाहिने ओरकी बस्तियोंमें फौजी कानूनके स्थानपर साधारण कानूनकी घोषणा हो गई थी। दीवानी विभागके कर्मचारी सर्व-साधारणकी सम्पत्ति लेने देनेका प्रबन्ध कर रहे थे। इस समय अफवाह उड़ी थी कि फर्रुखाबादके नवाब शहरमें ही हैं। जजने घोषणा की कि जो नवाब गिरफ्तार न हुआ तो ब्रिटिश सेना शहरमें लूट करेगी। कुछ देर बाद नवाब गिरफ्तार होकर विचारकके सामने पेश किये गये। पर यह नवाब न था, नवाब-का सम्बन्धी था। इसका नाम नजीरखां था। इसकी जो दशा हुई उसके विषयमें सार्जेंट फार्ब्स मिचलने अपने विवरणमें लिखा है—"एक मामूली चारपाईपर लिटाकर इस नवाबके सम्बन्धीके हाथ पैर बांध दिये गये और उसे उठाकर कुली लाये। मुकदमा कैसे हुआ यह तो मुझे मालूम नहीं, पर कोई जूरी

या वकील नहीं था, यह निस्सन्देह है। पहले उसके तमाम शरीर-पर सुअरकी चर्बी लगाई गई, फिर भंगियोंने बेतें मारीं, अन्तमें उसे फांसीपर लटकाया।"* कर्नल आलिसन नामक दूसरे सैनिकने लिखा है—"नजीरखांको फांसी दी गई, पर फांसीसे पहले इस-पर व्यर्थके अत्याचार किये गये। इसे जबर्दस्ती सुअरका मांस खिलाया गया। भंगियोंने इसे बेतें मारीं। यह एक सभ्य और उन्नत जातिके अयोग्य काम था।"† रेकस साहबने लिखा है कि २६ जनवरीको फरूखाबादके दो नवाबोंको फांसी दी गई। इनके नाम नहीं बताये गये। मजिस्ट्रेटने फांसी दिलवाई थी, पर इसमें सन्देह था कि वे अपराधी भी हैं या नहीं।‡ अंग्रेज़ोंको उस समय क्रोध था, जोश था। वे अधिक न्याय अन्यायकी परवा न करते थे। शायद मजिस्ट्रेटको यह खयाल था कि नवाब-के वंशवालोंने अंग्रेज़ोंका खून किया है। इसी कारण उन्होंने नवाबवंशवालोंसे राक्षसी बदला लिया। पर उन्हें यह मालूम न था कि उन्हींके देशवासी उनके ऐसे निर्दय कामोंसे घृणा करेंगे। अंग्रेज़ोंको ऐसे अन्यायसे लज्जा आवेगी।$ गवर्मेंटने

* Reminiscences. P. 168

† Martin's Indian Empire. Vol. II P. 476

‡ Raikes' notes on the Revolt &c. P. 107 Indian Empire Vol. II P. 476

$ Russel's Diary Vol. II P. 42-43.

जिस आसनपर उन्हें बैठाया था उससे नाराज होकर इन्हें मुअ-त्तिल (ससपेंड) किया।* सचमुच यह निर्दयताकी हद थी।

रेक्सने नवाबके महलके वर्णनमें लिखा है कि मकान खाद्य पदार्थोंसे भरा था। सुख भोगकी सामग्रियोंका अन्त न था। आईने, झाड़, लालटेनें, तसवीरें, पुस्तकें सब अपने अपने स्थान-पर सजी हुई थीं। भीतर महलमें दो तीन बूढ़ी औरतोंके अलावा और कोई न था। मैना, तोते, बिल्ली और कुत्ते भूखे पुकार रहे थे। नीचे एक हाथी जंजीरसे खुला हुआ चरी खा रहा था। पर घोड़े अपने अपने स्थानोंपर जकड़े हुए बँधे थे, उनके आगे घास न थी। वे भूखके मारे टापोंसे बार बार जमीन खोदते थे। थोड़ी दूरपर जो दाना रखा था उसपर उनकी भूखी नजर थी। नीलगाय, बारहसींगे, बन्दर और बतखें खानेके लिये व्याकुल थीं। रेक्सने इन सब जीवोंको खाना देनेका प्रबन्ध किया।†

प्रधान सेनापति फतेहगढ़में शिविर डालकर पड़े रहे। रुहेल-खंडके बहुसंख्यक सिपाही उनकी गति देखने लगे। जब उन्होंने सुना कि प्र० सेनापति रामगंगाके पुलको देख रहे हैं, तब वे स्थिर न रह सके, क्योंकि रुहेलखंडमें आनेके लिये राम-गंगाके पुलपरसे ही रास्ता था। इसलिये पहले ही बाधा देनेको वे तैयार हुए। ५००० सिपाही पांच तोपें लेकर फतेहगढ़से

* Martin's Indian Empire. Vol. II P. 476 note

† Raikes' notes on the Revolt &c. P. 107

उत्तर पांचमील गंगापार हुए और अंग्रेज़ोंके अधिकृत शमसाबाद्-पर चढ़ाई की। पर उनकी मंशा पूरी न हुई। वे शमसाबादसे भगा दिये गये। अंग्रेज़ सेनापतिने उनकी तोपें छीन लीं। इसी विभागका पालामऊ नामक स्थान भी सेनापतिने ले लिया। यहाँका तहसीलदार अपने आपको दिल्लीके बादशाहके अधीन कहकर राजा बन गया था। इन सबको गिरफतार किया गया। इनका इंसाफ कैसे हुआ यह पता नहीं। इंसाफ कैसा होता था सो ९३ नं० हाईलैंडर सेनाके फार्ब्स मिचलके वर्णनसे ऊपर दिया जा चुका है। इस घटनाके समय भी फार्ब्स मिचल मौजूद था। उसने देखा कि दलके दल आदमी कोतवालीके सामने पीपलके पेड़के नीचे लाये गये। वहाँ गलेमें रस्सियां बांधकर उन्हें पेड़से लटका दिया गया। इतने आदमी लटकाये गये थे कि पेड़में जगह न रही। १३० आदमियोंको फांसी दी गई। कप्तान हडसनकी कठोर प्रकृतिकी बात पहले कही जा चुकी है। इस अवसरपर भी उन्होंने अपना परिचय दिया। मजिस्ट्रेटने ९३ नं० हाईलैंडर सेनाके सैनिकोंसे पूछा कि वे लोग इन अपराधियोंको फांसी देनेको तैयार हैं या नहीं, अप-राधियोंकी अंगूठियाँ और रुपया पैसा उन्हें मिलेगा। पर वीर हाईलैंडरोंमेंसे कोई ऐसा नीच काम करनेको तैयार न हुआ। जब मजिस्ट्रेटने एक लंबे हाईलैंडरसे पूछा, तब उसने कहा—"आप यह क्या कह रहे हैं? हम हाईलैंडर हथियारबंद आदमियोंके साथ लड़नेके लिये सैनिक बने हैं। आप हमें

हिन्दुस्तानकी तमाम दौलत दे दें, तब भी हम जल्लाद नहीं बन सकते।" इसके पास ही कप्तान हडसन खड़े थे। सैनिककी यह बात सुनकर उन्होंने कहा—"ठीक है, मैं तुमसे हाथ मिलाना चाहता हूं।" यह कहकर उन्होंने हाईलैंडरसे हाथ मिलाया और कहा—"मुझे ऐसी बातोंसे घृणा है। ऐसे स्थानपर कर्त्तव्य पूरा करनेके लिये मैं नियुक्त नहीं हुआ इससे सन्तुष्ट हूं।" यह कहकर वे घोड़ेपर बैठकर वहांसे चले गये। इसके बाद कुछ डोम मिले जिनसे इन लोगोंको फांसी दिलवाई गई।

सर कोलिन काम्पवेल लगभग एक महीनेतक फतेहपुर रहे। इस कारण बहुतसे अंग्रेज़ उनसे असन्तुष्ट हो गये थे। कलकत्ताके अखबार उन्हें शिथिल प्रकृतिका लिखने लगे। पर इससे भी वे न घबराये। ग्रिथेड आदि सेनापतियोंने दूसरे स्थानोंपर जाकर अधिकार किया था। पर सम्पूर्ण सिपाहियोंको इससे हानि न पहुँची थी। उन स्थानोंमेंसे कइयोंको विद्रोही सिपाहियोंने फिरसे ले लिया था। पर प्रधान सेनापतिने एक स्थानसे दूसरे स्थानकी यात्रामें जल्दी न की। वे जहां गये वह स्थान अच्छी तरह ब्रिटिश अधिकारमें आ गया। खैर, फतेहपुरमें रहकर सेनापति सिपाहियोंकी गति देखने लगे। उनकी इच्छा थी कि वे फतेहगढ़से रुहेलखंडकी ओर जायँ, पर गवर्नर जनरलने सम्मति न दी। लार्ड कैनिंगने लिखा था कि सम्पूर्ण पश्चिमोत्तर प्रदेशमें रुहेलखंडपर अधिकार करना आवश्यक है, पर उससे भी अधिक लखनऊपर कब्जा करना जरूरी है। जैसे

पहले दिल्लीपर सबकी नज़र थी वैसे ही इस समय अवधपर है। अवध इस समय सिपाहियोंकी शक्तिका केन्द्र है। अवधके कारण सिपाहीशक्तिका उत्थान और पतन हो सकता है। प्रधान सेनापति भी गवर्नर जनरलकी बातसे सहमत हुए। उन्होंने अपने धैर्य और गाम्भीर्यकी रक्षा करते हुए लिखा कि लड़ाईपर जाती हुई सेनापर भी गवर्नर जनरलकी क्षमता है। यह लिखकर वे लखनऊ रवाना हुए। जब फौजोंकी तनख्वाहके सम्बन्धमें सर चार्ल्स नेपियर और लार्ड डलहौज़ीमें मतभेद हुआ तब सर चार्ल्स इस्तीफा देकर चले गये थे, पर गवर्नर जनरलसे मतभेद होनेपर भी काम्पबेलने ऐसा न किया। ३ फरवरीको उनकी सेना फतेहगढ़से लखनऊके लिये रवाना हुई। कानपुर होते हुए ये ८ फरवरीको उन्नाव पहुंचे। इस समय गवर्नर जनरल इलाहाबादमें आ गये थे। उन्नावसे प्रधान सेनापति इलाहाबाद जाकर उनसे मिले और १० फरवरीको वापिस आकर उन्नावसे लखनऊके लिये चले।

लखनऊपर अधिकार करनेके लिये कानपुरमें सेना संग्रह की गई। जहां जहांसे मिल सकीं वहांसे गोरी, सिक्ख, गोर्खा सेनाएं एकत्र की गईं। भिन्न भिन्न सेनापति भिन्न भिन्न सेनाओंके संचालक बने। कप्तान पीलकी समुद्री सेना और जंगी तोपखाना साथ हुआ। जिस समय उन्नावमें चारों ओरसे इस प्रकार सेनाएं एकत्र हो रही थीं, भारी २ तोपें ले चलनेके लिये सटाई जा रही

जासूस मुहम्मद अलीकी कथा

थीं, रसद इकट्ठी की जा रही थी, तब एक घटना हुई। ९३ नं० हाईलैंडरके फार्ब्स मिचलने उसका वर्णन इस प्रकार किया है—"इस समय हमें कोई काम न था। अपने तम्बूमें पड़े २ लंडनके अखबार पढ़ रहे थे। इसी समय मैंने सुना एक आदमी ज़ोर २ से आवाज़ लगा रहा है—अंगूर किशमिश बेदानाकी मिठाई लो—अंगूर किशमिश लो। यह फेरीवाला देखनेमें सुन्दर डीलडौलका, काली डाढ़ी मूछोंवाला युवा था। सिपाहियोंकी डाढ़ी मूछें जैसी हुआ करती थीं वैसी ही इसकी भी थीं। सूरतसे यह व्यापारी नहीं मालूम होता था। जो आदमी उसके साथ टोकरा लिये था वह सूरतसे बदमाश मालूम होता था। शिविरमें जो सौदेवाला आता था उसे पास दिया जाता था। दोनोंकी ऐसी सूरतें देखकर मैंने उनसे पूछा, पास कहां है? उसने अंग्रेज़ीमें कहा कि ब्रिगेडियर होपने मुझे पास दिया है, मेरा नाम जिमी ग्रीन है—पहले मैं खानसामा था।" जिमी ग्रीनकी सूरत और उसकी शुद्ध अंग्रेज़ी सुनकर मैं आश्चर्यमें रह गया। अंग्रेजोंपर उसका अधिकार था, इसलिये मेरे बराबर बैठकर उसने अखबार देखनेको मांगा। मैंने समझा कि वह विलायतके सम्पादकोंकी सम्मति ग़दरके विषयमें जानना चाहता है। बातचीतमें उसकी अनर्गल अंग्रेज़ी बोलनेकी मैंने तारीफ की। उसने कहा कि मेरा बाप अंग्रेज़ी पल्टनका खानसामा था। मैंने बचपनसे अंग्रेज़ी बोलना सीखा है। रेजीमेंटके स्कूलमें मेरी शिक्षा हुई है। मेरी माँ ८७ नं० आयर्लैंड सेनाके

बाज़ारमें रहती है। आगे चलकर जिमी ग्रीनने कहा—और तो और पर तमाशा यह है कि हाईलैंडर मिठाई खाकर दाम नहीं देते। यह कहकर वह दाम मांगने लगा। जिससे दाम मांग रहा था वह और जिमी ग्रीन दोनों दूसरे तंबूमें चले गये। जाते हुए वह मुझसे कुछ अखबार मांगकर ले गया। इस तरह पहली मुलाकात समाप्त हुई।

"दूसरी बारका परिचय विचित्र पर साथ ही शोचनीय हुआ। जिस दिन वह मिठाईवाला फिर आया उस दिन शिविरमें मेरा ही पहरा था। शामको एक सैनिकने आकर मुझसे कहा कि वह मिठाईवाला लखनऊका दूत समझकर पकड़ा गया है। पर रात हो जानेके कारण आज उसकी फांसी न होगी। वह मेरे ही पहरेमें रहेगा। इससे मैं दुःखी हुआ। यद्यपि सेनाओंमें दूत फिरते ही रहते हैं और उनपर कोई दया भी नहीं करता पर इस आदमीपर मेरी श्रद्धा हो गई थी। थोड़ी देरकी बात-चीतसे ही मैं उसकी योग्यता समझ गया था। मैं यही सोचने लगा कि ऐसा योग्य आदमी इतने छोटे कामपर नियुक्त कैसे हुआ।

"जो लोग हमारे साथ युद्ध कर रहे थे, उनपर मुझे बहुत ही घृणा थी। यदि कोई आदमी उन्हींका दूत कहकर पकड़ा जाता तो मेरे क्रोधकी उससे वृद्धि होनी चाहिए थी। यूरोपकी जातियोंमें जो आपसके युद्ध होते हैं उनकी अपेक्षा एशियावालोंके साथ अधिक निर्दय युद्ध करने पड़ते हैं। पर मैं जिस युद्धकी बात

कह रहा हूं वह एशियाके युद्धसे भी अधिक नीच था। इस युद्ध में केवल मनुष्यघात था। जहां कोई अंग्रेज़ स्त्री पुरुष या बच्चा या कोई ईसाई हाथ पड़ा वहीं उसे सिपाही मार देते थे, जिसने किसी अंग्रेज़को ज़रा भी मदद कर दी उसे भी सिपाही मार डालते थे। इसीलिये फौजी और दीवानी विभागके मजिस्ट्रे-टोंने जहां किसी विद्रोहीको पकड़ा या विद्रोहीका सन्देह हुआ वहीं उसका प्राणनाश किया। इसमें न्यायकी जैसी हंसी उड़ी है उससे अधिक निर्दयता दिखाई दी है। हरएक फौजोंके साथ मजिस्ट्रेट रहते थे, वे जैसा न्याय करते थे उसे न्यायका मजाक कहना चाहिये। पर वे विद्रोह दाबनेके लिये इसे आवश्यक समझते थे। कारण, विद्रोहियोंने इससे भी अधिक पाप किया था। प्रधान सेनापति मनुष्यघातके विरोधी थे। जब वे फतेहगढ़से कानपुर वापिस आये तब आमोंके पेड़ों-पर सड़े हुए मुर्दे लटक रहे थे। इस तरहकी मुर्दोंकी कतार देख-कर वे बड़े दुःखी हुए। उनसे पहले किसी मजिस्ट्रेटने यही व्यवस्था की थी।

"अब मैं अपनी कहानी कहता हूं। जिमी ग्रीन सिपाहियोंका भेदिया कहकर पकड़ा गया था। शामको सैनिक उसे मेरे सुपुर्द कर गये और कह गये कि सुबहतक इसे होशियारीसे रखना। उसके साथ वह मिठाईकी डलिया उठानेवाला भी था। यह सिद्धान्त बनाया गया था कि १८५७ के जुलाई मासमें, जिन सब लोगोंने कानपुरमें हत्या की थी उनमें ये भी थे।

जैसे ही ये दोनों कैदी मेरे सुपुर्द हुए वैसे ही सैनिकोंने प्रस्ताव किया कि पहले इन्हें सुअरका गोश्त खिलाकर धर्मसे पतित करना चाहिये। उस समय फांसी देनेसे पहले ऐसा ही किया जाता था। मैंने इसका विरोध किया। कहा कि, जबतक मैं सैनिकोंका अध्यक्ष हूं तबतक उन्हें ऐसा न करने दूंगा। पहरेवालोंसे मैंने कह दिया कि यदि वे ऐसा करेंगे तो उनकी पेटी खोल ली जायगी। शान्त स्वभाववाले सैनिकोंने मेरी बातका समर्थन किया। जिस अभागेने अपना नाम जिमी ग्रीन बताया था वह मेरी इस बातसे इतना प्रसन्न हुआ कि उसके प्रसन्न चेहरेको मैं कभी नहीं भूल सकता। उसने कहा कि, मैंने आपसे ऐसे सहृदयभावकी कभी आशा न की थी। अल्लाह इस संग्राममें आपकी सदा रक्षा करें। मैंने कैदीको कृतज्ञताके लिये धन्यवाद दिया और उसकी शामकी नमाजके लिये हाथ खुलवा दिये। मेरे इस व्यवहारपर भी उसका साथी नाराज ही था, पर वह अन्तमें कृतज्ञ हुआ कि मैंने उनको सुअरका मांस न खिलाने दिया। कैदियोंने अपनी शामकी नमाज पढ़ी। समय और अवस्थाके अनुसार उन्हें जितनी आजादी दी जा सकती थी वह दी। मैंने तमाम रात जागनेका इरादा किया। कारण, यदि दोनों भाग जाते तो मैं दोषी होता। मैंने एक मुसलमानको बुलवाकर कहा कि इनके लिये जैसा खानेको योग्य हो वह ला दो, पैसे मैं देता हूं। बाजारके मुसलमानने कहा कि जब आप मुसलमानपर इतनी दया कर रहे हैं, तब मुझे मुसलमान

छोकर खानेके पैसे लेता अच्छा नहीं लग सकता। खाना आया। जिमी ग्रीनने तृप्तिके साथ खाकर, एक बोरियेपर हुक्का रखकर, पीते २ कहा—ईश्वरको धन्यवाद है कि उसने जीवनकी अन्तिम रात्रिमें मुझे ऐसे दयावान अंग्रेज़के सुपुर्द किया। इसके बाद उसने कहा—आपने मुझसे अपने जीवनकी घटना कहनेको कहा है। यह सच है कि मैं भेदिया हूं। पर भेदियाके नामसे जो मामूली आदमी समझे जाते हैं, मैं वह साधारण जासूस नहीं हूं। मैं लखनऊकी बेगमकी सेनाका एक कर्मचारी हूं। आपकी यह सेना हमपर चढ़ाई करने जा रही है, मैं यह देखने आया था कि इस सेनाकी ताकत कितनी और तैयारी कैसी है। मैं लखनऊकी सिपाही सेनाका प्रधान इंजीनियर हूं पर खुदाको मेरी कामयाबी मंजूर न थी। आज शामको मैं वापिस लखनऊ जाता, कल सवेरे ही पहुंच जाता। मैंने तमाम विवरण एकत्र कर लिया था। पर एक बेईमानने मुझे गिरफतार करवा दिया। मुसलमान होकर उसने मुसलमानके गलेमें फांसी डलवाई। अल्लाह जहन्नुमकी आगमें उसे हजारों बरस जलावेंगे।*

"आपने मेरा नाम पूछा है। मेरे दुर्भाग्यका विवरण अपने स्काटलैंडके भाइयोंको लिखनेका इरादा किया है। मुझे नाम बतानेमें कोई एतराज नहीं। मैं इंग्लैंड और स्काटलैंडके आदमियोंको

---

* मुहम्मद अलीने अपना नाम जिमी ग्रीन रखा था। ये बरेलीके एक ऊंचे घरानेके प्रतिष्ठित मुसलमान थे। जिस मुसलमानने इन्हें पकड़वाया था, मई मासमें उसको फांसी हुई।

सच्चा समझता हूं। अल्लाहके इस खादिमकी कार्रवाइयोंसे किसी किसीको दुःख हो सकता है। मैंने दो बार लंडन और एडिनबरा देखा है। दोनों स्थानोंपर मेरे अनेक मित्र हैं। मेरा नाम मुहम्मद-अली खां है। रुहेलखंडके ऊंचे मुसलमान घरानेमें मेरा जन्म हुआ, बरेलीके कालिजमें मैंने शिक्षा प्राप्त की। एफ० ए० में मैं सब विषयोंमें अव्वल नम्बर पास हुआ। यहाँसे इंजीनियरिंग शिक्षाके लिये रुड़की कालिज गया। वहां मैंने तमाम अंग्रेज़ विद्यार्थियोंसे अधिक नम्बर पाये, सबसे अधिक योग्य था। पर मुझे इस योग्यताके बदलेमें पैमाइशका जमादार बनाया गया और एक अंग्रेज़ इंजीनियर मुझपर रहा। यह अंग्रेज़ इंजीनियर मुझसे कम योग्यतावाला था, पर फिर भी उसे मेरा अफ़सर और मुझे जमादार किया गया। यह अंग्रेज़ कुछ भी योग्य न था, जो इंग्लैंड होता तो इसे कोई काम न दिया जाता। मूर्खोंके हाथमें शक्ति देनेसे जो दोष हुआ करते हैं वे सब इसमें थे। इसकी उद्धतता, गर्व और स्वार्थपरतासे मैं विरक्त होता था। इस प्रकारके आदमियोंके द्वारा भारतमें अंग्रेज़ जातिकी बुराइयां किस प्रकार घृणित साबित होती हैं, यह आप तबतक नहीं समझ सकते जबतक इस देशके शिक्षितोंसे अच्छी तरह न मिलें। आपकी जातिकी स्वार्थपरता और अभिमानके लिये आपके घोर शत्रु जो कुछ कहा करते हैं, उसका एक ही उदाहरण काफी है। इसी कारण लोग आपकी उदारता और समवेदनाको दुष्टता और धोखेबाजी कहते हैं। मैंने धनके लिये

कम्पनीकी नौकरी न की थी। केवल इज्जतके लिये मैं नौकर हुआ। पर पहले ही मुझे उसके नीचे दिया गया जो मुझसे योग्यतामें बहुत कम और नीचतामें बहुत अधिक था। मैं इसको अपना अपमान समझता था। मैंने अपने पिताको यह बात लिख-कर उनसे नौकरी छोड़नेकी आज्ञा मांगी। उन्होंने मुझे आज्ञा देते हुए लिखा था कि खान्दानी आदमी किसीकी गुलामी नहीं कर सकते। मैंने अवधके नवाब नसीरुद्दीनकी सरकारमें नौकरी करनेके इरादेसे नौकरी छोड़ दी। जब मैं लखनऊ पहुंचा तब नेपाल-के जंगबहादुर विलायत जानेकी तैयारी कर रहे थे। उन्हें एक अंग्रेजी जाननेवाले सेक्रेटरीकी जरूरत थी। मैंने इस जगहके लिए अर्जी दी। कई अंग्रेज कर्मचारियोंने मेरा समर्थन किया। मैं महाराजका सेक्रेटरी होकर इंग्लैंड पहुंचा। और स्थानोंकी तरह हम एडिनबरा भी गये। उस समय महाराज जंगबहादुरके सम्मानके लिये आपकी यह ९३ नं० हाईलैंडर सेना भी खड़ी थी। जिस दिन मैंने इस सेनाको सजी हुई खड़ी देखी तब यह नहीं समझा था कि एक दिन इसी सेनामें मुझे कैदी बनना पड़ेगा। पर भाग्यकी बात कौन जान सकता है?

"वापिस भारतमें आकर मैंने सन् १८५८ तक भिन्न २ राज दर्बारोंमें नौकरी करता रहा। इस साल अजीमुल्लाके साथ फिर इङ्गलैंड गया। इस गदरमें आपने अजीमुल्लाका नाम जरूर सुना होगा। पेशवा बाजीरावके मरनेके बाद जब लार्ड डलहौज़ीने पेंशन बंद कर दी तब नानासाहबने अजीमुल्लाको अपना एजेंट

बनाकर विलायत भेजा। मेरी तरह अजीमुल्लाने भी कानपुरके गवर्मेंट स्कूलमें पढ़ा था। मास्टर गंगादीनकी शिक्षासे अंग्रेज़ी भाषाका उसका अभ्यास बहुत अच्छा हो गया था। उसको विश्वास था कि यदि वह इंग्लैंड जा सके तो लार्ड डलहौज़ीकी युक्तियोंको परास्त कर सकेगा। अजीमुल्ला वकीलों और राजपुरुषोंको देनेके लिये बहुत धन अपने साथ ले गया। आप जानते हैं कि लंडनमें उसका अच्छा सम्मान हुआ था। पर उसे कामयाबी न हुई। पांच लाखसे भी अधिक रुपया खर्च हो गया। १८५५में हमने कुस्तुन्तूनिया होकर वापिस भारत आनेका इरादा करके लंडन छोड़ा। रास्तेमें हमने क्रीमिया संग्राम देखा। १८ जूनको अंग्रेज़ी सेनाका हमला और फिर हारना हमने देखा। हमारे भावोंमें बहुत कुछ परिवर्त्तन हुआ। वापिस कुस्तुन्तूनिया गये। वहां कई आदमियोंसे हमारा परिचय हुआ। उन्होंने अपने आपको रूसका अफसर बताया। उन्होंने कहा कि यदि आप लोग भारतमें गदर कर सकें तो हम आपको यथेष्ठ सहायता दे सकते हैं। हमने गवर्मेंटके ध्वंसके उपाय सोचे। ईश्वरको धन्यवाद है कि हमारी इच्छाएं पूरी हुईं। गवर्मेंटका राज्य समूल नष्ट नहीं हुआ। हमें पूरी सफलता नहीं हुई। फिर भी अंशतः कामयाबी हुई। हमें मालूम हो रहा है कि हमने बहुत अच्छा किया। कल जो अखबार मैंने आपसे लिये थे, उनमें पढ़ा कि अब कम्पनीका राज्य भारतपर न रहेगा, पार्लमेंट वहांके राज्यको अपने हाथमें लेगी। इससे

मुझे मालूम हो रहा है कि हम लोगोंकी जो जानें जा रही हैं वे व्यर्थ नहीं। कल सवेरे मेरा जीवन समाप्त होगा, पर मैं देख रहा हूं कि, हमारे इस उद्योगसे, भविष्यमें इस देशके निवासी उन्नत बनगे, शक्ति-सम्पन्न भी होंगे।

"साहब! मैं आपकी खुशामद या कृपाके लिये नहीं कहता, सचमुच आपने मुझपर बड़ी दया की है। मैं जानता हूं कि इससे अधिक आप मेरी और कोई सहायता नहीं कर सकते। करनेकी शक्ति होनेपर भी आपका कर्त्तव्य उसे करने न देगा। मुझे फांसीपर लटकना ही होगा। आपने मुझपर जो दया की उससे मैंने हृदय खोलकर आपसे सब बातें कहीं। मैं आपकी जातिसे घृणा करता हूं। पर आपके व्यवहारसे हृदयमें लज्जा भी आती है। सबसे पहली बार मुझे लज्जा आई थी जब कर्नल नेपियरने कानपुरके घाटके हिन्दू मन्दिरोंको तोपोंसे उड़ा देनेकी आज्ञा दी थी। उस समय पंडोंने नेपियरके पास जाकर मन्दिरोंको बचानेकी प्रार्थना की। तब कर्नल नेपियरने जवाबमें कहा था—"तुम मेरी बात सुनो। जब हमारी असहाय औरतें और बच्चे मारे गये, उस समय तुम सब लोग यहींपर थे। अब हम बदला लेनेके लिये मन्दिरोंको नहीं तोड़ते, हमें नावोंके पुलकी रक्षा करनी है। तुम सब लोगोंमेंसे अगर एक आदमी भी यह साबित कर दे कि तुमने हमारी एक स्त्री या एक बच्चेपर जरा भी दया की हो या केवल जबानसे भी दया करनेके लिये किसीको कहा हो, तो

मैं इन मन्दिरोंको ऐसेका ऐसा ही रखनेके लिये तैयार हूं।" मैं भीड़में उस वक्त कर्नल नेपियरके पास ही खड़ा था। उस वक्त कर्नलकी बातका किसीसे जवाब न दिया गया। ब्राह्मण चुप-चाप चले गये। नेपियरके इशारेसे तमाम मन्दिर उड़ा दिये गये। नेपियरने जो बात कही थी, वह सब अक्षरशः सत्य थी, लज्जासे मेरा सिर भी झुक गया था।

"इसपर मैंने पूछा कि 'जब कानपुरमें विद्रोह हुआ तब आप वहां थे या नहीं?' कैदीने कहा, नहीं। ईश्वरको धन्यवाद है कि उस समय मैं रुहेलखण्ड अपने घरपर था। मैंने लड़ाईके मैदानमें सामने शत्रुओंको मारा है। और किसी तरहसे मैंने किसीका खून नहीं बहाया। मैंने समझ लिया था कि अब तूफान शुरू हो गया इसलिये अपने बाल बच्चोंको घर छोड़ने गया था। घरपर ही मैंने मेरठ और बरेलीके विप्लवके समा-चार सुने। फौरन मैं बरेली जाकर सेनासे मिला और उसके साथ दिल्ली गया। दिल्लीमें मैं प्रधान इंजीनियर बनकर शहर-की रक्षाका तमाम इन्तजाम करता था। सितम्बरमें अंग्रेजी-सेनाने दिल्ली शहरपर कब्जा कर लिया। तितर बितर सिपा-हियोंमें जिनको एकत्र कर सका उन्हें लेकर लखनऊ आया। पहले हम सब मथुरा गये। सेनाके उतरनेके लिये मैंने यमुनापर पुल बनाया। शाहजादा फीरोजशाह और सेनापति बखतखांके अधीन अब भी तीस हजार सिपाही हैं। जब मैं लखनऊ आया तब मुझे प्रधान इंजीनियरका पद दिया गया। जब आपकी

सेना लखनऊ गई तब मैं वहीं था। सिकन्दरबागकी नरहत्या मैंने आखों देखी थी। जिस दिन आपकी सेनाने बागपर हमला किया उससे पहली रातको मैंने बागकी रक्षाका तमाम प्रबन्ध किया था। जब आप शाहनजीफपर हमला कर रहे थे तब मैं सिकन्दरबागसे आपकी तमाम चालोंको देख रहा था। मैंने सिकन्दरबागकी रक्षाके लिये तीन हजार सिपाही नियत किये थे। इनमेंसे एक भी जीता नहीं बचा। जब मैंने देखा कि मेरे हाथसे खड़े किये हरे झंडेकी जगह आपका हाईलैंडर झंडा खड़ा किया गया, तब मुझे बेहोशी आने लगी। मैंने समझ लिया था कि भाग्य हमारे साथ नहीं, परमात्मा हमारा मदद-गार नहीं। फिर मैंने लखनऊके चारों ओरकी दीवारें मजबूत करवाईं, तोपोंके मुकाम बनवाये। अबकी बार जब आप जायंगे तब सब कुछ देखेंगे। जो गोलंदाजोंने मजबूतीसे काम किया तो आपकी बहुत सेना काम आवेगी।

"इसके बाद मैंने कैदीसे पूछा कि, आपने जिसका नाम मिकी बताया है, वह नानासाहबका नियत किया हुआ घातक था या नहीं? कैदीने कहा कि "मेरा विश्वास है शायद हो। पर मैंने जब इसे नियत किया तब यह विश्वास न था। जो मुझे मालूम होता कि यह आदमी स्त्रियों और बच्चोंका घातक है तो मैं उसे कभी साथ न लेता।" फिर मैंने कैदीसे पूछा कि "कान-पुरकी यूरोपियन स्त्रियोंको मारनेसे पहले उनका सतीत्व नष्ट किया गया था या नहीं?" कैदीने कहा—"साहब, आप विदेशी

हैं, आप इस देशके आदमियोंको नहीं जानते इसीलिये ऐसा सवाल करते हैं। जो इस देशके जातिविचार और धर्म तथा समाजको जानता है, वह समझ सकता है कि यह बात बिलकुल गलत है। मैं जानता हूं कि स्त्रियों और बच्चोंको तलवारसे मार डाला गया पर किसीका सतीत्व नाश नहीं हुआ। जिस घरमें अंग्रेज़ स्त्रियां थीं, उसमें उन्होंने भारतवासियोंके विरुद्ध अंग्रेज़ोंको भड़कानेके लिये, दीवारोंपर ऐसी २ बातें लिख डाली थीं कि जिससे अंग्रेज़ी अखबारोंमें छपा कि हिन्दुस्तानियोंने अंग्रेज युवती और वृद्धाओंका सतीत्वनाश किया। हिन्दुस्तानके अखबारोंसे ये बातें विलायतके अखबारोंमें छपीं और यों सम्पूर्ण अंग्रेज़ जाति भारतवासियोंको पिशाच समझने लगी। पर कानपुरके घरोंकी दीवारोंपर जो यह लिखा गया था वह झूठ था। जब सेनापति हावेलकी सेनाने कानपुरपर कब्ज़ा कर लिया तब दीवारोंपर यह लिखा गया। मैं उस वक्त वहां न था। पर जिन्होंने देखा है उनकी कही बातें मैं कह रहा हूं। यह सत्य है।

"मैंने कैदीसे पूछा कि, 'नानासाहबने निर्दोष स्त्रियों और बच्चोंको मरवाकर ऐसा पाप क्यों किया?' कैदीने कहा— एशियावासी कमजोर हृदयवाले होते हैं। विपत्तिके समय डर-कर वे ऐसा कलंक कर बैठते हैं। पर इस हत्याका पहलेसे कोई इरादा न था। भारतवासी जिस समय कोई वादा करते हैं तब यह नहीं देखते कि हम उस वादेको समयपर पूरा कर सकेंगे या नहीं। पर जब समयपर वादा पूरा नहीं होता तब वे झूठे

बन जाते हैं। मेरा विश्वास है कि नानासाहबके साथ यही बात हुई थी। नानासाहब स्त्रियों और बच्चोंकी रक्षा करना चाहते थे, पर उनके महलमें एक राक्षसी थी। पहले वह दासी थी। इस दासी और अजीमुल्लाने मिलकर सबके प्राणनाशका विचार किया, नानासाहबके मुसाहबोंने इनका समर्थन किया। जब सिपाहियों और नानासाहबके नौकरोंने इस कठोर कामके करनेसे इनकार किया तब यह राक्षसी कुछ जल्लादोंको ले आई। इन्हीं जल्लादोंने यह घृणित काम किया। मैंने सेनापति तांतियातोपीसे यह बात सुनी थी। आज्ञा देते समय नानासाहब और तांतियातोपीमें बड़ी बहस हुई थी। मैंने जो कहा वह सत्य है। पुरुषसे हजार-गुणी अधिक स्त्री कठोर होती है। कानपुरकी इस राक्षसी स्त्रीने सब यूरोपियन स्त्रियों और बच्चोंका संहार करवाया। पर यह स्त्री इन सबकी दुश्मन क्यों बनी थी यह मुझे मालूम नहीं।

"फिर मैंने पूछा कि, इस समय जो अखबारोंमें छप रहा है कि सेनापति ह्वीलरकी लड़कीने पिस्तौलसे चार पांच आदमियोंको मारा और फिर खुद ही कुवेंमें कूद पड़ी; यह सच है या झूठ? कैदीने कहा कि ये सब बातें अंग्रेज़ी अखबारोंके सम्पादकोंकी कल्पनासे पैदा हुई हैं, इनमें जरा भी सचाई नहीं है। सेनापति ह्वीलरकी लड़की इस वक्त भी जिन्दा लखनऊमें मौजूद है। जिस मुसलमानने उसकी जान बचाई थी उसके साथ भागकर वह मुसलमानिन बनी और इस वक्त उसीके साथ उसने विवाह कर लिया है।

"कैदीके साथ इस तरहकी बातें करते करते रात बीत गई। मैंने उसे सवेरेकी नमाज पढ़नेकी आज्ञा दी। नमाज पढ़कर उसने मुझे धन्यवाद दिया। इसकी बातचीतमें कहीं भी जरा कमजोरी या डरका भाव न मालूम होता था। जब उसने अपने बाल बच्चोंकी बात कही थी तब जरा आवाज कांपी थी। उसने कहा कि अंग्रेज़ोंकी तरह मैंने फ्रेंच इतिहास पढ़ा है और उसमें देशभक्तोंको जीते आगमें जलानेके उदाहरण भी पढ़े हैं। इसलिये मैं दृढ़ हूं। फिर उसने अपने बालोंमेंसे एक अंगूठी निकाल कृतज्ञताकी निशानी स्वरूप मुझे देनी चाही। उसने कहा कि जब मुझे पकड़ा तब सब चीजें छीन ली थीं, केवल यह अंगूठी केशोंमें छिपी रह गई। यह मामूली है, कीमत दस रुपयेसे अधिक न होगी, पर कुस्तुन्तूनियाके एक साधूने यह दी थी और कहा था कि इससे सब आपत्तियाँ दूर रहेंगी। मैंने अंगूठी ली। उसने फारसीके मंत्र बोलकर मुझे पहना दी और कहा, जब आप लखनऊमें हों तब इस अंगूठीको देखें और मुहम्मदअलीका नाम याद करें, आपका कोई अनिष्ट न होगा। इस बातके समाप्त होते ही एक पहरेवाला आया। मैंने दुःखके साथ कैदीको उसके सुपुर्द किया। इसी समय कूचकी आज्ञा दी गई। जब सूर्य सिरपर आ गया तब हम वहांसे लखनऊकी ओर चले। जाते हुए रास्तेमें मैंने देखा, मुहम्मदअली अपने नौकरके साथ पेड़पर रस्सीके सहारे झूल रहा है। वह मर चुका था। मेरे आंसू निकल पड़े। २१ मार्चको बेगममहलपर जब हमारी सेनाने हमला.." पास-

तब मैंने अंगूठी देखकर मुहम्मदअलीको याद किया था। मुझे जरा भी चोट न लगी। गदरके मौकेपर बहुतोंने बहुत तरहकी चीजें लूटी थीं पर मेरे हाथ सिर्फ यह अंगूठी लगी।"*

इस प्रकार मुहम्मदअलीकी कथा पूरी हुई। योग्य पुरुष इससे घटनाओंका तारतम्य और भारतवासियोंकी समझका अनुमान कर सकते हैं। मुहम्मदअली और अजीमुल्ला उस समयके योग्य शिक्षितोंमें थे। पर वे आन्दोलक थे, उनमें दूरदर्शिता न थी। खैर, जो कुछ हो, अब सर कोलिन कामपबेलकी सेना लखनऊ-

लखनऊपर ब्रिटिश सेना

पर अधिकार करने चली। नवाब वाजिद अली शाहकी बेगम हजरतमहल शासन कर रही थीं और जिन्होंने दुर्दशामें पड़े हुए अंग्रेज़ोंको सहायता दी थी वे मेहदीहुसेन और मुहम्मदहुसेन भी उनके साथ थे। फैजाबादके महाराज मानसिंहने हर बातमें अंग्रेजोंकी सहायता की थी, पर उन्होंने भी हजरतमहलका पक्ष न छोड़ा। जिस समय सेनापति आउट्राम आलमबागमें थे तब सिपाहियोंने उनके शिविरपर भी हमला किया था। १६ जनवरीको इन्होंने अंग्रेज़ी शिविरपर रामायणकी हनुमानकी सेनाके रूपमें हमला किया था। हनुमानकी तरह लाल मुंह बना और पूंछ लगाकर ये लोग आउट्रामकी सेनापर हमला करने गये, पर बंदूकोंकी चोटसे बुरी तरह घायल होकर ये हनुमान भागे, बहुतसे मारे गये।

* Reminiscence P. 174-193,

बेगम हजरतमहलने तमाम तालुकदारोंको दरबारमें बुलाकर अंग्रेज़ोंसे लड़नेके लिये उत्साहित किया। जब २५ फरवरीको आलमबागपर हमला हुआ तब सिपाहियोंका उत्साह बढ़ानेके लिये बेगम साहब हाथीके हौदेमें बैठकर लड़ाईके मैदानमें आईं। पर उनके उत्साहसे कुछ न हुआ। इस समय प्रधान सेनापतिके पास ३१ हजार शिक्षित रणकुशल सैनिक और १६० तोपें थीं। इस बड़ी भारी ब्रिटिश वाहिनीके सामने सिपाहियोंका टिकना असम्भव था।

इसमें सन्देह नहीं कि काम्पवेलके साथ सेना अधिक थी, तोपें अधिक थीं, सामान अधिक था फिर भी लखनऊ बीस मीलके घेरेका शहर था। इतने बड़े शहरपर कब्जा करनेके लिये यह सेना अधिक न थी। पर प्रधान सेनापतिके पास जो बुद्धिबल था वह सिपाहियोंके पास न था। सिपाहियोंने सोचा था कि हावेल और आउट्रामकी सेना जिस रास्तेसे आई तथा पहली बार काम्पवेल जिस रास्तेसे आये उसी रास्तेसे इस बार भी आवेंगे, इसी कारण उन्होंने रास्तेमें रोकनेका प्रबन्ध किया था पर काम्पवेलने गोमतीके दोनों किनारोंपर अपनी सेना भेजी थी। इससे सिपाहियोंका व्यूह तोड़नेका मौका मिला। २ मार्चको अंग्रेज़ी सेनाने शहरपर धावा किया। शाहनजीफ और सिकन्दरबाग सहजमें ही उनके हाथ आ गये थे। कैसरबाग और उसके पासवाले बेगममहलमें बहुतसे सिपाही थे। इन दोनों स्थानोंपर कब्जा करनेसे पहले ब्रिटिश सेनाने घुड़दौड़के पास-

वाले एक मकानपर कब्ज़ा किया। सिपाहियोंमेंसे बहुतसे पहले ही इस मकानको छोड़ गये थे। थोड़ेसे सिपाही उसकी रक्षा कर रहे थे। जब अंग्रेज़ी सेना वहाँ पहुँची तब सिपाहियोंने बड़ी वीरतासे उनका सामना किया। बहुतसे अंग्रेज़ी सैनिक मरे। दुबारा फिर हमला किया तब भी सिपाहियोंने इन्हें पास न आने दिया। इससे अंग्रेज़ी सैनिक वापिस आ गये। तब सेनापति आउट्रामने तोपें मँगाईं। तोपोंके गोलोंसे सिपाहियोंकी शक्ति क्षीण हुई। इस दशामें सिक्ख सैनिक मकानमें घुस गये और उन्होंने वहाँके सब सिपाहियोंको मार डाला। केवल एक सिपाही कई जगहसे घायल होनेपर भी जिन्दा था, इसे अंग्रेज़ी सैनिक पकड़कर अफसरोंके पास लाये। एक अंग्रेज़ देखनेवालेने इसके विषयमें लिखा है—"कुछ गोरे सैनिकोंने उसके दोनों पैर पकड़कर चीरनेकी कोशिश की, पर जब वह न चिरा तब उस अभागेके मुंहपर उन्होंने संगीनें मारीं। उस समय भी वह जीवित था। थोड़ी दूरपर आग जल रही थी। गोरोंने जीतेका मुंह आगमें झुलसकर मारा।" अन्तमें इस अफसरने लिखा है—"इस उन्नीसवीं सदीमें सभ्य कहानेवाले अंग्रेज़ सैनिक एक जीते आदमीको इस बुरी तरहसे आगमें जलावेंगे, यह कौन जानता था। यह बड़े दुःखकी बात है।"*
इस अंग्रेज़ इतिहासलेखकने वीरताकी मर्यादा रक्षा करनेके लिये

† Martin's Indian Empire. Vol. II. P. 478.

अपने देशवासियोंकी निन्दा की है। इस गदरमें एक ओर राक्षसी भाव और उसके पास ही देवभाव भी था।

१० मार्चको बेगममहलपर धावा हुआ। इस दिन प्रधान सेनापति काम्पवेल जंगबहादुरको अभिनन्दन पत्र देनेके लिये दरबार करनेमें लगे थे। यह पहले कहा जा चुका है कि सेना लेकर जंगबहादुर अंग्रेज़ोंकी मददके लिये आये थे। उनकी सेनाने पश्चिमोत्तर प्रदेशकी लड़ाइयोंमें बड़ी वीरताका परिचय दिया था। एक गंभीरसिंह नामक गोर्खाने पांच सिपाहियोंको काटकर तोपपर कब्जा किया था। जंगबहादुर गोरखपुरपर कब्जा करके फूलपुरसे सिपाहियोंको भगाते अवधमें आये थे। काम्पवेलने यहां उनका स्वागत किया। इसी समय समाचार आया कि बेगममहलपर कब्जा कर लिया गया। इससे प्रसन्न होकर काम्पवेलने जंगबहादुरसे अपने सैनिकोंकी प्रशंसा की।

जिसने दिल्लीके बादशाहको कैद किया था और शाहजादोंको अपने हाथसे मारा था वह बेगममहलपर हमला करते हुए सिपाहियोंके हाथसे मारा गया। बेगममहलके भिन्न २ महलोंमें सिपाही थे। इसलिये भिन्न २ दलोंमें विभक्त होकर अंग्रेज़ी सैनिकोंने उनपर हमला किया। एक घरमें छेदसे दिखाई दिया कि भीतर सिपाही हैं। उसी समय प्रस्ताव हुआ कि इस घरको बारूदसे उड़ा दिया जाय। पर कप्तान हडसनने जल्दी की। म्यानसे तलवार निकालकर वे आगे बढ़े। फार्ब्स मिचल इनके पास ही थे, उन्होंने रोका, पर हडसन आगे बढ़े। दूसरा पैर

उठाते ही गोलीसे जमीनपर गिर पड़े। कप्तान हडसन अपने हठके कारण मरे।

मौलवी अहमदुल्ला इस समय लखनऊमें ही थे। वे अंग्रेज़ोंके खिलाफ़ मुसलमानोंको किस प्रकार भड़काते थे सो पहले ही कहा जा चुका है। उनके जोश दिलानेसे सिपाही मैदानमें आगे बढ़ बढ़कर लड़ते थे। कहा जाता है कि लड़ाईके मैदानमें उनके हाथमें सिर्फ एक कोड़ा था, उसीको घुमाते हुए वे सिपाहियोंको जोश दिलाते थे। लखनऊके एक लश्करशाह नामक फकीर भी उनसे आ मिले थे। इन दोनोंके जोश दिलानेसे सिपाही अधिक साहसी और बलसम्पन्न थे। २१ मार्चको अंग्रेज़ी सेना मौलवीके विरुद्ध चली। मौलवी साहब इस समय शाहादतगंजमें रहते थे। अपनी सेना लेकर मौलवीने इस ताकतसे अंग्रेज़ी सेनाका सामना किया कि सेनापति लूगार्ड आश्चर्यमें रह गये। ऐसा साहसी और कर्मकुशल आदमी उन्होंने नहीं देखा था। अंग्रेज़ी सेनाके बहुतसे आदमी मरे और घायल हुए। अन्तमें मौलवीके सिपाही भाग खड़े हुए। अंग्रेज़ी सैनिकोंने उनका पीछा किया। मौलवी वहाँसे अछूते भाग गये।

२१ मईको सब सिपाही लखनऊ खाली कर गये। वाजिद अली शाहकी राजधानीपर फिर अंग्रेज़ोंका कब्ज़ा हुआ। राजमहिषी बेगम हजरतमहल वहाँसे दूसरी जगह जाकर अंग्रेज़ोंके नाशके लिये शक्ति एकत्र करने लगीं। जिन तालुकदारोंने गवर्मेंटके खिलाफ हथियार उठाये थे वे इधर उधर जाकर छिपे।

कहा जाता है कि राजा मानसिंहके पास दस हजार हथियार-बंद आदमी थे। पर इन्होंने अंग्रेज़ोंकी मुखालफत न की। जब सुना कि लखनऊपर अंग्रेज़ोंका अधिकार हो गया और गोरी सेना नवाब साहबके महलकी स्त्रियोंका सतीत्वनाश करनेपर उतारू है, तब वे लखनऊकी ओर चले। पर उन्हें रास्तेमें ही मालूम हो गया कि खबर गलत है। अंग्रेज़ी सेना असहाय स्त्रियों और बच्चोंपर कभी अत्याचार करनेको तैयार नहीं। इससे मानसिंह प्रसन्न हुए। उन्होंने नवाबका नमक खाया था, इस समय उनकी असहाय स्त्रियोंपर अत्याचारकी बातसे उनका खून उबल आया था, इसीलिये वे उनकी रक्षाके लिये चले थे।

दिल्ली फतह करनेके बाद अंग्रेज़ी सैनिकोंने लूट की थी। मुगलबादशाहकी राजधानी लूटी थी। नवाब वाजिद अली शाहकी राजधानी क्यों बचती? गोरी सेनाने कैसरबाग लूटा, तमाम कीमती चीजें उन्होंने हथिया लीं। सुनहले कामदार दुशालें, चोगे, चांदी सोनेके बर्तन, तरह तरहके हाथीदांत और सोनेके कामकी चीजें सब लूट ली गईं। नवाबके महल तोड़े गये, काच और चीनीके बर्तन टूटे। इस लूटके विषयमें सार्जंट फार्ब्स मिचलने अपनी पुस्तकमें लिखा है—"सिपाहियोंके रवाना होते ही तमाम शहर मानों लुटेरोंके हाथ पड़ा। गोरे, सिक्ख, गोर्खे और फौजके नौकर लूटने लगे, इनके साथ शहरके बदमाशोंने भी लूट मचा दी। इमामबाड़ा, कैसरबाग और हजरतगंजका दृश्य बड़ा भयानक था। न कोई सम्मान था, न

नियम था, थोड़े शब्दोंमें यह कहा जा सकता है कि मनुष्यत्व ही नहीं था। मानों आदमीकी सूरतमें सब जानवर बन गये थे और वे छीना झपटी, मारामारी, लूटपाटमें मतवाले हो गये थे। जिन नगरवासियोंने अपनी चीजोंको बहुमूल्य समझकर बचाया था, उन्हें ये सैनिक नाचीज समझकर जला देते थे। एक गोरे सैनिकने एक लाख रुपयेसे भी अधिकके कम्पनीके नोटोंको जलनेसे बचाया। अन्तमें उन्हें पांच रुपये सैकड़ेके हिसाबसे उसीके मालिकके हाथ बेच दिया। गोरोंने बड़ी २ कीमती चीजें लूटीं, पर उन्हें उनकी कीमतोंका ज्ञान न था इस कारण सिक्खों और गोर्खोंने उनसे थोड़े मूल्यमें वे सब खरीद लीं। गोरे एक बोतल शराब और दो चार रुपयेमें कीमती चीज दे देते थे। इन लूटनेवाले सैनिकों तथा उनके नौकरोंने घायलोंपर भी अपनी बहादुरी दिखाई। जहां घायल सिपाही पड़े दिखाई दिये वहाँ ये लोग बारूदका बस्ता फेंककर जलती दियासलाई डाल देते थे। इस प्रकार घरोंमें आग लगाकर वे निर्दयताकी हद पूरी करते थे। इन घरोंसे आदमियोंके जलनेकी ऐसी बदबू उड़ती थी कि ठहरना कठिन था। इतिहासलेखकोंने लिखा है कि फ्रांसके बादशाह नवें चार्ल्स मरे दुश्मनोंकी गन्ध पसन्द करते थे। पर जो कहीं वे सन् १८५८ के मार्च महीनेमें लखनऊकी गलियोंमें घूमते तो उनकी राय जरूर बदल जाती।"*

लखनऊपर हमला करते समय गवर्नर जनरलका घोषणापत्र

* Reminiscences P. 229—230

सेनापतिको मिला था। इस घोषणामें उन्होंने अवधके संबन्धमें लिखा था—गवर्मेंटका पक्ष समर्थन करनेवाले छः ताल्लुक-दारोंको छोड़कर बाकी सबकी जमीनें जब्त की जायंगी। जिन्होंने यूरोपियनोंकी हत्यामें किसी तरहका भाग नहीं लिया, यदि वे अपने २ हथियार शीघ्र अधिकारियोंको दे दें तो मौतकी सजासे बचेंगे। यह घोषणापत्र भेजकर गवर्नर जनरलने आउट्रामको लिखा था कि जबतक लखनऊपर कब्जा न हो तबतक यह प्रगट न किया जाय। सर जेम्स आउट्रामने इस प्रकार जमीं-दारोंकी जमीनें जब्त करनेको मुखालफत की। उन्होंने घोषणा-पत्रकी प्राप्ति स्वीकार करके गवर्नर जनरलको लिखा कि, सन् १८५६ में गवर्मेंटने जो जमीनका बन्दोबस्त किया था उसमें ताल्लुकदारोंके प्रति अन्याय हुआ था। जमीनें निकल जानेके कारण उनमेंसे अधिक इस समय गवर्मेंटके दुश्मन बने। उन्हें दुश्मन न कहकर विपक्षी कहना चाहिए। सर आउट्रामने जो आपत्ति की थी उससे उनकी उदारता और साथ ही बुद्धिमत्ता प्रगट होती थी। जो लार्ड कैनिंगमें थोड़ी उदारता होती तो वे इस प्रकार जमींदारोंके दुश्मन न बनते। बोर्ड आफ कंट्रोलरके लार्ड एलनबरा भी इस विषयमें लार्ड कैनिंगके विरोधी बने। पर इंग्लैंडके लोगोंने लार्ड कैनिंगका पक्ष समर्थन किया। इसलिये एलनबराको इस्तीफा देना पड़ा। खैर, जब सन् १८५६ के अक्तूबर मासमें लार्ड कैनिंग लखनऊ गये और दरबारमें तमाम ताल्लुकदारोंने प्रार्थना की तब उन्होंने अपनी इस घोषणाको

वापिस लिया। उस समय उन्हें मालूम हुआ था कि सचमुच उन्होंने तालुकदारोंसे बुरा व्यवहार किया था। यह घोषणापत्र बहुत ही अनिष्टकर था।

लखनऊपर फिर अंग्रेजोंका कब्जा हो गया, पर अवधके बहुतसे स्थान अभी सिपाहियोंके कब्जेमें थे। प्रधान सेनापतिने तीन सेनापतियोंकी अधीनतामें सेनाके तीन भिन्न २ दल भेजे। सेनापति लूगार्ड बिहारमें कुँवरसिंहके विरुद्ध भेजे गये, यह पहले ही कहा जा चुका है। यह निश्चय हुआ कि जब ये भिन्न २ दल अवधको जीतकर प्रधान सेनापतिसे वापिस मिलेंगे तब सब मिलकर रुहेलखण्डपर धावा करेंगे। आगेका वर्णन संक्षेपसे कहता है।

मौलवी अहमदुल्ला लखनऊसे भागकर इक्कीस मील दूर बारी नामक स्थानमें थे। इस स्थानपर मौलवी साहबने जिस होशियारीसे सेनाका व्यूह बनाया था उसे देखते उनकी योग्यता और रणकुशलताकी प्रशंसा करनी पड़ती है। पर सवारोंके योग्य न होनेसे सफलता न हुई। छोटी सी लड़ाईके बाद उनके सिपाही भाग गये। मौलवी साहब बारी छोड़कर शाहजहांपुर गये। पर प्रधान सेनापति काम्पबेलको यह समाचार मिलनेके कारण शाहजहांपुरसे मौलवी मुहम्मदी गये। फिर सेनापतिको समाचार मिला कि मौलवी मुहम्मदी चले गये। सेनापतिने उस ओर रणयात्रा की। इधर मौलवी भी तैयार होकर सेनापतिके विरुद्ध शाहजहांपुरकी ओर चले। जो वे रास्तेमें आराम न करते

तो शाहजहांपुर पर हमला करते, पर शाहजहांपुरसे चार मीलके फासिलेपर वे आराम करने लगे। एक राजभक्त ग्रामीणने आकर शाहजहांपुरकी अंग्रेज़ी सेनाको मौलवीके आनेका समाचार दिया। सेनापति अपनी सेना लेकर जेलखानेकी रक्षा करने लगे। मौलवीकी सेनाने शहरपर कब्ज़ा किया। धनी रईसोंसे ख़िराजके तौरपर रुपया लिया गया। पर किसीको तकलीफ़ न दी गई। उन्होंने केवल लड़ाईके अंग्रेज़ी कायदोंका अनुसरण किया था। ख़ैर, मौलवीने १८ तोपें लगाकर ११ मईतक अंग्रेज़ी सेनापर

मौलवी अहमदुल्ला खां

गोले बरसाये। यह समाचार मिलते ही प्रधान सेनापतिने सहायताके लिये और सेना भेजी। सहायक सेनाके सेनापति ११ मईको शाहजहाँपुरके सेनापतिसे मिले। पर मौलवीके पास सवार सेना भी थी, इसलिये उसका हारना सहज न था। फिर चारों ओरसे उसकी मददके लिये सिपाही सेनायें एकत्र हो रही थीं। दिल्लीके शाहजादा फिरोजशाह अपनी सेना लेकर उससे मिले। बेगम हजरतमहल भी सेना लेकर मौलवीकी सहायताके लिये आईं। नानासाहबकी सेना भी मौलवीसे जा मिली। इस प्रकार सबल होकर १५ मईको मौलवीने अंग्रेज़ी सेनापर चढ़ाई की। यह समाचार सुनकर प्रधान सेनापति कारूपवेल मैदानमें गये। हारजीत कुछ अनिश्चित सी रही। पानघाटकी लड़ाईमें मौलवीकी सेना बड़े पराक्रमसे लड़ी और फिर अपने आप पीछे हट आई। अंग्रेज़ी सेनाने उनका पीछा न किया। प्र० सेनापतिने

अपने अधीन एक और सेनापतिको सेना सहित अपनी मददके लिये आनेको लिखा। उनके आ जानेपर २४ मईको तमाम अंग्रेज़ी सेना मौलवीकी ओर बढ़ी। मौलवी मुहम्मदीमें थे। उनकी सवार सेना अंग्रेज़ी सेनाको रोकने लगी। इस कारण अंग्रेज़ी-सेनाने तोपें चलानेका इन्तजाम किया। इतनी देरमें किलेमें आग लगाकर मौलवीकी सेना वहांसे चल पड़ी। कचियानीके जंगलमें एक मिट्टीका बना कच्चा किला था। एक समय अंग्रेज़ आकर उसमें छिपे थे। वह भी नष्ट कर दिया गया।

इसके बाद मौलवीने अपनी ताकत बढ़ानेके लिये और नये उपाय रचे। कहा जाता है कि अंग्रेज़ी राज्यसे मौलवीको बड़ी घृणा थी। ग़दरके प्रारम्भमें, भारतके भिन्न २ स्थानोंमें घूम २ कर, उन्होंने हरएक जातिको अंग्रेज़ोंके विरुद्ध उभारा था। खैर जो कुछ हो, इस समय अपनी सेना और बेगम हजरत-महलके धनसे शक्तिशाली बनकर मौलवी साहबने शाहजहांपुरसे इक्कीस मील पोवाइन नामक नगरकी ओर यात्रा की। उनका इरादा था कि इस स्थानके राजा जगन्नाथसिंहको अपनी ओर मिलाकर अंग्रेज़ोंके खिलाफ युद्ध करेंगे। पोवाइन पहुंचनेके पहले ही मौलवीने अपना इरादा राजाको लिखा, राजाने मौलवी-से भेंट करनी स्वीकार की। इसी भरोसे मौलवी पोवाइन गये, पर जाकर देखा कि शहरके दरवाजे बन्द हैं। फसीलोंपर राजा अपने भाइयों तथा नौकरोंके साथ मौजूद हैं। इससे मौलवीको होश हुआ। उन्होंने समझा कि जबतक वे अपने भाषणसे राजा-

की सोई हुई शक्ति न जगावेंगे तबतक राजा इनकी ओर नहीं आ सकता। जिस हाथीपर मौलवी थे उसके फीलवानको कहा कि हाथीसे शहरका दरवाजा तुड़वा दो। फीलवानने हाथीको इशारा किया। हाथीने दरवाजेमें इस जोरकी टक्कर लगाई कि थोड़ी देरमें वह टूट गया। यह देखकर राजाके भाईने मौलवीपर बन्दूक चलाई। इसी गोलीसे मौलवीका शरीरान्त हो गया। उनके नौकर भाग गये। इसके बाद मौलवीका सिर काटकर राजा अपने भाइयों सहित शाहजहांपुरकी अंग्रेज़ी सेनामें पहुंचे। गवर्मेंटने मौलवीके सिरके लिये राजाको पचास हजार रुपये इनाम दिये। एक अंग्रेज़ इतिहासलेखकने इसपर लिखा था—"इस प्रकार फैज़ाबादके मौलवी अहमदुल्लाकी मृत्यु हुई। यदि कोई अपनी स्वाधीनताको फिर प्राप्त करनेके लिये युद्ध करे और इस कामको देशभक्ति कहते हों तो मौलवी निस्सन्देह देशभक्त था। किसीको गुप्तरूपसे बध करके या लड़ाईके मैदानमें मारकर मौलवी कलंकी नहीं हुआ। जिन विदेशियोंने उसके देशपर कब्जा किया था उन्हें निकालकर स्वाधीनताके लिए मौलवीने अपूर्व कौशल, धैर्य और वीरतासे संग्राम किया। वह अपनी जातिका साहसी और वरणीय पुरुष था *।"

ऊपरवाले प्रशंसाके शब्द एक अंग्रेज़के लिखे हुए हैं। इसी कारण अंग्रेज़जातिका महत्व है कि वह समयपर अपने शत्रुकी भी प्रशंसा करती है, उसके गुणोंका आदर करती है। पर

* Malleson's Indian Mutiny Vol. II P. 544,

मौलवीके मरनेसे अंग्रेज़ोंके एक बड़े दुश्मनका अन्त हुआ क्योंकि मौलवी वीर, पराक्रमी और रणकुशल पुरुष था। प्र० सेनापति कास्पवेलकी चतुराईको मौलवीने दो बार व्यर्थ कर दिया था। काम्पवेलने भी मौलवीकी प्रशंसा की थी।

इस घटनाके साथ २ एक अंग्रेज़ी सेनाका वीर भी मरा। लखनऊकी लड़ाईमें समुद्री सेनापति कप्तान पील घायल हुए थे। इन्हें कानपुर लाया गया था। २७ मईको कानपुरमें इनका शरीरान्त हो गया। कप्तान पीलने सिपाहियोंसे युद्ध करनेमें बड़ा काम किया था। उन्होंने योग्यता और शृंखलाके साथ हर जगह अपनी सेनाका संचालन किया था। इनकी स्मृतिमें सफेद पत्थरकी मूर्ति बनाई गई और वह कलकत्ताके ईडन गार्डनमें स्थापित की गई।

इस प्रकार अवधके हाथ आ जानेपर प्रधान सेनापतिने रुहेलखण्डपर कब्जा करनेका निश्चय किया। बरेलीमें खां बहादुरखाँका आधिपत्य था। शाहज़ादा फीरोजशाहके सिपाही बरेली चले गये थे। खां बहादुरको अंग्रेज़ोंकी शक्ति और युद्धप्रणालीका ज्ञान था, इस कारण उन्होंने घोषणा की थी कि,

रुहेलखण्ड

"तुम काफिरोंके सामने लड़ाई मत करो। वे शक्तिमें तुमसे अधिक और तोपों तथा सामानसे सबल हैं। तुम उनकी चालोंको देखो। जहांसे वे नदी पार कर सकें उन पुलोंको तोड़ दो। उनकी रसद रोक दो या जला दो। उनकी डाकका रास्ता बिगाड़ दो। जहां वे पड़ाव करें वहां छिपे२ उनका

अनिष्ट करो जिससे वे चैन न ले सकें।"* खांबहादुरने युद्धमें मरहट्टोंकी नीतिका अनुसरण किया था। खैर, जो कुछ हो, प्र० सेनापतिके भेजे जिन जिन सेनापतियोंने भिन्न २ स्थानोंकी ओर यात्रा की थी उनमेंसे सेनापति वालपोल रुइया गये थे। यह स्थान लखनऊसे ५१ मीलपर है। यहां एक मिट्टीका किला बना था। इसके राजा नरपतिसिंह बूढ़े और हाथ पैरोंसे पंगु थे। अंग्रेज़ी सेनासे लड़नेकी न उनमें ताकत थी और न इच्छा। पर अवधकी बेगमसाहबकी आज्ञासे वे लड़नेको तैयार हुए। विद्रोही उनके किलेमें आ गये थे। कप्तान हडसनकी सेनाका एक गोरा इसमें कैद था। वह भागकर सेनापति वालपोलसे मिला और उसने नरपतिसिंह और उसके किलेकी हालतका बयान किया। १५ अप्रेलको वालपोलकी सेनाने रुइयाके किलेपर धावा किया। किलेके सिपाहियोंने भी बन्दूकें चलाईं। कहा जाता है कि किलेके भीतर एक ऊंचा पेड़ था। इस पेड़पर चढ़कर एक गोरेने निशाना लगाकर सेनापति होपको मार दिया। गदरके इतिहासलेखकोंमेंसे कइयोंका विश्वास है कि एक यूरोपियन विद्रोहियोंमें था।†

रात आ जानेके कारण अंग्रेजी सेना वापिस लौट आई। इस

* Russell's Diary, Vol. I, P. 276.

† रीजने लिखा है कि क्रोकड़लकी लड़ाईमें भी एक विद्रोही यूरोपियन था। वे उसे रूसी बताते हैं। फार्वस मिचलने भी दो यूरोपियनोंका विद्रोही होना लिखा है।

—Reminiscences Appendix,

अर्सेमें विद्रोही किला खाली करके भाग गये। दूसरे दिन अंग्रेज़ी सेनाने किला नष्ट कर दिया। १७ अप्रेलको विश्राम करके वे रुहेलखण्डकी ओर बढ़े। २२ अप्रेलको उन्होंने रामगङ्गाके किनारे सिरसा नामक स्थानपर विद्रोहियोंको देखा। थोड़ी सी अंग्रेज़ी सेनाने नदी पारकरके इन्हें हराया। इनमेंसे बहुतसे मारे गये और जो बचे वे रामगङ्गामें डूब गये। लगभग तीन बजे बड़े जोरका तूफान आया, साथ ही पानी बरसने लगा। इससे रामगङ्गामें पानी अधिक हो गया। दूसरी पार गई हुई अंग्रेज़ी सेना भूखी पड़ी रही। २७ को यह सेना चलकर प्रधान सेनापतिकी सेनासे मिली। प्र० सेनापति रामगंगा उतरकर रुहेलखंड आ गये थे। इस समय प्रधान सेनापतिने अपनी सेनाको आज्ञा दी कि किसी प्रजाकी सम्पत्ति न लूटी जाय। किसीको बिना कारण न मारा जाय। जलालाबादमें एक किला था। इस किलेमें विद्रोहियोंने शरण ली थी, पर जब अंग्रेज़ी सेना आई तब वे छोड़कर चले गये। कहा जाता है कि वहांका तहसीलदार विद्रोहियोंसे मिल गया था। एक अंग्रेज़ अफसरने कहा कि यदि तहसीलदार अपने आप गिरफतार हो जाय तो उसे कोई हानि न पहुंचाई जायगी। तहसीलदार अपने आप गिरफतार हो गया, पर मजिस्ट्रेटने उसे फांसी दे दी। फांसीसे पहले तहसीलदारने कहा कि अंग्रेज़ अफसर मुझे धोखा देकर लाये। प्र० सेनापतिने मजिस्ट्रेटके कामपर घृणा प्रगट की। पर लार्ड कैनिंगने मजिस्ट्रेटका समर्थन किया।

पहले कहा जा चुका है कि प्र० सेनापतिने तीन हिस्सोंमें सेना बांटकर उन्हें अलग अलग भेजा था। सेनापति वालपोल उनसे रुइयाकी ओरसे मिले। बाकी दो सेनापति दूसरी ओरसे आये। यह सम्मिलित सेना ५ मई (१८५८) को बरेलीकी ओर चली। बरेलीकी सेनाने प्रशंसनीय वीरताका परिचय दिया था। सिपाहियोंकी बंदूकोंसे बहुतसे अंग्रेज़ी सैनिक मरे और घायल हुए। सेनापति वालपोल भी घायल हो गये। एक बार प्रधान सेनापति भी घिर गये थे। जो उनकी आज्ञासे एक ब्रिटिश सैनिक सिपाहीको संगीनसे न मारता तो सिपाहीकी तलवारसे प्र० सेनापति मारे जाते। बरेलीके गाजी हाथोंहाथ तलवारोंसे लड़े थे। उनकी वीरता और हिम्मत प्रशंसाके योग्य थी। जब वे हारनेके किनारेपर ही थे तब पांच सवार नंगी तलवारें लिये इस ज़ोरसे झपटे और उन्होंने तलवारोंके हाथ ऐसे सफाईसे चलाये कि पांच सवारोंने सौ अंग्रेज़ी सैनिकोंको मार डाला। उनकी तलवारें ऐसी घूमती थीं कि इधर उधरके सैनिकोंके सिर ककड़ीकी तरह उतर जाते थे। इस प्रकार संग्राम करके इन पांचों वीरोंने शरीर त्याग किया। विपक्षियोंकी वीरता देखकर एक शिक्षित अंग्रेज़ी गोलंदाज उनमें जा मिला। बड़ी वीरतासे इसने अंग्रेज़ी-सेनापर वार किया। जब यह घायल होकर गिर गया तब अंग्रेज़ी सैनिक इसे उठाकर अफसरोंके सामने लाये। इसे देखकर अफसरोंके आंसू निकल पड़े। उन्होंने कहा कि यह ऐसा वीर और अपने कामका होशियार था कि इससे दुश्मनोंकी जिस

तोपपर गोला फेंकनेको कहा जाता, ठीक उसी तोपपर इसका गोला जाकर गिरता था। इस प्रकार वीरताकी समाप्ति हुई। ७ मईको बरेलीपर फिर अंग्रेज़ोंका कब्ज़ा हुआ। खां बहादुरखां वहाँसे भाग गये। इस तरह दिल्ली, कानपुर, लखनऊ और बरेली-पर ब्रिटिश शासन हो गया। १८५८ के जून मासमें विद्रोही पश्चिमोत्तर प्रदेशके अन्य स्थानोंसे भी खदेड़े गये। वे इधर उधर छिपने लगे। उनके अधिकार किये सब स्थानोंपर अंग्रेज़ोंका कब्ज़ा हो गया। फिर अंग्रेज़ अफसर राज्य करने लगे।

रुहेलखंडके अन्तर्गत बिजनौरमें भी गड़बड़ हुई थी। यहाँके कलक्टर शेक्सपियर साहब तथा सहायक सैयद अहमद (बादमें सर और अलीगढ़ कालिजके संस्थापक) थे। गदरके अवसरपर सैयद अहमदकी राजभक्ति भी प्रशंसाके योग्य साबित हुई। इन्होंने नवाबसे दूतके रूपमें मिलकर अंग्रेज़ोंको भागनेमें मदद दी। अंग्रेज़ इन्हें बिजनौरके शासनका भार दे गये। अन्तमें यहाँ-की गड़बड़ भी शान्त हुई। इस प्रकार १८५८ के जून मासमें पश्चिमोत्तर प्रदेशके भिन्न भिन्न स्थानोंमें शान्ति हुई।

मध्यप्रदेशके सागर और नर्मदा इलाके तथा बम्बई प्रान्तकी ओर भी गड़बड़ हुई थी। १८५७ में सागर, होशंगाबाद, जबल-पुर आदि ग्यारह जिलोंमें मध्यप्रदेश बँटा था। जब १८४३ में ग्वालियरसे अंग्रेज़ोंकी लड़ाई हुई थी और महाराजपुरकी संग्रामभूमिमें दोनोंका फैसला हुआ था उस समय विदेशी शासनसे घृणाके कारण समझिये या ग्वालियर

मध्यप्रदेश

दरबारके उकसानेसे समझिये, ये मध्यप्रदेशके सरदार अंग्रेजोंके विरोधी हुए थे। उस समयके गवर्नर जनरल लार्ड एलनबराने कर्नल स्लीमनको इस विद्रोहकी शान्तिके लिये भेजा था। कर्नल स्लीमनकी चतुराई और शासनकी योग्यतासे विद्रोह शान्त हो गया था। प्रजा भी अनुरक्त हो गई थी। पर बादमें यह प्रदेश पश्चिमोत्तर प्रदेशके शासक टामसनके अधीन हुआ। फिर विरक्तिका संचार हुआ। इस विरक्तिका एक उदाहरण दे देना अधिक उपयुक्त होगा। सन् १८४३ में दिलहेरीके एक गोंड राजाकी विश्वस्ततापर प्रसन्न होकर गवर्मेंटने उन्हें सोनेका पदक इनाममें दिया। अधिक खर्च होनेके कारण यह राजा कर्जदार हो गया था। जब मध्यप्रदेश पश्चिमोत्तर प्रदेशके शासकके अधीन हुआ तब कुछ समय बाद राजाने कर्ज चुका दिया। पर इस समय शासनप्रणाली भिन्न प्रकारकी थी। १८५५ में ले० गवर्नर दिलहेरीके राजाकी "राजा" पदवी और जमीन लेनेको तैयार हुए। जिस जगह राजाकी जमीन थी उसके शासक कप्तान टर्नर थे। पश्चिमोत्तर प्रदेशके ले० गवर्नरने यह सिद्धान्त बना लिया था कि राजा अपने कामके अयोग्य है। इसलिये उसकी "राजा" पदवी छीनकर जमीन प्रजाको दे दी जायगी। उसे जमींदारोंसे सैकड़े पीछे चार पांच रुपयामात्र मिल जायंगे। पर कप्तान टर्नर सहृदय आदमी थे। पश्चिमोत्तर प्रदेशके ले० गवर्नरकी इस नीति पर उन्हें दुःख था। बड़े दुःखसे उन्होंने राजाको गवर्मेंटकी इच्छा मालूम कराई। बूढ़े गोंड राजाको बड़ा दुःख हुआ। उसने कहा—

"जिन्होंने मुझे एक दिन यह सोनेका पदक देकर सम्मानित किया था आज वे मेरी पदवी और दादा परदादोंकी जमीन छीनकर मुझे इस तरह अपमानित कर रहे हैं। आप यह उनका पदक उन्हें ही वापिस कर दें।" यह कहकर राजाने पदक खोलकर टर्नर साहबको दे दिया। गोंड लोगोंने समझा कि इससे बूढ़ा राजा गवर्मेंटका विरोधी बनेगा। पर इस अपमानके कारण भी बूढ़ेने गवर्मेंटका विरोध न किया। राजाका पक्ष समर्थन करनेके कारण कप्तान टर्नरको ले० गवर्नरने डांटा था। बूढ़ा राजा इस कारण टर्नरका कृतज्ञ था। जब १८५७ में नरसिंहपुर जिलेमें गदर हुआ तब कप्तान टर्नर अपना घर छोड़नेपर सहमत न हुए। एक दिन उनका घर बहुसंख्यक बंदूकधारियोंसे घिर गया। कप्तान टर्नरने देखा कि ये दिलहेरीके लोग हैं। कप्तानने उनके दलपतिको बुलाकर इसका कारण पूछा। उसने गम्भीरतासे कहा—"जिस दिन हमारी पदवी और सम्पत्ति ली गई उस दिन आपने हमारा पक्ष लिया था, आपने ले० गवर्नरकी फटकार भी हमारे लिये सुनी। अब हमने सुना है कि आपको मारने बहुत-से सिपाही आ रहे हैं इसलिये हम आपकी रक्षा करने आये हैं। उस दिन आपने हमारा पक्ष लिया था। आज हमने आपका पक्ष लिया है। अब हमें बताइये क्या करना होगा।" कप्तान टर्नरने उनकी सहायता ली। इस वंशके जितने आदमी थे सबने गवर्मेंटकी मदद की *।

* Malleson's Indian Mutiny of 1857 P.256 note

जिस तरह दिलहेरीके राजाकी पदवी और सम्पत्ति ली गई थी उसी तरह सागर और नर्मदा जिलेके अन्यान्य राजाओंकी भी सम्पत्ति छीनी गई थी। दिलहेरीका राजा राजभक्त था, पर बाकी सब राजभक्त न थे। सम्पत्ति छिननेका जो दुःख था वह १८५७ में फूट पड़ा। सर ह्यूरोज मध्यप्रदेशमें विप्लव रोकनेपर नियत हुए थे। इन्दौरसे कालपीतक जो विप्लव हुआ उसे रोकनेमें इन्हें अशेष काम करना पड़ा। रथगड़, सागर, चन्देरी, जबलपुर आदि स्थानोंका सिपाही विद्रोह शान्त हुआ। रथगड़ मध्य प्रदेशका एक पहाड़ी किला है। यह सागरसे चौबीस मील दूर है। मुहम्मद फजल खां नामक एक आदमी 'मूंदेश्वरके नवाब' की उपाधि धारण करके इस किलेसे गवर्मेंटके विरुद्ध हुए। १८५८ के जनवरी मासमें सर ह्यूरोजने इस किलेपर हमला किया। फरवरीमें यह किला घिरा। कानपुरके राजाने एक समय आगे हुए अंग्रेजोंकी मदद करके भी, अन्तमें घटनावश इच्छा न होनेपर भी विद्रोही हो गये। शाहगढ़के राजा भी विरोधी बने। ये दोनों अन्तमें हारे। मुगल सम्राट् अकबरके जमानेमें चन्देरी एक मुख्य स्थान था। अकबरके जमानेमें यह कहावत थी कि "यदि कोई ऐसा शहर देखना हो जिसके तमाम मकान महलोंके समान हों तो चन्देरी देखो।" इस समय चन्देरीमें १४ हजार पक्के मकान, ३८४ बाजार, ३६० धर्मशाला या सराय और १२ हजार मसजिदें थीं। यह प्रसिद्ध नगर विद्रोहियोंके कब्जेमें चला गया था। १८५८ के मार्च मासमें इसपर अंग्रेजी सेनाका कब्जा हुआ।

सिकन्दर बेगम अपनी लड़कीके नामसे भूपालका राज्य कर रही थीं। इनकी कोशिशसे भूपालमें शान्ति रही।

बम्बई प्रान्तमें इनाम कमीशनके कारण मरहटे ज़मींदार बर्बाद हुए थे। इसी समय इन्हें नानासाहब और तांतियातोपीकी कार्रवाइयोंका भी पता लगा था। इसलिये यहां भी उत्तेजनाके लक्षण दीखने लगे। पर वहांके गवर्नर लार्ड एलफिनस्टन योग्य थे और उन्होंने होशियारीसे सबको शान्त किया। इसलिये गदर रुक गया। हैदराबादमें वहांके मन्त्री सालारजंग (बादमें सर) की योग्यतासे सेनाएँ शान्त रहीं।
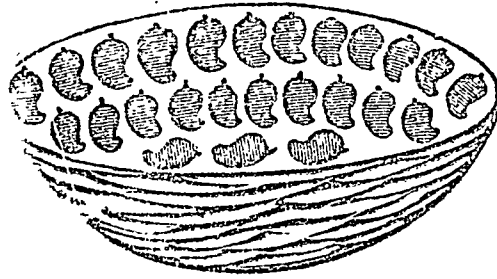
ग्यारहवाँ अध्याय

झांसीकी महारानी लक्ष्मीबाईकी प्रारम्भिक जीवनी—उनका विधवा होना—गवर्मेंटके द्वारा उनका राज्य लिया जाना—झांसीमें गदर—लक्ष्मीबाईका काम—अंग्रेज सेनापतिकी झांसीयात्रा—लक्ष्मीबाईसे अंग्रेजी सेनाका संग्राम—लक्ष्मीबाईकी वीरता—उनका झांसी त्याग—झांसीके किलेपर अंग्रेजोंका अधिकार—रावसाहब और तांतिया तोपीका लक्ष्मीबाईसे मिलना—कूंचका संग्राम—अंग्रेजी सेनाका कालपीपर अधिकार—लक्ष्मीबाई और रावसाहब आदिका ग्वालियर जाना—ग्वालियरके महाराज सिंधियाका भागना—रावसाहब और लक्ष्मीबाईका ग्वालियरपर कब्जा करना—अंग्रेजी सेनापतिकी ग्वालियरपर चढ़ाई—महारानी लक्ष्मीबाईका सम्मुख संग्राम—उनका युद्धभूमि छोड़ना—अंग्रेज सेनापतिका पीछा करना—लक्ष्मीबाईकी मृत्यु—ग्वालियरपर फिर सिंधियाका अधिकार—दामोदरराव ।

झांसी पहले सागर और नर्मदा प्रदेशमें थी । इसके उत्तरमें बांदा, इलाहाबाद और मिर्जापुर; दक्षिणमें नागपुर तथा निजाम राज्य, पश्चिममें ग्वालियर राज्य है । इस प्रदेशका अधिक भाग तो पहले ही गवर्मेण्टके हाथ आ चुका था । लार्ड डलहौज़ीकी शासननीतिके

कारण झांसी भी अंग्रेज़ी अमलदारीमें शामिल कर ली गई थी। झांसीके ग़दरका वर्णन करते ही, महारानी लक्ष्मीबाईका वर्णन करना पड़ता है। थर्मापलीका नाम लेते ही जैसे लियोनिदस और हल्दी घाटीका नाम लेते ही जैसे महाराणा प्रतापसिंहकी याद आती है, वैसे ही झांसीका नाम लेते ही महारानी लक्ष्मी-बाईका ख़याल होता है। झांसीके ग़दरका वर्णन करते हुए महारानीके वीरचरित्रका वर्णन करते हैं।

कृष्णराव तांबे नामक एक महाराष्ट्र ब्राह्मण कृष्णा नदीके किनारे ओयाई नामक गांवमें रहते थे। पेशवाओंके अधीन ये वहाँके मामलतदार (मजिस्ट्रेट या कलक्टर) के पदपर थे। इनके पुत्र बलवन्तराव पेशवा सरकारमें सेनानायक थे। बल-वन्तरावके कई पुत्र थे, इनमेंसे बड़ा मेरोपन्त पिताके साथ पूनामें रहता था। अन्तमें ये पेशवा बाजीरावके भाई चिमाजी आप्पाके कृपापात्रोंमें हो गये थे। जब चिमाजीने काशीनिवास किया तब इनके प्रिय मेरोपन्त भी अपने स्त्री पुत्रों सहित काशी रहने लगे। काशी रहकर वे चिमाजीके दीवानका काम करते थे।

हिन्दुओंके चिरपवित्र तीर्थ काशीमें १९ नवम्बर १८३५ को मेरोपन्तके एक कन्या हुई। इस कन्याको पिताके घरमें मनुबाई कहा करते थे। जब यह तीन चार सालकी हुई तब माता भागीरथीबाईका शरीरान्त हो गया। इसी समय मेरो-पन्तके स्वामी और सहायक चिमाजी आप्पाकी भी मृत्यु हो गई। इसलिये काशी छोड़कर मेरोपन्त बिठूरमें बाजीरावके आश्रयमें

रहे। मातृहीन मनुबाईको पिताने बड़े स्नेहसे पाला पोसा। वह सदा अपने पिताके पास रहती, पिताके पास ही खेलकर वह अपनी माताको भूली थी। घरमें और कोई स्त्री न होनेके कारण मनुबाई पिताके पास ही रहती थी। मनुका लावण्यमय सुन्दर मुख, सुगठित शरीर, गौरवर्ण देखकर बाजीरावके अनुचर उसे आदरसे छबेली (मैना) कहा करते थे। पेशवाके गोद लिये पुत्र नानासाहब और रावसाहबके साथ यह लड़की खेलती थी। बालिकापर बाजीरावका अत्यधिक स्नेह था। इसी कारण उसका हठ भी पूरा होता था। जब नानासाहब घोड़ेपर बैठकर बाहर हवा खाने जाते तब मनु भी घोड़ेपर बैठकर उनके साथ जाती। नानासाहबको तलवार चलाते देखकर मनु भी तलवार चलाती। पानीमें तैरना, निशाना लगाना आदि वह बचपनसे ही सीखने लगी। खुद रानी बन जाती और किसीको दासी, किसीको नौकरनी बनाती, आज्ञा न माननेपर उन्हें दंड देती। इस प्रकार आग्रहके साथ मनुने वीरोचित गुणोंकी शिक्षा प्राप्त की थी। साथ ही वह लिखने पढ़नेमें भी योग्य बनी। कहा जाता है कि भ्रातृद्वितीयाको मनु नानासाहबको खिलाया करती थी। अन्तमें दोनोंका परिणाम एक ही हुआ।

एक दिन एक ज्योतिषीने मनुकी जन्मपत्री देखकर कहा था कि मनु राजरानी होगी। पर मेरोपन्तको ज्योतिषीकी बातपर विश्वास न हुआ। इससे पहले उन्होंने अपनी कन्याके लिये वर तलाश किया, पर कोई योग्य वर न मिला। इसलिये

ज्योतिषीपर भी उन्हें श्रद्धा न आयी। पर ज्योतिषीने दृढ़ताके साथ कहा कि उसकी गणित कभी मिथ्या हो ही नहीं सकती। इसी समय झांसीके महाराज गंगाधररावकी रानी मरी थीं। ज्योतिषीने गंगाधररावके साथ अपनी कन्याके विवाहका प्रस्ताव करनेको मेरोपन्तसे कहा। ज्योतिषीके कहनेसे मेरोपन्तने बाजी-रावसे एक अनुरोधपत्र गंगाधररावको लिखवाया।

गंगाधररावने कन्या देखनेके लिये अपने एक मंत्रीको भेजा। मंत्रीसे कन्यांके गुण और रूप लावण्यकी बात सुनकर विवाहके लिये सहमत हुए। १८४२ में बड़ी धूमधामसे मनुबाईका विवाह गंगाधररावसे हो गया। इस समय मनु आठवें वर्षमें थी। जिस समय पुरोहित गांठ बांध रहा था तब इस आठ सालकी मनुने कहा था—"गांठ जोरसे बांधो"। इसी वीर सिंहनीने गरजकर लार्ड डलहौज़ीसे कहा था—"मैं अपनी झांसी नहीं दूंगी।" ब्रिटिश कर्मचारी उस समय देखते रह गये थे।

मरहटोंकी रीतिके अनुसार जब बहू अपने श्वसुरके घर आती है तब उसका नाम दूसरा रखा जाता है। मनुका रूप लावण्य और सुश्रीमूर्ति देखकर झांसीके राजपरिवारने उसे साक्षात् लक्ष्मी समझा था, इसीलिये उसका नाम 'लक्ष्मीबाई' रखा गया। मेरोपन्तकी मनुबाई और पेशवाके अनुचरोंकी छबेली अब लक्ष्मीबाईके नामसे प्रसिद्ध हुई। विवाहके बाद लक्ष्मीबाईके पिता झांसी राज्यके सर्दारोंमें हुए। उन्होंने अपना दूसरा विवाह किया, उससे एक पुत्र और एक कन्या हुई।

सन् १८५० में लक्ष्मीबाईके एक पुत्र हुआ। पुत्रका मुख देखकर गंगाधरराव आह्लादित हुए। झांसीमें बड़ा उत्सव हुआ। पर वह तीन महीनेका होकर मर गया। लक्ष्मीबाईको इससे शोक हुआ, गंगाधरराव तो इस शोकमें बीमार हो गये। बड़े २ वैद्योंके इलाजसे भी उन्हें आराम न हुआ। अन्तमें उनका शरीरान्त हुआ। गंगाधरराव जीतेजी एक पुत्र गोद ले गये थे। झांसीका यह विवरण इस ग्रन्थके पहले भागमें आ चुका है। पर लार्ड डलहौज़ीकी सर्वस्वग्राहिणी नीतिने झांसीराज्यको हड़प लिया। इस दत्तक पुत्रका नाम दामोदरराव था। जब ब्रिटिश कम्पनीने राज्य ले लिया तब राज्यके कर्मचारियोंको जवाब दिया गया। मोरोपन्त और लक्ष्मणराव रानीके ट्रस्टी बनकर काम करने लगे। जब दामोदरराव सात बरसके हुए तब महारानीने उनका यज्ञोपवीत धूमधामसे करना चाहा। पर उसके पास धन न था, इसलिये १८५५ में उसने गवर्मेंटसे प्रार्थना की कि उसके पतिका जो धन गवर्मेंटके पास है उसमेंसे एक लाख रुपया उसे उपनयन-संस्कारके लिये दिया जाय। गवर्मेंटने इसका जवाब यह दिया कि दामोदरराव जब बालिग होकर यह रुपया मांगेगा तब उसे मिलेगा। लक्ष्मीबाईको एक लाख रुपया इस शर्तपर दिया जा सकता है कि जब दामोदरराव बालिग होकर अपना रुपया मांगेगा तब उसे देना होगा, इसके लिये चार पदस्थ आदमियोंकी गवाही दिलानी होगी। इससे लक्ष्मीबाईको बहुत दुःख हुआ, पर और कई

उपाय न देखकर वे इसीपर सहमत हुईं। तीन लाख रुपये लगाकर महारानीने पुत्रका जनेऊ किया।

धर्मानुष्ठान और ईश्वरचिन्तामें लगकर लक्ष्मीबाईने अपने मानसिक दुःखको भूलनेकी चेष्टा की। सवेरे चार बजे उठकर वे स्नानादि करतीं और शिवपूजामें बैठतीं, फिर आठ बजे पूजासे उठतीं। फिर चार पांच घोड़े लेकर वे करीब दो घंटे तक महलके भीतर मैदानमें उन्हें फिरातीं। ग्यारह बजे फिर स्नान करके नित्य नैमित्तिक दान आदि देकर भोजन करतीं। ग्यारह बजेसे शामके तीन बजे तक ग्यारह सौ "राम" नाम छोटे छोटे कागजों-पर चन्दनसे लिखकर आटेमें गोलियाँ बनवातीं और मछलियोंको खिलातीं। शामको ६ से ८ तक पुराणकी कथा सुनतीं। जो उनसे मिलना चाहते वे इसी समय मिलते थे। फिर स्नान करके वे पूजामें बैठतीं और आधीरातको पूजा समाप्त करके सोतीं। महालक्ष्मी देवीपर उनकी विशेष श्रद्धा थी। प्रति शुक्र-वारको व्रत करके वे महालक्ष्मीके दर्शन करने जाती थीं।

पतिके मरनेके बाद तीन सालतक लक्ष्मीबाई इसी तरह विधवाके कठोर आचारका पालन करती रहीं। इसके बाद गदर शुरू हुआ। लक्ष्मीबाई एकाएक गवर्मेंटके विरुद्ध नहीं हुईं। अंग्रेज़ गवर्मेंटने उनका राज्य ले लिया था। उन्हें गवर्मेंटसे दुःख पहुंचा था। उन्हें न्याय नहीं मिला, फिर भी वे एकाएक गवर्मेंटकी दुश्मन नहीं बनीं। इस विषयमें इतिहास लेखक 'के' ने लिखा है—"महारानीको जिन सब बातों-

से विरक्ति हुई थी उन सब बातोंमें गोहत्या प्रधान थी। धर्म-प्राण हिन्दूके निकट यह बात बहुत ही धर्मकी हानि करनेवाली है। रानीने गोहत्या बंद करनेके लिये गवर्मेंटके पास प्रार्थना-पत्र भेजा। झांसीके निवासियोंने भी प्रार्थनापत्रपर हस्ताक्षर किये, पर इसका उत्तर सन्तोषजनक न मिला। गवर्मेंटने गोहत्या रोकनेसे इनकार किया। इससे रानी और अधिक विरक्त हुईं। इसके बाद 'के' साहबने लिखा है कि—"गवर्मेंट-ने रानीसे कहा कि अपने पतिका कर्ज चुकाओ। रानीने गव-र्मेंटसे कहा कि उसके पतिका बहुत सा धन गवर्मेंटके पास है। इन्दौरके रेजीडेंट सर हैमिल्टनने भी रानीका पक्ष समर्थन किया। पर गवर्मेंटने एक न सुनी। इसके बाद रानीको जो मासिक पांच हजार रुपया देना निश्चित था वह बंद किया गया। रानीने कहा कि, जब मुझे पतिका धन नहीं मिला तब मैं पतिका कर्ज चुकानेकी हकदार कैसे हो सकती हूं। उन्होंने यह भी कहा कि मैं झांसी छोड़कर काशी रहनेके लिये तैयार हूँ। रानीके साथ गवर्मेंटने ऐसी क्षुद्र और नीच नीतिका अनुसरण किया था कि उसका फल गदर ही होना चाहिए था। रानी धीरे २ समझ गई कि गवर्मेंट उसकी दुश्मन है। उसमें पुरुषके समान शक्ति और नारीके समान हिंसा थी। रानी समयकी प्रतीक्षामें रही। उसने यह समझ लिया था कि जमाना बदलेगा। अन्तमें सन् १८५७ आया। इस समय रानीकी अवस्था बाईस या तेईस साल की थी। 'के' साहबने उनतीस या

तीस लिखी है। उनमें जैसी योग्यता वैसी ही कार्यपटुता थी। जब वे किसी अंग्रेज़से बातें करतीं तब अपना क्रोध वशमें कर लेती थीं। वे बुद्धिमती और सदाचारिणी पवित्र हिन्दू विधवा थीं।"

उस समय झांसीमें १२ नं० सिपाही सेनाका एक हिस्सा और १४ नं० अनियमित रिसाला तथा कुछ गोलंदाज़ थे। कप्तान डनलप इन सबके सेनापति थे। जिस दिनसे झांसी अंग्रेज़ राज्यमें शामिल हुई थी उसी दिनसे कमिश्नर स्कीन उसका प्रबन्ध कर रहे थे। कमिश्नर स्कीनको यह विश्वास न था कि झांसीमें किसी प्रकारकी अशान्ति होगी। मेरठ और दिल्लीके समाचार सुननेपर भी कमिश्नरका यही विश्वास था। १८ मईको उन्होंने आगराके ले० गवर्नरको लिखा था—"मेरे खयालसे यहां किसी प्रकारकी अशान्तिकी आशंका नहीं है। यहांके सिपाही विश्वासी हैं और मेरठ तथा दिल्लीकी घटनाओंपर उन्होंने घृणा प्रगट की है। ये कप्तान डनलपके समान एक योग्य सैनिकके अधीन हैं। वे इनका संचालन जानते हैं। उन्हें इनमें किसी प्रकारका असन्तोष नहीं दिखाई देता। मई मास बीत गया। जूनमें भी कमिश्नर साहब सिपाहियोंसे सन्तुष्ट रहे। पर देखते २ विपत्तिके बादल घिरने लगे।

३ जूनको कमिश्नरने सिपाहियोंकी राजभक्तिकी प्रशंसा की थी। इसके एक या दो दिन बाद दिनमें ही दो अंग्रेज़ोंके बंगले जल गये। अब अधिकारियोंने और किसी ओर नजर न करके

अपनी सम्पत्ति तथा जान बचानेकी फिक्र की। तमाम अंग्रेज़ अधिकारी अपने परिवारोंके साथ शहरके किलेमें चले गये और फौजी अफसर फौजोंमें रहे। कप्तान डनलप और उनके सहायक सिपाहियोंको शान्त करने लगे। पर अब बातोंसे शान्ति न हो सकती थी। दूसरे दिन सब परेडके मैदानमें एकत्र हुए। इस समय भी किसीने विरोध न किया। पर यह शान्ति अधिक कालतक स्थायी न रह सकी। तूफानसे पहले प्रकृति जैसे शान्त होती है यह शान्ति भी वैसी ही थी। स्कीन और गार्डन साहबने छावनीमें जाकर कप्तान डनलपसे मुलाकात की। स्कीन वापिस किलेमें आगये। गार्डन साहबने अपने घर जाकर खाना खाया और सरदारोंको सहायताके लिये पत्र लिखे। पर सवेरे ही सब सिपाही गवर्मेंटके विरुद्ध खड़े होकर अफसरोंपर गोलियां चलाने लगे। अफसरोंमेंसे करीब २ सभी मारे गये। केवल एक अफसर घायल होकर भी किसी तरह घोड़े-पर बैठकर भाग आया। इस प्रकार खूनसे शुरू करके सिपाहियोंने जेलके कैदियोंको मुक्त कर दिया, कचहरी जला दी, अन्तमें सबोंने मिलकर किलेको घेरा।

७ जूनको किलेके अंग्रेज़ घिरे। चारों ओर कराल काल दिखाई देने लगा। इस हालतमें अंग्रेज़ोंको भागनेका मौका न मिला। इस दशामें पड़कर अंग्रेज़ोंने उसीसे मदद मांगी जिसके साथ अनुचित व्यवहार किया था। कमिश्नरने महारानी लक्ष्मी-बाईको मदद करनेके लिये लिखा। कहा जाता है कि मददके

लिये अंग्रेज़ोंका पत्र लेकर जो जा रहे थे रास्तेमें सिपाहियोंने उन्हें पकड़कर लक्ष्मीबाईके सामने पेश किया। महारानीने उन्हें सिपाहियोंके ही सुपुर्द किया। इधर सिपाहियोंने किलेपर हमला किया। किलेके अंग्रेज़ बार बार मददके लिए महारानीको लिखने लगे। किलेके बाहर जैसे हथियारबन्द आदमी उन्हें मारनेकी चेष्टा कर रहे थे वैसे ही किलेके भीतर बिना हथियारवाले हिन्दुस्तानी अंग्रेज़ोंका खून करना चाहते थे। उन्होंने किलेका दरवाजा खोलनेकी चेष्टा की पर अंग्रेजोंने उन्हें पकड़ लिया। पर बाहरसे हमला करनेवालोंका उद्योग निष्फल न गया। कप्तान गार्डन मारे गये। भोजन सामग्री और गोले गोली समाप्त हो गई। ऐसी हालतमें सिवा आत्मसमर्पणके उनके लिये कोई चारा न था। कप्तान स्कीनने किलेसे सफेद झंडा उड़ाया।

सिपाहियोंके अध्यक्षोंने यह देखकर लड़ाई बंद की। उन्होंने साले मुहम्मद नामक एक डाक्टर द्वारा अंग्रेज़ोंसे कहलाया कि जो हथियार डालकर वे किला सिपाहियोंके सुपुर्द कर दें तो उन्हें जानसे न मारा जायगा। यह प्रस्ताव स्वीकार हुआ। किलेवालोंने हथियार डाल दिये। वे किलेसे जानेका आयोजन करने लगे पर अभागोंको जाना नसीब न हुआ। किलेका दरवाजा पार होते न होते सिपाही आगये और उन्होंने इनके हाथ बांधकर कैदी कर लिया। अब अंग्रेज़ोंके पास आत्मरक्षाका कोई साधन न था। कुछ सवारोंने इस समय आकर कहा कि रिसा-

लदारकी आज्ञा है कि इन्हें मार दो। इन सबको पेड़ोंके पास एक लानइमें खड़ा किया गया। जेलके दारोगाने यह नरघात समाप्त किया। तमाम मर्दोंको एक बारमें मार डाला गया और फिर औरतों तथा बच्चोंका संहार किया गया। इनकी लाशें तीन दिन तक रास्तोंमें डाल रखी गईं। बादमें एक ओर मर्द और दूसरी ओर स्त्रियां गाड़ दी गईं। इस प्रकार पचास साठ यूरोपियनोंका रणमें खून हुआ।

'के' साहबने झांसीके इस नरसंहारके विषय लिखा है—

"विश्वस्तरूपसे मालूम हुआ है कि रानीका कोई नौकर या उनका आदमी इस संहारके समय वहां न था। यह सब गदर्में टके विश्वासी कर्मचारियोंका काम था। सेनाके रिसाले-दारने आज्ञा दी और जेलके दारोगाने यह नरसंहार किया।"*

इससे यह साबित होता है कि महारानी लक्ष्मीबाई इस हत्यामें न थीं।

जिस महाराष्ट्र लेखकने महारानी लक्ष्मीबाईकी जीवनी लिखी है, उसका कहना है कि ७५ अंग्रेज, १९ स्त्रियां और २३ बच्चे मारे गये थे। जीवनीलेखकने लिखा है:—†

जून मासके प्रारम्भमें ही झांसीके सिपाहियोंकी उत्तेजना

---

* Kaye's Sepoy War. Vol III, P. 369

† लक्ष्मीबाईके एक बूढ़े कर्मचारीने झांसीकी लड़ाई देखी थी। बादमें वह इन्दौर जाकर रहा। वहां राव बहादुर चिन्तामणि नारायण वैद्य वकीलने उससे सब पूछ ताछ लिखा था यह वही वर्णन है।

देखकर अंग्रेज़ अफसर कप्तान गार्डनने महारानीको सहायता देनेके लिये लिखा। महारानी इससे सहमत हुईं पर उनकी सेना अधिक न थी। इसलिये उन्होंने अपनी सेनाकी तादाद बढ़ानेका प्रस्ताव किया। अधिकारियोंने स्वीकार किया।

दूसरे दिन गार्डन साहब अकेले रानीसे मिले और कहा कि आप हमारी स्त्रियों और बच्चोंकी रक्षाका भार ले लें। रानीने स्वीकार किया। दूसरे दिन गोरी स्त्रियां अपने अपने बच्चोंको लेकर रानीके महलमें पहुंचीं। रानीने सज्जनतापूर्वक उन सबको ठहराया और रक्षाके लिये पहरेवाले नियत कर दिये। पर वे अधिक समय रानीकी रक्षामें न रहीं। जब सिपाही गवर्मेंटके विरुद्ध खड़े हुए तब अंग्रेज़ किलेमें जा छिपे। क़िलेको उन्होंने बहुत मजबूत समझा और इसी कारण रानीके महलसे अपनी स्त्रियोंको ले गये। सिपाहियोंकी उत्तेजनाके समयमें भी महारानीने रातको छिपा २ कर तीन दिनतक तीन २ मन आटेकी रोटियां उनके लिये भेजी थीं। इसके बाद उनके भाग्यमें जो कुछ था वह ऊपर 'के' साहबके वर्णनसे दिया जा चुका है। असहाय अंग्रेज़, स्त्रियां और बच्चे मारे गये। जो रानीके पास शक्ति होती तो वह इन असहाय जीवोंको कभी न मरने देती। जिस समय अंग्रेज़ किलेमें घिरे थे, मुंशी अयोध्याप्रसादकी जबानी रानीने उनसे कहलाया था कि जो अंग्रेज़ कहें तो उनकी मददके लिये मैं ठाकुरोंको बुलाऊं। पर गार्डन साहबने इसके जवाबमें कहा था—"हम आपकी मदद नहीं चाहते। हमारी रक्षाकी

चिन्ता न कर आप अपनी ही रक्षा सोचें।" इससे आगे रानी क्या करती? जब सिपाही दिल्लीकी ओर चले गये तब रानीने अंग्रेज़ोंकी लाशोंको गड़वाया। दो अंग्रेज़ और एक मेम इस भयानक घटनामेंसे किसी प्रकार बचे थे। इनमेंसे एक मार्टिन नामक अंग्रेज़ आगराके किलेमें चला गया था। उसने दामोदररावको साफ लिखा था—"आपकी माताके साथ बहुत अन्याय हुआ, उनपर मिथ्या दोष लगाये गये। सिवा मेरे और किसीको सच्ची बात मालूम नहीं है। आपकी माता सन् १८५७ के जून मासकी, अंग्रेज़ोंकी हत्यामें जरा भी लिप्त न थीं। जब अंग्रेज़ किलेमें चले गये तब उन्होंने तीन दिन उनके लिये खानेको भेजा। करेरासे सौ बन्दूकधारी आदमी बुलाकर हम लोगोंकी मददके लिये भेजे। पर अंग्रेज़ोंने इन सबको एक दिन किलेमें रखकर दूसरे दिन बिदा कर दिया। इसके बाद रानीने अंग्रेज़ोंको सलाह दी कि वे भागकर दतिया नामक राज्यमें शरण लें। पर अंग्रेज़ोंने यह प्रस्ताव भी न माना। अन्तमें वे अपने ही पुलिस और सिपाहियोंसे मारे गये।"*

उत्तेजित सिपाहियोंने छावनी जला दी, अंग्रेज़ोंके बंगले फूंक दिये। यह सब कुछ करके उन्होंने महारानी लक्ष्मीबाईका महल जा घेरा। सिपाहियोंके सरदारोंने कहा कि हम दिल्ली जा रहे हैं। हमें तीन लाख रुपये दो नहीं तो महलको तोपोंसे उड़ा देंगे। रानी बुद्धिमती थी। उसने कहला दिया कि, मेरा

*Kaye's Sepoy War Vol. III p. 365

राज्य और सम्पत्ति सब कुछ दूसरोंके हाथमें है। मैं अनाथ विधवा हूं। विधवापर अत्याचार करना सिपाहियोंका धर्म नहीं है। पर विद्रोही सिपाही ऐसी बातोंसे कब राजी होते थे। रानीके पिता सिपाहियोंके सरदारोंसे मिलने गये थे। उन्हें सिपाहियोंने कैद कर लिया। उन्होंने कहा कि जो कुछ रुपया न मिला तो वे रानीके दायद सदाशिवरावको झांसीकी गद्दीपर बैठावेंगे। रानीके सामने कोई उपाय न था। उसने अपने पिताको छोड़नेके लिये कहलाया। अपने एक लाखके गहने उसने सिपाहियोंको दिये। इससे प्रसन्न होकर सिपाही लक्ष्मीबाईकी जय कहते हुए दिल्लीके लिये रवाना हुए। रानीने यह बात अंग्रेज़ अधिकारियोंको लिख भेजी।

इस विषयमें मालेसनने लिखा है कि सिपाहियोंने रुपया चाहा और लक्ष्मीबाईने झांसीकी गद्दी चाही। इसलिये रुपयेके बदलेमें उसे झांसीकी गद्दी मिली। रुपया लेकर सिपाहियोंने लक्ष्मी-बाईको झांसीकी रानी कहकर घोषणा की।* इतिहासलेखक 'के' ने भी यही लिखा है।† पर इस घटनासे यह साबित नहीं होता कि रानी गद्दीके लिये सम्मिलित हुई। उस समय वह असहाय थीं। सिवा रुपया देकर उत्तेजित सिपाहियों-को झांसीसे बिदा करनेके वह और कुछ न कर सकती थीं। जो वह सिपाहियोंसे मिली होतीं तो अपने गहने उन्हें न देतीं

* Malleson's Indian Mutiny Vol. I p. 190-191

† Kaye's Sepoy War Vol. III p. 370.

ओर देकर गवर्मेंटसे इसकी शिकायत न करतीं। घटनावश उन्हें सिपाहियोंको शान्त करना पड़ा था।

जब सिपाही झांसीसे चले गये तब रानीने गवर्मेंटके नियुक्त फौजदारीके सरिश्तेदार गोपालराव आदिको बुलवाकर सलाह की कि अब क्या करना चाहिये। उस समय सागर प्रान्तमें गड़बड़ न हुई थी। इसलिये यह निश्चय हुआ कि झांसीकी गड़बड़का विवरण सागरके कमिश्नरको लिखा जाय ताकि वे सावधान हो जायं और उनसे सलाह ली जाय कि झांसीके विषयमें क्या किया जाय। इसी सलाहके अनुसार गोपालरावने सम्पूर्ण घटना सागरके कमिश्नरको लिखी। रानीने भी भिन्न भिन्न स्थानोंके अधिकारियोंको लिखा। झांसीके कमिश्नर कप्तान पिंकने साहबने लिखा है—"विश्वस्त सूत्रसे मालूम हुआ है कि रानीने हमारे देशवासियोंकी मृत्युपर अफसोस करते हुये जबलपुरके कमिश्नरको पत्र लिखा था। पत्रमें लिखा था कि इस घटनाके साथ मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है। जबतक गवर्मेंट इस राज्यको फिरसे न ले ले तब-तक मैं इसका शासन करूंगी। इस प्रकार पत्र लिखकर उन्होंने गवर्मेंटके साथ मित्रताकी रक्षा की थी।"* इससे साबित होता है कि गवर्मेंटके प्रतिनिधिकी हैसियतसे रानीने

* 'के' साहबने लिखा है कि मुझे जबलपुरके कमिश्नरकी डायरीमें ऐसे किसी पत्रका उल्लेख नहीं मिला। पर मार्टिनके वर्णनसे मिलता है। Sepoy War. Vol. III. P. 370.

झाँसी राज्य अपने अधिकारमें रखा था। उस समय सब बातें अव्यवस्थित थीं, गवर्मेंटका कोई पत्र आनेपर उसी समय उसका उत्तर न दिया जाता था। इसी कारण रानीका उद्देश्य गवर्मेंटको न मालूम हुआ। फिर भी उक्त पत्र अधिकारियोंके पास पहुंचा था, पर विधाताने पहलेसे ही रानीका अदृष्ट बना रखा था। वह न बदला। आगराप्रवासी एक मार्टिन नामक साहबके पत्रका उल्लेख ऊपर हो चुका है। उस पत्रके एक स्थानपर लिखा है—"उन्होंने (रानीने) जबलपुरके कमिश्नर मेजर रस्किन और आगराके कमिश्नर कर्नल फ्रेजरके पास खरीता (पत्र) भेजा था। यह पत्र मैंने अपने हाथसे आगराके प्रधान कमिश्नरको दिया था। मेरी उत्सुकता थी कि रानीके विषयमें वे क्या कहते हैं। पर झाँसीका नाम उनके निकट पहले ही कलंकित हो चुका था। वे बिना कुछ कहे ही रानीको अपराधिनी समझते थे।"

इस प्रकार रानीका भाग्य विधाताके चक्रसे घूम रहा था। उनके विश्वासी और योग्य कर्मचारी पहले ही हटा लिये गये थे। उनके पिता मोरोपन्त राजनीतिमें अधिक चतुर न थे। दीवान लक्ष्मणराव थोड़े ही दिनसे इस पदपर प्रतिष्ठित हुए थे। न उनके पास कोई लायक आदमी था और न कोई अंग्रेजी भाषा जाननेवाला ही था जिससे वे पत्र लिखवातीं। इस प्रकार रानीका भाग्य चारों ओरसे घने काले मेघोंसे घिरा था। इन मेघोंको चीरकर उसे प्रकाश दिखानेवाला कोई न था।

उत्तेजित सिपाहियोंके हमलेसे झांसी अंग्रेज़शून्य हो गई थी। रानीने भिन्न भिन्न स्थानोंके अधिकारियोंको विद्रोहके समाचार भेजे थे। अंग्रेज़ोंके न होनेके कारण उसने झांसीका शासन अपने हाथमें लिया था। इसी समय उनके सम्बन्धी सदाशिव नारायणराव झाँसीका राज्य लेनेके लिये तैयार हुए। सदाशिवरावने झांसीसे तीस मील दूर करेरा नामक किला ले लिया। वहांके अंग्रेज़ भगा दिये गये। इसके बाद सदाशिव-रावने "झांसीके महाराज" की उपाधि ग्रहण की। लक्ष्मीबाईने सदाशिवरावके विरुद्ध सेना भेजी। जब इस सेनाने करेराके किलेको घेरा तब सदाशिव ग्वालियर भाग गया और वहां सेना संग्रह करने लगा। इसके बाद हठी बुंदेले ठाकुरोंने रानीका राज्य स्वीकार किया। एक सेना और भेजी गई, यह सदाशि-वको गिरफ्तार करके लाई।*

एक शत्रु बन्दी हुआ दूसरा हारा। अब एक तीसरा शत्रु और पैदा हुआ। झांसीसे डेढ़ मीलपर ओड़छा (तेहरी) गांव है। इसका दीवान नत्थेखां एक हजार सेना लेकर झांसी घेरने चला। इसकी सेना बेतवाके किनारे पड़ी। रानीकी सेना इस समय अधिक न थी। राज्य लेते समय गवर्मेंटने उनकी सेना कम कर दी थी, तोपें और गोले बारूद भी नष्ट कर दिये थे। पर इससे रानी कर्तव्यविमुख न हुईं। उन्होंने

*करेरा घेरनेके अपराधमें गवर्मेंट ने ६ जून १८५८ में सदाशिवको कालेपानी-की सजा दी। इसकी मृत्यु १८८८ में हुई थी।

और सैन्य संग्रह किया। गोले और तोपें बनानेका एक कारखाना खोला। किलेमें दबी हुई तीन तथा महलमें छिपी चार तोपें निकलवाईं। जमीनमें गड़ी तथा अन्धेरेमें पड़ी हुई तोपें इस समय कामकी हो गईं। इधर रानीने बुन्देले सरदारोंको सहायताके लिये बुलाया। सरदार लोग रानीकी प्राधान्यरक्षाके लिये सादर आये। इससे रानीने विशेष सन्तोष प्रगट किया। तमाम तोपें किलेकी दीवारोंपर चढ़ीं। सब सरदारोंने मिलकर सेनापति चुना। तमाम सेना यथायोग्य स्थानपर जमी। रानी मर्दाना वेष बनाकर किलेके प्रधान बुर्जपर खड़ी हुईं। इस बुर्जपर अंग्रेज़ी झंडा और उसके साथ पेशवाका निशान लगाया गया। नत्थेखांने किलेपर हमला किया। पर उसे सफलता न हुई, वह हार गया। फिर ओड़छा राज्यके प्रस्तावसे दोनोंमें सन्धि हुई। ओड़छाकी रानी लंढ़ियाबाईके साथ लक्ष्मीबाईकी मित्रता हुई। यह बात सम्पूर्ण विवरण सहित हलक्ष्मीबाईने इन्दौरके एजेन्ट सर रावर्ट हैमिल्टनको लिख भेजी। पर पत्र हैमिल्टन साहबके पास न पहुंचा। नत्थेखांने बेईमानीसे पत्र ले जानेवालेको पकड़कर पत्र फाड़ दिया और हैमिल्टन साहबको लिखा कि लक्ष्मीबाई विद्रोही सिपाहियोंसे मिल गई हैं और मुझे विद्रोह शान्त करनेके लिये झांसी आना पड़ा। इस प्रकार सच्ची घटना अधिकारियोंको मालूम न हुई। रानीके चारों ओर वही घना काला मेघ था। विधाताका विधान न बदला।

आगरा प्रवासी मार्टिन नामक अंग्रेज़ने अपने उसी पत्रमें, रानी द्वारा झांसी राज्यके सम्बन्धमें, इस प्रकार लिखा है—"जब विद्रोही सिपाही झांसी छोड़कर चले गये तब रानीने अपने राज्यपर कब्ज़ा किया था। दतिया और तेहरी राज्य बड़ी आसानीसे झांसीके अंग्रेज़ोंको बचा सकते थे। कारण, अंग्रेज़ी सेनाके कवायदके मैदानसे तेहरी डेढ़ मील और दतिया छः मील है। पर इन दोनों राज्योंकी सेनाएं अपनी अपनी हदपर खड़ी हुई सिपाहियोंका काम देखती रहीं, पर दोनोंमेंसे कोई हमारी मददके लिये न आयी। इन दोनों राज्योंने समझा था कि रानीके पास किसी प्रकारकी शक्ति नहीं है और इस कारण वे सहजमें उसे दबा लेंगे। इसलिए उनको मिली हुई सेनाने झांसीपर चढ़ाई की और अनेक बार साहसी स्त्रीसे उनकी हार हुई।" इस पत्रसे साबित होता है कि रानीने अपने बाहुबलसे झांसी राज्यकी रक्षा की थी। पर दतिया और तेहरीपर गवर्मेंटकी कृपा बनी रही और रानीपर क्रोधकी आग बरसी।

झांसी जब अंग्रेज़ोंके अधिकारसे निकल गई तब रानीने नौ दस महीने उसपर योग्यतासे राज्य किया। सैनिक शृंखला, विचार कार्य और शान्तिस्थापन सब बातोंमें उनकी योग्यता सिद्ध होती है। उनका शरीर सुन्दर गठा हुआ और पूर्ण उन्नत था। वैधव्यका पवित्र तेज उनके मुखपर था। उनमें सज्जनता, नम्रताके साथ अपूर्व योग्यता थी। किसी बातमें वह अपनी कमज़ोरी प्रगट न करती थीं, किसी कर्त्तव्यके पालनमें शिथिलता न थी।

प्रजाकी उनपर अपूर्व श्रद्धा थी। वह जिनपर राज्य कर रही थीं वे हृदयसे उनके अनुगत थे। इसी साहसमय चरित्रकी शक्तिके कारण बादमें वह अंग्रेज़ सेनापतिका सामना करनेको तैयार हुईं। जो कहीं अंग्रेज़ सेनापति अधिक योग्य न होता तो लक्ष्मीबाईको सफलता हो सकती थी। अंग्रेज़ इतिहासलेखकोंने भी उनकी प्रशंसा की है। जो अंग्रेज़ सेनापति रानीसे लड़ा उसके शब्द हैं—"रानी अपने वंशके गौरवसे गौरवान्वित थीं, सैनिकों और नौकरोंपर उनकी विशेष उदारता थी, विघ्न और विपत्तियोंमें वह सदा दृढ़ थीं। इस गुणोंके कारण हमारे सामने वह शक्तिशालिनी शत्रु थीं *।"

रानी प्रायः नित्य शामको तीन बजे पुरुषवेषमें या स्त्रीवेषमें दरबारमें आतीं। उनके पैरोंमें पाजामा, शरीरपर अंगरखा, सिर-पर साफा, दुपट्टा और कमरमें तलवार लटकती थी। इस वेषमें रानी और भी अधिक सुन्दर मालूम होती थीं। पतिके मरनेके बादसे वह गलेमें मोतीकी माला और उंगलीमें हीरेकी अंगूठीके सिवा और कोई गहना न पहनती थीं। उनके केश खुले रहते थे। इस वीर वेषमें वह साक्षात् दुर्गा या गौरी मालूम होती थीं। उनके बैठनेका घर दरबारके बराबर ही था। घरके दरवाजेपर पर्दा पड़ा रहता था। गद्दीपर बैठकर वह इधर उधर बैठे हुए कर्मचारियोंको हुक्म लिखवाती थीं। कभी कभी वह अपने आप भी हुक्म लिखा करती थीं। राजशासनमें उनकी जैसी योग्यता

* Martin's Indian Empire Vol. II P. 486 note

हुई तब वे सब झांसीकी नई सेनामें प्रविष्ट हुए। नत्थेखांको हरानेके बाद, अब अंग्रेज़ी सेनाको हरानेका इन्हें खयाल हुआ। रानी और उसके हितैषियोंकी सम्मति थी गवर्मेंटके साथ मित्रता स्थापित करनेकी, पर उनके नये कर्मचारी अंग्रेज़ोंके पक्षमें न थे। अंग्रेज़ी अधिकारीसे वे हानि उठा चुके थे, इस कारण अंग्रेज़ उनकी दृष्टिमें दुराचारी थे। इसी कारण वे अंग्रेज़ोंके साथ युद्धका आग्रह करने लगे। रानी किलेमें रहती थीं। प्रधान कर्मचारियोंके अलावा और कोई उनके निकट न जा सकता था। इसलिये असली हालतका उन्हें ज्ञान भी न था। लोग जो जीमें आता था दूसरोंसे कह देते थे। खैर, चाहे जो हो, घटनावश रानीको अंग्रेज़ोंसे युद्ध करनेका निश्चय करना पड़ा। इस विषयमें जैसी दशा बाबू कुंवरसिंहकी हुई थी, वही रानी लक्ष्मीबाईकी हुई। कुंवरसिंह भी अंग्रेज़ोंके विरोधी न थे पर घटनावश उन्हें विरोधी बनना पड़ा, या उन्हें विरोधी बनाया गया। रानी लक्ष्मीबाई भी दोनों ओरके आघात प्रतिघातसे अन्तमें लक्ष्यभ्रष्ट हुईं। जब उन्होंने देखा कि अंग्रेज़ोंके साथ मित्रताकी अनेक कोशिशें करनेपर भी सफलता न हुई, बल्कि जब रानीको यह विश्वास हो गया कि जिन अंग्रेज़ोंके निकट वह इतनी सचाई प्रगट करती रहीं वे उसे विपत्तिमें डालनेको तैयार हैं, तब उसके सामने सिवा संग्रामके और कोई मार्ग न रहा। अभिमानिनी नारी अपमानसे अधीर होकर रणकी तैयारी करने लगीं।

थोड़ेसे समयमें सुशिक्षित अंग्रेज़ी सेनाके मुकाबिलेमें लड़ाईकी तैयारी करना सहज काम न था। पर लक्ष्मीबाई इस कठिन समयमें लड़ाईके लिये तैयार हुईं। अबतक उन्होंने राज्यशासनमें अपनी योग्यता दिखाई थी, अब संग्रामकी तैयारीमें उनकी योग्यता लगी। उनके पास अफगान और बुंदेला सेनायें थीं। पर शिक्षित सेनाकी तादाद अधिक न थी। इतिहास लेखक मालेसनके लेखानुसार रानीकी सेना ग्यारह हजार थी। जो कुछ हो, रानीने अपनी सेना तैयारकर सेनापतिका पद स्वयं ग्रहण किया। किलेकी मरम्मत करवाई, उसपर तोपें चढ़वाईं और नानासाहबको अपनी मददके लिये पत्र लिखा। इन बातोंसे उस वीर नारीके कर्त्तव्य ज्ञानका पता लगता है। कहा जाता है कि झांसीकी वीर स्त्रियां भी महारानीकी मददके लिये तैयार हुईं। रानीने शिक्षित अंग्रेज़ सेनापतिके मुकाबिलेमें ऐसी शीघ्रतासे तैयारी की कि देखकर उसे भी हैरान होना पड़ा। बादमें सेनापतिने भी इसपर आश्चर्य प्रगट किया था।

गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग और बम्बईके गवर्नर लार्ड एलफिन्सटनने झांसीपर अधिकार करना बहुत आवश्यक समझा था। झांसीसे ब्रिटिश सत्ताका लोप हो गया था। झांसीमें उनके स्त्री पुरुष और बच्चे मारे गये थे, झांसीकी रानीपर उन्हें घोर संदेह था। इसलिये झांसीपर वे फिर अधिकार करना चाहते थे। सर ह्यू रोज झांसीपर कब्जा करनेके लिये नियुक्त किये गये थे। उन्होंने रिसाला और गोलंदाज सेना झांसीकी दशा देखनेको भेजी

थी, यह पहले ही कहा जा चुका है। अब वे खुद पैदल सेना लेकर २१ मार्चको झांसीकी ओर बढ़े।

सर ह्यू रोजने जिस स्थानपर अपना शिविर डाला उसके और शहर तथा किलेके बीचमें कुछ फूटे हुए बँगले थे। शहरके पास कुछ मन्दिर और बहुतसे इमलीके वृक्ष थे। अंग्रेज़ी-सेनाके दक्षिण ओर बहुत दूरतक पहाड़ ही पहाड़ चले गये थे। इन पहाड़ोंके बीचसे कालपीका रास्ता था। बाईं ओर पहाड़ तथा दतिया राज्य था। उत्तर ओर उन्नत पहाड़पर झांसीका प्रसिद्ध किला था। प्रकृतिकी शक्ति और मनुष्यके शिल्प दोनोंने मिलकर झांसीके किलेको सबल बनाया था। वह ऊंचे पहाड़-पर था। चारों ओर मजबूत दीवारें थीं। किलेके पश्चिम और दक्षिणको छोड़कर बाकी और दिशाओंमें झांसी नगर बसा था। झांसीकी परिधि साढ़े चार मीलकी थी। चारों ओर अठा-रहसे तीस फुटतक ऊंची दीवारें थीं। फसीलोंमें गोलियां चला-नेके लिये छेद और तोपोंके रखनेके भी स्थान थे। सर ह्यू रोजने २१ मार्चको किला देखा। इसी दिन किलेके भीतरकी दशा देख-नेके लिये ऊंचा टीला बनाना शुरू किया गया। तीसरे दिन पैदल और सवारोंसे उन्होंने शहर और किला घेर लिया। रातको सेनाने हमला किया। रानीने एक चतुराई की थी। किलेके पासके पेड़ और घास फूसमें आग लगवाकर मैदान साफ कर दिया था। अंग्रेज़ी सेनाको झांसीमें घास न मिली। टेहरीकी रानी और महाराज सिंधियाने अपने यहांसे घास भेजी। रसदका और सामान भी उन्हें इन्होंने ही दिया।

इस प्रकार २३ मार्चसे दोनों पक्षोंका संग्राम शुरू हुआ। पहले हमलेमें झांसीके गोलंदाजोंने ऐसा पराक्रम दिखाया कि ब्रिटिश सेना पीछे हट गई। रातको फिर अंग्रेज़ी सेना आगे बढ़ी। पर रानी निश्चेष्ट न थीं। उन्होंने तमाम रात लड़ाईकी तैयारी की थी। रातभर चारों ओर लड़ाईका मारू बाजा बजता रहा। मसालें ले लेकर सैनिक तमाम तैयारी करते रहे, हर जगह जा जाकर रानी सब कुछ देखती रहीं। सवेरा होते न होते गोलंदाज अपनी २ तोपोंसे गोले बरसाने लगे। पर अबकी बार गोलोंका असर अंग्रेज़ी सेनापर न हुआ। वे किलेके बिलकुल पास आ गये थे। पर एक "घनगर्जन" नामक तोपसे जब गोले फेंके गये तब अंग्रेज़ी सेनाके पैर उखड़े। यह तोप इतनी फुर्तीसे गोले फेंकती थी कि जब गोला जाकर ठिकानेपर गिरता तब तोपकी बारूदका धुआँ दिखाई देता था। इसी कारण अंग्रेज़ी सैनिक होशियार न हो सकते थे।

२४ मार्चको अंग्रेज़ी सेनाने चार तोपोंके मंच बनाकर शहरके दक्षिणकी ओर गोले बरसाने शुरू किये। इन गोलोंसे झांसीके कुछ गोलंदाज मारे गये। उनकी तोप बंद हुई और दीवारका कुछ हिस्सा भी टूट गया। इससे पहले अंग्रेज़ी गोलंदाजोंने शहरके सामनेकी ओर गोले बरसानेकी कोशिश की थी, पर वे सफल न हुए। तीसरे दिन सेनापतिने समझा कि यदि पश्चिमकी ओरसे हमला किया जाय तो सहजमें शहरपर कब्जा हो सकता है। इसलिये इस ओरसे शेल गोले फेंके जाने लगे। (शेल उन

गोलोंको कहते हैं जो भीतरसे पोले होते हैं और उनके भीतर लोहेके चाकू छुरीनुमा चीजें भरी होती हैं—गिरते ही ये फूटते हैं और उनके भीतरके हथियार इधर उधरके जीवोंके प्राण संहार करते हैं।) बराबर इन गोलोंके बरसानेसे नगरवासी डर गये। बहुतसे घरोंमें आग लग गई और बहुतसे गोलोंसे मर गये। इस विपत्तिके समयमें रानी अपूर्व वीरता और क्षमताका परिचय देने लगीं। जहां सेनामें किसी तरहकी कमजोरी दिखाई देती थी वहीं रानी खुद जा खड़ी होती थीं। वह सैनिकोंकी पीठ ठोंकती थीं। जिन दरिद्रोंके मकान जल गये थे उनके लिये रहनेको उन्होंने स्थान बताये। भूखोंके लिये सदावरत खुल गये। इस तरह वह एक ओर नगरमें शान्ति रख रही थीं, दूसरी ओर सैनिक वीरोंका उत्साह कम न होने देती थीं। तीसरी ओर अंग्रेज़ी सेनाकी ताकत कम करनेकी आयोजना कर रही थीं। एक ओर वह भूखी सिंहनीकी तरह हमला कर रही थीं, दूसरी ओर माताकी तरह अपनोंको स्नेह कर रही थीं।

२५ तारीखको किलेके दाहिनी ओर हमला किया गया। रानीका गोलंदाज गोशखां किलेके दाहिनी ओरकी बुर्जसे इस जोरसे गोले फेंकने लगा कि अंग्रेज़ोंकी तोप बंद हो गई। रानी वहीं खड़ी देख रही थीं। उसी समय उन्होंने एक हजार रुपयेकी थैली गोलंदाजको देकर उसका उत्साह चौगुना कर दिया। इस तरह ३१ मार्चतक अंग्रेज़ी सेना बराबर धावे करती रही और रानीकी सेना सदा उन्हें पीछे खदेड़ती रही। रानीकी सेना

अंग्रेज़ी सेनाके समान शिक्षित न थी। न उनके पास इतने अच्छे हथियार ही थे। फिर भी जिस वीरतासे वे निशाना लगाते और अंग्रेज़ी सेनाको पीछे भगा देते थे, उससे अंग्रेज़ सेनापतिको भी आश्चर्य हुआ। ३१ मार्चतक वीर रमणीने ब्रिटिश सेनाके सब पराक्रम व्यर्थ किये। वह सदा अपने सैनिकोंके पास खड़ी रहती थी। जहां जरा कमी दिखाई दी वहीं रानी जाकर सैनिकोंकी कमरमें ठोंकतीं। फिर वे चौगुने उत्साहसे काम करने लगते। रानीकी भाषा वीरतापूर्ण थी। जिस समय वह अपने सैनिकोंको उत्साहित करनेके लिये बोलतीं, तब उनकी वाणी सुनकर स्त्रियों और बच्चोंतकमें वीरताका भाव आ जाता था। स्त्रियां और बच्चे किलेकी टूटी दीवारोंको सुधारते थे, सैनिकोंको भोजन और जल लाकर देते, जहां किसीको किसी बातकी जरूरत होती वहीं वे दौड़ कर उसे पूरी करते थे।

झांसीके एक योग्य और उच्च पदवीधारी निवासीने यह लड़ाई आँखों देखी थी। उसने इसके सम्बन्धमें लिखा है-"रोज रातको किले तथा शहरपर गोले बरसते थे। वह दृश्य बड़ा भयानक था। अंग्रेज़ोंकी तोपोंसे निकला हुआ पचास पचास साठ साठ सेरका एक एक गोला जब आता था तब वह लाल लाल चमकता हुआ दिखाई देता था। दिनको सूर्यकी रोशनीके कारण वे दिखाई न देते थे। पर रातको लाल लाल बड़े गेंदकी तरह वे सन्नाटेसे आते दीखते थे। किलेका हरएक आदमी उस गोलेको देखकर यह समझता था कि बस अब यह मेरे ऊपर ही

आकर गिरेगा। पर प्रायः सात आठ सौ कदम आगे जाकर गिरता था। रात दिन लड़ाई होती थी। नगरवासी युद्धके कारण घबरा गये थे। पांचवें और छठे दिन भी ऐसी ही लड़ाई हुई। प्रायः डेढ़ पहरतक रानीकी जीत होती और अंग्रेज़ोंकी तोप बंद हो जाती थी। थोड़ी देर बाद फिर अंग्रेज़ी तोपें चलने लगतीं और अंग्रेज़ोंकी जीत दिखाई देती। सातवें दिन शामको किलेके पश्चिम ओरकी तोप बंद हुई। अंग्रेज़ोंके गोलोंसे कोई स्थिर न रह सका। रानीकी बुर्ज, जिसपर तोप थी, वह भी टूट गई। रातको रानीने राजमिस्त्रियोंको लगाकर बुर्ज बनवाई। काले कम्बलोंको लपेट लपेटकर कारीगर लोग लेटे हुए ईंटें और चूना रखने लगे। सवेरेतक फिर बुर्ज बनकर तैयार हो गई और उसमेंसे फिर अंग्रेज़ी सेनापर गोले फेंके जाने लगे। इन गोलोंसे अंग्रेज़ी सेनाकी बड़ी हानि हुई। प्रायः दो पहरतक उनकी तोप बंद रही।

"आठवें दिन अंग्रेज़ फिर अपनी तोपें चलाने लगे। अंग्रेज़ी-सेनामें जो अच्छी अच्छी मार्केकी दूरबीनें थीं उनसे देख देखकर वे किलेके पानीके हौजोंपर गोले फेंकने लगे। जो पानी ला रहे थे उनमेंसे चार आदमी मर गये। बाकी पानी लानेवाले वहांसे भाग खड़े हुए। करीब एक पहरतक किलेवालोंको पानीकी तकलीफ रही। इस समय किलेके दक्षिण और पश्चिम-के बुर्जोंके गोलंदाजोंने अंग्रेज़ी गोलंदाजोंपर गोले बरसाकर उनकी तोपें बंद कर दीं। इससे किलेके पानीकी रक्षा हुई। जब

सब भोजन कर रहे थे, तब एकाएक बड़े जोरकी आवाज हुई और चारों ओर धूल मिट्टी तथा बारूदका धुंआं छा गया। थोड़ी देर बाद जब धुआं उड़ा और मैदान साफ हुआ तब मालूम हुआ कि अंग्रेज़ी तोपका एक गोला बारूद और गोलोंके कारखानेपर आकर गिरा था इससे बारूदमें आग लग गई। इस घटनासे तीस मर्द और आठ औरतें मरीं तथा चालीस पचास आदमी आधे जल गये।

"आठवें दिन शहरमें बड़ी गड़बड़ मची। उस दिनका युद्ध भी बड़ा भयानक हुआ। वीरोंके सिंहनाद तथा बाजोंके साथ तोपों और बंदूकोंकी घन गर्जनासे आकाश फटता था। बारूदके धुएं और धूलसे सूर्य छिप गया था। उस दिन अंग्रेज़ी सेनाने बड़ी वीरताका परिचय दिया था। शहरके करीब एक हजार आदमी मरे थे। किलेकी दीवारोंपर जो सिपाही और गोलंदाज थे उनमेंसे भी बहुतसे मारे गये थे। लक्ष्मीबाई हर जगह खड़ी थीं। जो मरता था, उसकी जगह वह दूसरा आदमी खड़ा करती थीं। उनकी नजर चारों ओर थी। जहां जिस बातकी कमी दिखाई देती वह वहीं उसे पूरा करवाती थीं। इसी कारण उनके सैनिक और भी अधिक उत्साहसे लड़ते थे। अंग्रेज़ी सेना बड़ी वीरतासे लड़ी, पर ३१ मार्चतक वह झांसीका कुछ भी न बिगाड़ सकी। रानीकी बारूद समाप्त होनेपर आ गई थी, फिर भी उनके गोलंदाज उत्साहसे गोले बरसाते जा रहे थे।"

जिस समय लड़ाईकी यह दशा थी तब अंग्रेज़ सेनापतिके

सामने एक नई समस्या उपस्थित हुई। ३१ मार्चको सेनापति ह्यू रोजने सुना कि रानीकी मददके लिये उत्तरकी ओरसे सेना आ रही है। यह सेना महाराष्ट्र सेनापति तांतियातोपीकी थी। पिछले अध्यायोंमें पाठक पढ़ चुके हैं कि तांतियातोपी सेनापति वाइंडहमको हराकर कानपुरपर कब्जा कर बैठा था। फिर प्रधान सेनापति काम्पवेलने उन्हें हराया। रावसाहबके साथ तांतियातोपी कालपीमें आये। कालपीसे उन्होंने चरकारी राज्य-पर धावा किया। इसी समय उन्हें लक्ष्मीबाईका, सहायताके लिये, पत्र मिला। रावसाहबने रानीकी सहायता करनेकी आज्ञा दी। तांतियातोपी बीस हजार सेना और २८ तोपें लेकर झांसी-की ओर चला।

जब सर ह्यू रोजने सुना कि तांतियातोपीके साथ बड़ी भारी सेना है, तब वे चिन्तित हुए। झांसीका मजबूत किला अभीतक उनके अधिकारमें न आया था। रानीकी सेना अभीतक वीर-ताके साथ लड़ रही थी। महारानी लक्ष्मीबाईने अभीतक ब्रिटिश सौभाग्यमें सामने सिर न झुकाया था। इसकी सहाय-ताके लिये एक रणनिपुण मरहटा वीर और चला आ रहा था। सेनापतिको चिन्ता हुई। पर उन्होंने अपने कर्त्तव्यसे हाथ न खींचा। इसी विप्लवके जमानेमें देखा गया है कि सिपाही सेना अधिक होते हुए भी अंग्रेज़ सेनापतियोंकी कार्यप्रणालीसे हारी है। अंग्रेज़ोंने इस समय जैसे कर्त्तव्य और उद्यमशीलताका परिचय दिया वैसा सिपाहियोंने नहीं दिया। यह मानना होगा।

तांतियातोपीने बेतवाके किनारे अपनी छावनी डाली थी। वह यह सोचकर निश्चिन्त था कि अंग्रेज़ी सेना बहुत कम है। झांसी घेरनेवाले अंग्रेज़ सैनिकोंपर हमला करनेके लिये उसने एक सेना भेजी। पर सर ह्यू रोज तांतियातोपीके समान निश्चिन्त न थे। उनकी सेना कम थी। पर किलेके घेरेके लिये योग्य सेना रखकर बाकी उन्होंने तांतियातोपीके मुकाबिलाके लिये भेजी। उसके हमलेसे तांतियाकी अगली सेना हार गई। इस हारके कारण उसकी बाकी सेनामें भी डरका भाव फैल गया। जिस जगह उन्होंने अपनी छावनी डाली थी उसके सामने घना जंगल था। इस जंगलकी घास और पेड़ सूख गये थे। उनमें तांतियाने आग लगा दी। इस आगके कारण उनकी ओर बढ़ती हुई अंग्रेज़ी सेना रुकी। इस अर्से में तांतिया अपनी सेना सहित वापिस कालपीकी ओर चल पड़ा। छोटीसी अंग्रेज़ी सेनाने इन भागतों-का पीछा किया। करीब २ उनकी सब तोपें छीन लीं और बहुतसे मारे गये।

तांतियातोपीके आनेकी खबर सुनकर किलेवालोंको अपार आनन्द हुआ था। रातभर मसालें जला जलाकर उन्होंने युद्धकी तैयारी की थी। रणनीतिकी पारदर्शिनी रानी किलेकी दीवार-पर खड़ी २ सैनिकोंको उत्तेजित करती थीं। जब रानीको मालूम हुआ कि तांतिया हारकर वापिस चला गया तब भी रानीका उत्साह कम न हुआ। १ अप्रेलको फिर वह उसी शक्ति और उसी तेजसे लड़ने लगीं। दूसरी अप्रेलको भी उसी तरह संग्राम हुआ।

पर ३ अप्रेलको अंग्रेज़ी सेनाको शहरमें घुसनेका मौका मिला। अंग्रेज़ी सेनाने शहरमें घुसनेका ओड़छा दरवाजा अपने कब्जेमें किया। महारानीके जीवनी लेखकने लिखा है कि बुन्देला ठाकुर डलाजीकी मददसे अंग्रेज़ी सेनाने इसपर अधिकार किया था। खैर, अंग्रेज़ी सेनाने नसेनियां लगा लगाकर दीवारपर चढ़ना चाहा। कई नसेनियां टूट गईं और कई छोटी हो गईं। जैसे तैसे एक सैनिक फसीलपर चढ़कर खड़ा हुआ। साथ ही दूसरा आया इस तरह उनकी तादाद बढ़ी। दरवाजे और रास्तेके पास जो घर थे उनमें सैनिकोंने आग लगा दी। दरवाजा खोलकर सैनिक आगे बढ़े। आगसे बचनेके लिये जो नगरवासी घरोंसे निकलने लगे वे सैनिकोंकी बन्दूकों और संगीनोंसे मारे जाने लगे। इस आक्रमणसे बच्चोंकी भी रक्षा न हुई। कोई २ पागलोंकी तरह इधर उधर भागने लगे, कोई गलियोंमें जाकर छिपे। बहुतोंने औरतोंके कपड़े पहनकर अपने प्राण बचाये।

सर ह्यू रोज़ने शहरके बीचवाला राजमहल घेरा। राजमहलके रक्षक सैनिकोंने वीरताकी हद कर दी। एक एक महल और एक २ घरमें अंग्रेज़ी सैनिकोंसे उनकी लड़ाई हुई। सैनिक तलवारोंसे अंग्रेज़ी सेनापर वार करते और वे संगीनोंसे उनपर हमला करते। पर जब चारों ओर आग लगा दी गई तब महल-रक्षक निरुपाय हो गये। महलपर अंग्रेज़ सेनापतिका कब्जा हुआ। महलकी घुड़सालमें पचास सवार थे। वे पचासों लड़ते लड़ते मर गये। गवर्नर जनरल विलियम बेंटिङ्कने रानीके पति

गंगाधररावको विश्वस्तताके पुरस्कारमें एक झंडा दिया था और कहा था कि वे जहां जायं वहीं इस झंडेको ले जा सकते हैं। यह झण्डा महलपर लगा था। अंग्रेज़ सेनापतिने इसे उतार लिया।

जब अंग्रेज़ी सेना शहरमें घुस आई तब रानी किलेमें चली गईं। अंग्रेज़ी सेनाकी रसद समाप्त हो गई थी। पर तांतियातोपीको हराकर अंग्रेज़ सेनापतिने उसकी रसद छीन ली। अंग्रेज़ी सेना रसदके कारण सबल हो गई थी, इस दशामें उसे हराना रानीके लिये कठिन था। शहरका अधिकांश भाग जल गया था। उसके वीर गोलन्दाज एक एक करके मर गये थे। विश्वासी सैनिकोंमेंसे भी अनेक मारे गये थे। और कोई उपाय न देखकर रानीने अपना स्थान त्याग करना उचित समझा। उनके इरादेमें किसी प्रकारकी बाधा उपस्थित न हुई। उनके पिता मेरोपन्त तैयार हुए। विश्वासी नौकर और विश्वासिनी दासियोंने यात्राका आयोजन पूरा किया। मर्दकी पोशाकमें महारानी घोड़ेपर बैठीं, उनके पिता भी घोड़ेपर बैठे। एक हाथीके हौदेमें हीरे मोती और अशर्फियाँ भरी गईं। इससे भी अधिक प्यारे अपने बेटे दामोदररावको रानीने अपने घोड़ेके पीछे बैठाकर रेशमी दुपट्टेसे अपना और उसका शरीर कसकर बांध लिया।

इस प्रकार तैयार होकर महारानी अपने विश्वासी नौकरोंके साथ ४ अप्रेलकी रातको किलेसे निकलीं। उनके निकलनेका समाचार सुनकर अंग्रेज़ सेनापतिने लेफ्टिनेंट बोकरको सेना सहित पकड़नेके लिये भेजा। बोकर इकीस मीलतक दौड़ा पर

रानी हाथ न आईं। रानीका घोड़ा हवाकी तरह जाता था। घायल होकर लोकर वापिस लौटा। पर रानीके पिताके भाग्यमें निष्कृति न थी। वे घोड़ेपर चढ़े हाथीके साथ जा रहे थे। उनकी अपनी तलवारसे ही उनकी जांघ कट गई। खूनसे तमाम कपड़े तर हो गये। इस दशामें वे दतिया पहुंचे। दतियाके राजाने उन्हें पकड़कर अंग्रेज़ सेनापतिके हवाले किया। वहां उनको फांसी हुई।

झांसीसे रानीके चले आनेके बाद फिर भयानक "विजन" शुरू हुआ। कानपुर और दिल्लीके समान झांसी भी अंग्रेज़ी सेना-को उत्तेजनाका कारण थी। कानपुर और दिल्लीकी तरह झांसीमें भी अंग्रेज़ स्त्रियों और बच्चोंका खून बहा था। कहा जाता है कि अंग्रेज़ी सेनाने झांसीके पांच हजार आदमियोंका वध किया था।* बहुतसे आत्मीयोंने अपनी इज्जत बचानेके लिये अपनी औरतोंके गले काटे थे। बहुत सी औरतें अपनी रक्षाके लिये कुवोंमें गिर गई थीं। पर अंग्रेज़ सैनिकोंने औरतोंपर हथि-यार नहीं उठाये। घटनावश बहुत सी स्त्रियां मारी गई थीं, पर सीधे किसीने औरतोंपर हथियार नहीं उठाया। झांसीका किला और शहर लूटा गया। ५ अप्रेलको झांसीका किला अंग्रेज़ोंके हाथ आया। झांसीके सैनिकोंने तेरह दिनतक अपनी रानीके लिये घोर संग्राम किया था। तेरह दिनतक उनकी तोपें और बन्दूकें आगकी तरह लाल हो गई थीं। एक लेखकने इस

* Malleson's Indian Mpire. Vol. II. P. 485

युद्धके वर्णनके प्रसंगमें लिखा था—"लड़ाईके समय यह मालूम होता था मानों काल भुजंग हमारे बीचमें निर्द्वन्द्व खेल रहा है। किलेके भीतर निरन्तर नक्कारा बजता था, बाहर चारों ओर तोपों और बन्दूकोंकी आवाज होती थी, उसके साथ ही मौत हमारे लोगोंको उठा ले जाती थी।"* इस तरहके तेरह दिनके घोर संग्रामके बाद झांसी हारी। हारनेपर भी उनका नाम वीरोंमें लेने योग्य है। जो वीर नारी सेनाकी संचालिका थीं, वह संसारके ऐतिहासिकोंके सामने सदैव स्मरणीय रहेंगी।

इधर रानी कालपी पहुंचीं। वहीं पर रावसाहब और तांतियातोपी थे। रानीके साथ सेना न थी। इसलिये उन्होंने रावसाहबसे मदद मांगी। रावसाहबने सेनाको उत्साहित किया। उनके संचालनका भार तांतियातोपीपर अर्पित हुआ। तांतियाने कहा कि जब तमाम सेना आ जायगी तब हमारी सेना एकत्र होगी, यह कहकर जो सेना थी वह लेकर तांतिया कालपीसे ४० मील दूर कूंच नामक स्थानकी ओर चले गये। यहांपर सर ह्यू-रोजकी सेनासे फिर तांतियातोपी हार गये। रानी इस लड़ाईमें थीं। पर तांतियाने उनकी सलाह नहीं मानी। खैर, हारनेपर भी उनकी सेना नियममें थी। इतनी अच्छी तरह यह सेना वापिस हटी कि सर ह्यूरोजको भी आश्चर्य हुआ। कर्नल मालेसनने लिखा है कि जिस उत्कृष्ट रीतिसे यह सेना हटी उससे अधिक

* Lowe's Central India.

इक्कीस मीलतक दौड़ा पर

अच्छी तरहसे कोई योग्यसे योग्य सेना भी नहीं हट सकती।*
उनकी लम्बी कतार दो मीलतक चली गई थी, पर कहीं भी उनमें
अनियम न था। एक दल पीछे आनेवाली सेनापर बन्दूक छोड़ता
था और दूसरा पीछे हटता था। फिर दूसरा दल बन्दूकें भरकर
अंग्रेज़ी सेनापर छोड़ता था और पहला पीछे हट जाता था।
इस तरह नियमके साथ यह बड़ी भारी सेना पीछे हटी।

कूंचके युद्धके बाद कालपीसे ६ मीलके फासिलेपर गलौली
नामक स्थानपर युद्ध हुआ। इस लड़ाईमें बांदाका नवाब दो
हजार सवार और कुछ तोपें लेकर शामिल हुआ। लक्ष्मीबाईने
रावसाहबसे सेनाको नियममें करनेको कहा। पर रावसाहबने
औरतको सेनापतिका पद न देकर स्वयं ही लिया। रानीको
केवल ढाई सौ सवार मिले। उन्हें यमुनाकी बाजू रक्षा करने-
को कहा गया। रानीने अपनी सेनाको योग्यतासे खड़ा करके
सेनाकी बाजूकी रक्षा की। इस लड़ाईमें भी अंग्रेज़ जीते। मई
मासके अन्तमें अंग्रेज़ी सेनाने कालपी भी ले लिया। गलौलीकी
लड़ाईमें हारकर रावसाहब और बांदाके नवाबने भागनेकी
सलाह की। पर रानीने उन्हें स्थिर होनेकी सलाह दी। गलौली-
की लड़ाईमें रावसाहबने रानीको केवल ढाई सौ सवार दिये थे,
उन्हीं सवारोंके हमलेसे अंग्रेज़ी सेना कांप उठी थी। जो कहीं
तमाम सेनाका भार रानीपर होता तो अंग्रेज़ी सेना जीतकर
नहीं जा सकती थी। लक्ष्मीबाई घोड़ेपर बैठी हुई नंगी तलवार

* Malleson's Indian Mutiny Vol III P. 178

लिये अपने सवारोंके साथ अंग्रेज़ी फौजपर इस वेगसे टूट पड़ी थीं कि उस वेगको न संभाल सकनेके कारण ब्रिटिश सेना पीछे हट गई। वह तोपोंपर चली गई थीं, जो थोड़ी भी और सेना उनके पास होती तो तोपें छीन लेतीं। एक अंग्रेज़ सैनिक जो इस लड़ाईमें लड़ा था, उसने इतिहास लेखक मालेसनसे आकर कहा था—"जिस वक्त रानीने हमपर धावा किया था उस वक्त हम जरूर हार जाते जो ठीक मौकेपर ऊंटोंके सवार हमारी सहायता न करते तो। ऊंट सवारोंने सर रोजकी सेनाको बचाया। रानी हमारी तोपोंसे बीस गजके फासिलेपर थीं। जो पन्द्रह मिनिट हमें मदद न मिलती तो सब गया था। इसी दिनसे मैं ऊंटको प्रेमसे देखता हूं।" देखा जाय तो लक्ष्मीबाईकी हार न थी। उन्होंने शुरूसे आखीरतक बराबर वीरता और विक्रमसे अंग्रेज़ी सेनापर धावा किया और उन्हें पीछे हटा दिया था। पर जब बड़ी भारी सेनाके साथ रावसाहब भाग खड़े हुए तब रानीको भी अपने घोड़ेकी बाग मोड़नी पड़ी। तांतियातोपीने कालपीमें गोले गोली और बारूद बनानेका एक कारखाना खोला था। उनके पास तोपें और बारूद भी खूब थी। जब इस स्थानपर अंग्रेज़ी सेनाने अधिकार कर लिया तब राव-साहब आदि ग्वालियरसे ४६ मील दूर गोपालपुर चले गये।

इसके बाद विचार होने लगा कि अब क्या किया जाय। यहाँपर रावसाहब थे, बांदाके नवाब थे, तांतियातोपी थे और सबसे अन्तमें महारानी लक्ष्मीबाई भी आ गई थीं। रावसाहब

और बांदाके नवाबको रणविद्या और कौशलका कुछ भी ज्ञान न था। तांतियातोपी जरूर बुद्धिमान थे, पर वे हठसे अपनी ही बात प्रधान रखना चाहते थे। पर महारानी लक्ष्मीबाईमें साहस, वीरता और पराक्रमके साथ साथ नई बात सोचनेकी शक्ति भी विलक्षण थी। प्रतिभाके कारण वह नये उपायोंका उद्भावन करती थीं। हारनेपर भी उनका बल, साहस और बुद्धि जागृत थी। उत्साह उसमें वैसा ही बना था। उसने सलाह दी कि जबतक कोई बड़ा जबर्दस्त किला हमारे हाथमें अपनी रक्षाके लिये न हो, तबतक हम अंग्रेजों जैसे बलवान दुश्मनको नहीं हरा सकते। जो इस वक्त ग्वालियरके किलेको हम ले लें और धर्म तथा देशके नामपर वहाँकी सेनाको उठावें तो कुछ काम हो सकता है। ऐसी बातें उस दिमागसे निकल सकती हैं जिसने जन्मसे ही रणशिक्षा पाई हो, जिसकी बुद्धि हजार विपत्तियोंमें भी मैली न होती हो। रानी लक्ष्मीबाईमें भारतकी महिलाका दिमाग काम कर रहा था। ग्वालियरमें महाराज जयाजीराव शिन्दे राज्य कर रहे थे। उनका मंत्री दिनकरराव बुद्धिमान और दूरदर्शी था। ग्वालियरका किला ऊंचे पहाड़पर बना था। ऐसे किलेपर कब्जा करना वीरता और साहसका काम था। रानी लक्ष्मीबाईका साहस इससे भी अधिक और बुद्धि दिनकररावसे भी अधिक तीक्ष्ण थी। उसने सबको इस प्रस्तावकी ओर झुकाया रानीके प्रस्तावसे रावसाहब सहमत हुए, तांतियातोपी भी राजी हुए। ३० मईको इन्होंने गोपालपुरसे ग्वालियरकी ओर यात्रा की।

ग्वालियरके राजमंत्री दिनकरराव आत्मरक्षाके लिये तैयार हुए। इस समय मंत्रीने कूटनीतिका सहारा लिया। वे जानते थे कि पेशवाके भाईके नामपर ग्वालियरकी सेना उनकी ओर हो सकती है। इसलिये रावसाहब आदिके प्रति प्रगटमें विद्रोह-भाव न रक्खा जाय। यह सोचकर दिनकररावने ऊपरसे राव-साहबकी सेनासे सहानुभूति प्रगट की, पर दूसरी ओर इन्हें ग्वालियरसे निकालनेके लिये गवर्मेंटकी मदद मांगी। उन्होंने इस सेनापर चढ़ाईका प्रबन्ध न करके केवल अपनी रक्षाका आयोजन किया था। महाराज शिन्देने भी इसमें सम्मति दी थी। ३१ मईको मंत्री राजमहलसे अपने मकान गये। महाराज मंत्रीकी नीति भूलकर रावसाहबके सामने अपनी शक्ति दिखाने लगे। महाराजने देखा था कि दिल्लीपर अंग्रेजोंका अधिकार हो गया, लखनऊ गवर्मेंटके पैरोंपर गिर गया। मध्यभारतके अधिकतर स्थानोंमें अंग्रेजोंका झंडा लहराने लगा है। इसलिये अन्तमें अंग्रेजोंकी जीत होगी इसमें कोई सन्देह नहीं। इसी विश्वासके कारण तथा अपनी वीरता दिखानेके लिये महाराज लड़ाईके लिए तैयार हुए। दूसरे दिन अर्थात् १ जूनको उनके विचारोंके अनुसार काम हुआ। इस दिन वे ६ हजार पैदल तथा १॥ हजार सवार और ५०० शरीररक्षक सैनिक तथा ८ तोपोंके साथ लड़ाईके लिये तैयार होकर मुरारसे दो मीलपर अपना शिविर डालकर इन्तजार करने लगे। प्रातःकाल ७ बजे उनकी तोपोंसे गोले चलने लगे। रावसाहबने समझा कि शायद महा-

राज उनके स्वागतमें तोपोंकी आवाज कर रहे हैं, यही सोचकर वे आरामसे पड़े थे। पर जो नारीमस्तिष्क काम कर रहा था वह निश्चेष्ट न था। वह अपने दो सौ सवार लेकर बरसते गोलोंमें घुसकर तोपोंपर जा पहुंची, और इस जोरका हमला किया कि ग्वालियरके गोलंदाज तोपें छोड़कर भाग गये। महाराज शिन्देकी तोपें बंद हो गईं। अब लक्ष्मीबाई ग्वालियरकी सेनाकी ओर फिरीं। इसमें सन्देह नहीं कि ग्वालियरकी बहुतसी सेना पेशवासे नहीं लड़ी, पर महाराजके ५०० शरीररक्षक सिपाहियोंने संग्राम किया। लक्ष्मीबाईकी तलवार इन्हींपर चली। वीर नारीकी चलाई हुई सेनाने घोर संग्राम किया। अन्तमें बहुतसे मारे गये और बहुतसे भाग खड़े हुए। अपनी सेनाकी यह दशा देखकर महाराज जयाजी राव शिन्दे मैदानसे भागे। आगराके किलेमें पहुँचकर उन्होंने दम लिया। इस प्रकार ग्वालियरकी युद्धभूमिमें रानीकी विजय हुई, उसकी वीरता और चतुराई प्रगट हुई।

जब दिनकररावने महाराजके हारने और भागनेकी बात सुनी तब चतुर मंत्रीने भी महाराजका अनुकरण किया। महारानी लक्ष्मीबाईका प्रस्ताव कार्यरूपमें परिणत हुआ। रावसाहब विजयके आनन्दमें धूमधामके साथ ग्वालियरमें घुसे। शहरके साथ किला, खजाना और मेगजीन भी उनके हाथ आ गया। रानीने रावसाहबसे कहा था कि प्रजाको किसी तरहकी हानि न पहुंचाई जाय; इसलिये लूट आदि रुक गई। उसी समय

घोषणा की गई कि, रावसाहब ग्वालियरके शासनकर्त्ता और नानासाहब महाराष्ट्र पेशवा हैं। रामराव गोविन्द नामक आदमी ग्वालियरके दीवान नियत हुए। बानपुर और शाहगढ़ तथा अन्य जागीरदारोंको दरबारमें हाजिर होनेका हुकम निकला।

इस समय जेठका दशहरा पड़ा। रावसाहबको सबसे पहले अपनी सेनाको तैयार करना चाहिए था, पर इस ओर ध्यान न देकर वे ब्राह्मण-भोजन कराने लगे। इधर अंग्रेज़ सेनापति सर ह्यूरोज़ महाराज ग्वालियरको आनेके लिये लिखकर खुद ग्वालियरकी ओर बढ़ा। इस समय रावसाहब ब्राह्मण-भोजन और उत्सवोंमें लगे थे। महारानी लक्ष्मीबाईने बार बार कहा कि आप उत्सव छोड़कर फौजोंकी तैयारीमें लगिये। पर उनका कहना किसीने न सुना। इससे महारानीको बड़ा दुःख हुआ। जब अंग्रेज़ सेनापतिके आनेकी खबर पहुंची तब रावसाहबको होश हुआ। रावसाहबने केवल तांतिया-तोपीको लड़ाईकी तैयारीकी आज्ञा दी। तांतियातोपी पहले ही कई बार अंग्रेज़ी सेनासे हार चुके थे, इस बार भी वे हारे। मुरारपर अंग्रेज़ी सेनाका अधिकार हो गया। अब रावसाहबको अन्धेरा दीखने लगा, इस समय उन्होंने रानीसे सलाह ली। रानीको इन लोगोंके आलस्य और कर्त्तव्यहीनतापर बड़ा दुःख था, पर वह अपने कर्त्तव्यको कभी नहीं भूली। उसने राव-साहबको कहा कि आपकी आरामपसन्द तबीयतके कारण सब अनर्थ हुआ है। अब अंग्रेज़ी सेनापर हमलेके सिवा और

कोई उपाय नहीं है। इस समय रावसाहबने ग्वालियरकी पूर्व दिशाकी रक्षाका भार रानीको दिया। रानी फिर घोड़ेपर सवार होकर दिन भर स्थान स्थानपर सेनाको देखती और योग्य सैनिकोंको छांट छांटकर लड़ाईके उचित स्थानोंपर नियत करती रही। रानीका परिश्रम, रानीकी बुद्धि और रानीकी रण-कुशलता बड़े बड़े योग्य सेनापतियोंको भी हैरान करती थी। मर्दोंकी बुद्धि उस स्त्रीके सामने चकराती थी।

१८ जून (इतिहासलेखकोंके मतानुसार १७ जून) को फूल-बागके राजमहलके पास सेनानायक स्मिथकी सेनासे राव-साहबके सैनिकोंका युद्ध होने लगा। इस स्थानका नाम कोटाकी सराय है। यह स्थान ऐसा था कि रिसालेके लिये योग्य नहीं कहा जा सकता। खैर, दिन भर लड़ाई होती रही। रानी दिन-भर घोड़ेपर बैठी अपने सैनिकोंको योग्यताके साथ लड़ाती रहीं। पर सेना पहलेसे तैयार न की गई थी इसलिये उसे विजय न प्राप्त हुई। शामको उसकी सेना हारी। रानीने अपनी विश्वासी दासियों और कुछ नौकरोंके साथ संग्रामभूमि छोड़ी। रानीका घोड़ा दिन भरकी मेहनतसे थक गया था। इसलिये उसे छोड़-कर उसने महाराज शिन्देकी घुड़सालसे एक घोड़ा लिया। रानीको घोड़ेकी परीक्षा आती थी, पर उस समय घुड़सालमें उससे अच्छा कोई घोड़ा न था। इसी घोड़ेके कारण अन्तमें रानीके प्राण गये। घोड़ेपर बैठकर वह हवाके वेगसे चली। इसी समय रानीने पीछेसे स्त्रीकी आवाज सुनी जो पुकार रही

थी "मैं मरी, मैं मरी"। मुँह मोड़कर रानीने देखा कि पीछे आती हुई उसकी दासी सुन्दरापर अंग्रेज़ सवारने हमला किया है। रानीने बिजलीकी चमकके वेगकी तरह घोड़ेको मोड़ा और एक सपाटेमें तलवारसे उस गोरे सवारके दो टुकड़े करके फिर घोड़ेको आगे फेंका। सामने एक छोटीसी नहर थी। पानी देखकर घोड़ा रुक गया। रानीने बहुत कोशिश की पर घोड़ा उस छोटीसी नहरके पार न गया। इसी समय पीछेसे कई गोरे सवारोंने आकर रानीपर हमला किया। पलटकर रानी उनसे तलवारसे लड़ने लगी। आधे घंटेतक रानीने अपने आपको तलवारसे बचाया। इस अर्सेमें रानीके सिरके दाहिने हिस्सेपर विपक्षीकी तलवार लगी। एककी संगीन उसकी छातीमें घुस गई। फिर भी रानीने घोड़ेको दबाकर मुकाबिला किया। रानीके वस्त्र खूनसे भीग गये थे, सिर और छातीमें गहरी चोट लगी थी। अपनी हालतको समझकर रानीने अपनी पूरी ताकत लगाकर हमला करनेवालोंमेंसे दो को काट डाला। बाकी भाग गये। इस प्रकार विजय प्राप्त करके उसने विश्वासी नौकरकी ओर इशारा किया। सरदार रामचन्द्रराव देशमुख उन्हें एक पासकी झोपड़ीमें ले गये। यह झोपड़ी एक महात्माकी थी। महात्माने अन्तिम समय महारानीको गंगाजल पिलाकर उनकी प्यास बुझाई। वे शान्तिसे घासके आसनोंपर लेट गईं। एक क्षणके बाद, अपने प्यारे पुत्र दामोदररावको देखते हुए, उनके प्राण शरीरसे पृथक् हो गये। रानी अनन्तकालके लिये अनन्त निद्रामें सो गईं।

इस प्रकार झांसीकी चिरप्रसिद्ध महारानीका शरीरपात हुआ। तेईस वर्षकी भारत वीरांगनाने ऐसा अपूर्व रण किया, ऐसी अपूर्व वीरता दिखाई। उनसे संग्राम करनेवाले अंग्रेज़ोंको बार बार सन्देह होने लगता था कि अबकी बार हम हार जायंगे। सर ह्यू रोजने पीछेसे लिखा था कि, यद्यपि वह स्त्री थीं पर वीरसे वीर पुरुष भी उनसे अधिक वीर नहीं हो सकता।* थोड़ी उमरकी वीरांगनाने अपने विरोधी चतुर सेनापतिसे भी अपनी प्रशंसा करवा ली थी। उसकी वीरता देखकर सेनापतिने जिन्दा पकड़नेकी आज्ञा दी थी पर किसीने उन्हें पहचाना ही नहीं। वह पुरुष वेषमें घोड़ेपर रहती थीं। खैर जो कुछ हो, रामचन्द्ररावने उस कुटीके पाससे बहुतसा फूस इकट्ठा करवाकर उसमें रानीका शरीर रखकर आग दे दी। देखते देखते यह लावण्यमयी-वीरतामयी-भारतनारी भस्म हो गई।

मालेसन साहबने अपने इतिहासमें लिखा है कि अंग्रेज़ोंकी नजरोंमें रानीका चाहे जैसा ही बड़ेसे बड़ा दोष हो, पर भारत-वासी सदा उसे श्रद्धा और गौरवकी दृष्टिसे देखेंगे और गव-र्मेंटपर सदा यह दोष लगावेंगे कि उसने रानीके साथ अन्याय किया। भारतवासी सदा यह समझेंगे कि रानी अपने देशके लिये जी रही थी और देशके लिये मरी।† रानी प्रतिहिंसाके वश होकर हथियार उठा सकती हैं पर उन्होंने जो वीरता दिखाई

* Martin's Indian Empire. Vol. II. P. 489.

† Malleson's Indian Mutiny Vol. III P. 221

और जिस निर्भीकतासे सामना किया उससे चाहे कोई कैसा ही विरोधी हो पर वह उनका सम्मान करेगा। रानीका सम्मान करना वीरताका सम्मान है।

१८ जून को अंग्रेज़ी सेनाने फूलबागका महल और लश्कर ले लिया। इसी रातको रावसाहब किला छोड़कर चल दिये। २० जूनको जयाजीराव शिन्दे अपनी राजधानीमें वापिस आ गये।

और दामोदरराव? जो बालक अपनी वीरमाताके प्राणोंका हार था, जिसे रानी अपने घोड़ेके पीछे बैठाकर रेशमी दुपट्टेसे अपनी छातीसे बांध लेती थी, उसका क्या हुआ? कुछ विश्वासी नौकरोंके साथ दामोदररावने जंगलोंमें अपने आपको छिपाया। घोर वनोंके विशाल वृक्षोंके नीचे यह वीरमाताका पुत्र छिपा। दो सालतक यह इसी तरह जङ्गलसे जङ्गलमें छिपता रहा। इसके बाद अंग्रेज़ी सेनाने इन्हें गिरफ्तार किया। इन्दौरके रेजीडेंटने सर रिचमंड शेक्सपियरने इनके साथ सम्मानका बर्ताव किया। रेजीडेंटने एक काश्मीरी विद्वान ब्राह्मणको राजकुमारका शिक्षक बनाया। रेजीडेंटके प्रस्तावके अनुसार गवर्मेंटने इनका डेढ़ सौ रुपया मासिक नियत किया। इसके बाद लार्ड नार्थब्रुकने उनकी दीनताकी दशा सुनकर दस हजार रुपये कर्ज उतारनेको दिये। उन्हें दो सौ रुपये मासिक दिये जाने लगे। इस प्रकार झांसी और रानीके पति गंगाधररावकी सम्पूर्ण सम्पत्ति गवर्मेंटने लेकर उनके पुत्रके दो सौ रुपये माहवार कर दिये।

बारहवां अध्याय

गदरका अंत--झांसीके आसपासके स्थानोंका विप्लव--नौगांव--बांदा--नागोद--तांतियातोपीका भागना--उसका घिरना और फांसी।

विधाताकी नियतिके सामने झांसी भी अवनत हुई। वीर रानीका भी शरीरांत हुआ। झांसीके विप्लवके कारण आसपासके स्थानोंमें जो उत्तेजना फैली थी, यहां उसीका संक्षेपसे वर्णन करना है।

झांसीसे प्राय: दो सौ मील दूर नौगांव है। झांसीमें जो १२ नम्बर सिपाही सेना थी उसका एक हिस्सा नौगांवमें था। १४ नं० अनियमित रिसाला तथा कुछ गोलंदाज थे। मेजर किरके नामक एक सैनिक इनके सेनापति थे। ३० मईतक यहांके सैनिकोंमें शान्ति थी। पर ५ जूनको इनके भाव भी बदले। इससे पहले दिन सेनापतिने सिपाहियोंकी राजभक्ति-पर प्रसन्नता प्रगट की थी और गोलंदाज इतने खुश हुए थे कि खुशी जाहिर करनेके लिये तोपें छोड़नेको तैयार हुए थे। पर देखते देखते उनके भाव बदले। ५ जूनसे १० जूनतक विचार बदलते रहे। एक सिक्खने दो नौकरों सहित छावनीमें जाकर हवलदारको गोलीसे मार डाला। इससे सिपाही भी बन्दूकें

छोड़ने लगे। सिपाही विद्रोही हो गये। ऐसी दशामें अंग्रेज़ अफसरोंके सामने सिवाय भागनेके और कोई चारा न था। इस दशामें स्त्रियां और बच्चे अधिक चिन्ताके कारण थे। पर सबको लेकर वे मिर्ज़ापुरकी ओर भागे। ८७ सिपाही अंग्रेज़ोंके रक्षक बने। इन्होंने पहले इलाहाबाद जानेका निश्चय किया था, पर रास्तेमें अनेक विघ्नोंकी बात सुनकर ये मिर्ज़ा-पुरकी ओर चले। इन अंग्रेज़ोंने अपनी रास्तेकी कठिनाइ-योंका मार्मिक वर्णन किया है। सिपाहियोंके विद्रोहसे मेजरका दिमाग खराब हो गया, वे पागल हो गये। चाय और शराबके न होनेके कारण अंग्रेज़ोंकी तेजस्विता जाती रही। वे रास्तेके आम और खरबूजे बराबर खाने लगे। शराबके लिये उन्होंने दो सैनिकोंको नौगांव भेजा। शराब और चाय न मिलनेके कारण बहुत बार वे पागलोंकी तरह बकने लग जाते थे। इस प्रकार विपत्तिमें पड़े हुए वे छत्रपुर पहुंचे। विधवा रानी अपने नाबालिग पुत्रके राज्यका काम कर रही थीं। यहां अंग्रेज़ोंको उनकी आवश्यक चीजें मिलीं। चीजें लेकर वे आगे बढ़े। इस समय मेजर फिरके पागलपनकी सनकमें कहीं भाग गये। उन्हें पागलपनमें यह ज्ञान पड़ा कि सिपाही मुझे मारने आ रहे हैं इसलिये वे पासके पेड़ोंमें दबक गये थे। नौगांवसे आती हुई शराब और चायकी गाड़ीमें बैठकर वह यूरोपियनोंसे मिले। १७ जूनको ये अंगरेज़ भटकते हुए बुंदेलखंडके चरकारी राज्यमें पहुंचे। यहां राजाने उन्हें भोजन दिया। कुछ रुपया देकर

उनकी जरूरतें पूरी कीं। पर यह पूर्त्ति क्षणिक थी। कुछ हथियारबन्द आदमियोंने उन्हें कालिंजर पहुंचा देनेका वादा किया। पर जब आगे चले तब इन्होंने ही हमला किया। इस हमलेमें कई अंग्रेज़ मारे गये। इन सशस्त्र लोगोंने उनकी गाड़ियों और सवारियोंपर कब्जा कर लिया था। इसलिये कोई कोई पैदल और कोई कोई घोड़ेपर वहांसे भागा। इस समय वे महोवेकी ओर भागे जा रहे थे। मेजर किरके पहले ही पागल हो गये थे, कुछ मील चलनेके बाद वे घोड़ेसे गिरकर मर गये।

अब कप्तान स्काट इन भगोड़ोंके सेनापति बने। ये मेजर किरकेसे कम अवस्थावाले और चाय तथा शराबके कम आदी थे। अपने आदमियोंकी इन्होंने बड़ी योग्यतासे रक्षा की, पर उनकी मृत्यु अनिवार्य थी। जून मासकी धूप इतनी कड़ी थी कि उसके कारण कई अंग्रेज़ पागल हो गये। कई मर गये। जो मरे उनका शरीर रास्तेके एक किनारे छोड़कर बाकी अंग्रेज़ आगे बढ़े। भागते हुए अंग्रेज़ आजीगढ़ पहुंचे। आजीगढ़की रानी और बांदाके नवाबने इनकी सहायता की। जो ये मदद न करते तो भागते हुए अंग्रेज़ मर जाते। दुर्दशाग्रस्त अंग्रेज़ोंकी इन्होंने सहायता की।*

इस स्थानपर बांदाकी घटना संक्षेपमें कहनी है। और स्थानोंके समान बांदामें भी अंग्रेज़ी सेना थी। यहांकी ६५ नं०

* Malleson's Indian Mutiny Vol. II P 196

पैदल सेना नौगांवका समाचार सुनकर १४ जूनको विद्रोही हो गई। सिपाहियोंने खजाना लूट लिया। नवाबने बांदाके अंग्रेज़ोंकी जान बचाई। दूसरे स्थानोंके जो अंग्रेज़ भाग भागकर आये उनकी भी नवाबने रक्षा की। पर अन्तमें घटनावश नवाबको भी गवर्मेंटका विरोधी बनना पड़ा। नवाब भागकर रावसाहब और तांतियातोपीसे मिले थे, यह ऊपर कहा जा चुका है।

बुंदेलखंडके जिन जिन स्थानोंपर सिपाही सेनायें थीं, वे सभी विद्रोही हुईं। केवल नागोदके सिपाही शान्त रहे। नागोदकी ५० नं० सिपाही सेना गवर्मेंटका पक्ष समर्थन करने लगी। इस सेनाके केवल १४ आदमियोंने विरोध किया था। पर नौगांवसे जब अंग्रेज़ चले गये तब वहाँ गवर्मेंटका राज्य लोप हो गया। उत्तेजित लोगोंने दिल्लीके बादशाहके प्राधान्यकी घोषणा की। कुछ सिपाहियोंने अंग्रेज़ोंके खाने पीनेकी चीजें एकत्र कर दी थीं इसलिये अड़ोस पड़ोसके आदमी बहुत नाराज हुए थे। इन सिपाहियोंने राजभक्तिको ही जलांजलि देना अधिक योग्य समझा। कप्तान स्काटने किसी प्रकारकी आपत्ति न करके इन सिपाहियोंको विश्वस्तताका प्रमाणपत्र दिया। प्रसन्नतापूर्वक सिपाही इलाहाबादकी ओर गये। अंग्रेज़ोंने आजीगढ़ और वहाँसे बांदाकी ओर जाकर प्राण बचाये।

जब ग्वालियरके महाराज शिन्दे फिर ग्वालियरके राजा बने तब २१ जूनको मध्यभारतके सेनापति सर ह्यू रोजने अपने पदसे

इस्तीफा दे दिया। ब्रिगेडियर जनरल राबर्ट नेपियर उनके स्थान-पर सेनापति बने। इधर तांतियातोपी, रावसाहब और बांदाके नवाब २२ जूनको उत्तरपश्चिमकी ओर चले। जब वे सरसथुरा नामक स्थानपर पहुंचे तब उन्हें मालूम हुआ कि ब्रिगेडियर सावर्सने उनके विरुद्ध सेना भेजी है। इसलिये इरादा करके वे लोग जयपुरकी ओर चले। उन्हें विश्वास था कि जयपुर उनकी सहायता करेगा। पर २७ जूनको जयपुरके पोलिटिकल एजेन्ट कप्तान ईडनने राजपूतानेके सेनापति राबर्टको लिखा कि भागे हुए मराठे सेनापतिने जयपुर अपने दूत भेजे हैं। समाचार मिलते ही राबर्ट अपनी सेना लेकर २८ जूनको जयपुरमें आ गये। इस स्थानपर यह कहना आवश्यक है कि महाराष्ट्र सेना-पति तांतियातोपीको गिरफ्तार करनेके लिये अंग्रेज़ सेनापतियोंने बड़ी २ कोशिशें की थीं, एक अंग्रेज़ सेना इसीलिये ग्वालियरमें पड़ी थी। एक सेना झांसीमें थी। सीपरीमें भी एक सेना रखी गई। गुनामें ४ नं० सेना पड़ी रही। नसीराबादमें ५ नं० सेना रखी गई और भी भिन्न २ स्थानोंपर सेनाएं रखकर तांतियातोपीकी गिरफ्तारीकी कोशिश की गई। जिस ओर तांतियातोपी जाने लगे उसी ओरसे अंग्रेजी सेना बढ़ने लगी। पर यह मराठा सेनापति ऐसा चतुर और रणकुशल था कि किसी ओरसे हाथ नहीं आता था। नौ महीनेतक तमाम अंग्रेज़ सेनापति कोशिशें करते रहे पर तांतिया हाथ न आये। कभी वे भयानक जंगलोंमें छिपकर अन्तर्धान हो जाते, कहीं पता ही न लगता

और कभी एकाएक अपनी तोपों और सेना सहित बस्तोमें निकल पड़ते थे। वे किधरसे किधर जा निकलते थे यह अंग्रेज़ सेनापतियोंको मालूम ही न होता था। तांतियाको समाचार मिला कि जयपुरमें अंग्रेज़ी सेना आ गई। इसलिये वे जयपुर न जाकर माधोपुर और इन्द्रगढ़की ओर चले। इस समय पानी बरसनेके कारण चम्बल नदी चढ़ रही थी इसलिये तांतिया नदी पार न हो सके। यह स्थान छोड़कर वे दक्षिणकी ओर चले। ७ अगस्तको टारिया नदीके किनारे भीलवाड़ा नामक स्थानपर सेनापति राबर्टसे तांतियाकी लड़ाई हुई। इस लड़ाईमें मराठे सेनापतिने अच्छी वीरताका परिचय दिया। सेना और तोपें लेकर वे आगे चले। उनकी सेनाका एक हिस्सा लड़ता रहा और बाकी तीन हिस्से तोपें उतारकर नदी पार हो गये। सेनापति राबर्टके पास रिसाला न था इसलिये वे तांतियाके पीछे न जा सके। दूसरे दिन रिसाला आया। इधर तांतिया निकल गये।

तांतियातोपी धार्मिक महाराष्ट्र ब्राह्मण थे। [illegible] अगस्तको

पीछे न जा सके। दूसरे दिन रिसाला आया। इधर तांतिया

किया। इस विषयमें तांतियाकी चतुराईमें कमी कभी नहीं देखी गई। १४ अगस्तको सवेरे ७ बजे बनास नदीके किनारे उनका युद्ध प्रारम्भ हुआ। पर उनके सिपाही थके हुए थे वे अंग्रेज़ी सेनाके मुकाबिलेपर न टिक सके। चार तोपें मैदानमें छोड़कर तांतियातोपी चले। अंग्रेज़ सेनापतिने पहले हीसे चम्बलका किनारा जा घेरा। पर सेनापतिने देखा कि किनारे-पर थोड़ेसे निकम्मे टट्टू खड़े हैं और चतुर मराठा सेनापति पार होकर जङ्गलमें अन्तर्धान हो गया।

चम्बल पार होकर तांतियातोपी झालरापाटन पहुंचे। प्रसिद्ध वीर जालिमसिंहके पुत्र पृथ्वीसिंह झालरापाटनके राजा थे। उन्होंने मराठे सेनापतिको अपने राज्यसे निकालनेके लिए राज्य-की सेना संग्रह की, पर पृथ्वीसिंहकी सेना लड़ाईके मैदानमें जाकर मराठे सेनापतिकी ओर हो गई। तांतियातोपीने उन्हींको सेनासे उनके गोले बारूद, खजाने तथा महलपर कब्जा किया। दूसरे दिन राणा उनसे मिले। तांतियाने राणासे लड़ाईके लिए धन मांगा। राणाने पांच लाख रुपया देना चाहा, पर यह उन्हें कम मालूम हुआ। रावसाहबने पेशवाके प्रति-निधिकी हैसियतसे पचीस लाख रुपये माँगे। राणाने पन्द्रह लाख देनेका वादा किया और पांच लाख उसी समय दे दिये गये। इसी रातको राणा सब कुछ छोड़कर भाग गये। जाते समय वे महलकी रानियोंको थोड़ी २ बारूद दे गये थे और उनसे कह गये थे कि जो तुम्हारे साथ कोई किसी तरहका

बुरा व्यवहार करे तो इस बारूदमें आग लगाकर जान दे देना। पर तांतियातोपी धार्मिक ब्राह्मण थे, वे स्त्रियोंपर दबाव कैसे डाल सकते थे?

इस समय बरसात ज़ोरसे हो रही थी। चम्बल नदी पूरे चढ़ावपर थी। इसी कारण तांतियाका पीछा करनेवाली अंग्रेज़ी सेनाके एकाएक आनेकी संभावना न थी। वे झाला-वाड़ रियासतमें पांच दिन रहे। जो रुपया उनके पास आया था उससे नौकरोंकी तनख्वाह बांटी। इस समय रावसाहब और बांदाके नवाबने बड़े साहसका परिचय दिया। उन्होंने कहा कि जो किसी तरहसे इस समय वे होलकरके राज्यमें पहुंच जायं तो वहांकी सम्पूर्ण सेना उनके साथ हो सकती है। इससे वे होलकरकी प्रजा भी पेशवाका पक्ष समर्थन कर सकती है। इस प्रस्तावके अनुसार तांतियातोपी अपनी सेनाको लेकर इन्दौरकी ओर चले। पर उन्होंने सुना कि नलकेरा नामक स्थानके पास दो दल ब्रिटिश सेना है। इसलिये तांतियाने राजगढ़के पास अपनी सेनाका शिविर डाला। अंग्रेज़ी सेना तांतियाके पीछे २ छाया-की तरह घूम रही थी। वे सदा पीछा कर रहे थे। एक अंग्रेज़ सेनापतिने दूसरे दिन सवेरे राजगढ़ आकर देखा कि तांतियाकी सेना वहांसे गायब है। अंग्रेज़ सेनापति तांतियाकी तोपोंकी लकी-रोंके निशानपर चले। कुछ दूरपर तांतियाकी सेना थी। दोनों सेनाओंमें लड़ाई हुई। तोपें छोड़कर तांतियाने प्रस्थान किया। कुछ समयतक वे बेतवाके किनारेके जङ्गलोंमें रहे। इसके बाद शिरोंज स्थानपर पहुंचे।

तमाम जुलाईकी वर्षा अंग्रेज़ी सेनाके सिरपर बीती। पर राजगढ़में तांतियाकी हारके बाद एक नई घटनाका आविर्भाव हुआ। ग्वालियरसे ४४ मीलपर नरवर नामक स्थान है। इस स्थानके राजाने दरबारके व्यवहारसे नाराज़ होकर ग्वालियरके खिलाफ युद्ध शुरू किया। उसने पावरी नामक किलेपर कब्ज़ा भी कर लिया। जब अंग्रेज़ सेनापति वहां गये तब नरवरके राजाने कहा कि मेरी लड़ाई ग्वालियर दरबारसे है। अंग्रेज़ोंसे मेरी कोई दुश्मनी नहीं। अंग्रेज़ी सेनापतिने कहा कि ये सम्पूर्ण प्रान्तमें शान्ति स्थापना कर रहे हैं। जो आदमी किसी तरहसे शान्तिमें व्याघात पैदा करेगा उसीसे वे लड़ेंगे। दोनोंकी बातें समाप्त हो गईं। लड़ाई अनिवार्य थी। युद्धमें मानसिंहके चचा अजितसिंह उपस्थित हुए। अंग्रेज़ सेनापतिके पास सेना कम थी इसलिए अपनी सहायताके लिये उन्होंने और सेना मंगवाई। जब और सेना आगई तब किलेपर चढ़ाई की गई। २३ अगस्तको अजितसिंह और मानसिंह पहाड़ी जंगलोंसे होकर दक्षिणकी ओर चल दिये। उनके कुछ आदमी तांतिया-तोपीसे जा मिले।

इधर मराठे सेनापतिने आठ दिनतक शिरोंजके जंगलमें विश्राम किया। इस स्थानसे जंगल ही जंगल वे ईशागढ़की ओर गये। इसके बाद तांतियातोपीने चन्देरीके किलेपर धावा किया। महाराज शिन्देके अधीन एक योग्य सेनापति इस किले-का रक्षक था। वह किसी प्रकार तांतियाके अधीन न हुआ।

यहाँसे विफल होकर तांतिया गंगरौलीकी ओर गये। इस स्थान-पर अंग्रेज़ सेनापतिसे उनका थोड़ी देरके लिए संग्राम हुआ। यहां भी अपनी तोपें छोड़कर तांतिया जङ्गलों ही जङ्गलोंमें होकर निकल गये। पहले वे जाकलोन और बादमें ललितपुर पहुंचे। यहीं रावसाहब उनसे आकर मिले। रावसाहबके साथ अंग्रेज़ सेनापतिकी लड़ाई हुई थी। रावसाहब तोपें छोड़कर बेतवाके किनारेके जङ्गलसे ललितपुर आकर तांतियासे मिले।

इसके अनन्तर दोनों सेनापतियोंमें सलाह हुई कि अब क्या करना चाहिए। चारों ओर अंग्रेज़ी सेना फैल जानेसे उनका क्षेत्र संकीर्ण हो गया था। इसलिए उन्होंने निश्चय किया कि नर्मदाके दक्षिणकी ओर विन्ध्याचलकी तराईमें चलना चाहिए। अंग्रेज़ सेनापति चारों ओरसे उन्हें तलाश कर रहे थे, उन्हें घेरनेके लिए चारों ओर अंग्रेज़ी सेना पड़ी थी, पर इसकी परवा न करके वे नर्मदाकी ओर बढ़े।

तांतियातोपी और रावसाहबने ललितपुरका त्याग किया। अंग्रेज़ सेनापति चारों ओरसे इनका रास्ता तलाश कर रहे थे। जहां उन्हें तांतियाके आनेकी या नदी पार होनेकी संभावना मालूम होती थी वहीं अंग्रेज़ी सेना पहलेसे स्थान जा घेरती थी। पर अंग्रेजोंकी तमाम कोशिशें व्यर्थ हुईं। रावसाहब और तांतियातोपीकी सेना नर्मदा पार हो गई। एक समय इस प्रदेशपर पराक्रांत पेशवा राज्य कर चुके थे अब उन्हींके आत्मीय आ गये। पेशवा नानासाहबके भाई और पेशवाके सेनापति तांतियातोपीके

आनेसे सम्पूर्ण महाराष्ट्र प्रदेश और बम्बई प्रान्त हिल उठा। पर बम्बईके गवर्नर लार्ड एलफिनस्टन और मद्रासके गवर्नर लार्ड हेरिस विद्रोहकी शान्ति करने लगे। सेनापतियोंकी बड़ी कोशिशपर भी तांतियातोपी नर्मदा पार हो गये और जब उन्होंने सुना कि अंग्रेज़ी सेना आ रही है, तब वे वापिस गायकवाड़ आनेको तैयार हुए। कारगाँव नामक स्थानपर अंग्रेज़ सेनापतिने उनपर चढ़ाई की। पर यह सेनापति तांतियाको पकड़ न सका। वे बड़ौदाकी ओर ५० मील आगे बढ़ गये। फिर अंग्रेज़ सेनापतिको अपने पास आया देखकर वे नर्मदा पार होकर छोटे उदयपुर चले गये। यहां भी एक अंग्रेज़ सेनापतिने चढ़ाई की पर वह भी उन्हें न पकड़ सका। वे वानेश्वरके घने जंगलमें आत्मरक्षा करने लगे। जब अंग्रेज़ सेनापति इस ओर आया तब हिम्मतके साथ वे उदयपुरकी ओर बढ़े। जब वे आरावली पर्वतमालाकी ओर जा रहे थे तब रास्तेमें सामनेसे अंग्रेज़ी सेना आ डटी थी। फिर जंगलमें वापिस आये। एकाएक इस जंगलसे निकलकर वे सुन्देश्वरकी ओर चले। इस स्थानपर रात बिताकर वे तीन दिनमें सौ मील चलकर नीमचके पास जीरापुर नामक स्थानमें पहुंचे। यहां भी अंग्रेज़ी सेना उनके पीछे आई। इसलिये वे बड़ोद नामक स्थानपर चले गये।

इसके अनन्तर तांतियातोपी दौसा पहुंचे। अंग्रेज़ी सेनाके दूत चारों ओर लगे थे। दूतके मुंहसे समाचार सुनकर सेनापतिने दौसापर आक्रमण किया। तांतियाके साथ फीरोजशाह

और रावसाहब थे। वे अंग्रेज़ोंके हाथसे बाल बाल बचे। तांतियातोपीने अंग्रेज़ सेनापतिका सब कौशल व्यर्थ कर दिया। पर वे यह निश्चय न कर सके कि अब किस ओर जाया जाय। उनके सामने जयपुर होकर मारवाड़ जानेका मार्ग खुला था। इसी रास्तेसे वे अलवर राज्यमें होते हुए २१ जनवरी १८५९को शिकार नामक स्थानपर पहुंचे। यहां फिर अंग्रेज़ सेनापतिने उनपर हमला किया। युद्धके दिन फीरोजशाह भी तांतियासे अलग हो गये। उनकी सेना भी छिन्न हो गई। बानेश्वर जङ्गलमें रावसाहब और तांतियातोपीमें विरोध हो गया था। विपत्तिमें विरोध बड़ा बुरा होता है। कहा जाता है कि तांतिया अवसर मिलते ही रावसाहबका साथ छोड़नेके लिये तैयार थे। रावसाहबने तांतियाको छोड़कर अपने नौकरों सहित प्रस्थान किया। अबतक रावसाहब फीरोजशाह, मानसिंह और अजितसिंह तांतियाके साथ थे। पर नवाब फीरोजशाह तो अदृश्य हो गये, उनका पता ही नहीं लगा कि वे कहां गये। थोड़े दिनतक रावसाहब भी इधर उधर गये पर अन्तमें उनका भी पता न लगा कि वे कहाँ और किस दशामें अदृश्य हो गये। बाकी तीन पुरुषोंकी कथा अब संक्षेपसे वर्णन करनी है। तांतियातोपीने अन्तमें अपनी सेनाको भी छोड़ दिया। वे पारन नामक घने जङ्गलमें जा छिपे। इस समय दो रसोइये ब्राह्मण, एक साईस, दो घोड़े और एक टट्टू उनके पास रह गया। अन्तमें साईस भी उन्हें छोड़कर चला गया। ऐसी दशामें मानसिंहसे उनकी भेंट हुई।

मानसिंहने उनसे पूछा कि आपने सेनाका त्याग क्यों कर दिया। तांतियातोपीने कहा कि जगह जगह भागते भागते हैरान हो गया। अब चाहे भला हो चाहे बुरा, तुम्हारे साथ हूं। भाग्यके सामने मस्तक झुकाकर मराठे सेनापतिने यह बात कही थी।

पर तांतियाने जिसे अपना मित्र और सहायक समझा था अन्तमें उसने मित्रताका काम न किया। मानसिंह तांतियाको पकड़वानेके लिये अंग्रेज़ सेनापति मीडके साथ सलाह करने लगा। सेनापति मीडने मानसिंहकी जान बचाने और उनका खोया राज्य दिलानेका वादा किया था। अपने आपको बचा-नेके लिये मानसिंहने अपने मित्र, सहायक, विश्वासीको गिर-फ्तार करानेका प्रयत्न किया। अपने चचा अजितसिंहको भी उसने गिरफ्तार करानेका वादा किया। जो अजितसिंह केवल मानसिंहके कारण महाराज शिन्देसे लड़कर बरबाद हुआ था, जिसने विपत्तिमें मानसिंहकी सहायता की थी उसे भी मान-सिंह फँसानेको तैयार हुआ। अपने भतीजेकी बेईमानीका पता अजितसिंहको लग गया इसलिये रातोंरात वह जङ्गलोंमें लोप हो गया। तांतियातोपीको भी कुछ शक हुआ था कारण उनके दूत सदा अंग्रेज़ी छावनियोंमें घूमा करते थे फिर भी उन्होंने मानसिंहपर विश्वास किया। मानसिंहकी सलाहके अनुसार उन्होंने अपने छिपनेका स्थान निश्चित कर लिया। जिस समय मानसिंह सेनापति मीडके साथ अपना षड्यन्त्र रच रहे थे तब तांतियातोपी निश्चिन्त होकर पारनेके जङ्गलमें आराम कर रहे

थे। यहीं उन्हें अपने पुराने साथियोंके समाचार मिले। किसी २ ने तांतियाको अपने पास बुलाया था। पर तांतियाने मानसिंहकी सलाह ली। मानसिंह दूसरी जगह थे। उन्होंने तांतियासे कहलाया कि मैं तीन दिन बाद आपसे मिलूंगा।

तीन दिन बाद मानसिंह मिले पर उनका उद्देश्य और ही था। ७ अप्रेलकी रातको मानसिंह तांतियातोपीके पास आये। उनकी सहायताके लिये थोड़ी दूरपर बम्बईकी सेना खड़ी थी। तांतियातोपी सो रहे थे, सोते हुए ही सेनाने उन्हें पकड़ा। ८ अप्रेलको सवेरे वे सेनापति मीडकी सेनामें लाये गये।

सेनापति मीडने सीपरीमें फौजी कानून प्रचलित कर रक्खा था। उसी फौजी क़ानून द्वारा तांतियापर गवर्मेंटके विरुद्ध युद्ध करनेका अपराध लगाया गया। तांतियाने कहा—"मैंने कालपीपर कब्ज़ा करनेतक अपने मालिक पेशवा नानासाहबकी आज्ञाका पालन किया और बादमें रावसाहबकी आज्ञासे काम किया। इसके अलावा मैं केवल एक बात और कहूंगा और वह यह कि मैंने कभी किसी यूरोपियन स्त्री या बच्चेके प्राण नहीं लिये और किसीको फांसी नहीं दिलाई।" पर सैनिक जजोंने इस युक्तिको न माना। उन्होंने तांतियाको फांसीकी आज्ञा दी। १८ अप्रेल सन् १८५९ को इस वीर मराठे सेनापतिको फांसी हुई।

कर्नल मालेसनने इस विषयमें लिखा है—"उस समय सर्वसाधारणकी समझके अनुसार यह आज्ञा उचित मालूम हुई थी। पर बादमें, शायद, इतिहासलेखक इसे अनुचित और अन्याय

कहेंगे। अंग्रेज़ी राज्यमें तांतियाका जन्म नहीं हुआ। बड़े होकर कभी उन्होंने अंग्रेज़ोंकी नौकरी नहीं की। सन् १८१२ में जब तांतियाका जन्म हुआ तब उसके स्वामी पेशवा दक्षिण भारतके स्वाधीन सम्राट् थे। बादमें अंग्रेज़ जातिने उनके स्वामीको पददलित किया; इसलिये उनका कर्त्तव्य और धर्म था कि वे अपने मालिकके खोये राज्यको उद्धार करनेकी कोशिश करते। अंग्रेज़ जातिकी सहायता करना न उनका कर्त्तव्य था और न धर्म। उसके स्वामी पेशवाने भी गवर्मेंटसे कसम न खाई थी कि हम अपने राज्यको वापिस लेनेकी कोशिश न करेंगे। जब पेशवाने अपना सुयोग देखा तब वे अपना खोया राज्य प्राप्त करनेके लिये तैयार हुए, उनके साथ उनके नौकर और मंत्रीका तैयार होना आवश्यक था। तांतियातोपीने साफ कहा था कि मैंने मनुष्यघात नहीं किया, उनपर मनुष्यघातका कोई अपराध भी नहीं लगाया गया। उनपर अंग्रेज़ोंके विरुद्ध लड़नेका अपराध लगाया गया था। पर वे पेशवाके नौकर थे। वे पेशवाकी आज्ञा पालन करनेके लिये कर्त्तव्य और धर्मसे बद्ध थे। फिर भी उनको इसी अपराधपर फांसी दी गई। तमाम अपराधपर विचार करनेसे मालूम होगा कि उन्हें अपराधसे अधिक सजा दी गई थी। उन्होंने अपने स्वामीकी आज्ञाका पालन किया था और हथियार लेकर सदैव सम्मुख संग्राम किया था*।"

जब नैपोलियन बोनापार्टने आस्ट्रियाके विरुद्ध संग्राम किया

* Malleson's Indian Mutiny Vol. III P. 380

था उस समय हेफर नामक एक देशभक्तने सैन्यसंग्रह करके ऐसा युद्ध किया कि नैपोलियनको तीन दिनमें भागना पड़ा। दुबारा फिर चढ़ाई करके जब नैपोलियनने आस्ट्रियन सेनाको हराया तब हेफर छिप गया। उसके एक मित्रने विश्वासघात करके उसे फरासीसियोंके हाथ सौंप दिया। नैपोलियनने उसे गोलीसे मरवाया। उस समय अंग्रेज़ोंने नैपोलियनको अन्यायी और राक्षस कहा था। पर जिसे सन् १८१० में उन्होंने अन्याय कहा था वही १८५९ में अंग्रेज़ोने तांतियातोपीके साथ किया। हेफर और तांतियातोपीमें बहुत कुछ समानता है। जैसे हेफर फ्रेंच प्रजाके अधीन न था, वैसे ही तांतियातोपी भी अंग्रेज़ोंकी अधीन प्रजा न था। दोनों अपने देशको जीतनेवाले विदेशियोंसे लड़े थे। दोनोंका युद्धसे साक्षात् कोई सम्बन्ध न था। दोनों अपनी अपनी जातिके प्रतिनिधि थे। दोनोंने असीम योग्यताके साथ शासकोंका मुकाबिला किया था। दोनों अपने अपने देशके महापुरुषोंमेंसे थे। हेफरको आज भी यूरोपके लोग देशभक्त कहते हैं। और तांतियतोपी? विन्ध्याचलकी तराई और महा-राष्ट्र हृदयसे पूछिये कि तांतिया देशभक्त थे या नहीं। तांतिया वीर पुरुष थे। दो सालतक उन्होंने बीसियों सेनापतियोंको नाच नचाया। वे खंडयुद्धके आचार्य कहे जा सकते हैं। वे बार बार राजपूताना, मालवा, पश्चिमोत्तर देशमें घूमते रहे। इतने बड़े प्रदेशोंमें घूमते घूमते उन्होंने सैकड़ों संग्राम किये। बहुत बार वे हारे, बहुत बार तोपें उनके हाथसे निकल गईं, सेना

भी तितर बितर हुई। फिर भी उन्होंने योग्यतासे आत्मरक्षा की। उन्हें पकड़नेके लिये ब्रिगेडियर पार्क नौ दिनमें २४० मील उनके पीछे दौड़ा पर वे हाथ न आये। ब्रिगेडियर समर्स्टन नौ दिनमें २३० मील दौड़े पर वे भी अकृतकार्य रहे। ४८ घंटेमें वे ७० मील तांतियाके पीछे दौड़े पर तांतियाको न पा सके। कर्नल हाल्मस २५ घन्टेमें ५४ मील तांतियाके पीछे गये, पर तांतियाकी छाया न दाब सके। ब्रिगेडियर हॉनर चार दिनमें १४५ मील तांतियाके पीछे दौड़े। पर कोई उस चतुर मरहठेको न पकड़ सका। घनघोर जंगलोंमें वे छिपे हैं सैकड़ों बार दुस्तर नदियोंको उन्होंने पार किया। ऐसे झपाटेसे तांतियाने अपनी सेना और तोपें बचाई हैं कि हर जगह मदद मिलनेपर भी ब्रिटिश वाहिनी उनकी छाया न दाब सकी। तांतियाका अपूर्व कौशल और रण-चातुरी उन्हें महापुरुष कहलाती है। जो यूरोपमें कहीं ऐसा पुरुष होता तो आज उसके हजार २ पृष्ठके जीवनचरित लिखे जाते, उसका गौरव किया जाता, उसकी मूर्त्तियाँ बनाकर रक्खी जातीं। पर भारतके हृदयमें भी तांतियाका पराक्रम अमर रहेगा।

———

तेरहवाँ अध्याय
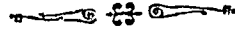
उपसंहार

गदरकी सम्पूर्णरूपसे समाप्ति।

सन् १८५८ के अन्तमें लखनऊ विजयके कारण, प्रधान सेनापति सर कोलिन काम्पबेलको लार्ड पदवी मिली। आजसे इनका नाम लार्ड क्लाइड हो गया। लखनऊ लेनेके लिये इन्होंने जैसा श्रम किया था, वह वर्णन किया जा चुका। लखनऊमें शान्ति हो गई थी पर १८५६ तक कहीं २ अशान्ति रही थी। आमसेटीके राजा लालमाधव-सिंह और शङ्करपुरके राजा वेणीमाधवने अवधकी बेगमका पक्ष लिया था। राजा लालमाधवसे आत्मसमर्पण करनेको कहा गया पर जब उन्होंने अपने आपको गवर्मेंटके सुपुर्द नहीं किया तब १८५८ की ६ नवम्बर को. अंग्रेज़ी सेनाने उनके क़िले-पर हमला किया। उपाय न देखकर लालमाधवने १० नवम्बर-को प्रधान सेनापतिके हाथ आत्मसमर्पण कर दिया। उनके क़िलेपर अंग्रेज़ी सेनाका अधिकार हो गया।

राजा वेणीमाधवसे भी आत्मसमर्पणको कहा गया। पर उन्होंने बेगम हजरतमहल और उसके पुत्रके अनुरोधके कारण ऐसा न किया। प्रधान सेनापति लाड क्लाइडने १५ नवम्बरको

उनपर चढ़ाई की। वेणीमाधव अपने सशस्त्र नौकर, धन और परिवार लेकर वे दूसरे स्थानको चल दिये। वेणीमाधव दन्दिया-खेरा नामक स्थानमें थे। उनसे दुबारा आत्मसमर्पणके लिये कहा गया। पर डेढ़ घंटेतक उन्होंने कोई उत्तर न दिया। इस-लिये सेनापतिने अपनी सेना आगे बढ़ाई। दन्दियाखेराकी लड़ाईमें वेणीमाधवने अच्छी वीरताका परिचय दिया पर अन्तमें उनके बहुतसे सैनिक मारे गये और घायल हुए, जो रहे वे अनि-यमित हो गये। पर इससे भी वेणीमाधव गवर्मेंटके वश न हुए, वे अंग्रेज़ोंको द्वेषकी दृष्टिसे देखते थे। जिस समय अंग्रेज़ोंने नवाबकी अमलदारी उठाकर अयोध्यापर कब्जा किया था तब वेणीमाधवके पास २२३ गांव थे। पर अंग्रेज़ी बन्दोबस्तके कारण वे घटाकर केवल ११६ रहने दिये गये थे। इसी कारण वेणीमाधव अंग्रेज़ोंको नीच समझते थे और नवाबकी बेगम और उनके बेटेके लिये गवर्मेंटसे लड़े थे। उन्होंने नवाबका नमक खाया था, अन्तमें वह नमक अदा किया। हजरतमहल और ब्रिजिसकादिरकी आज्ञाओंका उन्होंने सदैव पालन किया। उनके लिये राजा वेणीमाधव अपनी जमीन, किला, सम्पत्ति सब कुछ छोड़कर नैपालके पहाड़ी जंगलोंमें जाकर रहे।

जो इस गदरके प्रधान २ नेता थे, वे एक एक करके सब रंगमंचपरसे अदृश्य हो गये। किसीको मौतने रक्तमय कर्म-क्षेत्रसे हटाया और कोई घने जंगलों तथा बीहड़ पहाड़ोंमें सदा सर्वदाके लिए छिप गया। फैजाबादके मौलवी और तांतिया

तोपीका अन्त जिस प्रकार हुआ वह कहा जा चुका। गोंडाके राजा देवीबक्स भी भागकर नैपालकी तराईमें चले गये थे।* पृथ्वीपालसिंह आदि अवधके राजाओंने अन्तमें गवर्मेंटकी अधीनता स्वीकार की। फर्रुखाबादके नवाबसे सेनापति बारोने माफीका वादा किया था, इसलिये उन्होंने भी आत्मसमर्पण कर दिया। नवाब मक्का चले गये। १८५९ की ७ जनवरीको मेंहदीहुसेनने भी अपने आपको गवर्मेंटके सुपुर्द कर दिया। नानासाहबके भाई बालराव भी नैपालकी तराईमें छिपे। बेगम हजरतमहल भी वहीं गईं। १८५८ के जुलाई मासमें खां बहादुरखां भी गिरफ्तार हुए। बरेलीकी कोतवालीमें इनकी फांसी हुई। मिथौलीके बूढ़े राजाको कालेपानी भेजा गया। बांदाके नवाबने भी अपने आपको गवर्मेंटके सुपुर्द कर दिया। उसे गवर्मेंटने चार हजार रुपये सालकी पेंशन दी। कुंवरसिंहके भाई अमरसिंहने भी आत्मसमर्पण किया। नानासाहब और अजीमुल्लाका कहीं पता न लगा। न मालूम इन्होंने कहाँ और कैसे अपना जीवन बिताया। सर होप ग्रांटने १८५९ में अवधकी बाकी अशान्ति भी शान्त कर दी।

इस घटनासे दो सौ बरस पहले अंग्रेज़ जिन मुगल बादशा-

* कहा जाता है कि नैपालकी तराईमें १८५९ के नवम्बरमें नैपालके जंगबहादुरसे लड़ाई हुई जिसमें बेनीमाधव, गोंडा राजा, रावसाहब मरे—

Martin's Indian Empire. Vol. II P 498 note

होंसे जरासी जमीन रहनेके लिये मांगने गये थे, जिनके सामने झुक २ कर फर्शी सलामें करते थे, जिनके दरबारमें हाजिर होते हुए अंग्रेज़ोंका हृदय धड़कता था, जिनसे अपने व्यापारकी सहूलियतके लिये फारसी भाषामें अर्जियाँ लिखवा करके पेश करते थे, वही अन्तिम मुगल बादशाह अंग्रेज़ोंका कैदी बना। जिस दीवानेखास और दीवानेआममें अंग्रेज़ जूते और टोपी खोलकर, नंगे पैरों जाकर नजर करते थे, वह दीवानेखास और दीवानेआम उनके पैरोंपर झुक गया। शाहजहाँकी इति- ने धसप्रसिद्ध हवेली (दिल्लीका किला) अंग्रेज़ोंके हाथ आया।

"ई१८५८ की २७ जनवरीको अंग्रेज़ फौजी अफसर बैठकर ि कि ईस्टेल बादशाह बहादुरशाहकी तकदीरका फैसला करने निश्चि। चालीस दिनमें विचार करके उनपर चार अपराध लगाये गाकृ थे। उन्हें परिवार सहित पेगूमें कैद रखनेकी सजा दी गई। गैर इस प्रकार मुगल सम्राटका अन्त हुआ।

इस गदरके कारण ईस्ट इंडिया कम्पनीका राज्य समाप्त हुआ। पार्लमेंटकी सम्मतिसे महारानी विक्टोरियाने भारतका राज्य अपने हाथमें लिया। उन्होंने अपने घोषणापत्रद्वारा प्रजाको विश्वास दिलाया कि भारतका राज्य हम भारतकी भलाईके लिये कर रहे हैं। और प्रजाको उन्नत तथा सभ्य बनाना हमारा उद्देश्य है। इस घोषणाके द्वारा महारानीने प्रधान अपरा- धियोंको छोड़कर बाकीके अपराध क्षमा किये थे, वह घोषणा १८५८ में की गई।

...नके लिये जैसे मैं अन्याय

महारानी विक्टोरियाका घोषणापत्र।

"मैं—विक्टोरिया, जगदीश्वरकी कृपासे ग्रेटब्रिटेन और आयर्लैंड तथा यूरोप, एशिया, अफ्रिका, अमेरिका और आस्ट्रेलियाके सम्मिलित उपनिवेशोंकी अधीश्वरी और स्वधर्मरक्षाकारिणी।

"भारतवर्षमें जो सब प्रदेश मेरे अधिकारमें थे, उन सबका शासन ईस्ट इंडिया कम्पनी करती थी। इस समय पार्लमेंट महासभाकी सम्मतिसे भारतके उन सब प्रदेशोंका शासन मैं अपने हाथमें लेती हूं।

"इस घोषणापत्र द्वारा भारतकी सर्वसाधारण प्र[जा]को मालूम कराया जाता है कि मैंने पार्लमेंट महासभाकी सम्म[ति] [औ]र परामर्शसे भारत साम्राज्यका शासन अपने हाथमें लिया।

"भारतवर्षकी प्रजाको मेरी यह आज्ञा है कि वे प्रजाके यथा धर्मका पालन करें, मुझे तथा मेरे उत्तराधिकारियोंके प्रति श्रद्धा और विश्वास रक्खें और मैं भारतके शासन-कार्यको निर्वाह करनेके लिये समय समयपर जिन कर्मचारियोंको नियुक्त करूं उनके प्रति सम्मान प्रगट करें तथा उनकी आज्ञाओंके अनुसार चलें।

"मैं अपने विश्वस्त मंत्री और प्रियपात्र श्रीयुक्त चार्ल्स जान वाईकाउन्ट कैनिंग बहादुरकी प्रभुभक्ति, कार्यदक्षता और सद्विवेचनापर सम्पूर्ण रूपसे निर्भर करके, अपने भारत साम्राज्यका पहला वाइसराय (राज प्रतिनिधि) और गवर्नर जनरल नियुक्त करती हूं। मैं अपने जिस प्रधान मंत्री द्वारा समय समयपर नियम

और आज्ञा भेजूंगी उसके अनुसार वाइकाउन्ट कानिंग बहादुर भारत साम्राज्यका शासन करेंगे ।

"ईस्ट इंडिया कम्पनीके शासनके समय जो व्यक्ति राज्यके कामोंमें नियुक्त हैं। उन सबको अपने अपने कामोंपर बहाल रक्खा गया। भविष्यमें जैसी मेरी इच्छा होगी, या जो नियम बनाये जायंगे, उसके अनुसार इन कर्मचारियोंको रक्खा या न रक्खा जायगा ।

"इस घोषणा द्वारा भारतके राजाओंको मालूम कराया जाता है कि ईस्ट इंडिया कम्पनीने उनसे जो सन्धि और नियम निश्चित किये, मैं उन सन्धियोंकी रक्षा और प्रतिज्ञाओंका पालन करूंगी। आशा है, भारतके राजा मेरे समान सन्धियोंकी रक्षा और प्रतिज्ञाओंका पालन करेंगे ।

"इस समय भारतपर जितना मेरा राज्य है उसे अधिक न [illegible]ऊंगी। पर जो दूसरे मेरे राज्यपर चढ़ाई करेंगे उन्हें पूरा [illegible] देनेमें कसर भी न रक्खूंगी जो सन्धिके अनुसार हमारे उनको भी किसी दूसरेके राज्यपर चढ़ाई न करने दूंगी, मैं [illegible]तके राजाओंका अधिकार, पद और मर्यादा अपने अधिकार, और मर्यादाके समान समझूंगी। देशमें शान्ति होनेपर [illegible]से सुख और सौभाग्यका उदय होता है। उसे मेरी प्रजा और [illegible]रके राजा समान रूपसे भोगेंगे ।

"राजधर्म पालन करनेके लिये जैसे मैं अन्याय प्रजाओं [illegible]

[illegible] जैसे ही भारतकी [illegible] [illegible]पक लिये निःशंका [illegible]

रहूंगी। सर्वशक्तिमान् परमात्माकी दयासे मैं इन प्रतिज्ञाओंका यथारीति पालन करूंगी।

"ईसाई धर्मपर मेरा दृढ विश्वास है। इस धर्मका आश्रय ग्रहण करनेसे, जो सुख और शन्तोष अनुभवमें आता है, उसे मैं कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार करती हूं। पर मैं अपनी प्रजाके प्रति, इस विश्वासके अनुसार, कोई काम न करूंगी। मैं प्रगट करती हूं कि, कोई व्यक्ति अपने विश्वासमत धर्मसंगत कार्यका अनुष्ठान करनेके कारण अनुगृहीत, निगृहीत या उत्पीड़ित न होगा। सब अपने २ धर्मगत विश्वासके अनुसार क्रिया कर सकेंगे और मेरे अधिकारमें सब तुल्य रूपसे रक्षित और प्रतिपालित होंगे। जो मेरे अधीन भारतके शासनकार्यमें नियुक्त होंगे, उन्हें मैं आज्ञा देती हूं कि वे मेरी किसी प्रजाके धर्ममें किसी प्रकार हस्तक्षेप न करें। जो हस्तक्षेप करेंगे वे मेरी नाराजीके पात्र होंगे और मेरा क्रोध उनपर गिरेगा।

"मेरी प्रजा चाहे किसी जाति और किसी धर्मकी मान॰ वाली हो अपनी विद्या, योग्यता और सच्चरित्रताके बलसे, गवर्मे॰ टके अधीन जिस किसी कामको करनेके योग्य होंगे, वे काम बिना किसी प्रकारके पक्षपातके उन्हें दिये जायँगे।

"भारतवासियोंको अपने पूर्वपुरुषोंसे जो सब जमीने तथा जागीरें मिली हैं, उन सबकी, कितनी माया ममता होगी मैं अच्छी तरहसे समझती हूं। इन सब जमीनों तथा जागीरों

शब्दानुक्रमणिका

अ

आ

इ

ई

उ

ए

ओ

औ

क

ख

ग

घ

च

छ

ज

धु

न

फुलाचलमें अशान्ति १०८८

ब

य

र